

MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ

No. 37

GENERAL EDITOR: PROFESSOR HIRALAL JAIN



THE

# MAHĀPURĀṆA

OR

TISATṬHIMAHĀPURISAGUṆĀLAMKĀRA

( A Jain Epic in Apabhraṃśa of the 10th Century )

OF

PUSPADANTA

8781

Vol. I.

CRITICALLY EDITED BY

Dr. P. L. VAIDYA, M. A. ( Cal. ); D. Litt ( Paris )

Professor of Sanskrit and Allied Languages  
Nowrosjee Wadia College, Poona

Published by

MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ, BOMBAY

1937

Price Rs. Ten

JPr7  
Pus/Vai

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 8781

Date. 23-4-57

Call No. JP27

Pus/Vari

Text (pages 1-592) Printed by Ganesh Kashinath Gokhale, Secretary, Shree Ganesh  
Printing Works, 596-97, Shanwar Peth, Poona 2; and the rest by Anant Vinayak  
Patwardhan, B. A., at the Aryabhushan Press Poona, Peth Bhamburda, House  
No. 915/1; and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary, Manikchand  
Digambara Jain Granthamālā, Hirabag, Girgaum, Bombay 4.



माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचितं  
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम  
अपभ्रंशभाषानिवद्धं

# महापुराणम्

तस्यायं

## आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाडियाकॉलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन

संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन

वैद्योपाध्वपरशुरामशर्मणा

संपादितः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३ ]

[ ख्रिस्ताब्दाः १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः



## TABLE OF CONTENTS

प्रकाशकका निवेदन ...	...	...	...	vii
INTRODUCTION ...	...	...	...	ix-xxxvi
Introductory ...	...	...	...	ix
The Critical Apparatus ...	...	...	...	x
The Prasāsti Stanzas of the Mahāpurāṇa ...	...	...	...	xvi
Bharata, the patron of Puspadanta ...	...	...	...	xxviii
What is a Mahāpurāṇa ? ...	...	...	...	xxxii
Works on Sixty-three Great Men ...	...	...	...	xxxiv
Acknowledgment of obligations ...	...	...	...	xxxvi
ग्रन्थपरिचय ...	...	...	...	xxxvii-xlii
TEXT WITH CRITICAL APPARATUS AND FOOT-NOTES ...	...	...	...	1-490
NOTES. ...	...	...	...	593-662
Glossary of Important Prakrit Words ...	...	...	...	663
Addenda et Corrigenda ...	...	...	...	671



## प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो 'जैन-साहित्य-संशोधक' के जुलाई सन १९२३ के अंक में 'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद् पं० हीरालाल जैन एम० ए०, एल० एल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर सुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारणजकि भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश-साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिज्ञापर तो इस साहित्यकी सुललित सुक्तियाँ निरन्तर ही वृत्त्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँग्रेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकंडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणांसे उसके फण्डमें कमी आगई और अर्थोभावके कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी बिक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना वरिद्ध न रहने दे।

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु इर्भाव्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाकी एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है, जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस, सालंकार, सुषुद्व्यास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनाएँ घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्यसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितुष्ट करती थी। परन्तु आज यह दशा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भोंपामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषाएँ इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बढ़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बौम्बे, अलाहाबाद, बनारस और नागपूर यूनीवर्सिटियों ने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यकी थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम. ए., डी. लिट. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दूरिष्ट ग्रन्थमालाकी उन जैसे घुरंघर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही प्रो० हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा-सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

बम्बई  
१-८-१७

}

नाथूराम भेमी,  
मंत्री

## INTRODUCTION

THE Mahāpurāṇa or Tisatthimahāpurisagunālamkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puṣpadanta in Apabhraṃśa. Of the two smaller works, the Jasaharacariu was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol. I, 1931. The Nāyakumāracariu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol. I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puṣpadanta's Mahāpurāṇa comprising the Ādipurāṇa, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacariu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāṇa I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhraṃśa works of Puṣpadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Saṃdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Ādiparva or Ādipurāṇa, and describes the lives of Risaḥa or Rṣabha, the first Tirthaṃkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth saṃdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining saṃdhis. Dr. Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāṇa under the title "Harivaṃśapurāṇa, Ein Abschnitt aus der Apabhraṃśa Welthistorie, Mahāpurāṇa Tisatthimahāpurisagunā-

lamkāra von Puṣpadanta, Hamburg, 1936", which contains saṁdhis 81-92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgarī characters and incorporated in the third volume, so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr. Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

The text of the entire Mahāpurāṇa will cover approximately 2000 pages of the royal size, of which the present volume contains 600. It is clear that the whole of the Mahāpurāṇa could not be conveniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only, reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover, Introductions to Jasaharacariu and Nāyakumārariu already contain some information about the author, the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

#### THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Ādipurāṇa or of the present volume of the Mahāpurāṇa is based upon the following five Mss. fully collated.

1. G. This Ms. consists of 503 leaves measuring 11" × 5". It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written at Ghoghā Mandir, is dated 1575 of the Samvat era, or 1441 of the Saka era, corresponding to 1518 A. D. It uses prsthamaṭrās and has brief marginal gloss. It is a well-preserved Ms., belongs to the Balātkāra Gāṇa Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins:—॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहून्गरंजणु etc., and ends:—इयं महापुराणे तिसृष्टिमहापुराणगुणालंकारे महाकह्लुफ्यंतविरहए महाभवभरहागुणगणिए महाकवे सगणहरितवह्वाहमहागणिव्याणमर्णं गाम सत्तलीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥ आइयं पर्व समत्तं ॥ शुभं भवतु संक्षय ॥ स्वस्ति श्री सं० १५७५ वर्षे शाके १२४१ प्र० दक्षणायने श्रीभक्ततौ द्वि...एवदि ७ खौ घोषादिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्यनंदिदेवाः तत्पठे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पठे भट्टारकश्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पठे म० श्रीमच्छिमुषणदेवास्तत्पठे म० श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनीश्रीनेमिचंद्र । देशार्णववज्जालीयगांधी श्रीपति तस्यांगना बाई सभू तयोः पुत्र गांधी काश्या गांधी साता । तेषां मध्ये बा० सभू तया लिखाय प्रदत्तमिदमादिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ सं० ८००० ॥ म० लक्ष्मीचंद्रेभ्यः प्रदत्तं ॥ चिरं नंदतु ॥ शुभं भूयात् ॥



This is one of the best and the most authentic of the Mss. of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2. K. This is a paper Ms. containing 732 pages measuring 16" x 4". Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāṇa or Ādiparva as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of prsthāmātrās is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms. from which this Ms. may have been copied. I secured this Ms. through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur. It begins:—  
॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिब्रह्मपरंजयु etc., and the Ādipurāṇa portion ends :—  
इय महापुराणे तिसहस्रपुरिसगुणालंकारे महाकइपुक्कयंतविरहए महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सगण-  
हरिसहनाहभरहाणुव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्वं समत्तं ॥ It adds in  
a different hand : म० श्रीवीरचंद्रास्तवट्टे म० लक्ष्मीचंद्रास्तवट्टे म० ज्ञानभूषणास्तवट्टे म०  
श्रीपद्माचंद्राणां पुस्तकं ॥ The Uttarapurāṇa portion ends :—इय महापुराणे तिसहि-  
महापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमणं णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाणं  
महापुराणं समत्तं ॥ छ ॥ यथाग्रं ॥ श्लोकसंख्या २०००० (१) ॥ शुभं भवतु ॥ We find on  
the final blank leaf :—म० लक्ष्मीचंद्रास्तवट्टे म० श्रीवीरचंद्रास्तवट्टे म० श्रीज्ञानभूषणास्तवट्टे  
म० श्रीपद्माचंद्राणां पुस्तकं ॥ It adds further in a different hand : म० श्रीवादि-  
चंद्रास्तवट्टे म० श्रीमहोचंद्रास्तवट्टे म० श्रीनिरुचंद्राणां पुस्तकं ॥

The entire work seems to be written in one hand ; in fact this is the only Ms. of the whole of the Mahāpurāṇa, i. e., Ādipurāṇa and Uttarapurāṇa, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms. seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss., in a different hand. This Ms. thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the Tippana

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms. although its original, probably a palm-leaf Ms., represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 470 leaves measuring  $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ . It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Samvat era, i.e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K. or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1050 of 1887-91. It begins:—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवद्भूमणरंजण्यु etc., and ends:—  
इय महापुराणे तिस्रिहमहापुरिसिगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरहए महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहरिसह्याहभरहणिव्यागमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ संवत् १८८३ का नित्ती चैशास्त्र शुक्ल ३ चववासरे ॥ शुभं भवतु ॥ लिखितं श्रीमथुरापुरीमध्ये ब्राह्मण स्वामलाल ॥ श्रीजिनधर्म-प्रतिनालक श्रीमहाराजाधिराजश्रीकुमरजी चंपाराजजी पठनार्थ वा परोपकारार्थ ॥ शुभं दीर्घायुर्भवति पुत्रवृद्धिर्भवति ॥ श्रीजिनधर्मप्रवर्तनं करोति ॥ श्री आदिनाथेभ्यो नमः ॥ समाप्तोचं आदिपुराणः ॥ शुभं ॥

4. B. This Ms. consists of 306 leaves measuring  $11'' \times 5''$ . It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line. It belongs to the Balātākā Gaṇa Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 523 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yogiānpura, i. e., Dehli, in 1659 of the Samvat era, i. e., 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins:—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवद्भूमणरंजण्यु etc., and ends:—  
इय महापुराणे तिस्रिहमहापुरिसिगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरहए महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहरिसह्याहभरहणिव्यागमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ आदिपुराण संदह्वयेन जात ॥ श्लोकमानेनाएसहस्रणि अंकतो ग्रंथ ८००० ॥ अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंविधिविज्ञितोक्तं ॥ साधुभिरैव मम स्मृतित्वं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥ योगिनांपुरदुर्गस्थाने जलालदीनसाहिअकबर-

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६५९ पौषसुदि ५ बुधवासरे श्रीमूलसंघे  
बलात्कारणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यव्यये भट्टारकश्रीसिधकीर्तिदेवा.....

5. P. This Ms. is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measuring  $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ . It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms., edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The *prsthamaṭrās* are used. The available portion ends with a part of the third *kaḍavaka* of the 28th *saṃdhi* (see foot-note 8 on this *kaḍavaka* on page 433 of our edition). This Ms. preserves a recension which is metrically correct, i. e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like एणविवि and एणवेवि where एणविवि represents the metrically correct form. It begins:—स्वस्ति ॥ ओं नमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवद्भूमणरंजु etc., and ends with चामर° in XXVIII. 3. 11.

In addition to these five Mss. fully collated, I came across three more Mss. of the *Ādipurāṇa*. Of these one is deposited in the Sena Gaṇa Mandir at Kāranjā, (No. 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss. in C. P. & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms. was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhaṭṭāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the *Samvatera*, i. e., 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss. belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No. 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 *saṃdhis* only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyestha of 1848 of the *Samvatera*, i. e., 1791 A. D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms. from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891-95. It is dated Wednesday, the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Samvat era, i. e., 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen samdhis. The second part contains 177 leaves which are numbered from 1 to 177, and not from 143. The third part contains the remaining 33 pages, numbered from 178, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P, and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Tīpṇa of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I secured a Ms. of this Tīpṇa on the Adipurāṇa portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 563 of 1876-77. This Ms. measures  $13\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like द्वितीय are written like द्वितीय. There is no indication as to its age, but from appearance it seems to belong to the 16th century A. D. It begins:—ओं नमो बीतरागाय ॥ प्रणम्य वीरं विबुधेन्द्रस्तुतं निरस्तदोषं वृषभं महोदयम् । पदार्थसंदिग्धजनप्रबोधकं महापुराणस्य करोमि टिप्पणम् ॥ १ ॥ सिद्धित्यादि सिद्धिरन्तर्चनुष्ठयमाप्तिः सैव बधूस्तस्या मनोरञ्जनश्चित्तरञ्जकः . It ends:—इति सप्तविंशत्तमसंवि समाप्ताः ॥ तमस्तसंदेहहरं मनोहरं प्रकण्ठपुण्यं प्रभवं जितेश्वरम् । कृतं पुराणे प्रथमे सुटिप्पणं सुखावबोधं निखिलार्थदर्पणम् ॥ इति श्रीप्रमाचन्द्रविरचितमादिपुराणटिप्पणकं पंचाशत्श्लोकहीनं सद्दृश्यपरिमाणं परिसमाप्ता ॥ शुभं सवतु ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Tīpṇa on the Uttara-purāṇa which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sanghi of Jaipore. This Ms. measures  $12'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 57 leaves with 13 lines to a page and about 31 letters to a line. It begins:—ओं नमः सिद्धेश्वरः ॥ ब्रह्महो परमात्मनः . It ends:—श्रीविक्रमादित्यसेवस्वरं वर्षाणां मशीत्यधिकसंस्ते महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धास्ताय परिज्ञाय मूळटिप्पणकां चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं अज्ञातमीनेन श्रीमद्बला... रणश्रीसंघाचार्यसेत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्ड-भिभूतरिपुरस्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितं

समाप्तम् ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७५ वर्षे माद्रवाशुदि । बुद्धदिने ।  
 कुरुजांगलदेसे । सुलितानसिकंदरपुत्र सुलितानवाहिमु राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे ।  
 भट्टारकश्रीगुणभद्रहृदिद्याः । तदाम्नाये जैसवाह्यु चौ. टोडरमह्यु । इदं उत्तरपुराणटीका लिखापितं ॥ शुभं  
 भवतु ॥ सगल्यं ददाति लेखकपाठकयोः ॥ This Ms. is dated Samvat 1575, i. e.  
 1578 A. D. (1518 AD)

On examining the colophon of the author of the Tīppaṇa we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tīppaṇa was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D., i. e., within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puṣpadanta; we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva; that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tīppaṇa; that he also consulted the original Tīppaṇa, probably of Puṣpadanta himself (मूलटिप्पणकां चालोक्य), and prepared a collected Tīppaṇa (समुच्चयटिप्पणं) on the Mahāpurāṇa, embodying the original Tīppaṇa. An author's writing a Tīppaṇa on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible; for I had an occasion to examine Mss. written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puṣpadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work; this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss. of our text is not identical with the Tīppaṇa of Prabhācandra, but is one which is either abridged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction (LXIII—LXIV) to the Nāyakumāracarīu refers to the colophon of a Ms. of the Tīppaṇa of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā (circa 1055 A. D.) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D. and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms. of the Tīppaṇa again does not contain the stanza लत्तावारमहापुराण etc. Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasimhadeva.

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P, not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the Praśasti stanzas found at the beginning of several saṃdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu (page 21), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

#### THE PRAŚASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀṆA \*

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a saṃdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna, while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these praśasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the praśasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator, who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these praśasti stanzas, and was forced to advance a hypothesis that the poet himself, with the help he obtained from his patron, must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote, at leisure, at first in the margin perhaps, some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

---

\* Some of the Praśasti stanzas are put together by Pandit Nathuram Premi in his article on Puṣpadanta in Jain Sahitya Samśodhaka, Vol. II. No. I, 1923.



page 21 of the Introduction to Jasaharacariu, enabled me then to fix up that Mss. S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the Prasasti stanzas of the Mahāpurāṇa, viz.,

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोक्तुल्लवल्लीवनं  
मान्यासेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।

धारानाथनरेन्द्रकोपशिक्षिना दग्धं विदग्धप्रियं  
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीगुण्यदन्तः कविः ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the Mahāpurāṇa, in as much as the plunder of Mānyakheta, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the Kāranjā Ms. at the beginning of the 50th samdhi, while the completion of the Mahāpurāṇa in the Krodhana year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms. K. This fact coupled with the absence of prasasti stanzas in my best Mss. of the Jasaharacariu enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of Mahāpurāṇa Mss. fully corroborates. The Nāyakumāracariu of Puṣpadanta, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any prasasti stanzas in any of his Mss., and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the prasasti stanzas occurring at the beginning of the samdhis of the Mahāpurāṇa. I have not so far discovered a Ms. of the Mahāpurāṇa which has no prasasti stanzas : at the same time I have found that Mss. do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss. G and K of the Ādipurāṇa, while the remaining Mss. gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the Ādipurāṇa. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the Critical Apparatus. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāṇa. At any rate the stanza दीनानाथवनं etc. he could not have written before 972 A. D., i. e., seven years after the completion of the Mahāpurāṇa. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e., (a) those found in G and K; (b) those found in other Mss. of the Ādipurāṇa; (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarpurāṇa portion; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms.. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section.

- (a) 1. ( i ) आदित्योदयपर्वतादुरुतराचन्द्रार्कचूडामणे-  
रा हेमाचलतः कुशेनिलयादा सेतुबन्वाद् दृढाद् ।  
आ पातालतलाद्दीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
कीर्तियस्य न वेधि भद्र भरतस्याभाति स्रण्डस्य च ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khaṇḍa, i. e., the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd saṃdhi in G and K, but at the beginning of the 2nd saṃdhi in the remaining Mss. ( See foot-note on page 18 and also note the variants ).

2. ( ii ) सौभाग्यं शुचिता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दरं  
सन्धं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं वियार्थिनामाशु य-  
स्यैकेकं गुणमङ्गमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं मुदि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet's patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth saṃdhi.

3. ( iii ) भूलीलां त्यज मुञ्च संगतकुचद्वन्द्वदिकं वक्षसा  
मा त्वं दर्शय चारुमण्डलतिकां तन्वाङ्गि कामाहता ।  
मुग्धे श्रीमदनित्यस्रण्डसुकवेर्बन्धुगुणैरुन्नतः  
स्वप्रेष्येष पराङ्मनां न भरतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

This stanza states that Bharata, the poet's friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th saṃdhi in G and K,



and in other Mss. also at the same place. ( See footnote on page 72 and also note the variants ).

4. ( iv ) एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोज्यः प्रियः  
 एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्रान्यः परार्थोद्यतः ।  
 एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां  
 दूषेतो ससि पुष्पदन्तमरतो मदे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth samdhi, but in all others at the beginning of the 9th samdhi.

5. ( v ) जगं रम्भं हृन्मं दीवओ चन्द्रभिम्बं  
 धरितीं पल्लंको दो वि हृत्था सुवत्थं ।  
 पिया णिद्धा णिच्चं कव्वकीला विणोओ  
 अदीणत्तं चित्तं ईसरो पुष्पदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puspadanta is a king in as much as he has the nobility of mind : the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss. at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss.

6. ( vi ) णाहन्द्सुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।  
 सिरिक्कुसुमदत्तणकइमुहणिसिणी जयइ वाईसी ॥
7. ( vii ) तन्त्रीवायोरनिन्येवरकविरचितेगंयपयोरनेकैः  
 कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौषेः ।  
 काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यय विद्यापियो गां  
 सोऽयं संसारसारः प्रियससि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puspadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th samdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th samdhi.

8. (viii) प्रतिग्रहमदति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसन्नमावसति ।  
भरतस्य बह्मसासौ कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss. of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however, strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned *prasaṣti* stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by a general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further, the fact that the number of *prasaṣti* stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Ms. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss., one from the *Seṇa Gaṇa Bhāṇḍārā* at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the *Prasaṣti* stanzas, (i) and (iii-viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

- (b) 9. ( i ) बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।  
संप्रत्यनन्यगतिकृस्वयागुणो भरतमावसति ॥

( Found at the beginning of the third *saṃdhi* ).

10. ( ii ) आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुच्यतां प्राप्ताः ॥

( Found at the beginning of the fourth samdhi ).

11. ( iii ) श्रीविद्विष्यै कुप्यति वामदेवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।  
भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

( Found at the beginning of the sixth samdhi ).

12. ( iv ) हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंस्थानकर्ता  
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।  
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवल्यशोभौतधात्रीतलान्तः  
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

( Found at the beginning of the seventh samdhi ).

13. ( v ) मातवैतुं धरि कुतूहलिनो ममैत-  
दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।  
त्यागी गुणी म्रियतमः सुभगोऽतिमानी  
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्थतुल्यः ॥

( Found at the beginning of the eighth samdhi ).

14. ( vi ) सूर्यात्तेज ( ! ) गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः  
सौम्यत्वं कुष्ठमायुधास्तुभगतां त्यागं बलेः संप्रमान् ।  
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः क्षण्डः ( ! ) कवेर्वल्लभः ॥

( Found at the beginning of the eleventh samdhi ).

15. ( vii ) तीव्रापद्विषेपु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

( Found at the beginning of the thirteenth samdhi and also  
at the beginning of the thirty-fourth samdhi ).

16. ( viii ) केशासुब्बासिकन्द्रा ध्रुवलदितिपङ्क्तिगण्डनकुरोहा  
सेनाहीवद्गुला जलहिजलसमुद्भूयपिण्डावता ।

वम्भण्डे वित्थरन्ती अमयरसमयं चन्दविम्बं फलन्ती  
कुलन्ती तारओहं जयइ नवलया तुज्ज भरहेस किन्ती ॥

( Found at the beginning of the fourteenth samdhi ).

17. ( ix ) त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं  
क्रीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।  
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेम्णोऽन्तरां निर्वृतिं  
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्वत भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

( Found at the beginning of the fifteenth samdhi. It is also found at the beginning of the 95th samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

18. ( x ) बलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।  
अत्यन्तवृद्धिगतमपि भुवर्चं वि ( वं ! ) भ्रमति तच्चित्रम् ॥

( Found at the beginning of the seventeenth samdhi. It is also found at the beginning of the 102nd samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

19. ( xi ) शशधरविम्बात्कान्तिस्तेजस्तपनाद्ग्रीरतामुदधेः ।  
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

( Found at the beginning of the eighteenth samdhi. It is also found at the beginning of the thirty-ninth samdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

20. ( xii ) श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।  
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामारुतिमुपेतः ॥

( Found at the beginning of the nineteenth samdhi ).

21. ( xiii ) फणिनि विमुह्यतीव भेचकरुचि कचनिचयेषु घोषिता-  
मलकिषु मूर्च्छतीव ह्रसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।  
मदमुचि मायतीव लोलालिनि वरकरिण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव विवतीव निमीलयतीव सङ्गणे ( ! ) ॥

( Found at the beginning of the twentieth samdhi ).

22. ( xiv ) यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि  
प्रतिहतपक्षपातदानश्रृङ्गरासि सदा विराजते ।

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुखमयमलमङ्गलः ॥

( Found at the beginning of the twenty-first samdhi ).

23. ( xv ) मदकरिदलितकुम्भमुकाफलकरभरभासुरानना  
मृगपतिनाद्रेण यस्या धृतमनघमनर्धमासनम् ।  
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा  
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमन्त्रिका मुदे ॥

( Found at the beginning of the twenty-second samdhi ).

24. ( xvi ) अङ्गुलिदलकलापमसमयुति नक्षत्रिकुरुन्धकर्णिकं  
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुवतचक्रमुम्बितम् ।  
विलसदनुपतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-third samdhi ).

25. ( xvii ) ह्रिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं  
पुलकमिवातनोति केतकतस्वरतरुकुसुमसंकरे ।  
विकसितफणिकणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-  
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fourth samdhi ).

26. ( xviii ) उन्नतातिमनुवात्रपात्रता ( १ ) भाति मद्र भरतस्य भूतले ।  
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fifth samdhi ).

27. ( xix ) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणा मुहुर्ध्रमताम् ।  
गणनव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

( Found at the beginning of the twenty-sixth samdhi ).

28. ( xx ) गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितरुणार्जुनगुणोपेतम् ।  
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-seventh samdhis ).

29. (xxi) मुसुनलिनोदरसद्यनि गुणधृतहृदया सदैव यद्वसति ।  
चोज्जिमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रका ॥

( Found at the beginning of the twenty-eighth samdhi ).

30. (xxii) बम्भण्डाहण्डलसोषिमण्डलच्छलियकित्तिपरस्स ।  
खण्डेण समं समसीसियाह् कङ्गो न लज्जन्ति ॥

( Found at the beginning of the thirty-second samdhi ).

31. (xxiii) विनयाङ्कुरातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।  
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥

( Found at the beginning of the thirty-third samdhi. It is also found at the beginning of the fortieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K ).

32. (xxiv) इति भरतस्य जिनेश्वरसमयैकशिरोमणेर्गुणान्वक्तुम् ॥  
मातुं च वार्षितोयं बुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

( Found at the beginning of the thirty-fifth samdhi )

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss., one from *Seṇa Gaṇa Bhāṇḍāra* at *Kāranjā* and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the *Ādipurāṇa* portion. Some of these are repeated in some Mss. of the *Uttarapurāṇa*, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the *Uttarapurāṇa* also. Unfortunately the number of the available Mss. of the *Uttarapurāṇa* is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the *Balātkāra Gaṇa Bhāṇḍāra* at *Kāranjā*. On examination I found that Poona and *Kāranjā* Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th samdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different samdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

## INTRODUCTION

xxv

- (c) 33. ( i ) वरमकरोदपारतरविवरमहिकिणेन्दुमण्डलं  
यदपि च जलविवलयमधिलंघ्य विवेस्तदन्तरं दिशः ।  
विगलितजलपयोदपटलसुनि कथमिदमन्यथा यशः  
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत सांप्रतम् ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 41st and the 47th samdhis. The Jaipore Ms. has it only at the 41st. K does not give it anywhere ).

34. ( ii ) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यत्राम तन्मङ्गलं  
सर्वस्यापि गुरुबुधः कविरयं चके अयं च ( ! ) क्रमः ।  
राहुः केतुरयं द्विषामिति दधत्साम्यं ग्रहाणां प्रभुः  
संप्रत्योदय ( ! ) माननोति भरतः सर्वस्य तेजोधिकः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 50th along with two following and जगं रम्भं हम्भं etc. ( see stanza 5 above ). The Jaipore Ms. gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere ).

35. ( iii ) सचा सन्तो वेसो मूर्तर्ण सुदृसीलं  
मुसंतुदं चित्तं सव्यजीवेसु मेत्ती ।  
मुहे दिव्या वाणी वारुचारित्तमारो  
अहो स्रण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, the Jaipore Ms. gives it at 49th, and K does not give it anywhere ).

36. ( iv ) दीनानाथघनं सदाबहुजनं प्रोक्तुलवल्लीवनं  
मान्यासिष्टपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।  
धारानाथनरेन्द्रकोपशिशिना दग्धं विदग्धमियं  
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere ).

37. ( v ) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-  
मर्थारंरुतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।  
किं चान्ययादिहास्ति जैनचरिते मान्यत्र तद्वियते  
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 59th samdhi ).

38. ( vi ) बन्धुः सौजन्यवार्धः कविकुलधिषणाध्वान्तविश्वं सभानुः  
प्रोढालंकारसारामलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।  
वक्षत्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहंसाव भाति  
प्रोयद्रम्भीरमावा स जयति भरते धार्मिके पुष्पदन्तः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd  
samdhi ).

39. ( vii ) आसृण्वोऽमुगरारवं दमरुकं चण्डीशमाश्रित्य यः  
कुर्वन् कामकाण्डताण्डवविधिं डिण्डीरपिण्डच्छवेः ।  
हंसाडम्बराडिण्डमण्डलसद्गागीरयोनायकं  
वाञ्छन्निथमहं कुतूहलवती सृण्डस्य कीर्तिः रुनेः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th  
samdhi ).

40. ( viii ) आजन्मं ( 1 ) कवितारसैकधिषणासौभाग्यमाजो गिरा  
दृश्यन्ते कवयो विशालसकलग्रन्थानुगा बोधतः ।  
किं तु प्रोढनिहृडगूढमतिना श्रीपुष्पदन्तेन भोः  
सामर्थ्यं विधत्ति ( 1 ) नैव जातु कविता शीघ्रं ततः प्राकृते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th  
samdhi ).

41. ( ix ) यस्येह कुन्दाफलचन्द्रोच्चिःसमानकीर्तिः ककुभां मुक्तानि ।  
प्रसाधयन्ती ननु बंधनीति जयत्वसौ श्रीभरतो नितान्तम् ॥

42. ( x ) पद्यवसूतिक्रिया हरहासहार-  
कुन्दप्रसूनसुरतीरिणिशक्रनागाः ।  
क्षीरोदशेषवलसत्तम (?) हंस (?) च व  
किं सण्डकाव्यधवला भरतः स यूयम् (?) ॥

( Both these stanzas are found in all the four Mss. at the  
beginning of the 66th samdhi. )

43. ( xi ) इह पठितमुदारं वाचकैर्गण्यमानं  
इह लिखितमजस्रं लेखकैश्चर काव्यम् ।  
गतवति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते  
भरत तव गृहेऽस्मिन् भाति विद्याविनोदः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th  
samdhi ).



44. ( xii ) चञ्चलचन्द्रमरीचिचक्षुःचुराचातुर्यचक्रोचिता  
चञ्चन्ती विचटञ्चमल्लतिकविः प्रोद्धामकाव्यक्रियाम् ।  
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया बान्धुर्यधुर्या रसैः  
खण्डस्थैव महाकवेः समरतान्त्रित्यं कृतिः शोभते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th samdhi ).

45. ( xiii ) लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णाकुले नीरसे  
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।  
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांपतं  
कं यास्यस्यमिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 80th samdhi ).

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

- (d) 46. ( i ) सोऽयं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः  
सञ्ज्योतिर्मणिराकरो म्रुत इवानर्घ्यो गुणैर्भासते ।  
वंशो येन पवित्रतामिह महामन्त्राह्वयः प्राप्तवान्  
श्रीमद्वल्लभराज— कटके यश्चाभवन्नायकः ॥

( Found at the beginning of the 42nd samdhi ).

47. ( ii ) वापीकूपतडागजैनवसतीस्थवस्तेह यत्कारितं  
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं सुराणां ( पुराणं ! ) महत् ।  
तत्कृत्वा पूवमुचने रविकृतिः ( ? ) संसारदार्ढ्यैः सुखं  
कोज्यत् ( ? ) स्रसहसो ( ? ) स्ति कस्य हृदयं नै बन्दितुं नेहे ॥

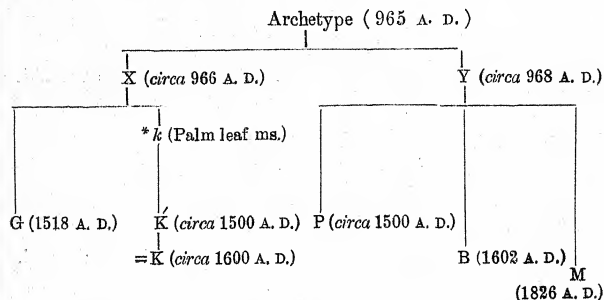
( Found at the beginning of the 45th samdhi ).

48. ( iii ) संजुडियजाणुकोप्परगीवाकडिचन्धणावयवो ।  
अणुह्रस्व वेरियं तुज्झ जं पावइ लेहओ दुक्खं ॥

( Found at the beginning of the 58th samdhi ).

It will be seen from the account of these prāsasti stanzas that even the Uttarapurāṇa Mss. preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss. the middle and the Jaipore Ms. the youngest. Leaving the question of the genealogy

of the Mss. of the Uttara-purāṇa for the time being, I present below in genealogical form the relation of the different Mss. of the Ādipurāṇa :—



#### BHARATA, THE PATRON OF PUṢPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss. of the Mahāpurāṇa. Of these stanzas, six, viz., 5, 6, 16, 30, 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often (e. g. चोज्जं in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning (चार्दसी, 6) and Ambikā (23), the poet Puṣpadanta himself (5, 30, 36, 39, 40, 45), the poet and his Mahāpurāṇa (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26, 35, 37, 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet's patron (remaining stanzas). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 3-8; XXXVII. 3-5; CII. 13) and also in the Ghattā lines and the puspikā at the end of each saṃdhi (महामन्त्रभरद्वाजुनणिण् महाकवे) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jasabaracarīu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office; and a long praśasti at the end of the Nāyakumāracarīu (page 112) gives some details about the same. On the strength of the information supplied by these it is possible to construct a short biography of Bharata to whose generosity the world owes this epic poem in Apabhramśa.

\* The asterics indicate conjectural Mss.

We have now an excellent account of the *Rāṣṭrakūṭas and their Times* by Dr. A. S. Altekar (Poona, 1934). We find that a few pages (115-123) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III (939-968 A. D.). We also have there a section dealing with education and literature (Chapter xiv) of the period. And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet. On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period. Puṣpadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhraṃśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts. It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puṣpadanta and the praśasti stanzas.

Kṛṣṇa III is known in Puṣpadanta's works by three names: Tudiga, Suhatuṅgarāya (Sk. Subhatuṅgarāja) and Vallabhanṛpa. He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khoṭṭigadeva. It was during the reign of Khoṭṭigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāṣṭrakūṭas, was plundered by the king of Dhārā. Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III. Bharata however was still living when Puṣpadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write Jasaharacarīu and Nāyakumāracarīu.

Bharata seems to have come from the family of Koṇḍella gotra (Sk. Kaundīya). This was a rich family and held the office of ministers (महामन्त्राद्वयः वंशः, 46), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (सत्त्वानक्रमतो गतापि हि रमा रुष्टः प्रभोः सेवया). His grandfather's name was Annaiya or Annaiyya. His

father's name was Aiyāṇa or Airāṇa and his mother was called Devī. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहितेन, 15). He was married to Kundaṇvā and had seven sons, viz., Devalla, Bhogalla, Nāṇṇa, Soḥaṇa, Guṇavamma, Dangaiya and Santaiya. Nāṇṇa is mentioned as the son of Kundaṇvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D., while Nāṇṇa is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Nāṇṇa had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father.

Bharata is described by Puṣpadanta as possessing dark complexion (श्यामः प्रधानः, 12 ; श्यामरुचि, 20). He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20). He had a good physique (भारतमङ्ग, 23), and held the office of a general in the army of Kṛṣṇa III (वल्लभराज...कटके यश्रामवल्लभकः, 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (प्रचण्डाद्वनिपतिमवने त्यागसंस्थानकर्ता, 12). He had a gentle dress and courteous manners and speech (सया सन्तो वेशो, मुहे दिव्वा वाणी, 35). He was fond of learning (विद्याप्रियः, 7). He combined in him wealth and learning (श्रीरसि, सरस्वती वदन्पङ्कजे, 22). It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11 ; 12). He had a pure character (स्वप्नेष्वेव पराङ्मना न वाञ्छति, 3). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity. Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puṣpadanta became the friend of Bharata, his house became a meeting place of the learned (43). He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jimūtavāhana, Dadhici, Viṇayāṅkura and Śātavāhana (9, 31). His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (27), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puṣpadanta to write the Mahāpurāṇa and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsāra with comfort (47).

The poet Puspadanta came of a Brahmin family of Kāśyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Śiva, but were later converted to Jainism. Puspadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Virarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheta, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāṣtrakūṭas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaīya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāṇa so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāṇa in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Śaka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāṇa, i. e., the first thirty-seven samdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Śaka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्चन्द्रसा—

मर्थलङ्कृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।

किं चान्ययदिहास्ति जैनचरिते नाम्यत्र तद्विद्यते

द्वावेतौ मरुतेशपुष्पदन्तौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ ( 37 )

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—

यदिहास्ति तदन्वयः यज्ञेहास्ति न तत्कचित् ।

For the Mahāpurāṇa is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhramśa, Jasaharacariu and Nāyakumāracariu. The glory of the Rāṣṭrakūṭas, however, soon came to the end. Their capital, Mānyakheta, was plundered in 972 A. D., and the poet became destitute once more (केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः, 36).

#### WHAT IS A MAHĀPURĀṆA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Pūrvas and Aṅgas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon, according to the Digambaras, consists of four divisions: (i) Prathamānuyoga, lives of Tīrthaṅkaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karaṇānuyoga, description of the geography of the universe; (iii) Caraṇānuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyānuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahāpurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāṇa, on the other hand, describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triṣaṣṭilakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭisālākāpuruṣacarita, i. e., the lives of sixty-three prominent men (Sālākāpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahāpurāṇa to alternate with Tisatṭhimahāpurisagunālamkāra, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term purāṇa is defined in the Hindu Literature as follows :—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The purāṇa deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well ; for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term. Jinasena who is a predecessor of Puṣpadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says :—

तीर्थशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।  
त्रिषष्टिलक्षणं वक्ष्ये पुराणं तद्द्रष्टव्यमपि ॥  
पुरातनं पुराणं स्यात्तन्महद्महदाश्रयात् ।  
महद्गुरुपदिष्टवान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥  
कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।  
महत्त्वं स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥  
महापुरुषसंचन्धि महाभ्युदयशासनात् ।  
महापुराणमास्त्रातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20-23.

“ I shall recite the narrative of sixty-three ancient persons, i. e., of the Tirthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins (i. e. Vāsudevas) and of their opponents (i. e., of Prati-Vāsudevas). The work is called ‘purāṇa’ because it is a narrative of the ancients. It is called ‘great’ because it relates to the great (persons), or because it is narrated by the great (sages) or because it teaches (the way to) great bliss. Other writers say that, because it originated with the old poet it is called ‘purāṇa’ and it is called ‘great’ because of its intrinsic greatness. The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss.” A Ṭippaṇa on I. 9. 3 of our text seems to make a distinction between *aiḥāsa* and *purāṇa* and says that *aiḥāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* i. e. Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men (अष्टास्र एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टि-पुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि). The Mahāpurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importance as the Mahābhārata or the Rāmāyaṇa in Hinduism. The Mahāpurāṇa however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyaṇa and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term.

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads. I give their names below for ready reference :—

- (a) The Tirthamkaras (24): (1) वृषभ or ऋषभ, (2) अजित ; (3) शम्भ or संभव ; (4) अभिनन्दन ; (5) सुमति ; (6) पद्ममन ; (7) सुवास्ये (8) चन्द्रवर्धन ;



(9) पुष्पदन्त or सुविधि; (10) शीतल; (11) श्रेयांस; (12) वासुपुज्य; (13) विमल; (14) अनन्त; (15) धर्म; (16) शान्ति; (17) कुन्दु; (18) अर; (19) मलि; (20) सुवत; (21) नमि; (22) नेमि; (23) पार्श्व; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12): (1) मरुत; (2) तगर; (3) मघवन्; (4) सनत्कुमार; (5) शान्ति; (6) कुन्दु; (7) अर; (8) सुमौम or सुस्म; (9) पद्म; (10) हरिषेण; (11) जयसेन or जय; and (12) ब्रह्मदत्त.

(c) The Vāsudevas (9): (1) त्रिष्टुभ; (2) द्विष्टुभ; (3) स्वर्धनू; (4) पुरुषोत्तम; (5) पुरुषसिंह; (6) पुरुषपुण्डरीक; (7) दत्त; (8) नारायण; and (9) कृष्ण.

(d) The Baladevas (9): (1) अचल; (2) विजय; (3) मद्र; (4) सुवम; (5) सुदर्शन; (6) आनन्द; (7) नन्दन; (8) पद्म; and (9) राम (बलराम).

(e) The Prati-Vāsudevas (9): (1) अश्वयथीव; (2) तारक; (3) मेरक; (4) मधु; (5) निष्ठुम्भ; (6) बलि; (7) प्रह्लाद; (8) रावण; and (9) मंगथेन्वर or जरासेन.

It is to be noted that Sānti, Kunthu and Ara are Tirthamkaras as well as Cakravartins.

#### WORKS ON SIXTY-THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahāpurāṇa or more accurately Ādipurāṇa of Jinasena (*circa* 850-875 A. D.). Jinasena calls his work *Triṣaṣṭilakṣaṇamahāpurāṇa-saṃgraha*, and thus seems to have planned a complete Mahāpurāṇa. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two parvans only of the Ādipurāṇa, the remaining five parvans of the Ādipurāṇa and the whole of the Uttarapurāṇa being written by his disciple Guṇabhadra and completed in 820 of the Saka era, i. e., in 898 A. D., at Vanākāpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarṣa *alias* Kṛṣṇa II (880-914 A. D.). This Mahāpurāṇa is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāṭhi translation by Kallappa Nīve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the *Triṣaṣṭilakṣapūrasaṅgraha* by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last



works of Hemacandra and so may have been written about 1170-72 A. D. It was published by the Jaina Dharma Prasārika Sabhā of Bhavnagar in 1905-9, and a reprint of it is being issued at present.

The Jain Granthāvali published in 1963 of the Vikrama era, i. e. in 1907-8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229. One of them is by Silācārya (*circa* 925 of the Vikrama era, i. e. 888 A. D.), is written in Prakrit and its Mss. are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No. 4 and also at Jesalmer Bhandar. The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Āmrasūri on the authority of Brhattiṣṭhanikā. It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutuṅga, Mss. of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad. I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Guṇabhadra, Puṣpadanta and Hemacandra, as also of Silācārya and Merutuṅga if these two last-named works become available to me.

#### THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts. The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss. or recorded in the margin of Mss., and also in the Tīppaṇa of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit. I have culled it from the marginal notes in Mss. G, K, M and P, and also from the Tīppaṇa of Prabhācandra. In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhramśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss. Extracts from Prabhācandra's Tīppaṇa, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end. I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss. even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on कद्वद विद्वियसेड on page 8).

#### ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another, assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puṣpadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Mānyakhṣeta in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor, his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puṣpadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss. from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran savant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heartfelt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardhā-Māgadhī at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona }  
August 1937

P. L. VAIDYA

## ग्रन्थ-परिचय

### १ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलब्ध साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्संसार को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में इस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आदर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैंने सन् १९२४ में कारंजा के भंडारों का अवलोकन किया और वहाँ के उपलब्ध दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा इन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

### २ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता में, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड़, सब से पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरित' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरित' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र-कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ विलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

कराया है। इसमें उत्तरपुराण की बारह (८१-९१) संधियाँ हैं जो हरिवंशपुराण कहलाती हैं। जब जर्मनी से यह संस्करण प्रकट नहीं हुआ था तब विचार था कि डा. आल्सडॉर्फ द्वारा सम्पादित यह खण्ड भी एक ग्रंथ में स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित करा दिया जाय, और इसी विचार से मित्र आल्सडॉर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रेजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ, और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण निकालने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों की ग्रंथ उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रम-बद्ध प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर उसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

### ३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पाँच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्योंकि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा, की हैं; दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना, की और एक तात्यासाहिब पाटील, नांदणी (कोल्हापुर) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण-मंदिर की, संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे साम्हने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

### ४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महा-पुराण-टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक को भांडारकर-इन्स्टिट्यूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तर-पुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात् महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'सागरसेन सैद्धांतिक से परिज्ञात करके तथा 'मूलटिप्पणिका' का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

### ५ संधियोंके प्रारंभके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियों के प्रारंभ में कवि के आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से छह की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्विष्ट संधि में ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रति में कहीं अन्यत्र, या तीसरी में वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रखे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ-नरेन्द्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुंथी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारंभ में और जयपुर की प्रति में ४९ वीं संधि के प्रारंभ में, और तात्या साहिब वाली प्रति में कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पादयलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०९९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज हो समझ में आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पाँछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

### ६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म-परिचय है, पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरित व णायकुमारचरित के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडुंग, शुभतुंगराय और बल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्होंने सन् ९३९ से ९५८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोद्विगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्होंने राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन् ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद परम्परागत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्दिन भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अन्नय्य,' पिता का 'वेयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्वा' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम-देवल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुदृढ और शूरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके मंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवन में काव्य-रचना, काव्य-गायन, और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीमूतवाहन, वधीचि, विनयांकुर और शातवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी, कूप, तडाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुण्ड्रन्त को आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

### ७ कवि-परिचय ।

कविराज पुण्ड्रन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम मुग्धादेवी था। ये दोनों शिव के उपासक थे, किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुण्ड्रन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति; किन्तु उनका मन बड़ा ऊँचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरतवाहन नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यसेठ आगये, और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और अन्नद्वया नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और इनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और धनिक समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वसन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्होंने के शुभर्तुण-भवन में वे रक्खे गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ९५९ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ९६५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि “इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय तब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिली।” इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये बिना नहीं रहता—

‘यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कचित्’

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा; जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

### ८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह ‘अंग’ और चौदह ‘पूर्व’ में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतांबर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रैसठ शालाका-पुरुषों अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने “तिसष्टि-महा-पुरिस-गुणालंकार” नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि-लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शालाका-पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

### ९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृद् डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्ही पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य-कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने बिना नहीं रह सकते।



में उपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रंथमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीन सौ रुपया खर्च हो चुका था; किन्तु पीछे इस ग्रंथमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचन्द्र-ग्रंथमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रंथमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रंथ के प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिक्यचन्द्र ग्रंथमाला की ओर से मैं चवरे ग्रंथमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

### १० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी, शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न सकने-पर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे श्रेष्ठ मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विषयरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने ने इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रंथ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्होंने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ़ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रंथ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकावि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जसहरचरित और पायकुमारचरित अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिक्यचन्द्रग्रंथमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रंथ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रंथ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

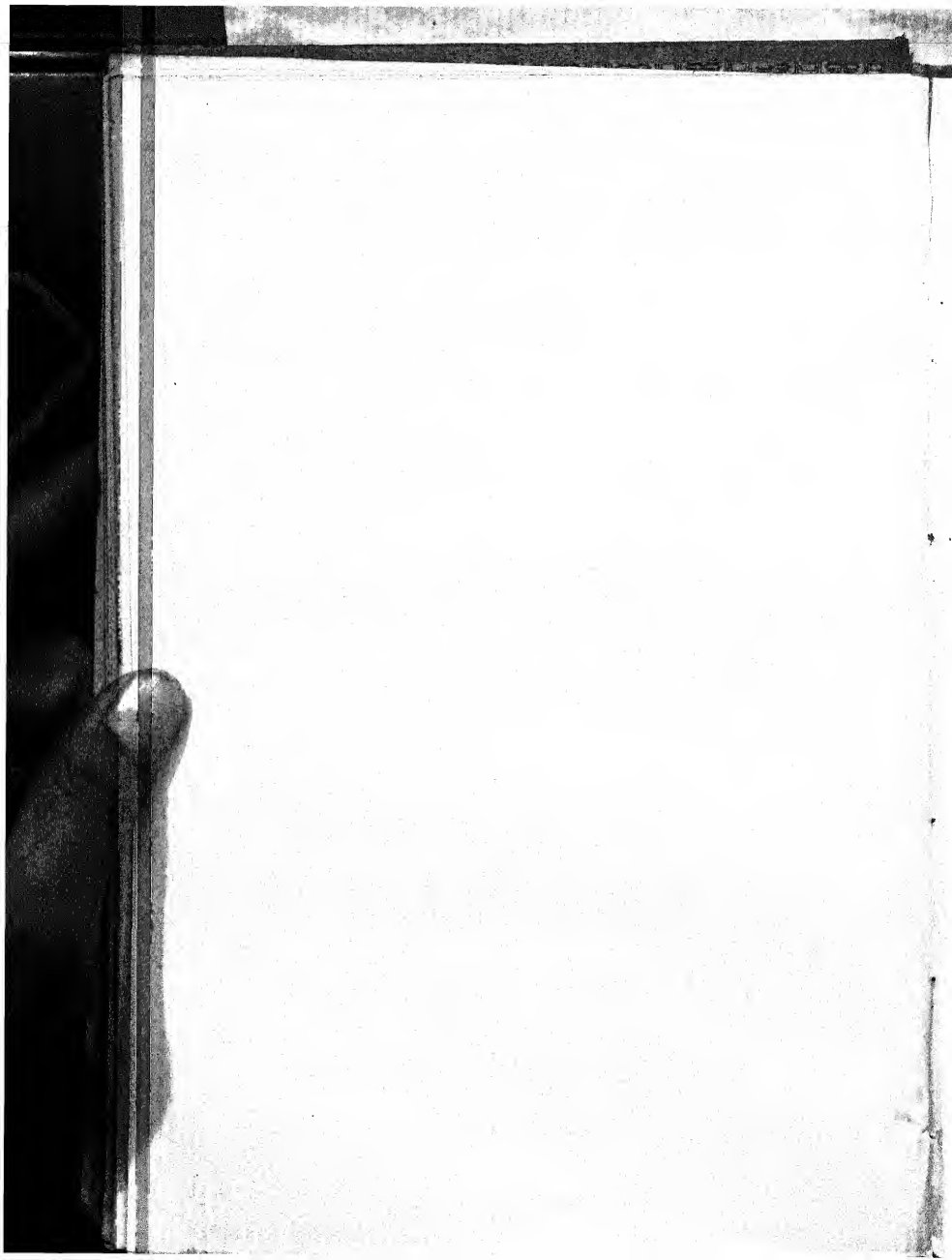
अमरावती }  
२८-८-३७ }

हीरालाल जैन  
सम्पादक और सहमंत्री



तिसट्टिमहापुरिसगुणलंकार  
णाम

# महापुराणु





I

सिद्धिवह्नमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥

पणविधि विग्घविणासणु गिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ॥ ५० ॥

I

सुपरिक्खिय रक्खियभूयतणुं  
पयडियसासयपयणयरवहं  
सुहसीलगुणोहणिवासहरं  
जुइणिजियमंदरमेहलयं  
सोहंतासोयरमियविवरं  
सुरणाहकिरीडपहिट्टपयं  
णवतरणिसमप्पहभावलयं  
हरिमुक्ककुसुमचित्तलियणहं

पंचसयधणुणयदिव्वतणुं ।  
परसमयमणियदुणणयरवहं ।  
देविंदेयं दिव्वासहरं ।  
पविमुक्कहारमणिमेहलयं ।  
उव्वासियवहुणारयविवरं ।  
अइपउरपसायपहिट्टपयं ।  
णिरुदुस्सहदुमंयभावलयं ।  
अरुहंतमणंतजसं अणहं ।

5

10

1. १. B देविंदेयं. २. M °दुम्मह°. ३. MBP अरहंत°.

1. 1. सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिरिव वधूस्तस्या मनोरञ्जनधित्तरञ्जकः; गिरंजणु पापराहितः; णेसरु सूर्यः. 2. गिरुवमसासणु उपमातीतमतः; परमेसरु परा उत्कृष्टा सा समवसरणानन्तचतुष्टयादिलक्षणा बाह्याभ्यन्तरलक्ष्मीस्तस्या ईश्वरः. 3. a भूयतणुं भूतविस्तारः, पृथिव्यादिप्रपञ्चः. 4. a नयरवहं नगर-मार्गम्; b दुण्णयरवहं दुर्गयाः सर्वथैकान्तप्रकाशकप्रमाणानि, तेषां रवाः प्रतिपादकशास्त्राणि ताव हन्ति निरा-करोति यः तम्. 5. b दिव्वासहरं नम्रमुद्राकरम्, दिग्वासोघरम्. 6. a जुइ द्युतिः; °मंदरमेहलयं °मन्दरमेखलकम्; b °मणिमेहलयं °रत्नमेखलकम्. 7. a असोय अशोकः; °विवरं पक्षिश्रेष्ठम्; b °विलम्. 8. a पहिट्टपयं प्रवृष्टपादम्; b °पहिट्टपयं आनन्दितलोकम्, ( प्रहृष्टप्रजम् ). 9. a °भावलयं °भामण्डलम्; b णिरुदुस्सहेत्यादि-णिरुदुस्सहा अतिशयेन सोढुमशक्याः प्रमाणविरुद्धत्वात्ते च ते दुर्मतभावाश्च मिथ्यागमप्रतिपादितार्थास्तेषां लयो निराकरणं यस्मात्. 10. a हरि इन्द्रः; b अणहं निष्पापम्.

सीहसंणछत्तयसहियं उद्धरियपरं सकिवं सहियं ।  
 दुंदुहिसरपूरियसुवणहरं बंधूअफुल्लसंणिहणहरं ।  
 पुरुएवजिणं जियकामरणं दूरजिहयजम्मजराकरणं ।  
 विरयं वरयं णियमोहरयं उद्धयभीमणियमोहरयं ।  
 पणमामि रविं केवलकिरणं मत्तासमयं भणियं किरणं । 15  
 अत्ता—अवरु वि पणविवि सम्महं विणिहयदुम्महं कोवपावविद्धंसणु ॥  
 जासु तित्थि मइं लद्धउ णाणसमिद्धउ णिम्मलुं सम्महंसणु ॥ १ ॥

## 2

णिम्महियमाणमायामयाहं जिणसिद्धसुरियुयदेसयाहं ।  
 साहण वि वरणंभोरुहाइं णहंदरिसियसुरणयमुहाइं ।  
 कयहरिसु सरसु सुमदुह चवंति कोमलपयाइं लीलाइं दिति ।  
 गंभीर पसण सुवणणदेह कंतिह कुडिल णं चंदरेह ।  
 सालंकारी छंदेण जंति बहुसंत्थअत्यगारव वहंति । 5  
 वोईहपुग्विल्ल दुवालसंगि जिणवयणविणिगंय सत्तभंणि ।  
 चउमुहमुहवासिणि सइंजोणि णसिसहेउ सा सोहछोणि ।  
 दुक्खक्खयकारिणि सोक्खखाणि पणवेवि सरासइ दिव्ववाणि ।  
 धम्माणुसासणाणंदभरिउ पुणु कहमि णिरहु णहेयचरिउ ।

४. MBP सिंहासणं ५. MB पुरएव°. ६. T notes पणयामिरविं as p and explains it as पणया-  
 मीति पाठे पणयो मोहः स एव यामी नाम रात्रिस्तस्या रविं स्फटकम्. ७. M णिम्मल°.

2. १. M °जिणदेवयाहं, but सुयदेवयाहं in the margin. २. MBG णहे दरिसिय°. ३. M  
 बहुअत्यगारवं संवहंति, but adds सत्थ in margin; P बहुअत्यगंथगारव वहंति. ४. M चोइह°; P  
 चउदह°; T चोइह°. ५. T सुणि° ६. M °विणगय°. ७. P सइत्यजोणि.

11. ७ उद्ध रियपरं उन्मुलितमिथ्यावादिनं उद्धृतमव्यं वा. 12. ७ आरक्तनखमित्यर्थः. 13. a जिय-  
 कामरणं जितकमसंग्रामम्. 14. a विरयं विरतं संयतम्; वरयं वरदम्; णियमोहरयं संयमोघरतम्;  
 ७ उद्धयं उद्धतनिजमोहरजसम्. 15. a मत्ता समयं परिग्रहसमयम्; मात्रा परिग्रहः तामस्यन्ति निराकुर्वन्ति  
 ये ते मात्रासाः मुनयः तेषां मतम् अर्भष्टम्; अथवा मत्तानां मार्गितानामा समन्तात् शमकं उपशमकम्; अन्यत्र  
 मात्रासमकं छन्दः 16. s म्महं वर्धमानम्.

2. 1. ७ सुयदेसयाहं °श्रुतपाठकानामुपाध्यायानाम्. 2. a पद्धपरमेष्ठिनामित्यर्थः; ७ णयं °नत°. ३.  
 ७ कुडिल कुडिला ली, पक्षे वक्रोक्तिः. 7. ७ णां सिसहेउ° निःश्रेयसयुक्तिः; सा लक्ष्मीः; सोहछोणि,  
 शोभाक्षोणिः, पक्षे, सा सोहछोणि सस्योवक्षोणिः. 9. a धम्माणु सा सणं धर्मेप्रतिपादकम्; ७ णिरहु निष्पापम्.

यत्ता—जेण सुपण सुहोहइं तिहुयणखोहइं हौति चारुकल्लाणइं ॥ 10

उप्पज्जांति पसत्थइं मुणियपयत्थइं मणुयहो पंच वि णाणइं ॥ २ ॥

## 3

तं कहमि पुराणु पसिद्धणासु  
उब्बद्धज्जूड भूमंगमीसु  
भुवणेकरामु रायाहिराउ  
तं दीर्णदिणधणकणयपयर  
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु  
दुग्गमदीहरपंथेण रीणु  
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि  
णंदणवणि किर वीसमइ जाम  
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्भ  
परिभमिरभमरवगुमगुमंति  
करिसरवहिरियदिचक्रवालि  
तं सुणिवि भणइं अहिमाणमेरु  
णउ दुज्जणभउंहावंकियाइं

सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरामु ।  
तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।  
जहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।  
महि परिभमंतु मेपाडिणयर ।  
दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु । 5  
णवयंदु जेम देहेण खीणु ।  
मायंदगोंछगोंदलियकीरि ।  
तहिं बिणिण पुरिस संपत्त ताम ।  
भो खंड गलियपावावलेव ।  
किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति । 10  
पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।  
वरि खज्जइं गिरिकंदरि कसेरु ।  
दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

यत्ता—वर णरवर धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥

खलुकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सरुग्गमे ॥ ३ ॥ 15

८. P तिहुयणु खोहइं.

3. १. MP ओबद्ध° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्; B नवद्वज्जूड. २. M बंदीण°. ३. MP मेपाडि°; B मेपाड°. ४. K मायंदगोंदिगोंदलिय°. ५. MBP खजउ. ६. M हुंहावंकियाइं; BP भउहावंकियाइं.

10. सुहोहइं सौख्यसमूहाः. 11. पयत्थ पदार्थ.

3. 1. *b* सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे. 2. *a* उब्बद्धज्जूड उद्बद्धज्जूड; *b* चोडहो चोड-  
देशचपस्य. 3. *b* तुडिगु कृष्णराजः. 4. *b* यत्र मेलपाटीयनगरे. 9. *a* तेहिं ताभ्याम्. 11. *a* दिचक्र-  
वालि दिशामण्डले; करिसर° गजस्वर°. 12. *a* अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य बिरुदमेतत्. 14. धवल-  
च्छिहे उज्ज्वललोचनायाः; सोणिमुह° कटिच्छिद्र°. 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि;  
भिउडिय° भुक्नुवित°.

4

चमराणिलड्डुविद्युत्तुगाइ	अहिसेयधोयसुयणत्तुगाइ ।
अविवेयइ दप्पुत्तालियाइ	मोहंधइ मारणसीलियाइ ।
सत्तंगरज्जभरमारियाइ	पिउपुत्तरमणरसयारियाइ ।
विससहजम्मइ जडरत्तियाइ	किं लच्छिइ विउसविरत्तियाइ ।
संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु	गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसुं । 5
तहिं अम्हह लइ काणणु जि सरणु	अहिमाणे सहुं वरि होउ मरणु ।
अम्मइयइंदरापहिं तेहिं	आयेणिवि तं पइसियमुहेहिं ।
गुरुविणयपणयपणियसिरेहिं	पडिवयणु दिण्णु णायरणरेहिं ।
घत्ता—जणमैणतिमिरोसारण मयतरुवारण	णियकुलगयणदिवायर ॥
भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर ॥ ४ ॥	10

5

वंभंडमंडवारुढकित्ति	अणवरयरइयजिणणाहमत्ति ।
सुहत्तुंगदेवकमकमलभसलु	णीसेसकलाविण्णाणकुसलु ।
पाययकइकव्वरसावउडु	संपीयसरासइसुरहिदुडु ।
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु	रणमरधुरधरुणुगुडुखंधु ।
सविलासविलासिणहिययथेणु	सुपसिद्धमहाकइकामधेणु । 5
काणीणदीणपरिपूरियासु	जसपसरपसाहियदसदिसासु ।

4. १. MBP देसु. २. MBP आयणिय; G आयणवि. ३. MB तिउरोसारण.

5. १. MBPK °वलुडु, but G °रसावउडु and marginal gloss रसावबुद्ध; T also रसाव-उडु and explains it as परिज्ञातरसः. २. MBP °वरणुविदुखंधु. ३. MP °वेणु.

4. 2. a दप्पुत्ता लियाइ दपोंद्वत्तया, दर्पोत्तालया. 3. a °मारिया °भुता; b पिउपुत्तं पितृ-पुत्रभर्तृविषदायिक्या, अथवा, पितृपुत्राभ्यां द्वाभ्यामपि कौडनासक्त्या. 4. a विससहजम्मइ कालकूट-सहजन्मना; b विउसविरत्तियाए विद्वज्जनविरक्त्या. 5. a णिव्विसेसु अज्ञातभेदः, गुणगुणविचाररहितः; b वेसु द्वेषः. 7. a अम्मइय-इंदरायनामानो द्वौ पुरुषौ. 8. b णायरणरेहिं चटुरन्तराभ्याम्. 10. ति मि रो सार ण अज्ञानानिवाकारकः.

5. 2. a सुहत्तुंगदेव कृष्णराजः, तत्प्रतिष्ठापितो जिनश्च. 4. a सच्चसंधु सत्यप्रतिज्ञः. 5. a °वेणु स्तेनः. 6. a काणीण° अकिंवित्कर°; °पसाहिय° °मण्डित°; °दिसासु° °दिङ्मुखः.

पररमणिपरमुहु सुद्धसीलु उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु ।  
 गुरुयणपयपणवियउत्तमंगु 'सिरिदेवियंगम्भुम्भवंगु ।  
 अण्णइयतणयतणुरुहु पसत्थु हत्थि व दाणोल्लियदीहहत्थु ।  
 महमत्तवंसधयवडु गहीरु लक्खणलक्खंकियवरसरीरु । 10  
 दुब्बसणसीहसंघायसरहु ण वियाणहि किं णामेण भरहु ।  
 घत्ता—आँउ जाहु तहो मंदिरु णयणाणंदिरु सुकइकइत्तणु जाणइ ॥  
 सो गुणगणतत्तिहँउ तिहुयाणि भल्लउ णिच्छउ पइं संमाणइ ॥ ५ ॥

## 6

जो विहिणा णिम्मिउ कव्वपिंडु तं णिसुणिवि सो संचलिउ खंडु ।  
 आवंतु दिट्ठु भरहेण केम वाईसरिसरिकल्लोलु जेम ।  
 पुणु तासु तेण विरइउ पहाणु घर आयहो अब्भागयविहाणु ।  
 संभांसणु पियवयणेहिं रम्मु णिम्मुकडंभु णं परमधम्मु ।  
 तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाणु तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु । 5  
 पुणु पवँ भणेपिणु मणहराईं पईंरीणइणीतणुसुहयराईं ।  
 वरण्हाणविलेवणभूसणाईं दिण्णैइं देवंगइं णिवसणाईं ।  
 अच्चंतरसालइं भोयणाईं गलियाईं जाम कइवयदिणाईं ।  
 देवीसुएण कइ भणिउ ताम भो पुप्फयंत ससिलिहियणाम ।  
 णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु गिरिधीरु वीरुं भरवणरिंदु । 10  
 पइं मणिणउ वाणिणउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्तराउ ।

४. P सिरिअम्बदेवि° B सिरिदेविअम्ब°. ५. M आउजाई. ६. P °भात्तिहउ though marginal gloss °चिन्तकः.

6. १. B omits this line. २. B omits a of this line. ३. M पुणु एण; P पुणु एम.  
 ४. MBP पहस्त्रीणीरणतणु°. ५. B दिण्णाईं देवगइणिवसणाईं. ६. B वीरभइरव. ७. MBPK °भाउ,  
 but GT मिच्छत्तराउ and gloss °रागः.

7. b उद्धरणलीलु उद्धरणस्वभावः. 9. a अचैयाकस्य तनयः ऐरणः; ऐरणस्य पुत्रो भरतः. 10. a °धयवडु  
 महामन्त्रिवंशध्वजपटः. 11. a सरहु अष्टापदः. 13. तत्तिहउ चिन्तकः; णिच्छउ निश्चयेन.

6. 3. a पहाणु मुख्यः. 4. b परमधम्मु जिनधर्मः. 9. a देवीसुएण भरतेन. 10. b भरव-  
 ण रिंदु वीरभैरवः अन्यः कश्चिद्दुष्टमहाराजो वर्तते, कथामकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति; P वीरभैरवः  
 कश्चिन्मिथ्यादृष्टो राजा. 11. a वीरराउ शूद्रकः.

पच्छिन्नु तासु जइ करहि अल्लु      ता घडइ तुज्जु परलोयकज्जु ।  
 तुहुं देउ को वि भव्वयणबंधु      पुरुष्वचरियभारस्स खंधु ।  
 अव्वत्थिओ सि दे देहि तेम      णिव्विग्घे लहु णिव्वहइ जेम ।  
 घत्ता—अइललियण गंभीरण सालंकारण वायण ता किं किज्जइ ॥  
 जइ कुसुमसरवियारउ अरुहु भडारउ सम्भावें ण शुणिज्जइ ॥ ६ ॥

15.

7

सियदंतपंतिधवलीकयासु      ता जंपइ वरवायाविलासु ।  
 भो देवीणंदण जयसिरीह      किं किज्जइ कव्वु सुगुरिससीह ।  
 गोवज्जिणहिं णं घणदिणेहिं      सुरवरचावेहिं व णिगुणेहिं ।  
 मइलियचित्तिहिं णं जरंघरेहिं      छिद्दणसिहिं णं विसहरेहिं ।  
 जडवाइणहिं णं गयरसेहिं      दोसायेहिं णं रक्खसेहिं ।  
 आचक्खियपरपुट्टीपलेहिं      वरकइ णिदिज्जइ हयखलेहिं ।  
 जो बालबुड्डसंतोसहेउ      रामाहिरासु लक्खणसमेउ ।  
 जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ      तासु वि दुज्जणु किं परि मै होउ ।

5

घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिगहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ वल्लु ॥  
 भणु किह करमि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥७॥ 10

8

तं णिसुणिवि भरहें वुत्तु ताव      भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव ।  
 सिमिसिमिसिमतकिमिमरियरंघु      मिलेवि कलेवर कुणिमगंधु ।

c. M पुरएव°. ९. M जय.

7. १. T जरहरेहिं. २. PG ण.

13. पुरुएव° आदिनाथ°.

7. 1. a धवलीकयासु धवलीकृतस्यः. 2. a जयसिरीह जयश्रीलक्ष्मीवाञ्छकः. 3. a गोवज्जिणहिं वाणीरहितैः, पक्षे किरणरहितैः. 6. a आचक्खिय भक्षित. 7. b लक्खणसमेउ व्याकरण-समेतः, पक्षे, लक्ष्मणसमेतः. 8. a सुम्मइ श्रूयते; कइवइ विहियसेउ कविपतिहेनुमाय तेन कृतः सेउ; पक्षे, प्रवरसेनो राजा-स प्रवरसेनो जैनः—तेन कृतं सेतुबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8. 1. b विमुक्कगाव विमुक्तगर्व. 2. b कुणिम कुथित.



ववगयविवेउ मसिकसणकाउ	सुंदरपणसि किं रमइ काउ ।
णिक्कारणु दारणु बजरोसु	दुज्जणु ससहावें लेइ दोसु ।
हयतिमिरणियरु वरकरणिहाणु	ण सुहाइ उलूयहो उईउ भाणु । 5
जइ ता किं सो मंडियसराहं	णउ रुच्चइ वियसियसिरिहराहं ।
को गणइ पिसुणु अविसहियतेउ	मुक्कउ छणैयंदहु सारमेउ ।
जिणचरणकमलभत्तिल्लएण	ता जंपिउ कव्वपिसल्लएण ।

धत्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणमि लक्खणु छंडु देसि ण वियाणमि ॥  
जा विरइय जयचंदहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समणमि ॥ ८ ॥ 10

9

अकलंककविलकणयरमयाइं	दियसुगयपुरंदरणयसयाइं ।
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं	णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं	अइहासपुराणइं णिममलाइं ।
भावाहिउ भौरवि भासु वासु	कोहलु कोमलगिरु काँलियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोण	णालोइउं कइ ईसाणु वाणु । 5

8. १. MBP सुहाय. २. P उयउ. ३. P छणइंदहु. ४. P पयासमि but marginal gloss कयं समानयामि वर्णयामि.

9. १. B दत्तिल°. २. MBP पायंजलि°. ३. M भारहिं; B भारहभासु. ४. MBP कालिदासु. ५. MP णालोयउ.

8. १. *a* ववगयविवेउ नष्टविवेकः; °कसणकाउ °कृष्णशरीरः; *b* काउ काकः. 4 *b* ससहावें स्वस्वभावेन; लेइ यहाति. 6 *a* मंडियसराहं मण्डितसरसाम्; *b* वियसियसिरिहराहं विकसितकमलानाम्. 7 *b* छणयंदहु पूर्णमानन्दस्य; सारमेउ कुक्कुरः. 8 *a* °भत्तिल्लएण °भक्तियुक्तेन; *b* कव्वपिसल्लएण काव्यराक्षसेन पुष्पवन्तेन. 9 लक्खणु व्याकरणम्; देसि देशी भाषा. 10 विरइय विरचिता; जयचंदहिं जगद्गन्धैः; समाणमि वर्णयामि.

9. 1. *a* अकलंक न्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकारः; कणयर वैशेषिकदर्शने मूलकारः; *b* दिय वेदपाठकः; सुगय बौद्धः; पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकारः; णयसयाइं युक्तयोऽभिप्राया वा. 2. *a* दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलुद्धातानि संगीतशास्त्राणि; *b* भरहवियारियाइं भरतमुनिर्कृतं नाट्यशास्त्रम्. 3. *a* पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; *b* अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टिपुराणाश्रिताः कथाः पुराणानि. 4. *a* भावाहिउ भावाधिकः अर्थगौरववान्; वासु व्यासो महाभारतकारः; *b* कोहलु कृष्माण्डः कश्चित्कविः. 5. *a* चउमुहु कश्चित्कविः; सयंभु पाण्डित्यद्वाराप्रायणकर्ता शालीशर्माः.

णउ धाउ ण लिंगु ण गणं समासु  
 णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति  
 णउ बुझिउ आयंमु सहधामु  
 पहु रुदुहु जडणिणासयारु  
 पिंगलपत्थारु समुहि पडिउ  
 जसइंधु सिंधु कल्लोलसिंधु  
 हउं वप्प गिरक्खर कुविखमुक्खु  
 अइदुग्गमु होइ महापुराणु  
 अमरासुरगुरुयणमणहरेहिं  
 तं हउं मि कहमि भत्ताभरेण  
 पहु विणउ पयासिउ सज्जणाहं

णउ कम्मं करणु किरियाणिवेसु ।  
 णउ जाणिय मइं पक्ख वि विहत्ति ।  
 सिद्धंतु धर्वलु जयधवलु णामु ।  
 परियच्छिउ णालंकारसारु ।  
 ण कय्यो वि महारइ वित्ति चडिउ । 10  
 ण कलाकोसलि हियवउ णिहिनु ।  
 णरवेसैं हिंडमि चम्मरक्खु ।  
 कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।  
 जं आसि कियंउं मुणिगणहरेहिं ।  
 किं णहि ण भमिज्जइ महुयरेण । 15  
 मुहि मसिंदुवैउ कंउं दुज्जणाहं ।

वत्ता—घरे घरे भर्मंड असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खण किं अक्खइ ॥

लैंइ मइं सो मोर्कल्लिउ खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

## 10

चारणावासकेलाससेलासिओ  
 सामवण्णो सउण्णो पसण्णो सुहो  
 गोर्भमुहो संमुहो होउ जक्खो मइं  
 विग्घविहावणी चारुचक्केसरी  
 वेरिणिहारिणी सुंभणी धंभणी

किणरीविणुवीणाझुणीतोसिओ ।  
 आइदेवाण देवाहिभत्तो सुहो ।  
 चित्तयंतस्स एयं अमेयं कहं ।  
 सत्थसारंभकल्लोलमालासरी ।  
 आसि जम्मंतरे हौतिया वंभणी । 5

१. BP गुण. ७. M कम्म. ८. MBP किरियाविसेसु. ९. M आयम°. १०. MBP धवलजयधवलणामु.  
 ११. M णालंकारु सारु. १२. B कयाइ. १३. K कहिउ. १४. MB कुचउ. १५. M किउ. १६. G भमइ.  
 १७. MB लहु. १८. MB. मोकल्लिउ.

10. १. MBP गोसुहो. २. MB °णिद्धारणी; P °णिहारणी.

7 a पयसमत्ति पदसमाप्तिः पदखण्डना. 9 a पडु पटुश्चतुरः; जडणिणासयारु जडत्वनशकः. 12 d कुविख-  
 मुक्खु गर्भमुर्खः. 13 b कुडएण कुडवेन घटेन. 17 दुण्णयगारउ अन्यायकारकः; विवरोक्खण विपरोक्षे  
 18 दुब्बोल्लिउ दुर्बलः.

10. 1 a चारणावास° मुनीश्वरवास°; °सेलासिओ °शैलाश्रितः; b झुणी ध्वनिः. 2 a सउण्णो  
 सपुण्यः; सुहो सुभः; b अमेयं कहं महती कथासु; एतां महती कथां चिन्तयतो मम गोमुखयक्षः संमुखो भवतु.  
 4 b सत्थसारंभ° शास्त्रमेव साराम्भः सुष्ठु जलम्. 5 a सुंभणी हिंसिका.

साहुदाणेण संजाइया जक्खिणी  
उज्जयंततथलीकाणावासिणी  
सुंदरे मंदरे कंदरे कीलरी  
पिकमायंदगोच्छेणं डिंभं णियं  
खुद्दवाईविवेयावहा वाइणी  
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई  
कव्ववित्थारदुत्तारमगे सही  
होउ बुद्धी महासत्थसामगिणी

णाणसम्मत्तवंती गुणावेक्खिणी ।  
सव्वभासासमूहं समुब्भासिणी ।  
तुंगणग्गोहपारोहं हिंदेलिरी ।  
संथवंती हसंती चवंती पियं ।  
अंबिया गोरि गंधारि सिद्धाइणी । 10  
णायचूडामणी देवि पोमावई ।  
ठाँउ मज्झं मुहे देवया भारही ।  
परिसो छंदथो भण्णप सगिणी ।

घत्ता-मई णिमियहो उयारहो सहगहीरहो जो णरु भसइ णिवंधहो ॥

जणदुव्वयणहिं दडुहो तहो दुवियडुहो दुज्जमु होउ मयंधहो ॥ १० ॥ 15

## II

अहवा हउं णिग्घिणु पाँवयम्मु  
मिच्छाँहिरामरंजियविवेउ  
उमैयरसभावणिरंतराई  
लइ हत्थेँ झंपमि णडु सभाणु  
लँइ तुच्छबुद्धि णिण्णट्टाणु  
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण  
करिमयरमीणजलयरवमालि

ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।  
ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।  
अलियाईं जि कहमि कहंतराई ।  
लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।  
लइ अक्खमि एउ महापुराणु । 5  
लइ कहमि कव्वु किं वित्थरेण ।  
चललवणजलहिचलयंतरालि ।

३. P कीलिणी. ४. P °हिंदेलिणी. ५. MBP °गोछेण. ६. B omits this foot. ७. BP उवयारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा. ८. K होइ.

11. १. M पावकम्मु. २. MB मिच्छाहिमाण°; P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम°. ३. M उग्गय° and gloss उत्कट. ४. MBP अइतुच्छ°. ५. MBP करमि.

7 a उज्जयंत ऊर्जयद्विरि, गिरिनगरपर्वतः 8 b णग्गोह वटवृक्षः. 9 a खुद्दवाई° खुद्दवादिविवेकोप-  
घातिका. 11 a पोमवत्ता हवत्ता पद्मपत्राभमुखी; b णायचूडामणी त्रिकणसर्पयुक्तमस्तका. 12 a सही  
सखी सहाया. 13 a महासत्थसामगिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता. 14 भसइ निन्दति; णिवंधहो  
महापुराणस्य. 15 दुवियडुहो दुर्विदग्धस्य; मयंधहो मदान्धस्य.

11. 2 a मिच्छा हिराम° मिथ्या असत्त्वं यन्निर्गन्धयादिकं तत्राभिरामः अत्यासक्तिस्तया रञ्जितो  
विवेकी यस्य सः; b °भेउ °भेदो विशेषः. 3 a उग्गय उत्पन्नः. 4 a णडु सभाणु भानुयुक्तं नमः; b  
जलणिहाणु समुद्रः. 7 a °वमालि °कोलाहले.

दोचंदसूरपयडियपईवि      जंबूतरुलंछणि जंबुदीवि ।  
 खारंभोणिहिसामीवसंगि      सुरसिहरिहि संतिउ दाहिणंगि ।  
 सरिगिरिदरितरुपुरवैरविचिउ      पत्थत्थि पसिद्धउ भरहखेत्तु । 10  
 तहु मज्झि परिट्टिउ मगंहदेसु      जं वण्णहुं सक्कइ गेय सेसु ।  
 मुहि घुल्लइ जासु जीहासहासु      जसु णाणि णत्थि दोसावयासु ।

घत्ता—सीमारामासामहिं पविउलगामहिं गजंतहिं धवलोहहिं ॥  
 सोहइ हलहरसत्थहिं दाणसमत्थहिं णिच्चं विय णिल्लोहहिं ॥ ११ ॥

## 12

अंकुरियइ णवपल्लवघणाइं      कुसुमियफलियइं णंदणवणाइं ।  
 जहिं कोइलु हिंडइ कसणपिंड      वणलच्छिहे णं कज्जलकरंडु ।  
 जहिं उड्डिय भमरावलि विहाइ      पवरिंदणीलमेहलिय णाइ ।  
 ओर्येरिय सरोवरि हंसपंति      चल धवल णाइं सण्णुरिसकित्ति ।  
 जहिं सलिलइं मारुयपेल्लियाइं      रविसोसभण व हल्लियाइं । 5  
 जहिं कमलइं लच्छिइ सहं सणेहु      सहं ससहरेण वडुउ विरोहु ।  
 फिर दो वि ताइं महणुम्मवाइं      जाणंति ण तं जडसंभवाइं ।  
 जहिं उच्छवणइं रसगन्धिमाइं      णावइ कव्वइं सुकइहिं तणाइं ।  
 जुज्झंतमहिसवसहुच्छवाइं      मंथामंथियमंथणिरवाइं ।  
 वैवल्लुद्धपुच्छवच्छाउलाइं      कीलियगोवालाइं गोउलाइं । 10  
 जहिं वउरंगुल कोमलतणाइं      घणकणकणिसालाइं करिसणाइं ।

१. M पुरवर. ७. B मगहएषु. ८. M पुलय. ९. MB °रामहिं; P °रामारम्महिं.

12 १ M अवयरइ; BPT उवयरइ. २ MBP कमलहुं सहं. ३ P °गन्धिमाइं. ४ M धवलुद्धपुच्छ°.

9 b सुरसिहरि मेरुः 11 b वण्णहुं वर्णयितुम्; सेसु धरणेन्द्रः ( शेषः ). 12 b दो सा व या सु दोषावकाशः.  
 13 °सामहिं °इयामलै; धवलोहहिं बलीवर्देसमूहैः. 14. हलहरसत्थहिं कर्षकसमूहैः; णिल्लोहहिं  
 निलोभैर्निचितलोहैश्च.

12, 2 a कोइलु कोकिलः; कसणपिंडु कृष्णवर्णः कृष्णवरीरः. 3 a विहाइ विभाति; b °मे हलिय  
 °मेचला. 4 a ओय रिय अवतीर्णा; 5 a मारुयपेल्लियाइं वायुना प्रेरितानि; b हल्लियाइं कम्पितानि. 7 a  
 महुणुम्मवाइं समुद्रमथनोद्भूतौ; b जडसंभवाइं जलजन्मानौ अज्ञानत्वाच्च जानन्ति. 8 a रसं. इक्षुरसः  
 वृक्षारादिश्च. 9 b °मन्यणि° गोपी. 11 b कणिसालाइं कणिसयुक्तानि.

घत्ता-तर्हि लुहधवलयिमंदिरु गयणाणंदिरु गयरु रायगिहु रिद्धउ ॥

कुलमहिहरथणहारिण वसुमङ्गणारिण भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

## 13

संकेयागयविरहीयणाइं

बहुलोयदिण्णणाणाफलाइं

जहिं महुगंङ्गसहिं सिंचियाइं

सीमंतिणिपयपोमाहयाइं

पियमण्णिणसुहवाणासणाइं

पडिखलियसूरभावियरणाइं

उक्कलियालइं णवजोव्वणाइं

जहिं सीयलाइं झसमाणियाइं

जहिं जणंलुंचणु कंठयकरालु

बाहिरि णिहियउ वियसंतु कोसु

जहिं भमरु तर्हि जि संठिउ सुहाइ

सासोयपवड्ढियकंचणाइं ।

णावइ कुलाइं धम्मज्जलाइं ।

विभरियाहरणहिं अंचियाइं ।

विर्यसंतविडववुड्ढीगयाइं ।

जहिं संदरिसियवाणासणाइं ।

5

उज्जाणइं णं भावियरणाइं ।

णिरु सच्छइं णं सज्जणमणाइं ।

परकज्जसमाणाइं पाणियाइं ।

जलि गलिणें ल्हिक्कावियउ णालु ।

भणु को व ण ढंकरु गुणहिं दोसु ।

10

संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं ।

घत्ता—कुसुमरेणु जहिं मिलियउ पर्वणुल्लियउ कणयवणु महु भावइ ॥

दिणयरजूडामाणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसंति but gloss विकसित. २ M उक्कलिवालइं. ३ PK जणुलुंचणु. ४ M B P उद्धुल्लियउ and gloss in P उच्छलित.

12 लुह सुधाचूर्णम्. 13 कुलमहिहरथणहारिण कुलपर्वता एव स्तनाः तान् धरति; आइद्धउं गृहीतम्.

13. 1 a संकेत्यादि-संकेतेनागता विरहिज्जना येष्वाणेषु, कुलपक्षे संकेतेन नागता विरहिज्जना येषु, b सासोएत्यादि-वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्धिता काश्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षा येषु; अन्यत्र, अशोकैः हृषैः सह प्रवर्धितानि काश्चनानि सुवर्णानि यत्र. 3 a महुगंङ्गसहिं मयजुलकैः; b विभरिय विस्मृतानि साध्याणि वा. 4 a पयपोमाहयाइं पदपद्माहृतानि; b विडव विटपाः शाल्माः, अन्यत्र विडव विट्टा इव. 5 a पियेत्यादि-वनपक्षे, पिकानामभिमतः सुभगाः आणाशब्दास्तेषामसन्नं प्रचरणं येषु; युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिताः अज्ञीकृताः सुभगानामाज्ञास्त्वेना आदेशशब्दाः 'संप्राप्तं जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादयः येषु. 6 a पडिखलियेत्यादि-वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरणं यत्र; युद्धपक्षे, प्रतिस्खलितं शूराणां सुभदानां भावियरणं प्रतापप्रसरणं यत्र; b भावियरणाइं भावितं परिकलितं रणं यैः पुरुषैः. 7 a उक्कलियालइं कल्लोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि. 8 b परकज्जेत्यादि-परकार्ये सति जनाः शीतलाः, स्वकार्ये उत्तावलाः (?). 9 b ल्हिक्कावियउ गोपितम्. 13 परिहिउ परिहितः.

## 14

जहिं कीलागिरिसिहरंतरेसु  
 सिक्खंति पक्खि दरदावियाइं  
 जहिं पिक्खसालिछेत्तं घणेण  
 पंगुत्तं दीहें पीयलेण  
 जहिं संचरति बंहुगोहणाइं  
 गोवालबाल जहिं रसुं पियंति  
 मायंदकुसुममंजरि सुपण  
 जहिं समयल सोहइ वाहियालि  
 हरि भामिजंति कंसासणेहिं  
 णिजंति णाय कण्णारयहिं  
 रुज्जंति गयासा ईरिपहिं  
 आसयर दिंति सिक्खावयाइं  
 कप्पूरविमीसु पवासिपहिं  
 घत्ता—ससिपहपायोरहिं गोउरदारहिं जिणवरभवणसहासहिं ॥

कोमलदलवेल्लिहरंतरेसु ।  
 विडमणियमम्मणुल्लावियाइं ।  
 छज्जइ महि णं उप्परियणेण ।  
 णिवडंतरीछपल्लवचलेण ।  
 जव कंगु मुग्ग ण हु पुणु तैणाइं । 5  
 थलसररुहसेज्जायलि सुयंति ।  
 हयचंचुपण कयमण्णुपण ।  
 वाहणपयहय वित्थरइ धूलि ।  
 अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं ।  
 णाय व्व णायकण्णारयहिं । 10  
 सीस व्व गयासाईरिपहिं ।  
 णं मुणिवर गुणसिक्खावयाइं ।  
 जहिं पिज्जइ सल्लि पवासिपहिं ।

मददेउलहिं विहारहिं घरवित्थारहिं वेसावासविलासहिं ॥ १४ ॥

15

## 15

जं सोहइ जहिं अविहंडियाइं  
 सिरिं णिहियकणयकलसइं घराइं

गंयणं व केउसयमंडियाइं ।  
 णावइ अहिसित्तजिणेसराइं ।

14. १ MP गाईहणाइं, २ MBP तिणाइं, ३ MBP महु; gloss in M सिहरसम् but in P इक्षुरसम्. ४ MBPK कुसासणेहिं but gloss in K तर्जनकेन. ५ MBP जलपरिहपायारहिं.

15. १ MBP गयणयलि. २ M सिरिणिहिय°.

14. 1 a कीला गिरि° कीडापर्वत°; b वेल्लि हरंतरेसु बलीगृहान्तरेषु. 2 a दरदा वियाइं ईषदृशितानि; b °म णिय° रतिकूजितं विकसितकामोद्रेकवचनम्. 3 b छज्जइ छाद्यते; उप्परियणेण उपरितनेन वल्लेण. 4 a पंगुत्तं पंगुरणेन; b रिंछं शुक्र°. 6 a रसु इक्षुरसः; b थलं सररुहं स्थलकमल°. 7 a सुएण शुकेन; b कयमण्णुएण कृतमन्युना, भ्रमरैः सह संगः कस्माकृत इति कोपेन. 8 a वाहियाली बाह्याली राजमार्गः; b बाहण° अश्वादि°. 9 a हरि अश्वाः; कसासणेहिं तर्जनकेन. 10 a णाय नागा हस्तिनः; b णाय नागाः सर्पाः. 11 a गयासा गजा अश्वाश्च, आईरिएहिं आरोहकैः; b गयासाईरिएहिं गताशा आचार्यास्तेषां वचनैः. 13 a °विमीसु °विमिश्रम्; पवासिपहिं पथिकैः; b पवासिपहिं प्रपाश्रितैः. 14 ससिपहपायारहिं चन्द्रप्रभावत् प्राकारैः.

15. 1 a अविहंडियाइं निरन्तराणि, अविच्छिन्नानि; b केउ केतुर्महो ध्वजा च, असंख्यातद्वीपापेक्षया केतु-  
 शतानि कथ्यन्ते. 2 b अहिसित्तजिणेसराइं अभिषिक्तो जिनेश्वरो यैस्ते, तेषां मस्तकेऽभिषेकार्थं कलशाः सन्ति.

अवियाणियकरदप्पणविसेसि  
दीसइ सबिबु महुमत्तियाहिं  
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु  
अंगणवावीसयदलहु जाइ  
संजणियबहलमयरंदरंगु  
तं चेय खुडइ मत्तउ विहंगु

माणिकसइयमिच्चीपपसि ।  
मणिवि सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।  
णिद्धाडिउ सासाणिलि घुलंतु । 5  
जलकीलिरवालावयणि ठाइ ।  
जहिं सररुहु संबोहइ पयंगु ।  
सिरिहरहो असुंदर दुट्टसंगु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससिरंविअंतविहूसिउ ॥  
उवरिविलंबियतरणिहे सग्गे धरणिहे णावइ पाहुड पेसिउ ॥ १५ ॥ 10

## 16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु  
जहिं गेहहो भरिउ विहाइ माणु  
कामिणिकमवियलियकुं कुमेण  
कणिरंणियसुकिंकिणिणीसणेहिं  
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि  
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ  
जहिं धूवधूमकयमणवियार  
जहिं विजयवडहदुंदुहिं सरेहिं  
णवदिणयरकरतं विरइ गोसि

बहुसंथउ णं जडचट्टवग्गु ।  
पूरिउ पत्थेणं कणेहिं दोणु ।  
णिल्लसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।  
गुप्पइ णिवडंतहिं भूसणेहिं ।  
तंबोलुग्गालइ जणियसंकि । 5  
णं अमरविमाणु णहाउ पडिउ ।  
जलहरमंतिणं णच्चंति मोर ।  
सुव्वंइ णं किं पि णारीणेहिं ।  
विट्ठियणइ जहिं पंगणपपसि ।

३ M °रविअंति विहूसिउ,

16. P पत्थेहिं, २ MBP कणिराणियकिंकिणी° ३ P सुम्मइ.

4 a स बिं बु स्वप्रातिविम्बम्; b सवसि सपली; तियाहिं स्त्रीभिः. 5 a अलयावलि कुरलकेशपंक्तिः; b सा सा-  
णिलि मुखश्चासानिले. 6 b पयंगु पतङ्गः सूर्यः. 8 a विहंगु हंसः. b सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपतेः  
पुरुषस्य दुष्टसंगोऽतीव दुःखदः. 9. णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्; ससिरं विअंत विहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणि-  
विभूषितम्. 10. तरणि सूर्यः; पाहुडु प्राप्तम्.

16. I b बहुसंथउ बहु रत्नवस्त्रादिकं तेन संस्त्रुतः; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्गः. 2 b पत्थेण प्रस्थेन,  
पक्षे पार्थेन बाणेन कृत्वा पुरितो द्रोणाचार्यः. 3 b णिल्लसइ स्खलति; जंतु गच्छन्. 4 b गुप्पइ पतति.  
5 a खुप्पइ स्खलति. 6 a राउलु राजगृहम्; रेहइ शोभते. 7 a °कयमणवियार °कृतमनोविकाराः  
°कृतसंवेहाः मयूराः 8 a विजयवडह° विजयपट्टह°. 9 a गोसि प्रभाते.

घत्ता—झेंडु जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं चलचोवाणहिं ताडिउ ॥ 10  
जणियजणाणूरायहिं परकइवायहिं णावइ लोउ भमाडिउ ॥ १६ ॥

17

तहिं सेणिउ णामें अत्थि राउ  
कजेसु दच्छु संजायवेउ  
सीयामणु व्व रामाहिरामु  
णियसमयणिसेवियइडुकामु  
पविंदंडो इव णिहलियलोहु  
वयधारि व गुरुयणि मुक्कमाणु  
जोईसरु व्व हयरोसहरिसु  
जाणइ विग्गह संधाण ठाणु  
सत्तंगु वि पालइ रज्जु केम  
पवणो इव फेडियमंदमेहु  
मंडलियमउडपरिहिट्टवरणु

गारुडगुरु व्व विण्णायणाउ ।  
रिउवंसडहणि णं जायवेउ ।  
सुरो इव परदुल्लंघधामु ।  
पावणि व पर्यडुद्दामथामु ।  
मयमारउ व्व णासियमओहु । 5  
सुरवरकरि व्व अविहंडदाणु ।  
णं खत्तधम्म थिउ होवि पुरिसु ।  
णं वेय्योयकरणु महापहाणु ।  
पयईणिबडु णियदेहु जेम ।  
गोवालु व कयमहिस्सीसणेहु । 10  
जिणणाहु व णिहिलिणिरायसरणु ।

घत्ता—जैवरेकहिं दिणि राणउ सो आसीणउ सिंहासणि दीहरकर ॥  
चेळ्ळिणिदेविई मंडिउ णं अवहंडिउ वल्लरीइ सुरतखरु ॥ १७ ॥

17. १ MBP विग्गहु संधाणु ठाणु. २ MBP वइयाकरणु. ३ MBP अवरेकहिं. ४ P सह आसी-  
णउ. ५ M चेळ्ळणदेवी; B चेळ्ळिणि P चेळ्ळणदेविहि.

10 झेंडुउ कन्दुक; चोवाण गेडी (यष्टि). 11 परकइवाय हि मिथ्यादष्टिकविभिः.

17. 1 ष विण्णायणाउ न्धायकुशलः; पक्षे विहातसर्पः. 2 a संजायवेउ शौघकारी. 3 ष परदुल्लंघ-  
धामु शत्रुभिरलंघ्यः, सूर्य इव अजिततेजाः 4 ष पावणि पवनपुत्रो हनुमान भीमो वा; पर्यडुद्दामथामु उत्कट-  
पराक्रमः 5 a पविंदंडो वज्रदण्डः; णिहलियलोहु निर्दालितलोमः, पक्षे °लोहः; ष मयमारउ व्याधः;  
णासियमओहु नाशितमदौघः, पक्षे नाशितमृगौघः. 6 ष अविहंडदाणु अविखण्डदानः, दानं मदस्त्यागश्च. 7 a  
°जोईसरु महामुनिः. 9 ष पयई° प्रकृतयो लोका वातापित्तलेष्माणश्च. 10 a °मंदमेहु° अल्पमेघः, पक्षे, अल्प-  
मेघाः, मन्दमेघाः इतिकर्तव्यतामूढाः. 11 a °परिहिट्टु° परिघृष्ट°; ष णिहिलिणिरायसरणु निखिलचुराजधारणं,  
पक्षे, निर्गतरागाणां मुनीनां शरणम्. 12 अवहंडिउ आलिङ्गितः.



अतुलियबलखलकुलपलयकालु  
 तामायउ तहिं उज्जाणबालु  
 अणवरयविहियसामंतसेव  
 कुलुमसरपसरपसमणसमत्थु  
 अहिमयरखर्यरणरणमियपाउ  
 आहंडलणिम्मियसमवसरणु  
 चउतीसातिसयविसेसवंतु  
 परमपउ परसु महाणुभाउ  
 उप्पाइयकेवल्लं विमलणाणु  
 जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु  
 तं गिणुणिवि दुज्जणहिययसल्लु  
 परिवड्डियजिणधम्माणुराउ  
 लहु पणविउ सत्तपयाइं गंपि

जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।  
 सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।  
 सो पभणइ भो भो गिणुणि देव ।  
 णीसेसमंगलासउ पसत्थु ।  
 तेल्लोक्कणाहु जिणु वीयरउ । 5  
 चउदेवणिकायाणंदकरणु ।  
 अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।  
 तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।  
 अट्टविहपाडिहेराहिहाणु ।  
 विउल्लइरि पराइउ वड्डमाणु । 10  
 परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।  
 आसणु मुणवि रायाहिराउ ।  
 पहरु थुइवयणु कैरंतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिडुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥

जय गिहयणियामय भरहणियामय पुप्फयंततेयाहिय ॥ १८ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइण

महाभवभरहाणुमाणण महाकव्वे सम्मइसमागमो णाम

पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥

॥ संधि ॥ १ ॥

18. १ B °बलु. २ M °खयरणिव°. ३ MB °केवलविमल°. ४ M विउलइर. ५ MBP कहंतु.

18 1 b जामच्छइ शवदास्ते. 2 b °बाहुडालु °प्रलम्बहस्तः. 4 a कुलुमसर° काम°; b णीसेस-  
 मंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रयः 5 a अहिमयर° आदित्य°. 6 a आहंडल° इन्द्र°. 7 b अणंतु शुद्धात्म-  
 द्रव्यापेक्षयान्तः, संतु पयोपेक्षया सान्तः. 10 b विउलइरि विपुलाचले; पराइउ प्राप्तः. 13 a गंपि गत्वा;  
 a करंतु उच्चरन्. 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित. 15 गिहयणियामय निहतनिजोःग; भरहणियामय  
 भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामकः; पुप्फयंततेयाधिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोधिक.

पणिवांड करेवि पसणमणु भसिरायरहसुच्छलिउ ॥  
सो णरवइ सहं गियपरियणिण पासु जिणिदहु संचलिउ ॥ धुवकं ॥

पहयाणंदमेरि बलु चलिउ  
भाविणि का वि देवगुणभाविणी  
का वि सचंदण सहइ महासइ  
कुचलउ का वि लेइ जसघारिण  
रूपयथालु का वि घुसिणालउ  
पवरकसणगंधोहकरंबउ  
कणयवतु काइ वि करि धरियउ  
णावइ णहयलु उडुविप्फुरियउ  
का वि ससंख समुदसही विव  
का वि सदप्पण वेसावित्ति व

पुरणारीयणु हैरिसुप्पेल्लिउ ।  
चलिय सें कमलहत्थ णं गोमिणि ।  
णं मलयइरिणियंबवणासइ । 5  
णं वररायवित्ति रिउदारिणि ।  
ससिंबिबु व संझारायालउ ।  
उवरजंतु व णंवरविंबिबउ ।  
इदणालमउ मोत्तियभरियउ ।  
गुरुचरणारविडु संभरियउ । 10  
का वि सकलस णिहाणमही विव ।  
का वि सरस कइकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron:—

आदित्योदयपर्वताद्गुरुतराचन्द्रार्कचूडामणे-  
रा हेमाचलतः कुशेनिलयादा सहबन्धाद् वृढात् ।  
आ पातालतलादहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
कीर्तिर्यस्य न वेदि भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

GK give it at the beginning of the third Samdhi and have उरतरात् for गुरु-  
तरात्; चूडामणे: for चूडामणे: and कीर्तिः कस्य न वेत्ति for कीर्तिर्यस्य न वेदि.

1. १ M पणवाड. २ MB ०रयसु०. ३ MBP रहसुप्पेल्लिउ. ४ MBP देवगुणभाविणी. ५ MBP  
सहत्थकमल. ६ P णं रवि०.

1. 1 रहसु चलिउ हर्षेण उद्गतः 2 पासु पार्श्वम्. 3 b उ प्पेल्लिउ प्रेरितः 4 a भाविणि भामिनी ली;  
भाविणि भावनायुक्ता; b गोमिणि लक्ष्मीः 5 b ०व णा स इ ०वनस्पतिः. 6 a कुचलउ नीलोत्पलं पृथ्वी-  
मण्डलं च. 7 a घुसिणालउ कुङ्कुमयुक्तम्; ०रायालउ ०रागयुक्तम्. 8 a ०कसणगंधं ० कृष्णागुरु कस्तूरिकादि  
वा; b उवरजंतु राहुणा प्रस्थमाम्. 9 a कणयवतु कनकपात्रम्. 10 a उडु० नक्षत्रं. 11 a ससंख  
शंखयुक्ता; समुदसही पृथिवी; b णिहाणमही निधानघटयुक्ता पृथ्वी. 12 b सरस इक्षुरसादियुक्ता शृंगारादि-  
रसोपेता च.

का वि जिणिदमत्तिपम्भारै  
काहि वि दिट्ठउ पयड्ठ थणत्थलु  
मयणकुसवणरेहौरुणियउ  
काहि वि थुलई हारु मणिमंडिउ  
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं

णच्चइ भरहभाववित्थारै ।  
णाई गिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।  
समवतेण पिर्पण ण गणियउ । 15  
णावइ कामे पासउ मंडिउ ।  
वज्जंतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

घत्ता—आरूढंउ महिवइ मत्तगइ मयजलधुलियचलालिगणे ॥

णं महिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

## 2

चोइउ कुंजरु कमसंचारै  
चामरुचवल्ले छंतंधारै  
पत्तु णरेसरु तियसरवणणउं  
णिम्मिउं सइं सोहम्मपहाणं  
माणसंभमणितोरणदामहिं  
जलखाइयधूलीपायारहिं  
वैलीवणपरिभमियमरालहिं  
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं  
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं  
सरि ग म प ध णी सरसंचायहिं  
उव्वसिरंभाणच्चणभावहिं  
जं रेहइ तहिं राउ पइट्ठउ

गंडालीणभमरझंकारै ।  
गच्छमाणु संहं णियपरिवारै ।  
दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउं ।  
ठियउ एक्कजोयणपरिमाणं । 5  
कप्पियकप्पपायवारामहिं ।  
तियससरासणवण्णवियारहिं ।  
वेईहरणाणाणडसालहिं ।  
खयरुखाइयकुंमुमोमालहिं ।  
वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।  
तुंबुरुणारयगेयणिणार्यहिं । 10  
कणरणंतआलावणिणार्यहिं ।  
परमेसरु सवडंमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ. ८ BP विण व. ९ MBP धुलिय. १० MBP आरूढु महीवइ.

2. १ M छतं धारै; P छत्ताधारै. २ P णिय सह परिवारै. ३ M वल्लिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं.

13 b भरहभाववित्थारै संगीतभावविस्तारेण. 14 b गिरंगकुंभिकुंभत्थलु काम एव गजस्य कुम्भस्थल-  
मिव. 15 a मयणकुस° नखं; b समवतेण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भत्री. 16 b पासउ बन्धनपाशः.  
17 a °सहासहिं °सहसैः. 18 मत्तगइ मत्तगजे. 19 महिहरि पवैते.

2. 1 a कमसंचारै चरणसंचरणेन. 2 a °चवल्ले °चपलेन. 3 a °रवणणउं रम्यस्य. 5 b कप्पिय°  
विकुर्वणया कृत°. 6 b तियससरासण° इन्द्रधनुः. 7 b णडसालहिं नाव्यशालाभिः. 8 a °वमालहिं  
°कोलाहलैः; b कुसुमोमालहिं कुसुमानामव समन्तान्मालाभिः. 11 b आलावणि वीणा. 12 a जं रेहइ  
यत् समवसरणं शोभते; b सवडंमुहु संमुखः.

वत्ता—सीहोसणसिहरासीणु जिणु णिम्मल्लु जर्णजणणसिहर ॥  
पारुद्धउ थुणहु णराहिविण भुवणंभोरुहदिवसयर ॥ २ ॥

## 3

जय सयल-	भुवणयल-	
मलहरण	इसिसरण ।	
वरवरण-	समधरण ।	
भवतरण	जरमरण-	
परिहरण	जय वरुण-	5
वइसवण-	जमपवण-	
दणुदमण-	सिरिरमण-	
दिवसयर-	फणिखयर-	
ससिजलण-	सिरणमण-	
मउडयल-	मणिसलिल-	10
धुर्यवमल-	कमकमल ।	
जय णिहिल-	विहिक्कुसल ।	
णयमुसल-	हयपवल-	
सुयसवल-	दियकविल-	
सिवसुणय-	कइकुणय-	15
वहदलण	मयमलण ।	
सवरहिय	उहरहिय ।	

५ MBP सिहासण°. ६ B जिणु जणणति°.

3. १ B जलमरण. २ BP भुवविमल. ३ MBP कयकुणय° but GK. कइकुणय and T कवि-  
कुणय°. ४. MBP मयमहण. ५ B omits दुहरहिय.

13 °जणणति °संसारदुःखम्. 14 थुण हुं स्तोतुम्.

3. 2 b इति° कवि°. 7 a दणुदमण° इन्द्रः; b सिरिरमण° विष्णुः; वरुणादिउवलनपर्यन्तानां देवानां  
शिरोनमनमुकुटतलमणिसलिलघौतकमकमल. 12 a-b णिहिलविहि° सागारानागारसंबन्धि सकलमनुष्ठानम्.  
13 a णयेत्वादि - नया एव सुसलास्तेहताः प्रबलद्विजादीनां कुनयपथाः येन. 16 b मयमलण मदचूर्णकर्ता.  
17 a सवरहिय स्वपरहित;

मुणिमहिय	महमहिय ।	
सुरहिरस-	विससरिस ।	
कुसुमसर-	अणवसर ।	20
जय दुरह-	हरिसरह ।	
बुहतिलय	सुहणिलय ।	
रइविलय	जुइवलय-।	
जियतरणि	जय करुणि ।	
जडदामिर-	मणभमिर-।	25
घणतिमिर-	हरमिहिर ।	
जय सुमुह	जय समह ।	
जय सुमण	जर्यं गयण-।	
जुयसुमण-	पहुंगमण ।	
जर्यं चालियचमरिरुह	जय ललियसुरकुरुह ।	30
जर्यं गहिरमहुरहुणि	जय चरमपरममुणि ।	
जय विसयविसिगरुल	जयधवल जसधवल ।	
जय रसियजसवडह	गयगरुह जय अरुह ।	

यत्ता—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेपिणु चउगइहे ॥

जर्यं मयमयणिवहमयाहिवइ मई णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥

35

६ MBP गयणयल°. ७ B णहगमण. ८ B omits this line. ९ B omits this line. १० MB जय जय मयणिवह°. ११ B णहगमण.

18. b महमहिय मखाः यज्ञाः मथिता येन, अथवा, महसु पूजासु महितः पूजितो वाञ्छितो वा.  
19 a सुरहिरस° गोदुग्धम्; °विससरिस विपं तत्र समः 20 b °अणवसर °अविषय. 21  
a-b दुरहहरिसरह दुष्पापसिद्धस्याष्टापद. 24 b करुणि करुणायुक्त. 25 a जडेत्यादि-जडानां मूर्खानां  
दमकाः मनसा भ्रान्तिं प्राप्नुवन्तः ये मिथ्यादृष्टयः ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य. 32 a विसय-  
विसिगरुल विषयाः एव सर्पास्तेषां गरुड. 32 b जयधवल जगतां मङ्गलध्वज. 33 b गयगरुह अविन्द्य.  
35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्; °मया हिवइ सिंहः; पंचमगइ सिद्धावस्था.

५

इय वंदिवि जिणु पालियरट्टउ  
संभवंतभवभारभयंगउ  
पुच्छइ महिवइ संजमधारा  
पावणासु चउवग्गाइण्णउं  
तं णिसुणिवि आघोसइ गणहर  
सुणि सेणिय मयमोहविहीणहि  
णाइ णंतु भाविणिहि णिरत्तउ  
पढमु समासमि कालु अणाइउ  
जगपरिणामहु सो सहयारिउ  
मुणइ को वि सम्मत्तवियक्खणु

एयारहमइ कोट्टि णिविट्टउ ।  
भूवइ भत्तिभारणवियंगउ ।  
अक्खहि गोत्तमसामि भडार ।  
जेम महापुराणु अवइण्णउं ।  
वासारत्ति पत्ति णं जलहर । 5  
अरहंतावलीहि वोलीणहि ।  
पहउ वीरजिणिं दे वुत्तउ ।  
सो अणंतु जिण्णणां जोइउ ।  
अरसु अगंधु अरुउ अमारिउ ।  
णिच्छयकालु पवत्तणलक्खणु । 10

घत्ता—ओ मुणिपयपंकयभमर णिव तच्च ण कासु वि हउं रहमि ॥  
ववहारकालु परमेट्टिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अणुअंतरयर समउ भणिज्जइ  
ऊसांसु वि आवलिहिं दु संखहिं  
सत्तहिं थोवणहिं लहुं भणियउं  
होति महासुणिचित्तावडियहि

आवलि तेहिं असंखहिं किज्जइ ।  
सत्तूसासहिं थोवउ लेक्खहि ।  
इह पियकारिणितणणं मुणियउं ।  
सङ्गु जि अट्टतीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वंदिय. २ MBP भवभाव<sup>०</sup>; K भवभाव<sup>०</sup> but corrects it to भवमार<sup>०</sup>; T भवभाव<sup>०</sup> but explains it as संसार परावर्तः प्रचुराः. ३ MBP जिणणांहिं.

5. १ M ओसासु. २ MBP लक्खहि. ३ MBP लउ.

4. 2 a संभवतेत्यादि— उत्पद्यमानसंसारप्राचुर्यभयत्रस्तः. 4 a चउवग्गाइण्णउ धर्मार्थकाममोक्षे-  
राक्षीणः. 5 b वा सारत्ति वर्षाकाले. 6 b वो लीणहि व्यतीतायाम्. 7 a णाईत्यादि— भाविन्या अर्हदावल्या  
आदिरन्तश्च नास्ति. 8 a समासमि संक्षेपतः कथयामि. 9 b अमारिउ अगुरु स्पक्षरहितः. 10 b पवत्तण-  
लक्खणु प्रवर्तनालक्षणो निश्चयकालः. 11 तच्चु तत्त्वम्; रहमि गोपयामि.

5. 1 a अणु अंतरयर अण्वोरन्तरं एकमाकाशप्रदेशं परित्यज्य यावता कालेन एकः अणुः द्वितीयमाकाशप्रदेशं  
गच्छति स कालः समय इति कथ्यते; b असंखहिं असंख्यैः समयैः आवली; 2 a दुत पुनः 3 b पिय-  
कारिणितणणं महावीरेण. 4 b सट्टेत्यादि—घटिकायाः सार्धा एवाष्टत्रिंशल्लवा भवन्ति.

घडियहिं दोहिं मुहुत्तहु अवसर  
तेत्तियहिं जि दिर्यसहिं विरइज्जइ  
विहिं मासहिं उहुंमाणु णियच्चउ  
विहिं अयणिहिं संवच्छरु वुच्चइ  
विहिं जुगेहिं दसवरिसइ जायइ  
सउ दहेहिं ताडिज्जइ जामहिं

तीसहिं तेहिं जाइ णिसिवासरु । 5  
मासु महारिसिणाहिं गिज्जइ ।  
उडहिं तीहिं पुणु अयणु पसिच्चउ ।  
पंचहिं वच्छरेहिं जुगु वुच्चइ ।  
दहगुणियइं सयसंखइ आयइ ।  
आवइ अहसहासु वि तावहिं । 10

घत्ता--सो सहसु वि दहहउ दससहसु होइ समासिउ मइं णिउणु ॥  
ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उप्पज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

6

संखाणाणिहिं णिमिउं कंगउ  
जाणिज्जइ फुड अक्खियमेत्ती  
पुव्वंणं पुव्वंगु णिहम्मइ  
वरिसइं सत्तरि कोडिउ लक्खइं  
परमागमि जं देवं बद्धउ  
पवु णउदु कुमुदु वि पउमक्खउ  
अड्ड अममु हाहा ह्हइ तिह  
मउलय लय वि महालइयंगउ  
सीसपकपिउ हत्थपहेलिउ  
णाणाणामपमाणहिं भेज्जउ

चउरासीलक्खहिं पुव्वंगउ ।  
लक्खसपण जि कोडि पउत्ती ।  
जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।  
छप्पण्णेव ताउ संहसंखइ ।  
पुव्वपमाणु एउ तं लद्धउ । 5  
णालिणु कमलु तुडियउ वि ससंखउ ।  
जाणहिं जिणवरेण जाणिउं जिह ।  
पुणु वि महालयणामपसंगउ ।  
अचलणु वि वीरें उम्मीलिउ ।  
एत्तिउ कालु होइ संखेज्जउ । 10

घत्ता--परमाणु अट्ट जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुच्चवइ ॥

अट्टहिं तसरेणुहिं पिंडियहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं. ५ MBP रिउमाणु ६ MBP सुबइ. ७ MBP दससहस.

6. १ K सहसक्खइं. २ M पुव्वे पमाणु. ३ B हत्थपहिह्लउ; P °पहिलिउ. ४ MBP रहरेणु.

7 a उट्टु माणु कटुप्रमाणम्. 10. a ताडिज्जइ गुण्यते; b अहसहासु अहसहसम्. 11 दहहउ दशगुणितः.

6. 1 a संखा णा णिहिं गणितज्ञैः. 2 a अक्खिय मेत्ती आख्यातमात्रेण. 3 a णिहम्मइ गुण्यते.  
6 a पउमक्खउ पद्मसंज्ञम्. 8 a मउलय मुदुलता; लय लता; महालइयंगउ महालतिकाङ्गम्. 9 a  
हत्थपहेलिउ हस्तप्रहोला; b अचलणु अचलात्मकम्; उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम्. 10 a भेज्जउ भेषः.

अट्टहिं रहरेणुयहिं समग्गहिं  
 लिक्ख भणिय पुणु अट्टहिं लिक्खहिं  
 अट्टहिं सारिसवेहिं परिमाणिउ  
 परमप्पयदिट्टउ को दूसइ  
 छंगुल पाउ विहत्थि दुवाई  
 चउरयणिल्लु दंडु मणि भावहि  
 जोयणु तं पि सपहिं गुणिज्जइ  
 पम महाजोयणु वक्खाणिउं  
 तस्स पमाणे खम्मइ खौणी  
 कत्तरियहिं अँविहायहिं सुहुमुं  
 होउ पहुचइ लेक्खे म गणहि  
 जइयहुं रोमरासि सा खिज्जइ  
 तेहिं असंखिहिं उद्धारुलउ  
 तं पि असंखगुणिउं अद्धारउ  
 होइ समुहोवमु चुअणाडिहिं

चिहुरग्गउ अट्टहिं चिहुरग्गहिं ।  
 सियसिद्धत्थु कहिउ णिहयक्खहिं ।  
 जवपमाणु देवागमि आणिउं ।  
 अट्टजवंगुल सुरि समासइ ।  
 दोहिं ताहिं किर रयणि वि ह्वाई । 5  
 दंडहिं अट्टसहासिहिं पावहि ।  
 पँवहिं पुणु लोयहु दंसिज्जइ ।  
 जं जगमाणकरणु अहिणाणिउं ।  
 परिवट्टुलिय सँपरियरतिउणी ।  
 सा पूरिज्जइ सिसुअविरोमहुं । 10  
 संवच्छरसइ पक्कु जि अवणहि ।  
 तइयहुं पलिओवमु धुंउ पुज्जइ ।  
 दीवसमुहपमाण परुल्लउ ।  
 भवँठिदिआउपमाणाधारउ ।  
 पल्लोवमदहकोडाकोडिहिं । 15

घत्ता—तेत्तियहिं जि सायरसमहिं फुड कालचक्कु मइ लक्खियउ ॥

लइ एउ वि अवरु वि पुणु भणमि केवलणणे अक्खियउ ॥ ७ ॥

7. १ MBP लिक्ख. २ MBP लिक्खहिं. ३ M जाणिउ. ४ MBP पँवहिं लोयहु पुणु दरिसिज्जइ  
 ५ MBP खौणी. ६ Tp सपरियरय and adds सपरियरेति पाठेऽप्ययमेवार्थः ७ MBP आविभायहिं. ८ MP  
 धुउ; B धुवु. ९ MBP हवइ तियआउ°.

7. 1 b चिहुरग्गउ रोमाग्रम्. 2 b सिय सिद्धत्थु श्वेतसर्षपः; णिहयक्खहिं जितेन्द्रियैर्महामुनिभिः.  
 3 a परिमाणिउ एकत्र कृत्वा; b देवागमि जिनाग. 5 a दुवाई द्वाभ्यां पादाभ्याम्; b रयणि हस्तः  
 ( अरस्तिः ). 8 b जगमाणकरणु लोकप्रमाणम्; अहिणाणिउं अभिज्ञातम्. 9 b सपरियरतिउणी स्व-  
 परिधिना त्रिगुणा. 10 b अवि° भेषकः. 11 b अवणहि स्फेदय. 13 b परुल्लउ परम्. 14 b भवँठिदि°  
 भवस्थिति°. 15 a चुयणा डिहिं गलितघटिकाभिः; पल्लोपमैर्देशकोटिभिः सागरोपमं स्यात्.



## 8

सुसमसुसमु अण्णकु वि सुसमउ  
 दुस्समु अइदुस्समु पविहँत्ता  
 प ओहामियदावियइड्डिहिं  
 भुयवलविहवसरीरिसरीरहिं  
 वडुत्तेहिं होइ उच्छप्पिणि  
 सायराहं विभियगिन्वाणहिं  
 तीहिं मि कालहिं तिणिण विहत्तइं  
 दरिसियमाणवदेहारोयइं  
 छच्छउदुधणुसहाससरीरइं  
 तिणिणदुपक्कपल्लथियजीवइं  
 उत्तिममज्झिमाइं णिक्किट्टइं

सुसमैदुसमु पुणु दुस्समैसुसमउ ।  
 इय छक्काल वीरपण्णत्ता ।  
 परिभमंति जगि हाणिपडुड्डिहिं ।  
 धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं ।  
 ओहट्टंतपहिं अवसप्पिणि । 5  
 चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं ।  
 दहविहविडविपसाहियखेत्तइं ।  
 इच्छासंणिहमाणियभोयइं ।  
 वोरक्खामलमेत्ताहारइं ।  
 रयणाहरणविहूसियंगीयइं । 10  
 भोयभूमिचिंघाई पइट्टइं ।

यत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मित्तु तहिं सीहु गइंदै सहुं वसइ ॥

लायणवण्णविब्भमभरिउ जणवयजोवण्ण णउ ल्हसइ ॥ ८ ॥

## 9

यहुवोलीणइ तइयइ कालइ  
 अट्टारहधणुसयतणु थिरजसु  
 पडिसुइ णामे जायउ कुलयरु  
 अमममियाउ राउ मंथरगइ  
 पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ

थियपल्लोवमट्टभायालइ ।  
 पलिओवमदहमंसु चिराउसु ।  
 पुणु तेरहसयचावपईहर ।  
 अवरु वि हूवउ णामे सम्मइ ।  
 अट्टसयाइं सरासणनुंगउ । 5

8. १ MP सुसमुससु. २ MBP सुसमुदुससु. ३ MBP दुस्समुससमउ. ४ P पवहँता but gloss प्रविभक्ताः पृथग्गुणिताः. ५ MBP छच्छउदुधणुसहासं. ६ MBP विहूसियगीवहिं.

8. 1 a अण्ण कु द्वितीयः. 2 a पविहत्ता प्रविभक्ताः. 3 a ए एते षट् कालाः; ओहामियदाविय-इड्डिहिं स्फोटितदक्षितकद्विभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्; अवसप्पिण्यां कद्विः स्फेज्यते उत्सप्पिण्यां कद्विर्इत्यते. 6 a सायराहं सागरोपमैः. 7 b दहविहेत्यादि-दशप्रकारैः कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि; मयाज्ञपूर्यभूपासगज्योतिर्दोषगृहाङ्गकाः । भोज-नामत्रवल्गाङ्गा दशया कल्पशास्त्रिनः. 8 a °आरोय °आरोय; b इच्छासंणिहं इच्छानुस्वाः. °माणियं प्राप्त. 9 b °अक्खं विभीतकः. 10 a °पल्ल थियजीवइं °पल्ल्यस्थितिजीवितानि. 11 b पइट्टइं प्रविष्टानि. 13 णउ ल्हसइ न पतति.

9. 1 b °अट्ट भायालइ अष्टमे भागे काले. 2 b पलिओवमदहमंसु पल्लोपमस्य दशमे भागे. 3 b पईहर प्रदीर्घतरः. 4 a मंथरगइ मन्दगतिः.

अडडपमाणियाउ खेमंकर  
सत्तसयाइं पंचसत्तरि धणु  
खेमंधरु णामें णं दिग्गउ  
सयसत्तउ पंचासहिं जुत्तउ  
कमलजीवि सीमंकर भण्णइ  
णलिणाउसु किर को णउ मण्णइ  
सत्तसयइं पंचुत्तरवीसइं  
सिरिकरपल्लवलायिकंधरु  
पणुवीसुज्झिपहिं दिहिगारउ  
तेत्तिपहिं पुणु गुणमणिमंडिउ  
पेक्कु वि पोमु जासु संजीविउ  
छहसयपणहत्तरिइ पसाहिय  
कम्मयाहं कामिणिकयविंभउ  
पउमंगाउ महीयलि अच्छिउ  
पुणु वि जसस्सि पुण्णचंदाणणु

धत्ता—उज्ज्वाणइं सयइं कणासनहं पण्णासाहियाइं रीणमि ॥

तड्ड देहद्वसणु पत्तडउ जीविउ कुमुदु एक्कु रीणमि ॥ ९ ॥

संभूयउ सुभूयखेमंकर ।  
उच्छिउ अणु वि उप्पणउ मणु ।  
नुडियहइं जीवेप्पिणु सो रीउ ।  
गैत्तपमाणउ जासु पउत्तउ ।  
तड्ड चरिचु जइ सुरगुरु वण्णइ । 10  
वाणासनहं सरीरसमुण्णइ ।  
जासु जिणिंदंभडारउ भासइ ।  
सो संजायउ पुणु सीमंधरु ।  
कोदंडहं सपहिं गरुयारउ ।  
विमलबाहु हुउ पंडापंडिउ । 15  
मुउ सुहकम्मं सुरहरु पाविउ ।  
जासु देहउच्छेहु पसाहिय ।  
णामें सुपसिद्धउ चक्खुव्भउ ।  
पच्छा खयकालेणु णियच्छिउ ।  
उप्पणउ पत्थिवपंचाणणु । 20

## 10

पयहु अक्खियाइं जेतियइं जि  
पुणु जायहु वल्लुलियगइंदहु  
कुमुयंगाउणिबद्धपमाणहु

पंचवीसरहियइं तेत्तियइं जि ।  
धणुसयाइं अहिचंदणरिंदहु ।  
णिउ सो कालें अमरविमाणहु ।

9. १ MP मुउ. २ MBP पण्णासहिं. ३ MBP गसमाणु जणि जासु पउत्तउ. ४ MP जिणिदु  
भडारउ. ५ MBP एक्कु पोमु जा सो संजीवउ. ६ MBP कामुयाहं. ७ BP वाणासनहं. ८ MBP गणिउं.  
९ MBP देहद्वसणु. १० MBP भणिउं.

6 b सुभूय खेमंकर सुधु प्राणिनां क्षेमकर्ता. 7 b उच्छिउ उच्छिउतः. 10 a कमलजीवि कमलपुष्पमा-  
णायुः. 11 a णलिणाउसु नलिनाङ्कायुः. 14 a दिहिगारउ धृतिकारकः. 15 b पंडापंडिउ पण्डा बुद्धि-  
स्तया पण्डितश्चतुरः. 18 a कम्मयाहं कार्यकार्णा धनुषाम्. b चक्खुव्भउ चक्षुष्मान्. 19 b णियच्छिउ  
निरीक्षितः. 21 उड्ड ऋतुः; कणासनहं धनुषाम्. 22 कुमुदु कुमुदाङ्कायुः.

10. 2 a बललुलियगइंदहु गजेन्द्रबलनिर्दलनस्य.

पंचसयइं पुणु सयसंजुत्तइं  
णउदाउसु महिवइ संजायउ  
तहु पच्छइ गच्छंतं कालें  
अज्जवलोयहु आसि पहाणउ  
साययवीढहं सयइं महिद्धिउ  
गउ सो णउयंगउ जीवेप्पिणु  
सङ्गइं पंचसयइं रणचंडहं  
पव्वाउसु पय पालहुं जाणइ  
कंडमोक्खकरणाहं सउण्णउ  
पुव्वकोडिजीवियसंपुण्णउ  
तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ  
गुरुउद्धरियवसुं वरमेहलु  
भूसणरयणकिरणहयतममलु  
मउडसिहरु हारावलिणिज्जरु  
णं अवयरियउ जंगीमु मंदरु  
घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं बाहुद्धारियभुर्वणभरु ॥

जीवहं जासु जिणेण णिउत्तइं ।  
इह चंदाहुं णाम विक्खायउ । 5  
उच्छिज्जंतं सुरतरुजालें ।  
हुउ मरुपउ णाम बहुजाणउं ।  
पंच पंचहत्तरइं पवद्धिउ ।  
थिउ सुरहरि सुरबौदि लपप्पिणु ।  
देहपमाणु जासु घणुदंडहं । 10  
पुणु हुउ मणु णामेण पसेणइ ।  
पंचसयाइं सवायइं उण्णउ ।  
सुद्धवुद्धि सम्भावाउण्णउ ।  
संततुज्जलकंचणवर्णणउ ।  
दाघियकप्पतरुवरामयहलु । 15  
सयणुतेयउज्जोइयणहयलु ।  
सुरघरसेवाजोग्गंधराधरु ।  
णं णहणिवडिउ देउ पुरंदरु ।

जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुलथेरु पवर ॥ १० ॥ 20

## II

णहयलि जंतजणेण णं याणिय  
अण्णु वि रुइरुक्खक्खइ दिट्ठइं

पहिलएण रविससि वक्खाणिय ।  
विंदुयविंदुएहिं उवरिट्ठइं ।

10. १ MBP चावहि. २ MBP चंदाहणाम. ३ MBP उच्छिज्जंतं. ४ MBP add after this line  
दीहबाहु उरयलविधिण्णउ. ५ B °बंभु णं मेहलु. ६ M °जोग°; BP °जोग्ग°. ७ MBP जंगममंदर. ८  
MBP °अवणहरु. ९ MBP कुलथेरपवर.

11. १ M ण जाणिय.

7 a अज्जवलोयहु आर्यलोकस्य; b बहुजाणउ बहुश्रुतः. 8 a साययवीढहं धनुषाम्. 9 b सुरबौदि  
देवशरीरम्. 10 a रणचंडहं संग्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम्. 11 a पव्वाउसु पूर्वप्रमाणायुः. 12 a कंड-  
मोक्खकरणाहं धनुषाम्. 13 b सम्भावाउण्णउ सद्भावपूर्णः. 15 b °अमयहलु अमृतफलम्. 16 b सयणु-  
तेयेरयदि—स्वतनुनेजसोद्योतितनमस्तलः. 19 आयहं एतेषाम्. 20 जियलोयहो जीववर्गस्य.

11. 1 a णहयलित्यादि—आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्वात् न ज्ञातौ; b पहिलएण  
प्रथमकुलकरणे प्रतिश्रुतिना. 2 a रुइरुक्खक्खइ कल्पवृक्षस्य क्षयात्, उद्योतिरक्षक्षयात्.

बीएण वि लोयहु भयरिड्डं  
 हूया जे मृग दारुण जइयहुं  
 सिंगि णैकिख दाढि वि परिहरिया  
 चोत्थएण पुणु णउ उप्पेकिखउ  
 ताडिय ते दददंडपहारिहिं  
 वियलियफल तरु विरइयमेरइ  
 पविरलडुमकालइ कुज्झता  
 छट्टएण मणुणा अणुयुंघें

अहरत्तइं णक्खत्तइं सिड्डइं ।  
 तइयएण ते साहिय तइयहुं ।  
 सोम्मं सुलक्खण गियड्डइं धरिया । 5  
 लोउ मृगंहिं खज्जंतउ रक्खिखउ ।  
 पंचमेण बहुवुद्धिपयारिहिं ।  
 अज्झव सुणिरोहिय गियकेरइ ।  
 फललोहें कोहें जुज्झंता ।  
 वारिय णर कयसीमाचिंघें । 10

ग्रन्था—कुलयरपवरेण वि सत्तमेण गियमइविहवें भाविउ ॥

पल्लानिवि हयगयवरवसहभारोहेणु दाविउ ॥ ११ ॥

## 12

अट्टमेण चंगउ उवएसिउ  
 णवमएण सुयसुहससि दरिसिउ  
 खणु जीवेपिणु मुउ सोमालहुं  
 पयारहमइ कुलयरि जायइ  
 जीउ ण वच्चइ कइवयदिवसइं  
 णंदइ पय पयाइ संजुत्ती  
 विहियइं सरिसमुहजलजाणइं  
 तक्कालइ जायइं णिम्मग्गइं

डिभयदंसणभउ णिण्णासिउ ।  
 तं जोईवि जणु हियवइ हरिसिउ ।  
 दहंमैं केलि पयासिय बालहुं ।  
 णंदणि माणववंदहु हूयइ ।  
 बारहमइ हुइ बहुयइं वरिसइं । 5  
 तेरहमेण वियपिय वित्ती ।  
 गयणलगगिरिवरसोवाणइं ।  
 कुसरि कुसायर कुकुहर दुग्गइं ।

२ MBP मिग. ३ M सिंगिय णक्खि; B सिंगणक्खि. ४ MBP सोम. ५ B गियड्डयधरिया. ६ P चउथएण.  
 ७ MBP सिगहिं. ८ MBP अणुयुंघें. ९ P सत्तमइ. १० MBP भाविउ. ११ MBP दाविउ.

12. १ P जोएपिणु हियवइ. २ P दहमइ. ३ MBP माणववंदहु.

3 a °रिड्डइं उत्पाताः. 4 b सा हिय साधिताः, मृगस्वरूपं कथितमित्यर्थः. 8 a °मेरइ मर्यादया; b सुणि-  
 रो हिय सुनिबद्धाः. 10 a अणुयुंघें अनुबन्धेन आप्रहेण.

12. 2 a सुयसुह° पुत्रमुख°. 3 a सोमालहुं सुकुमारानाम्. 5 a जीउ जीवः. 6 a पयाइ पुत्रा-  
 दिभिः; b वियपिय विकल्पिता रक्विता; वित्ती जीविका. 8 a णिम्मग्गइं निश्चितमार्गाणि; कुसरि कुनदी;  
 कुकुहर कुपर्वत.

यत्ता—जापं मणुणा चोद्देहमइण णरसिमुणालइ खंडियइ ॥  
कसनब्भइं थियइ णहंगणइ चलसोदामणिमंडियइ ॥ १२ ॥

10

13

विसंकांलिकालणवजलहरपिहियणहंतरालओ ।  
धुर्यगयगंडमंडलुड्ढावियचलमत्तालिमेलओ ॥  
अविरलमुसलसरिसथिरधारवरिसभरंतभूयलो ।  
हयरवियरपयावपसरुगयतरुतणणीलसदलो ॥  
पडुतडिर्वैडणपडियवियडायलरुंजियसीहदारुणो ।  
णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणो ॥  
गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।  
महियलघुलियमिलियदुंदुहसयवयसालूरपोसणो ॥  
घणचिखैल्लखोल्लखणिखेइयहरिणसिलिबकयवहो ।  
वियसियणवकैलवकुसुमुग्गयरयपिंजरियदिसिवहो ॥  
सुरवइचावतोरणालंकिघणकरिभरियणहहरो ।  
विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥  
पियपियपियलवंतवैप्पीहयमग्गियतोयविंदुओ ।  
सरतीरुल्लंतहंसावलिमुणिहलबोलसंजुओ ॥  
चंपयचूयचारचैवचंदणचिचिणिपीणियाउसो ।  
वुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जण सुहयारि पाउसो ॥

5

10

15

४ MBP जायपं, ५ MBP चउदहमइण.

13. १ MBP विसं and gloss in P सर्पः २ P धुव°. ३ P °तडिपडण°. ४ M डिडुह; P डेंडुह; B डुंडुह. ५ MBP °निविखल्ल°. ६ MBP °कयंव°. ७ MBP °वव्वीहय°. ८ P °विंदो. ९ MBP °वव्व°.

10 क स ण ब्भ इं कृष्णमेघाः; °सो दाम णिं विवुत्त.

13. 1 विसं विषवत्कृष्णमेघः; °का लं दि का लं यमुनासदृशकृष्णमेघः. 2 °मेल ओ मेलापकः समूहः. 3 °थिर धारा° अखण्डवृष्टिः. 4 °स दलो °पत्रयुक्तः. 5 °तडि° विद्युत्; विद्युदायलं विस्तीर्णपर्वतः; रुंजिय शब्दित. 7 °सर सर° जलस्वर°. 8 डुंडुह° निर्विषः सर्पः; सयवय शतपदः सर्पः; सालूर भेकः. 9 खणि खेइय गतायां निक्षिप्ताः; सिलिब शिशुः. 11 °घण करि° मेघ एव हस्ती. 12 °रो सियं° कोपित. 13 °वप्पी हयं° चातकः. 14 °हल बोलं° कोलाहलः. 15 पीणि याउसो एषां वृक्षाणां प्राणसिम्बनं कृतम्. 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले; सुहयारि सुखकारी.

मुग्गाकुलत्थकंगुजवकलवतिलेसीवीहिमासया ।  
 फलभरणवियकणिसकणलंपडणिवडियसुर्यसहासया ॥  
 ववगयभोयभूमिभवभूरुह सिरिणरवरमासही ।  
 जाया विविहधर्णदुमवेल्लीगुम्मपसाहणा मही ॥  
 वत्ता—तं पेक्खिवि<sup>१२</sup> जणवउ संचलिउ मउ मेल्लेप्पिणु झत्ति तर्हि ॥  
 लच्छीयणपेल्लियवच्छयलु अच्छइ णाहिणरिंदु जहिं ॥ १३ ॥

20

14

किं तडयडइ पडइ फोडइ धर विप्पुरंतु णिरु भेसावइ णर ।  
 वंकउं हरियाहणु किं दीसइ देव देव किं गज्जइ वरिसइ ।  
 गयकप्पदुम तेत्थु णिसण्णा एवहिं अवर के वि उप्पण्णा ।  
 अण्णइं कणभरियइं णिप्फण्णइं णिच्चमेव खगमृगसंचिण्णइं ।  
 अम्हइं जड उवायअवियाणा दीहरमुक्खायासैं रीणा ।  
 भोज्जाभोज्जु तेत्थु किं होसइ तं णिसुणेप्पिणु महिवइ घोसइ ।  
 जो रसंतु वरिसइ सो णंवघणु जं वंकउं दीसइ तं सुरधणु ।  
 जा गिरि दलइ चलइ सा विज्जल चंचरीयचुंवियकोमलदल ।  
 सुरतरुवरविणासि सुच्छाया कम्मभूमिभूरुह संजाया ।  
 कडुयगरलु णीरसु वंचिज्जइ जं महुरउ सुसाउ तं चिज्जइ ।  
 खसियवंसत्थलथिरकदैं एम भणेप्पिणु णाहिणरिंदैं ।  
 णिवडमाणु अब्भुद्धरियउ जणु हत्थिकुंभि किउ महियभायणु ।

5

10

वत्ता—कणकंडणसिहिसंधुकणइं पयणविहाणइं भावियइं ॥

कप्पाससुत्तपरियड्डणइं पडपरियम्मइं दावियइं ॥ १४ ॥

१० MBP °सुत्तमासया. ११ M °वण्ण°. १२ MBP पेच्छिवि.

14. १ MBP °मिग°. MB सिववणु. ३ P पिज्जइ. ४ MBP परियट्ठणइं. ५ P °पडियम्मइं.

17 कलव कलमशालिः सुगन्धशालिः; तिलेसी तिला अलसी च 18 °सहासया °सहसकाः. 19 णरवइ-  
 रमासही राज्यलक्ष्मीसखी. 21 मउ मदम्.

14. 1 a तडयडइ शब्दं करोति; धर पर्वतात्. 4 a अण्णइं क्षेत्रे धान्यानि. 5 a उवायअवियाणा  
 उपायाज्ञानाः; b भुक्खायासैं क्षुधाह्नेशन. 7 a रसंतु शब्दायमानः. 8 b चंचरीयं भ्रमराः. 10 a कडुय-  
 गरलु निम्बगुहचोप्रसूति; b विज्जइ भुज्यते. 11 a थिरकदैं मूलभूतेन. 12 a णिवडमाणु निपतन् प्रिय-  
 माणः. 13 सिहि संधुकणइं अग्निप्रज्वालनविधिः; सावियइं उत्पादितानि. 14 °परियड्डणइं परिकर्षणानि;  
 °परियम्मइं निष्पादनानि.

15

तासु घरिणि मरुपवि भडारी  
अमरहं पंतिइ पयपणवंतिइ  
कमयलराणं काइं गविट्टु  
पणिहिं रत्तउ चित्तु पदंसिउं  
अंगुटुण्णइं जं गूढइं  
णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ  
जंघउ कमहाणिइ ओहरियउ  
गूढइं णरवइमंताभासइं  
णिविडसंधिवंघइं णं कव्वइं  
ऊरुयखंभ णराहिवदमणहु  
जेण सत्तुरणरु तिहुयणु जित्तउ  
दिण्ण थत्ति तहु सोणीविंवहु

जाहि रूवसिरि अइगरुयारी ।  
लंघियाइं अम्हइं णंहयंतिइ ।  
एम णाइं णेउरहिं पघुट्टु ।  
अंगुलियहिं सरलत्तु पयासिउं ।  
गुण्णइं तं किर पिसुणइं मूढइं । 5  
मसिणउ सोहियाउ उज्जलियउ ।  
दिट्टुं णं खलमित्तइं किरियउ ।  
वायरणाइं व रइयसंमासइं ।  
देविहि जण्हुयाइं अइमव्वइं ।  
तोरणखंभाइं व रइमवणहु । 10  
कामतत्तु जं देवहिं वुत्तउ ।  
किं वण्णमि गरुयत्तु णियंवहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु किस्सु उयर सत्तुच्छंउ दिट्टु मइं ॥

संसग्गवसैं गुणु कासु हुउ जो णवि जायउ जम्मि सइं ॥ १५ ॥

16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु  
सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ  
पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ

रोमावलिक्कुहिणी लंघेप्पिणु ।  
लग्गउ वम्महु मोत्तियहारइ ।  
सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15. १ T णहकंतीए but adds: णहयंतिइ इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः २ MBP वित्तु पदरिसिउं;  
T वित्तु वृत्तत्वम् ३ MBP गुंफइं. ४ P विट्ठा णं. ५ M °समाणइं ६ MBPK ऊरुखंभ. ७ MBP सत्तुरणु.  
८ M सवित्थर.

15. 2 b ण हयंतिइ आकाशादेन्त्या, अथवा नखकान्त्या. 3 a कमयल्लेयादि—नूपुरं इति हेतोः शब्दं  
करोत्यस्माकमवज्ञां विधाय चरणसलरागे किं दृष्टं देवंप्रकृत्या; काइं किम्; गविट्टुं दृष्टम्. 4 a रत्तउ वित्तु  
मर्तरि रत्ते वित्तम्. 6 a विसिरउ शिरारहिता; b मसिणउ स्निग्धा. 7 a ओहरियउ अपकर्षं गता. 8 a  
गूढइं प्रच्छन्नानि; णरवइमंताभासइं राजमन्त्रसदृशानि; b रइयसमासइं षट् समासाः कर्मधारयादयः, पक्षे  
मांसयुक्तानि. 9 a णिविडसंधिवंघइं सुश्लिष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च.

16. 1 a चडेप्पिणु आरुह्य; b °कुहिणी मार्गः. 2 a सिहिण° स्तन°; °दोरइ सूत्रे रज्ज्वाम्.  
3 a पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्; b सुइ° निर्मलम्.

णेहबंभु मंणिबंभि परिट्टिउ  
जाहि तणउं तं जणियविचारउं  
कंठलीह णउ कंबू पावइ  
णियंडणिविट्टु जियससिकंतिहि  
अहरविंभु रेहइ रायालउ  
अम्हं ठाइ कर्याइ ण संमुहु  
भउंहुं वंक्तणु वि ण सहियउ  
णिसिदिणि ससि रवि गयणविलंवि  
कुंडलसिरि वहांति धवलच्छिहि  
कुडिलालय भालयलि गिरंतर  
अवर वि ताहं भार विवरेरउ  
तरुणिहे पंढि पइट्टु दीसइ

लायणं समुहु ण संठिउ ।  
महुरउ इयरहु केरउ खारउ । 5  
परसासाऊरिउ कंहु जीवइ ।  
धोयहि धवलहि दंतहु पंतिहि ।  
मुत्तावलियहि णाई पवालउ ।  
उज्जुउ णासावंसु वि दुम्मुहु ।  
णयणहिं गंभि व कण्णहुं कहियउ । 10  
विण्णि वि गंडयलइ पडिबिंवि ।  
जिणजणणियहि सैलक्खणकुच्छिहि ।  
मुहकमलहु घुलंति णं महुर ।  
मुहससरभण णं तमरउ ।  
कुसुमरिक्खमीसियउ विहासइ । 15

घत्ता—पंणवंतितु अमरविलासिणउ छाहिणिहेण णिहीणियउ ॥

चारुत्तणकंखइ सुंदरिहि पयणहदप्पणलीणियउ ॥ १६ ॥

## 17

तियसमहीरुहापेहियदसासइ  
णं जियलोउ समुग्गयसंतिइ  
णं सज्जणु गुणिलोयपसंसइ

भाएहवरिसहु मज्झुहेसइ ।  
सरयागमु णं छणससिकंतिइ ।  
णं आलिगेउं धम्म अहिसइ ।

16. MBP मणिबंभु. २ BP समुहु णं. ३ MB कंबुउ; P कंबुउ and gloss शंखः. ४ M कहिं.  
५ M णिविडं ६ P कयावि. ७ MBP सुलक्खण°. ८ P °कुक्खिहि. ९ MB अविरुवि. १० K पुट्टि. ११  
P बहच्छउ. १२ BP पणमंतितु.

4 a मणि बंभि प्रकोष्ठे; लायणं लावण्येन समुद्रः सदृशो न. 5 a जणिय विचारउं जनितरोगादिकम्; b इय-  
रहु इतरस्य समुद्रस्य. 6 a कंठलीह कण्ठरेखा; b परसासाऊरिउ परक्षासंपूरितः. 7. a °ससियं ति हे  
चन्द्रकान्त्या. 9 a ठाइ तिष्ठति; b दुम्मुहु द्विसुखो दुर्मुखश्च. 14 b तमरउ तमःप्रवाहः. 15 b °रिक्खं  
तारागण°. 16 छाहिणिहेण प्रतिविम्बच्छद्मना; णिहीणियउ निहीनाः वयं देव्याः. 17 पयणहदप्पण-  
लीणियउ पदनखदपणे लीनाः.

17. 1 a तियसमहीरुहं कल्पवृक्षाः; °पिहियदसासइ °आच्छादितदशादिभिः. 2 a समुग्गय-  
संतिइ समुद्रतटान्त्या.



पीवरपीणपयोहैरकयकर  
अच्छइ णाहिणरेसर जइयहं  
सुरणरवंदणिज्जु जैंगि सारउ  
कामकंदकप्परणकुंठारउ  
इय संचितिवि पुणु परिछिण्णउं  
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ  
ता तं पेसणु जक्खे लइयउं

ताइ समउ सो पच्छिमकुलयर ।  
सुंयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं । 5  
गुरुसंसारमँहणवतारउ ।  
होसइ एयहुं भवणि भडारउ ।  
इदँ धणयहु पेसणु दिण्णउं ।  
पुरवरु चउँदुवारु सोहिछुउ ।  
खणि साकेयणयर पविरइयउं । 10

घत्ता—जहिं पवँणाइरियवसेण णंदणवणइं सुपत्ताइं ॥

णच्चंति फुल्लमुहमुंकेण मयरंदेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

## 18

जहिं सरवरि सिरिपयसंफासँ  
परभुत्तँ विमुक्कतमदोसँ  
तं तेहउ वि पीलु किं भंजइ  
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ  
वडपारोहइ हिदोलंतिहिं  
जहिं कई अइपहसणरसधारउ  
रत्तउ सारसियहिं जहिं सारसु  
सहइ तमालंधारयसारिउ

वियसइ कमलु णाइं संतोसँ ।  
अहवा णंदिउ को वं ण कोसँ ।  
महुयरउलु णं रोसँ रंजइ ।  
अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।  
जोइउ अभिखहिं दरपहसंतिहिं । 5  
सुइ णियदिट्ठि धिवइ सवियारउ ।  
को वि परिट्ठिउ अहिणँवु सारसु ।  
जहिं कैलु कोइलु लवइ णिरारिउ ।

17. १ M पजोरुहं. २ MPT सुमरइ; B सुमरइ and gloss स्मरति. ३ MBP जगं ४ B  
°समुण्णव°. ५ MB °कुठारउ; K °कुठारउ but corrects it to °कुठारउ. ६ MBP बउदुवारसोहिछुउ.  
७ MBP पवणायरिय°. ८ MBP °सुक्कएण.

18 १ M परिभुत्तँ. २ P को वि. ३ P कह. ४ BP कइवइ पहसण°. ५ M को ण. ६ MBP अहि-  
णव° ७ MBP कलु.

4 a °कयकर °कृतकरः; b समउ सह. 5 b सुयरइ स्मरति. 7 a °कप्परण° °छेदत°. 8 a परि छिण्णउं  
ज्ञातम्, निश्चितम्. 10 a लइयउं ग्रहीतम्. 11 पवणा इ रियं वायुरेव आचार्यः.

18. 1 a सिरिपयसंफासँ लक्ष्मीपदस्पर्शेन. 2 a परभुत्तँ हंसैः जनैश्च भुज्यते; विमुक्कतमदोसँ  
प्रापोज्झितेन, अथवा, तमः क्रोधः, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन; b को सँ कणिकया द्रव्येण च. 3 a पीलु हस्ति-  
बालः; b रंजइ शब्दं करोति. 5 b दरं ईषत्. 6 a कइ कपिः; अइपहसणरसधारउ अतिप्रहसन-  
धारकः हास्यं कारयतीत्यर्थः; सुइ शुकैः. 8 a तमालंधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारय सा लक्ष्मीस्तस्या  
रिपुः; b णिरारिउ अनिवारितम्.

पवरंबयकलियहि ढोइयकर  
जहि भाविणि न करइ परपइइ  
अट्टारहवरसासविहत्तइ

महिलहि को न होइ चाहियर ।  
बीउ धरिच्छिहि को उँ न पइइ । 10  
जहिँ सयमेव सुपकइ छेत्तइ ।

घत्ता—जहिँ धण्णइं कणभरपणींमियइं परिभमंति सच्छंद पसु ॥  
वणसेरिहंसिगपहारचुउ महिसिहि पिजइ उच्छुरसु ॥ १८ ॥

## 19

छुड छुड भोगभूमि जहिँ वित्ती  
चित्तिउ चित्तिउ दैति न थकइ  
जहिँ थलि थलकमलोवरि सुप्पइ  
दक्खारसु णरेहिँ चक्खिजइ  
कुवलयधरणिउ णं णिवईहउ  
णं भविस्सजिणजम्मोयिरियउ  
बहुमाणिकमऊहर्षहावहिँ  
असियसियारुणवण्णवियारहिँ

रिद्धिसंमिद्ध विसुद्ध धरिच्छी ।  
पुव्वम्भासु ण भेल्लहुँ सकइ ।  
पइ पइ पँउमहु पंके लिप्पइ ।  
फलु अउवु काइं मि भक्खिजइ ।  
जहिँ परिहाँउ वहंति पईहउ । 5  
णहवणांभहु णाणासरियउ ।  
णं गयणंगणु सुरवइचावहिँ ।  
जं सोहइ सत्तहिँ पायारहिँ ।

घत्ता—जं दियहि दिवायरकंत रविकिरणहिँ सिहिभावहु गयउ ॥

तं णीवइ णिसि ससियरपुसियससिमणिजलधाराहयउ ॥ १९ ॥

10

८ P णउ. ९ MBP खेत्तइ. १० MBP पणवियइ.

19. १ BP °समिद्धिविसुद्ध. २ P भेल्लहुँ. ३ MB पउमं पंकहु विप्पइ; P पउमहु पंकेहिँ विप्पइ. ४ MB दक्खारसु णरेहिँ जहिँ पिजइ. ५ M adds after this line: सुहमद्वरात्ति मिरिय भक्खिजइ, and gloss मुखस्य मधुरत्वे सति; P reads in its place सुहमहलंति मिरिय भक्खिजइ, and after it reads किणरमिहुणिहिँ लयहरि गिजइ, फलु अउवु काइं मि भक्खिजइ. ६ MB add after this line किणर-मिहुणिहिँ लयहरि गिजइ, जिणु गाइजइ जिणु पूइजइ. ७ M जहिँ परिहा वहंति पयईहउ. ८ MBP °पहावै. ९ MBP °चावै.

9 a अंबयक लिय आत्मकलिका. 10 a परपइइ परपुरुषरतिम्; b बीउ बीजम्; पइइ प्रकीरति; धरित्र्यामकृष्टपच्यानि धान्यानीत्यर्थः. 11 a °सासं सस्य. 13 °सेरिहं महिषः.

19. 1 a छुडु छुडु यदा यदा; वित्ती समाप्ता. 2 b पुव्वम्भासु कल्पवृक्षवद्वाञ्छितवस्तुप्रदानाभ्यासः. 3 b पंके मकरन्दकर्दमे. 5 a णिवईहउ वृषवाञ्छयेव. b परिहाउ खातिकाः; पईहउ प्रदीर्घाः. 7 a °मऊ-हं °किरणं 8 a असियसियारुणं कृष्णक्षेत्रम्. 9 दिवायरकंत सूर्यकान्तमणयः; सिहिभावहु अभिभावम्. 10 णीवइ विध्यापयति; °पुसिय °स्पृष्टाः; °ससि मणि °चन्द्रकान्तमणयः.

## 20

मरगयकयधरि पक्खविहसिउ  
इंदणीलवरि णहविप्फुरणं  
जाणिज्जइ सामा पहसंती  
कणयरइयमंदिरि धियरंती  
करकंकणु करंफरिसें जाणइ  
दहिक्कुट्टिमयलि दइपं आणिउ  
तहिं जि पडीवउं जहिं सियणिवसणु  
फलिहसिलालयमज्झि णिविट्ठउ  
पोमरायमंडवि आसीणी  
युसिणपिंड ण णियंति विसूरइ  
चंदणचिखल्ले पहुं चिडुइ

जहिं चंचुइ लम्बिज्जइ पूसउ ।  
विमलं मोत्तियदामाहरणं ।  
णहं णवकुंदुज्जलदंती ।  
अवरविसंझाराउ वहंती ।  
णेउरु सहेण जि अहिणाणइ । 5  
कलरावेण हंसु परियाणिउ ।  
ठविउ ण पेच्छइ अइमोलउ जणु ।  
पिहियकवाड वि बहुवर दिट्ठउ ।  
जेत्थु का वि हरिणच्छि पहाणी ।  
जहि सोहाइ ण सम्गु वि पूरइ । 10  
जहिं कप्पूरधूलि णहि उडुइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु संविहिउ ॥

वइसवणं पक्केकु जि मिडुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

## 21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइ  
गिज्जंतं मंगलसंधाएं  
घरसंचारियं कलस वि दिट्ठा  
णिच्चुप्पाइयसुरयणहरिसहि  
विहुतारावलिदिणयरपंगणु  
गुरुअच्चासणभयवसणडियउ

तोरेणाइं रयणहिं विप्फुरियइं ।  
देवदिणपडुपडहणिणाएं ।  
सरयब्भेसु वं चंद पइट्ठा ।  
संमज्जियदण्णयलसरिसहि ।  
दीसइ भूमिहि सयलु णहंगणु । 5  
णं सोहइ पायालइ पडियउ ।

20. १ B पंख°. २ MBP अवह वि. ३ MBP करफंसें. ४ M फलिहसिलालयलमज्झि; BP °सिला-  
यलि मज्झि. ५ MBP पड but gloss in P पन्थाः.

21. १ MBP °संचारिम°. २ MBK य.

20. 1 a पक्ख विहसिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूषा यस्य; b पूसउ शुक्रः. 5 b अहिणाणइ अभिजानाति.  
6 a दहिक्कुट्टिमयलि घवलशिलोपरि; दइपं भर्त्रा. 7 a पडीवउं पतितम्. 8 a फलिहसिलालयं स्फटिक-  
ग्रहम्; b बहुवर वधूवस्. 9 b पहाणी चित्रकारिणी स्त्री. 10 a णियंति रक्तत्वादपदयन्ती; विसूरइ  
खिद्यते. 11 a पडु पन्थाः; चिडुइ आर्द्राभवति. 13 माणिवि मानसित्वा.

21. 1 a सहसा शीघ्रम्; भरियइं वद्वानि. 5 a विहुं चन्द्रः. 6 a अच्चासणं ह्रीलना,

इहु सो विट्ठु इहु महारउ  
भवणसिहरचडिपं खे लंविउ  
णउ चोरउलु विरोहि ण राउलु  
वंमणु वणिवरु ण हलु ण हालिउ  
धम्मु ण धणुहुं ण जिणवइमसिउ  
वेस ण कथइ वइसियजुत्ती  
जहि ण महव्वय पंचाणुव्वय

इय णं मणिवि णयणापियारउ ।  
जहिं णवजलहरु मोरें चुंविउ ।  
सूलभिण्णु णउ दीसइ देउलु ।  
णउ पासंडिउ को वि कवालिउ । 10  
पसुवहु वाहिं ण वेपं घोसिउ ।  
अज्जव सर्व्वं णारि कुलउत्ती ।  
कुच्छियकारिणि णउ कारुय पय ।

वत्ता—सामण्णइं सयलइं माणुसइं जहिं एकु वि सुविसेसिउ ॥

सियपुष्पयंतु सो णाहिणिउ जो भरहेण विट्ठुसिउ ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे उज्ज्वाणयरीवण्णं णाम  
दुइज्जो परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥  
॥ संधि ॥ २ ॥

३ P विरोहु. ४ P कपालिउ. ५ MBP जिणवर°. ६ M पसुवहु वहणु ण; B पसुवहु वहणु ण; P पसु  
अहवाहणु. ७ MBP णारि सर्व्व. ८ K णाहिणिवु.

7 b °पियारउ °प्रियतमः. 8 a खे आकाशे. 9 b सूलभिण्णु शूलं कलशमध्ये प्रोतं काष्ठं तेन युक्तं देवगृहं चैत्या-  
लयादि न दृश्यते. 11 b वा हिं व्याधेन. 12 a वेस वेदया; वइसियजुत्ती वेदयानां युक्तिर्वैधनम्; b अज्जव  
आर्या. 13 b कुच्छिय कारिणि कुत्सितकारिणी; कारुयपय शिल्पजीविनां प्रजाः. 14 सामण्णइं समानविभूति-  
युक्तानि. 15 सियपुष्पयंतु शुभ्रपुष्पतुल्यदन्तः; भरहेण भरतक्षेत्रेण, कारापकपक्षे भरतमहाभव्येन.

तर्हि जाम मणोज्जु भुंजइ रँज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥  
मंडियसविमाणु कालपमाणु चितइ ताम सुरिंदु ॥ धुवकं ॥

I

पँहहि महिणाहँ माणियहे	उयरइ मरुपविहि राणियहे ।
छँम्मासहिँ होसइ परमजिणु	णासइ ण कम्म भुत्तीइ विणु ।
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि	गब्भासयसोहणु लहु करमि । 5
लइ एउ जि कल्लु महुं तणउं	दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।
इयँ चित्तिवि पुणु हियवइ धरिय	छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर	वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।
छ वि एयउ चार चवंतियउ	पणपण णपण णवंतियउ ।
इंदीवरदीहरणेत्तियउ	सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ । 10
वेल्लहललयणिहगत्तियउ	देविंदं झत्ति पउत्तियउ ।

यत्ता—जाइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसँहु गेहु ॥

जिणगम्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुस्तरान् for which see footnote on Second Samdhi; MBP give the following stanza:—

बलिजोमूतदधीणिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।

संप्रत्यनन्यगतिकस्यागणुणो भरतमावसति ॥

1. १ MBP भोज्जु; २ MP एयहि; B एवहि. ३ MBP छहिँ मासहिँ. ४ MBP इय चित्तेविणु हियवइ. ५ P णमंतियउ. ६ M °लयाणियवत्तियउ; BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु.

1. 1 मणोज्जु मनोज्जम्; णिच्चलु निश्चलम्. 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्त्वविमानः इन्द्रश्चिन्तयति; कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तः क्रियान् वर्तते. 4 b णासइ ण कम्म भुत्तीइ विणु सर्वाथेसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽ-तरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति. 5 a सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्; संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः; b °सोहणु °शोधनम्. 6 b घणघणउं सातिशयम्. 8 a ललिय कर कोमलहस्ताः b वरपराः उत्कृष्टाः. 9 a छ वि एयउ एताः श्रयादिवडुदेवताः. 10 a इंदीवरत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्राः; b सुर-णाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिरं, इन्द्रालयम्. 11 a वेल्लहललयणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्राः; b पउत्ति-यउ प्रयुक्ताः.

2

ता संचलियउ सुररमणियउ  
कयसग्गालयणिगमणियउ  
तेल्लोकमारमणदमणियउ  
कुंडलैवैवइयकवोलियउ  
जंतिउ जोयंति ण के सियउ  
तणुतेउज्जोइयअंबरउ  
णयसत्तमंगिविहिरसणियउ  
णिरु सुहवदाणवारिरियउ

मेहलरंखोलिरैरमणियउ ।  
मयमंथरसिंधुरगमणियउ ।  
विरैयाहुं मि रयमणदमणियउ ।  
णं मयणं बाणकओलियउ ।  
अलिसंणिहभंगुरकैसियउ । 5  
घोलंतविचिसवरंवरउ ।  
मिच्छांमयहेउणिरसणियउ ।  
णं भमरिउ दाणवारिरियउ ।

घत्ता—एयउ अण्णाउ सुरकण्णाउ धरिवि णिकामिणिवेसु ॥

आर्याउ परेण भत्तिभरेण सिरिमरुणविहि पासु ॥ २ ॥

10

3

परमेसरि सुरवरलोयचुयां  
दीसइ सुरणारिहिं अज्जसुया  
सच्चंगावयचसुलक्खणिया  
वंदारयवंदियपायजुया

कोमलमुणालवेल्हलभुया ।  
णं विहिविण्णोणसमत्तिहुया ।  
फणिसुरणरमणमुसुमूरणिया ।  
अइललियाहिं थोत्तसपहिं थुया ।

2. १ T reads "रंखोलन" but adds: रंखोलिरेति पाठं मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः. २ MBP विरयाहिं but gloss विरतानां यतीनाम्. ३ B कौंडलवैवइय°; M °चिचइय°. ४ B बाणकम्मु लियउ; P बाणकवोलियउ and gloss बाणकृतेरेखाः. ५ K मिच्छायम°; P मिच्छामय° but gloss मिथ्यागम°. ६ MBP आइयउ.

3. १ MBP °थुय. २ M विहिविअण्णाण°.

2. 1 b मेहलेय्यादि—मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः 2 a कयेति—कृतं स्वर्गालयाभिर्गमनं याभिः; b मयमंथर° मदेन मन्थरो मन्दः; °सिंधुर° हस्ती 3 a तेल्लोकैत्यादि—त्रैलोक्यस्य मारमणा लक्ष्मीपतयः तेषां दमनिकाः; b विरयाहुं यतीनाम्; रयमण दमणियउ रते सुरते मनः रतमनः तद्ददातीति रतमनोदं मणितं यासाम्. 4 a °वैचइय° भूषितैः; b मयणं बाण कओलियउ मदेन कृताः बाणपंकजः इव. 5 a जो यं ति ण के पइयन्ति न के, अपि तु सर्वे मनुष्या देवा वा पइयन्ति; सियउ श्रियः. 6 a अंबरउ आकाशम्; b °व रं बरउ देवाङ्गवल्खम्. 7 a णयेत्यादि—नयाः नैगमादयः सप्तभङ्गौ च तेषां विधिः रसनायां जिह्वायां यासां ताः; b मिच्छेत्यादि—मिथ्यामतं तस्य हेतवः तेषां निरसनिकाः. 8 a दाण वा रि° इन्द्रादयो देवाः; b दाण वा रि रयउ मदवारिणि रताः, अथवा मदजले रयो वेगो यासां ताः. 9 णिकामिणि° मनुष्यस्त्री ( नुकामिनी ).

3. 1 a °सुया °च्युता; b °वैल्हल° कोमल°. 2 a अज्जसुया भोगभूमिजस्य पुत्री; b विहिविण्णाणसमत्तिहु या विधिविज्ञानसमाप्तिभूता उत्तमरूपत्वात्. 3 b मणसुसुमूरणि या मनोद्राविका. 4 a वंदारय° देवाः.

अब्बो जय जय जगगुरुजगणि जय थणयलविलुलियहारमणि । 5  
 जय कम्मकाणणाणलअरणि जय धम्मविडवसंभवधरणि ।  
 पइं दिट्ठइ णिट्ठइ पावमलु संपज्जइ संचितिउ सयलु ।  
 पइं लद्धउं महिलाजम्मफलु तुह कुच्छिहि होसइ जिणधवलु ।

घत्ता—णिह सरसु णडंतु पर्यहि पडंतु विरइयपंजलिहत्थु ॥

संपादय पव ईच्छइ सेव अमरविलासिणिसत्थु ॥ ३ ॥ 10

॥

क वि अलयतिलय देविहि करइ क वि आदंसणु अग्गइ धरइ ।  
 क वि अप्पइ वररयणाहरणु क वि लिप्पइ कुंकुमेण वरणु ।  
 क वि णच्चइ गायइ मडुरसरु क वि पारंभइ विणोउ अवरु ।  
 क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी क वि वारि परिट्ठिय दंडधरी ।  
 अक्खाणउं का वि किं पि कहइ दिण्णउं कण्हल्लु का वि वहइ । 5  
 क वि वारवार विणपं णवइ क वि सुरसरिसरसलिलिहं ण्ववइ ।  
 क वि मालउ चेळिउं उज्जलउ दोयइ सँवलहणु सुपरिमलउ ।  
 छम्मासु जाम संजणियदिहि पयडंतु समीहिय सोक्खणिहि ।  
 णिवप्रंगंति णिहिणिहियधणु बुट्ठउ रयणिहि वइसँवणु घणु ।

घत्ता—हंसि वै सरपोमि रस्मि सुहस्मि उरविलुलियहारावलि ॥ 10

सोवंति समग्गि सयणयलग्गि सइ पेच्छइ सिविणावलि ॥ ४ ॥

३ P णट्ठइ, ४ MBP विरइयअंजलि°, ५ MBP संपादइ, ६ MBP इच्छियसेव.

4. १ P कणयल्लु, २ P चेळउ, ३ M दोइय, ४ MBP समलहणु, ५ MBP °पंगणति, ६ MB वइसवणघणु, ७ M हंसि वरपोमि; BP हंसि व वरपोमि, ८ MB पेच्छिहि, ९ MBP सुह्मावलि.

5 a अब्बो हे मातः. 6 a °अरणि अन्त्युत्पादककाष्ठम्, कर्मवहनसमर्थकरदेवोत्पत्तिहेतुत्वात्; b °वि ड व° पादपः.

7 a णिट्ठइ नदयति. 8 b जिण धवलु जिनवृषभः. 10 सेव सेवासु; °स त्थु सार्थः समूहः.

4. 1 a अल य तिल य अलिके ललाटे तिलकम्; b आदंसणु वर्णनः 3 b विणोउ विनोदम्. 4 b वारि द्वारे. 5 a अक्खाणउं कथानकम्; b कणहल्लु क्रीडाशुक्रः. 7 a मालउ पुष्पमालाः; चेळिउ वल्लसाटी; b सवलहणु विलेपनम्. 9 a प्रंगंति प्राङ्गणमध्ये; णिहिणिहियधणु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन; b रयणि हिं रत्नैः; वइसवणु घणु धनद एव मेघः. 10 सरपोमि सरोवरपद्मे; सुहस्मि शोभनप्रासादे; 11 समग्गि सम्मं अगं उपरितनभागो. अय्य; सयणयलग्गि शयनतले अग्रे प्रधाने.

5

पत्तिया	सणाहणेहरत्तिया ।	
सुत्तिया	णिमीलियच्छवत्तिया ।	
कामए	णिसाविरामजामए ।	
इच्छए	सुहावहं णियच्छए ।	
कंतयं	चउप्पयारदंतयं ।	5
णिम्भरं	झरंतदाणणिज्झरं ।	
संसयं	सरासणाहवंसयं ।	
तुंगयं	मिलंतमत्तभिगयं ।	
चारणं	गिरिंदमिस्तिदारणं ।	
पंतयं	बलेण देकरंतयं ।	10
गोवइं	अल्लदुज्झगोवइं ।	
दुद्धरं	फुरंतणक्खपंजरं ।	
भासुरं	घुलंतकंधकेसरं ।	
कोवणं	जलंतपिगलोवैणं ।	
भीसणं	मुँहा विमुक्कणीसणं ।	15
सीहयं	विळंबमाणजीहयं ।	
अंचियं	दिसागएहिं "सिचियं ।	
लच्छियं	विबुद्धपंकयच्छियं ।	
दंदयं	पहुल्लदामदंदयं ।	
समुहं	समुग्गयं सुहारुहं ।	20
भाहरं	सुइसहं तमीहरं ।	

5. १ PGT record a p अलट्ट and add: अलट्ट इति पाठे अलट्टो अक्षरो युद्धे गोपतिर्यस्य. २ M कोअणं. ३ MB °लोअणं. ४ MBP मुहोविमुक्क° ५ M °सिचयं. ६ MPT °दुदयं.

5. 1 a पत्तिया पत्नी; b सणाह° स्वनाथ°. 2 b णि मी लिय छि वत्तिया निमीलिताक्षिपद्मा. 3 a कामए कामदे वाञ्छितप्रदे कामोद्देकजनके वा; b °विरामजामए °पश्चिमयामि. 4 a इच्छए स्वेच्छया; b णियच्छए निरीक्षते. 5 b च उप्पयारदंतयं चतुर्दन्तमित्यर्थः. 7 a संसयं प्रशंसनीयम्; b सरासणाहवंसयं धनुराकारपृष्ठम्. 11 b अल्लदुज्झगोवइं अल्लद्वो युद्धार्थं गोपतिर्वलीवर्दो येन. 15 b मुहा विमुक्क° मुखेन मुक्ताः. 17 a अंचियं पूजितम्; b सिचियं स्नातम्. 18 b विबुद्धपंकयच्छियं विकसितपद्मनेत्राम्. 19 a दंदयं गरिष्ठम्; b पहुल्ल° प्रकुल्ल°; °दंदयं °द्वन्द्वम्. 21 b तमीहरं रात्रिविनाशकं चन्द्रम्.



हंसयं	खमाणसेकहंसयं ।	
रत्तयं	सरंतरे तरंतयं ।	
रम्मयं	चलं श्वाण जुम्मयं ।	
उब्मडं	धियंभकुंभसंघडं ।	25
मायरं	पहुंल्लपंकयायरं ।	
सायरं	रसंतवारिभीयरं ।	
आसणं	मंयारिरूवभूसणं ।	
सुंदरं	पुरंदरस्स मंदिरं ।	
सोहणं	महाहिणो णिहेलणं ।	30
उंखयं	अणयरंणसंचयं ।	
दित्तयं	हुयासणं पलित्तयं ।	

घत्ता—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिबुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ।  
उइयइ पच्चे अरुणमऊहे रायहु तं तिहं सिट्ठु ॥ ५ ॥

## 6

ता णरवइ णारीसारियहे	अक्खइ मरुणविभडारियहे ।	
दिट्ठेण गइंवे गुरुहुं गुरु	होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।	
गोणाहें गोमंडलु धरइ	सीहेण सचिकमु वित्थरइ ।	
सिरिदसाणि लहइ तिलोयसिरि	दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।	
पावइ पविहररइयच्चणं	जं दिट्ठउ पइं मयलंछणउ ।	5

७ BT विर्यंभ and gloss in T विर्यंभोऽमृतजलम्. ८ P पफुल्ल°. ९ MBP सरंत°. १० M सयारि°. ११ MBP भीसणं. १२ MBP उच्चयं. १३ B °रणण°. १४ B तिहे.

22 a हंसयं आदित्यम्; b खमाणसेकहंसयं गगनमेव मानसरोवरं तस्य हंसम्. 23 a रत्तयं अन्योन्यक्रीडा-  
रतम्. 24 b जुम्मयं युग्मम्. 25 a उब्मडं प्रकटम्; b धियंभ° धृतजलकुम्भयुग्मम्. 26 a मायरं लक्ष्मी-  
करम्. 27 b रसंतवारिभीयरं शब्दायमानजलभयानकम्. 28 b मयारि° सिंहः. 29 b पुरंदरस्स  
मंदिरं विमानम्. 30 b महाहिणो नागेन्द्रस्य; णिहेलणं गृहम्. 31 b रणं रत्न°. 32 b पलित्तयं प्रदीप्तम्.  
34 पच्चे आदित्ये; अरुणमऊहे आरक्ताकिरणे.

6. 1 a णारीसारियहे त्रीमध्ये उत्तमायाः. 3 a गोणाहें वृषभेण; गोमंडलु भूमण्डलम्. 4 b पुरिस-  
हरि पुरुषसिंहः. 5 a पविहरं इन्द्रः.

तं होसइ सुउ जणमणहरणु  
तं मोहंधारविणासयर  
झसजुयलें होही सोक्खणिहि  
कमलायरसायरेहि विहिं मि  
सिंहासणेण पंचमिय गइ  
दिट्ठेहि तियसणायहं घरेहि  
रयणोहें जिणसंपत्तिफलु

जं पुणु वि पलोइउ खरकिरणु ।  
भव्वयणालिणवणदिवसयर ।  
कुंमेहि वि सुरअहिसेयविहि ।  
गुणवंतु गहिरु भुवणहं तिहिं मि ।  
पावेसइ दंसणसुद्धमइ ।  
सेवेवउ देविहिं विसहरेहिं ।  
णिड्डहइ ह्यासैं कम्ममलु ।

10

घत्ता—सिचिणयफलु अज्जु णिरु णिरवज्जु कहमि ण रक्खमि गुज्जु ॥  
जगलमगणखंभु धम्मारंभु होसइ णंदणु तुज्जु ॥ ६ ॥

7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि  
कप्पहुमच्छेयपयणियविचारम्मि  
अवसप्पिणीसप्पिणीसंपवेसम्मि  
मायामहामोहबंधणइं लुंवेवि  
सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि  
इंदियइं णिंदियइं णिग्घिणइं भंजेवि  
जम्मंतरावद्धसुंक्रियपहावेण  
आसाढमासम्मि किण्हम्मि वीयम्मि  
सव्वत्थसिद्धीविमाणाउ ओयरइ

णक्खत्तसोहंतगयणंतरालम्मि ।  
ससिबिंबरविबिंबधत्थंधयारम्मि ।  
णरभोयपब्भारसुहभरियगासम्मि ।  
सारइं पउराइं पुण्णाइं संवेवि ।  
जगणमियतित्थयरणामं समजेवि ।  
तेत्तीसजलणिहिसमाणाउ भुंजेवि ।  
हिमहारणीहारसियवसहरुवेण ।  
संपत्तए उत्तरासाढरिक्खम्मि ।  
परमेसरो जणणिगब्भम्मि संचरइ ।

5

6. १ M पुलोइउ; P पलोयउ. २ MB सेवेवउ.

7. १ B सुक्कयं.

6 b खरकिरणु सूर्यः. 8 a झसजुयलें मत्स्ययुग्मेन; b सुरअहिसेय° देवाभिषेक°. 10 a पंचमियगइ सुक्तिः. 11 a °णायइं °नागानाम्. 14 जगलमगण° जगदाधार°.

7. 2 a कप्पहुमच्छेयपयणियविचारम्मि कल्पद्रुमविच्छेदेन जनितविकारे; b धत्थंधयारम्मि ध्वस्ता-  
न्वकारे. 3 a अवसप्पिणीसप्पिणी° अवसर्पिणीकाल एव नागिणी; b °गासम्मि भोगप्राप्ते. 5 a सोलह दर्शन-  
विशुद्धयादयः षोडश भावनाः; पहावेवि प्रभाव्य. 6 b °समाणाउ °समानं आयुः. 7 b हिम° अवदयायो नीहारा  
°वा; °सियवसह° धवलवृषभः. 8 a किण्हम्मि वीयम्मि कृष्णद्वितीयायाम्. 9 b संचरइ संचरणं प्रवेक्षं  
करोति.

सरयवममज्झस्मि रुहंरुंदंरुदु व्व  
आया सुरा गन्मवासं णमसेवि  
तव्वासराए व देवाहिवाणाइ  
जक्खेण माणिकुडुदी कया ताम

सयवत्तिणीपत्तए तोयविंदु व्व । 10  
सगं गया रयदेवि पसेसेवि ।  
रैक्खिदणाइंदपालिज्जमाणाइ ।  
मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्यु अवाहु वडुइ णाहु तणुकिरणइं पसरंति ॥

मरुदेविहि देहे णं णवमेहे णवरवियर णिग्गंति ॥ ७ ॥

15

## 8

मासमि चइत्ते पक्खे कसणे  
उत्तरआसाढारिक्खवरे  
जिणु तियसालावणीहिं झुणिउ  
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि  
णं विष्फुरंतु अरणीइ सिहि  
णं जीवसहाउ सिद्धसहए  
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ  
जगु णरयंपडंतउ णंवि सहिउ

अहिमयरवारि फुंडणवमिदिणे ।  
जोयमि बैम्हि बहुसोक्खयरे ।  
मैरुदेविइ णंदणु संजणिउ ।  
सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।  
णं देक्खालिउ धरणीइ णिहि । 5  
णं अत्थु महाकइकयकहए ।  
णं गुणगणु पुंजेणिणु ठविउ ।  
णं धम्मं पुरिसखु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिण्णासु लोयपयासु किस्सिवेल्लिखरकंदु ॥

मयमलपम्भट्टु कुवल्लयइहु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

10

२ M °रुंदंरुदु व्व; T °इंदु व्व. ३ MBP रायदेवी. ४ MBP जक्खिद°, but T रक्खिद° राक्षसेन्द्राः.

8. १ B चइत्तहो; P चइत्ति. २ MBP फुहु. ३ MBP बंभि. ४ M मरुदेवि; B मरुदेवे; P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालउ and gloss दर्शितः. ६ MP णरइ पडंतउ. ७ MB णउ.

10 a रुहंरुंदंरुदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 a तव्वा सराए तद्दिनादारभ्य; देवा हि वा णा इ इन्द्रस्याज्ञया. 14 अवाहु बाधाराहितः. 12 णवरवियर बालार्करमयः.

8. 1 b अहिमयरवारि रविदिने. 3 a तियसालावणीहि त्रिदशवीणाभिः; झुणिउ गायितः. 4 a तवणीयछवि सुवर्णकान्तिः; b सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव. 6 a सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेष्ठ्या, यथा सिद्ध्यानेनात्मा दृश्यते. 10 मयमल° मदाद्य मलाश्व, अन्यत्र मृगः एव मलः; कुवल्लय° पृथ्वीमण्डलं कुमुद-संघातश्च.

णणत्तिपण णिपण णिरुत्ते  
 उप्पण्णे णाहे ह्यदप्पो  
 कप्पेसुं ससहावै णाया  
 उट्ठिय णिण्णासियदिण्णाया  
 वैतरदेवावासवैपसुं  
 संखरवो भावणभवणेसुं  
 णाउं णाणेणं णिप्पावं  
 बुद्धो चित्ते धम्माणंदे  
 हत्थिदो पैरावयणामो  
 गलियकवोलमओलजलदो  
 कच्छरिच्छमालाछुरियंगो  
 पत्तो मैत्तो मंदरमेत्तो  
 कंतिपसाहियणहमित्ताइं  
 पत्ते पत्ते सुँरतरुणीओ  
 इय दट्ठुं तमिहमलंयं  
 सव्वत्थ वि भयछत्तरवणं  
 सव्वत्थ वि गयणाणाजाणं  
 सव्वत्थ वि पसरियउल्लोवं  
 सव्वत्थ वि सरणेयरसालं  
 तरुपल्लवियं पिव णहवलयं

लक्खणवज्जणचच्चियगत्ते ।  
 जाओ इंदस्सासणकंपो ।  
 घंटाटंकारा संजाया ।  
 जोइसवासे सीहणिणाया ।  
 गज्जंते पडहा विवैरेसुं ।  
 संपण्णो खोहो भुवणेसुं ।  
 भूमीभाए हूयं देवं ।  
 चलिओ सँक्को सक्को चंदो ।  
 वेउव्वियसरीरपरिणामो ।  
 रणझणंतगेज्जावलिसहो ।  
 कण्णचमरविणिवारियमिंगो ।  
 लीलायंतो बहुविहदंतो ।  
 दंति दंति सरसयवत्ताइं ।  
 णच्चंतीओ थोरथणीओ ।  
 चडिओ सोहम्मीसो सिग्गं ।  
 सव्वत्थ वि चामरसंछणं ।  
 सव्वत्थ वि धावंतविमाणं ।  
 सव्वत्थ वि जयदुंदुहिरावं ।  
 सव्वत्थ वि उच्चाहयमालं ।  
 सोहइ सुरवरपायाउलयं ।

5

10

15

20

9. १ MBP णिउत्ते. २ P °पएसु. ३ MBP विपरेसुं but gloss in P विपरेसुं विवरेषु गगनेषु  
 T परेसुं वत्तमेसु. ४ MB सक्को सुक्को. ५ P अइरावय°. ६ MB पत्तो. ७ MBP सुरवरतरुणीओ.

9. पादा कु लकं छन्दः. 1 b लक्खण° शंखकुलिसादिः वज्जण° तिलकमसकादि. 3 a णा या उपपन्नाः.  
 5 a °वएसुं पदेषु स्थानेषु; b विवरेसुं विवरेषु गगनेषु. 7 a णिप्पावं निष्पापम्. 8 b सक्को शक्कः; सक्को  
 सार्कः आदित्यसहितः. 10 a °मओलजलदो मदप्रवाहजलेनार्द्रः. 11 a कच्छरिच्छमाला छुरियंगो कक्ष्यया  
 वरत्रया नक्षत्रमालया व स्फुरिताङ्गः. 13 a कंतिपसाहियणहमित्ताइं कान्त्या प्रसाधिता मण्डिता नमोमित्रा  
 आकाशादित्या यैः; b सरसयवत्ताइं सरसः उच्छृतानि कमलानि. 15 a तमिहंतं ऐरावतम् ( तम्+इमम् );  
 अलंघं अलंघनीयमतीवोच्चम्. 18 a पसरियउल्लोवं प्रसृतोल्लोवं चन्द्रापक्म्. 20 b सुरवरपायाउलयं  
 देवेन्द्रपादैराकुलम्, अन्यत्र पादाकुलकं छन्दः.

घत्ता—णवतणुरोमंचु दावइ उंचु जिणभवि हरिसु वंहति ॥  
तरं चलदलपाणि णडइ व खोणि भावे वहरसवति ॥ ९ ॥

## 10

महिसेहिं मेसेहिं	आसेहिं भासेहिं ।	
हंसेहिं मोरेहिं	कुंरेहिं कीरेहिं ।	
सरहेहिं करहेहिं	दुरएहिं वसहेहिं ।	
दीवीतरच्छेहिं	रिंछेहिं मच्छेहिं ।	
सारंगसीहेहिं	तरगिरिहिं मेहेहिं ।	5
सिहि जम महाभीस	णेरिय समुहेस ।	
मारंय कुबेरकं	ईसाण णीसंक ।	
मज्झमि खामाहिं	मुद्धाहिं सामाहिं ।	
छणयंदवयणाहिं	णवणलिणयणाहिं ।	
थणयुलियहाराहिं	पसरियवियाराहिं ।	10
धयरट्ठगांमिणिहिं	सोहंतकामिणिहिं ।	
गयणोवडंतीहिं	सरसं णडंतीहिं ।	
वज्जंतवज्जेहिं	कीलंतखुज्जेहिं ।	
बाहूरविलेहिं	दुक्कंतमल्लेहिं ।	
बहुविहविलासेहिं	मंगलणिघोसेहिं ।	15
संचल्लिया एम्व	णाणाविहा देव ।	

घत्ता—पावेवि अउज्झ परमदुगेज्झ परियंचेवि तिवार ॥

फणि दिणयर चंदु भणइ सुरिंदु जय णहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उचु. ९ MBP तरं वरदलपाणि.

10. १ BP कुंरेहिं. २ MB दुरहेहिं ३ MB रिच्छेहिं. ४ B मारुव. ५ MBP °वयणेहिं. ६ MBP °णयणेहिं. ७ MBP गयणहिं. ८ MBP परदुगेज्झ. ९ MP °दिणयर.

10. 1 b भासेहिं उल्लेखः. 3 b दुरएहिं द्विद्वेर्गजैः. 6 b समुहेस वरुण. 7 b णीसंक इन्द्रः  
8 a खामाहिं मुच्छेदरीभिः. 11 a धयरट्ठं हंसः. 12 a गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 a  
बाहूरविलेहिं करास्कोटनशब्दः. 17 परियंचेवि प्रदक्षिणीकृत्य.

## II

गयणग्गलग्गाहिमणिहसिहर  
जंपि वि पियवयणइं णिवपवरे  
अमयासणगणसंमाणियप  
सहसक्खे दिट्ठउ परमपर  
छज्जइ अण्णाणतमोहहर  
णं बद्धउ सिवसुहकणथरसु  
णं सयैलकलायर उग्गामिउ  
देविइ दिज्जंतुं णियच्छियउ  
वरवंदारयवंदहिं णंविउ  
को ण गणइ पुण्णपरिप्फुरिउ  
चमरइं धिवंति अमराहिवइ

पइसेप्पिणु णाहिर्णरिंदवर ।  
मायहि मायासिसु देवि करे ।  
कट्ठिउ देविइ इंदाणियप ।  
कम्मलसरे णं णवदिचसयर ।  
णं अंकुरत्ति थिउ धम्मतर । 5  
णं पुरिसरूवि संठियउ जसु ।  
णं एकहिं लक्खणपुंजु किउ ।  
सोहम्मिदेण पडिच्छियउ ।  
पणवेप्पिणु अंकग्गइ ठविउ ।  
ईसाणं धवलछत्तु धरिउ । 10  
साणकुमारमाहिंदवइ ।

यत्ता—जग्गु जित्तउ जेहिं णिम्मिउ तेहिं अणुयहिं देवहु देहु ॥  
तं सुइरु णियंतु दससयणेत्तु विम्विइं पुलइयदेहु ॥ ११ ॥

## 12

पुणु पमणइ महुं हयकम्ममलु  
एहउं तिहुयणपरमेसरहो  
इय घोसिवि पुणु पुणु जोइयउ  
परमेट्ठि लपप्पिणु भमियगहे  
भंयसयइं सणउयइं जोणयहं

बहुल्लोयणत्तु जायउ सहलु ।  
जं दिट्ठउं रूढु जिणेसरहो ।  
इंदं अइरावउ चोइयउ ।  
सच्छरु सामरु संचलिउ णहे ।  
महि सुइवि ठाणु तारायणहं । 5

11. १ M °णरिंदु घर. २ MB पेमसेरे. ३ BP सयलु कलायर. ४ MB णिजंतु. ५ MBP णमिउ.  
६ MB पुणपविप्फुरिउ. ७ MBP विमिउ.

12. १ T p णयसयइं and explains it as णयसयइं इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

11. 1 a गय ण गल ग्ग° आकाशरूढ°; हिम णि ह° हिमसदशम्. 2 a णिवपवरे नाभिराजे; b देवि  
इत्वा. 3 a अमयासण° देवाः; b कट्ठिउ आनीतः; 4 a सहसक्खे इन्द्रेण. 5 a छज्जइ शोभते. 8 a  
दिज्जंतु वीर्यमानः; b पडिच्छियउ स्वीकृतः. 9 b अंकग्गइ उत्सङ्गाग्रे. 10 a पुण्णपरिप्फुरिउ पुण्यप्रभा-  
वम्. 11 a धिवंति क्षिपन्ति. 12 जित्तउ जितम्; अणुयहिं परमाणुभिः. 13 सुइरु सुचिरम्.

12. 1 b बहुल्लोयणत्तु सहस्रनेत्रत्वम्. 4 a भमियगहे भ्रमितप्रहे आकाशे; b सच्छरु साप्सराः  
अप्सरोभिः सहितः; सामरु देवैः सहितः. 5 a भयसयइं सप्तशतानि; सणउयइं नवत्यधिकानि. ....

तेत्थाउ सुदूसहकरपसर  
उप्परि दहहिं जि रवि परिममइ  
चउहु जि रिक्खोहु गिरिक्खियउ  
तिहिं सुकु तिहिं जि सुरगुरु भणमि  
सउ एम दहुत्तर लंघियउ  
सहसाइं गंपि अट्ठाणवइ  
पत्तेण जि सोहइ दीहरिय  
अट्टेव समुण्णय हिमविमल  
जहिं तहिं पत्तेण पविस्सतणु  
देवाहिचेण तेह्लोक्कहिउ

जोयणहिं पसाहियसरयसर ।  
पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।  
पुणु तेत्तिपहिं बुहु लक्खियउ ।  
तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।  
सुद्धायासु वि आसंघियउ । 10  
अवर वि जोयणसउ तियसवइ ।  
जोयण पण्णास पवित्थरिय ।  
अद्धिदुसरिच्छी पंडसिल ।  
जय जय पभणंतं परमजिणु ।  
तहि उप्परि सीहासाणि णिहिउ । 15

घत्ता—पहु सहइ णिसण्ण कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥  
णं कुरुहकरेहिं वेल्लिहरेहिं मंदर ढंकइ अंगु ॥ १२ ॥

## 13

जिणणाहुहु भावें मेरुगिरि  
णं पर्णमइ फलभरणमियतर  
णं कोइलकलरवेण चवइ  
पक्खालंतु व पडुकमकमलु  
लिंपइ व सविणय पणयवसेण  
जोयइ व रुउ सु सियासियाहिं  
णच्चइ व पणच्चियणीलगलु

णं हरिसैं दावइ णिययसिरि ।  
णं धैल्लइ चमरीमय चमर ।  
णं फलिहसिलासाणाइं ठवइ ।  
आणइ जवेण णिज्झरणजलु ।  
करिणिहसणच्चुयचंदणरसेण । 5  
अहिणवणल्लिणच्छिहिं वियसियहिं ।  
गायइ व रूणुणुणियरंणिय भसलु ।

१ P सुदूसहु. २ B गिरिक्खियउ. ४ M सहसाइं गंपिणु; BP सहसा गंपिणु. ५ M सवित्थरय; BP सवित्थरिय.  
13. १ M पणवइ. २ M घल्लय. ३ M सुहुणिय. ४ MBP ०रुणिय.

6 a तेत्थाउ तस्मादागतः; b ०सरयसर शरत्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलक्षितं सरः. 7 b सइं स्वयम्. 8 a रिक्खोहु अश्विन्यादिसप्तविंशत्यक्षत्राणि. 9 a तिहिं त्रिभिः; सुकु शुक्रः; सुरगुरु बृहस्पतिः; b अंगारउ अङ्गारकः कुजो शनिः; सणि शनिश्चरः. 10 b सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्; आसंघियउ आश्रितम्. 11 a सहसाइं सहसाणि. 13 b अद्धिदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकाराः. 15 a ०हिउ हितः. 16 सहइ शोभते; 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः; वेल्लिहरेहिं वल्लीधारकैः; मंदर ढंकइ अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.  
13. 1 b णिययसिरि निजश्रीः. 2 b चमरीमय चमरीशृङ्गाः. 4 b जवेण वेगेन. 5 b करिणिहसणं हस्तिनिघर्षणं. 7 a ०णीलगलु मयूरः.

णं कुसुमामोहं णीससइ

णं रयणरयणपतिहिं हसइ ।

यत्ता—संठिउ मणिरंगि मंदरसिगि चंपयवासविमसि ॥

जिणु सासयसोक्खु णावइ मोक्खु थिउ तेलोक्खु सीसे ॥ १३ ॥

10

14

ता हयाइं भेरिइल्लरीमुंइंगसंखतालकाहलौइं वज्जयाइं ।

खिम्मिसेहिं पाणिपायकुं चियाइं णच्चियाइं वाम्मणाइं खुज्जयाइं ॥

भूयजक्खकिणरेहिं खेयेरेहिं रक्खसेहिं णायणाइणीसएहिं ।

आयएहिं पूरियं णरंतरं णहंतरं भवंतभावभाविएहिं ॥

बालहंसगामिणीहिं इंदचंदकामिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं ।

5

दम्भदोवैपूयवीयमट्टियाकणेहिं ताइं णिम्मियाइं णिम्मलाइं ।

उद्धवद्धणिद्धचारुचीरमंडवे फुरंतमोत्तिएहिं मंडिऊण ।

लोयतावकारणाइं कुच्छियाइं वंछियाइं छैडिऊण ॥

सहिऊण णायरेण सायरेण सासणामरे वरे पओसिऊण ।

गंधधूवफुल्लदीवतोयतंदुलणजण्णभायए णिवेसिऊण ॥

10

सक्खच्चिकालणेरिअण्णवाणिले कुबेरसूलिणे समच्चिऊण ।

मंतपुब्बियं विहिं सुहावहं समागमे समासियं समासिऊण ॥

जीय देव णंद वद्ध सिद्ध बुद्ध सुद्धसील सामिसाल भाणिऊण ।

दोहएहिं दोधएहिं खंधएहिं चित्तवित्तसंयुइंहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning पिगलानंदो णाम दंडओ; MBP have पिगलानंदो णाम छंदो. १ M °सुयंग°. २ MB °काहलाइवज्जयाइं. ३ MB वावणाइं. ४ P °दोव्व° but gloss दूर्वा. ५ K छंडिऊण. ६ M °जम्भ°. ७ BP °सूलिणो. ८ KT दूहएहिं.

8 ठ रयणरयणपतिहिं रत्तान्येव दन्तास्तेषां पंक्तिभिः 9 मणिरंगि रत्नभूमौ.

14. 1 वज्जयाइं वायानि. 2 खिम्मिसेहिं किल्बिषिकदेवैस्तूर्यवादेभिः; पाणिपायकुं चियाइं संकुचितहस्त-पादाः. 3 णायणाइणीसएहिं नागनागिनीशतैः. 4 आयएहिं आयतैः; भवंतभावभाविएहिं संसारविना-शकपरिणामसहितैः उत्पद्यमानानुरागैर्वा. 6 °दोव° दूर्वा; °पूय° अपूपश्चर्वा; °वीय° बीज. 8 कुच्छियाइं दुःखकारणानि; वंछियाइं मानवायादीनि. 9 णायरेण व्युत्पन्नेन इन्द्रेण; साखणामरे शासनदेवान्; पओसिऊण प्रतोष्य. 10 °जण्णभायए यत्नभागान्. 11 सक्खेत्यादि-शक्रादीनष्टदिक्पालान्; °चिच्चि° अग्निदेवः; °काल° यमः; णेरि नैकैत्यदेवः; °सूलिणे° ईशानान्; 12 समागमे समासियं समासिऊण जिनशासने प्रतिपादितं समाश्रित्य. 14 दोहएहिं दोहकदोधकायैः वृत्तैः; चित्तवित्तं चित्रवृत्तं.



मंदरं छिबंतियाइ बद्धदेवपंतियाइ खीरसायरंतियाइ । 15  
 वोमयं कर्मंतियाइ धंतियाइ थंतियाइ जंतियाइ पंतियाइ ॥  
 हारदोरं कंचिदामवंभसुत्तकं कंणालिकुंडलाहिं भूसिपहिं ।  
 आइवीयकप्पुंगमेहिं आसणासिपहिं सम्मयाहिलासिपहिं ॥  
 अट्टुजोयणोयरेहिं एक्ककंठवित्थरेहिं अब्भयं णिसुंभएहिं ।  
 हुंदहोपयच्छिपहिं पाणिणा पडिच्छिपहिं उग्गयंयुथंभएहिं ॥ 20  
 चंदणेण चच्चिपहिं पुप्फदामवेदिपहिं णं घणेहिं संभएहिं ।  
 एकमेक्कदोइएहिं पोमंपत्तछाइएहिं सायकुंभकुंभएहिं ॥  
 सिंचिओ पुणंचिओ णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइवेओ ।  
 कामकोहमोहलोहमाणडंभवं फलत्तवज्जिओ हयावलेओ ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्ध जिणु सइंयुद्ध सो ण्हाविउ लइ ण्हाइ ॥ 25  
 झसवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

## 15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ	मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेदिहि जाणियसंवरहो	किं अंवरु दिण्णु णिरंवरहो ।
किं भूसणु भूसणि सणिहिउ	किं जंगमंडणि मंडणु लिहिउ ।
पविसूइइ वचगयभवरिणहो	विधेपिण्णु सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइं मणिमयकुंडलइं	णं ससहरदिणयरमंडलइं । 5
चवलम्भपिसायहु णट्टाइं	णहियहु सरणु पइट्टाइं ।
किं कोसिएण जगसेहरहो	सिरि सेहरु बद्धउ मणहरहो ।

१ MB मंदिरं; K मंदिरं but corrects it to मंदर. १० P °डोर. ११ P कंणालिं १२ MBP °विमएहिं, but gloss in P उद्गतोच्छलितजलविन्दुभिः. १३ P पोमवत्. १४ P °वपलत्.

15. १ P जगमंडणु मंडणि. २ P विधेविणु.

16 वो मयं कर्मंतियाइ व्योम व्यानुवत्या; धंतियाइ धावन्त्या. 18 आइवीथेत्यादि—आद्यद्वितीयकत्पुंगवाभ्याम्. 19 एक्ककंठवित्थरेहिं सुखे एकयोजनविस्तीर्णैः; अब्भयं णिसुंभएहिं मेघपटलविष्वसकैः. 20 हुंदहोपयच्छिपहिं 'शृङ्गाण भोः' इत्येवं भणित्वा प्रदत्तैः; °थंभएहिं °विन्दुभिः. 21 संभएहिं साम्भोभिर्जलयुक्तैः. 22 सायकुंभं सुवर्णं. 24 वप्फलत्तं बहुप्रलापित्वम्. 26 झसवासहु समुद्रस्थ.

15. 2 a जाणियसंवरहो ज्ञातसंवरस्थ. 3 a भूसणि भूषणभूते; b जगमंडणि त्रैलोक्यमण्डनस्थ; मंडणु तिलकः. 4 a पविसूइइ वज्रसूचिकया. 5 a विच्छूढइं परिधापिते. 6 a अब्भपिसायहु अभपिसाभो राहुस्तस्मात्. 7 a कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण.

गलरेहाजित्तं वलियण्ण  
हियउल्लउ हारें सेवियउ

हेट्टामुहेण परिघुलियण्ण ।  
जडजाणं किं पि ण भौवियउ ।

घत्ता—जो सालंकार किमलंकार सुरवर तासु करंति ॥  
महु हियवइ भंति णउ लज्जंति रूवु काइ ढंकांति ॥ १५ ॥

10

16

किं बुद्धि ण हूई सुरयणहो  
कडिसुत्तउ कडियलि वलइयउ  
किं सीहणियंबहु एह सिरि  
कमजुइ संणहियउ झणझणइ  
जं भव्वजीवसंतइसरणु  
कोमलसरलंगुलिदलकमलु  
मइ लद्धउ जिणवरपयजुयलु  
जं करणकालि सिहितावियउ

मणिबंधु महग्घउ कंकणहो ।  
किकिणिसरु चवइ व पुलइयउ ।  
लइ अच्छइ तं सेवंतु गिरि ।  
मंजीरजुयलु इय णं भणइ ।  
संसारमहाजलणिहितरणु ।  
णहकिरणपसरहयतिमिरमलु ।  
महु जायंउ भूसणत्तु सहलु ।  
तं तवहलु णं विहिदावियउ ।

5

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरइयण्हाणु ॥  
मंदरगिरिगुज्झि महिहैहमज्झि णं घल्लइ अप्पाणु ॥ १६ ॥

10

17

दूराउ वहतु गियच्छियउ  
वंदिज्जइ जिणतणु पेरिलुडिउ

सीसैण सुरेहिं पडिच्छियउ ।  
कक्करकंदराणिवंडाणि सुडिउ ।

३ MBP जाणियउ. ४ BP ढंकांति.

16. १ P सिंह°. २ M भूसणत्तु जायउ. ३ P महिहर°.

17. १ P सीसैहि. 2 MBP परिडुलिउ. ३ K °णिवडणसुडिउ.

8 b हेट्टामुहेण अपोमुखेन. 9 b जडजाए जलजन्मना मुक्ताफलेन. 11 भंति विस्मयः.

16. 1 b मणी त्यादि-प्रकोष्ठः कङ्कणान्महार्घ्य इत्यर्थः. 2 a वलइयउ बद्धम्; b पुलइयउ रोमाक्षितम्. 3 a एह एषा. 5 a °संतइ °संततिः. 7 a सहलु सफलम्. 8 a सिहिता वियउ आभितापितम्. 9 सुरसायर° क्षीरसमुद्रः. 10 घल्लइ अप्पाणु आत्मानं निपातयति.

17. 1 a गियच्छियउ निरीक्षितं स्नानजलं वन्दितं च. 2 a °परिलुडिउ पतितम्; b कक्कर° कठिन°; सुडिउ दुःखितम्.

णिज्जइ देवेहिं करेणं करु  
पंकयकेसररयधूसरिउ  
वणकुंजरकुंभत्थलखलिउ  
संचलियसिलिमुहचिउत्तलिउ  
परिघोलइ सिहरिंदहु तणउं  
णहिं णहयरोहिं महियलि णरोहिं  
धावंतु थंतु वियलंतु चलु

गुरुसंगं को णउ होइ गुरु ।  
कस्सेरीयराणं पिंजरिउ ।  
करडयलगलियमयपरिमलिउ । 5  
णाणामणिकिरणहिं संवलिउ ।  
णं पंचवणु उप्परियणउं ।  
पायालि पडंतउ विसहरोहिं ।  
वंदिउ सव्वण्डुहि ण्हाणजलु । 10

यत्ता—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसं कैहिं मि णमंति ॥

उट्ठंत पडंत पुरउ णडंत वारवार पणवंति ॥ १७ ॥

## 18

केण वि वाइत्तउं वाइयउ  
केण वि बहुसुक्किउ संचियउ  
सचलहणउं केण वि ढोइयउ  
केण वि थोत्तइं पारद्धाईं  
पडिहारु को वि हुउ दंडधरु  
पडु पडइ का वि अणुराइयउ  
कासु वि आलावाणि णिद्धतणु  
सरलंगुलिताडिय रणझणइ  
तहिं अवसरि कर्यणाणावयणु  
आयासु जि आयासहु सरिसु

केण वि सुइमिद्धउ गाइयउ ।  
केण वि भावालउ णच्चियउ ।  
केण वि आहरणु णिवेइयउ ।  
केण वि तोरणइं णिवद्धाईं ।  
कु वि पासि परिट्ठिउ खग्गकरु । 5  
केण वि मालउ उच्चाइयउ ।  
जहिं छिप्पइ तहिं तहिं करइ मणु ।  
णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।  
थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।  
उवमाणु ण तुज्जु को वि पुरिसु 10

४ P कोरिइ. ५ PT कासीरय°. ६ MBP °सिलीमुह°. ७ MBP कहव. ८ MBP पणमंति.

18. १ B णाणावयणु तणु.

4 b कस्सीरय° कासीरयं कुङ्कुमम्. 5 b करडयल° गजकपोल°. 6 a °सिलिमुह° भ्रमराः; वि त्त लिउ कर्तुरितम्. 7 a सिहरिंदहु मेरोः. 9 a थंतु तिष्ठत्; b सव्वण्डुहि आदिजिनस्य. 10 चउ विह देव भुवन-वासिभ्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवाः.

18. 1 a वाइत्तउं वादित्रम्; b सुइमिद्धउ कर्णामृतम्. 2 b भावालउ भावयुक्तम्. 3 a सचलह-णउ विलेपनम्; b णिवेइयउ दत्तम्. 6 a अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्तः. 7 a आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः. 8 a कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्रः; b दससयणयणु सहस्रलोचनः इन्द्रः. 10 a आयासु आकाशम्.

जइ पइं जि समाणउं पइं भणमि

ता परमेसर किं पइं थुणमि ।

घत्ता—जो कहइ कएण कइ कव्वेण जिणवर तुह गुणरासि ॥

सो णिहँ लहुएण करबुलुएण मूढु मवइ जलरासि ॥ १८ ॥

## 19

तुह थोत्तवित्तस्स चित्तं णंव देमि  
धणलाहँलोलोहिं संगहियसंगेहिं  
पसुमंसमज्जुधाराविलुद्धेहिं  
मयघुम्मिरच्छीहिं मिच्छत्तिरूढेहिं  
असिवत्तदुग्गतराले घडंताण  
जमपासणिप्पीडियाणं सवाहीण  
इणं मो जयंजम्मवासं णिहंतूण  
जय कालकालगिजालावलीकंद  
जय घोरसंसारकंतराणित्थार  
जय मारसिंगारपम्भारणिब्भेय  
जय दुव्विणीयंतरंगाण दुण्णेय  
जय देव कंठीरुवुवूढपीढत्थ

अहमीस धिट्ठत्तणेणैधं वंदेमि ।  
परणारिहिसामुसाणंदियंगेहिं ।  
कुलजाइविण्णाणं गावावरुद्धेहिं ।  
कह दीससे तं महामोहमूढेहिं ।  
णरयम्मि धंते महंते पडंताण । 5  
जिण को करालंवणं देइ देहीण ।  
परमं पयं णेइ को तं पमोत्तूण ।  
जय इंदणाइंदलच्छीलयाकंद ।  
जय दव्वपजायसंभावणासार ।  
जय दीहदालिह्दोहग्गविच्छेय । 10  
जय णाह णीराय णीसल्ल णाहेय ।  
जय कूरचित्तेसु भत्तेसु मज्झत्थ ।

घत्ता—जय मंथरगामि तिहुयणसामि एत्तिउ मग्गिउ देहि ॥

जहिं जम्मु ण कम्मु पाउ ण धम्मु तहु देसहु मइं णेहि ॥ १९ ॥

१ P बर.

19. १ K वंदामि. २ MBP °लाहलोहेहिं. ३ MBP °गारावलुद्धेहिं. ४ M मिच्छत्ति°. ५ B जयजम्म°.

12 कइ कतिः. 13 जल रासि समुद्रम्.

19. 1 a तुहेत्यादि—तथ स्तोत्रमेव वृत्तमाचरणं तस्य स्तवनाचारस्य तव स्तोत्राचरणे नवीनं चित्तमहं ददामी-  
त्यर्थः. 2 a संगहिय संगेहिं संगृहीतपरिमहैः. 3 b °गावावरुद्धेहिं गर्वावरुद्धेहिं. 4 a असिवत्तदुग्गतराले  
अक्षिपन्नरके; b धंते अन्धकारे. 7 a जयंजम्मवासं जगज्जन्मपाशम्. 8 a कालेत्यादि—काले प्रलयकाले  
कालाग्निः प्रक्षयान्तिस्तस्य ज्वालानां कंदो मेघः. 9 a °णित्थार पर्यन्तप्रापक; b °संभावणा° घटना. 11 a  
दुव्विणीयंतरंगाण ज्ञातानाम्; दुण्णेय ज्ञातुमशक्य. 12 a कंठीरुवुवूढपीढत्थ सिंहासनस्थ. 13 मग्गिउ  
आचितम्.

देवं सुण्हविऊण	भत्तीइ णविऊण ।	
पडुपडहणाएहिं	यंगिदुगिगवाएहिं ।	
दुंणिकिटिमटकेहिं	झंझंसघोकेहिं ।	
भंभंतंभंभाहिं	ढकाहुडुकाहिं ।	
करडाहिं काहलहिं	झल्लरिहिं मंदलहिं	5
तालेहिं संखेहिं	अण्णाहिं असंखेहिं	
वहिरियदसासेहिं	जयतूरघोसेहिं ।	
बहुवयणु बहुणयणु	करपिहियपिहुगयणु ।	
हरिसेण विच्छुरिउ	णियतरुणपरियरिउ ।	
विविहंगहारेहिं	रसभावसारेहिं ।	10
उप्पयइ पैरिवडइ	आहंढलो णडइ ।	
धम्माणुराएण	पयजुयणिवाएण ।	
सुरमहिहरो फुडइ	महिवीडु कडयडइ ।	
परिभमइ थरहरइ	णियदेहु संवरइ ।	
रोसेण फुंफुवइ	फणि फरसु विसु मुयइ ।	15
विसजलणु वित्थरइ	धगधगइ डुरुडुरइ ।	
तावेण कढकढइ	जलयरकुलं लुढइ ।	
जलही वि झलझलइ	सेरं समुल्लसइ ।	

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविवरइं फुडंति ॥

णच्चंतं इदं णयणाणंदं गिरिसिहरइं तुडंति ॥ २० ॥

20

20. १ MB डगदुगिग<sup>०</sup>; P थगदुगिग<sup>०</sup>. २ MB दुणिकिटिमटकेहिं; P दुणिकिटिमटकेहिं. ३ MBP भंभंतं. ४ MBP मंदलहिं. ५ MBP विच्छुरिउ. ६ P पडिवडइ. ७ MB पुण्णुवइ. ८ MBP जलणिहिं वि. ९ MB सरसं.

20. 2 a पडु सबैरव्यक्ताशब्दवादित्रैरित्यर्थः. 4 b हुडुका वायविशेषः. 8 a बहुवयणु शोषनागः; बहुणयणु इन्द्रः; b पिडु<sup>०</sup> पृथु. 10 a अंगहारेहिं अङ्गविशेषः. 18 b सेरं स्नेच्छया.

## 21

इय णच्चिवि गिण्हिवि उसहसिरि	आरुदु सवारणखंधि हरि ।	
सच्छरु सविवुहु लहु संचलित	पवणंदोलियधयवडलुलित ।	
संगीयसद्कोलाहलेण	खे धावतें सुरवरवलेण ।	
तणुकंतिभारवारियविहुणा	उंप्परि एंतेण देवपहुणा ।	
दीसइ अहत्यु णक्खत्तगणु	णं णंहसरि फुल्लित कमैलवणु ।	5
णं मोत्तियमंडवु भेइणिहि	जिणु ण्हाणंतिहि मंदाइणिहि ।	
सियजलकणणियरु समुच्छलित	णं दीसइ दसदिसासु घुल्लित ।	
उज्झाउरि झत्ति पराइयउ	रायंगणि लोउ ण माइयउ ।	
उत्तरिवि करिहि हरि आइयउ	मायापियरहुं सिसु ढोइयउ ।	
तिहुयणपरिपालणपरमविहि	संगहिउ तेहिं सो णाणणिहि ।	10
विसु धम्मु तेण भौइ त्ति पहु	भासियउ पुरंदरेण विसहु ।	

यत्ता—जगभरहु समत्थु पुण्णपसत्थु णंदणु लेवि अदीण ॥

सुरसंथुयपाय हरिसिय माय पुष्पयंति आसीण ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहय

महाभव्वभरहाणुमणिणप महाकव्वे जिणजम्माहिसेयकल्लणं णाम

तइओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥

॥ संधि ॥ ३ ॥

21. १ P उप्परि येतेण but gloss आगच्छता. २ B णहसिरफुल्लित; P णहसरफुल्लित. ३ K कुसुम-  
वणु. ४ MBP add after this foot: संतोसवसेण पलोइयउ; G gives it in the margin in  
second hand, but K does not give it at all. ५ M ताइ त्ति. ६ BP पुष्पयंतआसीण.

21. 1 a उ सहु सिरि श्रीवृषभः; b सवारणं स्वकीयगजं; हरि इन्द्रः. 2 a सच्छरु सह अप्सरसां  
गणेन; सविवुहु देवैः सहितः. 4 a कंतिभारवारियविहुणा कान्तिभारतिरस्कृतचन्द्रेण. 5 a अहत्यु अधः-  
स्थः 6 b मंदाइणि हे गङ्गायाः. 8 a उज्झाउरि अयोध्यायाम्. 10 a परमविहि परमो विधाता. 11 a  
भाइ शोभते; वृषो धर्मस्तेन शोभते प्रमुत्तेन कारणेन इन्द्रेण वृषभः इति कथितः; b विसहु वृषभः. 12 अदीण  
अदीना आनन्दिता मरुदेवी माता. 13 पुष्पयंति आसीण पुष्पैः पुष्पप्रकरैः कान्ते कमनीये स्थाने आसीना  
उपविष्टा.

#### IV

घरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजस्मुच्छु जो रइउ ॥  
तं पेच्छवि विसंहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ ॥ भ्रुवकं ॥

#### I

जम्भेद्विया—तणुअणुरुवइं रंजियरूवइं ॥  
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलंतउ मालइमालियाउ	थणथण्णामयधारालियाउ ।	5
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ	धाईउ समप्पिवि अच्छराउ ।	
किंकर गिन्वाण अणंत देवि	सिसुणाहहु णिरु भावें णवेवि ।	
तं गुरुजुयल्लुल्लं विमलणाणि	पुल्लेवि पसंसिवि कुल्लिसपाणि ।	
पुंच्छिवि गउ सयमहु सघरु जाम	कोसलपुरि वड्डइ बालु ताम ।	
उत्ताणसेज्ज णिम्मुक्कगंथु	णं सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।	10

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

सौभाग्यं शुचिता क्षमा भुजवलं शौर्यं वपुः सुन्दरं  
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाद्यु य-  
स्यैकेकं गुणमङ्गमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

MBP have the following stanza:—

आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

1. १ MBP पेच्छवि, २ M विसिहरु, ३ MB विंभयउ; P विंभियउ. ४ MBP धाइयउ. ५ MB तग्गुरु°. ६ P पुंछेवि. ७ P णिमुक्क°; K णिमुक्क° but corrects it to णिम्मुक्क°.

1. ३ a तणुअणुरुवइं शिशुशरीरयोम्यानि भूषावलाणि; b रंजियरूवइं अनेकवर्णयुक्तावि. 4. a देवि दत्त्वा. 5 a घोलंतउ लोलायमानाः; b थणथण्णामयं स्तनदुग्धासृतम्. 6 a कंकेल्लि अशोकः; b धाईउ धात्रीभ्यः. 8 a गुरुजुयल्लुल्लं नाभिराजमरुदेवीयुग्मम्. 9 a सयमहु शतमखः; b कोसलपुरि अबोध्यायाम्. 10 a णिम्मुक्कगंथु नम्रो बालः; b णियइ पश्यति.

वड्डतें वड्डइ हिरिविसेसु	खेलेंतें खेलइ दिहिविलासु ।
वइसतें वइसइ सिरि चलच्छि	रंगतें रंगइ समउ लच्छि ।
पसरतें पसरइ सुथिरकंति	उड्डीहोंतें उगमइ किति ।
भासंतपण खालियक्खराइ	उद्धइ वावण वि अक्खराइ ।
चिरु धरियइ दरदेंतें पयाइ	संभरियइ पुव्वंगहं पयाइ ।
जिणससिणा लेंतें तणुकलाउ	विण्णायउ चउसट्ठि वि कलाउ ।

घत्ता—करणिङ्गिइ थिरसंभूयमइ मइइ सत्थु संमाणियउं ॥

तं चित्तें परमेसरेण ओहिइ जगु परियाणियउं ॥ १ ॥

## 2

जंमेट्टिया—समदममूलउ जमसाहालउ ॥

सुकयहलुग्गामो जिणकप्पहुमो ॥ १ ॥

अमरामपहिं सिंचिजमाणु	सोहइ पुण्णेण पवड्डमाणु ।
देहे णिच्चं चिय णिम्मलउ	महिमंदरधरणु अणंतु सतु ।
णसियैविंदु सुराहिउ पंडर	वणरुहु वि हारणीहारगउर ।
वरघज्जरिसंहणापायणासु	संघर्द्धणु पहिल्लउ पवळधामु ।
जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाणिहाणु	तहु अवर वि समचउरंसटाणु ।
जंगसार सुरूउ सुल्लंक्खणउ	पियहियमियवर्यणु णिहित्तचिउ ।

८ MBP खेलेंतें खेलइ. ९ MBP चरियइ. १० MBP णं चित्तें.

2. १ B जिणु. २ MBP अणंतसतु. ३ MBP णिस्सेम°. ४ MBP पवर but gloss in P प्रचुरः. ५ MBP °विसह°. ६ MBP संहणु. ७ MBP पवलधामु but gloss in P प्रचुरतेजः बलं वा. ८ MB तह; P तहु. ९ MB जगसारसुरूउ; P जगसारसुरूउ. १० MBP सलक्खणउ. ११ MB °वयणु विहत्त° and gloss in M निर्मलहृदयः P °वयणविहित्त° and gloss आरोपितहृदयः.

11 b दिहि° धृतिः संतोषः. 12 b समउ लच्छि लक्ष्मीदेव्या सह. 13 b उड्डीहोंतें उर्ध्वोभयता. 15 b पुव्वंगहं शाखाज्ञानि. 16 a लेंतें शृङ्गता. 17 करणिङ्गिइ इन्द्रियवृष्ट्या; थिरसंभूयमइ दृढबुद्धिः; सत्थु श्रुतज्ञानम्; संमाणियउ सिद्धिं नीतम्. 18 ओहिइ अवधिज्ञानेन.

2. 1 a सम° उपशमः; दम° इन्द्रियजयः; b जमसाहालउ यावज्जीवनियमशाखाकुलः. 2 a सुकयहलुग्गामो सुकृतफलपुष्पयुक्तः; b जिणकप्पहुमो जिन एव कल्पवृक्षः. 3 a °अमएहि अमृतैः. 4 b सतु वीर्यम्, अथवा सत्त्वं शक्तिः. 5 a णोसेय° निःस्वेद°; पंडर प्रचुरम्; b वणरुहु रुधिरम्; गउर शूलम्. 6 b पवलधामु प्रकृष्टासम्पत्त्यै प्रचुरतेजो वा. 8 a सुरूउ सौरूप्यम्; b °णिहित्तचिउ आरोपितहृदयः.



अहस्य दह जासु परं पसिद्ध

जस्मेण समउ धर्मे णिबद्ध ।

णं पुरिसरूचपरिमाणु लद्धु

विहिकरणव्भासविसेसुं सिद्धु । 10

घत्ता—जसु को वि ण सणिहु भुवणयलि परमजिणिंदहु णिरुचमहो ।

ससि दिणयरु मंदरु मयरहर किं उवमाणउं देमि तहो ॥ २ ॥

## 3

जमेद्विया-गुणगणसर्णयं

ववैगयदुण्णयं ।

तोसियजणमणं

को वण्णइ जिणं ॥ १ ॥

जो ससहर सो तहु कंतिपिंहु

चितंतु व हुउ सकलंकु खहु ।

दिणयरु तहु तेणं जित्तु णां

णहूयलि भमेवि अत्थवणु जाइ ।

जो सुरगिरि सो तँहु ण्ववणवीदु

जं महिमंडलु तं तेण गीदु । 5

जं जगु तं तहु जसपसरठाणु

जं णहु तं तहु णाणप्पमाणु ।

जो जलणिहि सो तहु कायकौंड

जो वम्महु सो भयमुक्ककंड ।

जो वरकरि सो वाहणु मयंघु

सीदु वि तहु सिहासणि णिबद्धु ।

पसु कामयेणु हयसहियहेउ

जो वणु सो वि पाविदु जीउ ।

जो कप्परुक्खु सो कट्टु कट्टु

देवेण समाणु ण को वि दिदु । 10

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ धरि वाचारि जहिं ॥

तिहुयेणु कुहुंउ परमेसरहो सिरिविलासु किं भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेसिद्धु but gloss in P °विशेषः सिद्धः.

3. १ MBP °गुणयं but gloss in P सान्वयम्. २ MBP वजिय° but gloss in P व्यपगत°.

३ M णहयलु. ४ P तहु सो. ५ MBP ण्हाणपीदु. ६ MBT कायकुंडु; P ण्हाणकुंडु. ७ P वणु वि सो.

८ M पाविदु°. ९ MBP तिहुयणपहुतु.

9 b जस्मेण समउ सहजोपनीताः. 10 b वि हि क र ण व्भा स वि से सु ब्रह्मणः करणाभ्यासाविशेषः. 12 मयरहर समुद्रः.

3. 1 a गुणगणसर्णयं गुणगणानामन्वययुक्तम्; b ववैगयदुण्णयं व्यपगतसिध्यान्वयम्. ३ b खंडु चन्द्रः. 4 b अत्थवणु अस्तमनम्. 5 b गीदु ग्रहीते स्वीकृतम्. 7 a काय कौंडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्. b भयमुक्ककंडु तद्भयान्मुक्कधनुष्यः. 8 a मयंघु मदान्वः. 6 a हयसहियहेउ हतस्वदितकारणम्. 10 a कट्टु कट्टु काष्ठनिकृष्टम्; कल्पवृक्षः रत्नमयः पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठं कथ्यते कष्टमेव.

जंमेट्टिया—सेसवलीलिया

कीलणसीलिया ।

पहुणा दाविया

केण ण भाविया ॥ १ ॥

पविरइयविहिहकीलावियार

समयं रमंति सुरवरकुमार ।

तणुतेओहामियतरणिंविबु

घग्घरमालालंकिंयणियंबु ।

धूलीधूसरु ववगयकडिल्लु

सहजायकविलकौतलजडिल्लु । 5

णिवरमणिहिं लइउ महायरंण

अमरिंदाणियहिं करंकरेण ।

णिज्जइ चिरंसंचियसुकयरयणु

जेण जि अवलोइउ सुद्धवयणु ।

सो तहिं जि णिवद्धउ केमं ठाइ

णवकमलालुद्धउ भमरं णाइ ।

केण वि पहसाविउ हंसर्गामि

केण वि बोह्लाविउ भव्वसामि ।

केण वि काइं वि खेलैणउं दिण्णु

कइ कीरु मोरु अवरु वि रवण्णु । 10

गिन्वाणु को वि हुउ तंबचूलु

कु वि वरतुरंगु कु वि दिव्वं पीलु ।

कु वि मेसुं महिसु भुयबलमहल्लु

कुं वि अप्फोडइ होएवि मल्लु ।

सोवंतउ कु वि सुइहारएण

परिषंदइ अम्माहीरण ।

घसा—होइल्लरु जो<sup>१३</sup> जो सुहुं सुअहिं पइं पणवंतउ भूयगणु ॥

णंदइ रिज्जइ दुक्कियमलेण कासु वि मलिणु ण होइ मणु ॥ ४ ॥

15

जंमेट्टिया—धूलीधूसरो

कडिंकिकिणिसरो ।

णिरुवमलीलउ

कीलइ बालउ ॥ १ ॥

4. १ MBP °लंबिय°. २ P चिरु, ३ MBP सुद्धवयणु, ४ M जेम, ५ MBP भसलु, ६ M हंस-  
गमणि, ७ MB खेलणउं, ८ MBP दिव्वु पीलु, ९ MBP महिसु मेसु, १० B omits this foot, ११ P  
परिंदइ, १२ MB हुल्लरु, १३ M जो हो; BP होहो.

4. 1 a से सवली लिया शिशुत्वलीलाकेलिः, 3 a पविरइय° प्रविरचित°; b समयं सह, 4 a °ओ-  
हामिय° तिरस्कृतम्; °तरणिं सूर्यः; b °णिंयंबु °नितम्बः, 5 a कडिल्लु परिधानवस्त्रम्; b सहजाय° सहो-  
त्वम्; °जडिल्लु °जटासहितः मुण्डनकर्मरहितत्वात्, 6 b अमरिंदाणियहिं देवेन्द्रपत्नीभिः, 7 a णिज्जइ नीयते;  
°सुकयरयणु सुकृतमेव रत्नं येन सः 9 a हंसर्गामि मन्दगमनः, 10a खेलणउं क्रीडनवस्तु; b कइ कपिः.  
11 a तंबचूलु कुकुटः; b °पीलु गजबालः, 12 b अप्फोडइ करेण भुजे ताडयति, 13 a सोवंतउ सुप्तः  
सन्; सुइहारएण औन्नरमणीयेन; b परिषंदइ आन्दोलयति; अम्माहीरण स्वदेशस्त्रीबालप्रसिद्धरागव्यनिना,  
14 होइल्लरु जो जो 'होहो जय जय त्वम्' इति शब्दः, 15 रिज्जइ द्रव्यादिविभूतिं प्राप्नोति.

रंगंतु संतु जं किं पि धरह  
 धरणिदु वे चंदु व संवरेवि  
 बलु जोक्खइ को<sup>१</sup> जि जिणेसरासु  
 सो णीसासेण य जाइ तासु  
 पुणु चूलाकैरणिजइ कयम्मि  
 संपुण्णचंदमंडलमुहेण  
 देवंगंबैरवरणिवसणेण  
 भुयैहेलंदोलियदिग्गएण  
 हउ कंदुउ गयणे समुल्ललंतु  
 णिम्मुकुजीउ णिदिट्ठमग्गु  
 णिवडंतउ संचारेवि णेइ  
 पहरें पहरें सो जाइ केम

इंदु वि ण इं तं थामेण हरह ।  
 लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।  
 कंपावियमैइणिमहिहरासु । 5  
 णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु ।  
 उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।  
 मरुणविमहासइतणुरहेण ।  
 धोलंतविविहमणिभूसणेण ।  
 चलपाणिवेणुदंडंमएण । 10  
 णं दीसइ सयमहघरहु जंतु ।  
 गुणिसंगें को णउ लहेइ सग्गु ।  
 समवयसहु तं छिवहुं मि ण देइ ।  
 दिसलाणिहे समुहु सुरु जेम ।

अन्ता—पडिछंदउ पुरिसरुक्ककरणे णाइ विहाणं संगहिउ ॥ 15

णवजोव्वणभावि जाम अडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

## 6

जंभेट्टिया—कंचणगोरउ धीरो<sup>१</sup> गोरउ ।

परिरक्खियपउ णिववंदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुदामरंगु

वरुणेवरि पाय परिट्ठवंतु

धरणिदुच्छंणे णिवेसियंगु ।

पवणामरि करपल्लव धिवंतु ।

5. १ MBP तं ण हु. २ P वि चंदु वि. ३ MBP जो जि. ४ MBP °करणुजइ. ५ MBP देवंगवत्थ-  
 वर°. ६ MBP भुयवलजंदोलिय°, but T हेला अनायासम्. ७ MBP दंडुगएण. ८ M गुणसंगें. ९ B  
 लहुउ १० M जाय.

6 १ MBP धीरउ. २ MBP °पल्लउ.

5. 3 b इंदु इन्द्रः. 4 a संवरे वि प्रगुणीसयः; b लहुयारी लघुतरा. 5 a जोक्खइ आकलयति. 7 a  
 चूला°क्षौरम्; उ म्मिल्लइ प्रकाशिते प्रकटीभूते; भल्लइ रम्ये. 10 a हेलं दो लि य° अनायासेन क्षिप्तः; b दंडम-  
 एण दण्डाग्नेण. 11 a हउ हतः; समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन्. 13 a संचारे वि अग्ने गत्वा; b छिवहुं/मि  
 स्पष्टुमपि. 14 a प हरें प्रहारेण; सो कन्दुकः; b दिसलाणिहे दिङ्मर्यादायाः. 15 पडिछंदउ प्रतिनिम्बस्;  
 विहाणं विधात्रा.

6. 1 a कंचणगोरउ सुवर्णवर्णः; b धीरो समर्थः; गोरउ ज्ञानरतः. 2 a परिरक्खियपउ प्रतिपालित-  
 प्रजः. 3 a रमणुदामरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णा रङ्गभूमिः.

पणैवंति पुरंदरि दिट्ठि वैतु  
जक्खिदच्चमरविज्जिज्जमाणु  
फणिदउबारियविणिदुद्धाँर  
णं छणससि पवरूययायलत्थु  
तहिं पत्तउ कुलयरु भणइ एम्भ  
किं ण हवइ कहमि कमलसंड  
आंसांमुहि मिहिरु महामऊहु  
हउं पिउ तुहु सुउ इर्यं किमहिमाणु  
णहभायहुं पासिउ को महंतु  
णियणेहें अहव जडत्तणेण

उच्चसिहि सरसु णाडउ णियंतु । 5  
समभाउत्तासियकुसुमवाणु ।  
आलोइयतियसत्थाणसारु ।  
जहिं अच्छइ पहु सिंहासणत्थु ।  
भो णिसुणि णिसुणि देवाहिदेव ।  
पाहाणपुंजि णवकणयपिंडु । 10  
सिप्पिउडि विमैलि मोत्तियसमूहु ।  
भुवणत्तइ किर णाणु जि पहाणु ।  
को तुज्झ वि अग्गइ वुंद्धिमंतु ।  
हउं भणमि किं पि धिट्ठत्तणेण ।

घत्ता—बालत्तणु दूरज्जिउ जइ वि तो वि ण णारिहि उवरि मइ ॥ 15  
किजइ विवाहु सुकुमार तुह जेण पर्वडइ लोयगइ ॥ ६ ॥

7

जंभेद्विया—पविमलबोहिणा  
लद्धसमाहिणा  
विहुणा उत्तं  
मणियमयणं  
कयसंसारं  
अट्ठिणिछणं  
पयलियमुत्तं  
णाउणिबद्धं

मोहविरोहिणा ॥  
हयदप्पाहिणा ॥ १ ॥  
ताय ण जुत्तं ।  
एयं वयणं ।  
मोहंधारं ।  
किमिउलपुणं ।  
मंसविलित्तं ।  
अइणोणद्धं ।

5

३ MB पणवत्, ४ MBP वास ५ MBP विमल, ६ MBP इउ, ७ MP बुद्धिवंतु, ८ MBP पवत्तइ.

7 a °दउ वारिय° दौवारिकः प्रतिहारः. 8 a उययाय लत्थु उदयाचलस्थः. 10 a °संडु °संघातः.  
11 a आसांमुहि दिहुमुखे; मिहिरु सूर्यः. 13 a णहेत्थादि—नभोभागपाश्चात् को महान्, न कश्चिदित्यर्थः.  
16 लोयगइ लोकगतिः व्यवहारः.

7. 1 b मोह वि रो हि णा मोहवयुगा. 2 a लद्ध समाहिणा प्राप्तपरमधर्मसमाधिना; °दप्पाहिणा गर्वः एव  
संपत्तेन. 3 a विहुणा प्रभुणा. 5 b मोहंधारं अज्ञानतिमिरजनकम्. 6 a अट्ठिणिछणं अस्थिबद्धम्. 8 a  
णाउ° नहार° (स्नायु); b अइणोणद्धं अजिनावबद्धं चर्मणा वेष्टितम्.

लालागिहं	रुहिरजलोहं ।	
बहुमलकलुसं	धरियपुरीसं ।	10
कुच्छियगंधं	णवविहरंधं ।	
णिर्द्दासत्तं	पडइ पमत्तं ।	
णिसि णिद्दाणं	मडयसमाणं ।	
उट्टइ सुद्धं	धणकणलुद्धं ।	
पहसमसत्तं	कारिमज्जंतं ।	15
हिडइ दियहे	णिवडइ विरहे ।	
तरुणियणकण	असुहरणहर्णं ।	
वाहिविलीणं	भुक्खारीणं ।	
पित्तपलित्तं	संभैपसित्तं ।	
पवणपहग्गं	माणवियंगं ।	20
सेवंताणं	गुणवंताणं ।	
होइ ण सोक्खं	वडुइ दुक्खं ।	

यत्ता—परसंभउं वाहासयसहिउं विच्छिण्णउं रयबंधयरु ॥

इहै जं सुहुं लद्धउं इंदियहिं तं कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

## 8

जमेद्विया—ता कुलकारिणा

णायवियारिणा ।

सुहहलसाहिणा

भणियं णाहिणा ॥ १ ॥

भो भो कयसुरणरखयरसेव

सच्चउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।

वंछइ सुहुं भुंजइ णवर दुक्खु

वडुंते विहडइ वुद्धिचक्खु ।

7. १ MB णिद्दासत्तं. २ MBP विद्दाणं and gloss in P ग्लानम्. ३ B पहसमसत्तं. ४ B कारिमज्जंतं.  
५ MBP °हरणभए. ६ MP संभैपसित्तं; B संभपलित्तं. ७ MBP इय.

8. १ M वुडुंते; BP वुडुत्ते.

9 a °गिहं °भक्षकम्. 10 a ° कलुसं °मलयुक्तम्. 13 a णिद्दाणं निद्रायुक्तम्; b मडय° °मृतक°. 15 a प ह स म स तं मार्गध्रमश्रान्तम्; b कारिमज्जंतं कृत्रिमाश्वादियन्त्रसमानम्. 18 a वा हि वि ली णं व्याधि-  
भिर्नष्टम्. 19 b सं भ ° श्लेष्मा. 20 a °पहग्गं °प्रभग्गम्; b मा ण वि यं गं मनुष्यस्त्रीणां शरीरम्. 23 प-  
र सं भ उं पराधीनम्; विच्छिण्ण उं सान्तरं सच्छिद्रम्; र य बं ध य र अष्टविधकर्मबन्धकरम्. 24 वि उ सु विद्धान्.

8. 1 b णा य वि या रि णा न्यायविचारिणा. 2 a °सा हि णा °वृक्षेण.

बुकइ ण कयंतहो मरणभीर  
सच्चउ इंदियसुहुं सुहु ण होइ  
सच्चउ संसार असार जइ वि  
कलहंसवाणि वरवयणकमलु  
तं णिसुणिवि जिणु णियसीसु धुणिवि  
चितइ परमेसर अवहिवंतु  
अज्ज वि महु चरियावरणु कम्म  
ता जाणिवि णियतणयंतरंगु  
सहसा कुलणाहें पेसिणहिं

सच्चउ जि असुइसंभउ सरीर । 5  
सच्चउ तुहुं परलोयावलोइ ।  
लइ महु उवरोहें वण तइ वि ।  
परिणहि सपणय पणइणिहिं जैमलु ।  
थिउ हेडामुहु भवियव्हु मुणिवि ।  
णयविणैयचारि सिरिघारिणिकंतु । 10  
तेसट्टिलक्खपुव्वहं अगम्मु ।  
समहिच्छियरमणीरमैणसंगु ।  
रयणाहरणोहविहसिणहिं ।

घत्ता—ता कच्छमहाकच्छाहिवइधूयउ थणभरभगियउ ॥

फलपत्तकुल्लपल्लवकरिहिं मंतिहिं जाइवि मगियउ ॥ ८ ॥

15

9

जंभट्टिया—कयमहिराहहो

दिज्जउ सवलयं

ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं  
दिण्णउ णाहेयहु सुंदरीउ  
पारब्बहु परमेसहु विवाहु  
गैय कुसुमंजलिहर लोयवाल  
कुंअरिहि करि अंगुत्थलउ छुहु  
गुमुगुमियभमियचलमहुयरोहु

तिहुयणणाहहो ।

कण्णाजुयलयं ॥ १ ॥

घर जाइवि सिरपणवियपणहिं ।

कामालवालरुहवेल्लरीउ ।

आयउ सुरयणु हरिकरिविवाहु । 5

सुहि बंधव पुण्णमैणोहराल ।

पहिलउ पेमंकुरु णं विरूहु ।

कउ मंडउ विविहउवारसोहु ।

२ MB सयणहं; P सपणहं. ३ MBP जुयलु. ३ MBP °विणयचारि. ४ MB चरियावरणु. ५ MBP °रमणरंगु.

9. १ P °पणमिय°. २ K °वेळरीउ. ३ MBP कय°: MP °कुसुमंजलियर. ४ MBP मणोरहाल  
५ MP कुवरिहि; B कुवरेहि.

6 b परलोयावलोइ परत्र बांछाकुशलः. 7 b उवरोहें आप्रहेण. 10 b सिरिघारिणिकंतु लक्ष्मीपतिः.  
11 b अगम्मु दुर्लघ्वम्. 12 a °अंतरंगु मनः; b समहिच्छिय° समभिलषित°. 14 °धूयउ कन्ये;  
°भगियउ नम्रीभूते.

9. 1 a °राहु सोभा. २ a सवलयं सकङ्कणम्. 4 b °आलवाल° वृक्षमूलजलस्थानम्. 5 b हरिकरि-  
विवाहु अक्षाः गजाः पक्षिणश्च वाहु वाहनं यस्य सुरगणस्य. 7 b विरूहु प्रादुर्भूतः

माणिकमुकमुकुपुरिउ

णवसायकुंभखंभेहिं धरिउ ।

चंदोवचीणपट्टेहिं लइउ

महिदेविइ णावइ मउडु लइउ । 10

घत्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ ।

णं तिमिरहु रचियरतासियहो सैरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभोट्टिया—भम्मपसाहिउ

विहुमसोहिउ ।

संझामेहउ

णं महिमोगउ ॥ १ ॥

कत्थइ रुपयभिच्छिहिं सुहाइ

सरयव्भखंड णिम्मविउ णाहं ।

कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु

णं गंगतैरंगु पवित्तिरंगु ।

कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ

णं णक्खत्तंचिउ गयणभाउ । 5

कत्थ वि हरियारुंणमणिवरिदु

आहंडलधणुमंडलु व दिदु ।

अहिणवदुमपल्लवतोरणेहिं

णावइ वसंतु माणिउ वणेहिं ।

पवणुडुयणहयलघुलियकेउ

णरणिहयत्तूरमंगलणिणाउ ।

पाडहियकरंगुलिणिहसणेण

दककुंदकुंदकयणीसणेण ।

पडहुल्लउ कुंडुवै छित्तु तेम

झं धो त्ति दो त्ति रउ हुयउ जेम । 10

घत्ता—भंभाभेरीसरसंखुहिउ पडु पुण्णाणिलेण चलिउ ।

आवेण्णिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10. १ M संझसमेहउ. २ MBP महि आगउ. ३ MB तैरंगपवित्तिरंग°. ४ MBP हरियारुण. ५ MBP दकुकुंदिदु. ६ MBPT कुंडवै.

9 a. °सुक° मौक्तिकानि; शुक्ल° स्तवकाः. 11 अ म लि द णी ल° निर्मलः इन्द्रनीलमणिः; °करोलि हिं किरणपंक्तिभिः.

10. 1 a भ म्म° काञ्चनं सुवर्णम्. 3 b सरयव्भखंड शरन्मेषपटलम्. 4 a भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णः प्रवेशः; b प वि त्ति रं गु पवित्रीकृतगात्रः 5 a °दिण्ण छा उ °दत्तशोभः 6 b °धणु मंडलु °धनुर्विस्तारः. 7 b मा णि उ अवतारितः 9 a पा ड हि य° पट्टहवादकः; °णि ह स णे ण °ताडनेन; b °णी स णे ण शब्देन. 10 a कु डु वै वादनकाष्ठिनः छि त्तु स्पृष्टः ताडितः.

## II

जंभेट्टिया—हंवइ सुहइउ  
रसइ मुहंगउ

करडासइउ ।  
हसइ अणंगउ ॥ १ ॥

दं दं दं टिविलाइ उंउ  
अणुहुंजिउ जं भवंसइ भमंतु  
संसारु जि वीणाणिक्कलउ  
वहुछिद्वंसु जं विदु जेण  
किं महलु जो भोयणउ लहइ  
काहलवयणइ वित्थारियाइ  
आऊरिय णीसासेण संख  
कंसालइ तालइ सलसलंति  
आलगदोरेंदंडुल्लयाइं

जिणु भणइ हउं मि दंदेण भुत्तु ।  
णं भासइ तं तं तं भणंतु ।  
मणि संजोयेंद वल्लहु कलउ । 5  
तं कहइ णां महुरें रवेण ।  
सो पव वि परस्स तलप्प सहइ ।  
णं मुहपवणेणोसारियाइं ।  
वहिरंध मूय पंगु वि असंख ।  
विहडेप्पिणु मिहणा इव मिलंति । 10  
णं तूरिय णरतरुक्कुल्लयाइं ।

घत्ता—संणद्धइं पहरपडिच्छिरइं आउज्जइं गजंति किह ॥

जिणाणाहहु धरि रइरंगि हुए मयणरायसेणणाइं जिह ॥ ११ ॥

## 12

जंभेट्टिया—का वि णियाणणं  
मंडइ वहुवरं  
ता तियसपुरंधिहिं वहुवराहं

का वि सहियणं ।  
का वि हु मंदिरं ॥ १ ॥  
णरणारीहिं मि पंकयकराहं ।

11. १ MBP हुवइ २ MBP वुत्तु. ३ MBP भवसयभमंतु. ४ BP संजोइय. ५ MBP वल्लहु कलउ  
६ MBP सेरेण. ७ M °दोरहिं दुल्लयाइं; BP °दोरदिदुल्लयाइं.

11. 1 a सुहइउ सुमद्रो हुंविशब्दः. 2 a रसइ शब्दं करोति. 3 b दंदेण नारीयुगलेन वित्तविक्षेपेण  
वा. 5 a °णि कलउ शब्दः संसारमेव भोजयति वल्लभः कलत्रमिति कथयतीव. 6 a बहुछिद्वेत्यादि—यच्छिद्रं  
विद्धं कृतं रागवादनाभिप्रायेण, तेन कथयतीव वधूरेष छिद्रं रमणस्थानम्; अन्यत्र बहुछिद्रो वंशः. 7 b तलप्प  
करप्रहारम्. 8 a का हल वयं णइं रणतूर्यमुखानि. 9 a णीसासेण निःश्वासेन, अथवा निःश्वाः दरिद्राः अस्वेन  
द्रव्येणापूरिताः. 11 a दंडुल्लयाइं वृन्तानि. 12 पहरपडिच्छिरइं प्रहारप्रतीक्षणशौलानि; आउज्जइं आतोद्यानि.  
13 रइरंगि हुए रतो अनुरागे संभूते सति.

12. 1 a णियाणणं निजाननम्.



पाडियउ सँलोणहं काई लोणु  
गाइजइ मंगलु अवरु धवलु  
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ बिहाइ  
तराणिहि उच्चोयवि कयउ ण्हाणु  
सोहइ लायणं विष्फुरंतु  
सियसुहुमइ वत्थइ परिहियाइ  
मंदीरोमालिउ लइउ मउडु  
देवहु देवयठवणाइ काई  
आणंदे णच्चिउ सयणु बंधु

चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।  
संणिहियउ कलसचउकु धवलु । 5  
णीसुत्तु ण जडसंगहु मुपइ ।  
गोरंगइ पाणिउ धावमाणु ।  
णावइ चामीयररु गलंतु ।  
आहरणइ ससहररुइहियाइ ।  
दीसइ णं सुरगिरिसिहर वियइ । 10  
लोइयमगे णिहियाइ ताई ।  
बद्धउ कंकणु णं गेहबंधु ।

घत्ता—भमरावलिजीयारवमुहलु मणसंखोहणंपुलइयउ ॥  
कंदर्पो रुसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंमेट्टिया—विरइयठाणउ  
उगयरोमउ

संधियवाणउ ।  
विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिळु भाउ  
हा वम्मह तुहुं मि णिवारिओ सि  
किं वगहु लग्गहु अल्लु ईसि  
णं गजिउ तुहुंइ भणइ पम्ब  
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण

हा किं रईइ पयडियउ राउ ।  
हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।  
णिवडेसहु कइहिं वि तवहुयासि । 5  
किं तुज्जु वि रिउ देवाहिदेव ।  
विरसंततूरजयजयरवेण ।

12. १ M सलोयहुं; BP सलोणहुं. २ BP उवाइवि. ३ MB मंदारमालउल्लइय<sup>०</sup>; P मंदारयमालउ  
ल्लइय. ४ MBP णविय सयणबंधु. ५ MBP मणसंखोहणु.

13. १ MB तुहुं वि णिवारिओ. २ MBPT कइयवि. ३ MBP विलसंत<sup>०</sup>; K विरसंत.

4 a पाडियउ दत्तम्; स लोणहं सलावण्ययोः; b संजणियमाणु संजनितमार्गं चामरं पूर्वमुज्जतस्वान्ति नाभि-  
मानयुक्तं दृश्यते. 5 a सुत्तेण जि सुत्तिउ आवेष्टितेन सूत्रेण बद्ध इव; b णीसुत्तु श्रुतरहितो मुखः जडसंगं न  
त्यजति. 7 b गोरंगइ गौराङ्गे. 9 b ससहररुइहियाइ चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि. 11 a देवयठवणाइ काई  
कुलदेवतास्वापनया किम्; b लोइयमगे लौकिकाबारानुसारेण. 13 जीयारवं उयाचब्द<sup>०</sup>.

13. 1 a ठाणउ मुष्टिबन्ध; धनुषराणामालीढप्रत्यालीढवेणवापादादीनि बाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति;  
पक्षे चित्ते कृतस्थितिः. 3 a अमुणंतियाइ अज्ञातवत्या रत्या. 5 a ईसिजिने. 7 b विरसंतं शब्दायमानः.

संचल्लिउ परिणहुं जिणकुमार  
णं संसारहु घोसिउ णिसेहु  
तहि देवि णिबंभु चंवेवि चार  
फेद्विउ मुहवहु णं मेहपडलु  
कंपिउ कुंअरिहिं णववरभरण  
कच्छाहिच्रेण भिगारु लेवि

आवतहु तहु तहिं धरिउ दौर ।  
हा किं तुहुं परिणहि चरमदेहु ।  
भवणंति पड्डुउ भुवणसार । 10  
दिट्टुउ मुहु णं छंणयंदु बिमलु ।  
करु धरिउ णाई तिलरिणकएण ।  
पालिजसु धवलच्छिउ भणेवि ।

घत्ता—जं पाणिउं दूढउं तासु करे विविहासासाहंचियउ ॥  
णं तेण मणालवालणिलउ मोहमहातरु सिंचियउ ॥ १३ ॥ 15

## 14

जंभेद्विया—कयसियसेविहे  
वरहु अर्णिदहे

जसवइदेविहे ।  
अवि य सुणंदहे ॥ १ ॥

णयणेसु णयण लग्गा तिरिच्छ  
पियणेहाऊरिय वित्थरंति  
चित्ताई चित्ति मिलियाई केम  
कमणीयकामिणीवद्धणेहि  
दिट्टुउ पडिवक्खासंकियाहिं  
पक्केणुआइय एक तरुणि  
वेणिण वि लेप्पिणु णीसरिउ णाहु  
आसीससयहिं संयुवमाणु  
उकोइयकामरसोल्लियाहिं

मच्छेहिं णाई पडिखलिय मच्छ ।  
णावइ सुइसुसिरहिं पइसरंति ।  
गयवर णइसलिलइं सलिलि जेम । 5  
णियतणुपडिबिंबउ दइयदेहि ।  
तं कह व कह व बुज्झिउ पियाहिं ।  
वीएण भुएण दुइज्ज धरिणि ।  
णं कणपरक्खु वेल्लीसणाहु ।  
वेइयमणिवट्ठि जगेक्कमाणु । 10  
आसीणउ समउं वहुल्लियाहिं ।

घत्ता—वइसाणरु जासु गहेहिं सहुं पणवइ पय महियलि घुलइ ॥

सो वरइच्छु जि कुलसंतियरु होमै धूसु जि संभवई ॥ १४ ॥

\* MBP बार. ५ MB चेकि. ६ P छणइंदु. ७ MB कुवरिहिं; P कुमारिहिं. ८ MB सुणालवाल. ९ MB पडिबिबिउ. १० MBP आसीसएहिं. ११ M सोमै. १२ MBP संगिलह.

8a परिणहुं परिणतम्. 9a णिसेहु निषेधः. 12b तिलरिणकएण स्नेहकणकृतेन. 14 छूढउं क्षिप्तम्; विविहासासाहंचियउ विविधा आशा वाञ्छा एव शाखा तथा अशितः सहितः. 15 तेण भृह्मरजलेन; मणालवाल-णिलउ मनः एवालवालं तदेव स्थानं यस्य मोहमहातरोः.

14. 4b सुइसुसिरहिं कर्णविवरेषु. 7a पडिवक्खं सपत्नी. 10a आसीससयहिं आशीर्वादयतैः; b वेइयं वेदिका. 11a उकोइयं प्रादुर्भूतं. 12 गहेहिं सहुं आदित्यादिनवग्रहैः सहितः; घुलइ पतति.

## 15

जंभेद्विया—मत्ताचार्यं  
परिरिक्खियजयं

देवासुरेहिं संगीयमाणु  
रमणिहिं सहुं रमणु णिविहुं जाम  
रत्तउ दीसइ णं रइहि णिलउ  
णं सग्गलच्छिमाणिक्कु ठैल्लिउ  
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धरण  
अद्धद्धउ जलणिहिजलि पइहु  
चुंउ णियळविंरजियसायरंभु  
आहिंडिवि भुवणु अलद्धवासु  
लच्छीहि भरंतेहि कणयवणु  
वारिहिरहल्लिमालोवणीउ

विग्घणिवारयं ।

तह वि हु तं कर्यं ॥ १ ॥

चलचामरेहिं विजिजमाणु ।  
रंवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।  
णं वरुणासावहुधुसिणतिलउ । 5  
रत्तुप्पलु णं णहसरहु धुलिउ ।  
णियरायपुंउ मयरद्धरण ।  
णं दिसिक्कुंजरकुंमयउ दिहु ।  
णं विणसिरिणाहिहि तणउ गम्भु ।  
णं गयउ रयणु रयणायरसु । 10  
णिंछुद्वि कलसु व जलि णिमणु ।  
णं उल्लाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संज्ञादेवयसदिस महि रंजिवि रायं विप्फुरिय ॥

कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहइ अवयारिय ॥ १५ ॥

## 16

जंभेद्विया—कज्जलसामलो  
पत्तउ भीयरो

वियलंतउ मुक्कचउत्थपहर  
महिपंकयमयरंउ व घणेण

उहुदसणुज्जलो ।

तमरयणीयरो ॥ १ ॥

ते<sup>३</sup> पीयउ संज्ञारायहहिरु ।

आवंते अलिउलसंणिहेण ।

15. १ MBP मंदुचारयं. २ P णिवहु. ३ MBP धुलिउ. ४ MBP गलिउ. ५ MBP अरुणच्छवि-  
रंजियसारयच्चु. ६ MB णिच्छुद्विहि; P णिच्छुद्विहि. ७ MBP णिवणु. ८ MBP कोसुंभुचीर. ९ MBP विवाह.

16. १ MBP पत्तो. २ MBP तं.

15. 1 a मत्ताचार्यं यद्यपि जगत्सामी वर्तते तथापि मात्रा आचारः कृतः 5 b वरुणासावहुं धुसि-  
माणेव स्त्री; °धुसिण तिलउ कुहुमतिलकः. 6 a ठ लिउ पतितम्. 8 a अद्धद्धउं अर्धकिम्बे सूर्यस्य. 11 b  
णिच्छुद्वि स्वलिवा. 12 a वारिहिरहल्लिमां समुद्रलहरीलक्ष्मीः °लोवणी उ लुसः °अथवा, वारिहिलहरी-  
मालयोपनीतः.

16. 1 b उहुदसणुज्जलो वक्षत्रदत्तोऽज्जलो.

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ  
हालिहु वत्थु णं परिहरेवि  
ता उइउ. चंदु सुरवइदिसाइ  
सइं भवणालउं पइसंतियाइ  
णं पोमाकरयल्लहसिउ पोमु  
सुरउब्भवविसमसमावहार  
णं अमयविदुसंदोइं रुंदु  
माणियतारासयवत्तफंसु  
आयासरंगि ससहावगीदु  
णं इंदु धरियउ धवलछु  
रविविरहें थिउ कालउं जि णाइ । 5  
थक्कउ णीलंवर पंगुरेवि ।  
सिरिकलसु व पइसारिउ णिसाइ ।  
तारादंतुरउ हसंतियाइ ।  
णं तिडुयणसिरिलायणधामु ।  
तरुणीथणविलुलिय सेयहार । 10  
जँसवेछिहि केरउ णाई कंदु ।  
णं णहसरि सुत्तउ रायहंसु ।  
णं कामएवअहिसेयवीदु ।  
तेहेविइ णं दप्पणु णिहिउ ।

घत्ता—वरतरातंदुल धिविवि सिरि ससि परिवट्टुलु रहणिलउ ॥ 15

दिसिरमाणिइ णिसिहि वयंसियहि णावइ दहिणं कउ तिलउ ॥ १६ ॥

17

जंमेइया—ससहरकंतिइ  
सेहइ लोयउ

दिसि पसरंतिइ ।  
डुद्धं व धोयउ ॥ १ ॥

ता णिसि पेक्खणउ विलासवंतु  
आउज्जहुं जेण मुहेण वासु  
तहाहिणि उत्तरंमुहणिविदु  
तहु संमुहियउ मउगाइयाउ  
तहु वाहिणेण संठियउ सुसिर

पारदु झसद्धयरिद्धि देंतु ।  
सा पुव्विहीदिसंमंडवासु ।  
गायणु तुंबरु देवेहि दिदु । 5  
उवइट्टउ सरसइआइयाउ ।  
तव्वामएसि वेणइयणियरु ।

३ M सुरवरदिसाइ. ४ B सुरउब्भव°. ५ P अमिय°. ६ MPT 'संदोहइंदु. ७ BP जव°. ८ MB °पीदु.  
९ MP दिसिरमाणिइ.

17. १ M दुद्ध; BP दुद्धि. २ MB °दिसि'. ३ MBP उत्तरमुह.

5 ँ कालउं छण्णम्. 8 अ भवणालउं भवणं मन्दिरम्. 9 a पोमा लक्ष्मीः. 10 a सुरउब्भवविसमसमा-  
वहारं सुरतोद्भवविषमभ्रमापहारो हारः; b सेयहारं स्वेद एव हारः. 11 a अमयविदुसंदोदु अमृतबिन्दुपुजः;  
रुंदु विस्तीर्णः. 12 a तारा सयवत्तफंसु तारा एव शतपत्रं कमलं तस्य स्पर्शम्. 13 a ससहावगीदु स्वस्व-  
भावयुक्तम्. 14 b तहेविइ इन्द्राण्या. 15 थिविवि क्षिप्त्वा. 16 दहिणं दध्ना.  
17. 2 b दुद्धं दुग्धेन. 4 a आउज्जहुं वादित्राणाम्; वा सु वासः स्थितिः. 6 a मउगाइयाउ मृदु-  
गायिकाः. 7 a सुसि रं रुषिरवांशिकवाद्यम्; b वेणइयणि यं रं बीणाकारनिकरः.

इय पृहउ अर्धणिणिवेसु गणिउ  
पज्जई मज्जिवि साहारणाइ  
सहसा सुइसोक्खुल्लोपण  
थिरवण्णलडयधाराविसेसु  
उव्वसिरंभाणामालियाहिं

पच्चाहारु वि सो चेव भणिउ ।  
कम्मरवी य संमज्जणाइ ।  
उद्विक्खणु किउ हिंदोलपण । 10  
कउं गच्छणीहिं पुणु तहिं पवेसु ।  
आहल्लमेणइवालियाहिं ।

यत्ता—आमेहियणवकुसुमंजलिहिं देविहिं रंगिं पइद्वियहिं ॥  
मोहिउ जणु मगणमोयणिहिं णं वम्महधणुलट्टियहिं ॥ १७ ॥

## 18

जंमेट्टिया-अहिणयकोच्छरो  
णच्चइ सुरवई

भुवणिहियच्छरो ।  
डोल्लइ वसुमई ॥ १ ॥

विरइय णडेहिं णाणावियार  
अण्णण्णदेहपरिठवणमिण्णु  
चोइह वि सीससंचालणाइ  
णव गाँवउ णयणसुहावियाउ  
अंतिमरसविरहिय जणियहाँव  
पक्के ऊणा पण्णास भाव  
फुरणई वल्लणई अणिवारियाइ

चारी वत्तीस वि अंगहार ।  
करणहं अट्टोत्तर सउ वि दिण्णु ।  
भूतंडवाइ रंजियमणाइ । 5  
छत्तीस वि दिट्ठिउं दावियाउ ।  
अट्ट वि रस सच्चयणसहाव ।  
अवर वि अउव्व भावाणुभाव ।  
णच्चंतहिं तहिं अवयोरियाइ ।

४ MBP कहव. ५ MBP किउ. ६ B रंगं.

18. १ MBPT अहिणव°. २ KT भुय°. ३ MB चउदह. ४ BP गीयउ. ५ MBP दिट्ठु.  
६ MBPT °भाव. ७ P अपुव्व. ८ M करणई. ९ MKT अवधारियाइ.

8. b पच्चाहारु स एव प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 a मज्जिवि मुदादिभिर्मार्जयित्वा; साहारणाइ युगपत्सर्ववाद्यविषयाय; b कम्मरवी सर्ववाद्यानां मुदादिसंमार्जनं कम्मरवी नाम. 10 b उद्विक्खणु आलुक्खि; करणहिंदोलकारागविशेषः. 11 a °वण्णलडयधाराविसेसु वर्णच्छटकधारास्त्रयस्तालविशेषाः. 14 मगणमोयणिहिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च.

18. 1 b अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्षः; b भुवणिहियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन. 3 b चारी पदधारः. 4 a अण्णण्णदेहपरिठवणमिण्णु परस्परं शरीरव्ययेषु. यथा पादौ हस्तौ हस्तः पादौ; b करणहं शरीरमेकधा प्रतिष्ठान्त्र कियन्ते इति करणानि. 5 b भूतंडवाइ भूतृत्यामि. 6 b वीणउ श्रीवाः; c दिट्ठिउं प्रक्षितानि. 7 b अंतिमरसं शान्तरसं; अणियहाँव जनितस्थायिभावान्.

पुणु पत्तई वंदियपयरयाई  
मुळई पेम्मंधई रूसवंतु  
तारातारावइरुइ हरंतु

छंडर्णयपओएं गिगयाई । 10  
णिण्णेहई मिळुणई रूसवंतु ।  
विहडिर्णयचकडलई मेलवंतु ।

घत्ता—उट्टिउ रविर्विबु दियहसरिय अरुणकिरणमालाफुरिउ ॥

उर्ययइरि महरायहु उवरि णर्वरत्तउं छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

## 19

जंभेष्टिया-ससिपायाहया

अलिरवरसणिया

दंसइ पविर्मेलं

तं<sup>३</sup> पसरियकरो

दुक्खं पिव गया ।

रुयइ व भिसिणिया ॥ १ ॥

ओसंसुयजलं ।

पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥

णं सोहइ दीविये जंबुदीउ

अद्दुमामंतु णं लोयणयणु

णं वाडवणिग णहसायरासु

णं ताहि जि केरउ अहरविबु

णं वासरविडवंकुरु विणिनु

ता तहिं सोहणि संसारसारु

कासु वि हयगयंचेलिउ रवणु

णहमहिसर्रावपुडि दिण्णु दीउ ।

णं एंतहु सेसहु सीसरयणु । 5

णं दिसंणि सियरिमुहमार्सगासु ।

णं णिसिबेहुवहि पयमणु तंबु ।

णं जगंकरंदि पवलउ णिहितु ।

कासु वि कडिसुत्तउ दोरं हारु । 10

कासु वि धणुं धणु सुवणुणु अणु ।

१० MB छहुणयपओएं; PT छहुणयपओएं. ११ MBP रूसवंतु. १२ BP विहडिर्णयचकड. १३ MBP उवरिहरि. १४ MBP णं रत्तउ.

19. १ MBP रुवइ. २ BP पविउले. ३ MBP तं. ४ MBP जं. ५ MBP दीवइ. ६ MBP 'सरावि पुडिण्णु. ७ MB दिसि°. ८ MB 'मंसगासु; P 'मंसु गासु. ९ MBP 'वहुयहि. १० M जग-करंभे विहुसु; B जगकरंदि-धवलउ; P जगि करंदि विहुसु. ११ MBP हारु दोर. १२ M घणयणु; P धणु सुवणु.

10 a 'पयरयाई पदरजांसि; b छंडणय° नृत्योपसंहारहेतुस्तलविशेषः छहुणकप्रयोगः. 12 a तारावइ° चन्द्रः.

19. 2 b रुयइ रुदति; भि सि णि या प्रथिनी. ३ b ओसंसुयजलं अवदप्रायः एव अश्रुजलम्. 4 b पुसइ मार्ति; तमिहरो आदित्यः. 5 a दीविय-दीप्तम्; b सेसहु धरणेन्द्रस्य. 7 b मासगासु मासप्रासः. 9 a वासरविडवंकुरु दिवस एव वृक्षस्तस्याङ्कुरः; विणिनु विनिर्गीतः. 10 a सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो जं मग्गइ तं तीसु दिण्णु  
संमाणियाइं सुहिपरियाणं  
वित्तइ विवाहि विहवेण साहु

काणीणदीणदालिहु छिण्णु ।  
चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।  
थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणपं हियवइ भावियउ ॥

15

सियपुण्फयंतु सो रिसहंपहु भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसमुणालंकारे महाकइपुण्फयंतविरइए

महामव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे कुमारविवाहकळाणं णाम

चउत्थओ परिच्छेओ सम्मसो ॥ ४ ॥

॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो ताहु. १४ MBP सिरिपुण्फयंतु. १५ MBP रिसइं पहु.

14 ठ णएण न्यायेन. 16 सियपुण्फयंतु शुक्कुन्दपुष्पवदन्ता यस्य.

पियमेलइ गयकालइ एकहिं दिणि सुहकारिणि ॥  
 गिरुवमसइ सेंधुरैगइ णाहितणयमैणहारिणि ॥ धुवकं ॥

1

रचिता—छणैसिसिरयरकिरणणिहदिहियरघरसयैणयलि सुत्तिया ।  
 पविमलसरलकमलदलवल्लयसुकोमलललियगत्तिया ॥ १ ॥

जैसवइ जसेणाहियं सोहमाणा	णवणलिणहंसी व णिहायमाणा । ५
सुरवहुपयालत्तयालित्ततीरं	णिर्वडियदरीरंधगंभीरणीरं ।
हरिसरहओरालिपूरियसुसाणुं	सैसिकंतपम्भारणिज्जिस्सभाणुं ।
करिदसणणिब्भिण्णसोवण्णरायं	सिविणयगयं पेच्छए सेलरायं ।
ससहरमलंकारभूयं णिसाए	रविमवि मुहे णीहरंतं दिसाए ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

भूलीलां त्यज मुख संगतकुचद्वन्द्वादिकं वक्षसा  
 मा त्वं दर्शय चारुमप्यलतिकां तन्वजि कामाहता ।  
 मुखे श्रीमदनित्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः  
 स्वप्नेऽप्येष पराङ्मनां न भरतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

MBP have the same stanza, but M reads °द्वन्द्वादिगर्वाक्षमा and BP read °द्वन्द्वादि-  
 गर्वकियां for द्वन्द्वादिकं वक्षसा and MBP read शौचाम्मुखिः for शौचोदधिः.

1. १ MBP सिधुर°. २ M °मयहारिणि. ३ M छणसिसिरयरकिरण°; B °सिसिरयर°. ४ MB °सय-  
 णयल°. ५ MBP have before this line रमणीयलता नाम छंदो; GK have रमणीयलता. ६ M  
 णिवडिय°; P णिविडिय°. ७ MB ससीकंत°. ८ MB °णिब्भिण्णभाणुं.

1. 1 पियमेलइ श्रीआदिनाथमेलापके. ३ °सिसिरयर° चन्द्रः; सुत्तिया सुप्ता. 5a अहियं अधिकम्.  
 6 a °पयालत्तय° पादालक्तक°; b णिवडिय° निपतित°. 7 a °ओरालि° शब्दः; b ससिकंत° चन्द्र-  
 कान्तमणिः. 8a णिब्भिण्ण सोवण्ण रायं तिरस्कृतसुवर्णवर्णसु; b सेलरायं मेरुम्. 6 b दिसाए पूर्वदिशायाः.



सयदलदलालंबिरुदंतोभिर्गं  
दसदिसि बहुपिच्छरंगंतभंगं  
अमरिसस्रसप्फालगुडंतसहं  
सयलमवि औलोयप संविसंतं

सरवरमसारिच्छतिगिच्छं पिंगं । 10  
जलखलणपक्खालियहिंदसिंगं ।  
करिमयरमालारउहं समुहं ।  
गियवयणपोममि छोणीयलं तं ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परिहंछिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥

कयरौहहो गय णाहहो धेरु पुरंधिचूडामणि ॥ १ ॥

15

2

रचिता—पभणइ सुणंसु पुरिसहरि सुरगिरि ससि रवि सरवरोयंही ।

महं णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ घोसइ  
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ  
ससहरेण सुहउ सोमाणुणु  
सूरं सुरु पयावें दूसहु  
रयणायेण सवंसपहायर  
महिआहारें रिउ भंजेसइ  
कइहिं मि वियहहिं होइ णिरुत्तउ  
तो सव्वत्थसिद्धिअहिहाणहु  
पुव्वपुणसंपयसंपुणउ

चक्रवट्ठि तुह तणुरुहु होसइ ।  
महिरायाहिराय गरयारउ ।  
कंतिवंतु कंतासुहमाणु । 5  
सरवरेण पयडियसिरिसंगहु ।  
चंडि चारु चोहहरयणायरु ।  
छक्खंड वि मेइणि भुंजेसइ ।  
देवि<sup>३</sup> ण चुकइ जं महं वुत्तउ ।  
सइ अहमिंदु चलिउ सविमाणहु । 10  
जसवइदेविहि गाभि णिसणउ ।

१ BP° रुहत°. १० M °तिग्गंछ°; BP °तिग्गिच्छि°. ११ B समालोवण; P मालोवण. १२ MBP परि-  
यच्छिवि. १३ M कयरायहो. १४ M घर°.

2. १ MBP णिगुणि. २ MBP °वरोवही. ३ M देव. ४ MBP °अहिहाणहु.

10 a °रुहतं शब्दं कुर्वन्तः; b असारिच्छ° अनुपमम्; तिग्गिच्छ° मकरन्दः. 11 a उपिच्छ° उत्खण°;  
b अहिंद° अग्नीन्द्र°. 12 a अमरिस° अमर्षः क्रोधः; b करिमयर° जलहस्ता. 13 a संविसंतं प्रविशतः;  
b वयणपोममि वदनकमले; छोणीयलं पृथ्वीमण्डलम्. 14 परिहच्छिवि वितर्कः; सुप्पहाइ सुप्रभाते.  
15 कयराहहो कृतशोभस्य; पुरंधिचूडामणि यशोमती.

2. 4 a पियारउ सर्वेषां प्रियतमः. 5 b कंतासुहमाणु कान्तायाः सुखं मानयति. 9 b पयडिय-  
सिरिसंगहु प्रकटितलक्ष्मोसंमहः. 7 a सर्वसपहायर कुलप्रभाकरः; b चंडि हे. तरणि.

घत्ता—भुवणुब्भवि सिसुसंभवि जेहिं कयउ कालउ मुहुं ॥  
ते दुज्जण अवरु वि थण णिवडिहिंति हेट्टामुहु ॥ २ ॥

## 3

रचिता—सुयभरपसरमाणेउउयरे वियलिययं वलित्तयं ।  
तिहुयणवइजयंकरेहारहियं व कयं जयत्तयं ॥ १ ॥

राएं गौब्भ थिएण ण णायउ	पंडुरु तौडैं काइं संजायउ ।	
वियहि पसत्थि मुहुत्ति सुणिम्मलि	णियठाणुण्णइं गइ गहमंडलि ।	
जसवइयहि वियसियपंकयमुहु	णवमासहिं उप्पण्णउ तणुरुहु ।	5
ता तहिं णहि सुरदुंदुहि वज्जइ	णं संतोसें सायरु गज्जइ ।	
दाणु देंति वारण वाणि संठिय	कीस ण माणुस हरिसुकंठिय ।	
मेह सवंति सुगंधइं सलिलइं	दिम्महाइं णिरु जायइं विमलइं ।	
आयासु वि दीसइ मलवाज्जिउ	णीलउ भायणु णं संमज्जिउ ।	
मंदरदंडपण वित्थेरियउ	एकल्लतु णं कुयैरहु धरियउ ।	10
तारामोत्तियदामहिं भूसिउ	एहु जि राणउ सव्वहुं पासिउ ।	
महि सइं खल खलंति चउपासिहिं	णं वज्जरइ महाणइघोसिहिं ।	

घत्ता—सरणलिणहिं णं णयणहिं पइ णियंति महु रुच्चइ ॥  
मरुचलियहिं परिघुलियहिं वेल्लीभुयहिं पणच्चइ ॥ ३ ॥

५ T records a p सुयणुब्भवि and adds: सुयणुब्भवि इति पाठे सुजनानामुत्कर्षस्य भवः.

3. १ M छउओयर°; BP छउउयर°, but gloss in P क्षामोदरे. २ MB गम्भित्थिएण; P गम्भित्थइं. ३ MBP तुंदु. ४ MBPK विच्छुरियउ. ५ MBP कुमरहु.

12 भुवणुब्भवि भुवनस्य उद्भवः उत्कर्षस्य प्रादुर्भावो यस्मिन्. 13 णिवडिहिंति निपतिष्यन्ति.

3. 1 छउउयरे क्षामोदरं; वियलिययं गलितं विनष्टम्; वलित्रयापगमनेन उदरं समं जातमित्यर्थः. 2 तिहुयणवइ° त्रिभुवनपति°; जयंकरेहा° जयविहारेखा°. 3 a राएं रागेण राज्ञा च. 12 a महीत्यादि—मही पृथ्वी खलान् वारयन्ती महानदीखलखलघोषेण वज्जरइ कथयतीव यथा एष एव राजेति. 13 पइ पतिसु. 14 मरुचलियहिं वायुचालितैः.

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।

विसंसिरससुकयसाहिसाहासिउ वड्डइ रायहंसओ ॥ १ ॥

गौमकरणचूलाकरणाइउ

जणणीजोव्वणफल्लंगोछो इव

सुहिवयणामयबिंदुपवेसु व

गुणसंसापयासमग्गो इव

पिउसहावसंचउ रूढो इव

किंकरयणमैणचिंतामणि विव

णिहिलणायसम्भावणिही विव

भारसोदु गहययरं मही विव

दुणिहालउ मज्झणरखी विव

लायण्णवुपवाहसरो इव

सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।

विहँलियलोय कप्पवच्छो इव ।

मित्तचित्तसंगहणणिवेसु व । 5

रोयसोयउज्झिउ सम्गो इव ।

बंधुणेहबंधणवेढो इव ।

अरिमहिहरसिरसोदामणि विव ।

हरणकरणउद्धरणविही विव । 10

भूरिभोयभारिछु अही विव ।

वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।

विलयावंदहुं कुसुमसरो इव ।

घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुँइ जयसिरि जयकारिणि ॥

जसु णिवसइ मुहि सरसइ किंत्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥ 15

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविससलसलक्खणाहिओ ।

सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

णं सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ

जलिंवि जलिंवि उल्लाइ ण जीवइ

णाइं पयावें विहिणा घडियउ ।

जासु भरण णांइं सिहि णीवइ ।

4. १ M सुकय°. २ MBP णामकरण. ३ P बुडा° ४ MBP °गुंछो. ५ P विहसिय°. ६ MB बुह-  
वयणामय°; P बुहणयणामय°. ७ MBP घण°. ८ P °सिरि. ९ MBP गहययर. १० MBP भुयजुइ.

4. 1 °करमंजरि° किरणसंघाताः; °णिवइवंसओ° राजवंशः. 2 विसरि स° अद्वितीयम्; °सुकय-  
सा हि सा हा सि उ पुण्यवृक्षशाखाश्रितः. 5 b °णि वे सु स्थानम्. 7 a पिउस हा व° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो  
वा; रूढो प्रसिद्धः. 9 a णाय° न्यायः; b °वि ही विधाता. 10 b °भोय° भोगाः फटाटोपश्च. 11 b जंभारि°  
इन्द्रः. 12 a अंजु पवाहसरो समुद्रः; b विलयावंदहुं वनितावृन्दस्य. 13 असिदलि खड्गपत्रे; भुइ भुजे.

5. 1 विस वृषभः; °अहि ओ अधिकः. 2 °पसा हि ओ° मण्डितः. 3 a णिव्वडिउ कपोतीर्णः. 4 a  
जलिंवि जलिंवि प्रज्वल्य प्रज्वल्य; उल्लाइ ज्वालारूपतां परित्यजति, अज्ञारवस्थो भवति; ण जीवइ ज्वालारूप-  
यैव नावतिष्ठति; b णीवइ विध्याति, अज्ञाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थः

अइपर्मंतु पुणरवि णासंघइ जडसंगु वि मज्जाय ण लंघइ । 5  
 पालियवेलउ जसु मयराळउ जासु भएण जिं थिउ जँउं कालउ ।  
 णायराउ खुल्लउ कीडल्लउ चंदु वि जायउ चंदगहिल्लउ ।  
 पक्खि पक्खि सो दीसइ भग्गउ पवणु वि गमणब्भासहु लग्गउ ।  
 इंदु वि इंदधणुहु गुणिं णाणइ अज्ज वि तं तेहउ जणु जाणइ ।  
 णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ विणएण जि णवंतु घर आवइ । 10

घत्ता—अलिउलचल चुयमयजल महिहरभित्तिवियारण ॥  
 अविहियसर कुंचियकर जसु तसंति दिसिवाँरण ॥ ५ ॥

## 6

रचिता—करिसिरदलियरत्तलितुगयमोत्तियखइयकेसरो ।  
 सिसुससिकुडिलचडलविज्जुजलदाढाजुयलभासुरो ॥ १ ॥

एहओ वि हरि विष्फुरियाणु जासु भएण व सेवइ काणणु ।  
 णवजोव्वणि चडंतु परमेसर सुरवरकरिकरथिरदीहरकर ।  
 सो सिक्खविउ सपिउणा सव्वइ कालक्खरइं गाणियगंधव्वइ । 5  
 णाडयाइं बहुभावरसत्थइं णरणीरिहिं लक्खणइं पसत्थइं ।  
 तब्भूसायरणाइं विचित्तइं वम्महचरियइं हियवहुचित्तइं ।  
 गंधपउत्तिउ रयणपरिक्खउ मंत तंत वरहयगयसिक्खउ ।  
 कौतगयासिधायसंताणइं चक्कचावपहरणविण्णाणइं ।  
 देसदेसिभासालिविठाणइं कइवायालंकारविहाणइं । 10

5. १ B पसुत्तु. २ MBP व. ३ MP जसु. ४ M इंदधणुहि गुण; BP गुण. ५ MBP दिसवारण.  
 6. १ MBP णरणीरि. २ P हयवरगय.

5 b जडसंगु जडेन जलेन सह संगो यस्य; मज्जाय मर्यादास्. 6 a जसु यस्य भरतस्य; b जडं यमः. 9 a गुणिं णाणइ गुणं नारोपयति, प्रत्यक्षां नानयति. 12 अविहियसर अकृतशब्दाः; कुंचियकर संकोचित-शुष्मादण्डाः.

6. 1 °रत्ते त्यादि-°रत्तलितोद्वतमौक्तिकजटितकेसरः. 3 a एहओ ईदशः; हरि सिंहः. 5 b कालक्खरइं मणीलिखिताक्षराणि. 7 a तब्भूसायरणाइं नरनारीभूषणकरणानि; b वम्महचरियइं कामशास्त्रम्; हियवहुचित्तइं हृत्तलोचित्तानि. 10 a देसदेसिभासा° देशानां संबन्धिनी देशभाषा; लि विलिपिः; b कइवायालंकारं विहाणइं कविवागलंकारविधानानि.

जोइसल्लंदतक्कायरणइं  
वेज्जैणिअंठोसहिबित्थारु वि  
चित्तेल्लप्पसिलवरतरुक्कम्मइं

मल्लगाहसुज्झइं कयकरणइं ।  
बुज्झिउ सँव्वलोयवावारु वि ।  
एवमाइ अवराइं मि रम्मइं ।

यत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ ।

अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ ॥ ६ ॥

15

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि जेहवसेण भासण ।

गिरिथणिअरणितरुणिपरिपालणविहिबिसयं पयासण ॥ १ ॥

पभणइ पडु भो पडमणरेसर  
ववसाए सुसहाए संपय  
अलसत्तं खलसंगे नासइ  
असहायहु जगि किं पि ण सिज्झइ  
जाइ णाव मारुइण विलग्गे  
मंति सुरु दुइहसहु सुहि सहयरु  
जगि कज्जु जि भित्तिरिहि कारण  
तं पि बुद्धदारेण समुब्भइ

अत्थसत्थु णिमुणहि भरहेसर ।

होइ गिरुत्तउ पयपाडियपय ।

सा मइ एहउ तुह सुय सीसइ । 5

हात्थि वं सुत्तसमूहे बज्झइ ।

जलइ जलणु तासु जि संसग्गे ।

तासु करेज्जसु कज्जि महायर ।

तेण ण किज्जइ तहि अवहेरणु ।

बुद्धि वि बुद्धं सेवइ लब्भइ । 10

यत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुइ जराइ णिब्भच्छिय ॥

जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइ इच्छिय ॥ ७ ॥

३ B वेज्ज. ४ MBP सयल.

7. १ MBP णिमुणहि. २ MBP हात्थि वि. ३ MB सुहदुहसहु; P दुहसुहसहु. ४ MBP बुद्धि-  
चारेण. ५ B बुहसेवइ. ६ MP सिरि पलियहिं; B सरे पलियहिं. ७ MBP मुय.

11. b कय करणइं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि. 12 a वेज्जं वैद्यकम्; णि वेटं कोशः. 13 a  
तरुक्कम्मइं काष्ठकर्मणि.

7. 1 णिवरिसि राजर्षिः. 2 गिरिथणिं गिरिः स्तनः यस्याः सा पृथ्वी. 3 b अत्थसत्थु नोविशास्त्रम्.  
4 a सुसहाए सुसहायेन. 5 b एहउ ईदृशम्; सीसइ कथ्यते. 7 a मारुइण विलग्गे वायुना पृष्ठतो लगेन.  
8 a सुरु सुभटः; दुहसहु दुःखस्य सोढा; सुहि सुहृद्; सहयरु मित्रम्; b महायरु महादरुम्. 9 b अव-  
हेरणु अवगणनम्. 10 a समुब्भइ विचार्यते. 11 मुइ मुनः; णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपाः. 12 कम्मत्थइ  
कर्मकरणे.

## 8

रचिता—णियमइणयणविहवपविलोइयपरणरछिहचारिणो ।

पहुविरहयविसालदोसेसु पिहाणय राहयारिणो ॥ १ ॥

बुद्धितुलातोलियमहिमंडल

बुद्धा जेहि ण सेविय भत्तिइ

ते सुंदर जाणसु दुवियड्डा

होति अबुह बुहसंगे बुद्धा

बुहसेवाए बुद्धि उप्पज्जइ

सुस्ससा सवणु वि संधारणु

तिविह होइ मंतहु संबंधिणि

णिसुणिक्खवाउवंसमंडणघय

ताइ मंतु अवसें णिप्फज्जइ

मंतचारणिम्महियाहंडल ।

णउ मुच्चंति कयाइ वि यत्तिइ ।

कुलवलसिरिमयजलणे दड्डा ।

वंपयवासें तिले वि सुयंधा ।

सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।

मोयणु गहणु णाणु णिच्छयमणु ।

सा वि कैहवि तिजगच्चितामाणि ।

गुरुयणगय सुयगय णियमणगय ।

सो पंचविहु कहंति महामइ ।

वत्ता—आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुवाउ चितेवउ ॥

णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ ॥ ८ ॥

## 9

रचिता—अवि य सहरिस पुरिस दंडपोरिस सुकयावायरक्खणं ।

अविरलमिलियविउलफलसिद्धि वि जाणसु मंतलक्खणं ॥ १ ॥

सुयणुद्धरणु दुद्धणिग्गहणु वि

जणवयदोससमणु जा सुच्चइ

किसि पसुपालणु सहुं वाणिज्जे

णाएं छट्ठभायसंगहणु वि ।

दंडणीइ सा पुत्त पवुच्चइ ।

वत्त भणिज्जइ महिवइपुज्जे ।

8. १ MBP बहु°. २ MBP तिल व. ३ MBP कहंति. ४ MBP णिप्पज्जइ.

9. १ MBP दड्डपउरिस्स.

8. 1 °परणर° शत्रवः; °छिहचारिणो चारपुरुषाः. 2 पहुविरहय° निजस्वामिविरवित°; पिहाणय पिधानभूताः; राहयारिणो निजस्वामिशोभाकारिणः. 3 बयत्तिइ आर्या द्वन्द्वेन (च + अत्तिइ). 5 a दुवियड्डा अपण्डिताः; b °मय° °मदाः. 8 a संघारणु कालान्तराविस्मरणम्; b मोयणु हर्षः; णिच्छयमणु ऊहापोहविज्ञानाणि. 11 a ताइ तथा त्रिविधया बुद्ध्या. 12 आढत्तइ कम्मत्तइ आरब्धे कार्ये; पढमुवाउ कार्यनिर्धारः.

9. 1 °सुकयावायरक्खणं सुकृतापायरक्षणम्. 3 a छट्ठभाय° षष्ठभागः करः. 5 b वत्त वार्ता नाम राजविद्या.

चउवण्णासमु धम्मु तइत्तिय  
ते अप्पणु पई पुरउ करेवा  
ताहं कम्मु जगसंतिपयासउ  
अय तिवरिस जव तेहि हुणेवउ  
जं जि पढेवउ तं जि करेवउ  
दंसंणणाणचरित्तु कहेवउ  
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती  
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु  
इय मज्जाय विलंघवि लंपड

अज्ज वि सुंदर हौति ण सोत्तिय ।  
हीण दीण दाणेण भरेवा ।  
जणियभूयगंहयणसंतोसउ ।  
जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।  
असि ण धरेवउ दाणु लपवउ । 10  
तिउणउं सुत्तु सरीरि ठेवेवउ ।  
अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती ।  
णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।  
ते खाहिंति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धरणिजणधारणु ॥  
इय इट्ठउ मइं सिट्ठउ खत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

15

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुंमगगयं परिकिखयं ।  
पसुसममिणमसेसमहिवल्लयमहो णरणाह रक्खियं ॥ १ ॥

पढेणहवणदाणइं वाणिज्जइं  
सुहहु भंणु वत्ताणुट्ठाणु वि  
अवर कुसीलकारुजीवित्तणु  
कम्मरहिउ जगि भहु ण भुंजइ

इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइं ।  
वण्णत्तयपेसैणसंमाणु वि ।  
एम कम्मिं संजोएवउ जणु । 5  
धम्मविवज्जिउ तं पि ण किज्जइ ।

१ MBP गहगण°. ३ K तं जि पढेवउ जं जि करेवउ. ४ MBP दंसणु णाणु चरित्तु. ५ MBP धरेवउ.

10. १ T reads कमगगयं and explains it as पादमे स्थितम्; it however records a p कुमगगयं and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. २ M पसुसिमं. ३ MBP पढणइं धणदाणइं. ४ P पुणु. ५ MBP पेसणु संमाणु.

6 a आससु आश्रमाः; तइत्तिय त्रयी विद्या; b सोत्तिय विप्राः. 7 a पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्याः. 8 b भूय भूत°. 9 a अय अजाः त्रिवर्षयवाः एव शेषामङ्कुरोत्पत्तिं विधत्ते. 11 b तिउणउं सुत्तु त्रिगुणं यज्ञोपवीतम्. 15 सुय संगहु श्रुतसंग्रहः; करुणावहु दयामार्गः. 16 इट्ठउ इष्टम्.

10. 1 विय लिय मल म ई हिं विगलितपापमतिभिः; कु म गग यं कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसु स म मिणं पसुसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं कियते. 4 a वत्ता णुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्,

मंतिठाणि कुल्लुबुद्धिइ चत्ता  
अंतेउरि पमत्त कामाउर  
ण थविज्जंति काइं वित्थारें  
पडिवयणेण तासु मइपसरणु  
सहवासेण सीलु जाणेवउ  
जाणेवा रापं पेसिवि चर  
साममेयधणदंडसमागउ

तिक्ख पक्खपालणइ अभत्त<sup>१</sup> ।  
लुद्ध धणाहियारि पसरियकर ।  
णासइ पडु दुट्ठे परिवारें ।  
कलहे ण वि परियणपोरिसगुणु । 10  
ववहारेण सउञ्जु मुणेवउ ।  
कुद्ध लुद्ध माणिय भीरुय पर ।  
शत्ति रइज्जइ जं जसु जोग्गउ ।

घत्ता—णियकञ्जु वि परकञ्जु वि कम्मदक्खसुइत्तणु ॥

जाणेवउ माणेवउ एत्तउ पुत्त पडुत्तणु ॥ १० ॥

15

## II

रचिता—कुणसु सकलुसवइरिणिवपेसियपणिहीपाडिविहाणयं ।

परियणसयणमित्तसंतोसयरं संमाणदाणयं ॥ १ ॥

दुविहु वि जणउवसगु हरेज्जसु  
भाक्खिखउं उप्पेक्खिखउं वि मुणिज्जसु  
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि भौवहि  
अवलंबेज्जसु गुरुहिययत्तणु  
चवलत्तणु अयालगामित्तणु  
णारि जूउ मइरा मयमारणु

तिविहसत्तिसम्भाउ करेज्जसु ।  
णिग्गहु अवह अणुग्गहु देज्जसु ।  
सव्वणिओयसुद्धि संदावहि । 5  
मुयसु दिट्ठकामुयकामित्तणु ।  
खलसंगु वि दुव्वसणपवत्तणु ।  
कामुप्पणउ चउविहु दारुणु ।

६ M मंतिठाणेसु सुबुद्धिए चत्ता; BP मंतिठाणि कुल्लुबुद्धि चत्ता. ७ MBP एत्तिउं.

11. १ MBP विहावहि. २ MBP थिट्ठ<sup>०</sup> but gloss in PT दहे खीजने. ३ MBP अयालि.

7 a मंतीत्यादि—मन्त्रिस्थाने कुल्लुबुद्धिहीना न कर्तव्याः; b तिक्ख तीक्ष्णाः हिंसाः ये ते ग्रामनगरादिरक्षणे न स्थापनीयाः 8 b धणाहियारि भाण्डागाराधिकारे. 10 b कलहे संग्रामकाले. 11 b सउञ्जु निर्लोभिता. 12 b पर शत्रवः. 13 a °समागउ °प्राप्तम्. 14 कम्मदक्खसुइत्तणु कर्मोद्धारणामधिकारिणां सुचित्वं निर्लोभत्वम्.

11. 1 °पणिहीपाडिविहाणयं चारपुरुषप्रतिविधानकम्. 3 a दुविहु मराकदि देवकृतं धाढीप्रमुखं मनुष्यकृतम्; b ति विहसत्ति मन्त्रोत्साहप्रमुखशक्तयः 4 b णिग्गहु दण्डम्; अणुग्गहु प्रसादम्. 5 b णि ओयसुद्धि संदावहि यत्कर्म येन नियोगिना कर्तव्यं तत्तस्य दर्शय. 6 b दिट्ठकामुयकामित्तणु दहे खीजने ये कामुकाः कामसेवोत्तुकाः तेषु अभिलाषं मुञ्च. 8 a मयमारणु मृगया.



अण्णाए ण दविणु णासेवउ  
रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयंउं  
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ

तिक्खदंड सुंफरुसु भासेवउ ।  
मइ महिवइसासाणि विण्णायउं । 10  
रिउछव्वग्गहु हियंउ ण दिज्जइ ।

घत्ता—मुइ कोहु वि मउ लोहु वि माणु हरिसु सहु कामे ।  
गुरु घोसइ सिरि होसइ एयहु खयपरिणामे ॥ ११ ॥

## 12

रचिता—एकंतरिउ मिनु णिरंतरु सत्तु भणंति सरिणो ।  
तासु महंति मंतु पट्टपेसिय गूढा लिगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहि जाणेवा  
कीरइ कालि गमणु ववगयमलि  
विग्गहु हीणे अहव समाणे  
दुग्गासिएण समाणु वि किज्जइ  
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु  
उण्पाइज्जइ दवु पसत्थहं  
तित्थहि धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ  
सामि अमच्चु रहु धणु सुहि बलु  
इउ सत्तंगु जेम्व णउ खिज्जइ

जे विरुद्ध ते तहि णिहणेवा ।  
आसणु बहुकणतणजलमहियलि ।  
बलवंतेण संधि कैयदाने । 5  
मिनु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ ।  
परिरक्खिज्जइ कय चितियफलु ।  
तं दिज्जइ अट्टारहतित्थहं ।  
रायाइल्लउ खयहु ण गच्छइ ।  
भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिवलु । 10  
तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्कवट्टिलच्छीहरु ॥  
णियजणणे णं तवणे वियसाविउ कमलायर ॥ १२ ॥

४ MBP सुफरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पणु वसणु णिहणेव्वउ. ६ P adds after this line: णिच्छउ मइ हियवइ संभाविउ. ७ MP विनु.

12. १ MBP णेरंतरु. २ MBPK दीणे. ३ M कयमाणे. ४ MBP दुग्गासिए संमाणु जि किज्जइ.

10 a रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं अन्यायेन द्रव्यनाशः, तीक्ष्णदण्डः, पक्षवचनं चेति रोषोत्पन्नं त्रिभेदं व्यसनम्. 11 a भरेण अतिशयेन. 12 मुइ सुब.

12. 1 एकंतरिउ एकदेशान्तरस्थं राजानं मित्रम्; णिरंतरु समीपस्थं शत्रुम्. २ तासु महंति मंतु तस्य शत्रोः भिन्दन्ति मन्त्रम्; लिगधारिणो विविधविषधराः. 5 a विग्गहु संग्रामः. 6 a दुग्गासिएण समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधिः क्रियते; b पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम्. 9 b रायाइल्लउ अनुरागशुक्लम्. 10 सुहि सुहृत्. 11 b वसुमइ पृथ्वी. 13 तवणे सूर्येण.

## 13

रचिता—गुणमणिकिरणपसरभरपसमियदुण्णयतिमिरमेलओ ।

हुउ वइसवणपवणजमससिरविहुयवहवरणलीओ ॥ १ ॥

धम्मत्थेसु कुसलु तेयंसिउ	हियमियमहुरभासि णिवसंसिउ ।
अपिसुणु बन्हुच्छाहु अरुसणु	सुइ सुधीरु बलवंतु महासणु ।
मइदिहिहरु समत्थु जिंसिदिउ	सहसुण्णणुबुद्धि जगवंदिउ । 5
दूरालोउ अवीहरसुत्तउ	पुरिसण्णउ पसण्णु गुरुभत्तउ ।
थिरु संभरणसीलु णिम्लवउ	सच्छु अजिभविर्त्तु अइसुहउ ।
थूलक्खु मेहावि सयाणउ	किं वणिज्जइ भारहराणउ ।
पुणु सव्वत्थविमाणु आयउ	वसहसेणु णामे संजायउ ।
जसवइदेविहि वीयउ णंदणु	पुणु वि अणंतविजउ रिउमहणु । 10
अवर अणंतवीरु पुणु अञ्चउ	वीरु सुवीरु मत्तकरिकरुभुउ ।

घत्ता—गयभंगहं चरिमंगहं पुण्णपहावपउण्णउं ॥

गुणजुत्तहं सउ पुत्तहं एवमाइ उप्पण्णउं ॥ १३ ॥

## 14

रचिता—घणयण्णयणवयणकरकमयलसयलावयवसोहिया ।

समियसविसयविरसविसवेइणि सीलैसिरिपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सलक्खण कोमलगात्ती	णक्खकंतिणिजियणक्खत्ती ।
जसवइसइसरिरे संभूई	वंभी णामे अवर वि हूई ।

13. १ GK have दुवई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Samdhi. २ P पयसमिय. ३ B मइदिहिहर. ४ B संतरणसीलु. ५ MBP सकु. ६ B अजिभविर्त्तु. ७ BP अञ्चउ but gloss in P अच्युतः ८ MBP सुधीरु. ९ MBPT गयरंगहं.

14. MB °कणयवयण°. २ MB °विरसवेइणि. ३ P सालसिरी°. ४ MB °पहासिया.

13. 3 a धम्मत्थेसु धर्मार्थयोः; तेयंसिउ तेजस्वी; 4 b महासणु गम्भीरशब्दः; 5 a मइ-दिहिहर मतिवृत्तिगृहम्; 6 a दूरालोउ दूरालोची दीर्घदृष्टिः; अवीहरसुत्तउ शीघ्रकार्यकर्ता; b पुरिसण्णउ पुरुषविशेषज्ञः; 7 a संभरणसीलु स्मृतिशीलः; णिम्लवउ निर्मलव्रतो निर्मलवपुश्च; p अजिभविर्त्तु अकुटिलचित्तः; 8 a थूलक्खु बहुदाता वदान्यः; सयाणउ सज्ञानः 12 गयभंगहं शतभङ्गानामपराजितानाम्.

14. 2 समियेत्यादि—शमिता उपशमं नीता स्वाविषयविरसविषयं वेदना यथा सा.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि  
 बुउ सव्वत्थसिद्धि परमेसर  
 सिखु अविपिक्कवंससुच्छायउ  
 तुच्छबुद्धि अप्पउ अवगण्णमि  
 गज्जमाणजलहरजलणिहिसर  
 पुण्णमियंकवयणु जसहलतर  
 पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु  
 दलियासामयगलगलसंखलु  
 तणुमज्झप्पपसि रहरंगउ  
 वियडणियंनु तंबिबाहर

पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि । 5  
 हुउ मणहर णं मरुगयमंहिहरु ।  
 बालउ बाहुबलि वि तहि जायउ ।  
 पहिलउ कौमएउ किं वण्णमि ।  
 फलिइपईहथोरकरपंजर ।  
 सिरिकीलगिरिंदसमभुयसिर । 10  
 विससहूलखंडु अवियलवलु ।  
 णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।  
 अंगे सहु जि अउवु अणगउ ।  
 उच्छुचावजीयासंधियसर ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥ 15  
 पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

## 15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।

विलवइ चंलइ धुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयाणियतुट्टिहिं  
 का वि पपसु पडंती दीसइ

मउलियललियहिं वलियहिं दिट्ठिहिं ।  
 का वि सविणय किं पि संभासइ ।

५ M °गिरिवर. ६ MBP °सच्छायउ. ७ MBP कामदेउ. ८ M °गलगयसंखलु. ९ P °कौतलु.

15. १ MBP चवइ. २ MPK चलियहिं.

7 a अ वि पि क वं स सु च्छायउ अपकवंशवत्सुकान्तिः 9 b फलिहपईह° अर्गलावत्प्रदीर्घ°. 10 a पुण्ण-  
 मियं क व य णु पूर्णचन्द्राननः; b गिरिंदसमभुयसिर गिरिन्द्रसमानोन्नतांसः. 11 b विसं वृषभः; अ-  
 वियलवलु स्थिरबलः. 13 a दलियासामयगलगलसंखलु दलित आशामदकलानां दिग्गजानां दगशृंखला  
 येन. 13 a रहरंगउ रतेः रत्नभूमिः 14 a वियड° विकट°; तंबिबाहरु ताम्रं रक्तं यद्विस्फीकृतं तद्वद्रक्त  
 ओष्ठो यस्य; b उच्छुचावजीयासंधियसर इक्षुचापप्रत्यबासंधितधारः. 15 पंचहिं तेहिं तैः पञ्चभिः पुत्रैः,  
 कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणैः. 16 कोसुमकंडहिं पुष्पमयैर्बाणैः.

15. 1 ° मयणेत्यादि— कामाग्निना जनितो यो रसः प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अज्ञानियस्याः;  
 अत एव कालिया श्यामवर्णा. 2 धुलइ पतति; सुहयस्स कए सुभगस्य कृते. 3 b मउलियं सुकुलितं,  
 सलज्जतया किंचित्संकुचिताभिरित्यर्थः.

का वि भणइ दिज्जउ आलिगणु  
ता होसइ तुह तायहु केरी  
चंचलि चेलंचलइ विलगइ  
कंठाहरणउं रयणणित्तउ  
तग्गयणयण णियइ अवाचिन्ती  
क वि तेह्णे पाय पक्खालइ  
दोरि विलंबिउं कै वि भीभूयइ  
काइ वि जोयतिइ मयरद्धउ  
काहि वि णीवीबंधणु दलियउ

जइ मेहेसइ मेरउ प्रंगणु । 5  
आण सुरिंदभयाई जणेरी ।  
क वि सोहग्गामिक्ख तहिं मग्गइ ।  
का वि देइ कंकणु कडिउत्तउ ।  
क वि जामायहु साइउं देंती ।  
धूवइ दुदु तक्कु ण णिहालइ । 10  
घड मण्णाति धिवइ सिखु कूवइ ।  
वच्छु भणिवि घरि मंडलु बद्धउ ।  
पेम्मसालिलु ऊरूयलि गलियउ ।

घत्ता—पइ भल्लउं कडउल्लउं का वि देइ करि णेरु ॥

उहामें इय कामें संताविउ सयलु वि पुरु ॥ १५ ॥

15

## 16

रचिता—कुलधनसयणमोहमाणुणइवीलाहरणववसियं ।

इसिवयमिव वंहंति रमणीयउ जस्स सिणेहविलसियं ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदर खेळइ रच्छइ  
सोम्मु सुदंसणु पढमु कुमारउ  
काइवि कउ कवोलि करु कोमलु  
काहि वि विरहसिहिं पउलिउ पलु  
सहइ कामु महुसमयागमणें

तिह तिह हियवउ हरइ वरच्छहिं ।  
पेच्छंतिइ बाहुबलि कुमारउ । 5  
तणुताविण कढइ सरकोमलु ।  
धवलु वि कमलु हुवउ णिलुण्णलु ।  
णिहय का वि पियसमयागमणें ।

३ MBP मेहेसहि. ४ MBP पंगु. ५ M तिणेण. ६ MBP दोरं. ७ B कविलीभूयइ. ८ P उरूययलि.

16. १ B हंति. २ MBP सोमु. ३ P विरहसिहिहिं.

5 ठ मेहेसइ मुत्ति. 6 ठ आण शपथः. 7 अ चेलंचलइ वल्लाले. 8 अ रयण णित्तउं रत्तजडितम्. 9 अ अववित्ती उद्भ्रान्तमनाः; ठ साइउं आलिङ्गनम्. 10 ठ धूवइ वग्गययति प्रलेहनिमित्तं 'कडी' इति. 11 अ भीभूयइ भयानके; ठ धिवइ क्षिपति. 12 ठ मंडलु कुक्कुरः श्वा ग्रामवार्द्धलः. 14 पइ पदे.

16. 1 ° वीलाहरणं व्रीडापरित्यागः; 2 इसिवयमिव वंहंति ऋषिव्रतमिव, यथा मुनिदीक्षायां कुलधनादिकं न मन्यते. 3 ठ वरच्छहि सुन्दरलोचनायाः. 4 ठ कुमारउ कौ प्रथिव्यां मारः कामः. 5 ठ सरकोमलु सरोवरजलम्. 6 अ विरहसिहिं विरहाग्निना; पउलिउ प्रज्वलितं दग्धम्; पलु मांसम्. 7 अ महुसमयागमणें वसन्तागमनेन; ठ पियसमयागमणें आगो दोषः; समय स्वमदेन प्रियविषये कृतमामस्तेनोपलक्षितं मनः तेन; प्रियसमये आगमनेन च.

मडलिय फुल्लिय मल्लिय काणाणि  
णिग्गय पल्लव णवसाहारहु  
पइ मेलेप्पिणु लवइ व कोइल  
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिमुह  
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती  
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु  
का वि कहइ लइ चुं वहि वयणउं

मंडणुं देइ पुरंधि ण काणाणि ।  
मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु ।  
सुहयत्ते किर भूसइ को इल । 10  
जे ते णं कदप्पसिलिमुह ।  
अज्जु गइय महु दुक्खे रत्ती ।  
वियलउ मालइहुसुमपरिग्गहु ।  
अवर मँ देहि किं पि पडिवयणउं ।

वत्ता—णउ मेल्हइ क वि बोल्हइ म करहि काइं वि विप्पिउ ॥ 15

घरु विउ वि णियचिउ वि सयलु वि तुज्जु समप्पिउ ॥ १६ ॥

17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया ।

पिययमवयणकमलरसलं पाडि तरुणीमहुयरुल्लिया ॥ १ ॥

जो सुहउ महिलहिं माणिज्जइ  
गग्भि सुणंदहि रुवरवण्णी  
णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ  
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ  
भुवंकत्तणु थणथडुत्तणु  
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु

कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ ।  
तासु बहिणि अवर वि उप्पण्णी ।  
चंदु कलंके वयणहु लज्जइ । 5  
तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ ।  
अहरहु केरउ अइराइत्तणु ।  
जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु ।

४ B मंडलु. ५ K सिलिमुह. ६ MBP म किं पि देहि.

17. १ M अइरत्तत्तणु; BP अइरायत्तणु.

8 b ण काणाणि का स्त्री मण्डनं न ददाति आनने सुखे, अपि तु सर्वा ददाति. 9 b सा हारहु स्वाहारस्य; अन्वसा हा रहु हारस्य. 10 b इल पृथ्वी. 11 a °सिलिम्मुहु भ्रमरः; b °सिलिम्मुहु बाणः. 15 विप्पिउ विप्रियमनिष्ठम्.

17. 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्दं करोति; मणरुहविसिह° कामवाणाः. 2 तरुणीमहुयरुल्लिया तरुण्येव मयुक्ती भ्रमरी. 4 b तासु बाहुबलेः. 6 a पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 a थणथडुत्तणु स्तनकठिनत्वम्; b अहरहु अक्षरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्वं दोषः, ओष्ठे तु गुणः. 8 a. ५ वि-आयहं पूर्वमेकवारं पतिताः पुनरुद्रतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्वं कथम्.

तुच्छोयरवासिहि गंभीरिम  
कंचीदामपण ददबंधहु  
सीसारूढकेसकुडिलत्तणु  
दिट्ठोसु अवसें असमेहलु  
तुंगपयोहरविलुलियघणघण  
सिंचिय तेहिं णाई मइ सीसइ  
इय रूवे जगणारिहि सुंदरि

णाहिहि अवर णियंबहु वड्डिम ।  
रहियंगहु परलोयविरुद्धहु । 10  
पुरिसोवरि माणसकटिणत्तणु ।  
मज्झु अमज्झत्यु व डुउ दुब्बलु ।  
चलहारावलिमोत्तिय जलकण ।  
रोमराइ णववेल्लि व दीसइ ।  
जाणिवि ताँयं कोकिय सुंदरि । 15

घत्ता—एकुत्तर रणदुद्धर सउ तणयहं दुइ धूर्यउ ॥

कयसेट्ठिहिं परमेट्ठिहिं जायउ अनुवमरूवउ ॥ १७ ॥

18

रचिता—जयवइजणणचरणमूलम्मि महारिउवंदंमहणा ।

बहुसुयणियरधरणपरिणयमइ जाया सयलणंदणा ॥ १ ॥

भावें णमसिद्धं पमणेप्पणु  
दोहिं मि णिम्मलकंचणवणहं  
अत्यं सहेण वि सोहिल्लउ  
सक्कउ पायउ पुणु अवहंसउ  
सत्थकलासिउ सँगणिवद्धउ  
अणिबद्धउ गाहाइउ अक्खिउ  
वंमे सइ वक्खाणिउ जं जिह

दाहिणवामकरोहिं लिहेप्पिणु ।  
अक्खरगणियइं कहियइं कणहं । 5  
गहु अगहु दुविहु कवुल्लउ ।  
वित्तउ उप्पाइउ सपसंसउ ।  
णाडउ अक्खाइय कंहरिद्धउ ।  
गेयवज्जलक्खणु वि गिरिक्खिउ ।  
कुंअरीजुयलें बुज्झिउ तं तिह ।

२ M कंचीदामपण. ३ B ताइए. ४ MBP धीयउ.

18. १ MBP °विंद°. २ MBP सणि णिवद्धउ. ३ MBP कहरद्धउ. ४ MBP गेयवज्जु लक्खणु.  
५ MBP कुमरी°.

9 a तुच्छोयरवासिहि तुच्छं स्वल्पं यदुदरमर्धं तस्मिन्वसनशीलस्य गम्भीरिमा दोषो नाभेस्तु गुणः. 10 b रहियंगहु प्रच्छादितस्वरूपस्य; परलोयविरुद्धहु परलोकेन मोक्षेण परपुरुषावलोकनेन वा विरुद्धस्य. 12 a असमेहलु असमाभीहां चेष्टां लातीति अमध्यस्थः पक्षपाती वा. 13 a विलुलियघणघण लुठितसघनमेघः. 15 b ता एं पित्रा तातेन; को किय नाम दत्तम्.

18. 1 जयवइ° जगत्पति°. 2 बहुसुयणियर° प्रचुरश्रुतसमूहः. 5 b अगहु पयम्. ६ a अवहंसउ अपभ्रंशम्; b वित्तउ वृत्तम्. 7 a सत्थकलासिउ शास्त्राश्रितं द्वासप्ततिकलाप्रतिपादितम्; b कहरिद्धउ कथास्तम्. 8 a अणिबद्धउ सर्वबन्धेन अरचितं गाथादिकम्; b गेयवज्जलक्खणु गीतवाद्यलक्षणशास्त्रम्. 9 a वंमे वृषभेण.

सुयहं महंतु कर्तुं अणेष्यं विष्णाणहं णाणहं बहुमेयहं । 10  
पम भडारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्काले तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घर आईय चवइ जिणेण गिरिक्खिय ॥

पहु दहविह सुरमहिरुह अवसप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियधिमलवारिणा ।

धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ ११ ॥

कर्णधिवविणासि संहारहु	णउ परिरक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णहं अंबराहं मलमल्लिणहं	काले विहडियाहं आहरणहं ।
तणु लायणु वणु परिल्लसियउ	जडरहुयासें रहिरु वि सुसियउ । 5
लग्गणखंमु अण्णु को अम्हहं	एवहिं सरणु पइइ तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसंपत्तिहि	भवणज्जाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि	करि णिब्बिते असेसहि वित्तिहि ।
तं गिणुणेवि जायकारुणं	देवें पउरणणसंपणं ।
करिसणकरण धरणु मयाणिवहहं	हरिकरिमेसमहिसविसकरहं ॥ 10
पहु घड भोयणु भायणु रंजणु	घरु पर्यणविहि पीढु मणरंजणु ।
सेज सरीरताणु जलधारणु	हारु दोरु केजुरु सक्कणु ।
असि मसि सिण्णु वि जं जिह जेहुउ	अक्खिउ लोयहु तं तिह तेहुउ ।

घत्ता—परमेसर सुंघरियघरु आइपुरिसु कमलासणु ॥

जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥

15

19. १ MBP ° दारिणा. २ MB संधारु but PGKT संधारु. ३ MBP को विणउ अम्हहं.  
४ K णिप्फत्तिहि. ५ P णिब्बितं. ६ K °संयुणं. ७ M °वस°. ८ MBP परियणु वि. ९ MBT जलवारणु;  
but T records a p जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्'.  
१० MBP सुचरियघरु.

11 b पय प्रजा.

19. 2 पइं मि त्वयापि; महारि वारिणा महादुःखनिवारकेण. 3 a संहारहु प्रलयकालाव; b भुक्खा-  
मारहु क्षुधामरोसकाशाव. 5 a परिल्लसियउ हीनं जातम्; b जडरहुयासें जडरामिना. 6 b एवहिं  
इदानीम्. 8 b वित्तिहि जीविकायाम्. 11 a रंजणु अलंजलः अलंजरो वा; b पयणविहि पचनविधिः. 12 a  
सरीरताणु कवचादिकम्; अलधारणु छत्रादिकम्; 14 सुचरियघरु सुधृतभूमिः.

20

रचिता—अवर वि भणिय वणियवर हलहर सुयरिय कहिय कुलवहा ।

जड परिवडियधम्म चंडाल वि पयडियविविहपसुवहा ॥ १ ॥

लेहउ लोहयार कुंभार वि

जेहिं जं जि णियकम्मु पयासिउ

पल्लव सेंधव कौकण कोसल

अंग कलिंग गंगै जालंधर

दविड गडड कण्णाड वराड वि

सुर सुरट्ट विवेहा लाड वि

मागह जट्ट भोट्ट ठेवाव वि

देवमाउसासुम्भव ससलिल

गिरितरुसरिदुग्गेहिं दुसंचर

तिलपीलउ मालिउ चम्मार वि ।

ताह तं जि कुलदेवें भासिउ ।

टक्का हीर कीर खस केरल ।

वच्छ जवण कुरु गुज्जर वज्जर ।

पारस पारियाय पुण्णाड वि ।

कौंग वंग मालव पंचाल वि ।

उड्ड पुंड हरि कुरु मंगाल वि ।

साहारण अणूव पर जंगल ।

अडइदेस वसिकयधर ससवर ।

घत्ता—वइधरियहिं वणहरियहिं महि सोहइ चउपासिहिं ॥

कयैगामहिं आरामहिं छेत्तिहिं एकहुकोसहिं ॥ २० ॥

21

दुवई—चउविहगोउराइं चउदारइं णयरइं भूमिभूसणो ।

कारावइ पुराइं पुरुपवजिणो सुरैदिणपेसणो ॥ १ ॥

20. १ K पडिवडिय°. २ P °पसुविहा; MB °वसुवहा. ३ MBP वंग. ४ MBP ववर. ५ MBP भट्ट. ६ MBP वसिकयवर. ७ MB कयगामिहिं. ८ MBP खेत्तिहिं.

21. १ MBP call this couplet रचिता; GK call it दुवई which it is. २ MB पुरपव°. ३ B सुरवरदिणपेसणो.

20. 1 सुयरिय° सुचरिता: सज्जना:; °कुलवहा कुलमार्गा: 2 परिवडियधम्म धर्मात्पतिता:; पयडियवि विहपसुवहा प्रकटितनानापशुवधा: 3 a लेहउ चित्रकारो लेखकश्च. 10 a देवमाउसासुम्भव मेघवृष्टिजनितसस्या:; ससलिल नदीजलसेकादिना निष्पन्नसस्या:; b साहारण नदीजलसेकादिना मेघवृष्टया वा निष्पन्नसस्या:; 11 c ससवर शबरै: भिलै: सहिता: 12 वइधरियहिं वृत्तियुक्तै:.

21. 1 भूमिभूसणो आदिनाथ:.



खेडइं थियदुवासगिरिसरियइं  
 पंचगार्वसयसहियमडंबइं  
 दोणामुहइं जलहितीरत्थइं  
 सुणिरुवियसविणयसेवायर  
 पयणियरायसुरिंदाणंदे  
 वणणचउक्कमग्गु उवणसिउ  
 तिहुयणरायहु महिरायत्तणु  
 कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु  
 पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइयहुं  
 णाहिणरिंदामरसंघायहिं

कब्बडाइं महिहरपरियरियइं ।  
 रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं । 5  
 संवाहणइं अहिंसिहरत्थइं ।  
 वइरायरपट्टइं जे आयर ।  
 ते रक्खाविय कुलयैरचंदे ।  
 दंडे दोसु असेसु पणासिउ ।  
 कवणु गहणु तहु मणुयपट्टत्तणु । 10  
 कणयरयणधारहिं वरिसंतहु ।  
 वडु पट्टु जगणाहहु तइयहुं ।  
 कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासाणि णिवसासाणि आसीणउ परमेसरु ॥

जयसिरिसहि पालइ महि वडुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

## 22

रचिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।

अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि लुहवेविरतणु  
 धरि उच्छुरसु पियहुं जेणायउ  
 सोमप्पहु कोक्किउ कुरुराणउ  
 हरि हरिकंतु कहि वि हरिवंसहु  
 कासवु मधवु भणेप्पिणु घोसिउ  
 अवरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ  
 चोइहमयकुलयरपियणंदणु

उड्डियकरयलु णीसेसु वि जणु ।  
 पट्टु इक्खाउवंसु ते जायउ । 5  
 सो जायउ कुरवंसपहाणउ ।  
 कउ पुंरिमिल्लु पुरासु सपससहु ।  
 उग्गवंसमूलिल्लु पयासिउ ।  
 णाहवंसि सो पहिलउ जाणिउ ।  
 मरुएवीमणणयणाणंदणु ।

४ MBP ° गाम°, ५ K कुवल्यचंदे.

22. १ MBP पुरमिळु. २ MBP उग्गवंसु. ३ MBP चउदह°.

3 a दुवास° द्विपार्श्व°. 5 b अहिंसिहरत्थइं पर्वतशिखरस्थानि. 6 b वइरायरपट्टइं वज्राकरप्रभृति;  
 a आयर आकराः खनयः. 7 b ते आकररत्नानि. 14 उवणीय° उपढीकित°.

22. 1 हयमल° हतमलः परमेश्वरः; °भूयरो मनुजः. 6 a हरि हरिनामा पुरुषः; हरिकंठुकहिनि  
 चन्द्रवत्क्रान्त इति भणित्वा; b पुरिमिळु आद्यः. 7 b °मूलिल्लु प्रथमपुरुषः.

फणिवरसिरमणिहयपयणेउर  
कहियणरेसरकुलहिं विराइउ

सकलत्तउ सपुतु संतेउर ।  
अच्छइ रज्जु करंतु महाइउ ।

10

घत्ता—पय पालइ दक्खालइ णायमग्गु भाभासुरु ॥

सिरिअरुहें सहुं भरहें पुष्पयंतु रिसहेसर ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधो णाम  
पंचमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ५ ॥

॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णरेसरकुलेहिं; K णरेसकुलेहिं.

11 कहियणरेसरकुलहिं पूर्वोक्तचतुष्प्रकारराजकुलेः; ७ महाइउ महाधर्कः. 12 सिरिअरुहें श्रीयोग्येन.

## VI

अण्णहिं दिणि सभवाणि सुरवरहिं संथुउ संपयगारउ ॥  
फणिदणुयहिं मणुयहिं सेवियउ थिउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ भुवकं ॥

### 1

मलयविलसिया—कंचणघडियइ	मणिगणजडियइ ।	
हरिवरधरियइ	पहविप्फुरियइ ॥ १ ॥	
आसणि आसीणउ परमपहु	अम्हहिं किं वणिणज्जइ रिसहु ।	5
दिण्णइं चाउरिपट्टासणइं	सुविचित्तचित्तवेत्तासणइं ।	
रयणंचियाइं लोहासणइं	दंडुण्णयाइं दंडासणइं ।	
पक्केक पहाणा खैणि मिलिय	तहिं संणिसण्ण बहु मंडलिय ।	
कु वि णरवइ घुसिणें समलहिउ	णं सिरिकामिणिराणं गहिउ ।	
कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ	पंडुर णं णियजसेण भरिउ ।	10
मयणाहिविलित्तउ को वि णहें	ससिरविभीयउ धरइ व तिमिर ।	
णिवि कहिं मि घुलइ हारावलिय	कसणइ णं जलहरि विज्जुलिय ।	
कासु वि पडंति चमरइं चलइं	णं कित्सिसुभिसिणिहिं सयदलइं ।	
कप्पूरधूलिवहलुच्छलइं	रुणुसंडइ तहिं महुयर घुलइ ।	
सो केण वि पंतु णिवारियउ	तंबोलुहु पाणि पसारियउ ।	15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:

श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।

भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

GK do not.

1. १ MBP चाउरिवित्तासणइं, २ MBP सुविचित्तचित्तपट्टासणइं, ३ G खणमिलिय, ४ MBPT कु वि णिवर.

1. 1 स भवणि स्वप्रासादे; संपयगारउ संपत्तिकारकः, 2 अत्थाणि आस्थाने सभायाम्, 4 a हरि-  
वरं सिंहवरः; b पट्टं प्रभया, 6 a चाउरिं गादीति देशी, 7 b दंडुण्णयाइं दण्डवदुन्नतानि, 8 b संणि-  
सण्ण उपविष्टाः, 9 b सिरिकामिणिराणं लक्ष्मीप्रेम्णा, 11 a मयणाहिं कस्तूरिका, 12 a णिवि नृपे;  
b कसणइ कृष्णशरीरे मेघे, 13 b कित्सिसुभिसिणिहिं कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्याः; सयदलइं पद्मानीव,  
14 b रुणुसंडइ शब्दं करोति, 15 a सो भ्रमरः.

घत्ता—खगसामिहिं काँमिहिं सयलहिं वि वंदारयबंदियणहिं ॥

पणवंतहिं संतहिं रईणिवहिं जहिं विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

## 2

मलयविलसिया—जत्थ णिसण्णो  
सिंगारहुरो

पणयपसण्णो ।  
रामाणियरो ॥ १ ॥

णियमंति जणं जहिं भत्तियर

कट्टियहर परंपडिहारणर ।

पहुअग्गइ सेवादूसणउं

णिट्ठीवणु जिभणु पहसणउं ।

कमकंपणु अहु णिहालणउं

हिकारउ भंडंहावालणउं ।

5

खासणु धम्मिल्लामेळणउं

करमोडि परासणपेळणउं ।

अवठंभणु दप्पणदंसणउं

अइजंपणु सगुणपसंसणउं ।

सवियारउ कायणियच्छणउं

इट्ठागमदेवदुगुंछणउं ।

संकेयवयणअवयारणउं

परणिदणु पायपसारणउं ।

अंवरु वि जं विणपं विरहियउं

तं म कैरहु गुरुयणगरहियउं ।

10

मण्णहु माँणुसु सामिहि तणउं

ढंकहु दीणत्तणु अप्पणउं ।

घत्ता—इय लक्खिउ अक्खिउ सेवयहो अहिमाँणिहिं वणु चंगउ ।

दउवारियपेरियदंडण मा छिप्पउ तहु अंगउं ॥ २ ॥

## 3

मलयविलसिया—सुरवरसारउ

एम भडारउ ।

अच्छइ जावहिं

सुरवइ तावहिं ॥ १ ॥

५ MBP कामिहिं कामिणिहिं. ६ P रुइणिवहिं.

2. १ MBP वर°. २ M भउहा°. ३ M करहि; BP करहु. ४ MBP माणसु. ५ MB अहि-  
माणहिं.

3. १ MBP जइयहुं. २ MBP तइयहुं.

16 का मि हिं देशगजादीनां वाञ्छकैः; वंदारय° देवाः एव बन्दिजनाः तेः. 17 रइणिवहिं प्रीतिसमूहैः.

2. 3 a णियमंति निषेधयन्ति; b कट्टियहर यट्ठिधराः. 5 a अहु णिहालणउं वक्कावलोकनम्;  
b भंडंहा° भूः. 9 a संकेय° संदेशः. 11 a मण्णहु मानयत. 12 अहिमाणिहिं वणु चंगउ अहंकारिणां  
वनं चारु न तु सभा.

संचितइ अवहीणाणधर  
पुव्वहं परमेसरेण रमिय  
भुंजंतहु महि तेसद्धि गय  
अल्लु वि माणि मण्णइ मत्त गय  
अल्लु वि घैरि रइ किंकरणिवहि  
को हुयवहु इंधणेण धवइ  
को भोएं जीवहु करइ दिहि  
जाणंतु वि मुज्झइ देउं जहिं

वारहरविसंगिहकुलिसयर ।  
कुमरत्तं वीस लक्ख गमिय ।  
अल्लु वि अवलोयइ चवल हय । 5  
इच्छइ अल्लु वि संदण सधय ।  
अल्लु वि ण विरण्णइ कामंसुहि ।  
सरिसलिलें सैरिणियराहिवइ ।  
वल्लवंतउ सव्वहुं कम्मविहि ।  
अण्णाणु अवह किं मणमि तहिं । 10

वत्ता—रइराविउ भाविउ पैंउं जगु किं पि णं याणइ जुत्तउ ॥

सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्टाहुत्तउ ॥ ३ ॥

4

मलयविलसिया—दुट्टे धिट्टे

ण तुह धणेणं

डज्झसु तिट्टे ।

तित्ति इमेणं ॥ १ ॥

अल्लु वि णउ फिट्टइ भोयरइ  
अल्लु वि पट्टुहियउ णंउ उवस्समइ  
सैरिणिहिसमाहं मइ पयडियउ  
णट्टाइं धम्मकम्मंतरइं  
आयारइं पंचमैहव्वयइं  
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ  
इय चित्तिवि इदं जाणियउं

अल्लु वि णउ चित्तइ परम गइ ।  
माणवरमणीरमणउ रमइ ।  
अट्टारहकोडाकोडियउ । 5  
दंसणणणइं चरियइं वरइं ।  
अणुवयगुणवयसिक्खावयइं ।  
सिद्धंतु अणाइं अरुहें कहियु ।  
अवहिण भवियन्नु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरे. ४ B °णिवहो. ५ B कामसुहो. ६ M सरणिगर°. ७ MBP सव्वहं बलवंतउ. ८ MBP जाणंतउ. ९ K एहु. १० MBPK एम. ११ MP ण जाइ; B ण जाणइ. १२ MBP हेट्टाहुत्तउ.

4. १ MBP ण उवस्समइ. २ T सरणिहि°. ३ B Omits this foot. ४ MBP °महावयइं. ५ MB अरुहकहियु.

3. 6 b संदण रथाः. 7 a किं कर णिवहि सेवकसमुहे. 8 a धवइ आपयति; b सरिणिगरा-  
हिवइ समुद्रः. 9 b कम्मविहि कर्मप्रकारः, कर्मैव विधाता. 11 राविउ रञ्जितम्; भाविउ पुनः पुनः प्रकटं  
नीतम्.

4. 1 b तिट्टे हें तृष्णे, 5 a सरणिहिसमाहं सागरोपमानाम्.

णाहहु अल्लु जि चरियावरणु      धुउ णिम्मइ गेण्हइ तव्वंवरणु । 10  
 पुण्णौउस णीलंजस णडइ      गयजीविय जइ अग्गाइ पडइ ।  
 तौ होइ विरायहु कारणउं      ईह दुविहु संजमुद्वारणउं ।  
 जिणधम्मपवत्तणु होइ जणे      इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।

घत्ता—णीलंजस रइवस मुंगणयण इदं भणिय अर्णिदहो ॥

तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमजुयलु णच्चहि पुरउ जिणिदहो ॥ ४ ॥ 15

## 5

मलयविलसिया—ता तुंगथणी  
 रयणमयघरं

सयमहरमणी ।  
 साकेयपुरं ॥ १ ॥

आया णहेण छउओयरिय      विज्जुलिय णाई चलविष्फुरिय ।  
 पांडहियणागसुरपरियरिय      णाहेयणिहेलणि अवयरिय ।  
 पणवेप्पिणु पहु ओलग्गियउ      पेक्खणयहु अवसर माग्गियउ । 5  
 णाडयपारंभि पढमु भणिउं      वीसंगु वि पुव्वरंगु जणिउ ।  
 वाइयउ तिपुक्खरु सुंदरउ      सुपसिद्धउ सोलहअक्खरउ ।  
 चउमग्गु दुलेवणु छक्करणु      तियतिल्लउ तिलयउ मणहरणु ।  
 तिगैयउ तिपेच्चारं तिजोयैयरु      तिकरिछउ पंचपाणिपहरु ।  
 तिपसारउ अवरु तिमज्जणउं      वीसालंकारसलक्खणउं । 10  
 अट्टारहजाइहिं मंडियउ      एयहिं गुणेहिं अवरुंडियउ ।  
 चच्चउडु भणिउं पुणु चाचउडु      छप्पियपुत्तु वि मणहारि फुडु ।  
 इय ताल्लहिं तीहिं अलंकरिउ      बहुयहिं तब्भेयहिं परियरिउ ।  
 वामुद्दाल्लिगियसंणियउं      ओणद्धउं वज्जउं वणिणयउं ।

६ MBP तवयरणु. ७ P पुव्वाउस. ८ P तौ. ९ MBPK इय but G इह with gloss संसारे. १० MBP मयणयण.

5. १ MBP पाडहि गायण<sup>०</sup>. २ MB पेक्खणहो. ३ MB तिगइयउ. ४ MB तिच्चार; P तिमाचार; T तियच्चार. ५ MBP तिजोयघर. ६ MB छप्पिउ वुत्तु; P छप्पिउडु वुत्तु. ७ MB ताडहि.

10 b धुउ धुवं निश्चयेन; णिम्मइ क्षयोपशमं याति. 12 b दु वि हु संजमु इन्द्रियसंयमः प्राणसंयमश्च; अथवा निश्चयव्यवहाररूपः. 13 b संभरे वि विन्तयित्वा. 14 सृगणयण मृगनेत्ती; अर्णिदहो सर्वज्ञस्य.

5. 1 b सयमहरमणी इन्द्राणी. 3 a छउओयरिय क्षामोदरी. 5 a ओलग्गियउ सेवितः. 14 b ओणद्धेत्यादि—इत्थंभूतं यद्वनद्धं वाद्यं तत् त्रिप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति.

घत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुइसंखाइ सुललियहिं ।  
चलबद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलसिया—विरईपुसिरे वंजे सुसिरे ।  
नृकयपसंसे जाँयउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्युं छुणंति सुअँत्यसुइ  
कंपतियाइ उगंगमु तिसुइ  
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय  
सरिसहुं धँवँउ कंपतियए  
गंधारणिसायविँलिययाइ  
पयणियवेणू णाणायेरहिं  
पयडियउ जि देवागमि भणिउं  
घणु कंसतालजुयलाइयउ  
अमरहिं जिणंमणसंमाइयहिं  
उप्पणउ उरठाणंतरए  
कमरइयपमाणहिं संलिवइ  
सुइसु वि सरि ग म प धँणी यणाम

थिय मुक्कंगुलि व सुअइसुइ ।  
मुक्कंगुलियइ ह्वयउ दुसुइ ।  
सँहुं सजें मज्झिमपंचमय । 5  
सौमणसरंतरसंणियए ।  
अद्धइ मुक्कइ अँगुलिययाइ ।  
तुंवरुणारयसंणिहसुरेहिं ।  
णिक्कलु तेप्पुं वि तंतीरणिउं ।  
समँहँत्य देविं जँहिं चालियउ । 10  
पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।  
वाँवीस सुइउ णहंतरए ।  
वडुंतु णाउ वुडुहिं धिवइ ।  
सर सत्त तेसु दोणिण वि जि गाम ।

८ MBP चवलद्धहिं; T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्कामिः.

6. १ MBP विरइयपुसिरे. २ MBPT वजियसुसिरे. ३ MBP णिकयपसंसे. ४ MBP जाओ.  
५ MBP जेसु. ६ P सुअत्यवई. ७ BP कंपतियाउ. ८ MBP उगंगउ. ९ P सहुं मज्झें. १० MBP धेयउ  
T धइवउ. ११ M सामणं सरंतरसंणियए; B सरंतरसंणियए; सरंतरसंणियए. १२ M विचलियाइ; B विव-  
लियाइ; P णिचलियाइ. १३ MB अंगुलियाइ; P अंगुलियाइ. १४ P तिवुवि. १५ MB समहँत्य. १६ K  
संचालियउ. १७ P जिणसमण. १८ MBP बावीस वि सुइउ. १९ MP ०पधणीसणाम; B ०पधणिणाम.

16 वत्ता वत्तंगुलि यहिं उक्कविचेषणविशिष्टाभिरव्यक्तव्यकाहुलिभिः.

6. 1 a विरईपुसिरे विरतिप्रोच्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थः. 3 a सरु स्वरः. 5 b सजें षड्जेन  
सह. 6 b सामणं सरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 8 a णाणायेरहिं नानादरेज्ञानादरेको. 6 b  
णिक्कलु तेप्पुं वि तंतीरणिउं तन्त्रीवाचं द्विविधं निष्कलं विपंच (तेप्पु). 12 b णहंतरए आकाशे. 13 b  
णाउ नादः.

घत्ता—सुरपुजइ सजइ किंणरहिं जाइउ सैंत्त पउत्तउ ॥

15

एयारह सुयरह माज्झिमइ पीणियजणवयसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह

इय अट्टारह ।

जाइणिबद्धहं

लंक्खविसुद्धहं ॥ १ ॥

अंसहं सउ चालीसाहियउ

एकुत्तरु तं पि पसाहियउ ।

तहिं होंतउ सवणरवणियउ

गईउं पंच उप्पणियउ ।

सुद्धा भिण्णा पुणु वेसरिय

गउडी साहारणिया सैरिय ।

5

तहिं गाम्मराय अवर वि भाणिया

भयवयमयगुत्तित्तचगणिया ।

इय तीस कमेण जि संगहिय

उडुमाण जि माणवसवणहिय ।

पहिलारउ टँक्कराउ कहिय

अणुवेक्खासमभासहिं सहिय ।

अट्टहिं पंचमु वि पयासियउ

विहिं वि विहासहिं भूसियउ ।

आवाहियमोहियजगविलउ

हिंदोलउ चउभासाणिलउ ।

10

मालविकेसिउ छहि बुक्कियउ

अवराहिं मि दोहिं मि अंक्रियउ ।

सुद्धउ सज्जु वि सत्तहिं कलिय

ककुडु मि तिहिं भासहिं संवलिय ।

घत्ता—सुविहासहिं सरसहिं विहिं सहिय सो गाइउ सुइलीणउ ॥

मणहरियउ किरियउ दावियउ जहिं परिगयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

२० BP सुत्तपउत्तउ.

7. १ MBP लक्खु वि सुद्धहं. २ MBP गीयउ पंचउ. ३ MBP भाणिय. ४ MBPT ढक्कराउ. ५ MP विहिं चय विहासहिं; B तिहिं चय विहासहिं.

16 सुयरह स्मर्यताम्; °सोत्तउ °कर्णाः.

7. 1 a सत्तेयारह सप्त एकादश च. 2 b लक्खु वि सुद्धहं गीतप्रयोगविशुद्धानाम्. 3 a अंसहं अंसानाम्; 4 a सवणरवणियउ श्रवणसुखदाः. 5 b सरिय स्मृताः. 8 b अणुवेक्खासमभासहिं द्वादश-भाषासमन्वितः. 10 a आवाहि ये स्वादि-आवाहिता आकारिता मोहिता विह्वलीकृता जगविलउ जगति क्रियो येन एतादृशो हिंदोलकरागः.



## 8

मलयविलसिया—दह चउगुणिया  
भासाणं सा

संखा भणिया ।  
छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रंजियबुहयणमणउ  
एकुणवण्णास वि ताण जहिं  
संजोय ताण बहुदिण्णरस  
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ  
तेरहविहु सीसु पणाच्चियउ  
णवतारउ परिपालियरइउ  
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ  
भू सत्तमेय परहिययहर  
सत्तविहु चिहुँउ चउ मुहहु राय  
सोलहविहु तिविहु चउच्चिहु वि  
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु  
कडियलु जंघा कमकमलाइं  
सउ करणहं वसुसंखाहियउ  
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय  
चारिउ सोलस दुअसंखियउ  
वीस वि मंडलइं पंयासियइं

एयारह दहवर मुच्छणउ ।  
किं वण्णमि गेयारंभु तहिं ।  
णीलंजस णच्चइ विमलजस । 5  
णच्चंती जणहियवउ हरइ ।  
छत्तीस दिट्ठि परियंचियउ ।  
अट्ट वि रइयउ दंसणगइउ ।  
णंदप्पयारु फुडु दावियउ ।  
छव्विह णासा कवोल अहर । 10  
णव गल चउसट्ठि वि करण भाय ।  
किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि ।  
पोट्टु वि पायडियउ तं तिविहु ।  
तव्विहइं जि णियहइं विमलाइं ।  
चलवत्तीसंगहारमियउ । 15  
सत्तारह पिंडीबंध कय ।  
णच्चियउ जियक्खहिं अक्खियउ ।  
ठाणाइं तिण्णि संदरिसियइं ।

घत्ता—संचरियहिं धरियहिं थौइयहिं भावहिं णडइ अणेयहिं ॥

भौसाइहिं जाइहिं णवरसहिं दावियणाणामेयहिं ॥ ८ ॥

20

8. १ MT विउउ; B विवउ; GK चिउबु. २ M पसासियइं; P पसाहियइं. ३ MBP आइयहिं.

४ K हासाइहिं.

8. 2 b विहासा विभाषा: बहु भवन्ति. 8 a परिपालियरइउ पौषितरागाः. 9 b णंदप्पयारु संव नन्दास्तेषां प्रकारः. 10 a भू भुकुटी. 11 b करण भाय हस्तानां भेदाः. 12 b सुउ जुनः. 13 a सर-विहु पद्मप्रकारम्. 16 a णडगुरुकित्तिधय नटानां गुर्व्याः कीर्तिर्ध्वजाः. 17 b जियक्ख हिं जितेन्द्रियैर्गणधरै-र्देवादिभिः. 19 थाइय हिं भाव हिं स्थायिभावै रत्यादिभिः.

मलयविलसिया—वियलियहरिसं  
झत्ति धरंती

स हि णवमरसं ।  
विट्ठ मरंती ॥ १ ॥

जिणणाहं सा नीलंजसिय  
कंदप्पकंति णं पंमुसिय  
णं खणि विट्ठंसिय रइहि पुरि  
णं रंगसरोवरि पउमिणिय  
णं चंदरेह णहि अत्थमिय  
रसवाहिणि दिण्णारवणसुह  
णउ थण णच्चैणगुण णउ वयणु  
णउ केसभारु णउ हारलय  
सुण्णउं पंगणु हरिणीलयलु  
अमराहिवणारिरयणु मुयउ  
हा हा भणंतु सोपं लइउ

णं केण वि चित्ति लिहिवि पुंसिय ।  
लायण्णतरंगिणि णं सुंसिय ।  
णं हय जणणयणिवाससिरि । 5  
कम्मेण कालरुवें लुणिय ।  
णं सुरधणुसिरि मरुणा समिय ।  
णं णासिय पिसुणें सुकइकह ।  
णउ विउलु रमणु संचियमयणु ।  
णउ जाणहुं सुंदरि कहिं मि गय । 10  
णं विज्जुविज्जिउ मेहउलु ।  
तं पेच्छिवि कोऊहलु हुयउ ।  
अत्थाणु असेसु वि विरइइउ ।

घत्ता—तहि मरणं करुणं कंपियउ भरहजणणु सवियकउ ॥

तुण्हिक्कउ थक्कउ तिजगगुरु कुंसुमयंतु रइमुक्कउ ॥ ९ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभवभरहाणुमणिणए महाकवे नीलंजसाविणासो णाम  
छट्ठओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥

॥ संधि ॥ ६ ॥

9. १ MB फुसिय, २ MBP पयपुसिय, ३ MB सुसुय, ४ MBP सरोवर°, ५ MBP णउ कर-  
कम, ६ M विमइउ; B विभयउ; P विभियउ, ७ MBP करणें, ८ MBP कुसुमयंत° and gloss in  
P कुसुमवदन्ता या नीलंजसा तस्या रतेमुक्कः.

9. 1 b स सा नीलंजसा; हि स्फुटम्; णवमरसं शान्तरसम्, 3 b पु सिय प्रोञ्छिता, 4 a पंमु सिय  
प्रमुषिता, 7 b मरु णा पवनेत्, 9 b जाणहुं ज्ञायते, 11 a हरिणीलयलु इन्द्रनीलमणिबद्धतलम्, 14 स-  
विय क उ सविस्सयः, 15 कु सु म यं तु कुसुमवदन्ता यस्य तादृश आदिनाथः; र इ मु क उ रतेमुक्कः.

## VII

कयतिहुयणसेवें चित्तिउ देवें जणि थुउ किं पि ण दीसइ ।

जिह दावियणवरस गय णीलंजस तिह अवस वि जाएसइ ॥ १ ॥

### I

खंडयं—इह संसारदारुणे बहुसरीरसंधारणे ।

वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसंमु पयासइ	धणु सुरधणु व खणैदे णासइ । 5
हय गय रह भड धवलइ छत्तइ	सासयाइ णउ पुत्तकलत्तइ ।
जंपाणइ जाणइ धयचमरइ	रविउग्गमणे जंति णं तिमिरइ ।
लच्छि विमल कमलालयवासिणि	णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।
तणु लायण्णु वण्णु खणि खिज्जइ	कालालि मयरंडु व पिज्जइ ।
वियलइ जोव्वणु णं करयलजलु	णिवडइ माणुसु णं पिक्कउ फलु । 10
तुय्हि लवणु जसु उत्तारिज्जइ	सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।
जो महिवइ महिवइहि णविज्जइ	सो मुउ घरदारेण ण पिज्जइ ।

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥

इयं जाणिवि अहुउ अवलंबिवि तउ पिज्जणि वणि णिवसिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza:—

हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता

कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।

धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवल्यशोषोतधावीतलान्तः

ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read हहे for हंहो; प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°; and °संख्यात° for °संख्यान°. GK do not give it.

1. १ M reads खंडियं throughout. २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्तः. ३ P खणद्धं. ४ MBP तियहिं. ५ B इउ. ६ B अणुउ; P अद्धउ. ७ MBP अवलंबियमुउ but gloss in P तपो गृहीत्वा.

1. 3 a संसारदारुणे दारुणे संसारे. 4 a वसिऊणं उषित्वा. 5 a सुसमु शोभनोपशमयुक्तः द्वादशानुश्रेश्वरूपं वा. 7 a जंपाणइ पालखीति देशी. 8 b बुहउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी. 9 b कालालि कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण. 11 a तुयहिं लोमिः; b तणि उत्तारिज्जइ तुणे तृणसंस्तारेके तुणोपरि स्थाप्यते, यत्र तुणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थः. 13 जित्तउ जितम्. 14 अवलंबिवि गृहीत्वा.

## 2

खंडयं—वइरिरायदप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं ।  
मण्णइ अप्पाणं घणं सरणविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

जइ वि धरंति वीर णर किंणर अरुण वरुण सपवण वइसाणर ।  
गरुड जक्ख रक्खस्स विज्जाहर भूय पिसाय णाय सस्सि दिणयर ।  
पडिबलकुलकाणणकालाणल इंद पडिदहमिंद महाबल । 5  
पण्णारह्खेत्तुभ्व जिणवर कुलयर चक्कवट्ठि हरि हलहर ।  
जइ वि धरंति देहमा भासुर पवराउहपवीण देवासुर ।  
जइ पइसइ मयरहरब्भंतरी किंकरहरिकरिरहवूहंतरी ।  
सरसरिगिरिदरिक्करकंदरि दुप्पवेसकुलिसायसि पंजरि ।  
बहलतमंभयारमहिमूलइ जइ पइसरइ गंपि पायालइ । 10  
तो वि जीउ कैडिजइ कालें हरिणा हरिणु व भिउडिकरालें ।

घत्ता—इय वुड्ढिवि असरणु रंभिनि तियरणु जेण चारिणु ण चिण्णउं ॥  
तं माणुसवेसे वायावसेसे भमइ कलेवर सुण्णउं ॥ २ ॥

## 3

खंडयं—मित्तसयणसंजोयओ होउं होइ विओयओ ।  
एक्को छिय जगि जीयओ भमइ सकम्मविणीयओ ॥ १ ॥

एक्कु जि जहु जच्चु णउंसउ दुग्गउ दुट्ठु दुवुडि दुरासउ ।  
हुयउ कुमाणुसात्ति दुणिहालउ एक्कु जि जीउ चंडु चंडालउ ।  
एक्कु जि धणुहर सवर वणंतरी एक्कु जि सुरवर मणिमयसुरहरि । 5

2. १ MBP पण्णारस°. २ MBP देव भाभासुर. ३ MBP कुलिसायस°. ४ MBP °तमंभयारि.  
५ M कट्टिजइ.

3. १ P संजोयर. २ P विओयर.

2. 1 b भुयपहरणं भुजं च प्रहरणं च. 2 a घणं समर्थं अलर्थं वा; b जयमिणं इदं जगत्. 3 b अरुण आविल्लसारथिः. 8 a मयरहर° समुद्रः; b °वूहंतरी व्यूहान्तरे. 11 b हरिणा हरिणु व सिंहेन युग इव. 12 तियरणु मनोवाक्कायक्रियाः; चिण्णउं अनुष्ठितम्. 13 वायवसेसे वाचाविशेषण वायुप्रेरणेन वा.

3. 1 b होउं भूत्वा. 2 b °विणीयओ प्रेरितः. 3 a णउंसउ नपुंसकः; b दुग्गउ दरिद्रः; दुरासउ दुष्टचित्तः. 4 a दुणिहालउ दुष्प्रेक्ष्यः. 5 a धणुहर सवर धनुर्धारी भिन्नः; b °सुरहरि° विमाने.

अण्णउ पुण्णहीणु पडिबज्जइ

पक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु

पक्कु जि सँयज्जोणिहि उण्णज्जइ

पक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ

पक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि

सयमहविहवपलोयाणि झिज्जइ ।

पक्कु जि विलि विसहरु जलि जलयरु ।

परिहि तलिवि पडलिवि खणि खज्जइ ।

णरयविवरि णारइयहि हम्मइ ।

वरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि । 10

यत्ता—पक्कु जि भवकहमि णिवडइ दुइमि रइसुहपंकयलण्णउ ॥

पक्कु जि तवताविउ णाणै भाविउ होइ जीउ परमण्णउ ॥ ३ ॥

4

खंडयं—इय णिसुणिवि पयत्तणं

पक्कु जि जीउ वरायओ

गाढं णियमह णियमणं ।

सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिवज्जइ

अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु

अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ

अण्णु जि मित्तु सँयज्जि कयायरु

अण्णु जि भिच्छु होइ धणलोहें

अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ

अण्णहिं जंति खण्णइ रहवर

परमत्थे ण को वि जणि कासु वि

अण्णु जि पिंडु गम्भि संवज्जइ ।

अण्णु जि सुंक्कियउ अण्णु जि तहु फलु ।

अण्णु जि कैो वि पुत्तु णिप्फज्जइ । 5

अण्णु जि होइ सँणेहउ भायरु ।

जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहें ।

णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।

हयवरणयवरविंध्य सत्तामर ।

पक्कलउ जि जाइ पुहइसु वि । 10

यत्ता—राण णिवज्जउ इंदियलुज्जउ सुहु अण्णु जि मँहु भावइ ॥

ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कँखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP सिगजोणिहि. ४ M परिहि तलिवि पडलिवि खज्जइ. ५ B खिज्जइ.

4. १ MBP सुक्किय. २ MBP पुत्तु को वि उण्णज्जइ. ३ MBP सकजि. ४ M सण्हें. ५ MBP एकल्लउ. ६ MB जणि; P मणि.

6 b झिज्जइ खियते. 8 b परिहि परैवित्रैः. 11 एकु जि असहाय एव; 'पंकयलण्णउ कमले भ्रमरः. 12 तवताविउ तपस्त्रापितः.

4. 1 a एयत्तणं एकत्वम्. 2 a वरायओ वराकः; b अण्णु जि भिन्न एव; लोयओ लोकश्वेत-  
नाचेतनपदार्थसंघातः. 3 b पिंडु देहः. 4 b सुक्कियउ सुकृतम्. 5 b पुत्तुत्वादि-आत्मा नै पुन इति वेदवाक्यं  
इत्येत्यर्थः. 7 a भिच्छु मृत्युः. 8 a मत्तउ विवेकशून्यः. 10 a पुहइसु वि पृथ्वीशोऽपि. 12 ससहाउ  
निजस्वरूपम्; महावइ महापतिं महतीमापदम्.

## 5

खंडयं—चउकसायरसरसियओ  
णाणाजैम्मु वियारण

मिच्छासंजमवसियओ ।  
आहिंडइ संसारण ॥ १ ॥

णरयगइहिं उप्पणउ जइयहुं  
तिलु तिलु छिंदिवि दिसिहिं विहाइउ  
वारवार पच्चारिउ जूरिउ  
एकु जि बहुयहिं तहिं पारंभिउ  
ओहामिउ भामिउ ओणामिउ  
अच्छोडिउ मोडिउ महिं पाडिउ  
लूरियंतु कौतेहिं विहिण्णउ  
सत्तिहिं हूलिउ जंतिहिं पीलिउ  
वम्मविहैट्टणेहिं दुब्बोलिउ  
पूयकुंडि उणेह्लिवि घल्लिउ

णारयणियरिहिं संमिवि तइयहुं ।  
कवल्लिउ धुणिउ वणिउ विणिवाइउ ।  
विज्जुतरलतरवारिवियारिउ । 5  
खलिउ दलिउ पयमलिउ णिसुंभिउ ।  
सूलि कयंतदंति संकामिउ ।  
विरसमाणु करवत्तिहिं फाडिउ ।  
संदोदूहलि मुंसलहिं लुण्णउ ।  
जलियजलणजालोलिहिं जालिउ । 10  
सेल्लभल्लिवावल्लहिं सल्लिउ ।  
रुहिरौहलियदेहु ओणल्लिउ ।

घत्ता—माणि रोसु धरंतहं रणि पहरंतहं लग्गइ गनु विहत्तु वि ॥  
सुहु णात्थि तमंधहं णारयसंडहं णयणणिमीलणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

## 6

खंडयं—सिंगीसु य पक्खीसु य  
भुंजंतो भवसंगमं

दाढीसु य णक्खीसु य ।  
ण लहइ जीवो णिगमं ॥ १ ॥

कायकंककोइलकारंडहिं  
सीहसरहसूयरसालूरहिं

सारसचासभासमेरुंडहिं ।  
धारमोरमंडलमज्जारहिं ।

5. १ MBP संजमि वसियउ. २ MBP °जम्म°. ३ MB दिसहिं. ४ MBP मुसल्लं. ५ M °विहट्टणेण.

5. 1 a °रस° परिणतिः; °रसियओ आसक्तः. 4 a विहाइउ विभक्तः; b धुणिउ कम्पितः; वणिउ व्रणितः; विणिवाइउ पातितः. 5 a पच्चारिउ प्रचारितः; जूरिउ दुर्वचनैर्विभक्तितः. 6 b णि सुंभिउ प्रक्षितः. 7 a ओहामिउ अभिभूतः; ओणामिउ ऊर्ध्वमुखो नामितः. 9 a लूरियंतु विदारितान्त्रः; विहिण्णउ विभिन्नः; b संदोदूहलि महोदूखले. 10 a हूलिउ प्रोतः. ११ a दुब्बोल्लिउ दुर्वचनैरुक्तः; b °वावल्लहिं सर्वलोहमयैः. 12 b रुहिरौहलियदेहु रुधिरप्रक्षालितशरीरः; ओणल्लिउ अधः पातितः. 13 विहत्तु विभक्तं खण्डीकृतम्.

6. 2 a भवसंगमं संसारसंबन्धम्. 3 a °कारंड° चक्रवाकः.

कीरकुरकुंजरसारंगहिं	लंबयपारावयहिं तुरंगहिं ।	5
कुंकुडमकडमहिसमरालहिं	मेसवसहखरकरहसियालहिं ।	
सेढासिरढतरच्छहिं रिंछहिं	मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।	
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं	संभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।	
बलणिम्मथणु णियलणिवंधणु	भारारोहणु णौणाबंधणु ।	
छिंदणु भिंदणु ताडणु तासणु	उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।	10
सरपाहाणसंधसंधट्टणु	लोट्टणु आवट्टणु परिवट्टणु ।	
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु	पीलणु पडलणु दारणु मारणु ।	
छुंहुतिण्हाकिलेससंतावणु	भारारूढेसपुरगौमणु ।	
पव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु	जीउ तिरियगइ कह व मुपप्पिणु ।	

घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु बन्धरु सिर्हलु ॥ 15  
हुणचीणाणिवासउ अमणुयभासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥

## 7

खेडयं—मेच्छो ण कुणंइ णियहिंयं	करइ दुलंघं दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउट्टप	णिवडइ णरैयसमुट्टप ॥ १ ॥
जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु	हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं	तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुंमग्गं मुज्झइ	जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ । 5
जडविडकहियहु मयवहधम्महु	लग्गइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मंडिवि मिसु	पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6. १ M लाय<sup>०</sup>. २ B कुंकुड<sup>०</sup>. ३ MBP सेढा<sup>०</sup>. ४ MP रिंछहिं. ५ MBP णासाविधणु.  
६ MBP छुहत्तण्हा<sup>०</sup>. ७ M गायणु. ८ MBP सिंघलु. ९ MBP असुणियभासउ, but gloss in P  
नरभाषारहितः.

7. १ MBP मुणइ. २ B णरइ समुट्टप. ३ P कुसम्मै. ४ MBP कम्महु. ५ MBP वम्महु.

10 b उक्कत्तणु उत्कर्तनम्. 12 a मुसुमूरणु पिण्डीकरणम्. 15 ० वसायउ अधीनः. 16 अमणुय-  
भासउ नरभाषारहितः; अज्जवकुलु आर्यकुलम्.

7. 1 a मेच्छो म्लेच्छः. 2 a विहुरावत्तं बुःखावर्तः. 3 a अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्. 6 a  
मयवहं सुगवधः. 7 a चंडिइ मंडिवि मिसु चण्डिकामिषं कृत्वा.

पसुवलि देंतहं ण खमइ वइवसु  
विरसंतहं सिरकमलु लुँणिजइ  
पुव्वणिबद्धउ अग्गइ धावइ

मारउ मरिवि होइ पुणरवि पसु ।  
सो वि तहिं जि अणें मारिजइ ।  
जो जं करइ सो जि तं पावइ । 10

घत्ता—पसु फाडिवि खजइ वारुणि पिजइ सग्गु मोक्खु पाविजइ ॥  
जइ एण जि कम्मं ता किं धम्मं पारद्धिउ सेविजइ ॥ ७ ॥

## 8

खंडयं—हुयवहुणिगया सग्गयं  
जाया देवा जइ अया

जंति परावरमग्गयं ।  
परिसया दियवरणया ॥ १ ॥

वेयकहियमंतहिं आयामइ  
सोत्तिउ सग्गसोक्खु किं णेच्छइ  
णियडिंभइ मुइ धाहहि कंदइ  
ताडिजइ संरुज्झइ बज्झइ  
खाइ पुरीसु विवुद्धि वराई  
लोयहु देवि भणिवि वक्खणाइ  
गाइ चउप्पय तणयरि जेही  
हा हा बंभणेण माराविय  
पियरपक्खु पच्चक्खु णिरिक्खइ  
धोयंतउ दुज्जे पक्खालउ  
एहु देहु किं सलिलें धुप्पइ

तो अप्पाणउ कीस ण होमइ ।  
किं कुसरीरें बज्जउ अच्छइ ।  
छायैलु छावउ छम्मिउ छिंदइ । 5  
वच्छु णिरोहिवि अणें दुज्झइ ।  
दुरियहलेण सुरहि संभूई ।  
धुचु अयुत्तइ वंचहुं जाणइ ।  
सूररि हूरिणि वि रोहिणि तेही ।  
रायहु रायवित्ति दरिसाविय । 10  
मंसखंडु दियपंडिय भक्खइ ।  
होइ कहिं मि इंगालु ण धवलउ ।  
हिसारंभें डंभें लिप्पइ ।

६ MBT विलुजइ.

8. १ P हुयवहु. २ M. सग्गमोग्गु; B सग्गजोग्गु; P सग्गमोग्गु. ३ MBP छावउछावउ. ४ MB  
दुक्खइ. ५ MBP अयुत्तइ वंचइ. ६ MBP हरिणी रोहिणि. ७ MBP दिउ पंडिउ. ८ MBP हिसारंभि डंभि  
तो लिप्पइ.

8 a वइवसु यमः. 11 वारुणि मयम्.

8. 1 a हुयवहुहुणिगया अमो होमिताः; b परावर<sup>०</sup> मोक्षः. 2 a अया अजाः; b दियवरणया  
द्विजानामभिप्रायाः. 3 a आया मइ मुखमध्ये वक्त्रादिकं मुक्त्वा प्राणादिरोधं करोति. 5 b छम्मिउ वक्खः.  
7 a विवुद्धि विगतबुद्धिः; b सुरहि गौः 9 a चउप्पय चतुप्पदी; तणयरि तृणचरी. 11 a पियरपक्ख  
पितृपक्षः श्राद्धादिकम्; b दियपंडिय द्विजपण्डितः.



अण्णणें रंगें रंगिज्जइ

परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।

मूढु जिणिंदसेव कहि पावइ

सवणु गहणु धरणु वि ण विहाँवइ । 15

घत्ता—मायारउ मण्णइ सुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिबज्जइ ॥

माणुसु वि हवेण्णिणु पाउ करोण्णिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

## 9

खंडयं—ईसिं णिउंचिय जोव्वणं

कामकोहतवभावणं ।

काउं सेवइ जो वणं

सो पावइ तं भावणं ॥ १ ॥

अवरु वि जायउ उववणठाणइ

जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।

वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु

वाइत्तयवायउ सच्चेयरु ।

णच्चणु गायणु सुइसुहदावउ

अण्णु वि होइ असम्मयभावउ । 5

णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ

वेवइ चलेइ घुलइ परिखिज्जइ ।

हा कप्पहुम हा माणससर

हा णिहारहारसंणिहयर ।

हा अच्छरउलमणसंमोहण

हा परियणपडिबक्खणिरोहण ।

हयैवल्लिपलियरोयसयसंचैय

हा दिव्वदेह हा णववय ।

हल्लिकारसार सहसंभव

हा गंधार महुर धीणारव । 10

हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल

हा मंदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्जइ ॥

सग्गग्गु मुयंतहु पलयहु जंतहु कांसु सरीरु ण डज्जइ ॥ ९ ॥

१ M विभावइ.

9. १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा; P इसि. २ MP सुदसहदावउ. ३ MBP वलइ. ४ MBP हा वलि°. ५ MBP °संचुय but gloss in P देह. ६ सोलंकार°. ७ MB कासु ण हियवउ; P कासु वि हियउ ण.

15 b वि हा वइ विभावयति प्राप्नोति. 16 मायारउ मातुरतं विप्रं संमानयति.

9. 1 a ईसि ईषत्; णिउंचिय संवृतं कृत्वा. 2 b भावणं भवनवासिदेवत्वम्. 4 a उववणठाणइ व्यन्तरदेवस्थाने. 4 b सच्चेयरु भण्डो भवति सम्पादितरः. 6 a उव्विज्जइ चिन्तां करोति. 9 a °संचय देह. 10 b गंधार गीतम्.

## 10

खंडयं—सुललियमइलियचेलयं  
भोयविरायणिबंधयं

अइओहुल्लियमालयं ।  
जायं मह खयचिंधयं ॥ १ ॥

सयलजिणाहिसेयधुयमंदर  
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर  
हा मइ माणुसेण होएवउ  
सोणिविणिग्गमि दुक्खु णिएवउ  
हा हा देवलोय कैहिं पेच्छमि  
जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु  
अट्टरउइभावसेचोईय  
हा हा हा भणंतु उब्भियकर

धूवधूमधूवियगिरिकंदर ।  
पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर ।  
किमिमलभेरियइ गम्भि वसेवउ । 5  
णारिउरोरुहँछीरु पिएवउ ।  
कुहियकलेवरि वासु ण इच्छमि ।  
वैर वणि होसमि चंदणु वंदणु ।  
मिच्छादिट्ठि सुदिट्ठिविओईय ।  
एम मरतं हँन्ति सुर तरुवर । 10

घत्ता—जिणधम्मपरमुहु दुण्णयसंमुहु खयकाले अच्छोडिउ ॥  
बहुविहमयमत्ते ईयं मिच्छसै को भवगहाणि ण पाडिउ ॥ १० ॥

## 11

खंडयं—तिप्पयारसंठाणयं  
जीवाजीवसुसंकुलं

चोईहरज्जुपमाणयं ।  
विस्सं णिच्चं णिच्चलं ॥ १ ॥

थिउ आयासि अणंताणंतइ  
गाडु गाडु छहिं दव्वहिं भरियउ  
पुग्गलजीवभावकयभेयहिं

केवलणाणाविलोयणखेत्तइ ।  
केण वि कियउ ण केण वि धरियँउ ।  
कालवसेण जाइ पजायहिं । 5

10. १ MBP °विराय°. २ B °भरियगम्भि. MK °खीर. ४ MBP किं. ५ MBP वरि. ६ MBP °संचोइउ. ७ MBP °विओइउ. ८ MBP °कर. ९ M एम मरेवि होइ सुर तरुवर; BP एम मरेवि होइ सुरतरुवर; १० MBP इह.

11. १ MP चउदह°. २ P adds after this line: अच्छइ सयलु वि जीवहं भरियउ थियघडउल्लउ जिम तिम धरियउ.

10. 1 b अइओहुल्लिय° अतिम्लान°. 2 a °णिबंधयं कारणम्; b मह मम; खयचिंधयं क्षयचिंधं मरणचिहम्. 7 b कुहिय कुथित°. 8 b वंदणु वृक्षविशेषः; पिप्पल इत्यन्ये. 10 b हँन्ति सुर तरुवर देवा वृक्षा भवन्ति. 11 अच्छोडिउ कवलितः. 12 °मयमत्ते जायदिमदमत्तेन.

11. 1 a तिप्पयार° शरावाद्याकृतिमांशोकः. २ b विस्सं विश्वं जगत.

पहिलउ दाणवणरयणिवासउ  
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु  
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ  
मोक्खु वि आयवत्तसणिहयरु  
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खमि

पल्हत्थियसरावसंकासउ ।  
वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।  
तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।  
जो तं पत्तउ सो अजरामरु ।  
संसारियहु सोक्खु किं अक्खमि । 10

घत्ता—चउगइहि मैरतें पुणु पुणु होंतें विहसिवि देवें वुत्तउ ॥

सुहदुक्खणिरंतरि तिजगम्भंतरि जीवें काइ ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

## 12

खंडयं—सारमेयबुद्धिगयं सारमेयसिवजोगयं ।

एसो कम्मकले वरं मण्णइ तहं वि कलेवरं ॥ १ ॥

अट्टिलट्टिकुडुयलणित्तउ  
पांसुलियातुलाहिं घणघडियउ  
पट्टिवंसखंभुण्णयमाणउ  
मेज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ  
सेयसुकमैत्थिक्कडुगंधउ  
वोक्कयंतकिमिउलमलोपट्टलु  
अम्भंतरि किर केण पलोइउ  
णिच्चमुत्तलाजलथिप्पिरु

दीहरणाउणिवंधणैवंतउ ।  
संधिहि संधिहि खीलयजडियउ ।  
जंघाजुयलु सैमोडियथूणउ । 5  
णवदुव्वार लोहियसंसित्तउ ।  
छिरंतुंदाहिजालसंरुद्धउ ।  
वियलियरसवसवीसंदु विट्ठलु ।  
बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।  
रोइ पूइ अद्दुउ संताविरु । 10

१ M भवतें; BP भमंतें.

12. १ MBP सारमेयबुद्धिगयं. २ P तह व. ३ MBP णिवंधणवत्तउं. ४ MB पंसिलिया°; P पंसुलिया°. ५ MBP खीलिहिं. ६ BP समोडिय°. ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार°. ९ B °संधिक्क°. १० P थिर°; K छिर° but corrects it to थिर°. ११ MBP °वीउजि and gloss in P बीभत्सं अपवित्रम्.

7 b पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलनं प्रवृत्तिर्यसिन्. 8 a °णेवच्छउ मण्डनम्. 10 a परमाणुयेत्यादि- परमाणुमात्रमपि संसारिणां सुखं न.

12. 1 a सारमेयबुद्धिगयं प्रजुरमेदसा वृद्धिगतम्; b सारमेयसिवजोगयं श्वानशिवादियोग्यम्. 2 a एसो जीवः; कम्मकले संसारे; b कलेवरं शरीरम्. 3 a °कुडुयल कुब्जतल°; b °णाउ ज्ञाणु°. 4 a पांसुलिया° पाशोस्त्रिवंघातः. 5 b समोडियथूणउ भग्नसम्भवत्. 7 b छिरंतुंदाहिजालं शिरा एव गण्ड-पदास्तेषां समूहेभूतम्. 8 b °वीसदु बीभत्समपवित्रम्. 10 b रोइ सरोगम्.

सैमपित्तमाख्यदोसायरु

भूयगामदेहिहि देहु जि घर ।

रमेणीरमणरायरहसुच्छवु

असुइ जि भक्खइ असुइसमुच्चवु ।

घत्ता—करिमयरहिं माणिइ गंगावाणिइ ण्हाणिउ ण्हाणिउ मुज्झइ ॥

मयकामे कोहे मायामोहे मइलिउ देहु ण सुज्झइ ॥ १२ ॥

## 13

खंडयं—दुविहतवस्मि सुलीणयं

जइ करेह अप्पाणयं ।

असुइमिणं मणुयत्तयं

ता हो होइ पवित्तयं ॥ १ ॥

पंचिदियसुहि मणु चोयंतहु

तहु आसवइ कम्म अतवंतहु ।

णाणावरणिउ पंचपयारउ

दावियपडपंगुरणवियारउ ।

णवविहदंसणु गुणविणिवारउ

तं गिज्जियणिसिद्धिपडिहारउ । 5

दुविहु जि वेयणीउ गयसयणु व

अमहु समहु असिधारालिहणु व ।

मोहणीउ मइरा इव मोहइ

अट्ठावीसभेउ जिणु ईहइ ।

चउविहु चउगइगामिहिं दुक्कइ

आउसु हडि व णिरंभि वि थक्कइ ।

दोचालीसणामु णामंकउ

चित्तवण्णपरिणामासंकउ ।

दोविहु मइलससुज्जललीलउ

गोतु कुलालभाणभावालउ । 10

अंतराउ चउपक्कविहायउ

लग्गइ कारिहिं वारियदायउ ।

पयडिट्ठिदिअणुमांगपएसहिं

वज्झइ चप्पिवि बंधेविसेसहिं ।

१२ M रमणीरमणु रायरहसुच्चवु; B रहुसुच्छवु; P रहुसुच्चवु but gloss उत्सवः.

13. १ MBP णाणावरणउ. २ T दंसिय°. ३ MBP भेय. ४ M ° अणुभाय°. ५ M बंधविसेसहिं.

11 b भूय गाम° पृथ्वीप्रमुखचतुर्विधभूतसमूह एव देहो विद्यते यस्य. 12 a °उच्छवु आनन्दः. 13 गंगा-  
वा णि इ गङ्गाजलैः.13. 2 a मणु य त्त यं मनुजत्वम्; b हो हे नराः. 4 b दा वि ये त्या दि-दर्शितः पटप्रावरण इव विकारो  
येन; यथैव पटेन प्रच्छादनेन सत्यात्मनोऽर्थोपरिज्ञानलक्षणे विकारो भवति तथा ज्ञानावरणे प्रच्छादने. 5 b गि जि ये-  
त्यादि- निर्जितनिषेधकरप्रतिहारसदृशम्. 6 a गयसयणु व रोगयुक्तस्य शयनीयमिव. 8 b आउसु आयुष्कर्म;  
ह डि व खोटक इव. 9 b चि ते त्या दि-चित्रवर्णपरिणतिवन्नानारूपतया शङ्क्यते. 10 a मइ ल स सु ज्ज ल ली ल उ  
मलिनं समुज्ज्वलं चेति द्विप्रकारम्; b कुलाल भा ण भा वाल उ कुलालस्य कुम्भकारस्य भाणानां भाजनानां भावोऽ-  
ल्पमहत्त्वादपरिणामः, तस्य आलउ आश्रयः. 11 a चउ एक वि हा य उ पञ्चभेदम्; b कारि हि कारकस्य;  
वारि य दा य उ निवारितदातव्यं दुष्टभाण्डागारिवत्. 12 b चप्पिवि हठात्.

यत्ता—गुणवन्तु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिबद्धउ ॥

जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्डुगामि संसिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खंडयं—एतंहु पावहु णिभरं

जे विरयंति ण संवरं ॥

ताणं दुक्खद्वयकडी

पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रज्जइ चित्तु ज्ञानवित्थारं

फासविल्लस धरणिस्थारं ।

रसुं पसुपिडग्गहणायारं

दिट्ठि ण वेप्पइ कहिं मि वियारं ।

सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ

कीरइ पयलियरइआमरिसउ । 5

णासारंघु गंधैअविहसिइ

मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।

दुरियहु सुयरिउ रक्खणु विज्जइ

रोसु खमाइ होंतुं णियमिज्जइ ।

अविणयगारउ माणु मउत्तं

मायाभाउ समुंज्जयचित्तं ।

लोहु सुपत्तदाणपविहाए

अहवा सव्वसंगपरिचाए ।

मयविम्ममु परगुणसंभरणं

जिण्णइ हरिसु होंतु सुथिरमणं । 10

देषु वि ओरवीरतवचरणं

राउ रंसियरामापरिहरणं ।

यत्ता—पिहियासवदारहु जुत्तायारहु अहिणउं कम्म ण पइसइ ॥

जं चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसं णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारण

एसो कीस ण कीरए ।

सासयसुहओ संवरो

होहं होमि दियंबरो ॥ १ ॥

६ MBP उड्डुगामि.

14. १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्धः, तहु पावहु तस्य पापस्य. २ P °दुवकडी. ३ MBP °विलासु. ४ MB रसवसु; P रस पसु°. ५ MBP गंधु अ°. ६ MBP एतु. ७ M समुज्जल°. ८ P मदविम्ममु. ९ B omits this foot. १० MBP रसिउ रामा°.

15. १ मणमेत्तए.

13 दुअंगणिबद्धउ तैजसकामर्णशरीरबद्धः. 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीरं गृहीतं तन्मात्रः.

14. 1 a एतंहु आगच्छतः, 2 a °द्वकडी असह्यशानिपातः; ३ तडी विद्युत्, 4 a रसु जिह्वा; पसुपिडग्गहणायारं पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण. 5 ८ पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम्. 6 a गंध-अविहसिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन; ७ °दुरीह दुष्टेच्छा. ८ a °दाणपविहाए अतिथिसंवि-संगेन. 10 a मय° मदः. 13 अपोसिउ अपुष्टम्.

15. 1 a मणमेत्ते मनोमात्रे. 2 a °सुहओ सुखदः.

पुणु परमेसरु सच्चउ सुच्चइ	काले अहव उवाएं पिच्चइ ।	
जिह धरणीरुहहलु तिह दुक्किउ	कामाकामियाणिज्जरतक्किउ ।	
तणयराहं सुसैहावें सोम्महं	बंधणदारणमारणगम्महं ।	5
दूसहदुक्खभावभयभरियहं	होइ अकामे णिज्जर तिरियहं ।	
विरइज्जइ वेरग्गपहोणहिं	कामे णिज्जर रिसिसंतान्हिं ।	
सिसिरायासणिवासायरणिं	रक्खमूलअत्तावणकरणहिं ।	
थियपलियंकधित्तमहिंदंडहिं	गोदुहआसणेहिं गयसोडहिं ।	
पक्खमासवैरिसंतुववासहिं	देज्जचित्तिसंखाविण्णासहिं ।	10

घत्ता—ढोइयणीसासहि मुणितणुमूसहि खरतवज्जले तत्तउ ॥

जीविउ हेमुज्जलु थक्कइ केवलु बहुकम्ममले चत्तउ ॥ १५ ॥

## 16

खेडयं—कुवहे जंतं रंभए	णाणंकुसिण णिसुंभए ।
वयपायवणिज्जूरणं	साहू णियमणवारणं ॥ १ ॥

एक्कगासदोगासाहारहिं	विविहावग्गहरसपरिहारहिं ।	
दीहमंसुलोमहिं मलधरणहिं	आयंबिलच्चदायणचरणहिं ।	
वोसट्ठंगमुक्करइरंगहिं	वज्जियघरपुरदेसपसंगहिं ।	5
सुण्णावासमसाणागारहिं	हयणेहहिं अणियत्तिविहारहिं ।	
दंसमसयल्लुहतण्हासोसहिं	खलकयकणकडुयआकोसहिं ।	
वायवहल्लुकंपियकायहिं	सीउण्हहिं परपहरणिहायहिं ।	

२ P पच्चइ, ३ MBP ससहावें, ४ BP सोमइ, ५ MBP °पहाणइ, ६ M सिरिसंताणइ; BP रिसिसंताणइ, ७ MBP °वरिसदुव°, ८ MB वेज°, ९ कम्ममले परि°.

16. १ MBP कुपहे, २ P एक्कगासदुगासा°, ३ M अणियट्ठि°.

3 b पिच्चइ पक्कं भवति. 4 b कामा का मि येत्यादि— कामो बुद्धिपूर्वको व्यापारस्तदभावोऽकामस्तौ विद्येते यस्याः सा तथाविधा निर्जरा तर्किता कलिता येन तादृशम्. 7 b रिसिसंताणहिं मुनिप्रवाहैः. 10 b देजे तित्थेयाहारस्य वृत्तिः संख्या तस्या विन्यासा विरचनास्ताभिः. 11 मुणितणुमूसहिं मुनिशरीरमेव मूषा तस्याम्. 12 जीविउ इत्यादि— जीवस्वरूपं तदेव हेम सुवर्णं उज्ज्वलं निर्मलम्; सुवर्णं हि किट्ठकालिकालक्षणमलरहितत्वादुज्ज्वलम्; जीवस्वरूपं तु द्रव्यभावकर्मलक्षणमलरहितत्वादिति.

16. 1 b णिसुंभए वर्यं करोति. 2 a °णिज्जूरणं °निर्मलनम्. 5 a वो सट्ठंग° विसृष्टाङ्ग° कायोत्सर्गः. 6 b अणियत्तिविहारहिं अनियतविहारैः. 8 b परपहरणिहायहिं परप्रहारनिघातैः.

केसालुंचणणिञ्जेलत्तहिं  
विसमपरीसहसहण्मासहिं  
जम्मणमरणणिबंघुद्धाहउ

कंचणतणंसुहिरिउसमचित्तहिं ।  
रोयातंकहिं कासहिं सासहिं । 10  
एम खविज्जइ कम्म पुराहउ ।

घत्ता—जिह हर्यणिज्जरणे वड्डे वरणे रविकरेहिं सरु सोसइ ॥

तिह गियमियकरणे रिसितवचरणे भवकिउ कम्म पणासइ ॥ १६ ॥

17

खंडयं—इय काऊण णिज्जरं  
णारोयं अजरामरं

जे हणंति भवपंजरं ।  
ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ  
खेमखमायलंतुग्गयदेहउ  
सच्चसउच्चमूलु संजमदलु  
चउविहचायपसारियपरिमलु  
दियसंदोहसइकयकलयलु  
दीणाणाहदीहसमाणिग्गहु  
वंभचेरछायाइ सुहासिउ  
एहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ  
झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ  
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ

सो धम्मंघिउ एहउ गिज्जइ ।  
महवपल्लउ अज्जवसाहउ ।  
दुविहमहातवणवकुसुमाउलु । 5  
पीणियभव्वलेयछप्पयउलु ।  
सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।  
सुद्धु सोम्वुं तणुमेत्तपरिग्गहु ।  
रायहंसणियरोहिं समासिउ ।  
जीवदयावईइ रक्खिज्जइ । 10  
मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।  
एम पर्यत्ते वड्डारिज्जइ ।

४ MBP° तिण°. ५ MB णिबंघे आइउ; P °णिबंघइ आइउ. ६ K हर° and gloss इत°.

17. १ BPK परं, २ M खमखमायलंतुग्गयदेहउ; B खमखमायलु तुंगयदेहउ; P खमखमायलु-  
तुंगयदेहउ. ३ MBP सुणवरण°. ४ MBP सोमु. ५ MP झाणठाणु; B झाणट्ठाणु. ६ B पवते. ७ M  
पट्टारिज्जइ; B वड्डारिज्जइ.

11 a णि बंघुद्धाहउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धाहउ प्रवृत्तम्. 12 हयणिज्जरणे हृतनिक्षेपणेन: वरणे  
पालिवन्धनेन.

17. 1 b भवपंजरं संसार एव बन्दिगृहं संसारसंघातश्च. 3 b धम्मं घिउ धर्मवृक्षः; गिज्जइ प्रति-  
पाद्यते. 4 a खमखमायलंतुग्गयदेहउ क्षमैव क्षमातलं पृथ्वीतलं तदन्तान्मध्यादुद्रतः प्रादुर्भूतो देहो यस्य.  
6 a चउविहचाय° अणुवर्तं महावर्तं श्रुतदानमभयदानं च. 7 a दियसंदोह° मुनिसमूहः पक्षिसंघातश्च. 8 a  
°दीहसमं दीर्घश्रमः. 9 a सुहासिउ सुहृ शोभितः. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्; b मिच्छामयहुं  
मिथ्यात्वसृगाणांम्.

घत्ता—कोवाणलुक्कउ होइ गुरुक्कउ जाइं रिसिदहिं सिद्धइं ॥

जगि ताइं सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइं सुमिद्धइं ॥ १७ ॥

## 18

खंडयं—जहिं होहिम्मि भवे भवे  
दुक्खलक्खणिण्णासणे

तहिं देहम्मि णवे णवे ।  
होउं भत्ति जिणासासणे ॥ १ ॥

अवरु गिरंतरु उज्झियगव्वे  
चित्तु धुत्तसिद्धंतपरंमुहुं  
पंचिदियपडिभडवलु भज्जउ  
विसयकसायरायपरिचत्तउ  
आसापासणिबंधणु तुट्टउ  
संजयसाहुंसंगसोहियमलि  
रयमूढह संबोहणगारा  
दीणि करुण उपेक्ख दयंतइ  
वयजोग्गउ सरीरु संपज्जउ  
धणु परियणु पुरु घरु मा दुक्कउ  
ण रमउ णारिखुव हियउल्लउ  
ओसारियदहपंचपमाणं  
दंसणणाणन्नरित्तपयासैं

इयं मग्गेवउ मणुपं भव्वे ।  
भवि भवि होउ जिणागमि संमुहुं ।  
भवि भवि विमलवुद्धि उप्पज्जउ । ५  
भवि भवि होउ तिगुत्तिपउत्तउ ।  
भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।  
भवि भवि होउं जम्मु सावयकुलि ।  
भवि भवि रिसि गुरु होंतु भडारा ।  
भवि भवि रइ वड्डउ गुणवंतइ । 10  
भवि भवि तवसिहितावें झिज्जउ ।  
भवि भवि उरि उवसमसिरि थक्कउ ।  
भवि भवि हव्वंउ गिरहु णीसल्लउ ।  
भवि भवि दियह जंतु सज्झाणं ।  
भवि भवि मरुणु होउ संणासैं । 15

घत्ता—लद्धाइ समाहिइ भवि भवि बोहिइ जीवउ जीउ विरत्तउ ॥

संसारुत्तरणइं जिणवरचरणइं भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP होहिम्मि. २ B होइ. ३ P इउ. ४ MBP °पयत्तउ. ५ B °साहुसंगि. ६ MBP जम्मु होउ. ७ MBP रइमूढहु; T रयमूढहो. ८ MBP उप्पज्जउ. ९ M थक्किउ. १० MBP होउ. ११ MK मरण.

18. 8 a संजयेत्यादि—संयताश्च ते साधवश्च तैः संगः संसर्गस्तेन शोषितः स्फोटितो मलः पापं यस्मिन्. 9 a रयमूढह ज्ञानावरणादिरजःप्रच्छादितत्वेन विवेकशून्यस्य. 10 a दयंतइ दयाशून्ये. 11 b तवसिहितावे तप एवाभिलस्य तापेन. 13 b गिरहु निष्ठापं निर्वाणं वा. 16 समाहिइ रत्नत्रयैकाग्रतायाम्; बोहिइ रत्नत्रयप्राप्ती.



## 19

खंडयं—इय जो चितइ गियमणे  
मोत्तणं भवसंपयं

अणुवेक्खाओ थिउ वणे ।  
सो पावइ परंमं पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउं सिद्ध भडारा  
अक्खसोक्खपक्खे णिरु णिच्छिहं  
इयं चिंतंति वहंति समत्तणु  
सकं जिनमइ जाणिय जावहिं  
वभसग्गलोयंतकयालय  
पुव्वजम्मकयधम्मपहावण  
घल्लियकुसुमंजलिकेसररय-  
ते भणंति भावें मउलियकर  
पइ ण मुणिउं जं तं किर केहुउ  
सुसिर अणंतु तिलोयणिवासउ  
जीउ कम्म पोग्गलंविस्थिणउ  
तुहं सैंसु सैंसमाहिविसुद्धउ  
इंदियणासंजमु छंडिवि

दढंकिम्मिरकम्मविणिचारा ।  
भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।  
पउणंती रइभूमिणियत्तणु । 5  
लोयंतिय संपाइय तावहिं ।  
देहकंतिदीवियदिप्पीलय ।  
अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।  
रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।  
जय देवाहिदेव परमेसर । 10  
किं गिरि किं परमाणुउ जेहुउ ।  
किं आयासु अलक्खपपसउ ।  
भणु तुह णाणें काइ ण भिण्णउ ।  
चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।  
अप्पउ सीलगुणोहें मंडिवि । 15

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्छु सुसच्चउ अक्खहि ॥

पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19. १ B परमपयं. २ P दिठ°. ३ MBP °पक्खइ. ४ M णिप्पइ. ५ MBPT चिंतंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयति सति. ६ B संपावियभावहिं; P संपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिप्पालय and gloss in MP दीप्तविमानाः, but T दिप्पालय दशदिक्पालाः. ८ P °केसरिरय°. ९ MBP परिमाणुउ. १० BP पोग्गलु. ११ MBP सयंमु. १२ MBP सुसमाहि°.

19. 3 b °किं म्मीर° विचिंतम्. 4 a अक्खसोक्खपक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे; णिच्छिह नि-  
सृष्टाः; b °सिप्पीरभार° पलासंधातः. 5 a चिंतंति चिन्तयति सति; b पउणंती प्रकुर्वती; रइभूमिणि-  
यत्तणु रतेर्भूमेश्च निवर्तनम्. 9 a b केसररये त्यादि-केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तैः  
कृत्वा शबलितानि प्रमुपदानि यैलोकान्तिकेदेवैः. 12 a सुसिर अलोकाकाशम्; b आयासु लोकाकाशम्.

## 20

खंडयं—तुह वयणंसुपसाहिण जगकमले संबोहिण ।  
कुसमयखलखजोयया होंति देव हयतेयया ॥ १ ॥

मोहजलणजालावलि गिरसाहि	धम्मामयअंबुहर पवरिसहि ।	
पाववज्जलेवंतणिहित्तइं	जरकसरा इव कैहवि खुत्तइं ।	
उत्तरहि परमप्पय भूयइं	रंगणडा इव गाणारूवइं ।	5
एम भणेप्पिणु गय लोयंतिय	देवें परहियवुद्धि विंचितिय ।	
तहिं अवसरि बुहयणिहिं समत्थिउ	भरहु महीसरेण अचमत्थिउ ।	
पुत्त पुत्त लइ पालहि वसुमइ	मइं पुणु साहेवी पंचम गइ ।	
तं णिसुणेवि कुमारें वुत्तउं	देव देव किं भणहि अजुत्तउं ।	
जं तुहं भुत्तुज्झियआहारें	तं ण सोक्खु भोयणवित्थारें ।	10
जं तुह णियडासणइ णिविट्ठु	तं ण सोक्खु हरिवीढि बइट्ठु ।	
जं महु तुह अगगइ धावंतहु	तं ण सोक्खु गयखंधहिं जंतहु ।	
जं पायडियउ तुह पर्यंछाहिइ	तं ण सोक्खु महु छत्तहु छांहिइ ।	
मंतिमहासेणावइपुज्जें	पइं रहिण ताय किं रज्जें ।	

घत्ता—जंपियउ जिणें णाउ विसें जइ पडुपयहि ण जुज्जइ । 15  
तो लोउ रउइं जुज्जवि मइं मच्छें मच्छु व खज्जइ ॥ २० ॥

## 21

खंडयं—कुरु कुरु धरणीपालणं णायाणायणिहालणं ।  
धरि धरि महिवइसासणं एयं चिय मह पेसणं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि गिरुत्तर जायउ थिउ तणुरुहु संभूयविसायउ ।

20. १ MBP धम्ममहामयजलहर वरिसहि. २ MBP °वज्जलेवत्त°. ३ MBP कइमि; ४ MBP भाणेउं. ५ B तुहं भुत्तु उज्झिय° ६ P पयछारें. ७ P छारें. ८ K जुजइ.

20. 1 a वयणंसु° वचनकिरणैः. 2 a कुसमयखलखजोयया मिथ्यामतदुर्जनखद्योतकाः. 4 a पाववज्जलेव° पापमेव वज्रलेपः; b जरकसरा जीर्णवलीवदीः; कइवि कईमे. 11 b हरि वीढि सिंहासने. 15 णाउ ज्ञात्वा. 16 मइं दृष्टाव.

21. 3 b संभूयविसायउ उत्पन्नविवादः.

सोणंदेयहु दिण्णु सुहंकरु  
अण्णेकहुं अण्णण्णइं दिण्णइं  
एत्थंतरी संपेसिय राणा  
छक्खंडावाणिपसरियतेयहु  
णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं  
धवलहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं  
कौमिणिमित्तगतरोमंचहिं  
ससहरमणिमपहिं गिक्कलुसिहिं  
जय रायाहिराय पभणंतहिं  
हासससंककाससंकासइं  
कण्णहि कुंडलाइं आइद्धइं  
करि कंकणु गलि हारु विलंबिउ  
कडियलि रयणकिरणविंफुरियइ  
वंमसुत्तु उरि चारु चडाविउ  
हरिकरिसारिविरूवणिबद्धइं  
परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं  
मय मायंग तुरंग सलक्खण

पोयणपुरु पविहिण्णवसुंधर ।  
मंडलाइं दोइयवणधण्णइं । 5  
देवें जे एक्केक पहाणा ।  
लग्गा रायमहाअहिसेयहु ।  
वज्जंतहिं चामीयरतूरहिं ।  
खुज्जयवावणेहिं णच्चंतिहिं ।  
होमदाणपारंभपवंचहिं । 10  
सयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं ।  
अहिंसिचियउ भरहु सामंतहिं ।  
परिहाविउ सुइसुब्भइं वासइं ।  
चंदाइच्चहं तेयसमिद्धइं ।  
सिरि सेहरु महुयरमुहचुंविउ । 15  
बद्धउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ ।  
तिलपं तइयउ णयणु व दाविउ ।  
उब्भियाइं विमलइं कुलचिंधइं ।  
णं जिणकित्तिमिसिणिसयवत्तइं ।  
पुज्जिय गह काणीण वियक्खण । 20

घत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिबोसहिं ॥

सिरिभरहकुमारहु महिभत्तारहु बद्धउ पट्टु णरेसहिं ॥ २१ ॥

## 22

खंडयं—सीहासणसिहरासिओ

सोहइ भुअणपसंसिओ ।

गिरिकडण धुयकेसरो

केसरि व्व भरहेसरो ॥ १ ॥

21. १ MBP °वावणेहि. २ BMK कामिणिसित्त°. ३ MBP पहिराविउ. ४ MBP °विच्छुरियइ.  
५ B पट्टु°.

4 a सोणंदेयहु सुनन्दापुत्रस बाहुबलेः 5 b मंडलाइं देशाः. 8 a कोणं वादनकाष्ठम्. 10 a °मि त  
मित्त°; b °पवंचहिं विस्तारैः. 11 a गिक्कलुसिहिं निर्मलैः. 16 b मिसिणि सयवत्तहिं कमलिनीकमलैः.  
21 आयहिं एतैः; पइअणुरायहिं पत्ननुरागैः.

22. 2 b केसरि व्व सिंह इव.

दसदिसिर्वहसंप्राइयसुरवर	तहिं अवसरि दीसइ विउलंवर ।	
बहुविमाणभरें णं णवियउ	धैयवडेहिं णावइ पल्लवियउ ।	
आयवत्तुं फुल्लहिं णं फुल्लिउ	तरुणीयणहलेहिं ओणल्लिउ ।	5
थियन्नसहसचासवाहणगणु	णावइ जिणवरपुणमहावणु ।	
णं तुरयहिं धावंतहिं धावइ	संदणेहिं रविभरियउ णावइ ।	
कुंजरेहिं णं मेहहिं लइयउ	असिवरेहिं णं विज्जुवलइयउ ।	
हरियारुणरुइल्लु णं सुरधणु	णं अवलंवर णवपीउसगणु ।	
विहुणिकखवणपयासणयालइ	एम परायउ सुरयणु लीलइ ।	10
गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजियंसहु	रिसहणाहु णिण्णाहु महापहु ।	

ग्रन्ता—कमलासणु केसु ससहर वासवु सिद्धु बुद्ध हरु दिणयर ॥

आमीयरघडियइ रयणहि जडियइ पट्टि णिसणणउ जिणवर ॥ २२ ॥

## 23

खंडयं—केण वि गहिरं वाइयं	केण वि महरं गाइयं ।	
केण वि सरसं णच्चियं	पहुपयजुयलं अंचियं ॥ १ ॥	
अमरविलासिणिकरसंगहियहिं	णहविउ देहुं थियदुद्धहिं दहियहिं ।	
इंदजलणजमणेरियवरुणहिं	पवणकुवेरतिसैलुद्धरणहिं ।	
णलिणबंधुणाइंदहिं चंदहिं	रंदाणंदहेरेहिं णरिंदहिं ।	5

22. १ B °दिसिवह°. २ MBP संपाइय. ३ M धयवडेण. ४ MBP आयवत्त. ५ M तरुणीयणहरेहिं ओहुल्लिउ; B थणहरेहिं ओहुल्लिउ; P थणहलेहिं सुफल्लिउ; but T ओणल्लिउ. ६ B भावइ. ७ P °पावस घणु. ८ M रंजियसुहु. ९ MBP केसउ.

23. १ MBP देउ; K देहु but corrects it to देउ. २ M धय°. ३ T तिसूलधरणु. ४ M °भरेहिं.

3 a °दिसिवह° दिक्षु मार्गाः; b विउलंवरु विस्तीर्णमम्बरम्. 9 a °रुइल्लु दीसियुक्तम्. 11 रंजियसहु रजितसभः; b णिण्णाहु निर्नीधः, अयमेव सर्वेषां नाथ इत्यर्थः. 12 कमलासणु कमलाया लक्ष्म्या निवासस्थानत्वात्; केसु हितोपायदर्शकत्वेन जगतो रक्षाहेतुत्वात्; ससहर संसारदुःखस्फोटकत्वाज्जगत्कुवलयप्रबोधकत्वाच्च; वासवु परमर्द्धिसंपत्तिस्वाच्चतुर्निकायदेवस्वामित्वाच्च; सिद्धु कृतकृत्यत्वात्; बुद्ध हेतोपादियविवेकसम्यक्त्वाच्च; हरु कर्मणां तत्प्रभवसंसारस्य प्रलयविधायकत्वात्; दिणयरु भव्यपद्मप्रबोधकत्वादन्यतमोविश्वसकत्वाच्च.

23. 4 b तिसूलुद्धरणु ईशानः. 5 a णलिणबंधु आदित्यः; b रंदाणंद° महानानन्दः.

वयणुमीरियथोत्तवमालहिं  
कंचणकुम्भसहासहिं सिस्तउ  
सण्डं तद्वयणसामिहि जोग्गउ  
दोइउ गिवसणु पुणु पंगुरणउं  
भूसणाइं विण्णाइं ण मण्णइ  
संतहु किं रच्चंति रसोल्लइं  
होउ पदुच्चइ संभावइ जिणु

णिग्गयखीरवारिधारासहिं ।  
दससयडुलक्खणसंभुत्तउ ।  
किं वणिज्जइ अंगि वै लग्गउ ।  
तणुतावइ णं णाणावरणउं ।  
मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ । 10  
वग्गमहपहरणाइं फुड फुल्लइं ।  
मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

यत्ता—पञ्जलियपईवहुं ससिरविभावहुं धूर्यंगारयधूमउ ॥

णिग्गंतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेवउ ॥ २३ ॥

24

खंडयं—दहिदूवकुंरचंदणं

वंदिवि मयणवियारओ

सियसिद्धत्थयचंदणं ।

सिवियारुडु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवंदहिं  
तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिं  
उट्टियदेवमहाकुलकलयलि  
चल्लिउ अणुमग्गे सियसेविइ  
आरणालणवदललियंगउ  
दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ  
पियविच्छेयसोयखिज्जंतउ  
वरकंचीकलावगुण्णंतउ  
तुरिउ चलंतु खलंतु विसंहुलु  
वणथणजुयलणिवेसियकरयलु

पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।  
वरविज्जाहरेहिं विहसंतहिं ।  
पुणु वंदारपहिं णिय णहयलि । 5  
णाहिणराहिउ सहुं मरुपविइ ।  
जसवइणंदउ पच्छइ लग्गउ ।  
णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।  
णयणंजणमलमइल्लिज्जंतउ ।  
तणुपासेयविदुथिण्णंतउ । 10  
णीससंतु चलमोक्कलकौंतलु ।  
णिवडमाणअणिहालियमेहलु ।

५ MBP दहं, ६ P विलग्गउ, ७ MBP किं, ८ M °विलेविउ.

24. M दूवकुंरचंदणं; BPK दूवकुंरचंदणं. २ M वसंतु व संवुलु; B खलंतु व संहुलु. ३ M णिवड-  
माणु; P णिविडमाणु.

6 a °वमाल° कोलाहलः, 13 स सिरविभावहुं शशिरवीणां भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्.

24. 1 a °चंदणं रक्तचन्दनम्, 7 a आरणालं कमलम्, 9 a विच्छेय° विद्योगः, 11 a  
विसंहुलु शिथिलम्.

पयचालणझंकारियणेउर  
एक्कवार णिउ णिम्भरभावहिं  
पुणु तेण जि कमेण आवेसइ

धाइउ गिरवसेसु अंतउर ।  
मंदरि ण्हाणिवि आणिउ देवहिं ।  
णँरवइ एत्थु जि पुरि णिवसेसइ । 15

घत्ता—पउरयणें वुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं दुक्ख आवइ ॥  
जँडमइलकुचेली धरणिमहेली णाहें विणु किह जीवइ ॥ २४ ॥

## 25

खंडयं—भरहबाहुबलिसंणिहं  
चलियं चोइयहयगयं

गलियंसुयधारामुहं ।  
एक्कूणं णंदणसयं ॥ १ ॥

पराइओ जिणेसरो घणंवणालयं  
विसौलवेल्लिजालरुद्धमाणुभावहं  
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं  
लयाहरत्थकिणीसुरत्तमाणवं  
परुडवालकंदकंदलेहिं कोमलं  
दिसुच्छलंतदंतिदाणवारिवासयं  
मह्वहिं थिपिरं पसौमियावणीरयं  
महीरुहग्गसंणिसण्णमोरसारसं  
वहंतमंदगंधवाहकंपमाणयं

सुपोमसंपयाजँसोघणं वणालयं ।  
महामुणिंदजोगायं सपावभावहं ।  
पियाविजियाण कामुयाण वाणरं । 5  
असोयचंपयाइरम्मरुक्खमाणवं ।  
पँसूणरेणुपिगपँञ्जरंतकोमलं ।  
रमंतणायरायदाणवारिवासयं ।  
समाणियामरिंदचंदभाविणीरयं ।  
एवहिं इच्छिएहिं लोयदिण्णसारसं । 10  
जलम्मि पोमिणीण जत्थ कं पमाणयं ।

४ MP णरवइ इत्थ णयरि; B णरवइत्थ णयरे. ५ MP जड°; B जर°.

25. १ P °पसोहणं. २ P विलासवेळि°. ३ MB पसूय°. ४ MB °पम्भरंत°. ५ P पसम्मिया°.

14 a णिउ नीतः.

25. ३ a घ णं व णा ल यं घना निरन्तरा आम्हा नालकाश्च वृक्षविशेषा यत्र; b सु पो मे त्या दि—शोभन-  
पद्यानां संपया संपत्तिस्तया यशः ख्यातिस्तया धनम्; अथवा, सु पो म संपया य सो ह णं सुपत्रलक्ष्मीवृक्षैः शोभनम्;  
व णा ल यं वनं जलमासमत्ता लताश्च यत्र. 4 a °माणु भा व हं आदित्यप्रभापथम्; b स पा व भा व हं स्वपापभाव-  
घातकम्. 5 b वा ण रं बाणवेधम्. 6 b °रुक्ख मा ण वं °वृक्षाणां मा लक्ष्मीस्तया नवं प्रत्यग्रम्. 7 b पसू णे-  
त्या दि—प्रसूत्रेणुना पुष्पमकरन्देन पिङ्गं पीतवर्णं प्रञ्जरत् कोमलं पानीयं यत्र. 8 a दा ण वा रि वा स यं मदजलेन  
सुगन्धिः; b °दा ण वा रि वा स यं दानवानामरीणां च वसतिर्यत्र. 9 a °अ व णी र यं भूमिघुलिः; b स मा णि यं  
कृतम्; °भा वि णी र यं स्त्रीरतम्. 10 b °सा र सं लक्ष्मीरसम्, अथवा सारं स्वं द्रव्यम्. 11 a °गं ध वा ह कं प-  
मा ण यं वायुना कम्पमानम्; b ज ल म्मी त्या दि—यत्र वनालये जलमध्ये पद्मिनीनां कं ( किं ) प्रमाणम्, नास्ति  
प्रमाणमित्यर्थः, अथवा, कं जले प मा ण यं परिमितमित्यर्थः.

अलीहिं चंचलेहिं छण्णकंजकेसरे  
पलोइऊण तं सरीतुसारसीयलं

तरंति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे ।  
णहंगणावइण्णओ रिंसी वसी यलं ।

यत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिविण्णउ णरजोणिहे ॥  
ससिर्विवसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥ 15

## 26

खंडयं—विविहच्चणविहिकारिणा  
अइरावयकरिगामिणा

विष्कुरंतपविधारिणा ।  
पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेण्णिणु  
जाइं ताइं ससहावें कुडिलइं  
आलुंवेविणु यित्तइं केसइं  
चिद्धुर लुक्कं जे हयतमपडलें  
जणवयसंदरिसियझसमुद्ध  
परिसेसियउ मउडु रइरंगउ  
मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइं  
कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें  
मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं लुरियइ  
अंबराइं मुक्काइं अमोल्लइं  
संसारसारत्तु मुणेण्णिणु  
किमलंकारें देहहु भारें  
मोहजाळु जिह मेळिवि अंबर

मुट्ठिउ पंच झडत्ति भरेविणु ।  
धुत्तविलासिणिकुलइं व कुडिलइं ।  
पम मुणंति धम्म जगि के सइं । 5  
लेवि पुरंदरेण मणिपडलें ।  
यित्त तुरंतें खीरसमुद्ध ।  
णं वम्महासिहरेहि सिहैरंगउ ।  
रविससिर्विवइं णं णिव्वडियइं ।  
सहुं णिज्जिय भियेकुं णीहारें । 10  
विज्जुलैया इव णहविष्कुरियइ ।  
जाइं सरीरहु सुद्धु सुहिल्लइं ।  
पंचमहव्वय चित्ति धरेण्णिणु ।  
अण्णउ भूसिउ वयपण्मारें ।  
झत्ति महामुणि हुवउ दियंबर । 15

26. १ MBP मुक्क. २ MB सिहरंगउ. ३ BP णिव्विडियइं. ४ MB भियेक. ५ BP विज्जुलया. ६ MB अइविष्कुरियइ. ७ M सुद्ध.

12 a छण्ण कंज के सरे प्रच्छादितपद्मकेसरे; b तरंती त्यादि—यत्र वनालये सुरासुराः के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव; सरे सरोवरे. 13 सरीतु सारसीयलं नदीजलविश्रुषा शीतलम्; b रिंसी ऋषिः; वसी जितेन्द्रियः; यलं च+अलं अत्यर्थम्. 14 णिविण्णउ विरक्तः 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्.

26. 1 b पविधारिणा इन्द्रेण. 5 b केसइं के स्वयम्. 6 a लुक्क लुभाः. 7 a जणवयेसादि—लोकानामसंदर्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्; अथवा झसकुमत्स्यमुद्रकं उदकं यत्.

उत्तरसाढरिक्खि णवमिइ दिणि  
दुविहु वि मणि पडिवण्णउ संजमु  
परियंचिवि सामिउ गियमत्थउ  
रायहं णेहालोइयवइयइं  
अजयमल्लु महुणयर पराइउ  
गय गियगेहहु णयणाणंदण  
पियविरहाणलेण अइत्तउ  
जो वण्णहुं सक्किउ णाहीसैं

महुमासहं पक्खाम्म सियंचंदिणि ।  
गउ गियवासहु हरि डुयवहु जमु ।  
अवर वि जणु णामियणियमत्थउ ।  
खणि चालीससयइं पांवइयइं । 20  
णियपुरवर बाहुबलि पराइउ ।  
अवर वसहसेणाइय णंदण ।  
णारीयणु असेसु परियत्तउ ।  
समउं तेण ताणं णाहीसैं ।

घत्ता—रणवडहहु केरउ जगभयगारउ देतु दिसहिं भरहे सर ॥

थिउ गंमि अउज्झहि वंइरिदुसज्झहि पुष्पयंतु भरहेसर ॥ २६ ॥ 25

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय  
महाभक्कभरहाणुमण्णिण महाकव्वे जिणणिक्खवणकल्लाणं णाम  
सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥

॥ संधि ॥ ७ ॥

८ MBP णवमइ. ९ MBP अचंदिणि and gloss in P कृष्णे. १० MBP पव्वइयइं. ११ MBK अइवत्तउ. १२ M वहरिदुगेज्झहि.

16 b सियंचंदिणि श्वेततारके, कृष्णपक्षे इत्यर्थः. 18 a परियंचिवि प्रदक्षिणीकृत्य. 19 a णेहालोइय. वइयइं जेहालोकितपतिकानि; b पा वइयइं प्रव्रजितानि. 22 a अइत्तउ अतीव ततः. 23 a ण अहीसैं सर्पराजेन वर्णयितुशक्य इत्यर्थः; b णाहीसैं नाभिराजेन. 24 भरहे भरतक्षेत्रे; सर श्रेष्ठम्.



## VIII

सीर्हासणु णरवइसासणु महियलु तँणु अवियप्पिवि ॥

गुणवतहे तवसरिकत्तेहे थिय अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ भुवकं ॥

### I

आवली—धरिऊणं इसी सुणिग्गंथवेसयं

दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।

तिस्सो रइकएण परिसेसियंगओ

5

एयत्तं भरेण ज्ञाणालयं गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइं चरियइं संभरेवि

जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।

मणमारहु मारहु करिवि छेउ

अइसच्चहु तच्चहु मुणिवि भेउ ।

तणुभरणइं करणइं णिज्जिणेवि

मयसिमिरइं तिमिरइं णिद्धणेवि ।

घरवासहु पासहु णीसरेवि

विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि । 10

सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि

णियजणणि व वहिणि व गणिवि णारि ।

संकुज्झिवि बुज्झिवि सइं जि सिक्ख

सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः

एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्रान्यः परार्थोद्यतः ।

एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां

द्वयेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जनाः for विदाम् and भूषणी for भूषणम्. At the commencement of this Samdhi they read the following:—

मातर्वसुंधरि कुतुहलिनो ममैत-

दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य साव्यम् (शाव्यम् ?) ।

त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानो

किं वासि नास्ति सदृशो भरतार्थदुल्यः ॥

1. १ MBP सिंहासणु, २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तणमिव गणयित्वा, ३ P गुण-  
वतहो, ४ P °कतहो, ५ M तस्सा, ६ MBP एयत्तं and gloss in P एकान्तम्, ७ MB जयणी.

1. 1 तणु अ विय प्पिवि शरीरमाविगणय्य, 5 तिस्सा रइकएण तस्यास्तपःकान्तायाः संभोगार्थम्;  
परिसेसियंगओ त्यक्तकायः, 6 एयत्तं एकत्वम्; 7 b जगसामिणि लक्ष्मीः; गोमिणि पृथ्वी, 9 b मय-  
सिमिरइं मदस्य सैन्यानि, 11 a खेरि वैरम्, 12 a संकुज्झिवि शङ्खमुज्झित्वा; b जइणी जैनी,

छम्मासमेरु मुणि मेरुधीरु  
कमजुयलि पावमलि विहत्थिमेसु  
ओट्टुडणितुडसंपुडियवयणु  
भूमंगावंगपसंगरहिउ  
णिदुंदु नृयंदु विमुक्तंदु

अणसणु अवसणु गेण्हिवि गहीरु ।  
गेरंतरु अंतरु करिवि जुसु ।  
आसासियणासियणिसियणयणु । 15  
खयरिंदफणिंदणरिंदमहिउ ।  
लंवियभुउ सुरथुउ जिणवरिंदु ।

घत्ता—वरतणुसिरि णं कंचणगिरि जगगुरु दुक्कियमंथउ ॥

थिउ सग्गहु अवि यपवग्गहु णं आरोहणपंथउ ॥ १ ॥

## 2

आवली—विसयवसा तिसाहुहातावसोसिया  
भीसणवग्गसिधसरहेहिं तासिया ।  
जे समयं वयस्मि लग्गा महारहा  
ते भग्गा दिणेहिंसहियपरीसहा ॥ १ ॥

अणम्मत्थसत्था महामंदमेहा  
ण ण्हणं ण फुल्लं ण भूसा ण वासं  
ण सीउण्हवाएण जित्तो महंतो  
ण जंपेइ णालोयए कं पि भिच्चं  
ण याणेमि किं चिंतए चित्तमज्जे  
ण दुक्खंति पाया फुडं वज्जकाओ

पयंपंति एवं सँमोरुद्धदेहा । 5  
पह्ण पाणियं लेइ णाहारगासं ।  
ण णिहाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।  
णिउब्भो थिरं संठिओ एम णिच्चं ।  
मइ कम्मि संजोयए संदुसँज्जे ।  
ण ओमिर्जए केम रायाहिराओ । 10

८ MBP ओट्टुडणिविड°, ९ MB °संपुरिय°, १० MBP णियंदु.

2. १ MBP दिणेहिं असाहिय°. २ GK have before this line भुजंगप्पयावो णाम छंदो; MB have भुजंगप्पयावो णाम छंदो; P भुजंगप्पयाणाम छंदो. ३ MBPT समं रुद्धदेहा. ४ MBP कं पि भिच्चं. ५ T संदुगेज्जे, ६. MB उव्विजए; P उव्विजई.

13 a छ म्मासमेरु षम्मासमयादिम्; b अवसणु अव्यसनं दुःसंक्लिष्टमित्यर्थः. 14 a विहत्थिमेसु वितस्ति-  
मात्रम्. 15 a ओट्टुड णितुड° निष्पुटं निदिच्छद्रसंलग्नमोष्ठपुटं कृत्वा संकोचितवदनः; b आसेति-आस्या-  
श्रितनासिकान्यस्थनयनः. 16 a अवंग° अपाङ्ग. 17 a नृयंदु नृचन्द्रः; विमुक्तंदु आलस्यरहितः.

2. 1 विसयवसा विषयवशात्. 3 समयं सह; महारहा महारथाः उत्तमसत्त्वाः. 5 a अणम्मत्थ-  
सत्था अनन्मत्तशास्त्राः; b समोरुद्धदेहा श्रमेण अवरुद्धदेहाः व्यासशरीराः. 6 a वासं वज्रम्. 7 b संतो  
श्रान्तः. 8 b णिउब्भो नियमेनोर्ध्वः. 10 b ओमिजए उन्मुज्यते.

अहो हो किमेयस्स एएण होही  
पुणो पट्ठणं किं व जाही ण जाही  
ण कंताकुडुंवेण मोहं विणीओ  
जडाजलधारी सपारोहसोहो  
मणूमण्णणिजो गियारी णिसुंभो  
इमस्सेरिसो धीरिधीरावहारो

वणंते कहं वा णिसाहाइं णेही ।  
मणोहारि रज्जं पि काही ण काही ।  
ण सहूलपंचाणणणं पि भीओ ।  
युलंतंगसण्णो वडो णं कुरोहो ।  
इमो देवदेवो परो आइवंभो । 15  
परं दुव्वहो चारुचारित्तभारो ।

यत्ता—जं धवलें अइअतुलवलें दुग्गु खुंरोहिं णिमिण्णउं ॥

तैहिं कसरहिं विहुणियसंसिरहिं पक्क वि पउ भँउ दिण्णउं ॥ २ ॥

## 3

आवली—उन्मियधवलचिंधमहिमावसारओ

करिवरजूहणाहपह्माणभारओ ।

परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ

पियसहि रासहाण कहं होइ णेयओ ॥ १ ॥

गयगंडकंडुकंडुयणवाह

को वि सहइ फणिमुहचुंबियाइं

को वि सहइ दूसह दंस मसय

को वि सहइ णग्गत्तणु गिरासु

पाउसजलधाराविप्पियाइं

को वि सहइ सिसिरि पडंतु सिसिरु

को वि सहइ किडिदाढावलेह । 5

ताणं चिय कंठोलंबियाइं ।

पोसियकसाय दुव्वार विसय ।

णिचं णिरसणु गिरिदुग्गवासु ।

को वि सहइ विज्जुइडप्पियाइं ।

उण्हालइ दिणयरकिरणपसर । 10

७. B णीही. ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणां धैर्यापहारकः; P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहारः. ९ MB जं. १० MB खुरहिं णिमिण्णउं. ११ P जरकसरहिं. १२ M सुसिरहिं. १३ MBP ण वि.

3. १ P किह. २ MBP "वंड". ३ B कंठालंबियाइं. ४ MB सिसिरि but gloss in M शीतकाले.

11 b णि सा हाइं अहोरात्राणि. 13 a विणीओ विनीतः प्रापितः. 14 b कुरो हो वृक्षः. 15 a मणूमण्णणिजो मनुभिरपि पूज्यः. 16 a धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहारः. 17 धवलें धुव्वेव्वभेण. 18 क सर हिं वत्सतरेः.

3. 3 परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभावः. 4 रासहाण गर्दमानासु. 3 a वाह बाधा; b कि डि दा बा बं लेह सुकरदंष्ट्राविदारणम्. 8 a णि रासु फलानपेक्षम्. 9 b "क्ष ड प्पियाइं पतनानि. 10 a सिसिरि शीतकाले; सिसिरु शीतम्.

परलोयकहाणी केण दिट्ठ	को वि सहइ पयहु तणिय णिट्ठ ।	
अण्णेण उत्तु किं एत्थु मरमि	घरु जाइवि तं णियरत्तु करमि ।	
अण्णेण उत्तु संभरमि पुत्तु	घरु जाइवि आलिंगमि कलत्तु ।	
अण्णेण उत्तु अलिउंविआइं	सलिलइं मयरंदकरंविआइं ।	
सरवरि पइसेप्पिणु पियमि ताम	तण्हाइ ण वैच्चइ जीउ जाम ।	15

घत्ता—अण्णेक्के माणगुरुक्के विहंसिवि पइउ वुच्चइ ॥

परमेसइ ओलंविअकरु एक्कल्लुउ वणि किइ मुच्चइ ॥ ३ ॥

## 4

आवली—शिज्जेते ससिमि शिज्जइ ससो सयं  
वडुंतमि जाइ वुड्डीपयं पियं ।  
अच्छामो वणमि सहिऊण दंडणं  
णरवइवरियमेव भिच्चाण मंडणं ॥ १ ॥

विसंसे वियणे	तरुगिरिगहणे ।	5
परलोयैरइं	मोत्तूण पइं ।	
गंतूण पुरं	तं विविहघरं ।	
भरहस्स मुहं	पेच्छामु कहं ।	
सव्वेहि घणं	पडिच्चणमिणं ।	
सुरणंविअपयं	दहंपंचमयं ।	10
उत्तुंगतणुं	पणवंति मणुं ।	
हंजियअलिहिं	कुसुमंजलिहिं ।	

५ B वंचइ. ६ MB वियसिवि. ७ MBP एक्कु जि.

4. १ MB शिज्जेते; K सिज्जेते, but corrects it to शिज्जेते. २ MBP have before this line ललियलया नाम छंदो; GK have ललिया नाम छंदो. ३ MBPT गइं. ४ MBP पेच्छामि. ५ MBP °णमिय°. ६ M adds this foot in the margin and MB read after it गहियसुयं धणुपंचसयं सो दिव्वमयं; after दहंपंचमयं P reads परिगलियमयं धणुपंचसयं.

11 b णिट्ठ अनुष्ठानपरमकाशम्.

4. 1 ससो शशः. 2 वुड्डी पयं उच्चैः पदम्. 3 दंडणं लुब्धनादिकम्. 4 a वियणे विज्जेते. 6 b पइं पतिस्.

गयजम्मरिणं	पुजंति जिणं ।	
जंपंति इमं	धीरो सि तुमं ।	
ण मुणसि कमं	गहियं गियमं ।	15
अम्हे चचला	पविलीणबला ।	
तुह मग्गचुया	हा किं ण सुया ।	
मणैधरियगई	इय भणिवि जई ।	
अज्जवसवणा	णिम्मियभवणा ।	
थियहैरिणगणे	णिवसंति वणे ।	20
कंदं पवरं	मूलं महुरं ।	
मालूरदलं	भक्खंति फलं ।	
सीयं विमलं	पपियंति जलं ।	
सिरघुलियजडा	वियरंति जडा ।	25
किर ते वि मुणी	ता दिव्वज्जुणी ।	
ससिरविसयणे	उग्गय गयणे ।	
मा लुणह तहं	मा धुणह मरं ।	
मा खणह महिं	मा कुणह सिहिं ।	
मा विसह सरं	मा हणह परं ।	
एसा ण विही	जइ णस्थि दिही ।	30
ता णिवसणयं	तणुभूसणयं ।	
गेणहह तुरियं	दुट्ठं तुरियं ।	
असुविद्वणे	भवसंकमणे ।	
जं आसि कयं	तं जाइ खयं ।	

यत्ता—जिणलिंगे उज्झियसंगे जं किउ पाउ दुरासें ॥ 35

तं तुट्ठइ कैह वि ण फिट्ठइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि, ८ MBP हरिणयणे, ९ MP विरयंति, १० MBP कह व.

19 b भवणा गृहाणि, 20 a थियहरिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र, 23 a मालूरदलं बिल-  
पत्रम्, 26 a ससिरविसयणे आकाशे, 27 b मरं पवनम्, 29 a सरं सरोवरं पानीयम्, 35 पाउ पापम्,  
36 जम्मसहासें जन्मसहस्रेण.

5

आवली—ता लम्गा णराहिवा भासियक्खरे  
 दुमदलमोरपिच्छवक्कलधरा परे ।  
 थियजिणवरणिरोहणिट्ठोहयट्ठिया  
 णाणाविहवियारवेसेहि संठिया ॥ १ ॥

तो <sup>३</sup> कच्छमहाकच्छहं तणूय	पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।	5
कामियकामिणियणकामकील	मयमत्तचंडसोडाललील ।	
परवलवलगैलहत्थणसमत्थ	दोणिण वि भायर करवालहत्थ ।	
आया तहिं जहिं णिम्मूकंडंभु	थिउ पडिमाजोएं सइं सयंभु ।	
पासहिं परिभमिवि महारिजूर	णं जंवूदीवहु चंदसूर ।	
णामें णमि विणमि णिवद्धणेह	णं सिंहिरिहि णिर्यंडणिसण्ण मेह ।	10
जैयकारिवि तेहिं पवुत्तु एव	णियसुयहं विहंजिवि पुहइ देव ।	
दिण्णी अम्हहुं दिण्णउ ण किं पि	महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि ।	
पइं पालियखत्तियसासणेण	पेसणयरपेसियपेसणेण ।	
एवहिं पञ्चत्तर किं ण देसि	भणु कवणु दोसु गुणरयणरासि ।	
परमेट्ठि पियामह तिर्जगताय	अम्हारउ दुट्ठु ण होइ राय ।	15

घत्ता—तुह चलणहं णं णवणलिणहं मणमहुयर रुणुहंटइ ॥

उम्मेल्लहि काइं ण वोल्लहि जाम ण हियवउ फुट्टइ ॥ ५ ॥

6

आवली—पुणु पुणु पडुपसायदाणुममे रया  
 पाप्सुं पडंति गाढं कुमारया ।

5. १ MBP °पिंछ°. २ M°णिट्ठपहट्टिया; B णिट्ठाहपट्टिया. ३ MBP ता. ४ M°गलघल्लणं; B°गल-  
 त्यल्लण°. ५ P°णिमुक्क°. ६ MBP णियडणिविट्ठ. ७ MBP पणवेप्पिणु. ८ M तिजगभाय.

5. 8 थिये लादि- स्थितस्य जिनस्य निरोधनिष्ठा निश्चलस्थितिस्तया हतं स्थितं स्थानं येषां ते. 5 a  
 तणूय पुत्रौ. 6 b°सोडाल° हस्ती. 8 b सयंभु आदितायः. 16 रुणु हंटइ अनुरागं करोति, 17 उ म्मेल्ल हि  
 अवलोकय.

6. 1 रया रत्ताः.

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं  
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजणं ॥ १ ॥

रयणमयमइदासणसमेउ	पोमावइपरमाणंदहेउ ।	5
जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ	तहिं अवसरि कंपिउ णायराउ ।	
णियणाणु पउंजिवि तेण सुणिउं	जं साल्णहिं जिणु पुरउ भणिउं ।	
मग्गंति बाल किं भुअणभाणु	जइ देइ देइ ता तिजगदाणु ।	
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु	पाउउ विमलु सुणिदधम्मु ।	
सामंतमंतिसेविउ णरेसु	महिउइ संतोसिउ देइ देसु ।	10
देसवइ गासु गामवइ छेत्तुं	छेत्तवइ किं पि कुडंण भत्तु ।	
घरवइ पुणु ढोवइ क्रूरमुट्ठि	तिहुयणवइ पाउइ पयहिं सिट्ठि ।	
जइ पत्थिजइ ता को वि गरुउ	लहुपत्थिणाइ पर होइ चरुउ ।	
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु	सो पत्थिउ जो तेलोक्कंणाहु ।	
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु	सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।	15

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पडिवण्णउं ॥

भोक्खत्थिउ सो जं पत्थिउ तं हउं करमि अँसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयम्मि ते हमिह खोहकारणं

जायं किं भणामि सुकयावयारणं ।

अचवंता वि दंति तरुणो महाहलं

सुपुरिसदंसणं पि ण हु होइ णिप्फलं ॥ १ ॥

6. १ MBP दुंदरेहिं जिणपुरउ. २ MBP देउ. ३ P खेतु. ५ P खेतवइ. ५ MB कुलएण; P कुडएण in second hand. ६ MB तइलोक्क. ७ MBP ण सुण्णउं.

7. १ MBP भणेमि.

6 b णायराउ नागराजो धरणेन्द्रः. 10 a णरेसु नराणामीशः; अथवा, पुरुषेषु. 11 b कुडएण प्रस्थेन. 12 b सिट्ठि जीवद्यष्टिः सिमुक्कम्. 13 b चरुउ हितकरः.

7. 1 ण रेत्यादि—नरलोके तौ नभिविनमी तिष्ठतः, हमिह अहं तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारणं जातौ.

दुवई—तां गिगमणमेव धरणेण कयं संभरियजिणवरं ।	5
फारफणौकडप्पकुक्कारुल्लौलियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥	
महिहरसंदकदरायंपणणिगयकूरहरिवरं ।	
हरिओरालिरोलवित्तासियणासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥	
कुंजरचहुलचरणपंडिपेळणपाडियपयडभूरुहं ।	
भूरुहखंधुंधुंखराणिहसणरुहपज्जलियहुयवहं ॥ ३ ॥	10
हुयवहविप्फुलिंगजालावलिजलियसंमत्तकाणं ।	
काणणसंणिसण्णमुणित्तावासंकियसयलसुरयणं ॥ ४ ॥	
सुरयणभरियजलयजलधाराऊरियसुविउलंवरं ।	
अंवरयलफुरंततडिदंडाहंडलावकव्वुरं ॥ ५ ॥	
कव्वुरादिव्ववत्थविथिणणुल्लोवयल्लइयसंदणं ।	15
संदणयलविल्लंगविसहरमुहलालियविंझचंदणं ॥ ६ ॥	
चंदणकुसुमघुसिणफलदलजलतंदुलउवणियच्चणं ।	
अच्चणकामसामफणिरामारंभियसरसणच्चणं ॥ ७ ॥	
णच्चणमिलियललियलीलामरललणालुलियमेहलं ।	
मेहलियाविलंबिचलकिंकिणिकलकलयलसुपेसलं ॥ ८ ॥	20
इय वरविवरकुहरतरुणहयलजलथलकंपकारिणा ।	
वियडफणाहिरूढचूडामणिकुवल्लयमारधारिणा ॥ ९ ॥	
पडुकमकमलणमियणमिविणमिणराहिवचोज्जदाइणा ।	
झत्ति समागपण दिट्ठो रिसहो गरलहरराइणा ॥ १० ॥	

२ P तो. ३ MBP °कडा°. ४ P °उल्लासिध°. ५ MBP °परिपेळण°. ६ MBP °संसत्°. ७ M °ताव-  
ससंकिय°; B °तावसरसंकिय°; P °तावसंकिय° and gloss तापशक्ति; K °तावासंकिय°, but in  
second hand °तावससंकिय°. ८ MBP °सविउलं ९ MBP °वल्लग°. १० MBP अंचण°.

6 °कडप्प° संघातः. 7 °आयंपण °आकम्पनम्. 8 हरिओरालि° सिंहध्वनिस्तस्य रोलः कोलाहलः.  
10 °खरणिहसणरुह° अत्यन्तनिघर्षणप्रादुर्भूतः. 12 °तावासंकिय° तापशक्तिः. 13 °भरियजलय°  
भूतमेघाः 14 °कव्वुरं चित्तवर्णं यथा भवति. 15 °उल्लोवयं° चन्द्रोपकम्; °णंदणं देवविमानम्. 16 °लालि-  
यं° जुम्बिताः. 18 °सामं° श्यामा. 21 °कुहरं° पर्वतः. 22 °अहिरूढं° स्थितः. 23 °चोज्जं° आश्चर्यम्.  
24 गरलहरराइणा नागराजेन धरणेन्द्रेण.



घत्ता—आवेपिणु कर मउलेपिणु थुउ मुणिदु थुइलक्खहि ॥

25

मुहंथुलियहि अक्खरल्लियहि जीहहि दसैसयसंखहि ॥ ७ ॥

## 8

आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं

भुवणवणं डेहइ मोहो मलीमसं ।

जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं

ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दूसियवरासमो

भूसियणियागमो ।

5

सोसियमईमलो

पोसियमहीयलो ।

मयगायणियत्तओ

कयवयपयत्तओ ।

भावियजयत्तओ

तावियसैयत्तओ ।

खंचियविसायओ

संचियविरायओ ।

लुंचियसिरोरुहो

वंचियदुग्गहो ।

10

कुंचियगईवहो

अंचियजसावहो ।

मावईखोहओ

आवईरोहओ ।

छंडियकुसंगओ

खंडियअणंगओ ।

दंडियसइंदिओ

पंडियपवंदिओ ।

तवयरणपरियरो

जमकरणभयहरो ।

15

समसरणजोयओ

भवतरणपोयओ ।

सज्जणानग्गणी

सिद्धचित्तामणी ।

संपयासंगमो

धम्मैकण्हमो ।

११ P मुहि. १२ MBP °वलियहिं. १३ P दुसहससंखहिं.

8. १ G.K have before this line:—अमरपुरी छंदो; MBP have अमरपुरी नाम छंदो;

२ M °सगत्तओ. ३ B omits this foot.

8. 1 लालसं लम्पदम्. 4 मयण सिहिणा पलित्तयं कामाग्निना प्रदीप्तम्. 5 b °वरासमो गृहस्था-  
श्रमः. 7 b °पयत्तओ प्रयत्नः. 8 b °सयत्तओ °स्वगात्रः 11 a °गईवहो °गतिमार्गः; b अंचियजसावहो  
श्लाघितयशोधारकः. 12 a मावई° लक्ष्मीपतिः. 15 a °परियरो सामग्री; b जमकरण° मरणं रोगो वा.  
16 a समसरण °उपशमगृहम्; b °पोयओ प्रवहणम्.

भवविणासी भवो	सिवपयासी सिवो ।	
चित्ततमहो इणो	दोसविजई जिणो ।	20
पावहारी हरो	तं पराणं परो ।	
देवदेवो तुमं	ताहि दीणं ममं ।	
णिग्गुणो णिद्धंणो	हुम्मई णिग्घिणो ।	
परहरावासओ	गहियपरगासओ <sup>४</sup> ।	
माणओ मेच्छओ	रोहिओ रिंछओ ।	25
जायओ हं भवे	णारओ रउरवे ।	
तुम्ह पडिकूलिमा	जा कया सा कमा ।	
एम भुत्ता मए	आसि काले गए ।	

घत्ता—जिणु वंदिवि अप्पउ णिदिवि णाएं तमु पम्बालिउ ॥

णमिरायहु विणमिसहायहु मुहससिर्विबु णिहालिउ ॥ ८ ॥ 30

9

आवली—तेहि परंपियं सया सुहावणं

महिमहि दारिऊण पत्तो सि किं वणं ।

कस्स तुमं सुसील अम्हाण संसुहं

अणिमिसलोयणेहि किं पेच्छसे मुहं ॥ १ ॥

णीसेसंतासियामियणरिंदु	तं णिसुंणिवि पडिजंपइ फणिंदु ।	5
हउं भुवणि पसिद्धउ णायराउ	जंभारिणमंसिउ तिजगताउ ।	
लोउत्तमु कुसुमसरंतयालु	इहु देउ महारउ सामिसालु ।	
जइयहुं णिव्वेइउ मुक्कैरल्लु	तइयहुं जि एण महु कहिउ कल्लु ।	
तं पेसिय केण वि कारणेण	विहलियजडजीउद्धारेण ।	

४ MB णिदुणो. ५ MP add after this: जीवआसासओ करणबलपोसओ; B adds only जीवआसासओ.

9. १ MBP णीसास°. २ B णिसुणवि. ३ MB मुकु रज्जु. ४ MBP संपेसिय.

20 a चित्ततमहो चित्ततमोघातकः; इणो आदित्यः अथवा, चित्तस्य तमोऽन्धकारस्तस्य सूर्यः. 22 b ताहि रक्ष. 27 b कमा कमात्. 29 णाएं धरणेन्द्रेण.

9. 1 सया सुहावणं सदा सुखकरम्. 2 महिमहि दारिऊण हे अहे, महीं विदार्य. 5 a °अमिय° अभित°. 6 b जंभारि° इन्द्रः. 7 a कुसुमसरंतयालु कामघातकः. 8 a णिव्वेइउ वैराग्यं गतः.

एहिंति वे वि णमिविणमिणां	मइं मणिहिंति सिरिसोक्खकाम । 10
तुहुं देज्जसु ताहं णयासणाउ	खगसेटिउ उत्तरदाहिणाउ ।
आसणथरहरणं ढल्लिउ संघु	मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु ।
पायाल्लु मुइवि अवयरिउ पत्थु	हउं अरहदेवपेसणसमत्थु ।
जो खंडइ लिंपइ सुरहिपण	देवें णिज्झाइयणियहिपण ।
एवहिं सो दीसइ धुंघु समाणु	परिचत्तउ पुब्बिल्लउ विहाणु । 15

घसा—लहु आवहं काइं चिरावहं जोइ मुएवि सखयरइं ।

मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं ॥ ९ ॥

## 10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं

णवर णहयले विमाणं णियच्छियं ।

मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं

गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिमियं ॥ १ ॥

णंविउण सदोसारंमहरं	सुरवरभवणेण सरंमहरं । 5
जुंज्झयहिंडियविसहरिणउलं	दूवंकुरपीणियहरिणउलं ।
गयणंगणलगासिरं गरुयं	ओसहिहयसत्तसिरंगरुयं ।
उक्खयपुल्लिंदकंदारुणयं	हरिणहहयकरिकंदारुणयं ।
सीहाणुलग्गभीयरसरहं	सुररमणीवाहियहंसरहं ।

५ MBP अरुहदासपेसण°, ६ MBP धुउ.

10. १ All Mss. have before this line: मानासमकं. २ MBP जुज्झिरहिडि° . ३ MBP दुव्वकुर°.

11 a ण या सणा उ नगाप्पेति द्वे श्रेण्यौ; b खगसेटिउ विद्याधरश्रेण्यौ. 12 a °थरहरणं कम्पनेन; संघु शरीरबन्धः. 14 b °णियहि एण मोक्षेण. 16 चिरावहं चिरं कुस्ताम्; सखयरइं विद्याधरसहितानि.

10. 5 a सदोसारंमहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्; b सुरवरभवणेण विमानेन; सरंमहरं सरोवर-जलधारकं विजयार्थं रम्भायुक्तग्रहं वा. 6 a °विसह रिणउलं वृषसिंहनकुलम्; b °हरिणउलं मृगसंघातम्. 7 a गरुयं महान्तम्. b सत्तसिरंगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम्. 8 a °कंदारुणयं कन्दै-र्मूलैरुणं रक्तम्; b कंदारुणयं मस्तकैः कृत्वा दारुणं रौद्रम्. 9 a °सरहं अष्टापदम्; b °वाहियहंसरहं वाहितो हंसयुक्तो रथो गमिन्.

तीरासियखयरीवाहणयं	दुमघट्टणहुयहुयवाहणयं ।	10
णेउररवभरियलैयाहरयं	वरखेयरपीयपियाहरयं ।	
संदैरिसियवहुत्तामरसं	रवियरवियसावियतामरसं ।	
वीसरियहारभारियमहियं	जिणपडिमाकयमहिमामहियं ।	
चारणमुणिदेसियधम्मसुइं	झरझरियणिज्झारावाहसुइं ।	
फणिवयणविमुक्कविसग्गिवहं	दरिदावियविविहविसग्गिवहं ।	15
णरजुयलमलद्धपियालवणं	णीयं सेलं सपियालवणं ।	
पुव्वावरजलहिविलग्गसिरो	कंदरमुहेहिं वणयरगसिरो ।	

घत्ता—भडभीसहिं णमिविणमीसहिं गिरि वेयडु पलोइड ॥

रयणालए सायरवेलए तुलदंढ व संजोइड ॥ १० ॥

## II

आवली—वियसियविडविकुसुमकिंजकपिंजरो

मणिमयकडयमंडिओ णं महीकरो ।

रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो

रयणायरविलुद्धओ हवइ थीयणो ॥ १ ॥

णं जगसिरिणट्टाधारचंसु

अहवा गोगाइसरिरवंसु ।

5

गंगासिधूहिं विहिण्णदेहु

पडिगयसंकिरगयणिहयमेहु ।

रुक्खहुं णावइ रुक्खाउवेउ

देवहुं वल्लहु णं सग्गालोउ ।

४ M °लयाहरहं, ५ M °पियाहरयं, ६ P संदरसिय°, ७ MBP दरिसाविय°.

10 a ° ख य री वा ह ण यं विद्याधरलीणां वाहनं यस्मिन्; b ° हु य ° उत्पन्नः; b ° हु य वा ह ण यं हुतवाहनमासिम्.  
11 a ° ल या ह र यं लताग्रहम्; b ° पियाहरयं ° प्रियाधरम्. 12 a ° सं द र सि ये त्या दि- सं द र्शितं वधूरक्तो-  
नाममराणां सं सुखं येन; b ° ता म र सं पद्मम्. 13 a ° म हि यं महीजं वृक्षम्; b ° म हि मा म हि यं माहिन्ना पूजि-  
तम्. 15 a ° फ णी त्या दि- फणिवदनैर्विसुक्तादिषाधिवेषो मरणं यत्र; b ° द री त्या दि-दरीषु दर्शितो विविधैर्विभिः  
पक्षिभिः स्वर्गिणां पन्था यत्र. 16 a ° ण र जु य लं नमिविनमियुग्मसु; अलद्धपियालवणं न लब्धं वृषभनाथस्य  
प्रियं आलपनं येन; b ° स पि या ल व णं प्रियालाश्वरवृक्षास्वदनैः सहितम्. 17 b ° न सि रो प्रसनशीलः. 19 र य ण-  
ल ए रत्नस्थानके.

11. 1 ° किंजक° मकरन्दः. 2 क ड य° कङ्कणं गिरितटं व. 4 र य णा य र वि लु द्ध ओ रत्तानामाकरे  
आश्रये पुरुषे विशेषेण लुब्धः, अथवा रते नागरे विदग्धपुरुषे विशेषेण लुब्धः. 5 b ° गो गा इ° पृथ्वी एव धेनुः.  
7 a ° रुक्खा उ वे उ वृक्षायुवेदः वृक्षाणां वृष्ट्युपायप्रदर्शकं शास्त्रम्.

उबलोसहिरससिहजोयवणु	रसवाइ व सइं णिवडियसुवणु ।
णिसि चंदयंतसलिलेहिं गलइ	वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।
माणिकपहादिण्णावलोउ	जहिं चक्कवाय ण सुणंति सोउ । 10
रययमउ सव्वु रयणियरभासु	पण्णास मूलि वित्थाइ जासु ।
गंयणंगणलम्माविचित्तसिंमुं	जो पंचवीसजोयणइं तुंगु ।
दोवासहिं तासु थियाउ ताम	दीहत्ते लवणसमुदु जाम ।
उत्तरदाहिणियउ मणहराहं	सेढीउं दोणि विज्जाहराहं । 15

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिणी ॥

एक्केकी विहवगुरुकी णाणारयणरवण्णी ॥ ११ ॥

## 12

आवली—तत्थ चउत्थकांलठिदिसंविहाणयं  
पंचधणूसयाइं मुंणिरयणिमाणयं ।  
णीणं कम्मभूमिपरिणामजोयओ  
परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ	दूसहतवताववसंगयाउ । 5
पुव्वाउ ताउ णिच्चं हियाउ	अवराउ पयत्तं साहियाउ ।
संहिउवसग्गे धीरें समेण	सुइदेहें होमैं संजमेण ।
पारंभियमुद्दामंडलेण	चरुगंधधूवकुल्लच्चणेण ।
विज्जाहराहं णियमैं वर्षेण	विज्जाउ होंति ससहावपण ।

11. १ MBP गयणमलगसुविवित्त°. २ B °संगु. ३ MB सेडिउ दोणि वि; P सेडिउ बेणि वि.  
४ MBP णाणाणयर°.

12. १ P °कालट्टिदि°. २ T भयराणिमाणयं, but notes a p: मुणिरयणीति पाठेऽप्ययमेवाधेः.  
३ MBP कम्मभूमिणाम°. ४ MBP सहिओवसग्गधीरें. ५ MP °पुष्कचणेण; B पुष्कचणेण. ६ MBP कमेण.

8 a उ ब ल° धातुपाषाण. 11 a र य णि य र भा सु चन्द्रकान्तिः. 13 a दो वा स हिं द्वयोः पार्श्वयोः. 15 मो इ वि मुक्त्वा; व रि उपरि.

12. 1 च उ स्थे त्या दि—चतुर्थकालस्थितेः शरीरेत्सेधादिलक्षणायाः सम्यग्विधानम्. २ मु णि र य णि-  
माण यं सप्तहस्तप्रमाणम्. ३ णी णं तृणां मनुष्यानाम्; क म्म भू मि प रि णा म जो य ओ कृष्यादिकर्मयोगजः. 7 a  
स हि उ व स ग्गे सोढोपसर्गेण. 9 a व ए ण व्रतेन.

सिद्धउ पण्णत्तिपहूइयाउ	आणत्तु करिंति पराइयाउ । 10
जहिं धम्मा इव संदिण्णकाम	णीरन्तरसीमाराम गाम ।
जहिं दक्खामंडवयलि सुयन्ति	पैहि पंथिय दक्खारसु पियन्ति ।
धवलूदजंतपीलिज्जमाणु	पुंडुच्छुखंडरंसु पवहमाणु ।
कइकव्वरसु व जणु पियइ ताम	तिच्चीइ होइ सिरकंपु जाम ।
जहिं पिक्ककलमकणिसइं वरन्ति	सुय दूयत्तणु हल्लिणिहि करन्ति । 15

अन्ता—सिरिसयणहिं णं बहुवयणहिं विल्लंसंती दिणि रायइ ॥

जहिं पोमिणि कलमहुयरञ्जुणि णं भाणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

## 13

आवली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया

णिच्चं गंधधूर्वमल्लोहवासिया ।

लच्छि भुंजिउं णरा देवयाणियं

सोक्खं जं लहंति तं केण माणियं ॥ १ ॥

कुसुमियणंदणवणसंकडाइं	कीलागिरिंदसिहरम्भडाइं । 5
परिहातिपहिं परियंचियाइं	पवणुधुयधयमालंचियाइं ।
बहुदारगोउरंडालयाइं	सोवण्णरयणरइयालयाइं ।
मुहसालातोरणसोहियाइं	दाहिणसेडिइ जसाहियाइं ।
सोहासमूहमोहियसुराइं	एयइं पण्णास जि पुरवराइं ।
पहिलउ किंणर णरगीउ बीउ	बहुकेउ पुणु वि पुरु पुंडरीउ । 10
हरिकेउ सेयैकेउ वि रवण्णु	सप्पारिकेउ णीहारवण्णु ।
सिरिवडु सिरिहर लोहंगलोलु	अण्णेक्कु अरिजउ सगगलीलु ।

७ MBP सुइयाउ. ८ MBP णेरन्तर°. ९ M जहिं. १० MBP रसपवहमाणु. ११ M °कलमकणसइं; BP कलवकणिसइं. १२ MBPK विसयन्ती.

13. १ MBP °मल्लोहिं वासिया; T °मल्लोह° and gloss पुष्पसमूहः. २ P °गोउरुडालयाइं. ३ MBP सेउकेउ. ४ MB लोयगगलीलु; P लोहंगलोलु and gloss लोहार्गलालुक्तम्.

10 a पण्णत्तिपहूइयाउ प्रज्ञप्तिप्रवृत्तयः; b आणत्तु आज्ञाम्. 12 b पहि माणें. 13 a धवलूद° वृषभवाहितानि. 15 b सुय शुकाः; हल्लिणिहि कर्षकलियाः. 16 सिरिसयणहिं पद्मैः; रायइ सोभते.

13. 2 मल्लोह° पुष्पसमूहः. 3 देवयाणियं विद्यासंपादिताम्. 6 a परियंचियाइं परिवेष्टितानि.

वज्रगुलु वज्रविमोड अवर  
 सोलहमी पुरि सयडमुहि होइ  
 रयविरयपउरखगजम्मखोणि  
 अपरज्जिउ कंचीदामु दोणिण  
 झसइंध कुसुमपुरि संजयंति  
 विजया खेमंकर चंदभासु  
 सुविचित्त महाघण चित्तकूड  
 ससिरविपुरि विमुही बाहिणी वि  
 मज्झइ रहणेउरंचकवालु  
 जायँउ जयमंगलजयरवेण

महिसार पुरं जयपूरु वि पवर ।  
 चउमुहि बहुमुहि जाणंति जोइ ।  
 आहंडलणयरि विलासजोणि । 15  
 सविणय णहु खेमंयरीउ तिणिण ।  
 सुर्कउरु जयंती वइजयंति ।  
 रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।  
 अण्णु वि तिकूड वइसवणकूड ।  
 सुमुहीपुरि णिचुजोइणी वि । 20  
 तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।  
 णमि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एकेकी पुरंहिं विरिक्की गामकोडिपडिबद्धी ॥

णमिरायहु थुयणाहेयहु धम्मं संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया  
 परउवयारवावडा हौति धीरया ।  
 एको अहव दोणिण पायालराइणा  
 सरिसा णैत्थि भइ धरणिदभोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाथो कुंड जाणिमो  
 अज्झणी वारुणी वइरिसंधारिणी  
 विजुंदिच्चं पुरं गिलिगिलें पट्टणं  
 वंसवत्तं पुरं कुसुमचूलं पुरं

वामसेढीपुंराणावलिं भाणिमो । 5  
 अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।  
 वारुचूडामणी चंदभामूसणं ।  
 हंसगब्भं पुरं मेहणामं पुरं ।

५ B जउपुरु. ६ B सयडमुहि. ७ M खेपुरीउ; BP खेमपुरीउ. ८ MBP सुकउरि. ९ P वइसवण<sup>०</sup>.  
 १० P गेउरु वकवालु. ११ MBP जयउ. १२ M विहवगुरुक्की; BP पुरहिं गुरुक्की.

14. १ M सरसा. २ MBP भइ णत्थि. ३ MBP पुराणावली. ४ P विजदंत. ५ MBP किलि-  
 किलं. ६ MP वंसवत्तं; B वंसवत्तं.

28 पुरहिं विरिक्की पुरे: विमत्ता.

14. 1 सुधीरया सुवुद्धिरताः. 2 वावडा व्यापृताः. 5 a वारुणासामुहाथो पश्चिमदिशामुखतः  
 प्रारभ्य.

संकरं लच्छिहम्मं पुरं चामरं  
 वसुमईणामयं सव्वसिद्धत्थयं  
 इंदकंतं ण्हणंण्णासोययं  
 अलयतिलयं च णहत्तिलयं मंदिरं  
 जुंइत्तिलयमवणितिलयं सगंधव्वयं  
 अग्गिजालापुलं गरुडजालापुलं  
 रयणकुल्लिंसं वरिद्धं विसिद्धासयं  
 फेणसिहरं पि गोखीरवरसिहरयं  
 धरणि धारणि सुदंसणपुरं रुंदयं  
 विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं  
 सद्धिगामाण कोडीहिं सहुं हारिणा

चिमलमसुमकयं सिवसमं मंदिरं ।  
 सूरसत्तुजयं केउमालं कयं । 10  
 वीयसोयं विसोयं सुहालोययं ।  
 कुमुदकुंदं च णहवल्लहं सुदरं ।  
 मुक्कहारं पुरं अणिमिसं दिव्वयं ।  
 सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवांसं पुरं ।  
 दविणजयमवि सभहं च भद्दासयं । 15  
 वेरिअक्खोहसिहरं च गिरिसिहरयं ।  
 दुग्गयं दुद्धरं हारिमाहिंदयं ।  
 सुरयणायरपुरं रयणपुरं च वि पुरं ।  
 संहि तुट्ठेण सुविसिद्धसुहयारिणा ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियखयरइं धणकणजणपरिपुणइं ॥ २० ॥

अणुराणं रिसहपसायं णाणं विणमिहि दिण्णइं ॥ १४ ॥

## 15

आवलि—जाओ सो णहयराणं पट्ट पिओ  
 णेहणिवद्धओ सुसुहिणा समं थिओ ।  
 सुयणुद्धारभारधरणुज्जयंगओ  
 ते आउच्छिऊण धरणो धरं गओ ॥ १ ॥

भुवणहु मंडणु अरहंतु देउ  
 वेसहि मंडणु वइसिउ णिरुत्तु  
 कुलमंडणु सीलु सुयस्स बुद्धि

माणिणिमुहमंडणु मयरकेउ । 5  
 ववहारहु मंडणु चौयवित्तु ।  
 तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP सूरसत्तुजयं, ८ MBP महा°, ९ MBP कुमुदकुंद व्व, १० M जुवइत्तिलयं सवणियं; P जुवइत्तिलयं सविणियं, ११ MBP गरुडजालापुलं, १२ P रुदयं, १३ M सुरयणारयं १४ MBP सुट्ठ, १५ P सुविसुद्धं but gloss सुविशिष्ट.

15. १ B सुसुहिणा, २ P धरणुज्जयंगओ, but gloss ऋजुशरीरः, ३ BP वायवित्तु, and gloss in P वचनप्रतिपालनम्.

19 a हारि णा मनोश्चेन, 21 णा एं धरणेन्द्रेण.

15. 6 a वइसिउ वैशिकं वैश्यावृत्तिः.



कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति  
माणहु मंडणु अदीणवयणु  
कइमंडणु णिव्वाहियणिबंधु  
पियेपेम्महु मंडणु पणयकोउ  
किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु  
सिरिमंडणु पंडिययणु णिरुत्तु  
पुरिसहु मंडणउ परोवयारु  
उद्धरिय बे वि णमि विणमि भाय  
अहवा किं होसइ किर परेण

असि रायहु मंडणु मंतसत्ति ।  
भवणहु मंडणु वरणारियणु ।  
गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु ।  
आरंभहु मंडणु खलविओउ ।  
णरवइमंडणु पाइक्कभरणु ।  
पंडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु ।  
धरणिदे पालिउ णिव्वियारु ।  
को पावइ प्यहु तणिय छाय । 15  
परिणवइ दइउ सव्वायेरेण ।

घत्ता—किं किज्जइ अण्णे विज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ ॥  
ते कित्तणु भरंहपहुत्तणु पुप्फयंतर्गयगामिउ ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभवभरहाणुमण्णिण महाकव्वे णमिविणमिरज्जलंभो णाम  
अट्टमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ८ ॥  
॥ संधि ॥ ८ ॥

४ M सोहइ, ५ MBP होइ, ६ MBP गइ.

10 a ०णिबंधु काव्यम्; b कमलबंधु सूर्यः. 18 ते पुण्येन; कि त्तणु कीर्तिर्धरा; पुप्फयंतर्गयगामिउ आकाशगामि सर्षलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्.

ता झाइउ णिण्णेहु णियमणपससु परज्जिउ ॥  
पुण्णइ लडुइ मासि णाहें जोउ विसज्जिउ ॥ १ ॥

1

हेला—परिचितइ जिणेसरो दुक्कियं खवंतो ।  
महिमापारमासिओ सुद्धही महंतो ॥ १ ॥

जिह तेलेण दीवु तर णीरें  
आहार वि जो परह णिमिचें  
उज्झिउ आहाकम्मुदेसहिं  
अज्झोवज्झहिं पूईकम्महिं  
लिंणिणीसणरसंतुगारहिं  
जीववहाइअसंजममीसहिं  
गणहरगणियहिं छायालीसहिं  
णीरसु सरसु ण किं पि भणेवउ  
रुवतेयबलचित्ताचत्तउ

तिह माणुससरीर आहारें । 5  
सिद्धउ लद्धउ कौल भवंतें ।  
पुव्वं पच्छा संयुहमासहिं ।  
देवयचरुयहिं वियलियधम्महिं ।  
चोईहमलवित्थारवियारहिं ।  
परंभयवसउच्चाइयगासहिं । 10  
वज्जिउ अवरोहिं मि बहुदोसहिं ।  
रसणु रसें रंसंतु णिहणेवउ ।  
संजमजत्तामेतुं समत्तउ ।

MBP give, at the beginning of this Samdhi, the stanza एको दिव्यकथाविचारचतुरः  
etc. for which see notes on page 121.

1. १ BP °परपरज्जिउ. २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place;  
throughout the rest of the Samdhi they call it हेला. ३ MBP सुद्धही. ४ MBP कालि.  
५ P भमंतें. ६ B शुइसंभासहिं. ७ M °सत्तुगारहिं. B सत्तुउगारहिं; P सत्तुगारहिं. ८ MP चउदह°. ९ M पयभर°. १० MBP रसे रमंतु. ११ MBPT °मेत्तसमत्तउ.

1. 1 झाइउ आतः; परज्जिउ पराजितो निर्जितः. 2 जोउ वण्मासकायोत्सर्गः. 4 सुद्धही शुद्धबुद्धिः.  
6 b काल युक्तं कालम्. 7 a आहाकम्मुदेसहिं अधःकर्म नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम्, उद्देशिकं कर्म मुनि-  
मुद्दिश्य पाककरणम्. 8 a अज्झोवज्झहिं मुनिं दृष्ट्वा अधिश्रयणे अधिकजलस्य तंदुलानां वा निक्षेपः. 9 a  
णीस निःस्वो दरिद्रः; b चोईहमलं चतुर्दशमलविस्तारविकारैर्वर्जितम्, ते च मलाः—नहरोमज्जन्तुअट्टिकणकुंड-  
पूरुहरिर्मंसचम्माणि । फलफुल्लदीयमुलाछण्ण मला चउदस भवन्ति. 11 a छायालीसहिं षोडश उद्गमदोषाः,  
षोडश उत्पादनदोषाः, दश एषणादोषाः, संयोजनदोषाः, इंगालदोषाः, धर्मदोषाः, प्रमाणदोषश्चेति षट्चत्वारिंश-  
दोषाः. 13 b संजमजत्तामेतु संयमयात्रार्थमेव.

सुक्खु ल्हक्खु सउवीरब्भुक्खिउ णवकोडीविसुद्धु सुपरिक्खिउ ।  
पाणिपत्ति सइ मइ भुंजेव चरियाचरणु जगहु दरिसेव । 15

यत्ता—जइ हउं अच्छमि अल्लु केम वि ण करमि भोयणु ॥  
तो जिह ए णर भग्गी तिह भज्जिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणा जियक्खो ।  
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ धेच्छुण	जोयं पमोच्छुण ।	
सिद्धत्थणामाउ	तम्हा वणंताउ ।	
विहरेइ परमेट्ठि	जुयंमेत्ति गयदिट्ठि ।	5
जीवे <sup>१</sup> ण दुम्मेइ	पेच्छंतु पउ देइ ।	
रमणीयथामेसु	णयेरसु गामेसु ।	
तं विणयणयभरिय	पणमंति णायरिय ।	
अब्भुवरसालीण	जोयंति <sup>२</sup> गामीण ।	
भइयाइ कंपंति	अण्णे पयंपंति ।	10
एसो महराउ	एसो महादेउ ।	
धणकणयधण्णाइं	एएण दिण्णाइं ।	
मंडैलिय महियलइं	काऊण बहुहलइं ।	
एयस्स पडिवत्ति	उवयरह सहस ति ।	
इय भाणिवि सहलइं	विविहाइं फलदलइं ।	15

१२ MBP सउवीरं भुक्खिउ; K सउवीरब्भुक्खिउ. १३ M परिक्खिउ. १४ MBP भग.

2. १ MBP तवें. २ MBP जुयमेत्तु. ३ MB जीवं ण दूसेइ; PT जीवं ण दूसेइ; ४ MBP जोयंत. ५ MBP मंडलइं.

14 a सउवीरब्भुक्खिउ काजिकेनाभ्युक्षितसु; b णवकोडीविसुद्धु मनोवाक्यैः कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्विशुद्धसु. 17 तवोवणु तपोवनं मुनिसंघातः.

2. 1 वओ वपुः; तिणा तेन; जियक्खो जितेन्द्रियः. 2 स मो कर्मशयः. 5 b जुयमेत्ति बहुईस-मात्रे. 10 a भइयाइ भयेन. 15 a सहलइं आर्द्राणि.

भमराहिरामाहं	णवकुसुमदामाहं ।	
कुंकुमहं चंदणहं	भायणहं भोयणहं ।	
सुरहियहं स्त्रीलयहं	भिगारवरजलहं ।	
सीसेण गहिऊण	पंथम्मि णिहिऊण ।	
णाहस्स ते देति	बाला ण याणंति ।	20
अण्णे पसत्थाहं	देवंगवत्थाहं ।	
कडिमुत्तकेऊरु	मणिहार मंजीरु ।	
कंकणहं कुंडलहं	णं सूरमंडलहं ।	
गलियावलेवस्स	उवणंति देवस्स ।	
अण्णे कुलीणाउ	मज्झम्मि खीणाउ ।	25
लायणणपुण्णाउ	ढोयंति कण्णाउ ।	
णररहत्तुरंगाहं	मार्यगंडुंगाहं ।	
णिसिय्याहं पहरणहं	उववणहं पट्टणहं ।	
वाइत्तजुत्ताहं	खमरायवत्ताहं ।	
संसिखंडुरहं	विंधाहं मंदिरहं ।	30
अण्णे समपंति	अण्णे पभासंति ।	
भो मयणमयवाह	भो णाणजलवाह ।	
भो तरुणमिहिराह	भो तवसिरीणाह ।	
भो देवदेवस्स	भो परम परमेस्स ।	
णिण्णभगवेसेण	णिय्यदेहस्सेण ।	35
णालवसि किं भव्वसि	णउ हस्ससि णउ रमसि ।	
इय भणिवि अजोहिं	चडुयम्मसजोहिं ।	

६ MB करिमुत्तकेऊर; P कडिमुत्तकेऊर. ७ MBP मणिहार मंजीर. ८ Mp वररह°. ९ MBPT मार्यग-  
 तुंगाहं and gloss in T समूहाः. १० B omits णिसिय्याहं पहरणहं; P adds it in the margin in  
 second hand. ११ M adds after this: जोयंति किरणहं; P adds it in the margin in  
 second hand. १२ MBP add after this: पणयाहं परियणहं. १३ MBP संसिखंड°. १४ MBP  
 पहासंति. १५ MBPT °मिहराह. १६ B णिव°. १७ MBP भमसि. १८ M चडुयम्मसजोहिं.

27 b °डुंगाहं वृन्दानि समूहाः. 32 मयण मयवाह कामसुगस्य व्याध. 28 a तरुण मिहिराह बालसूर्यसमान.  
 37 b चडुयम्मसजोहिं चाटुकारसजोहिं.

बोलाविओ जइ वि पडु चवइ णउ तइ वि ।  
 परणिहियणियचिउ महिवीडु विहरंतु ।  
 घत्ता—हिंडइ जाम जिणिडु चरियामग्गि पइडुउ ॥ 40  
 ता सेयंसणिवेण गयउरि सिविण्णं दिट्ठु ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लंकासिपण मउलंतणेत्तपण ।  
 रयणिविरामजामप संपसुत्तपण ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजमिणा	भवाणुबद्धधमिणा ।	
णिसायरो दिवायरो	करीसरो सरोवरो ।	
महण्णवो सुरंधिओ	बलुद्धरो मयाहिओ ।	5
सबाहुजित्तसंगरो	रिऊण छेयणंकरो ।	
भेरक्खमेक्ककंधरो	महाभडो धणुद्धरो ।	
घुलंतपुच्छपच्छलो	विसो विसाणउज्जलो ।	
णियच्छिओ सकंदरो	घरे विसंतु मंदरो ।	
इमो सुदंसणोहओ	पणट्ठदिट्ठिमोहओ ।	10
णिसंतप पलोइओ	समाणसे विवेइओ ।	
पहायण महाउणो	समासिओ समाउणो ।	

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहल्लु आहासइ ॥  
 को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१९ BP सुइणदं.

3. १ M बलुद्धरो. २ MBP भेरक्खमेक्ककंधरो. ३ MPK 'पुंठ. ४ MBP 'कल्लु.

3. 8a ससिप्पहाणुजमिणा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा. 5 b बलुद्धरो मदोक्तः; मया हिओ युगाधिपः.  
 7 a भेरक्खमेक्ककंधरो भरक्षमैकस्कन्धप्रदेशः. 9 b विसंतु प्रविशन्. 10 a सुदंसणो हओ शोभनस्वप्न-  
 सघातः. 12 a पहायण प्रभाते; महाउणो महायुवः. 13 कुरुणाहु सोमप्रभः.

हेला—ससिरविसुहडसीहसरसरहिगोगुणालो ।

जंगममन्दरु व गइहसियपीलुलीलो ॥ १ ॥

णीलजडाकलावओमालिउ	सिहरि व जलहरमालइ कालिउ ।	
परैवयकैरसंणिहबाहउ	गमोहु व ललंतपारोहउ ।	
तावण्णहिं दिणि णयरि पइट्टउ	णारीणरहिं णिरंजणु विट्टउ ।	5
धावमाणजणपयसंमहै	उट्टिउ कलयलु जयजयसहै ।	
को वि भणइ अवलोयहि एत्तहि	हउं पंजलियरु अच्छमि जेतहि ।	
को वि भणइ सामिय दय किज्जउ	एकवार पच्चुत्तर दिज्जउ ।	
को वि भणइ मेरउ घर आवहि	भिच्चभत्ति पहु किं ण विहावहि ।	
चंदु व रिक्खि रिक्खि वियरंतउ	जइवइ गेहि गेहि पइसंतउ ।	10
घरिणिहि घरैप्रेगणु संप्राइउ	ताउ व भाउ व देउ पलोइउ ।	
णिग्गयाउ मणि तोहू वहतितउ	एम चवंति ताउ पणवंतिउ ।	
मज्जणु मज्जणहरि संजोइउ	पोत्ति तेहु आसणु वि पढोइउ ।	
णहाहि णाह लइ तणुउवयरणं	चंगउ चेळिउ हेमाहरणं ।	
बइसहि पट्टि सुसैरससमग्गउ	भुंजहि भोयणु तुच्छु जि जोग्गउ ।	
बोलावियउ ण किं पि वि भासहि	भुर्वणुबंधु किं अण्णउ सोसहि ।	15

घत्ता—पुरि कलयलु णिसुणेवि ससिभासै अहियारिउ ॥

कंचणदंडविहत्थु पुच्छिउ णियदउवारिउ ॥ ४ ॥

4. १ M °सरभरहुणालओ; B सरसरेणे गुणालओ; P सरसरहिणा गुणालओ; T सरहि समुद्रः.  
२ MBP °पीलुलीओ. ३ MBP अइरावय°. ४ M °करि°. ५ M घरपंगणु संपाइउ; B घरिणिघरपंगणु  
संपाइउ; P घर पंगणु संपाइउ. ६ MBP हरिसु. ७ M सरसु सुसमुग्गउ; B सरसु समुग्गउ. ८ M  
सुयणबंधु.

4. 1 °सर हि° समुद्रः; °गो° वृषभः. 3 b कालिउ कलितः कल्लः. 9 b विहावहि चित्ते किं न रोच-  
यसि. 15 a सुसरससमग्गउ बइरसयुत्तं भोजनं समग्रं च. 17 ससिभासै सोमप्रेमेण. 19 कंचणदंड-  
विहत्थु काश्चनदण्डविशिष्टकरः.

5

हेला—ता पडिहारण भौणियं भवावहारो ।

जो लच्छीकडक्खविक्खेवे वि णिवियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ  
जेण पयासियाइं मइगम्मइं  
भरहहु तुम्हहुं मेइणि दिण्णी  
सो आयउ तेलोक्कपियामहु  
सहुं सेयंसकुमारें णिग्गउ  
संमुहुं पंतु णिहालिउ जिणवरु  
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु  
सामि सणेहैभरेण भरेप्पिणु  
सोमप्पहेण पलद्धपसंसे  
मुहुं जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं

जो तियसेसरेण सइं ण्हवियउ ।  
बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं ।  
जेण णवल्लवित्ति पडिविण्णी । 5  
तं णिसुणिवि उट्ठिउ सोमप्पहु ।  
ताम पलंबपाणि णं दिग्गउ ।  
णं वसुहंगणाए पैंसरिउ करु ।  
णं जगभवणखंभु भयंमयमहु ।  
कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु । 10  
देवि पयाहिण तहु सेयंसे ।  
हरिसंसुयओसाकणसित्तिहिं ।

घत्ता—अइपसंणमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥

पुव्वभवंतरणेहु जणैदिट्ठिए जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवल्लोइऊण कुंयैरेण लोयसारो ।

सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

पैउद्धो असेसो

सवासो दैसेसो ।

मुणीणं पहाणं

वराहारदार्णं ।

5. १ MBP भणियं. २ MBP ०विकखेविणिवियारो. ३ MBP पसरियकर. ४ MBP भयमयमहु.  
५ MB सणेहु भरेण. ६ BP अइपसणु. ७ P जणदिट्ठं.  
6. १ MBP कुमरेण. २ M has before this line सोमराई छंद; BPGK have सोमराई;  
MBPK पनुदो. ३ MBP सदेसो.

5 3 a सुराय लि मेरौ. 4 a मइगम्मइं मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 b भयमयमहु  
भयानां मदानां च विनाशकः. 12 हरि संसुय ओ सा क ण सित्ति हिं हर्षाश्रुमिदिकाकणसित्तैः.

6. 3 a पउद्धो प्रनुद्धः.

भवे जं विइण्णं	कयणंतपुण्णं ।	5
समाहूयसकं	मणे तं पि थकं ।	
पुणो तेण उत्तं	अहो हो णिरुत्तं ।	
हुयं मज्झ णाणं	पणायं पुराणं ।	
असूई अराई	अमाई अणाई ।	
अमाणो अमोहो	अकोहो अलोहो ।	10
अछेओ अमेओ	अणेओ वि णेओ ।	
विमुक्कंधयारो	अणंगावहारो ।	
पविचो महंतो	अणंतो रहंतो ।	
असंगो अभंगो	जहाजायल्लिगो ।	
बुहाणं विहाओ	सुहाणं उवाओ ।	15
अहाणं विणासो	महाणं णिवासो ।	
अभावो असावो	इमो देवदेवो ।	
कयत्थो विवत्थो	समत्थो पसत्थो ।	
सया वंदणिज्जो	ईमो पुज्जणिज्जो ।	
परो मोक्खगामी	इमो मज्झ सामी ।	20
सुराहिंदूओ	इमो पत्तभूओ ।	

यत्ता—जगगुरु गुरुयणपुल्ल मोणव्वइ दिव्वासउ ॥

एहु आहारणिमित्तु भमई समग्गपयासउ ॥ ६ ॥

- ४ M अजाई अमाई and adds: अणाई; B reads अजाई अमाई. ५ P वि एओ and gloss एकः.  
 ६ M अताओ अभाओ and adds: अराओ असोओ; P अताओ अभाओ अराओ असाओ. ७ M सया.  
 ८ MBP पहु. ९ B अणइ.

8 a पणयं प्रज्ञातम्; पुराणं इत्तान्तम्. 9 a असूई अस्तवकः; b अणाई आगो दोषस्तेन रहितः. 11 b अणेओ वि णेओ गुणपर्यायपेक्षयानेकोऽपि द्रव्यपर्यायपेक्षयैकः. 14 b जहाजायल्लिगो नमः. 15 a विहाओ विधाता. 16 a अहाणं पापानाम्; b महाणं तेजसाम्. 17 a अभावो क्रोधादिभाविरहितः; असाओ सातरहितः. 21 b पत्तभूओ पात्रभूतः. 22 दिव्वासउ शुद्धहृदयः दिशावस्त्रधारको वा. 23 एहु एषः; समग्गपयासउ स्वमार्गे यतिमार्गस्तस्य प्रकाशकः.



हेला—अंबरमणिपसंडिदाणाइं देंति लोया ।

ताइ इमे ण लेंति परिमुक्ककामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामे गंत्यउ  
मंचयसेज्जायलइं सभवणइं  
गाइ देहि देहि सि पवोसइ  
विचु लेइ जो इंदिय पुज्जइ  
वंभण तावस सँवसणभग्गा  
दुद्धरजीहोवत्थहि दंडिय  
दुक्कियभरपरिहँडुणरीणा  
जे लेंता ते विड विड देंता  
पत्थरणाव ण पत्थरु तारइ  
जासु अवंभारंभंपरिग्गहु  
धम्माम्भासु पाउ जो भावइ  
कत्थइ मिच्छामग्गि पइट्टउ  
सोलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ  
सदहाणु णव पंचहुं सत्तहुं  
ईसीसि वि चउ जेण ण पालिउ  
मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ  
दूरुद्धुयसदप्पकंदप्पहिं  
भूसिउ संचियसासयसोक्खहिं  
उत्तमु पत्तु पउ पणाविज्जइ

भूमि लेइ जो लोहें घंत्यउ ।  
गेण्हइ जो माणइ रइरमणइं ।  
जो घएण अप्पाणउं पोसइ । 5  
मंसुं खाइ जो पुट्ठि समज्जइ ।  
पावयम्म संसारहु लग्गा ।  
अप्पउ पेरु वि हणिवि पासंडिय ।  
सुईमुहि णिवडंति अयाणा ।  
णँउ जाणहुं के गुणहिं महंता । 10  
अवस कुपत्तु भवणवि मारइ ।  
सरइ कया वि ण इंदियणिग्गहु ।  
अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।  
कुच्छियपत्त रिसीसहिं सिट्ठंउ ।  
हवइ अवचु सइं जि मइं वुज्झिउ । 15  
करइ पयाहुं जिणेसपवुत्तहुं ।  
तं जँघण्णु मइं पत्तु णिहालिउ ।  
सम्मदंसणि कहिं मि ण संकिउ ।  
णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं ।  
सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं । 20  
पयहुं पँसुयभोग्यु दिज्जइ ।

7. १ MBP घत्थउ. २ MB गुत्थउ; P गत्थउ. ३ P पेय खाइ. ४ MBT अवसण°. ५ MBP परु हणेवि. ६ M °परिवट्ठण°; P °परिवट्ठण° but gloss परिकर्षण°. ७ B णं जाणहु. ८ MBP किं. ९ MB °रंभु परिग्गहु. १० MP दिट्ठउ. ११ MBP जहण्णु. १२ MBP दूरुज्झिय. १३ MB फाडुय.

7. 1 °प सं डि सुवर्णम्. 3 b घत्थउ ग्रस्तः. 6 a पुज्जइ पोषयति. 7 a सव सण भग्गा स्वव्यसन-भग्गाः. 10 a विडे त्या दि—विटाः ये ददति तेऽपि विटाः. 15 b अवचु अपात्रम्; 16 a णव तत्त्वाणि; पंचहुं पञ्चास्तिकायानाम्; सत्तहुं सप्तानां पदार्थानाम्. 19 a दूरुद्धुयं दूरोद्धूतम्.

घत्ता—कुच्छियवत्ति कुभोउ दिण्णु अवत्तइ णासइ ।  
 तहिं पत्तहिं फलु तिविहु इय सुंदर आहासइ ॥ ७ ॥

8

हेला—मज्झिमु मज्झिमेण अहमो अहमेण णेओ ।  
 उत्तमु उत्तमेण दाणेण होइ भोओ ॥ १ ॥

णिहोहत्तं चापं भत्तिइ	खेमविण्णाणं सुद्धइ भत्तिइ ।
एहिं गुणेहिं जुत्तु दायारउ	मज्झणइ अवैलोयइ दारउ ।
मउलियकरयलु अइअवैमत्तउ	अच्छइ तिविहपत्तगयचित्तउ ।
गुणवंतउ परलोयासत्तउ	सो पडिगाहइ प्रंगणपत्तउ ।
ठाहं भणिवि पणवियसिर भासइ	उच्चठाणि गउरविइ णिवेसइ ।
करइ चाहु संतहुं धण्णउं जणु	चरणधुवणु अच्चणु पुणु पणमणु ।
मणवयतणुसुद्धिइ सुद्धासणु	देइ भरंतु जिणिंदहु सासणु ।
भेसइ सत्थु अमयदाणं सहुं	देइ सजीविउ चलु माणिवि लहु ।
बहिरंधलयहं मूयहं लल्लहं	काणकुंटमंटहं वाहिल्लहं ।
सव्वभूयहियर्कारणं गण्णं	असणु वसणु दीणहं कारुण्णं ।
परमारा पाविट्ठ मुपप्पिणु	णियदव्वाणुसार सुयैरेप्पिणु ।
देइ ण जो घरत्थु सो केहउ	घरयारउ चिडउल्लउ जेहउ ।
णियिंदिभउं णियपोट्ठु जि पोसइ	मुवउ ण जाणहुं कहिं जाएसइ ।

घत्ता—माणसु जं णिद्धममंउ तहिं उप्पेक्ख रइजइ ॥

दुत्थियमि अणुकंप गुणवंतउ पणविजइ ॥ ८ ॥

१४ MB कुच्छियवत्ति. १५ MBP तिहिं.

8. १ M णो; BP णो. २ MBP खमविण्णाणइ सुद्धइ भत्तिइ. ३ MBP add after this सीलवंतु जिणपेसणयारउ सारासारसव्ववियारउ. ४ MBP अवैलोयइ दारउ. ५ T अपमत्तउ; ६ MP पंगणु पत्तउ; B पंगणे पत्तउ. ७ MBP ठाहु. ८ MBP °कारणणणं. ९ MP बुमरेप्पिणु. १० MBP णिय-  
 डिभइ. ११ MBP णिद्धम्मु. १२ MBPK दुत्थियमि.

22 कुच्छियेत्था दि—कुपात्रे दत्तं कुभोगं ददाति, अपात्रे दत्तं नश्यति.

8. 1 णेओ श्रेयः. 6 a °अवमत्तउ निरहंकारः. 10 b भरंतु स्मरन्. 12 a लल्लहं अस्फुट-  
 वाचाम्; b संटहं निरुधमिनः. 13 a गण्णं परिज्ञानेन. 14 a परमारा परमारकात्. 15 b घरयारउ  
 गृहकारकः; चिडउल्लउ चटकः.

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं ।

दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण	जलभरियदलपिहियमिगारहत्थेण ।	
परिदिण्णधाराजलुब्धूअतावेण	सद्धम्मसैद्धावसुप्पण्णभावेण ।	
भवेभरणसंभरियमुणिदाणैयस्सेण	वरचरमदेहेण चिच्छिण्णजस्सेण ।	5
पियजंपणालोयणुब्भयणेहेण	धरणीसतोसेण गुणरयणगेहेण ।	
इसिकहियसुयसूइसंभिण्णसोत्तेण	चंदक्कचारित्तवैचइयगैत्तेण ।	
कुरुजंगलावैणिवइलहुयभाएण	मउमहुरणएण सेयंसराएण ।	
आओ गुरू सो जि णंतेण सीसेण	ठाभणिउ जिणु णमितउ पणवंतसीसेण ।	
ता सरइ हिययमि रइकुमुइणीजूरु	तूसविय जगणलिणु हयमलिणु रिसिसूइ 10	
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु	तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।	
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु	लयविरमु सुइँ परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।	

घत्ता—इय चितिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥

चिरु सेयंसवसेण सेयंसै पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एवं कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।

केण भवंतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगम्भाणिउं

कुरुणाहै पल्लहत्थिउ पाणिउं ।

9. १ BP °सम्भावसुपसण्ण°, २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दाणधस्सेण. ४ MBP °सुइसूइ°. ५ MBP °गोत्तेण but gloss in M भूषितं गात्रम्. ६ MBP °वणिगणिव°. ७ M सुइपरमु.

9. 3 a °णि यत्थेण नेपत्थेन. 5 a भवभरण° भवसरणम्. 6 b धरणीस° राजानः. 7 a °सु य सूइ° श्रुतज्ञानसूचिः. 9 a णंतेण नन्नेण. 10 a °जूरु संकोचकः. 11 a ताइ तथा तन्वा; b खं तीइ मलहरणु समयया पापनाशो भवति. 12 b लयविरमु अविनधरम्. 14 सेयंसवसेण पुण्यविशेषवशेन; सेयंसै श्रेयसा; पर मोक्षः.

10. 2 अ मो हो सफलं परिपूर्णम्.

जसससियरधवलियकुरुवंसें	पय पक्खालिय सिरिसेयसं ।	
वंदिउ पायतोउ सुहगारउ	जम्मजरा मरणावइहारउ ।	5
इंदचंदणाईदपियारउ	उच्चासणि संगिहिउ भडारउ ।	
कुसधारहि उच्छलियतुसारहिं	चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं ।	
फुलहिं फुल्लुधुयसंकाराह	अक्खयाहिं बहुगंधपयारहिं ।	
दीवैयचरुयहिं ध्रुवंगारहिं	करमरमाहुल्लिगमालूरहिं ।	
अंबयहलहिं जंबुजंवीरहिं	पण्णहिं पूयप्फलकप्पूरहिं ।	10
णेउरणिहचुयवम्महणियलउ	पुज्जिउ परमेट्ठिहि पयजुयलउ ।	
पुणु पणिवाउ करेण्णि भावें	जो छंडिउ णं वम्महचावें ।	
जइवरतवसंदरिसियमंगें	जो पुणु धणुहि ण णिहिउ अणंगें ।	
सो उच्छुरसु णिवारियदोसहु	णं सैम्महुं णिउ सुतवहुयासहु ।	
जुवरापं घडेण करि ढोइउ	वारवार जिणणहिं जोइउ ।	15

घत्ता—देहालइ मणकुंडे रसु पिज्जंतउ भणियउ ॥

मयणसरासणसारु झणिजलणि णं हुणियउ ॥ १० ॥

## II

हेला—ता दुंदुहिरवेण भरियं दिसावसाणं ।

भणियं सुरवरेहिं भो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवणमाणिकविसिद्धी	घरंपंगणि वसुहार वरिद्धी ।
पं दीसइ ससिरविंबिबच्छिहि	कंठभट्ट कंठिय णहलच्छिहि ।

10. १ P पाय. २ M reads after this line: चंदणकुं कुमेहिं घणसारहिं, पयसंमलियइं तेहिं कुमारहिं; B also reads चंदणकुं कुमेहिं घणसारहिं, पयसंमलियइं तेहिं कुमारहिं; P reads चंदणकुं कुमेण घणसारहिं, चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं; फुलहिं फुल्लुधुयसंकाराहिं, पय समलहियइं तेहिं कुमारहिं. ३ MBT फुल्लुधुव°; P फुल्लुधुव°. ४ MBP अक्खएहिं. ५ P चरुवहिं दीवय°. ६ MP छंडिउ णं वम्महु; B खंडिउ णं वम्महु. ७ MB संमुहं; P संमुहु. ८ P झणजले but gloss घ्यानामो.

11. १ M भाणियं. २ MBP घरंपंगणि.

5 a पायतोउ पादजलम्. 7 a कुसधारहिं जलधाराभिः. 8 a फुल्लुधुय भ्रमराः. 10 b पण्णहिं पत्रैः. 12 a °णिह° व्याजेन. 12 b जो रसः. 13 a जइवरेत्यादि—यतिवरतपसा संदर्शितो भङ्गो यस्य तेन. 14 b स म्म हुं णिउ उपशमं नीतः.

मोहं बद्धणवपेम्महिरी विव  
रयणसमुज्जलवरगयपंति व  
सेयंसहु धणणण णिउंजिय  
पूरियसंवच्छरउववौसै  
तहु दिवसहु अत्थेण समायउ  
घरु जायवि भरहं अहिणंदिउ  
पइं मुणवि को गुरु संमाणं  
पइं मुणवि को चित्तहुं सकइ  
पइं मुणवि दिसिपसरियजसैयरु  
जय सेयंसदेव पभणंतहिं

सग्गसरोयहु णालसिरी विव । 5  
दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।  
एकहिं उडुमाला इव पुंजिय ।  
अक्खयदाणु भाणिउं परमेसैं ।  
अक्खयतइय णाउं संजायउ ।  
पढेसु दाणतित्थंकरु वंदिउ । 10  
पत्तविसेसदाणविहि जाणइ ।  
परमप्पउ कहु मंदिरि थक्कइ ।  
अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयर ।  
संथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियालि धम्मरहासु एयइं तोसियसकइं ॥ 15  
जिणसेयंसकयाइं वर्यदाणइं वरचकइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंबियदयावडाओ ।  
एयहिं बिहिं मि वइइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेण्णिणु गउ भरहेसरु	एत्तहिं महि विहरंतु जिणेसरु ।	
तिहिं णाणिहिं सुद्धं परिणामे	अचलचित्तु मणपज्जवणामे ।	
अड्डाइज्जहिं दीवहिं जं जं	माणसु चित्तइ जाणइ तं तं ।	5
उज्जुयवंकहिययमुणियत्थउ	देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।	
पंचवीसवयमायउ भावइ	तिहिं गुत्तिहिं अण्णाणउं गोवइ ।	

३ MBPT मोहणिद्धं. ४ M adds after this line:—अहियं पक्ख तिण्ण सविसेसैं । किंभूणे दिण कहिय जिणेसैं । भोयणवित्ति लहीय तमणासैं । दाणतित्थु घोसिउ देवीसैं. ५ MBP पढमं. ६ MBP पत्ताविसेसु. ७ MB °जयसरु. ८ MBP तवदाणइं.

12. १ M माणस; BP माणुसु.

11. 5 a मोहे त्यादि—मोहेन बद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ हीरिव लजेव. 9 a अत्थेण समायउ अन्वर्थकम्; b णाउं नाम. 15 धम्मरहासु धर्मस्थस्य.

12. 1 विलंबियदयावडाओ अवलम्बदयापताकः. 2 णिहयंगयारिराओ निहताङ्गारिराजः. 7 a पंचवीसेत्यादि—एकैकस्य हि व्रतस्य स्वैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावनाः पञ्चविंशतिव्रतमातरः.

इरियादाणु किं पि णिक्खेवणु	करइ कहिं मि कयसुकयालोयणु ।
रोसु लोहु भउ हासु पणासइ	संगं विवज्जइ सुत्तु जि भासइ ।
मिउ जोगाउ अणुणायउ गेण्हइ	भात्ति पाणि संतोसु जि मण्णइ । 10
णारीकहदंसणसंसग्गहु	करइ णिवित्ति पुव्वरइरंगहु ।
भुंजइ कहिं मि सुणिव्वियडिल्लउ	वंभचेर थिर धरइ गुणिल्लउ ।

घत्ता—इंदियखलहं मिलंतु परमजोइ मेळौवइ ॥

खुन्भंतउ मणडिंभु रिसि णाणें खेळौवइ ॥ १२ ॥

## 13

हेला—हो हे चित्तिडिंभ मा रमसु णारिरूवे ।

रमिऊणं दड त्ति पडिहीसि मोहकूवे ॥ १ ॥

जीयाँजीयवत्थुभेयालइ	करणपोसणत्थि विरसालइ ।
संजमवायवुड्डुजमँसिहिसिहु	णिद्धंघंसु णित्तामसु णिप्पिहु ।
दिहिखमझाणजोयकयसंगहु	वीसदुसंखपरीसहभरसहु । 5
दंसण णाण चरिय तव वीरिय	आयार वि जे पंच समीरिय ।
तेहिं भडारउ अणुदिणु वड्डइ	हिययँहु तिण्णि वि सल्लइं कड्डइ ।
अर्णंसण वुँत्तिसंख ओमोयर	रसपरिचाउ कालजोयायर ।
इय बाहिरतर्तु चरइ सुदारुणु	अंतरंगसुद्धिहि सो कारणु ।
वेज्जावचि विणइ सज्झायइ	तणुविसग्गि पच्छित्तणिओयइ । 10
अन्भंतरतवि अप्पउ जोयँइ	धम्मझाणु चउविहु णिज्झायइ ।

२ MBP संगु. ३ B मेलावइ. ४ BP खेळावइ.

13. १ MBB भमिऊणं. २ MBP जीवाजीव°. ३ MBP °जमसिहिं सहं. ४ P णिद्धंघंसु; T णिद्धंघंसु and gloss निष्परिग्रहः. ५ P हिययाहि. ६ P अणसणु. ७ MBP वित्तिसंख ओमोयर. ८ MP तव. ९ MBP जोवइ.

9 b सुत्तु जि भा सइ आगममेवान्तर्जल्येन परामुशति. 10 a मिउ मितं परिमितम्; अणुणा यउ अनुज्ञातम्. 12 a सुणि व्विय डि लउ सुषु निर्विकृताहारम्. 13 मेलावइ ध्याने मेलयति.

13. 3 a °भेयालइ °भेदाश्रये; b करणं पञ्चकुलमिन्द्रियाणि च; विरसालइ कुलपक्षे विशिष्टो रसो विरसः; नारीपक्षे विरामविरसता. 4 a संजमेत्यादि-संयमवातेन श्रद्धा वृद्धिं नीता यमशिक्षिषिषा व्रताभि-ज्वाला येन; b णिद्धंघंसु निष्परीषहः. 8 b कालजोयायर त्रिकालयोगादरः. 10 b तणु विसग्गि कार्यांतस्यै.

आणाविचउ णामणिग्गंथउ

पुणु अर्वायविचयं पि महत्थउ ।

अवरु विवायविचउ वित्थारइ

थिरु संठाणविचउ अवहारइ ।

घत्ता—इय विहरंतु धरणि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥

वरिससहासें णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तां दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं ।

अलियालं पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडंगणेवत्थहिं छइयउ

पियैमाणुसु व सरसैकंटइयउ ।

णिच्चोसोयउ कंचणवंतउ

वंधुपुत्तज्जिविहिं महंतउ ।

रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ

रक्खसपुरु व पलासणिउत्तउ । 5

सुरमवणु व रंभाइ पसाहिउ

उज्झाउ व सुयसत्थहिं सोहिउ ।

सुइवयणु व चंगउ णिच्चफलु

संगामु व वणवियसियउप्पलु ।

णयणु व अंजणेण सोहिह्लउ

थणजुयलु व चंदणिण पियह्लउ ।

रमैणिणिडालु व तिलयालंकिउ

वहुवाहु व करवंदहिं संकिउ ।

तालें तूरु व सज्जे गेउ व

महै सोहइ णिवइणिकेउ व । 10

१० B अवायविरये.

14. १ B तो. २ M विडंगणे कत्थहिं; B विणंगणेवच्छहि. ३ MBP °माणुसु. ४ P सरु. ५ MB णिच्चोसोयं. ५ P समुण्णय°. ६ MBP सुयसत्थे. ७ MP रमणिणिलहु. ८ P मंहे.

12 a आ णा वि च उ आज्ञाया द्वादशाज्ञावागमस्य विचयस्तदर्धानां चेतसि स्वरूपपरिभावनम्; णा म णि ग्गं थ उ शब्दोच्चारणरहितम्; b अ वा य वि च यं मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यः कथं जीवस्यापायः स्यादिति चिन्तनमपायविचयः; महत्थउ संवरनिर्जैरालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम्. 13 a वि वा य वि च उ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्; b सं ठा ण-वि च उ लोकसंस्थानपरिचिन्तनम्. 14 धरणि धराग्रे.

14. 2 अलि यालं भ्रमरयुक्तम्. 3 a विडंगणे वत्थहिं वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्यं आमरणानि तैः; प्रियमनुष्यपक्षे, विटानि कामुकानामङ्गनेपथ्यैरामरणैर्नखादिग्रणैर्वा. 6 b सुयसत्थहिं शुक्तसमुद्देशकार्णित-शास्त्रैश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्चात्रैस्तैः. 7 b वणवियसियउप्पलु जले विकसितं पद्म, अन्यत्र त्रणे विकसितमूर्ध्वमुख्यासितं पलं मांसं यत्र. 9 b बहुबाहु सहस्रबाहुः; करवंदं हस्तवृन्देन करवंदीवृक्षैर्वा; सं कि उ संकीर्णं सेवितम्. 10 a सज्जे सर्जरसवृक्षेण पङ्जेन च; b महै बलात्काररणेन.

णायवेळिरुद्धउ पायालु व रत्तयंददाविरउ वियालु व ।  
 अवसहु व करवदे लुक्कउ असि व सुणीरें नेय विमुक्कउ ।  
 महिमाणणिमुंहुं व महुलेत्तउ सरयणभमियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामेयमिसेण जं संमुहंउं पर्वच्चइ ॥

णाणापक्खिसरेहिं पढुहि थोत्तु णं सुच्चइ ॥ १४ ॥

15

## 15

हेला—तहिं णंदणवणम्मि णग्गोहरुक्खमूले ।

आसीणो सिलायले णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकणियारकुसुमरयवणउ सुयरइ पढु पलियंकणिसणउ ।  
 णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ सोक्खायारु दुक्खु मइं दिट्ठउ ।  
 णट्ठु अजिण्णणासु णउ चंगउ आहरणें भारिज्जइ अंगउ । 5  
 कामु देहघट्टेणु रीणत्तणु मेयमिसेण रयइ मूढउ जणु ।  
 तं सिवसारु किं पि भाविज्जइ जेण ण जीउ गम्भि उप्पज्जइ ।  
 सोवैगाहु वीरिउ सुद्धमत्तणु सहं समत्ते णाणु सदंसणु ।  
 अर्गरुयलहुयउ अव्वावाहउ ज्ञायइ वसुविहु सिद्धगुणोहउ ।  
 एम सामि संभावियमग्गउ अप्पमत्ति गुणटाणि व लग्गउ । 10  
 तहिं दहपयाडिहिं सुक्कउ जावहिं खणि अउव्हु आरुद्धउ तावहिं ।  
 लग्गउ सुक्कझाणि पहिलारइ भेयवंति ससुए सवियारइ ।  
 इसिणा संठिपण सविहत्तउ अणियंदिहि छत्तीस जि जित्तउ ।

१ MBP कइवंदहिं. १० MBP °मुह इव. ११ M समुहउ. १२ B परच्चइ.

15. १ MP सुमरइ. २ M णट्ठु व जिण्ण°. B णट्ठु अजिण्ण°. ३ MBP °घट्टण°. ४ MBP रुवइ.  
 ५ P सोवग्गहु. ६ MBP अगुरुण°. ७ MP अणियद्विहि.

13 b °भुयंगहिं सपैविटैश्च.

15. 4 b सोक्खाया रु सौख्याकारम्. 2 a णट्ठु अजिण्णणासु नाय्यं अजीणस नाशकम्. 7 a सिवसारु सौख्यसारम्. 9 b वसुविहु सिद्धगुणो हउ अष्टविधः सिद्धगुणसमूहः—अवगाहः, वीर्यम्, सूक्ष्मत्वम्, समत्वम्, ज्ञानम्, दर्शनम्, अगुरुलघुत्वम्, अव्याबाधः इति. 10 a संभावियमग्गउ साम्यव्यपरिभाषितमोक्षप्राप्त्युपायः. 11 a दहपय डि हिं अनन्तानुबाधितुष्कादिदशप्रकृतिभिः. 12 b भेयवंति वितर्कविचारलक्षणभेदयुक्ते; ससुए श्रुतज्ञानबलेन.



सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु  
पुणु जीयउ उवसंतकसायउ  
खीणकसायचेरिउ पडिवण्णउं  
तं सवियकु एकु संधियारउ

तेण जि झाणें लोहु हणेप्पिणु ।  
कययहलेण जलु व मुणिरायउ । 15  
वीयउ सुकझाणु अवइण्णउं ।  
सोलहपयइरयक्खयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्ठिपईहिं पइयहिं णाणसरूवउ ॥

परमण्यहु सहाउ अमणु अणिदिउ हूवउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठं जिणेण तिजंगं पि एकखंधं ।

तिमिरुजोयवज्जियं गयणममियरंधं ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणें  
सुहुमइं दूरंतरियइं दव्वइं  
भाणु व भूरिकिरणसंताणें  
तहिं अवसरि जिणणाहभपण व  
असहंताइं व गव्वे अणिदहं  
सुरतर साहाकर णच्चंति व  
संजायहिं दसदिसिवहपूरहिं  
कण्णवडिउ णउ काइं वि सुम्मइ  
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय  
संखड्ढणीहिं णाय संखोहिय

एकें भावाभावपमाणें ।  
पेक्खइ जाणइ सहसा सव्वइं ।  
सोहइ केवलि केवलणणें । 6  
वीस तिणिण अववरइं भणियइं णव ।  
आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं ।  
कुसुमइं संतोसेण मुयंति व ।  
कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं ।  
जोइसवासहिं विणिहंयडुम्मइ । 10  
वंतरेहिं पडुपडह समाहय ।  
अणें अण देव संबोहिय ।

८ P छंडिभि. ९ MBP °चडिउ. १० MBP अवियारउ.

16. १ MBP तिजयं. २ MBP add after this: फग्गुणमासि किण्हएयारसि, उत्तरादरिक्ख (P उत्तरसादि रिक्ख) जइ जाणसि । तहिं उप्पणु णाणु परमेट्ठिहिं, लोयालोयपयासणसेट्ठिहिं. ३ MBP जाणइ पेच्छइ. ४ MB जिणु णाह°. ५ MB गव्व. ६ MB सइं जायहिं. P सहजायहिं. ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत्त°. ८ MBP वितरेहिं. ९ MBP अण्णहिं.

15 b कययहलेण कतकफलेन; मु णिरायउ मुनिराजः. 17 a सवियकु सवितर्कम्; b सोलहेत्यादि-  
षोडशप्रकृतिरजःक्षयकारकम्.

16. 2 अमियरंधं अलोकाकाशम्. 5 a कमेति—क्रमेणार्थसाधनानौघ्रियाणि तैः प्रतिस्खलनं युग-  
पदशेषार्थपरिच्छिप्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन. 6 b वीसेत्यादि—द्वाविंशदिन्द्रा इत्यर्थः.

वत्ता—उगइ णाणससंकि अमियगुणेहिं पउंजिउ ॥  
बहुविहत्तरवेण जगसमुहु णं गज्जिउ ॥ १६ ॥

## 17

हेला—ता सकेण चित्तिओ पीणियालिर्विदो ।  
संपत्तो जवेण एरावओ गइंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरितुसारण्हो  
गलियकरडंथलमयकसणगंडत्थलो  
कामचित्तगई कामरूवी चलो  
कंठकंदलपपसम्मि परिवट्टलो  
तंबताल्लुमुहो चारुत्तुछोयरो  
दीहयरमेहणो दीहउट्ठासओ  
सर्वणपल्लवपवणपडियमहुलिहउलो  
चाववंत्तो महाराववुंदुहिसरो  
मुक्कसिक्कारकणसित्तसुरमेलओ  
धित्तिसिद्धरधूलीरयालोहिओ  
लक्खजोयणमहावट्ठिमावट्ठिओ  
झत्ति कल्लणपयई समुदाइओ

अद्धयंदाहविहुमविहाणिहणहो ।  
अमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्थलो ।  
पवलपडिवक्खबलदलणदुम्महबलो । 5  
दसणजुयलेहिं णयणेहिं महुपिगलो ।  
दीहूरकरंगुलि सँरो व्व वरपुक्खरो ।  
दीहयरवालही दीहणीसासओ ।  
चलणपडिवल्लणखल्लयपयसंखलो ।  
घुलियघंटाट्ठणी तसियदिसिक्कुंजरो 10  
लक्खणसुव्वंजणणिरंजणगुणालओ ।  
कक्खणक्खत्तगेज्जावलीसोहिओ ।  
दंसियारेहिं वीरेहिं परियट्ठिओ ।  
जत्थ संकंदणो तत्थ संप्रीहओ ।

वत्ता—मयणिज्झरण झरंतु चमरहंसकुलसुंदर ॥

15

णं मायंगमिसेण आयउ वीयउ मंदर ॥ १७ ॥

१० MBP अमय°.

17. १ P अद्धयंदाह°. २ P °करडयलकसण°. ३ MB दीहूरगुलि°. ४ MBP सरो व्व वरपुक्खरो.  
५ MBPT °मेहुणो. ६ M सवणपवणाहयपडियमहुलिहउलो; B सवणपडिवयणहयपडिय°; P सवणपवणाहय-  
पाडियमहु°. ७ B °पडिचलणखलिय°. ८ M °दिसिक्कुंजरो. ९ MP सुव्वंजण°; B °सुव्वंजण°. १० MBP  
संपाइओ.

13 अमियगुणे हिं अमृतगुणैरनन्तगुणेष.

17. २ जवेण वेणेन. 3 b विहुमविहाणिहणहो विट्ठमप्रभासदशनखः. 4 b °संका स° °सदशः.  
7 b °पुक्ख र° गुण्डाप्रम्. 8 a °मेहुणो शिशम्; °उट्ठा सओ ओष्ठाश्रयाश्विबुकम्; b °वालही पुच्छम्. 14 b  
संकंदणो इन्द्रः; संप्राइओ संप्राप्तः.

18

हेला—बत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसंतो ।

वयणविवरविणिग्यर्यद्वदंतवंतो ॥ १ ॥

दंति दंति सरु सरि सरि पोमिणि	पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइं	तीस दोणिण छड्यणरवरम्मइं ।
णालिणि णालिणि तेत्तियइं जि पत्तइं	णावइ जिणवरलच्छहि जेत्तइं । 5
पत्ति पत्ति पक्केकी अच्छर	णच्चइ हावभावसरसकोच्छर ।
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सेंधुरु	सच्छर सामरु चडिउ पुरंदर ।
इंदंसमिदसमाण जि साहिय	तायतिंस किर मंति पुरोहिय ।
परिसदेव देवेसकुमारा	आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।
चलिय अणीयतियससेणा इव	लोयवाल दुगंतणिवा इव । 10
खिम्भिससुर पाडहिय पियारा	अभिओय वि चलिय कम्पारा ।
अवर पण्णय पउर पयाणिह	रिक्ख मियंक सूर तारा गह ।
जक्ख रक्ख गंधव्व महोरय	किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि	अग्निवाउतडिथणियकुमार वि ।
दिकुमार तवणीयकुमार वि	णायकुमार वि असुरकुमार वि । 15
आइय आवंतहं सविमाणहुं	पेळावेलि जाय णहि जाणहुं ।

घत्ता—संदाणियउ गणहि हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥

ससि करडयलणिहदु मबंविक्खिल्ले लित्तउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP °द्वदंतो. २ MB छड्यणरवि रम्मइं. ३ MB °कुच्छर. ४ MBP सिंधुरु. ५ MB इंदमहिंदसमाण. ६ MBP °सेणावइ. ७ MB णिवावइ; P णिवासइं. ८ MBP मयंक. ९ MB आवंतं; P आवंतहुं and gloss आगच्छताम्. १० K °विक्खिल्ले.

18. ३ b °गो मिणि लक्ष्मीः. 4 b छड्यण° षट्चरणो भ्रमरः. 6 b °को च्छर दक्षा मनोज्ञा वा. 8 a इंदसम इन्द्रसमाः; इंदसमा ण इन्द्रस्य सामानिकाः. 9 b आदरक्ख आत्मरक्षकाः. 14 a उवहि-कुमारा; उदधिकुमाराः. b थणियकुमारा मेघकुमाराः. 16 a पेळावे लि ठेलाठेलीति देशी; b जाणहुं यानानाम्. 17 संदाणियउ संघट्टितः.

हेला—अजि वि सो सुहाइ तेण य कालियंगो ।

जिणजत्ताहलेण मलिणो वि को ण तुंगो ॥ १ ॥

को वि भणइ मृगु किं पहि दोयहि	वग्गु महारउ पंतु ण जोयहि ।	
को वि भणइ भो हत्थि म चोयहि	जौउ सीडु किं मुहुं अवलोयहि ।	
को वि भणइ लइ अच्छमि लग्गउ	हंसडु पक्खु वलहें भग्गउ ।	5
को वि भणइ किं मूसउ चालहि	महु मज्जार पंतु ण णिहालहि ।	
को वि भणइ मा वाहहि विसहइ	पेक्खहि किं ण णउलु करइहकर ।	
को वि भणइ भो सणियउ चल्लहि	चलैंउ रिंछु गवणण म पेल्लहि ।	
को वि भणइ संकडि किं पइसहि	सरहें महुं सारंगु म तासहि ।	
को वि भणइ आवेहि समिच्छउ	पूसउ पूसणण सहुं गच्छउ ।	10
मोरें मोरु सवक्खीह्वणं	जाउ उल्लवउ समउ उल्लणं ।	
को वि भणइ वेसानरदूरें	वहउ वरुणु किं एत्थ वियारें ।	
को वि भणइ माइय तुहुं ओसइ	मा भंजहि मेरउ जलहरतर ।	
को वि भणइ वोळउ आहंडलु	पविरलतियसु होउ णहमंडलु ।	
पच्छइ पुणु अमहइं जाएसहुं	जिणचरणारविंदु पणवेसहुं ।	15

घत्ता—काइ वि देविइ लइयउ करि णालुप्पलु दीसइ ॥

मउडुग्गयहिं सिएहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ ॥ १९ ॥

हेला—अवरा सुरविलासिणी गहियकुसुममाला ।

णं बालारुविणी मयणसत्थसाला ॥ १ ॥

19. १ MBP अज. २ MB तेणय. ३ MBP सिगु. ४ MB जासु. ५ M महुं. ६ MBP मज्जार. ७ MBP चरउ. ८ MB समुच्छउ; P सइमुच्छउ, but gloss सम्यगिच्छामि. ९ MBP अमहइं पुणु.  
20. १ MBP सुरविणी.

19. 1 तेण य तेन गजमदेनैव. 8 a सणियउ शनैः. 16 a समिच्छउ अहं सम्यगिच्छामि.  
17 सिएहिं सितैः शुक्लैः.

अवरेक्का वि सचंदण दीसइ	णं मलयैहरिणियंववणासइ ।
सोहइ अवर वि कुकुमपिंढे	पुव्वदिसा इव सिस्सुमत्तंढे ।
अवर सद्दण्ण णं मुणिवरमइ	अवर मयरत्थिं सरे णं रइ । 5
अक्खयधारिणि णं मोक्खहु सहि	थणदुहुडी णं सुहधणणिहि महि ।
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि	अवर सहंसमोर णं गिरिदरि ।
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव	अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व ।
णच्चइ अवर सरसु भावालउ	गायइ अवर कूडताणालउ ।
वायइ अवर तंतिवज्जंतह	वण्णइ अवर परमतित्थंकरु । 10
एम पसण्णपसाहियवयणहि	अच्छरकोडिहि चल्लुंगणयणहि ।
सोहम्माहिउ सत्तावीसहि	ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहि ।
एम देव संचल्लिय जावहिं	धणपं समवसरणु किउ तावहिं ।
इंदाणइ तं णिम्मिउं जेहउ	मइं जडेण किं सीसइ तेहउ । 15

घत्ता—वारहजोयणरंडु हरिणीलें तलु बद्धउ ॥

परिवट्टलउ विसुद्धु धूलीसालउ णैद्धउ ॥ २० ॥

21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो ।

रयणपंसुविणिम्मिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छेच्छवि कहिं मि विरेहइ	कत्थइ अंजणपुंजु व सोहइ ।
कत्थइ लोहिउं संझाराउ व	कत्थइ पंडुरु कुंदाणिहाउ व ।
अब्भंतरे जगईउ पहाणउ	ताउ होंति सोलह सोवाणउ । 5

२ MB मलयगिरि°. ३ MBPT add after this line: का वि गहियकत्थुरय (P कत्थुरिय) वररइ, सामलंगि णावइ घणघणतइ (B घणवणतइ); T also notes a p: घणघणतइ ति पाठे निबिडमेषपंक्तिः. ४ MP °तालालउ, ५ MBP °मिग°. ६ B णट्टउ.

21. १ P पंसुणिम्मिओ. २ MB °पिच्छ; P पुंछ. ३ MBP सोहइ.

20. ३ b °वणासइ वनस्पतिः. 6 b थणदुहुडी उन्नतसानी. 8 b सुरहि सुरभिः. 9 b कूड-ताणालउ कूडतानालयं विस्मृततानमाना. 10 a वज्जंतह वायविशेषः. 14 a इंदाणइ इन्द्रादेशेन. 16 °सालउ प्राकारः; णद्धउ वेष्टितः.

21. २ रयणपंसु° रत्नधूलिः. 4 b °णिहाउ निवहः. 5 a जगईउ उपर्युपरि त्रीणि पीठानि.

चउगोडरभूसियउ तिसालउ  
माणखंभ ताहुप्परि संगय  
चउहुं मि दिसहिं चयारि समुण्णय  
अरुहणाहपडिमापरिवारिय  
पुणु वीवीउ सकमल ससलिलउ  
तीररयणकरमंजरिदित्तउ  
कुवलयाधारिउ णं गिवसत्तिउ  
दिसधाइयपाणियकल्लोउ

पसरियणाणामणियरजालउ ।  
सँधय सँचामर सघंटा णं गय ।  
दंसणमेत्तेण जि ह्यजयमय ।  
फणिदाणवमाणवजयकारिय ।  
खगमाणियउ णाई खगमहिलउ । 10  
चउपइयापरियम्मविचित्तउ ।  
भमियरहंगउ णं रहउत्तिउ ।  
पुणु खाइयउ रमियइसमालउ ।

वत्ता—पहसियसररुहणहिं वाउग्गयतिगिंछिहिं ॥

परिहउ णाई णियंति देवागमणु चलच्छिहिं ॥ २१ ॥

15

## 22

हेला—जहिं महिउ रईए हँसीहिं मत्तहँसो ।

सुरवहुकैरिणियाहिं सुरहत्थिहत्थफँसो ॥ १ ॥

पुणरवि अंतरि णवदुमवेल्लिउ  
पँत्तिहिं रत्तउ णं वरवेसउ  
कंठइयउ णं पिययममिलियउ  
णं वरकइवायउ कोमलियउ  
वित्थरियउ अहिणवरससारउ  
का वि वेल्लि तहिं वेढइ कंचणु  
लग्गी का वि ललंति असोयइ

कुसुमालउ णं वम्महमल्लिउ ।  
फलणमियउ णं सुहिपरिहासउ ।  
णच्चंति व माहयसंचलियउ । 5  
लाडालावहुं पासिउ ललियउ ।  
णं कामुयमईउ सवियारउ ।  
सयल वि णारि समीहइ कंचणु ।  
जिहँ तुय तिह किर रमइ असोयइ ।

४ B सवय. ५ MBK सचमर. ६ MBP बावियउ. ७ M णिवजुत्तिउ; B °जोत्तिउ. ८ M तिगिच्छिहिं; B तिगिच्छिहिं; P तिगिच्छिहिं.

22. १ P जाहिं and gloss यासु खातिकासु. २ M हंसहिं. ३ MBP करणियाहिं. ४ MBP पत्तहिं. ५ MB जिह तिह किर; P जिह तिय तिह and gloss यथा क्री; K तुय but corrects it to तिय.

10 a वावीउ वाप्यः. 11 a °करमंजरि° किरणसंघातः; b चउपइया° चउप्पयिकाः चउपिक्खोपानाः. 12 b °रहंगउ रथाङ्गचकं चक्रवाक्यः; रहजुत्तिउ रथयुक्तयः. 15 णियंति पश्यन्ति.

22. 1 महिउ वाञ्छितः; रईए रतिनिमित्तम्. 6 b लाडालावहुं लाटालंकारालापमिव. 7 b स-विचारउ विचारसहिताः, अन्यत्र सविकाराः. 8 a कंचणु चम्पकवृक्षः.

लम्पी का वि गंपि पुण्यायहु  
क वि मायंदहुं संगु ण खंचई

होई गियंविणि फुड पुण्यायहु । 10  
णिवरोहिणिहि लील णं संचई ।

घत्ता—किसलयदलफलगोंछुं चलचंचुइ गिल्लुरइ ॥  
अंमरु कीरवेसेण तेत्थु को वि रइ पूरइ ॥ २२ ॥

23

हेला—चितियवेसधारिणो जणियकामभावा ।  
वेल्लीवैणलयाहरे जहिं रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ रुइरिद्धउ  
अण्वेसु णं कामकडक्खहु  
जहिं चउगोउराइं संविहियइं  
अट्टोत्तरसयसंखासदइं  
तहिं विंतर पडिहारसमत्था  
पुणु पंणिहिउ उहयमि विसालउ  
ताउ तिभूमिउ णवरसजुत्तउ  
बहुवज्जउ वहरायरभूमिउ

णं जिणेण वयपरियरु बद्धउ ।  
गुरुपायार पार णं दुक्खहु ।  
जहिं बहुमंगलदव्वइं णिहियइं । 5  
णव वि णिहाणइं हयदालिइइं ।  
भीयरकुलिसगयासणिहत्था ।  
चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।  
णाइं पउत्तिउ सुंकरपउत्तउ ।  
आयउ णं ओलग्गहुं सामिउ । 10

घत्ता—उहयदिसहिं कुहिणीहि पुणु वि कया वि ण णिट्ठिय ॥  
दो दो दिण्णसंधूव तहिं धूवहंड परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अवसें णारि होइ पुण्यायहु. ७ BP खंचइ. ८ M अंचइ. ९ B गोच्छ. १० MBP अमरु वि कीरमिसेण.

23. १ B वल्लीवण. २ MT पणिही; BP पणहीउ. ३ MBP सुकइणित्तउ. ४ MB सुधूव; P सुधूवा. ५ M धूवहंडण.

10 b पुण्यायहु पुरुषप्रधानस्य. 11 a मायंदहुं वल्लीपक्षे आम्नाणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मीश्वन्द्रश्च तयोः; b णिवं चन्द्रः.

23. 4a अण्वेसु अप्रवेशः. 8 a पणिहिउ मार्गाः. 9 a तिभूमिउ त्रिभूमियुक्ता. 10 a बहु-  
वज्जउ बहुवादित्रा बहुहीरकाश्च. 11 कुहिणीहि मार्गस्य. 12 दिण्णसंधूव दत्तखड्गपाः; धूवहंड धूपघटाः.

## 24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।

णं जिणकम्मकालिया भमइ सुकदेहा ॥ १ ॥

पुणु खयरामररामारमियइ	चउणंदणवणाइं परिभमियइं ।
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलिणइं	कीलागिरिवरकेलीभवणइं ।
चउगोउरतिसालपरियरियउ	पीदु तिमहलु मणिविफुरियउ । 5
तिथु असोउ असोयवणंतरी	तहु पडिमाउ चयारि दियंतरी ।
कोहमोहमयमाणे चत्तउ	सीहासणछत्तत्तयुत्तउ ।
अत्थि अणयदेवकयपुज्जउ	णिहयणिरंगउ णिर णिरवज्जउ ।
संज्ञा इव सुवण्णरुइरौइय	पुणरवि चउदुवारवणवेइंय ।
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंथुय	थिय गयणयललमा पवणुधुय । 10
मालावत्थमोरकमलंकहिं	हंसगरुडहरिविसकरिचक्कहिं ।
भूसियपडिधयपहपरिकहु	अट्टोत्तर सउ सउ एक्केकहु ।

घत्ता—अण्णहु कासु तिलोए सोहइ णहि घोळंतउ ॥

कुसुममालधउ तासु कुसुमाउहु जे जित्तउ ॥ २४ ॥

## 25

हेला—कहइ व किंकिणीण घोसेण घोळमाणो ।

अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा महु रुसेज्जसु	कुसुमकरालहु करुण करेज्जसु ।
जो अंबर तवचराणि ण भावइ	अंबरचिंधु तासु धुंयु आवइ ।
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ	सिहिजयंति सो अवसें पेच्छइ । 5
जो णिवकमलहि होइ परंसुहु	तहु कमलद्धउ णिच्छउ संसुहु ।

24. १ MBPT add after this: कंकेलीचंपयसत्तयलहिं, संछणहिं साहारहिं सरलहिं.  
२ MBP राइउ. ३ MBP वेइउ.

25. १ MBP धुउ.

24. 12 a °पइ रि कहु प्रचुरतरस्य.

25. 5 a सि हि वेसु लिवा: वेप: b °जयंति पताका खजः.



परमहंसु जो सच्चउ बुज्झइ	हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।
अमयवंभपउ जो जइ दावइ	विणयासुयवडाय सो पावइ ।
सीहेणेव जेण वणु सेविउ	सीहविंधु तहु केण ण भाविउ ।
जेण ण पसु घाउ णियमग्गइ	तासु जि वसहु थाइ विंधग्गइ । 10
पसुवइ सो जि भडारउ बुच्चइ	दुट्ट अवर किं अप्पउ सुच्चइ ।
जो पंचिदिय दुइम पीलइ	पीलु तासु धयवह अणुसीलइ ।
मोहचकु जै चप्पिवि चूरिउ	चकुं चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

यत्ता—पुणु पायारु विचिचु चउदुवार सुपसत्थ ॥

जहिं थिय णायकुमार मरगयइंइविहत्थ ॥ २५ ॥

15

## 26

हेला—पुणु वि धूवदोहडी पवरणइसाला ।

अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उब्बसिरंभतिलोत्तिमणामउ	जहिं णहंति तियसाहिवरामउ ।
पुणु दीहर दहविह कप्पहुम	दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।
पुणु वेइय कलहोयहु केरी	पियकंता इव सुहइं जणेरी । 5
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं	दरिसावियवहुमंगलवत्तइं ।
णिचु जि कीलियसुरसंघायहं	भंभाभेरिपडहणिणायहं ।
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं	पंति हारतारासुच्छायहं ।
पुणु धूहइं मँणितोरणमालउ	पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ	कप्पदेवपरिरिक्खियदारउ । 10
सुद्धायासफलिहसंपत्तिउ	तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउं ।

२ MBP चक्कविंधु.

26. १ MBP पुणरवि धूयदोउडी. २ B कलहोइय. ३ MBP णिण्णायहं. ४ MBP पुणु तोरण°. ५ B तित्तिउ.

8 ठ विणयासुय° गरुडः. 11 a पसुवइ पशुपतिः शिवः.

26. 1 °दोहडी द्विषटी घटद्वयम्. 2 अहिणवेत्यादि उब्बसिरंभादीनां विशेषणम्. 5 a कलहोयहु सुवर्णस्य. 9 a धूहइं रत्नस्तूपाः;

घत्ता—तहिं मंडवमज्झत्यु वेरुलपहिं समारिउ ॥  
सोलहपयठवणेहिं पीडु सुहाइ गिरारिउ ॥ २६ ॥

## 27

हेला—चउदिसु तासु उवरि कल्लाणदविणसारा ।  
जम्भसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्रधारा ॥ १ ॥

अवरु हिरण्णवीडु तडु उप्परि  
रयणरहंगदुरयगोधारिहिं  
उरयवहरिदामयतणुअंकहिं  
पुणु वि तितीरु रइउ पीडुल्लउ  
जंबुणयचामीयरघडियउ  
भरगयणिम्मियदीहरदिव्वहिं  
छत्तइं तिणिण ताइं उद्धरियइं  
दिसिगयपंडुरकरणिउरुंवइं  
भामंडलु मंडलु णं भाणुहि  
णिण्णासियडुइंसणदिट्ठिहि  
रत्तपुष्पथवपहिं पसाहिउ  
कंकेल्लि र्व पल्लवसोहिल्लउ  
जिह जिह देवडुं दुंदुहि वज्जइ

अट्टकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।  
आरणाळसुंसिचयहरिणारिहिं ।  
सोहइ धयहिं गलियमलपंकहिं । 5  
तासुप्परि सीहासणु भल्लउ ।  
विमैलु समंतभइमणिजडियउ ।  
सहइ लट्ठि कक्केयणपव्वहिं ।  
णिम्मलाइं णं णाहु चरियइं ।  
तिणिण वि णावइ ससहरविंवइं । 10  
अइ आसंकेप्पिणु सँब्भाणुहि ।  
सरणु पइट्टउ णं परमेट्ठिहि ।  
जिणमणिग्गउ राउ व राइँउ ।  
मत्तंसकुंतमिडुणु रमियल्लउ ।  
तिह तिह धम्मजलहि णं गज्जइ । 15

घत्ता—णं आघोसइ एम दुंदुहिसरेण गहोरे ॥

पणंवहो तिहुवणणाहु जे सुच्चु संसारें ॥ २७ ॥

27. १ M सुसिवय°; B ससिवय°. २ MPK सिहासणु; B सिहासणु. ३ MB विमल°. ४ B सुब्भाणुहि. ५ B रत्तउ पुष्प°. ६ MBP जिणमय°. ७ MBPT राहिउ. ८ MBP वि. ९ M मत्तसकुंतम-  
सिडु णरमियल्लउ; BP मत्तसकुंतमिडुणु रमियल्लउ, but T सकुंता पक्षिणः. १० MBP पणवह.

12 समा रिउ इतम्.

27. 4 a रयणरहंग रत्नवक्काकः; दुरय हस्ती; गोधारि वृषभः; b आरणाळ कमलम्; सुसिचय शोभावल्लम्. 5 a उरयवहरि गहङ्गः; दामय पुष्पमाला. 6 a तितीरु उपर्युपरि तिभिस्तारैर्युक्तम्. 7 a जंबुणय° सुवर्णम्; चामीयर° रूप्यम्. 8 b कक्केयण° स्फटिकः. 11 b अइ आसंकेप्पिणु अतीव भीत्वा; सँब्भाणु हि स्वर्भानो राहोः. 13 b राइउ शोभितः. 14 b मत्तसकुंतमिडुणु दृष्टपक्षियुग्मम्; रमियल्लउ क्रीडनयुक्तम्.

28

हेला—अविरलकुंदकुडयमंदारपंकयाइं ।

समसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइं गयणहु  
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं  
जक्खकरयलंदोलणचवलइं  
खीरतरंगा इव परिघुलियइं  
पंडुराइं चमरइं सुविसिद्धइं  
जं जं सुंदर लच्छिहि अंगउ  
तं तं सयलु वि तहिं जि समप्पिउ  
णियपहणित्तेइयचंदक्कउ  
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं

तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।  
पीयपासपडियाइं व हंसइं ।  
गुणठाणारुहणाइं व विमलइं । 5  
कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।  
दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।  
जं जं काइं मि तिहुयणि संगउ ।  
को वण्णइ जंभारिवियप्पिउ ।  
समवसरणु गयणंगाणि थक्कउ । 10  
सेणियं कहियउ जिणवरणाणइ ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिंदे धणुपंचसपहिं धल्लिउ ॥

तरुघरगिरिखंभाइं सो वारहगुणु बोळिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्टगुणेण संदभावेण संपउत्तो ।

गाढं धूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणपं वेउव्विउ जायहिं  
जय जिण कण्ह रुह चउराणण

इदं णविउ भडारउ तावहिं ।  
जय तवरामारइसुहमाण ।

28. १ MB पियपायसपडियाइं; P पियपासपडियाइं. २ MBP तिहुयणि काइं मि. ३ MBP उण्णयमाणे. ४ MP add after this: विंसहससोवाणविहाणे, चउदिसविरइयहत्थपमाणे; B adds these after सेणिय कहियउ जिणवरणाणइं. ५ MBP सेणिय कहिउ जिणे वरणाणे. ६ MBP पचल्लिउ; T पक्खल्लिउ. ७ P पब्बुल्लिउ and gloss कथितम्.

29. MBPK अट्टउणेण.

28. 4 a °पसंडि दंडइं कनकमया दण्डाः; b पीयपासपडियाइं पीतपाशवन्धकनकदण्डैः पाशस्य उपमा धृता. 12. उच्छेहु उत्सेधः; व ल्लिउ कथितः.

जय कैलिकलिलसलिलसोसणरवि	जय वासरईसरदेहच्छवि ।	5
जय मणतिमिरभारहरणखम	तियसकिरीडमउडमंडियकम ।	
जय तिसल्लेवेल्लीवणछिंदण	जय कंदप्पदप्पभडमइण ।	
कोहकलंकपंकओसारण	जय माणइरिसिहरमुसुमूरण ।	
मायापावभावविद्दावण	जय लोहंधयोरउड्ढावण ।	
तिट्टारयणीयरिसंधारण	जय सत्तभयकुरंगविधारण ।	10
जय मयमयगलकुलकंठीरव	जय जगबंधव महियतिगारव ।	
पढमपुरिस परमण्य संकर	जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।	

घत्ता—वंदिउ एम जिणिंदु तहिं वत्तीसहिं सकहिं ॥

उज्जोइयभरहेहिं पुष्पयंतणामंकिहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसड्ढिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय

महाभव्वभरहाणुमणिण महाकव्वे रिसहकेवलणापुष्पत्ती णाम

णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥

॥ संधि ॥ ९ ॥

१ M कयकलिल°. ३ M तिसल्लवल्ली°. ४ MBP °भावउड्ढावण. ५ MBP °धयारविद्दावण; P लोहंधयारि विद्दावण.

29. 5 a °कलिल° पापम्. b वासरईसरदेहच्छवि वासरो दिवसस्तस्य ईश्वर आदित्यः तस्य देहस्य छविः कान्तिराकारो वा यस्य. 6 b °किरीड° त्रिशेखरो मुकुटविशेषः. 10 a तिट्टारयणीयरि° तृणैव रजनीचरी राक्षसी. 11 b महियं मथितानि.

X

परमेसरु थुणिउ पुरंदरेण परिसेसियभैवभयमरणरिण ॥

परमपय महु पसीय सुसम सैमवसरणपरिरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—तुह पहु वंदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहसि मच्छरं ।

तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुहं वीयराउ णिधूयकम्मु	तुहं हिंसावज्जिउ परमधम्मू ।	5
जो पई सेवइ तहु होइ सोक्खु	तुह पडिक्कैलहु संभवइ दुक्खु ।	
तुहं पुणु दोहिं मि मज्झत्यभाउ	ईहं एहउ कुड वत्थुहि सहाउ ।	
णिदिज्जइ रवि पित्ताहिपहिं	चंदु वि वाएण णिवाइपहिं ।	
ते दोणिण वि एयहं किं करंति	ससहावें णहयलि संचरंति ।	
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम	भुवणोवयारि जिण तुहं मि तेम ।	10
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि	तहु तण्हइ णिवडइ तिच्चमारि ।	
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु	सरवरहु ण एण णै तेण कज्जु ।	
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि	तिह तुहं वि सहावें दुरियहारि ।	
अणवरउ भडारा भूयसामि	जहिं तुहंइ तहिं हउं समउ जामि ।	

All Mss. have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

अगं रम्मं हम्मं दीवओ चंदविंबं  
धरत्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्था ।  
पिया णिहा णिचं कव्वकीला विणोओ  
अदीणत्तं वित्तं ईसरो पुप्फयंतो ॥

MBP however read धरत्ती for धरत्ती; सुवत्थं for सुवत्था; and पुप्फयंतो for पुप्फयंतो in the above stanza.

1. १ MB ° भवभयमरणरिण; P ° भवभयमरणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण. ३ MBP पडिक्कलहं. ४ M इय. ५ K णं तेण. ६ B तुहंइ तहिं हउं सउं; P तुहंइ हउं समउ.

1. 4 अणयपणयाण अनतानां प्रणतानां च. 8 a पि ता हि एहिं पित्ताधिकैरेः; b णि वा इ एहिं पीडितैः 12 a र स इ आस्वादयति; तिसणा सु तृषानाशः; स ज्जु सयः. 13 a गरुलमंतु गरुडमन्त्रः; गरलंतयारि विषविनाशकः.

जहिं तुहुं तहिं ससुरु समग्गु सग्गु

जई हउं तहिं मणिमउ भूमिमग्गु । 15

घत्ता—तहिं समवसरणि जंमारिकण परंहियबुद्धिइ संचरइ ॥

सुरंणरतिरियहं सुहयरणु धम्म भडारउ वज्जरइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—आरुढो वरमि उवयदिसिरमि व हरिणलंछणो ।

सोहइ सेंधुरारिवीढमि विहट्टियकम्मबंधणो ॥ १ ॥

अइसय दह जाया सह भवेण

चउवीस अवर णाणुब्भवेण ।

जगि अरहंतहु पर संभवति

जे ते पहा गणहर कहंति ।

गव्वुइसैयाइ चयारि जाम

वित्थरइ सुंहिकखु सुखेउ ताम । 5

ण वि कासु वि प्राणिहि प्राणणासु

गयणयालि गमणु परमेसरसु ।

णउं भुत्ति पवत्तइ णोवसग्गु

सरलक्खिपक्खपक्खेउ भग्गु ।

छाहियइ विवज्जिउ होइ गत्तु

अवर वि असेसुं विज्जेसरत्तु ।

परिमिय थिय कररुह णील केस

भूपसु मेत्ति पिसुण वि ण वेस ।

भास वि णीसेससररीगम्म

णाणाभासहिं परिणवइ रम्म । 10

महु तिच कडय परिणइवसेहिं

जलधारा इव बहुदुमैरसेहिं ।

७ MBP जहिं तुहुं तहिं; K जई हउं but corrects it to जहिं; ८ MBP add after this the following line: पइ दिण्णाणइ वइसरमि जामि, तुह वयणामइ तिसिं ण जामि. ९ MBPT परिचितिय-सुवियारसु and gloss in T भव्यैश्चिन्तितार्थानां शोभनो विचारः सभायां यस्य, शोभनं विचारं वा सहते क्षमते यः स तयोक्तः, but P records in the margin a p परंहियबुद्धिइ संचरइ. १० MBP चउ-देवणिकायहिं ( M °णिकायहं ) परियरिउ आसणसंठिउ दिट्ठु पहु, but P records in the margin a p सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्म भडारउ वज्जरइ.

2. १ MBP सिंधुरारि°. २ B णाणुब्भवेण. ३ L °चयारि सयाइ. ४ MBP सुमिक्खु. ५ MBP पाणिहि पाण°. ६ M ण व. ७ MBP °विकखेउ. ८ MBPT असेस°. ९ P °दुमसरेहिं.

15 a ससुरु देवैः सह.

2. 1 उवयदिसिरमि उदयाद्रिशिखरे. 2 सेंधुरारि वीढमि सिंहासने; विहट्टिय° विघटित°. 4 a पर केवलम्. 5 a गव्वुइ° गव्यूतिः. 7 b °पक्ख पक्खेउ पक्ष्मणां प्रक्षेपो मेघोन्मेषगतः. 8 b असेसु विज्जेसरत्तु परिपूर्णं विद्येश्वरत्वं केवलज्ञानमागमो वा. 9 b वेस द्वेषाः. 10 a °गम्म परिच्छेद्या.

छक्कालसमयसंपयकरेण महिरुह णमंति गुरुफलभरेण ।  
 आवंसणसंणिह महि विहाइ परमाणंदे जणु जणि ण माइ ।  
 मंथर सीयलु तरुसुरहिसार ज्ञेयणपमाणु वियरइ समीरु ।  
 अणुगच्छंतउ णाहहु सुहाइ पच्छइ लग्गउ णेहेण णाइ । 15

घत्ता—जलं दुधु वहंति तरंगिणिउ सामिउ विहरइ जहिं जि जहिं ॥  
 तणं कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं ॥ २ ॥

## 3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियाल्लिकुलेहिं माणियं ।  
 यणियकुमार मेह वरिसंति मेहावरंगंधवाणियं ॥ १ ॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिचुलंति णलिणाइं सत्त सत्त जि चलंति ।  
 जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु सुरसंजोइउ संचरइ विमलु ।  
 पँवडु पहुत्तणु भुवणि कासु हरि कुलिसधारि धरि जाँसु दासु ।  
 अट्टारह वरधण्णइं धरंति रोमंथिय णच्चइ णं धरिस्ति । 5  
 णहु सदिस्सु वि रेहइ मलविहीणु धोयंवणीलमाणिकभाणु ।  
 दिव्वड्डणि पवियंमइ पविस्ति वसुसमसहासधणुमाणलेत्ति ।  
 जर्किखदसिरारुद्धउ विचिस्सु रयणाररत्तु रविर्विबु दित्तु ।  
 लीलासंबोहियमव्वचँकु तहु अंगगाइ गच्छइ धम्मचक्कु । 10  
 जो पेच्छइ दूरहु माणु खंभु तहु विहड्डइ माणकसायडंभु ।  
 णिज्जियवहुसमयणयंतराइं परवाइ वि देंति ण उत्तराइं ।

१० MBP अणुगच्छंतहु, ११ MB जलु दुधु, १२ B तिण.

3. १ P वरिसंत, २ MBP महारव°, ३ P संचलइ, ४ B एवहु°, ५ MBP कासु, ६ MBP रयणारादंदुरदिव्वदित्तु, ७ MB °चक्कु, ८ MBP अग्गइ, ९ MB माणखंभु.

12 a छ काल° षड्कतवः, 14 a मंथर मन्दः; तरुसुरहिसार तरुणां सुरभिः सौरभं तेन सार उत्कृष्टः.  
 15 a सुहाइ सुखायते.

3. 3 a परिचुलंति विलसन्ति. 6 a अट्टारह वरधण्णइं गोधूमशालियवसर्पपमावसुद्रश्यामाक-  
 कहुतिलकोद्रवराजमावाः । कीनाशनालमथ वैणवमाडकी च शिम्बा कुलंथचणकादि सुभीजधान्यम्. 7 a सदिस्सु  
 दिशासहितम्; b °भाणु भाजनम्. 9 b रयणाररत्तु रत्नमयैरैः सहितं अत एव रत्नम्; 12 a णिज्जियवहु-  
 समयणयंतराइं निर्जितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि शुक्तिविशेषा यैः.

पंडिहाहय भंड्यइ थरहरंति      अविहंडिउ भोगव्वउ वहंति ।  
 अवियंरु पहादुसियळणिंदु      दीसइ चउदिसहिं मुहारविंदु ।  
 बारहकोट्टेसु वि जे वसंति      ते ते भुंडं महु संसुहु भणंति । 15

घत्ता—मउलियकराँउ पणावियसिरउ सच्छंड गव्वविमुक्कियउ ॥  
 परिवाँडिइ कोट्टि णिचिट्ठियंउ तहिं पयाउ हयदुक्कियउ ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—गणहर कप्पवासिसुररमणिउ अज्जियसंघं गइरई ।  
 देविउ वणणिवासदेवाण वि भावणतरुणिसंतई ॥ १ ॥

पुणु दह कुमार वेंतरसुरिंद      पुणु जोइस कप्पामर णरिंद ।  
 पुणु तिरिय विर्येडदाढाकराल      केसरि कुंजर सहूल कोल ।  
 वैइसंति गणेसाइ व क्रमेण      ज्जिणभत्तिवंत भूसिय समेण । 5  
 णव णव पंचविहहिं रुढएहिं      सव्वहिं सविमाणारुढएहिं ।  
 सीहासणु मेळिवि खइयभाउ      अहमिंदहिं छुंड विद्धत्थराउ ।  
 जसरवितोसियजगपंकएहिं      उग्घोसियकुलण्णामंकएहिं ।  
 मउडावल्लिउं बियमहियलेहिं      घोळंतकुसुममालाचलेहिं ।  
 उवगीईगाहारंधपहिं      उच्चारियल्लियथुईसपहिं । 10  
 संथुउ सोहम्मीसाणएहिं      अवरोहिं मि तियसपहानपहिं ।

१० MBP पडिभा°; T परिहा° and gloss प्रतिभा. ११ B भइए. १२ MB अवियारपहा°; B अवियारपिया°. १३ MBP महु महु संसुहु. १४ MBP °करउ. १५ BP सव्वउ. १६ MP परिवारिए. १७ MB णिविट्टउ.

4. १ MBPK °संथु. २ MBP फुरिय°. ३ M वइसंत. ४ MBP गणेसाइय. ५ M संथुउ. ६ P °णामंकिएहिं.

13 a पडिहाहय आसुत्रप्रतिपत्तिः प्रतिभा सा हता येषाम्; b अविहंडिउ परिपूर्णम्. 14 a अविहार अविकारः. 17 परिवाडिइ परिपाटिकया क्रमेण; पयाउ प्रजाः.

4. 1 गइरई ज्योतिष्कस्त्री. 2 वणणिवास° व्यन्तरा देवाः; भावण° भवनवासिनो देवाः; संतई श्रेणी. 5 a गणेसाइ गणधरादयः. 6 a रुढएहिं प्रसिद्धैः. 7 a खइयभाउ क्षायिकभावो जिनेश्वरः. 10 a °खेघएहिं स्कन्धकवृत्तैः.



यत्ता—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुपाससिहि ॥

जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविसहरविंलयविरहिया ।

जय भगवंत संत सिव सकिच णिवंचियचरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकईकहियणीसेसणाम

भीमंथण णियरिउवग्गमीम ।

वामाविमुक्क संसारवाम

जय तिउरहारि हर हीरधाम ।

जय पयडियधुयससंयभुभाव

जय जय सयंभु परिगणियभाव । 5

जय संकर संकर विहियसंति

जय ससहर कुवल्यदिण्णकंति ।

जय रुह रुहूतवग्गगामि

जय जय भवसामि भवोवसामि ।

महएव महागुणगणजसाल

महकाल पलयकालुग्गकाल ।

जय जय गणेस गणवइजणेर

जय वंभ पसाहियवंभचेर ।

वेयंगवाइ जय कमलजोणि

आईवराह उद्धरियखोणि । 10

सहिरण्णविट्ठिपडिवण्णगम्भ

जय दुण्णयणिहणण हिरण्णगम्भ ।

जय परमाणंतचउक्कसोह

भावंधंयारहर दिवसणाह ।

जय जण्णपुरिस पसुजण्णणासि

रिसिसंसंहिसाधम्मभासि ।

5. १ MBP वलय°. २ P सुकय°. ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्धन्मनेज्ञ. ४ MBP °ससइंभु°. ५ B परिगलिय°. ६ P °गणविसाल. ७ M पावंधपारहर; BP पावंधयारहर. ८ M रिससंस अहिंसा°; BP रिसिसंस अहिंसा°.

12 °पसुपाससिहि पशुप्राशः पलालं तस्य शिखी अग्निः. 13 हरण करणउद्धरणविहि हरणं मिथ्या-दर्शनादेः; करणं सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरणं दुर्गतिकूपे पततामुद्धृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिविधानं यस्मात्.

5. 1 °कंदल° कपालम्; °विलय° विलया वनिता स्त्री. 3 b भीमंथण भयहारक. 4 a वासाविमुक्क क्खीविमुक्क; संसारवाम संसारप्रतिकूल; b तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा विपुरस्य विनाशक; हीरधाम वैश्वस्य धाम. 5 b परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ. 6 a संकर संकरः सुखंकरः. 7 a रुहूतवग्गगामि उग्रतपसामग्रगामी; b भवोवसामि संसारोपशमकः. 9 b गणवइजणेर वृषभसेनादीनां शिष्याणां जनक. 10 v वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन. 12 a °अणंतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्; b भावंधंयार° अज्ञानम्. 13 b रिसिसंस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक.

जय माहव तिहुवणमाहवेस महुस्यण दूसियमहुविसेस ।  
 जय लोयणिओइय परमहंस गोवद्धण केसव परमहंस । 15  
 जगि सो केसउ जो रायवंतु तुह णीरायहु कहिं केसवसु ।  
 के सव ते सव जे पई हसंति जड पावपिंड रउरवि वसंति ।  
 जय कासव का सवविहि तुमम्मि णेरंतह चित्ति णिरोहु जम्मि ।

घत्ता—जय गयण हुयासण चंद रवि जीवय महि मारुय सलिल ॥

अटुंगमहेसर जय सयल पक्खालियकलिलकलिल ॥ ५ ॥

20

## 6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा ।

जय वइकुंठ विट्ठु दामोयर हयपरवाइवासणा ॥ १ ॥

णामाई पसिद्धई जाई जाई तुह देव अवंझई ताई ताई ।  
 इंदै चंदै उरयाहिवेण तुह णामहु लक्खिउ छेउ केण ।  
 मईविहवविहीणाहि आरिसेहि किं थुव्वसि तुहुं अम्हारिसेहि । 5  
 तौवत्तहि पंडरजसालपहिं कंत्तुइधम्माउहवाँलपहिं ।  
 एकहिं खणि भरहु कहिय वत्त भुंजहि महि महिवइ पक्कैलत्त ।  
 सयरायरवत्थुवियप्पजाणु परमेट्ठिहि अचल्लु अणंतु णाणु ।  
 राणियहि पुत्तु पक्कुल्लवयणु आउहसाल्हि वरचकरयणु ।  
 उप्पण्णु भडारा पुण्णवंतु तुहुं जासु जणणु अरहंतु संतु । 10  
 ता राएं अवरेहिं मि णरेहिं पणविउ जिणवरु सिरकयकरेहिं ।

१ MBP चित्तिणिरोहु, १० MBP जीव मही.

6. १ MBP मई विभव°. २ MBP ता एत्तहिं. ३ P पवर°. ४ MB °बालएहिं; P °पालएहिं  
 ५ MBP एयलत्त. ६ MBP °सालइ.

14 b दूसिय महु विसेस महु मयं थौदं दानवत्थ. 15 b गोवद्धण ज्ञानवर्धक. 16 a सो केसउ जो राय-  
 वंतु यः केशेषु रागवान् स केशवः; b केसवसु केशवत्वम्. 17 a केसवेत्तादि—के शवाः? ते शवाः; ये त्वां  
 हसन्ति. 18 a सवविहि मृतकाचारः. 19 जीवय यजमानः. 20 अटुंगमहेसर गगनाद्यष्टाभिस्तनूभिर्भुक्तो  
 महेश्वरः; सयल परमौदारिकशरीरयुक्तः.

6. 3 b अवंझई सकलानि. 4 b छेउ प्रान्तः. 5 a आरिसेहिं अभ्युत्पन्नैः. 8 a सयरायर-  
 वत्थु वियप्प° सचराचरस्य सक्रियनिष्क्रियस्य चेतनाचेतनस्य च वस्तुनो विकल्पा भेदाः.

पुणु चित्तिज किं जोयमि रहंगु किं तणयतोहं दरियारिभंगु ।  
 मज्झत्यु सच्छु णिम्मुकसंगु किं वंदमि मुणि सुद्धतरंगु ।  
 धम्मणेण सुररु कलत्तु पुत्तु पहरणु चि होइ णिइलियसत्तु ।  
 धम्मं संपज्झइ पुहविरत्तु करणिज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु । 15  
 गंभीरणायणिम्महियवेरि देवाविय लहु आणंदमेरि ।

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥  
 वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिउ णीसरिउ ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—पसो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं ।  
 मयराणणविणिसेमुत्ताहलमाललुलियितोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।  
 पउलोमीपियसेविज्जमाणु चउसट्ठिचमरविज्जिमाणु ।  
 जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण णं णेसरु णवपंकयसरेण । 5  
 णं मत्तमऊरं वारिवाहु णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।  
 णं सिद्धं संभावियउ मोकत्तु णं हंसं माणसु जणियसोकत्तु ।  
 कंपावियदिक्कहाहिवेण पारदु धुणहुं चक्काहिवेण ।  
 जय भुवणभवणतिमिरहरदीव जय सुइसंबोहियभव्वजीव ।  
 जय भासियपयाणेयभेय जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय । 10  
 सकयत्थइ कमकमलाइ ताइ तुह तित्थु पसत्थु गयाइ जाइ ।  
 णयणाइ ताइ दिट्ठो सि जेहिं सो कंठु जेण गायउ सरेहिं ।  
 ते धण्ण कण्ण जे पइ सुणंति ते कर जे तुहं पेसणु करंति ।

७ MBP °तुंहु. ८ MP भरहु णराहिउ; B भरहणराहिउ.

7. १ MBP °सरणं असुहहरणं; KT °सरणमसुहहरणं. २ B °विलित्त°. ३ BK °लिय°. ४ M तुव.

12 b दरियारि° दप्ताः शतवः. 16 a °णा य° नादः. 18 वेया लिय° भट्टवारणदिकाः.

7. 1 असुहहरणं अलुमनाशकम्. 2 °विलित्त° विनिर्गतः. 3 b तिउणियं त्रिगुणितः. 4 a पउलोमी° इन्द्राणी. 5 b णेसरु सूर्यः. 6 a वारिवाहु मेषः; b वाइएण रसायनकारकेण. 8 a दिक्कहाहिव लोकपालाः. 9 b सुइ° श्रुतिरागमः. 11 b तित्थु समवसरणं निष्क्रमणादिस्थानं वा.

ते णाणवंत जे पई मुणंति  
तं कञ्जु देव जं तुञ्जु रइउ  
तं मणु जं तुह पयपोमलीणु  
तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि  
तं मुहुं जं तुह संमुहउं थाह  
तेहोक्कैताय तुहुं मञ्जु ताउ  
णिट्ठवियडुडुकम्मट्ट सिट्ठ

ते सुकइ सुयण जे पई थुणंति ।  
सा जीह जाइ तुह णाँउं लइउ । 15  
तं धणु जं तुह पूयाइ खीणु ।  
ते जोह जेहिं तुहुं झाइओ सि ।  
विवरंमुहुं कुच्छियगुरुहुं जाइ ।  
धण्णेहिं कहि मि कह कह व णाउ ।  
दुट्ठोवसग्गणिहणेकणिट्ठ । 20

घत्ता—पंचाणणकुंजरजलजलणविसविसहररुथपयजुयणियंला ॥

पइं संभरिण जि परमजिण उवसमंति कयकलह खंला ॥ ७ ॥

8

दुवई—जय वईसमणचमरवेरोयणंसुरामरपसंसिया ।

सुरगुरुसुकसबुहअंगारयगहणहयरणमंसिया ॥ १ ॥

चरणइं तेरहगइभाविराई  
पयारह सिंगइं उणण्याई  
सीसाई पंच अह भणमि एकु  
बारह चोईह डेकारियाई  
रोमहं चउरासीलक्ख जासु

णयणाई पंच पददविराई ।  
उज्झयईं तिणिण किर णिणण्याई ।  
चउहुं मि पेरियरियउ तं जि थक्कु । 5  
अंगैइं दह विउसवियारियाई ।  
दुग्गोवइकुल संजणिय तासु ।

५ MBP णामु. ६ MBP तइलेक्क°. ७ BPKT °कटुकम्मट्ट. ८ MB °विसहरपय°; T रुय रोगाः.  
९ MBPK °णियल. १० MBPK खल.

8. १ MBP वइसवण°. २ MBP °वइरोयण°; K वैरोयण. ३ MB परियरियउ. ४ MPK चउदह.  
५ MBP अंगाई.

19 a °ताय रक्षक; ताउ पिता. 20 a सिट्ठ हे श्रेष्ठ. 21 °रुय° रोगाः.

8. 1 °च मरवेरोयण° चमरवेरोचनौ असुरेन्द्रौ. 3 a तेरहगइं पञ्चव्रतानि, पञ्च समितयसिद्धो  
सुसयः; b णयणाई पंच मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलानि. 4 a एयारह सिंगइं सम्यक्त्वायेकादशगुणस्थानानि  
श्रद्धाणि; b तिणि णिणण्याई मायामिथ्यानिदानानि शल्यानि, मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्राणि वा क्षीणि निन्नानि,  
वृषभपक्षे, स्कन्धकुटीमल्लकानि निन्नानि. 5 a सीसाई पंच सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराय-  
यथाख्यातानि पञ्च चारित्राणि, पञ्च महाव्रतानि वा; अह भणमि एकु अथवा एकं अहिंसाव्रतम्, सर्वसावधयोग-  
विरुद्धोऽस्मीति सामायिकं वा. 6 a बारह द्वादश अज्ञानि; चोईह चतुर्दश पूर्वणि वा; डेक्का रियाई शब्दाः;  
b अंगाई दह उत्तमजमादिदशप्रकारो धर्मः. 7 b दुग्गोवइ दुष्टा गोपतयः सर्वथैकान्तवादिनः.

जो कामधेणु सेविउ सुधामु  
दुद्धरवयभारधुरगु धरिवि  
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु  
जै लंघिउ भवदुर्णहु दुल्लेघु  
तहु वसहहु कयपणिर्वाउ भाउ

जै तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।  
अपवत्ति यति त्थ वहेण चरिवि ।  
वासमिउ असोयहु मूलि धीरु ।  
जो धवलु धवैल्लुं दुहु महग्घु । 10  
णियणिलइ णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥  
संसारदुक्खणिवेइयउ जोयंवि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—ता णिग्गतधीरदिव्वद्युणितोसियंफणिणरामरो ।

जीवाजीवणामकयमेयइ तच्चइ कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभेवामभव जीव दुमेय होंति  
चउँरासीजोणिहिं परिभमंति  
वियल्लिदिय सयल्लिदिय अणेय  
आहारसरीरिंदियमणाहं  
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु  
तं छव्विहु परमेसं पउत्तु  
जिह णारपसु तिह सुरवरेसु  
परमे तित्तीस सायरसमाइं  
पइंदिएसु चत्तारि होंति  
ता जाम असण्णउ पंचकरणु

ते समव सकम्मं परिणमंति ।  
अण्णण्णदेहरापं रमंति ।  
एकिंदिय भासिय पंचमेय । 5  
आणाभासापरमाणुयाहं ।  
तं पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु ।  
अहमेण ठाह अंतोमुहुत्तु ।  
दसँवरिससहासइं वसइ तेसु ।  
मणुएसु तिणिण पलिओवमाइं । 10  
वियल्लिदिएसु पंच जि कहंति ।  
सण्णउ पज्जत्तील्लक्खणु ।

६ MB ° दुप्पउ. ७ M धवलचंदहु; B धवलचंदहु; P धवलविंदहु and gloss समूहस्य. ८ MBPK कयपणिवायभाउ. ९ MB जाएवि.

9. १ B °तासिय°. २ M भव वामव. ३ MBP परिणवंति. ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमंति. ५ BP दहवरिस°.

8 b °दामु बन्धनम्. 9 b अपवत्ति यति त्थ वहेण अवसर्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमार्गेण.  
11 a °दुप्पहु दुर्मागिः. 14 जोय वि दृष्टा.

9. 11 a चत्तारि आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिश्वासलक्षणाः पर्याप्तयः.

एयहिं जे पज्जप्पंति गेय  
पँज्जप्पंतदु लमगइ खणालु

ते जंति अपज्जत्ता अणेय ।  
जगि सव्वदु भिण्णमुदुत्तु कालु ।

घत्ता—ओरालिउ तिरियहुं माणवहुं सुरणारयहुं विउँवियउ ॥ 15

आहारअंगु कासु वि सुणिहि कम्म तेउ सयलहं वि थियउ ॥ ९ ॥

## 10

हुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचमेयया ॥

पुहवी आउ तेय वाऊ वि य बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसजल सुईकलाव

परिध्राविरधयसंडाण भाव ।

तोरणतरुवेइयगिरियलेसु

सुरहरघसुसंखामहियलेसु ।

णाणाविहसायरि सरिसरेसु

पण्णारह जिणभँवभूयलेसु ।

5

अवरेसु वि बहुलेत्तंतरेसु

बंभंतपरिट्टियणहयलेसु ।

अइसरसरसातोयासपसु

एयाण कमेण जि होइ वासु ।

खरजलिण ण भिज्जइ वालुयाइ

सण्ही सिचियँ खणि वंधु लेइ ।

दुविह वि मट्टिय किर पंचवण

जइ होइ होउ संकिण्ण अण्ण ।

घत्ता—कसिणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥ 10

पैही महिकायहुं मउय महि पंचवण मइ वज्जरिय ॥ १० ॥

## 11

दुवई—कंचण तँउय तंव मणि रूपय खरपुहई पयासिया ।

वारुणिखीरखारघयमहुसम जलजाई वि भासिया ॥ १ ॥

६ MBP पज्जत्तदु लमगइ इय खणालु, ७ MBP विउव्विउ, ८ MBP थिउ,

10. १ K पुहई, २ MBP सायर°, ३ MBP जिणवरमहियलेसु, ४ MB सत्तिय; P सत्तिय,  
५ MBP कसणारुण, ६ P महिकायहुं जीवहुं मउय मही,

11. १ MBP तउय.

14 b भिण्णमुदुत्तु अन्तर्मुदुत्तः, 15 ओरालिउ औदारिकम्.

10. 4 a तोरण° द्वारादितोरणम्; b वसु संखामहियलेसु अष्टपृथिवीषु, 6 b बंभंत° लोकान्तः,  
8 b सण्ही मुटुः; c संकिण्ण मिश्रा,

दूरदु दरिसाधियधूममलिणु  
उकलि मंडलि गुंजाणिणाउ  
गुच्छेसु गुम्मवह्नीतणेसु  
सुपसिद्धु वणासइकाउ एसु  
पज्जत्तेयर सुदुमेयरा वि  
साहारणाहं साहारणाहं  
पत्तेयहुं पत्तेयइं गैयाइं  
वारहसहाससंवच्छराहुं  
आउहि परमाउसु सत्त झुणइ  
तइयइसहासइं गंधवाहु  
परमेण जि अइअवरेण उचु  
तुंदाहि कुक्खि किमि खुब्भ संख  
तीइंदिथं गोभिपिपीलियाइं

असणीं तडि रवि मणि जोईं जलणु ।  
दिसंविदिसाभेयं भिण्णु वाउ ।  
पव्वेसु रुक्खसाहाधणेसु । 5  
उप्पज्जइ जईं घोसइ जईंसु ।  
दुमसाहारण पत्तेय के वि ।  
आणापाणइं आहारणाइं ।  
छिंदणभिंदणणिहणं गयाइं ।  
सुदुमाहुं दह जि दह दो खराहुं । 10  
अहरत्तइं चिच्चिहि तिणिण भणइ ।  
दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।  
सव्वहं जीविउ अंतोमुहुचु ।  
वीइंदिथं मइं भासिय असंख ।  
चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं । 15

वत्ता—परिवाडिप किं पि णाणभवणु एयहं जुत्तिइ सावडइ ।

रसु गंधु णयणु फासहु उवरि पक्केकउं इंदिय चउइ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ट प्राणया ।

तेसिं हौंति एम पमणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिंदिय सणिण असणिण दोणिण

मणवज्जिय जे ते धुवु असणिण ।

१ MB °मणिजाइ. २ MBP दिशि°. ४ M दिण्णु; P भिण्णवाउ; ५ M सुवसिद्ध°; BP सुपसिद्ध°. ६ M जिइ; P जिउ. ७ MBPT पत्तेयगयाइं. ८ MBP णिहणइं. ९ M रंदाहि सुक्खि; रंदाहि कुक्खि; T तुंदाहि गण्डूपदः. १० MBM बेइंदिय. ११ MBP तेइंदिय.

12. १ M मणि.

11. 4 a °गुंजाणि णाउ चोषसच्चयुक्तः. 6 b जइ जगति. 9 b णिहणं विनाशम्. 10 b दह जि-  
दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि; 11 a आउ हि अपाम्; b चिच्चिहि अग्नेः. 12 a तइयइसहासइं त्रीणि  
वर्षसहस्राणि. 13 a अइअवरेण अतिजघन्येन. 14 a तुंदाहि गण्डूपदः. 16 णाणभवणु शानाश्रयम्;  
सावडइ संपथते.

सिक्खालावाहं ण लेंति पाव  
असु णव जि समत्तिउ पंच ताहं  
छहिं पज्जत्तिहिं पज्जत्तपहिं  
मणवयणकायरसघाणपहिं  
दहहिं मि जियंति सण्णिय तिरिक्ख  
जलयर झसाइ पंचप्पयार  
ण्हयर समुग्ग ँडवियडपक्ख  
थलयर चउपथ चउविह अमेय  
उरसप्प महोरय अजगराइ  
भुयंसिप्प वि वक्खाणिय समेय

अण्णाणगूढेदढमूढभाव ।  
वज्जरइ जिणिंडु असण्णियाहं । 5  
संफासणलोयणसोत्तपहिं ।  
आणाप्प्राणाउ अप्राणपहिं ।  
अक्खमि पाणाविह दुण्णिारिक्ख ।  
कच्छव मयरोहर सुसुयार ।  
अण्णेक्क चम्मघणलोमपक्ख । 10  
एक्खुर दुक्खुर करिसुणहपाय ।  
किं ताहं गइंदु वि कवलु होइ ।  
सरदुंदुरगोघाणामधेय ।

घत्ता—जलयर जलेसु खग तरुगिरिसु थलयर गामपुरेसु वणे ॥  
दीवोयहिमंडलमज्झि तहिं पंडमु दीडु भासंति जेणे ॥ १२ ॥ 15

## 13

दुवई—जोयणलक्खु लक्ख बंडुपविउल पुणु गयगणियमेरया ।  
अत्थि असंखदीववरसायरवलयारधारया ॥ १ ॥

जंबूदीवो धादईसंडो  
महरो खीरो घयमहुणामो  
कुंडलसण्णो संखो रुजगो

पुक्खरवरदीवो सुंगचंडो ।  
'णदीसो अरुणोरुणधामो ।  
भुजगवरो अवरो वि डु कुसगो । 5

२ MB गूढ धणगूढभाव; K मूढ घणगूढभाव but corrects it to गूढ धणमूढभाव. ३ MBP °पाणाउ.  
४ MBP अपाणपहिं. ५ M अहयर. ६ M पड; BP फड; ७ MBP दुक्खुर. ८ M महोरय.  
९ MBP किर. १० MBP सरिसप्प. ११ MBP पडमदीउ. १२ M जिणे; K जिणे but corrects  
it to जणे.

13. १ MBP तह. २ P धाइयसंडो. ३ MBP मिगचंडो. ४ MBP णामे. ५ MBP धामे.

12. ४ b अण्णाणे ल्यादि—न विद्यते ज्ञानं यस्मात्तदज्ञानं तेन गूढं प्रच्छादनं तस्माद् दृढा मुग्धभावा  
येषाम्. 5 a समत्तिउ पर्याप्तयः. 6 a पज्जत्त एहिं परिपूर्णैः. 9 b उहुर जलवरविशेषः.

13. 1 गयगणि यमेरया गतगणितमर्षादाः. ४ b अरुण धामो रक्तच्छविः. 5 a रुजगो रुक्कः.



कौंचो एवं दीवसमुदा	दूणपिहूँ दावियणियमुदाँ ।	
एयसुं तिरियाणं ठाणं	जलयरथलयरणहयरायाणं ।	
वियलिंदियपंचिंदिययाणं	एणिह वोच्छं कायपमाणं ।	
साहियजोयणसहसुच्छेहं	पउमं दीसइ वड्डियदेहं ।	
अवि य दुकरणो को वि वरिट्ठो	वारहजोयणदीहो दिट्ठो ।	10
होइ तिकोसो तिकरणवंतो	चउकरणिहो जोयणमेत्तो ।	

घत्ता—लवणणवि कालणवि विउले होंति सयंभूरमणि झस ॥

सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्टारह लवणसमुद्मच्छया ।

णंव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालोप दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहणवि जे वंहंति	ते जोयण पंचसयाइं होंति ।	
गयणंगणचरहं थलंभचरहं	संमुच्छिमगम्भसरीरधरहं ।	
कइवयचावइं काहं मि गणंति	तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।	5
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु	पज्जत्तिहहु जोयणसहासु ।	
जलगम्भजम्मि मवियाइं ताइं	पंचं जि जोयणइं सयाहयाइं ।	
एयहं तीहिं मि संमुच्छिमाहं	परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।	
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि	परमेणोगाहण णरविहत्थि ।	
थलगम्भयदेहि तिगाउयाइं	परमेण माणभावहु गयाइं ।	10
सुहुमहु बायरहुं मि धुइं पवण्णु	अंगुलअसंखमायउ जहण्णु ।	

६ MBP दूणं पि हु. ७ MB add after this: लवणोवहि कालोवहि सामें, सेस समुद् (B सो समुद् वि) वि दीवहु णामें.

14. १ M णवर सरी°; BP णव जि सरी°. २ BP वसंति. ३ P काहिं. ४ MBP पंच वि. ५ M विहत्थि; BP वियत्थि. ६ MPT विजत्थि. ७ MB धुउ; P धुव°; K धुउ.

6 दूण पिहूँ द्विगुणपृथवः; दा विय णिय मुदा दर्शितनिजाकाराः. 10 a दुकरणो को वि शंखः. 11 a तिकरणवंतो खज्जरकः; b चउकरणिहो भ्रमरः.

14. 1 सरीमुहेसु गङ्गादीनां समुद्रप्रवेशस्थानेषु. 2 दिसच्छया दिशां प्रच्छादकाः. 5 a काहमि केषांचित्. 7 b सयाहयाइं शतगुणितानि. 9 a विअत्थि विगतात्थि. 10 a तिगाउयाइं तिस्रो गम्भूतयः.

घत्ता—जगि सुहुमणिगोयसमुब्भवहं अवि यसमत्तहुं ण वि रहिउ ॥

णिकिहुं कुसुमयंतं पडुणा उंसिमु जलयराहुं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसमुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय

महाभव्वभरहाणुमणिणप महाकव्वे तिरिक्खोगाहणौ णाम

दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥

॥ संधि ॥ १० ॥

c M णिकिहुकुसुमपयंतं. ९ M उत्तम<sup>०</sup>; P उत्तमु. १० MBP तिरिक्खोगाहणा.

12 य स म त्त हुं य + असमत्तहुं अपर्याप्तानाम्. 13 णि कि हु सर्वजघन्यम्.

# XI

पुणु इंदियमेउ वम्महपसरणिवारण ॥

भासियउ असेसु लोयहु रिसहमडारण ॥ ध्रुवकं ॥

I

जाणइ सणिउ जो पज्जत्तउ  
णिहोयेणतिउ पुट्टपविट्टउ  
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ  
सैत्तेतालसहस्सइ दिट्ठिइ  
चक्खिदियहु विसउ वक्खाणिउ  
गंधगहणु अँवत्तसमाणउं  
दिट्ठिइ पडिम णिणज्ज मसूरी  
सँहरियतसँदेहेसु पयासउ

पुट्टउ सुणइ सहु गँयसोत्तिउ ।  
रुत्तुं णियच्छइ अपपरिमट्टउ ।  
वारहजोयणेहिं सुइ पावइ । 5  
अवरु वि दोणिं सयइ तेसट्टइ ।  
जेहउ केवलणाणं जाणिउ ।  
सवणु वि जवणालीसंठाणउं ।  
अक्खिय जीहं खुरुप्पायारी ।  
फासु अणेयरुवविण्णायउ । 10

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुरादेर्विधोः  
सौम्यत्वं कुसुमायुधाच्च सुभगं त्यागं बलेः संभ्रमात् ।  
एकोकृत्य विनिर्मितोऽतिचक्षुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतायै गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डकवेर्वल्लभः ॥

M reads विधौ for विधोः; MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभगं, and खण्डः कवेर्वल्लभः for खण्डकवेर्वल्लभः.

GK do not give it.

1. १ MP गयसुत्तउ; B गयसोत्तउ. २ MB णिलोयणु. ३ B तितपुट्टु. ४ MBP हउ. ५ MBP सत्तेचालीससहसइ. ६ MBP विणि. ७ MBP अइसुत्त. ८ MBP दिट्ठिहि. ९ M जीय. १० BT सुहरियं. ११ MB तसदेहेसु.

1. ३ a सणिउ समनत्तः; b पुट्टउ स्पृष्टः; गयसोत्तिउ श्रोत्रगतः. 4 a णिलोयणतिउ नेत्रं विना त्रीणि स्पर्शनरसनप्राणानि; पुट्टपविट्टउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकायाकारप्राणेन्द्रियप्रदेशैः स्पृष्टं गन्धादिकं जानाति; b अपपरिमट्टउ अस्पृष्टम्. 5 a णवहिं जि भावइ तवयोजनात् स्पर्शं गन्धं रसं जानाति. 6 a दिट्ठिइ चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि. 8 a अँवत्तसमाणउं अतिमुक्तपुष्पाकारम्; b जवणालीसंठाणउं यवकणसाम्बनालिकासदृशम्. 10 a °हरियं वनस्पतिकायः.

समचैउरंसु ठाणु सुरसत्थहु  
मणुयतिरिक्खहु ॐ पि पवुत्तइं  
खुंजउ वावणंगु गगोहउ  
पइंदिय पारइय सुसंपुड-  
वियलिंदिय वि वियडजोणीहव  
पारुइयजोणि देवणारइयहं  
सीयलुण्ह उण्हव हुयासहं  
मंथरगमणहं ससहरवयणहं

हुंड वि पारयगणहु अहत्थहु ।  
भोयभूमिवियलहु पढमंतइं ।  
उम्मासिउ तिरिक्खणररोहउ ।  
जोणिहिं हौति सकम्मसमुम्भड ।  
संपुड वियड हौति गम्मुम्भव । 15  
मीसा गम्भणिवासं लइयहं ।  
ताहं विहि मि तिविहा पुणु सेसहं ।  
संखावत्तजोणि थीरयणहं ।

ग्रन्था—तर्हि जीव अणेय णउ लहंति संपुण्ण तणु ॥

णियकम्मवसेण हौति मरेप्पिणु जेति पुणु ॥ १ ॥

20

2

हौति अरुह कुम्मुण्णयजोणिहिं  
अवरहि जोणिहि रहिरावत्तहि  
इंदियजुयल जियंति सहरिसइं  
तीइंदियहु मि राइविमीसइं  
चउरिंदियहु आउ छम्मासिउ  
मच्छहु पुव्वकोडि उवइट्टी  
वासहं बायालीससहासइं  
पक्खिहिं ताइं दुसत्तरि भणियइं

केसव राम चक्कि सुहखोणिहिं ।  
पायडजणवैयवंसावत्तहि ।  
मइं विण्णायउ बारहवरिसइं ।  
पैक्खणवण्णास जि किर दिवसइं ।  
णिसुणहि पंचिंदियहु वि भासिउ । 5  
कम्मभूमिभूरहं मि दिट्ठी ।  
उरय जियंति जायजीयसइं ।  
पलिओवमइं तिणिण परिणायिइं ।

१२ MB °चउरंस°. १३ MBP छ पि य उत्तइं. १४ K reads this line before line 12. १५ MBP पारयसुरसंपुड. १६ MBP फासुव°.

2. १ P °जणवइ. २ MBP एकुण°. ३ P °जीवासइं. ४ M °ओवम्मइं.

11 b अहत्थ उ अथोलोक्कवत्तिनः. 12 b भोय भूमि वियलहुं पढमंतइं अत्र यथाकम्मसंबन्धो भोगभूमिजानां प्रथमं समचतुरस्रसंस्थानं विकलेन्द्रियाणामन्त्यं हुंडसंस्थानम्; 14 a-b सुसंपुड जो णि हिं संवृतयोगो. 16 a पासुय अविता; b मीसा सविताविता. 17 a सीयलुण्ह केषांचिच्छीता केषांचिदुष्णा; उण्हव हुयासहं तेजस्कायिकानामुष्णैव योतिः; b ताहं बि हिं मि देवनारकाणाम्; ति विहा वीता उष्णा मित्रा च; सेसहं देवनारकतेजस्कायेभ्योऽन्येषाम्.

2. 3 a इंदियजुयल द्वीन्द्रियाः. 4 a राइविमीसइं रात्रिविमिश्रितानि. 6 b भूरहं भूचराणाम्. 7 b जायजीयसइं जाता जीविताशा येषु तानि.

खेत्तावेकखइ कहिं मि तिरिक्खहं  
मायाविय कुपत्तदाणेण वि

एहउ उत्तमाउ पंचक्खहं ।  
एए हौंति अट्टहाणेण वि । 10

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख एवहिं माणव चज्जरमि ॥

पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलोयमज्झत्थु सुहासिउ  
जोयणाहं णरखेत्तु रवण्णउ  
जंबूदीउ सव्वदीवेसर  
छावीसाइं पंच अहिययरइं  
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें  
उत्तरदाहिणाहं वेयड्डहं  
पंचवीस उच्छेहु समासिउ  
सहुं बावण्णहुं वित्थर साहिउ  
पंचुत्तरसपण सहुं लक्खिय  
अर्वरहिरण्वंतु तम्माणउ  
होइ महाहिमवहु रंदत्तणु  
दोणिण दहोत्तराइं थुंनु सिट्टउ

मणुउत्तरगिरिवलयविट्ठसिउ ।  
पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।  
पँकु लक्खु जोयणपरिवित्थर ।  
जोयणसयइं विहियणरणयरइं ।  
एँरावउ भणु तेणायँरें । 5  
पण्णास जि पिहुलत्तु गुणड्डहं ।  
एक्कु सहसु हिमवंतहु भासिउ ।  
सउ तुंगत्तें सिहरि वि सँहिउ ।  
दोणिण सहस हिमवइयहु अक्खिय ।  
साहिउ दोहिं मि पँकु पमाणउ । 10  
चउसहासअहियउ उद्धत्तणु ।  
हँम्मियगिरिदि वि तेत्तिउ दिट्टउ ।

घत्ता—खेत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥

मा भंति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3. १ MBP तिरियलोउ. २ MBP एकलक्खु जोयणहं पवित्थर. ३ MBP छव्वीसाइं. ४ MBP अदरावउ. ५ MB तेणुपयारें; P तेण पयारें. ६ MB पयासिउ; T पयाहिउ. ७ MB हइमवयहु. ८ MBP अवर. ९ MBP एक्क. १० MBP थुउ. ११ MBP रुम्मिहि दुविहु वि. १२ P खेत्तहु चउयुणु खेत्तु गिरि वि चउयुणु गिरिवरहो; T seems to have the same reading: खेत्तेयादि- क्षेत्रादुःगुणं (?) क्षेत्रं गिरिगिरिश्चतुर्गुणं.

12 ण वइ छ षण्णवतिः, तथाहि- लवणोदकसोमयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि.

3. 4 a अहिययरइं अधिकतराणि. 5 b तेणायारें तेन आकारेण. 6 a वेयड्डहं विजयार्थानाम्. 8 a साहिउ साधिकः; b साहिउ कथितः. 10 a तम्माणउ तत्प्रमाणम्; b दोहिंमि द्वयोरपि हेमवत-हिरण्यवतोः.

4

चउसयाइं दिहंतिसहासइं  
अहियइं किं पि होंति हरिवरिसहु  
अट्टसयइं सोलहसहसालइं  
साहियाइं णिसिहंहु पिहुलत्तणु  
णीलिहिं तं जि ण कोइ णिवारइ  
परमेसर तेत्तीससहासइं  
अट्टसयाइं सबायालीसइं  
उत्तरकुरुसुरकुरुहुं पउत्तउ

एकवीस जोयणइं पयासइं ।  
तं जि माणु रम्मयहु सहरिसहु ।  
ताइं जि जाणहि बाणतालइं ।  
सायरसयइं भणितं तुंगत्तणु ।  
विहिं मि विदेहइं रुदिम ईरइ ।  
उडुसयाइं चउरासीमीसइं ।  
अण्णु वि भणु पयासहसइं ।  
एउ माणु णउ ल्हसइ णिरत्तउ ।

5

यत्ता—लह खेत्तइं एम भोयमुत्तिसंतोसियइं ॥

इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहसियइं ॥ ४ ॥

10

5

पोमु णाम हिमवंतसरोवर  
एकु सहसु दीहत्तणु सुचइ  
एयहु अक्खिउ आगमि जेत्तिउ  
अवर महाहिमवंतु वरिद्धउ  
तिविहेण वि गुणेण उव्वलक्खिउ  
तिंगिळसर वि णिसहासीणउं

पंचसयाइं तासु परिवित्थर ।  
दहजोयणइं गहीरिम वुचइ ।  
सिहरिमहापुंडरियहु तेत्तिउ ।  
ओइल्लहु बिउणारउ भल्लउ ।  
णामु महापोमु जि मइं अक्खिउ ।  
होइ महापोमक्खहु बिउणउं ।

5

4. १ MBP होंति किं पि. २ MB रुम्मयहु. ३ MBP बाहतालइं. ४ MBP णिसहहु. ५ MBP पीलहु. ६ BP तेत्तीस°.

5. १ MBP पोमणामु. २ MBP हिमवंति. ३ MBP उवरिद्धु. ४ MBP ओलक्खिउ. ५ MB तिगिळि वि सर; P तिगिळि वि सर. ६ MBP महापउमक्खहु.

4. 1 a दिहंति सहासइं अट्टसहस्राणि. 2 a अहियइं तथोजनभागेनैकेनाधिकानि. 3 b बाएतालइं द्विचत्वारिंशत्. 4 a साहियाइं तथोजनभागद्वयेनाधिकानि; b सायरसयइं चत्वारिंशत्तानि. 6 b उडुसयाइं षट्शतानि; °मीसइं युक्तानि. 8 a °सुरकुरु° देवकुरुवः; b ल्हसइं चलति न्यूनं भवति.

5. 4 b ओइल्लहु उपरितनस्य. 5 a तिगिहेण विस्तारदीर्घत्वावगाहेन.

णिद्धणीलयरायणिविद्वु

तेवदु जि केसरिसर दिद्वु ।

सोहइ रम्मरम्मिकयठाणें

पुंडरीउ तहु अद्वपमाणें ।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिर्किंचिलच्छणामालियउ ॥

देवीउ वसंति सरवरि सुंकयकीलियउ ॥ ५ ॥

10

6

पोममहापोमहं तिगिछंहं

केसरिदोपुंडरियहं सच्छहं ।

जलपूरियगिरिकंदरियउ

सुणसु महाणईउ णीसरियउ ।

गंगा सिंधु रोहि भंगाली

रोहियास मंथरगइ लीली ।

हेंरि हरिकंत सीय सीओयय

णारी णरकंता वि महोयय ।

कणयकुल रूपयकूलाली

रत्ता रत्तोया वि झसाली ।

एयउ भणियउ चोहेंह सरियउ

वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ ।

अड्ढाइज्जहं पंच जि मंदर

बहुवेयडुखयरकुलसुंदर ।

5

घत्ता—वक्खारगिरिंद कुंडलरजगिरि सुकारगिरि ॥

खेत्तंतहिं अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियसिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीवहु बाहिरि थक्कइं

ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं ।

पढम सुसंकिण्णइं पुणु रुंदइं

ताइं होंति मल्लयपडिछंदइं ।

कयतिहेयगुणणें संजुत्तइं

कम्मभोयभावेण विहत्तइं ।

७ P महापुंडरीउ तहं अद्व°, ८ MK °दिहिकितिउदिलच्छि°. ९ M सुहकयकीलउ; BP सुहकयकीलियउ.

6. १ MBP तिगिछहं. २ B omits this line. ३ B omits this line. ४ P कसयकूल.

५ MP चउदह.

7. १ M सल्लइपडि°. २ B कयतिहेय गुणणे; P कयतिभेयगुणणे.

7 a °ण य रा य° नगराजः पर्वतः.

6. 3 a भंगाली कल्लोयुक्ता. 9 खेत्तंतहिं क्षेत्राभ्यन्तरेषु.

7. 1 b ठाणइं अन्तर्द्रोणाः; सहावामुक्कइं अपरिख्यकस्वरूपाणि. 2 b मल्लयपडिछंदइं शरावाकाराणि. 3 a °तिहेय° उत्तममध्यमजघन्याः, अवोमभ्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा; ७ कम्मभोयभावेण कर्मभूमिभावः स्वचेष्टया कलाहारादिग्रहणं तेन.

लवणसमुद्दि अट्टवालीसइं  
बहुजोयणसयमाणविसेसइं  
थीपुरिसइं दो दो रइरत्तइं  
विगयाहरणइं णिञ्चेलकइं  
रम्मइं सोमइं णिञ्चपहिट्टइं

कालोयइं तेत्तियइं जि देसइं ।  
संति कुभोयभूमिआवासइं ।  
भइसहावइं मणहरगत्तइं ।  
कण्हइं धवलइं हरियइं सकइं ।  
जिर्णणाहेहिं जिणागमि सिट्ठइं ।

5

घत्ता—एको रुयधारि पुंछंधारि तहिं सिंगधर ॥

पुन्वादिषु होंति उत्तरदिसि णिम्भास णर ॥ ७ ॥

10

8

सक्कुलिकण कण्णपावरण वि  
हरिसुह करिसुह झससामलमुह  
सइल्लाणण मेसविसाणण  
सयल वि उज्जय पंकयलोयण  
अट्टारइजहिं रवण्णा  
एक्कु जि पैलिओवमु जीवेण्णिण  
हरिहिमलोहियपीयलवण्णा  
हारदोरैकंकणकुंडलधर  
मइरंगहिं वीणापडहंगहिं  
भायणैभोयणंगभवणंगहिं  
एर्यहिं कण्णरुक्खहिं महि छज्जइ  
अहममज्झिमुत्तिमसुहसंगइं

लंबकण ससकण कुमणुय वि ।  
आदंसणमुह जलहर कइसुह ।  
सत्तारहतुरुहलरसमाणण ।  
एकोरुय गिरिमद्वियभोयण ।  
छण्णवइहिं खेत्तेहिं विहिण्णा ।  
होंति भवणवणवासि मरेण्णिण ।  
तीससुभोयभूमिवित्थिण्णा ।  
दिव्ववत्थ सिरवलइयसेहर ।  
विविहविहसणंगजुइअंगहिं ।  
अंबरदीवकुसुममालंगहिं ।  
भोउ गिरंतर मणुयहिं भुज्जइ ।  
ललियसहावइं गिरु ललियंगइं ।

5

10

३ MBP किण्हइं. ४ MBP जिणणहेण. ५ MBB दिट्ठइं. ६ MBP पुच्छधारि.

8. १ P जलहरमुह कइं. २ MPK पलियओवमु. ३ MBP उज्जण्णा. ४ P उओर. ५ MBP भोयणभायणंग. ६ MBP एहिं. ७ MBP रज्जइ. ८ B भाउ. ९ P भुज्जइ. १० BBP मुत्तम.

6 b भइसहावइं स्वभावमादिविशुक्कानि. 7 b सकइं रत्तवर्णानि.

8. 3 b सत्तारहतुरुहलरसमाण सप्तदशप्रकारास्सरुफलरसाहाराः. 4 b एकोरुय एकपादाः. 9 a मइरंगहिं मयाजैः.



पक्कु दु तिणि पल्ल जीवेपिणु

होति कप्पवासेसु चैपिणु ।

घत्ता—तीसैविह पउत्त भोयभूमि भुअ मणुय जिह ॥

सई कालवसेण अहुव दहाविह होति तिह ॥ ८ ॥

15

9

दहपंचविह कम्मभूमाणुस

मेच्छ चीण हुण पारस बब्बर

इड्डिअणिड्डिवंत अज्जणवर

वासुएव बलएव महाबल

होति अणिड्डिवंत णाणाविह

जिणु अहमेण जियइ वाहत्तरि

तहु अहिययरउ सीरि पउत्तउ

पुव्वहं चउरासीलक्खेयहं

पुव्वकोडिसामणु वि थिरकर

पक्खु मासु अयणइ संवच्छर

णर णिसैट्ठदवियंगकउग्गम

गम्भेसु वि गलंति तणु लेपिणु

उत्तमेण धणुल्लयहं णिसीहा

सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि

तम्हाओ वि होति लहुययरा

अज्ज मेच्छ इच्छामाणियरस ।

भासारहिय णिरूह णिरंवर ।

इड्डिवंत जिणवर चक्केसर ।

चारण विजाहर उज्जलकुल ।

लिविदेसीभासावत्तण बुह । 5

अहिउ सहसु वरिसई जीवइ हरि ।

सत्तसयाइ चक्कि णिक्खुत्तउ ।

परमाउसु जिणहरिवल्लरायहं ।

जीवइ कम्मभूमिजायउ णर ।

के वि जियंति कईवय वासर । 10

ते सज्जो मरंति संमुच्छिम ।

अवर वि कईवय दियइ जिपिणु ।

पंच सँवायइ सयइ पईहा ।

णिकिट्ठेण पउत्त उहत्थ वि ।

अइरहस्स वामण खुज्जयरा । 15

घत्ता—मणुप्सु ण होति सत्तममहिर्णारय विसम ॥

जिह ए तिह ते उ वाउकायकयभावतम ॥ ९ ॥

११ MBP मरोपिणु. १२ P तीस वि इह उत्त. १३ MBP अहुय.

9. १ P वच्छर; but it records a p ववर. २ M अहुउ. ३ M वरिसई. ४ MBP °बल-एवहं. ५ B णिसइ°; P विसट्ठ°. ६ M धणुण्णयहं. ७ MB सवाइ सयाइ; P सयाइ सवाइ. ८ MB णाराय.

9 2 b णिरूह परस्परविवादरहिता निर्विचाराः. 7 b णिक्खुत्तउ निश्चितम्. 8 a एयइ एतेषाम्. 11 a णिसट्ठदवियंगकउग्गम निखटं प्रस्वेदादिद्रव्यं तस्मादुत्पन्नाः. 13 a णि सी हा नृसिंहाः; b पईहा प्रदीर्घाः. 15 b अइरहस्स अतिलघवः.

होति के वि दूसहणिद्वावस  
 चरयपरिवायय बंभामर  
 जंति<sup>१</sup> तिरिक्ख वि तं जि जि वयहर  
 सावयवयहलेण सोलहमउ  
 रिसिवणहिं विणु पुणु तहु उप्परि  
 सत्तुमिच्चुतणमणिसमवित्तं  
 जिणल्लिगेण होति वयभरधर  
 आ सव्वैत्यसिद्धिं णिगंथहं  
 णारउ मरिवि ण णारउ जायइ  
 अमरु ण णरयहु णारउ समगु  
 होइ तिरिक्खु वि चउगइगामिउ  
 पमियाउहुं तिरियहुं तिरियत्तणु

जोइसवणभवणंतहिं तावस ।  
 आजीव वि सहसाराख सु ।  
 णर सम्मत्ताराहणतप्पर ।  
 सग्गु लहइ माणुसु दुहविरमउ ।  
 को वि ण भुंजइ अहमिदहं सिरि ।  
 संजमेण सुद्धं चारित्तं । 5  
 अभविय उवरिमगेवज्जामर ।  
 होइ सुइ सम्मत्तपसत्थहं ।  
 सुह वि ण सुह मुणिणाहु विवियइ ।  
 वच्चइ सविहि विहंसियमगहु ।  
 जिह तिह माणउ दुक्खायामिउ 10  
 अविरुद्धउ मणुयहुं मणुयत्तणु ।

घत्ता—तिहिं गइहिं ण होति मणुय तिरिक्ख सोक्खच्चुयहिं ॥  
 पलिओवमजीवि सग्गु लहंति सईभुवहिं ॥ १० ॥

## II

संखाउस जे जीवाहारिय  
 सैरिसव जंति पढम वीयावणि  
 पुहइ चउत्थी जंति महोरैय

अण्णोण्णेण वियारिय मारिय ।  
 पक्खि तइय वालुप्पह दुहखणि ।  
 पंचमियहिं केसरि मयमारय ।

10. १ MBPT चारय. २ MP जंत तिरिक्ख तं जि जि. ३ MBP वयभर. ४ MBP सव्वहुं.  
 T दुक्खायासिउ. ६ MT सव्वेमुवहिं.

11. १ P विमणस सरह पढम°. २ K वालुयपह. ३ P महोरय. ४ MP मियमारय; B मियमारय.

10. 2 a चरयपरिवायय आहिळिकपरिमाजकाः; b आजीव काजिकाहाराः; 8 b सुइ सुति-  
 क्त्वात्तिः. 10 b स वि हि वि हं सिय म गगु स्वविधिना हिंसादिविधानेन विच्यंसितः स्वर्गप्रापको धर्मलक्षणो मार्गो  
 यस्य; देवैस्तु नरकाप्रापकधर्मात्मकचेष्टितविधानेन नरकमार्गो विच्यंसितः. 11 b °आयासिउ पीडितः. 12 a  
 पमियाउहुं प्रमितायुषाम्. 14 सईभुवहिं स्वोपार्जितपुण्यैः.

महिलउ छेदुहि वि हूरकमियहि  
आयउ मघविहि लहइ णरत्तणु  
णिग्माउ अंजणाहि किर णिवुइ  
सेलहि वंसहि घम्महि आइउ  
णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु  
सव्वत्थ वि माणुसु उप्पज्जइ  
राम उडुगइ सोक्खडु सामिय

होति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।  
को वि अरिदुहि देसवयत्तणु । 5  
को वि कहिं मि पावइ पंचमगइ ।  
होइ को वि तित्थयय महाइउ ।  
णउ लहंति णिम्मलु जसकित्तणु ।  
एम पउत्तइ सुत्तु पउंजइ ।  
केसव सव्व अहोगइगामिय । 10

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥

णरयहु णिग्मिवि होति ण हलहर चक्रहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ  
बायरपुहइ तोय पत्तेयहं  
णउ लहंति सुरणियर सतामस  
अक्खमि णरयवासु भीसावणु  
पदमासीयहिं सिद्धुं सहासहिं  
चउवीसहिं वीसहिं विहिं अट्ठहिं  
एम सहससंखाहिउ घणु मणु  
आयासु वि असंखु संखेवें  
रयणसक्करप्पह वालुयपह

तिरियत्तु वि जिणबुद्धे बुद्धउ ।  
देवे चवेवि होति किर एयहं ।  
वुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।  
णाणादुक्खलक्खदरिसावणु ।  
पुणु बत्तीसहिं अट्ठावीसहिं । 5  
अट्ठेहिं णाणसहाउचइट्ठहिं ।  
खैरपंकयलक्खु जि मंदत्तणु ।  
पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवें ।  
पंकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्ठिहि. ६ MP दुरक्कमियहि. ७ K देसवइत्तणु; P सव्वइवत्तणु. ८ P महावउ. ९ K माणउ सु.

12. १ B पत्तेय वि. २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहुं; B होति समागय देवत्तु कि वि; P देवत्तणु ण होइ किर एयहं. ३ MBPT पुणसलायत्तणु. ४ B सिद्धु समाहिं. ५ MB केवलणण; M records a p अट्ठहिं for केवल. ६ B omits this foot; P reads it after 8 b; MBP add after this: सोलह चोरासी सहस जि गुणु, एक्केऊ जि लक्खु रुंदत्तणु. ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुप्पह.

11. 4 a दुरक्कमियहि दुःखयासायाम्. 5 a मघविहि षष्ठ्याः; b अरिदुहि पञ्चम्याः. 6 a अंजणा हि चतुर्थ्याः. 7 a सेलहि तृतीयायाः; वंसहि द्वितीयायाः; घम्म हि प्रथमस्याः.

12. 1 a ति हिं काय हिं पृथिव्यवृत्तस्वतिभिः. 2 a पत्तेयहं प्रत्येकवनस्पतिकायानाम्. 3 b पुण-सिलोयत्तणु पुण्यलोकत्वं शालाकापुष्पत्वं च. 4 a विहिं अट्ठहिं षोडशाभिः. 5 a घणु पिण्डः; b खैरपंकय-लक्खु खरभागो षोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरस्रीतिसहस्राणि; मंदत्तणु पिण्डत्वम्.

अवर वि अंतिमिल्ल तमतमपह  
एयउ वणतमजालणिरुद्धउ

णिच्चपउंजियवहुणारयवह । 10  
सत्त णरयधरणीउ पसिद्धउ ।

घत्ता—पुहईसु बिलाहं होंति सहावभयंकरहं ॥

घणतिमिरहराहं अगणियजोयणवित्थंरहं ॥ १२ ॥

## 13

तीस पुणु वि पणवीस जि लक्खइं  
दह पुणु तिणिण पक्खु पंचूणउं  
णरइयहं तहिं भत्थायरइं  
मौहिमयाइं परिमउलियवत्तइं  
लोहकीलकंटालिकरालइं  
एसु सुकिण्हणीललेसावस  
लेंति देहु सहसत्ति मुहुत्ते  
हवइ विहंगणाणु तहिं मेच्छइं  
कालिगालपुंजसंणिहयर  
विरइयभीमभिउडि रोसुब्भड  
जिह जिह ते मुणंति अप्पाणउं  
दाढाभीसणु मुहुं णिव्वायइ

पुणु पण्णारह दावियदुक्खइं ।  
लक्खु विंलाहं पंच अहिठाणउं ।  
दंसिय्हरिकरिखवियारइं ।  
हेट्टामुहओलंबियगत्तइं ।  
दुग्गंधइं दुग्गमतिमिरालइं । 5  
उप्पज्जंति तिरिय अह माणुस ।  
वेउव्विउ णिउत्तु हुंडत्ते ।  
अवहिसहावें जिणमयदच्छइं ।  
पयडियदंतपंति दट्टाहर ।  
कविलकेस परमारणकक्खइं । 10  
तिह तिह तं तं संभैवठाणउं ।  
अहवा पाउ किं ण किर घायइ ।

घत्ता—हेट्टामुह क्षत्ति ते पडंति असिपत्तवणे ॥

सइं अर्णु हणंति अण्णहिं पडिहम्मंति रणे ॥ १३ ॥

१ B °भयंकरइं. १० MB °वित्थरइं.

13. १ P विलासइं. २ MPT अहठाणउं; B अहिठाणइं. ३ M णरइयहं; BP णेरइयहिं. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ P °कंटाल°. ७ P सुमरइं ठाणउं. ८ P के ण १MB अण्ण.

13 बिलाहं बिलानाम्.

13. 2 b अहिठाणउं सप्तमनरकः 3 a भत्थायरइं भस्त्राकाराणि. 4 a महिमयाइं पार्थिवानि. 5 a °कंटालि° कण्टकपंक्तिः. 8 a विहंगणाणु विभङ्गज्ञानम्.; b जिणमयदच्छइं जिनमतोच्छेदकानाम्. 9 a कालिगाल° कृष्णाङ्गारः. 10 b °कक्खड निष्ठुरहृदयाः.

14

णउ मज्झत्थु मिच्च उवयारिउ  
खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ  
सूइणिह तणु दुच्चर भूयलु  
जं करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ  
खंडियकरचरणणणगत्तइं  
फलइं वज्जमुट्ठि व्व कढोरैइं  
मंहिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण  
कुहिणिउ जलणजालपज्जलियउ  
ण्हाइ जहिं जि तहिं दूमियपिंडइं  
विहिं तिहिं पंचहिं पीडिवि थरियहु

जो जो दीसइ सो लो वइरिउ ।  
जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ ।  
उण्डु सीउ दुच्चर चंडाणिलु ।  
वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ ।  
रुक्खइं खग्गसमाणइं पत्तइं । 5  
वैरि पडंति णिदलियसरीरइं ।  
खंति विउव्वणाइ पंचाणण ।  
जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ ।  
पूरुहरिकिमिभरियइं कौडैइं ।  
ण्हायहु पूयदहहु णीसरियहु । 10

यत्ता—उक्त्तिवि तासु दिज्जइ कत्ति णियासणउं ॥

आयसवलयाइं सिहित्तावियइं विह्वसणउं ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु  
भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं  
आहरियइं पुग्गलइं अकामहु  
णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं  
जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ  
जं अग्घायइ तं कुणिमंगउ  
उद्धसासु अइखासु जलयरु

वइसइ जहिं जि तहिं जि सुलासणु ।  
णीरसाइं फरुसाइं विरुद्धइं !  
असुहत्तेण जंति परिणामहु ।  
फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं ।  
जं चितइ तं तं मणसल्लउ । 5  
णारैयखेत्ति णउ काइं मि चंगउ ।  
अच्छिक्कुच्छिसिरवियण महाजरु ।

14. १ P दुत्तर. २ MBP जें. ३ MBP कठोरइं. ४ M वर; P उवरि. ५ MBP महिकुहरंतरि.  
६ MBPT दुम्मिय°. ७ MBP कुंडइं. ८ MBP किति. ९ MBP °तावियउं.

15. १ P जहिं तहिं जि. २ MBP कुणियंगउ. ३ MB नरयखेत्ति. ४ MBP उद्धसासु.

14 ३ a सूइणिह सूचीसदशम्. ४ a कुहिणिउ मार्गाः. ५ a दूमिय पिंडइं पीडितस्य शरीराणि.  
11 कत्ति चर्म; णियासणउं परिधानम्. 12 सिहित्तावियइं अग्निना तापितानि.

15. ७ ६ °वियण वेदना.

संभवन्ति दुक्कियहलगेहइ

सव्वउ वाहिउ णारयदेहइ ।

घत्ता—अणुमीलणु कालु सोक्खु ण लब्भइ किं पि जहिं ॥

सारीरुं दुक्खु काइं कहिज्जइ राय तहिं ॥ १५ ॥

10

16

हउं णारायणु पडिणारायणु  
 एम भणंतु कयंतु व कुप्पइ  
 दाणवणिवहहिं पडिचोइज्जइ  
 तुहुं अणेण चिरभवि सरदारिउ  
 विंझमहागिरिगेरुयपिंजरु  
 पक्खि एण गालिउ तुहुं विसहरु  
 अविरलखरणहरेहिं गिरुद्धउ  
 हणु हणु एहु एम पच्चारिउ  
 जुज्जइ णारउ णारय गौदलि

हउं महिवइ हौंतउ सुहभायणु ।  
 माणसिपं दुक्खे संतप्पइ ।  
 जुज्जमाणु सो एम भणिज्जइ ।  
 वरमहिमहिलाकाराणि मारिउ ।  
 सीहे एण हयउ तुहुं कुंजरु ।  
 महिसं गेण दलिय तुहुं हयवरु ।  
 वग्घेणेण हरिणु तुहुं खद्धउ ।  
 णं वाएण जलणु संचारिउ ।  
 णिवडमाणु कौत्तासणि सव्वलि ।

5

घत्ता—कंपणकणपहिं लंगलमुसलहिं रिउ दलइ ॥

णियदेहु जि ताहं पहरणरूवहिं परिणमइ ॥ १६ ॥

10

17

अण्णे अण्णु सुंसल्ले सल्लिउ  
 अण्णे अण्णु तिसुल्ले भिण्णउ  
 अण्णे अण्णु हुआंसाणि वित्तउ  
 अण्णे अण्णु खुरुप्पे खंडिउ

अण्णे अण्णु सुंसुंढिइ पेल्लिउ ।  
 अण्णे अण्णु रहंणे छिण्णउ ।  
 अण्णे अण्णु पसु व्व विहित्तउ ।  
 अण्णे अण्णु वियारिवि छंडिउ ।

५ BP अणुमीलणकालु. ६ MBP सारीरु.

16. १ MBP कुंतासणि. २ MBPK कप्पण°, but GT कण° . ३ MP परिणवइ.

17. १ MBP सुसेल्ले. २ MBP सुसुंढिइ. ३ MBP read this line as अण्णे अण्णु रहंणे छिण्णउ, अण्णे अण्णु तिसुल्ले भण्णउ. ४ MBP विहत्तउ.

16. ३ a दाणवणिवहहिं दैत्यसमूहः; पडिचोइज्जइ प्रेषते. ४ b संचारिउ उद्दीपितः. ५ a गौदलि संग्रामे मेलापके वा; b सव्वलि सर्वलोहमयी घाणी (?) तस्याम्.

अण्णहु अण्णे खग्गु विहाइउ	तहु केरउ जि मासु तहु दोइउ । 5
लैइ लइ एवहिं काइं णिरिक्खहि	सुंग वराय मारिवि किं भक्खहि ।
तउ अउ तंबउ सीसउ ताविउ	अण्णहु मल्लु भणेप्पिणु दाविउ ।
पिवसु पिवसु अरहंतु ण याणइ	चंगउ कउल्लु तुज्झु वक्खाणइ ।

घत्ता—उम्ममो जंति ण णिवारिय णिद्धम्मइ ॥

परघरिणि रमंति जिह पइं रमिय णिवद्धरइ ॥ १७ ॥ 10

18

अग्गिवण्ण तत्तिय अइरत्ती	लोहविणिम्मिय णं तुह रत्ती ।
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि	पह करिंदुंमपीणत्यणि ।
मणिवि णवज्जेव्वण परवाली	अवरंडहि सामरि कंटाली ।
खेच्चुअउ माणसु तणुजायउ	असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ ।
एउ पम पावोहें लइयहं	पंचपयारु दुक्खु णारइयहं । 5
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ	णग्गउ णिंदु असेसु णउंसउ ।
पदमहि पुंदविहि णारयगत्तइं	भयघणुतिरयणिंलगुलमेत्तइं ।
वीयहि पर्णांस दोवारहं	घणुरयणिउ अंगुलइं वियारहं ।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरंतहु राणि रणरणइ ॥

गरुयारउ होइ णारयदेहु विउव्वणइ ॥ १८ ॥ 10

19

तइयहि एकतीसधणुतुंगइं	एक्करयणि भणु कयदुरियंगइं ।
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं	धुउ चावइं बासट्ठि पउत्तइं ।
पंचामेयहि धणुसउ पणवीसउ	वट्ठिउ घउ आवइ आभीसउ ।

५ MP लइ तइ एवहिं. ६ MBP मिग.

18. १ MBP तत्ती. २ MBP माणुस. ३ MBP पुहरहि. ४ MBP पण्णारइ.

19. १ B रयणीअजुत्तइं.

17. ५ a विहाइउ विभक्तः. 8 b कउल्लु चार्वाकः.

18. ३ a परवाली परली; b सामलि कूटशाल्मलीतरः. 4 a माणसु मानसिकम्. 6 b सुयंसउ शोभनशरीरावयवः. 9 रणरणइ अरातिजनके.

छट्टियाहि चार्वहं जिणभणियइं  
 देहुच्छेहु दुहोहदुंगमियहि  
 पकु पहिलइ दुक्कियदुज्जइ  
 तिज्जइ णरइ सत्त चोत्थइ दह  
 छट्टइ पुणु बावोस ण रहियइं

दोणिण सयइं पण्णास जि गणियइं ।  
 पंचसयाइं होंति सत्तमियहि । 5  
 जलहिपमाणइं तिणिण दुइज्जइ ।  
 सायराइं पंचमि सत्तारह ।  
 सत्तमि तीस तिअहियइं कहियइं ।

घत्ता—कंदंत कणंत महिहि सुलंत सुहंतरिय ॥

जीवंति ह्यास णारय तिलु तिलु कप्परिय ॥ १९ ॥

10

## 20

ते जियंति अहमेण अरम्महि  
 जं घम्महि उंत्तिमु तं वंसहि  
 जं वंसहि उत्तिमु तं सेलहि  
 जं सेलहि उत्तिमु णिदिट्ठउ  
 जं अंजणाहि परमु पवियप्पिउ  
 जं जि अरिट्ठहि किर परमाउसु  
 जं पूउ मघविहि दुहतवियहि  
 विक्किरियासरीरविण्णासइं  
 होंति अहोहो रंदइं विचरइं  
 होंति अहोहो रणइं दुवेक्खइं

फुड दहवरिससहासइं घम्महि ।  
 आउ जहणउं दलियसुहंसहि ।  
 आउ जहणउं रउरवरोलहि ।  
 अंजणाहि तं किर णिकिट्ठउ ।  
 तं जि अरिट्ठहि अहमु विर्यैप्पिउ । 5  
 तं मघविहि देसिउ अचिराउसु ।  
 तं आसण्णु मरणु माघवियहि ।  
 होंति अहोहो दीहाउस्सइं ।  
 होंति अहोहो मंदइं तिमिरइं ।  
 होंति अहोहो तिक्खइं दुक्खइं । 10

घत्ता—जुज्झंतहं ताहं पहरणकोडिहि णिहलिय ॥

तणुलव लगंति सयलवा इव संमिलिय ॥ २० ॥

२ MBP चावइं. ३ B °दुग्गमियहि. ४ PK होइ.

20. १ MBP उत्तमु and also elsewhere in this kadavaka. २ P °लेलहि. ३ MBP पयैपिउ. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP दुपेक्खइं. ७ P पारलवा.

19. 9 सुहंतरिय सुखरहिताः.

20. 26 °सुहंसहि °सुखावायाम्. 8 b दीहाउस्सइं दीर्घाणि आयूषि. 12 सयलवा पारदस्य कणाः.



21

अक्खमि सुर दहवसुपंचविह वि  
एयहि रयणप्पहहि धरिस्सिहि  
असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं  
बाहत्तरि लक्खइं सुवण्णहं  
दीवसमुदयणियतडिणामहं  
एक्केकहु लक्खइं लहत्तरि  
लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं  
कोडिउ सत्त दुहत्तरि लक्खइं  
भावणभवणइं एम पउत्तइं  
भूयरक्खसावासविसेसइं  
अवराइं मि पैविमलसिरिहारइ  
वैतैरणयरइं अंयरमणियइं

सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।  
विवरंतरि बहुरइरसयत्तिहि ।  
णायघरहं चउरासीलक्खइं ।  
भवणहं भूरिभासमाइण्णहं ।  
आसाणलकुमारवरधामहं । 5  
अक्खइ एम मयणमयकेसरि ।  
आवासाहं समीरकुमारहं ।  
पिंडीकयइं होंति पच्चक्खइं ।  
चउंदह सोलह सहस णिहत्तइं ।  
वीणावेणुपणवणिगघोसइं । 10  
वणगयणयलज्जलहिर्सरतीरइ ।  
होंति गणंतहं संखाइयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर ॥  
णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिचर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्ठसरिससंठाणइं  
पंचवण्णरयणावल्लिखइयइं  
जोयणसइ खेत्तम्मि दहोत्तरि

संखाराहियइं होंति विमाणइं ।  
बाहल्लत्तं पुणरवि रइयइं ।  
अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि ।

21. १ MBP वरत्तिहि. २ MBP असुरवरइं. ३ MBP °भाइण्णहं. ४ M बहत्तरि. ५ K चोइह. ६ K णिउत्तइं. ७ MB परिमल°. ८ MBP सरित्तीरइ. ९ MBP वितर°. १० MBP अइ°; K अय° but corrects it to अइ°.

22. १ MBPT बाहल्लत्तं पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि. २ MBP जोयणसय°.

21. ३ a समक्खइं सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिनां वा प्रत्यक्षाणि. 4 a सुवण्णहं सुपर्णकुमाराणाम्; b भूरिभासमाइण्णहं प्रभुरप्रभासमाकीर्णनाम्. 5 b आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामभिकुमाराणां च. 7 a लेसाहिय षडधिकाः. 10 b °पणव° पटहः. 11 a पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके.

22. ३ a जोयणसइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे.

अवरैहं लंविषयंटायाये  
 वत्तीस जि लक्खइं सोहम्मइ  
 दुदहं सणकुमारि माहिंदइ  
 अत्थि विमाणहं उवणियसोक्खइं  
 पण्णास जि लंतवि काँविट्ठइ  
 सुक्कमहासुक्कइ चालीस जि  
 आणय पाणय आरण अञ्चुय  
 हेट्ठिमगेवज्जइ पयारह  
 सत्तुत्तर मज्झिमहि भाणिज्जइ  
 णव जि णउत्तरि पंचाणुत्तरि  
 चउरासीलक्खाइं णिकेयहं  
 पक्कीकयइं ण लेक्खिं विरुद्धइं

थियइं असंखदीववित्थारै ।  
 अट्ठावीसीसाणि सुरम्मइ । 5  
 अट्ठलक्ख परिभमियसुरिंदइ ।  
 वंभि संबंभुत्तरि चउलक्खइं ।  
 सहसइं हाँति जिणाहिवसिट्ठइ ।  
 छह सयारसहसारहिं सहस जि ।  
 चउकप्पहिं सत्तंसय संथुय । 10  
 अवरु वि सउ सुरपवरागारहं ।  
 णवइ एक्कु उवरिमहि गणिज्जइ ।  
 पंच विमाणइं सोक्खणिंरंतरि ।  
 सत्ताणउदिसहासइं पयहं ।  
 अण्णु वि तेवीसइं लइ लद्धइं । 15

घत्ता—गेहहं तुंगतु बिहिं कप्पहिं कवडेण विणु ॥  
 जोयणहं सयाइ उडुमाणइं वज्जरइ जिणु ॥ २२ ॥

## 23

पंचसयाइं बिहिं मि उवरिल्लहिं  
 उप्परि बिहिं चत्तारि सउद्धइं  
 पण्णासयइं तिणिण बिहिं अक्खमि  
 पुणु चउकप्पहं हम्मच्छेहउ  
 पुणु दुइ दुइं दियंठु पुणरवि सउ  
 पुणु उद्धत्ते उवरि विमाणइं

चउ अडुं जि बिहि ताहं पैहिल्लहिं ।  
 घरइं वरइं णाणामणिणिद्धइं ।  
 सयइं तिणिण पुणु बिहिं जि णिरिक्खमि  
 अट्ठाइज्जसयाइं सरेहउ ।  
 पुणु पण्णास समीरिउ उच्छउ । 5  
 पंचवीसजोयणइं पहाणइं ।

३ K अवरे. ४ MBP दोदह सणकुमारि. ५ MBP सुवंभोत्तरि. ६ P कापिट्ठइ. ७ MBP सत्तसयइं.  
 ८ MP सत्ताणवदि. ९ MBP लेक्खविद्धइं. १० P अण्णु वि पुणु तेवीसइं लद्धइं. ११ K तेवीस जि लइ.  
 १२ K वज्जरिंद.

23 १ MBP अडु. २ MBP पइल्लहिं. ३ MBP सुरेहउ; K सुरेहउ but corrects it to सुरेहउ. ४ MBP पुणु. ५ MBP दिवडु.

6 a दुदह दादश.

23. 2 a चत्तारि सउद्धइं चतुःशतोर्ध्वानि. 4 a हम्मच्छेहउ गृहस्योच्छ्रयः; b सरेहउ सशौभः.

सन्वद्गुह्यं नृलियं लंघेपिणु  
तस्मि तिलोयद्गु सिहरि णिसण्णी  
ससहरहिमणिहच्छायायी  
जोयणाई जोय्ण णिसहं

बारहजोयणाई जापपिणु ।  
पणयालीसलक्खवित्थिण्णी ।  
सिद्धयत्ति भन्वयणपियारी ।  
अद्दमपुह्द अद्द बौहल्लं ।

10

वत्ता—सविमाणहु मज्झि सँयणि महारुहि समयमणु ॥  
उववाद्सहावे मिण्णमुहुत्तं लेंति तणु ॥ २३ ॥

## 24

मउडेहि हारेहि  
कंचीकलावेहि  
भूसापहासेहि  
वेउव्वियंगेहि  
चउरंसठाणेहि  
अणमिसहि णयणेहि  
विच्छिण्णतँवेण  
कणयं व गयलेव  
णक्खाई चम्माई  
रत्ताई पित्ताई  
मीसियउ मासाई  
मत्थिकमुक्काई  
सोहम्मगेहम्मि

केऊरंदेरेहि ।  
मंजीररावेहि ।  
अइसुरहिसासेहि ।  
लक्खणपसंगेहि ।  
माणवणिवाणेहि ।  
ससिसोमववणेहि ।  
पुण्णप्पहँवेण ।  
जौयंति खणि देव ।  
ण सिराउ रोमाई ।  
ण पुरिसमुत्ताई ।  
ण वल्लासकेसाई ।  
णउ अत्थि वोक्काई ।  
देवाण देहम्मि ।

5

10

६ MBP बाहुल्लं. ७ MPIT सयणु.

24. १ P °डेरैहि. २ P °पसाहेहि. ३ MBP अणमिसहि. ४ MBP °सोम°. ५ MBP °तावेहि.  
६ MBP °प्पहावेहि. ७ MK जायंत.

11 स य णि म हा रु हि शयने चित्रवालि कार्यां महोहं; समयमणु समयमनुकूल्य प्रति समयं समयमारभ्य भिन्न-  
मुहूर्तं यावत्तावत्कालेन परिपूर्णं शरीरं गृह्णातीत्यर्थः.

24. 5 a चउरंसठाणेहिं समचउरससंस्थानैः; b माणवणिवाणेहिं मानवाकारैः. 8 a कणयं व  
सुवर्णमिव. 11 a मी सियउ रमभ्रुः दाडिका; b वल्लास श्लेष्मा. 12 b वोक्काई कलिजा (?).

उवहरकवाडाहं      सइं हौति वियडाहं ।  
हरिसेण वग्गंति      सहस त्ति णिग्गंति ।  
सुरजोणिसंपुडहु      मणिकिरणपायडहु ।  
जय देव देविद      जय णाह चिरं णंद ।  
एवं पघोसंति      परियणइं तूसंति ।  
सव्वहिं मि तणुमाणु      उद्धिदु जिणणाणु ।

15

वत्ता—असुरहं पणवीस दह सेसाहं सव्वेतरहं ॥  
देहुदु दीहतु सत्त जि धणु जोइससुरहं ॥ २४ ॥

20

## 25

विहिं रयणीउ सत्त विहिं छह भणु  
पुणु चउहुं मि चत्तारि जि गीयउ  
तिण्णेव य रयणिउ सवियप्पहिं  
दो पुण अड्ड पढमगेवज्जहि  
होइ दिवड्ड रयणि उवखिल्लहि  
णव पंचाणुत्तरहं मि सारउ  
अणिमामहिमालधिमापत्तिहिं  
जुत्तकामरूवें कामाउर  
णउ खुज्जय वामैण वड हुंडय  
आईसाणकप्पसंभवणउं  
भावणाइं णाणातणुधारा

पुणुं विहिं पंच समुण्णउ सुरयणु ।  
पुणरवि आहुदु जि विहिं णीयउ ।  
दहपंचमसोलहमयकप्पहिं ।  
मज्झत्थियहि दोग्गिण जेगपुज्जहि ।  
अमरवोदिपैरिमाणु सुहिल्लहि ।  
एक्कुं जि रयणि पउत्तु सरीरउ ।  
ईसत्तणवसित्तगईसत्तिहिं ।  
कीलालोललील सयरैमर ।  
णारी पुरिस जि णउ ते पंडय ।  
जाववुउ ता देविहिं गमणउं ।  
आईसाण कप्पपडिच्चार ।

5

10

८ M गिरु.

25. १ MBP पुणु चहुं; T पुणु विहिं. २ MBP जगि पुज्जहि. ३ MBP परमाणु. ४ MBP एक्क. ५ MB °मइसत्तिहिं. ६ MBP सयलामर. ७ MBP वावण. ८ M संडय. ९ MBP कायपडि°.

14 a उवहर° वासरुहम्. 19 b उद्धिदु जिणणाणु कथितं जिनज्ञानेन.

25. 1 b पुणु विहिं पंच ब्रह्मब्रह्मोत्तरयोर्लान्तवकापिष्ठयोर्द्वयोर्द्वयोः कल्पयुगलयोः पञ्च रत्नयः. 2 a चउहुं मि शुक्रमहाशुकशतारसद्वहारेणु कल्पेणु; b आहुदु अधेचतुयैः. 7 b गह प्राकाम्यम्. 8 b सयराभर सकलामराः. 9 a वड न्यग्रोधसंस्थानाः; हुंड विकलावयवाः; b पंड यनपुंसकाः. 10 a °सं भवणउं उत्पत्तिः.

घत्ता—फासं पडिचारु सणकुमारमहिंदरुह ॥

रूवेण करंति उवरिम चउकप्पय विवुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुब्भव सुरवर  
वरि चउकप्पहि मणपडियारा  
सप्पडियारि णिपवि अणिंदहु  
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु  
कहमि आउ तियसहं सुहसंगमु  
णायहुं पल्लइं तिणिण वियाणसु  
अड्डाइज्ज पल्ल सोवणणहं  
सेसहं होइ दिवहु गिरुत्तउ  
एकु पल्ल सहुं सहसं वरिसहुं  
एकु जि सुकु सएण समेयउ  
पंच सत्त पुणु णव एयारह  
एकुण एक्कवीस तेवीस वि  
चउंत्तीसेक्कताल अड्डाँल वि  
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं

होति सहपडिचार सुहंकर ।  
एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।  
अतुलसोकखु णिहिलहु अहमिंदहु ।  
गयरायहुं तिरायवइवंदहु ।  
असुर जियंति एकु सायरसमु । ५  
वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।  
दीवहं दोणिण पुंणपरिपुण्हं ।  
चंदु जियइ लक्खे संजुत्तउ ।  
जीवइ दिणयर वड्डियहरिसहुं ।  
तारारिक्खहुं ऊणउ णेयउ । 10  
तेरह पण्णारह सत्तारह ।  
पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।  
पंचावणु जि पल्लइं जगरवि ।  
आउ अर्चुयंतहं सुरविलयहं ।

घत्ता—वे सत्त दसेव चोईहठारह वि ॥

15

वीस जि बावीस उड्डु एकु वड्डिमु कैह वि ॥ २६ ॥

26. १ MBPK अतुल. २ MB गिराय<sup>२</sup>. ३ MBP पल्ल परिपुण्हं. ४ MBP चउत्तीसे<sup>२</sup>.  
५ MBP अड्डताल. ६ P सञ्चयंतहं. ७ MBP चउदह छद्द अट्टारह. ८ MBP उड्डु एकु. ९ K कहमि.

26. 2 a वरि उपरि. 4 b तिरायवइवंदहुं त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम्. 8 a  
सेसहं विवुदमिवातस्सनितोदधिदिक्कुमाराणाम्. 10 a सएण समेयउ शतवर्षाधिकं पत्यमेकं शुक्रो जीवति; b ऊ-  
णउं किञ्चिद्वत्तम्. 13 b जगरवि जगद्भास्करः. 14 a सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्; b सुरविलयहं  
सुरवनितानाम्.

## 27

ताम जाम तेत्तीससमुद्दं  
कप्पहं कप्पाईयहं एहउ  
सक्कीसाणहं अवहि पधावइ  
पुणु दोसग्ग देव वीयहि तल्लु  
भणु चउकप्प तियस तइयावणि  
आणयपाणंय सुर पंचमियहि  
णव भेवज्ज मुणंति महंतउ  
सुद्धइ ओहिइ अणुदिस सुंदर  
उप्परि णियविमाणचूडामणि  
पंचवीस जोयणइ वणेसहं  
अवैरु वि हवैइ ओहि कयसमरहं  
जिह असुरहं तिह रिक्खहं तारहं  
सुकहु पुणु मेइ अभिखउ भल्लउ

सव्वट्ठम्मि आउ कयमद्दं ।  
अक्खमि णाणविसेसु वि जेहउ ।  
जाम पढममैहिमंतु विहावइ ।  
पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मल्लु ।  
चउसंभूय चउत्थी मेइणि । 5  
आरणच्चुयामर छँट्टमियहि ।  
ताम जाम सत्तमणरयंतउ ।  
तिजैगणाडि पेक्खंति अणुत्तर ।  
जा ता देव मुणंति महागुणि ।  
संखाजुत्तइ ओइसवासहं । 10  
गणियउ जोयणकोडिउ असुरहं ।  
चंदहं सुरहं गुरुअंगारहं ।  
संखाहिउ ओहिविसउल्लउ ।

वत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कं रयणप्पहहि ॥

गाउय अउद्धु होइ हाणि सेसैहि महिहि ॥ २६ ॥

15

## 28

कम्माहारु असेसहं जीवहं  
लेवाहारु वि दीसइ रुक्खहं

णोकम्माहारु वि भवभावहं ।  
कवलाहारु णरोहतिरिक्खहं ।

27. १ MBP तेतीस°. २ MBPT सब्बट्ठंमि. ३ MBP °महिअउ. ४ K छमियहि. ५ P ते जि-  
गणाडी. ६ MBP अवर. ७ P वहइ. ८ MB तिक्खहं. ९ MBP सहं. १० MP संखाई ओहीविसयल्लउ;  
B संखाईउ ओहिविसयल्लउ. ११ MBP जोयणेकु. १२ M णीसेसहि.

28. १ B लेवाहारु.

27. 1 b सव्वट्ठम्मि सर्वाथेसिद्धौ; कयमद्दं कृतसौख्यानि कृतकल्याणानि वा. 3 a पधावइ  
प्रवर्तते; b °महि मंतु पृथिव्याः अन्तः; वि हा वइ विभावयति जानाति. 8 a अणुदिस नव अनुदिशदेवाः.  
b अणुत्तर पञ्च अणुत्तरदेवाः. 10 a वणेसहं व्यन्तराणाम्. 11 a कयसमरहं नारकयुद्धकारिणाम्.  
13 b ओहि विसउल्लउ अवधिज्ञानविषयः.

28. 1 b णोकम्माहारु षण्णां पर्याप्तानां त्रयाणां शरीराणां योगपुत्रलादानं नोकम्माहारुः; भवभावहं  
शरीरयुक्तानाम्.

ओजोहाह पक्खिसंघायहं  
अहमिद वि करंति तेत्तीसहिं  
बत्तीसैक्कीस पुणु तीसहिं  
पक्केकउ जि एम पडिहम्मइ  
आउणिबंध महोवहिसंखाहिं  
पल्लजीवि पुणु मिण्णमुहुत्तं  
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि  
सरसइं सुरहियाइं अइमिदुइं  
आहरंति दवियाइं सइत्तं

मणभोगुणु चउदेवणिक्कायहं ।  
वोलीणहिं घरवरिससहासहिं ।  
पक्कुणतीसहिं अट्टावीसहिं । 5  
सोलहमे बावीसहिं जिम्मइ ।  
णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।  
णीससंति अहं ताहं पुहत्तं ।  
असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।  
सुहुमइं सुद्धइं णिद्धइं इद्धइं । 10  
परिणमंति सहस त्ति तणुत्तं ।

घत्ता—संसारिय जीव चउविह चउगइमिण्ण जिह ॥

इंदियमेण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

कापं छंविह चवलथिरेण वि  
जलणिहिंविह वि कंसापं जाया  
संजमदंसणेण तिच्चउव्विह  
भन्वत्तेण विविह सम्मत्तं  
आहारं आहारिय जे जे

तिविह तिविहजोएं वेएण वि ।  
अट्टमेय णाणं विण्णाया ।  
लेसापरिणामेण वि छंविह ।  
सणिण अंसण्णी दो सणिणत्तं ।  
चउसु वि गइसु परिट्टिय ते ते । 5

१ MBPK ओजाहार, ३ MBP तेतीसहिं, ४ MBP °सेक्कीस, ५ MBP पविहम्मइ, ६ MBPK सोलहमइ, ७ MBP आउ णिवदु, ८ MBP पुणु, ९ MBP केइ जि पक्खेण वि, १० MBP सहसेण वि.

29. १ MBP छंविह थिरेण तसेण वि; T चवलछिरेण चपलस्वभावानां स्थिरपृथिव्यादीनाम्, २ MBP °विह व, ३ MB कसायं, ४ MBP असणिण दोणिण.

3 b मण भोगुणु मानसाहारः, 4 b वोलीण हिं व्यतिक्रान्तेः, 6 a पडिहम्म इ प्रतिहन्यते, 8 b अहं ताहं पुहत्तं अथवा तेजां भिज्जमुहूर्तानां पृथक्त्वेन आगमभाषया त्रयाणामुपरि नवानामघः निश्चसन्ति, 9 b असंति अश्रन्ति भोजनं कुर्वन्ति, 11 a दविया इं पुद्गलद्रव्याणि; सइत्तं स्वचित्तैः, b तणुत्तं तनुकूपेण.

29. 1 a कापं छंविह पल्लजीवनिकथेन; चवलथिरेण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च, 2 a जलणिहिंविह चतुर्विधाः; b अट्टमेय णाणं पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेदः, 3 a संजमेत्यादि—त्रयः संयमासंयमसंयमासंयमाः; तथा चत्वारः क्षायिकौपशमिकासंयमाः अथवा सामाधिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसंपरायथाख्याताः परिहारविशुद्धेरभावात्, दंसणेत्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशमिकक्षायोपशमिकानि; तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि, 4 a भन्वत्तेण विविह भन्याभन्यौ द्विविधौ.

केवलिसमुहय विगहगइगय  
ते ण छेति आहारु वियारिय  
मग्गणठाणइं चोहंभेयइं  
मिच्छादिट्ठि पट्ठिउं गीयउं  
अविरयसम्माइट्ठि चउत्थउं  
छट्ठउ पुणु पमत्तसंजमधरु  
अट्ठमु होइ अउव्वु अउव्वउं  
दहमउं सुहुमराउ जाणिज्जइ  
वारहमउ पंरिखीणकसायउ  
उज्झियतिविहसरीरभरंतरु

अरुहं अजोइ सिद्ध परमप्पय ।  
सेस जीव जाणहि आहारिय ।  
णिसुणहि गुणठाणइं मि एयइं ।  
सासणु वीयउं मीसु वि तीयउं ।  
पंचसु विरयाविरउ पसत्थउ । 10  
सत्तसु अप्पमत्तु गुणसुंदरु ।  
अणिर्यत्तिछउ णवमु अगव्वउं ।  
एयारहमुवसंतु भणिज्जइ ।  
तेरहमउ सजोइजिणु जायउ ।  
उवारिछउं अजोइ परु अक्खरु । 15

यत्ता—णारय यत्तारि यत्तारि जि पुणु सुरपवर ॥

तिरियंच वि पंच णीसेसंमि चडंति णर ॥ २९ ॥

## 30

कम्मविहम्ममाण ससरीरा  
दंसणणाणसहावपट्ठु  
ताहं चेट्ठु जा होइ समासम  
जेम तेल्लु सिहिसिहपरिणामहु  
जीवें लइयउ जोइ जियत्तहु

सासयकरणुज्जय विवरेरा ।  
होंति जीव उकिट्ठुणिकिट्ठा ।  
सा तहलियगहणभावक्खम ।  
तेम कम्मपोग्गलु वि णिसामहु ।  
तिव्वकसायरसेहि पमत्तहु । 5

५ MBPK चउदहं. ६ MBPK मिच्छाइट्ठि. ७ MBP °संजमधरु. ८ MBP अणियट्ठिउं णवउं.  
९ MBP परिहीण°. १० MBP णीसेसंमि.

30. १ MBP कम्म पोग्गलु. २ MB जाय जियत्तहु; P जियंतहु.

6 a के व ली त्यादि—केवलिनो यदा समुद्घातं कुर्वन्ति दण्डकपाटप्रतूरपूरणत्वेन त्रैलोक्यं भरन्ति तदाष्टसमे-  
यादनाहारकाः; अन्यदा आहारका एव. 10 b विरयाविरउ विरताविरतो देशसंयतः. 12 a अउव्वउं  
अनुपमम्; b अणियत्तिछउं अनिवृत्तिकरणम्. 13 a सुहुमराउ सूक्ष्मसांपरायम्; b उव्वसंतु उपशान्त-  
कषायम्. 15 a °तिविहसरीर° औदारिकं तैजसं कामेण च; b अक्खरु अविनश्यरं सिद्धस्वरूपम्.

30. 1 a ससरीरा संसारिणः; b सासयकरणुज्जय शाश्वतकरणः शाश्वतपरिणामास्तेष्वृताः; वि-  
वरेरा विपरीताः; सिद्धा इत्यर्थः. 3 a चेट्ठु चेष्टा मनोवाक्कायव्यागारः; समासम प्रशस्ता अप्रशस्ता च; b तद्-  
लियेत्यादि—तथा बुभानुभचेष्टया दलितो विभक्तः अनेकप्रकारः रगोसौ ग्रहणभावः कर्मोदानपरिणामः तत्र क्षमाः  
समर्थाः. 5 a जाइ जियत्तहु जीवत्वं गच्छति.



जिह सिहिभावहु वचइ इंधण  
असुहें असुहु सुहें सुहु संधइ  
अभव जीव जिणणाहें इच्छिय  
मइसुंओहिमणपज्जव केवल  
णिद्वाणिद्वा पयलापयला  
चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ  
तेहिं विणासिउ णवसंखायउ  
दंसणमोहणीउ सम्मच्चु वि  
दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ  
तं कसायजायउ सोलहविहु  
पढमकसायचउकु सुभीसणु

तिह कम्मेण जि कम्महु बंधण ।  
सिद्धिभडारउ किं पि ण बंधइ ।  
एकु ण ते वि अणंत गियच्छिय ।  
णाणावरणविमुक्क सुंणिकल ।  
थीणगिद्धि णिद्वा पुणु पयला । 10  
अवही केवलदंसणवरणउ ।  
वेयणीयदुगु सायासायउं ।  
मिच्छत्तु वि सम्मा मिच्छत्तु वि ।  
णोकसाउ णामेण कसायउ ।  
इयर भणेसमि पच्छइ णवविहु । 15  
सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थियरु ॥

उवसमहुं ण जाइ जइ वि पबोहइ तित्थियरु ॥ ३० ॥

31

अवर अपच्चक्खाणु गुरुक्कउ  
संजलणु वि जलंतु उल्हाविउ  
भैयरइयरइदुगुंछउ जित्तउ  
सुर णर णैरय तिरिय चउआउ वि  
गइणामउ वि जईणामु वि भणु  
तणुसंधाउ तणुहि संटाणउं

पच्चक्खाणु चउकु विमुक्कउ ।  
थीपुंसंदराउ उंडाविउ ।  
हासु वि सेंहुं सोणण णिहिंत्तउ ।  
बायालीसविहेयउं णाउं वि ।  
तणुणामउं पुणु तणुहि णिबंधणु । 5  
तैणुअंगोअंगु वि णामाणउं ।

३ MBP सिद्धि भडारउ; K सिद्धिभडारउ but corrects it to सिद्धि. ४ MBP °बुद्धोहि°. ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दंसणहरणउं; ७ K दुक्खयर. but corrects it to दुत्थयर.

31. १ MBP चउक्क. २ P उल्हाविउ. ३ MBPT उद्वाविउ. ४ MBP भइरइयरइ°. ५ MBP सह. ६ P विहिंत्तउ. ७ P गियर. ८ MBP जाइणउं. ९ MBP तणुअंगोअंगु वि निग्गमाण.

7 a संधइ उपाजयति. 17 दुत्थियरु दुःखतरः.

31. 1 b विमुक्कउ विमुक्तं सिद्धिः. 2b °राउउड्ढाविउ °भाववेदः क्षपितः. 3 b णिहिंत्तउ विनि-  
क्षितः. 4 b बायाली सेत्यादि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतयः. 5 a गइणामउ नरकतिथेऽनुष्यादि-  
गतिनाम. 6b णामाणउं निर्माणम्.

तणुसंघडणु वर्णगंधिल्लउं  
 औणुपुवि अगुरुलहु लक्खिउ  
 ऊसासु वि आदौलुजोयउ  
 थावरु थुलुसुहुसु पज्जत्तउ  
 पत्तेयंगणाउं साहारणु  
 असुहु सुभगु दुग्गमु सुसरिल्लउ  
 णाउं अणदेज्जउ जसकित्ति वि

रसणामउं अवह वि फासिल्लउं ।  
 उवघाउ वि परघाउ वि अक्खिउ ।  
 अणु विहायगइ वि तसकायउ ।  
 अणु वि मणिणउं अर्येज्जत्तउ । 10  
 थिरु अथिरु वि सुहणाउं सकारणु ।  
 दुस्सह आदेज्जउ जगि मल्लउ ।  
 तित्थयरत्तु णिमिणु मलकित्ति वि ।

वृत्ता—चउगइज्जमेण गइणामउं अट्ठविहु ॥

इंदियइं गणेवि जाइणामु मणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

15

## 32

हणिवि पंच णामइं पंचविहइं  
 दो छह पुणु दो चउ अट्ठविहइं  
 समलामलइं दोणिण जगि गोत्तइं  
 दाणभेयउवभेयणिवारउ  
 अंतराउ पंचविहु धुणेपिणु

एकु तिभेयउ दो दो दुविहइं ।  
 उच्चारुयइं जाइं एकविहइं ।  
 ताइं मि जेहिं दूरि परिचत्तइं ।  
 वीरियलाहु हेउसंघारउ ।  
 अडयालीसउं सउ विहुणेपिणु । 5

१० K संघदणु. ११ P वणु गंधिल्लउ. १२ MBP अणुपुवि अगुरुलहु. १३ MBP आदाउजोयउ. १४ MB अप्पजत्तउ.

32. १ M दो पुण दुविहइं. २ MBP °लाह°; K लाहु but corrects it to लाह. ३ MBP विहुणेपिणु.

9 a आ दा डु आतापः. 12 b आ देज्जउ दीप्तिंसहितम्. 13 a अणा देज्जउ अनादेयम्; b णिमिणु निजं नीचम्; मल किति अयशःकीर्ति. 14 अट्ठट्ठ विहु चउभेदं चउगतिरिल्लयः. 15 जाइणामु एकद्वित्रिचउः पन्नेन्द्रियजातिनाम्; पंच विहु पञ्चप्रकारम्—तथाहि, औदारिकवैकियिकाहारकतेजसकामेणशरीरनाम पञ्चविधम्.

32. 1 a पंच णामइं पंच विहइं औदारिकादिशरीरनिबन्धननामानि पञ्च; तथा औदारिकादिशरीराणां संघातनामानि पञ्च; तथा कृष्णनीलश्वेतरक्तपीतवर्णनामानि पञ्च; तथा कटुतिक्तकषायाम्लमधुररसनामानि पञ्च; इति पञ्च नामानि पञ्चविधानि; b एकु तिभेयउ औदारिकवैकियिकाहारकशरीराज्ञोपाइनाम त्रिभेदम्; दो दो दुविहइं सुरभिदुरभिगन्धनाम प्रशस्ताप्रशस्तिहायोगतिनाम च. 2 a दो छह समचतुरस्रबलीकन्यप्रोधकुञ्जवामनहुंङस्थाननाम षड्विधम्, वज्रपर्मनाराचवज्रनाराचअसंप्राप्तास्पृष्टादिकाहसंचट्टननाम च षड्विधम्; दो चउ नरकगत्यादिनाम नरकगत्याद्यानुपूर्वनाम च चउभेदम्; अट्ठ विहइं कर्कशयदुगुरुलघुशरीतोष्णश्लिग्धसूक्ष्मस्पर्शनामान्यष्टविधानि.

पयडिहि माणवंगु मेछेपिणु	सुद्धंसहाउ सैंभु लहेपिणु ।
जे गर्य जीव परमणिव्वाणहु	दुहविरहिहु सासयठाणहु ।
चरमसररीमाण किंचूणा	ववगयरोयसोय अचिलीणा ।
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा	जीवदव्वघण णाणसररीरा ।
उड्डुंगमणसहावें गंपिणु	उड्डुलोउ सयलु वि लंघेपिणु । 10
अट्टेमपुहईवट्टि णिविट्ठा	अमव जीव जिणदेवें दिट्ठा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥

ते पुणु ण मरंति णउ पडंति संसारसुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ बाल णउ बुद्ध	णउ सुक्ख सुवियद्ध ।
णीसँव णिसँव	णिग्गाव णिप्पाव ।
णाणंग णिम्मेह	णिण्णेह णिहेह ।
णिकोह णिल्लोह	णिम्माण णिम्मोह ।
णिव्वेय णिज्जोय	णीराय णिब्भोय । 5
णिद्धम्म णिक्कम्म	णिच्छम्म णिज्जम्म ।
णीराम णिक्काम	णिब्बाह णिद्धाम ।
णिव्वेस णिल्लेस	णिग्गंध णिप्फास ।
णीरस महाभाव	णीसद् णीरुव ।
अव्वत्त चिम्मेत्त	णिच्चित्त णिव्वित्त । 10
ण छुहाइ घेप्पंति	ण तिसाइ छिप्पंति ।
ण हँयाइ सिज्जंति	ण रईइ सिज्जंति ।

४ B सिद्धसहाउ. ५ MBP सर्वमु. ६ MB गय परम जीव. ७ MBP दुक्खविमुक्कहु. ८ K उड्डुंगमणु.  
९ K अट्टमि.

33. १ P णीसास. २ MBP णीताव. ३ MBP रुवाइ.

6 a मा ण वंगु नरसररीरसु; b स इंभु सहजः. 8 b अ वि ली णा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपाः. 11 a °वट्ठि  
°पृष्ठे. 12 सा इ अ णा इ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा.

33. 8a णि म्मे ह निमेषसः पक्षेन्द्रियज्ञानरहिताः केवलज्ञानिनः. 8a णि व्वे स निर्द्वेषाः. 12 b सिज्जं  
ति पीड्यन्ते.

णाहार भुञ्जति	ओसहु ण जुञ्जति ।	
ण मलेण लिप्पंति	ण जलेण धुप्पंति ।	
णिहं ण गच्छंति	अण्येणा वि पेच्छंति ।	15
अमणा वि जाणंति	सयरायरं श्चि ।	
सिद्धाण जं सोक्खु	तं कहइ चम्मक्खु ।	
किं माणवो को वि	सुँर खयर देवो वि ।	

घत्ता—पंचिदियमुक्कु परमप्पइ हूयँउ विमले ॥

जं सिद्धहं सोक्खु तं ण वि कासु वि भुवणयले ॥ ३३ ॥ 20

## 34

पहा दुविह जीव मइं अक्खिय	कहमि अजीव वि जेम णिरिक्खिय ।	
धम्म अधम्म दो वि रूवुज्झिय	आयासं कालं सहुं वुज्झिय ।	
गइठाणोग्गहवत्तणलक्खण	के वि सुणंति सुणाण वियक्खण ।	
संतु अणाइ समउ वट्ठंतउ	तीरुं कालु अगामि अणंतउ ।	
तासु ठाणु अण्णइ णरलोयउ	धम्ममाधम्महं सव्वतिलोयउ ।	5
विहिं मि लोयणहमौण वियप्पउ	आयासु वि अणंतु सुसिरप्पउ ।	
तं जि अलोउ जोइपणत्तउ	पोमालु होइ पंचगुणवंतउ ।	
सइं गंधं रूवं फासं	जुत्तउ भिण्णवण्णाविण्णासं ।	
खंभु देसु अद्धंइपप्पसु वि	परमाणुउ अविहाइ असेसु वि ।	

घत्ता—तं सुहुसु वि थूल थूलसुहुसु पुणु थूल मणु ॥

10

थूलाण वि थूल चउपयारु महुं सुणइ मणु ॥ ३२ ॥

४ B भुञ्जति; P हुञ्जति, and gloss योजयन्ति. ५ MBP अणयण जि. ६ MBP सु. ७ MBP हूयइ. ८ MBP णउ.

34, १ MBP रूवुज्झिय. २ P वट्ठंतउ. ३ MB तीयउ; P तइयउ. ४ MBP धम्ममाधम्महं सयलु. ५ MBPK माणु वि अप्पउ; T लोयणमाणु. ६ MBP अद्धइ. ७ M सुहुसुसुहुसु तह सुहुसु वि पुणु; B चउपयारु सुहु सुणइ मणु; P सुहुसु सुहुसु तह सुहुसु पुणु.

19 परमप्पइ परमपदे मोक्षस्थाने.

34. 4 a संभु सान्तः; अणाइ अनादिः; समउ वट्ठंतउ वर्तमानः कालः समयः. 5 a तासु उक्तव्यवहारसमयस्य. 6 a लोयणह माण लोकाकाशपरिमाणम्; b सुसिरप्पउ शुधिरस्वरूपम्. 9 b अविहाइ अविभाज्यः.

35

गंधु वण्णु रसु फासु सैसइउ  
थूलसुहुमु जोण्हाछायाइउ  
थूलथूल पुणु धरणीमंडलु  
सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं  
वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं  
पूरणगलणसहावणिउत्तइं  
भासिज्जंतउ परमजिणिंदे  
वसहसेणु सुहुभावें लइयउ  
सोमप्पहु सेयंसंणरेसरु  
इय रिसहहु परिमुक्कविसाया  
बैम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु  
दंसणमोहणीयपैडिरुद्धउ  
तावस कंदाहार मुप्पिणु  
मोक्खमग्गगामिहि परमेसरु

सुहुमु थूल वज्जरइ समइउ ।  
थूल सलिलु वीरेण णिवेइउ ।  
सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मल्ले ।  
मणभासावग्गणपरिणामइं ।  
परिणमंति संजोयविओयहिं । 5  
पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।  
णिसुणिवि धम्म सुधम्माणंदे ।  
पुरिमतालपुरवइ पावइयउ ।  
थिउ पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।  
णिव चउरासी गणहर जाया । 10  
कंतियाउ जायाउ महग्गहु ।  
एकु मरीइ णेय पडिबुद्धउ ।  
थिय कच्छाइय रिसिब्बउ लेप्पिणु ।  
हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥ 15  
भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत पैह जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे महावत्थुणिदेसो णाम  
एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥  
॥ संधि ॥ ११ ॥

35. १ M सुवइउ. २ MBP add after this: सुहुमुसुहुमु परिमाणुविससइं; लग्गहिं णिवडवि  
अप्पपएसइं. ३ P पव्वइयउ. ४ MBP सेयंसु णरेसरु. ५ MBP बैम्ही. ६ K परिहद्धउ. ७ MBP पइ; K  
पइ but corrects it to एह and gloss एतस्मिन् जिने.

35. 1 b समइउ मर्दवयुक्तः उपशमाद्रौ वा. 4 a सणा मइं ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि. 12 b एहु  
मरीइ एको भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्तः, 16 एह जिणि एतस्मिन् जिने.

## XII

अरिवराणिद्वाराणि खर्चुद्वाराणि तिजगलच्छविजयाणउं ॥  
विहलियसाहारणि मेहणिकारणि भरहें दिण्ण पयाणउ ॥ १ ॥

1

खुड्ड खुड्ड सरयागमि अप्पमाणु  
णं दीसइ ओमैत्थिउ अप्पण  
णं जगहरि णीलुछोउ बद्धु  
अइ दसैं वि दिसा सइ गयरयाइं  
ससिक्कुं भगालियजोण्हाजलेण  
णिड्डहैं कमलु सरए ससंकु  
सो अज्ज वि दीसइ मलविरुद्धु  
तेण जि रोसैं रवि तिव्वु तवइ  
पंककखइ सुकइ णल्लिणालु  
कुवलयविहिगारिउ णाहं राउ  
तरु कुसुमामोएं महमहंति  
अलि रुणुरणंति पाँवाहपिंड

णहु णाहं धोयहरिणीलमाणु ।  
सरयन्मदहियखंडहुं कएण ।  
तारामोत्तियसुं बुकणिद्धु ।  
णं वारित्तइं सज्जनकयाइं ।  
पक्खालियाइं णं निम्मलेण ।  
तहु तेण जि लग्गउ पिंडपंहुं ।  
णियडिंभपराहवि को ण कुद्धु ।  
सररुहसुहि किं चिक्खिल्लु खवइ ।  
अइउग्गत्तणु वंधवहं कालु ।  
कयबंधुजीवसुं च्छायभाउ ।  
रयकविलइं सलिलइं वणि वहंति ।  
महुमत्ता णं गायंति सोंड ।

5

10

15

घत्ता—सारयमयलंछणु रुहरंजियजणु जईं मयमलिणु ण होंतउ ॥  
तो हेंउं कयसंतिहि जिणजसयंतिहि पडु जि उप्पउं देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT खेतुद्वाराणि but gloss क्षत्रियधर्मप्रकटने. २ MBP दिण्णु. ३ P ओमैत्थिउ. ४ P अइदिस. ५ MBP णिहहइ. ६ MBP विवि पंकु. ७ MBP सुक्खइ. ८ T दिहिहाराउ धृतेरपहारको धरकव. ९ MBP °सच्छाय°. १० P पावोह; T पावोह°. ११ MP जइय. १२ MBP हें.

1. 1 अरिवराणि द्वाराणि प्रचण्डशत्रून्मूलने; खर्चुद्वाराणि दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनलक्षणक्षत्रियधर्म-  
प्रकटने; °लच्छि विजयाणउं °लक्ष्मीविजययोः प्रापकस्. 4 a अएण अजेन ब्रह्मणा. 5 a णीलुछोउ नील-  
बन्द्रोपकम्. 10 b सररुहसुहि सूर्यः कमलबान्धवः; खवइ सहते विनाशयति वा. 12 a राउ राजा बन्द्रो  
वा. 14 a पावाहपिंड पापसदृशशरीराः, कृष्णवर्णा इत्यर्थः; b सोंड मयपाः. 16 उप्पउं उपमा.

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस  
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ  
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु  
दालिहु रउदु पवासियाहं  
णिहणिवि वरेण चामीयरेण  
मंतिवि अहंगु पंचंगु मंतु  
परियाणिवि माणिवि बुडु चारु  
अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु  
भुयदंढचंडविक्रममपण  
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं  
कयसमरहं अमरहं थरहरंति  
असुरिंदहं णाईंदहं पियाईं  
तुद्धइं फुद्धइं गिरिमहियलाइं  
थिरभावहं देवहं जाय संक

अवठंभिवि हंभिवि सयल देस ।  
परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।  
परियंविवि अंचिवि चक्करयणु ।  
काणीणहं दीणहं देसियाहं ।  
णाणाविलासतोसायरेण । 5  
को सत्तु मिच्च को तव्विरत्तु ।  
ओहारिवि धारिवि रज्जभाह ।  
भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।  
छक्खंडमंडलावणिकपण ।  
दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं । 10  
गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।  
पायालइं विउलइं कंपियाइं ।  
झलझलियइं वैलियइं सरिजलाइं ।  
रंवपेहिय डोहियै रवि ससंक ।

घत्ता—तद्धु तिजगविमहद्धु तूरणिणद्धु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥ 15  
परमंडलंसाहणु गहियपसाहणु खाणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिवबलं धरियहलसन्वलं  
कणयकुंतुज्जलं चंदणसुपरिमलं ।

2. १ MBP भयगयाहं. २ MB झलिझलियइं. ३ MBP चलियइं. ४ MBP रह°. ५ MP जेलिय. ६ M परमंडलु.

3. १ MB °कंतुज्जलं.

2. 1 b अवठंभिवि हठादाक्रम्य; हंभिवि प्रतिप्राहयित्वा. 4 d देसियाहं परदेशजनानाम्. 6 a अहंगु अभङ्गोऽविकलः; पंचंगु मंतु सहायाः साधनोपायो देशकालबलाबलौ। विपत्तेश्च प्रतीकारः पद्माङ्गो मन्त्र इष्यते. 7 b ओ हारि वि अवधार्ये. 8 a अइवग्गिउ अतिगर्हितः. 15 दुग्गणि व्वाहणु दुस्त्रे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्.

3. 1 b °सन्वलं तिलपीडनायुधं घाणी.

सरसधुसिणारुणं	खयतरणिदारुणं ।	
तुरुतुरिकाहलं	सुहृदकोलाहलं ।	
मुकहुंकारयं	कुसियथसिधारयं ।	5
बद्धतोणीरयं	अहियखोणीरयं ।	
गहियसंणाहयं	णवियणियणाहयं ।	
वलइयसरासणं	परिहियविहसणं ।	
वृद्धंजपाणयं	चोइयविमाणयं ।	
जंतजक्खामरं	चलियचलचामरं ।	10
खुहियणाणाणिवं	जणियगमणुच्छवं ।	
कामिणीसुललियं	किंकिणीसुहलियं ।	
रहियवाहियरहं	छत्तछाइयणहं ।	
वेदिवणिययगुणं	दिण्णमणिककैणं ।	15
पवणधुयधयवडं	गिरिगरुयगयवडं ।	
गहियमयगारवं	रणियधंठारवं ।	
परिभमियमडुयरं	मुकढकासरं ।	
मलियफणिसहरं	काललीलाहरं ।	
णडियसुंरणरणडं	चडलहयवरथडं ।	
बहलधूलोरयं	घुलियमणिहारयं ।	20

घत्ता—कयरिउवहुविरहं जगजसंभरहं चलियण पधाइउ ॥

वररहमायंगहिं भडहिं तुरंगहिं सेण्णु ण कथइ माइउ ॥ ३ ॥

4

भणी कागणी कामिणी दंडरणं  
रहंगं णरिदंगतुंगं पहारं

णिसीसक्कमाणिकभामारमिण्णं ।  
अजेयं सुतेयं करालं किवाणं ।

२ MBP खयतरुणि°, ३ MP फुरिय°, ४ M रुढ°, ५ MBP °कंचणं, ६ MBP °सुरवरणइं, ७ MBP °जयभरहं चळेतेण; T जगजसंभरहं; but records a p जगजेति पाठे जगति जयेनोपलक्षितो भरतस्तेन. ८ P पधाइयउ, ९ MBP वररहवरमायंगहिं, १० P माइयउ.

३ b खयतरणिदारुणं प्रलयकालसूर्यसदृशम्. 6 a °तो णीरयं तूणीरयं; b अहियखोणीरयं शत्रुभूम्यासक्तम्.

4. 1 b णि सी त्यादि—चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमाणिक्यानां भासस्तासां भारेण भिन्नं कर्तुरेति शङ्कम्. 2 a णरिदंगतुंगं चक्रवर्तिशरीरप्रमाणम्.



पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं  
हरीकीरपिच्छोहकंतिलकाओ  
पुरोहो गिरोहो व्व भीमावयाणं  
समे वेसमं वेसमे सामकारी  
गिही<sup>१</sup> को वि देवो मँहिड्डीसमिद्धो  
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो

महावीरखंधारविथारवंतं ।  
करी गिज्जियाणिवदेविदणाओ ।  
गिवासो पयासो पयासंपयाणं । 5  
चमूंगुगवो दुग्गमग्गावहारी ।  
महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।  
परो को वि अण्णो गिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोईहरयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥

हयगयरहवाहणु चळिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥ 10

5

माणिरहवरे चडिउ  
दढकढिणभुयजुयलु  
किं भणमि पुरिसहरि  
सदूलवरखंधु  
अलिणीलधम्मेल्लु  
दूवंकुरालेण  
उक्खित्तसेसेण  
संचलिउ भरहेसु  
घउ धइण पडिखलिउ  
भेसिउ अहहेण  
करि धुणइ गियकंडु  
भरओ रउहेण  
भग्गाईं भायणइं

णं इंदु णंहि वडिउ ।  
अइवियडवच्छयलु ।  
बलतुलियकुलसिहरि ।  
बहिरंधजणबंधु ।  
तेल्लोक्कपडिमल्लु । 5  
दहिचंदणालेण ।  
मंगलणिघोसेण ।  
णं मयणु णरवेसु ।  
णरु हरिहिं दैरमलिउ ।  
करहस्स सहेण । 10  
महि गिवडिओ मैडुं ।  
धित्तो बलहेण ।  
चुण्णाइं गोहणइं ।

4. १ B °पिच्छोह°. २ M गिरी. ३ MBP महदी. ४ MP चउदह°. 5.

5. १ MB गहवडिउ. २ MBP °धम्मिल्लु. ३ P दलमलिउ. ४ MBP मेडु.

3 b देवि दणा ओ ऐरावणो हस्ती. 5 a भीमावयाणं भीमानामापदाम्; b पयासो प्रकटम्; पयासंपयाणं प्रजानां संपदाम्. 6 a वेसमं विषमम्. 7 a गिही गृही साण्डागारिकः. 8 a °किम्मीर° विवित्तम्; b गिकेऊहकारो सूतधारः स्वपतिः.

5. 10 a भेसिउ भयं नीतः; अहहेण अभद्रेण.

गवणलिणणेत्ताइ	वेसैरि गिहित्ताइ ।	15
परिगलियचेलाइ	हा भणिउ बालाइ ।	
खैरवडणपडियाइ	महुसीहुघडियाइ ।	
रसवणिय जूरंति	कह कह व वियरंति ।	
अच्चंतपोडेण	तेल्लोकरूडेण ।	
थिरथोरवाहेण	सेणाहिणाहिणै ।	20
पप्फुल्लवयणेण	दढदंडरयणेण ।	
गिरिणो दलिज्जंति	मग्गा रइज्जंति ।	
दूरं समग्गेण	चक्काणुमग्गेण ।	
संतोसपुण्णाइं	गच्छंति सेण्णाइं ।	
णयणाहिरामाइं	गामाइं सीमाइं ।	25
विसमाइं मंठाइं	विंझोवकंठाइं ।	
हलहरणवासाइं	लंघंतु देसाइं ।	
पविसंतु रोहंतुं	अहिणो विरोहंतु ।	
णिक्खवियणियसत्तु	सुरवरसरि पत्तु ।	

घत्ता—पंडुर गंगाणइ महियलि घोळइ किणरसरसुहमंतहो ॥  
 अवलोइय रापं छुड छुड आपं साडी णं हिमवंतहो ॥ ५ ॥ 30

## 6

णं सिहरिघरापोहणाणिसौणि	णं रिसहणाहजसरयणखाणि ।
णिम्मल णावइ जिणणाहवाय	मयरंक्रिय णं वम्महवडाय ।
णं विसमविडंणभउत्तसंति	धरणीयालि लीणी चंदकंति ।
णं णिद्वैधेयकलहोयकुहिणि	णं कित्तिहि केरी लहुय बहिणि ।

५ MBPK वेसरं. ६ MBPT खरवडुलं. ७ MBP add after this: गवणलिणणयणेण. ८ MP add after this: वजेण घडिएण. ९ MBP संठाइं. १० MB रोहंतु. ११ P भत्तहो.

6. १ MBP वम्महपडाय. २ P विडणइ भउ तसंति. ३ G सिद्धं but gloss निरघ.

16 a खरं गर्दभः. 25 a मंठाइं निन्नोभतानि. 27 b अहिणो विरोहंतु नागान् विरोधयन्. 30 सा डी परिधानवन्नम्.

6. 3 a विडणभउ तसंति राहुभयादुत्तस्यन्ती. 4 a धोयकलहोयं अतिनिर्मलं रूप्यम्.

गिरिरायासिहरपीवरथणाहि  
विर्यैलियकंदरद्विडिय सच्छ  
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह  
आयासहु पडिय धरित्तियाइ  
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ  
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय  
हंसावलिवलयविङ्गणसोह

णं हारावलि वसुहंगणाहि । 5  
धरणिहरकरिंदहु णाई कच्छ ।  
णं चक्कवट्टिजयविजयलीह ।  
सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।  
णियठाणभंसचित्ताइ णाई ।  
विसपउर णाई णाइणि सुसेय । 10  
उत्तरदिसिणारिहि णाई बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुट्ठु सुँलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥

सायरभत्तारहु सई गंभीरहु मिलिय गं पि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहि मच्छं पुच्छपरियत्तियाइं  
वेप्पंति तिसाहयगीयपहिं  
जलरिट्ठहिं पिज्जइ जलु सुसेउ  
सोहइ रत्तुप्पलदलईइ  
जहिं कीरउलइं कीलारयाइं  
जहिं कंकहारणीहारछाय  
जहिं पाणिइ पंडुर अच्छराइ  
परिहाणु सहत्थे धरिउ ताइ  
मायंगहुं दाणे वइइ णेहु  
जडसंगे विउसु वि जडु जि होइ

सिप्पिउहंछलियइं मोत्तियाइं ।  
जलविंदु भाणिवि बँपीहपहिं ।  
तमपुंजहिं णावइ चंदतेउ ।  
पुणु सो जि णाई संझाईइ । 5  
दहिकुट्ठिमि णावइ मरगयाइं ।  
कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।  
उप्परियणु दिट्ठुं ण जंतु जाइ ।  
जंपिउ हो ण्हाणे पत्थु माइ ।  
जा तहु धिवंति तवसि वि सुँदेहु । 10  
कमलावासेसु सुयंति भोइ ।

४ MBP विवरिय°. ५ MBP उत्तरदिस°. ६ MBP सलोणहु.

7. १ MBPK °पुंळ°. २ B °उडच्छलियइं. ३ MBP वव्वीहएहिं. ४ MBP जंतु ण दिट्ठु.  
५ MBPK सदेहु.

6 b कच्छ कक्षा. 7 a भूइरेह भस्मरेषा. 10 a णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात; b विसपउर नदीपक्षे जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा. 11 b बाह बाहुः.

7. 1 a परि यत्तियाइं अभिहतानि. 2 a तिसाहयगीय एहिं तृषया शुक्ककण्ठैः; b वपीहएहिं चातकैः. 3 a जलरिट्ठहिं जलकाकैः. 9 a मायंगहुं हस्तिनां चाण्डालानां च; णेहु विकृणत्वं रागय. 10 b भोइ सर्पाः.

सिररयण धणासइ धरइ ते वि  
दिव्वंगणघणथणजुयलखलिय  
उच्छलियबहल्लीयलतुसार

घणवंत वहुंणिय सविस जेवि ।  
जिणण्हवणारंभदिणम्मि गलिय ।  
णं खीरमहोवहिखीरधार ।

घत्ता—एयँहि महिणारिहि भुवणजणेरिहि ससिमणिरइयपहुज्जल ॥

सायरगिरिरायहिं धरिवि सरायहिं णाई णिवद्धी मेहल ॥ ७ ॥ 15

8

सरि पेच्छिवि महिपरमेसरेण  
झसणयणी विव्वमणाहिगहिर  
मज्जंतकुंभिकुंभत्थणाल  
तडविडविगलियमहुयुसिणपिंग  
सियघोलमाणडिंडीरचीर  
वित्थिणमणोहरपुलिणरमण  
कवणेह भणसु सियकोमलंगि  
तं णिसुणिवि रहिएं डुत्तु एम  
धरणीसमडडमणिकिरणराइ  
दालिइपंकसोसणदिणेस  
पणईयणपयणियपरमपणय  
सुंधराधरिंदभेयणसमत्थ  
गंभीर पसणण सुलक्खणाल  
रहवरसिरि व्व दरिसियरहंग  
हिमवंतपोमसरणिगयंगि

पुच्छिउ सारहिं भंरहेसरेण ।  
णवकुसुमविमीसियभमरचिहुर ।  
सेवालणीलणेत्तंचलाल ।  
चलजलमंगावलिवलितरंग ।  
पवणुंद्धयतारतुसारहार । 5  
णइ णाई विलासिणि मंदगमण ।  
रइ जणइ विहंगं णं विहंगि ।  
कम्मणीयसुकामिणिकामपव ।  
रइरंजियचरणणरेसराइ ।  
भुयबलकंपावियतिहुयणेस । 10  
णिमुणसु णरिंद णाहेयतणय ।  
णं मंतिहे केरी मइ महत्थ ।  
णं सुकइहि केरी कव्वेलील ।  
किं ण वियाणहि णामेण गंग ।  
णं महिवहुयहि परियणमंगि । 15

६ MBPT बहुपिय. ७ MBP एत्तहि.

8. १ M परमेसरेण. २ MBP पवणुदुय°. ३ MBP कमणीयकामिणी°. ४ MB सधरा°. ५ MBP कव्वमाल. ६ MBPK परिहाण° and gloss in PK परिधानं.

11 a सिररयण सर्पाः; b बहुपिय वधूनां प्रियाः, अथवा, बहूनां प्रियाः.

8. 2 a °विव्वमं जलवर्तः. 5 a °डिंडीर° केनः. 9 b णरेसराइ नरेश्वराणामादिः प्रथमचक्र-  
वर्तात्यर्थः. 12 a सु धराधरिंद° धराधराः पर्वता राजानश्च, शोभनाश्च ते धराधराः, तेषामिन्द्रः प्रधानः. 14 a  
°रहुं ग चक्रवाकः. 15 b परि याण भंगि गमनप्रकारः.

यत्ता—गिरिणहधराणियलहिं जलणिहिविर्वैरहिं वहइ छा य ससिदिस्तिहि ॥

भुचणत्तयगामिणि जणमणरामिणि पइ सरिस तुह किस्तिहि ॥ ८ ॥

9

घणे जक्खिणी जक्खकीलावियारे  
पधावंतमायंगदाणं बुगंधं  
विसंकं जंसंकं कयारिंदसंकं  
पकीरंति दूरं समा भूमि पसा  
गवक्खंतणिग्गतधूमोहवासा  
विमुच्चंति पल्लणभारा हयाणं  
भरुम्मुकदेहा जहिच्छं वल्लहा  
तरुणं तणाणं पथीवंति दासा  
पइजंति णाणाविहा भक्खमेया  
सरिच्छेण दीहेण पंथेण भग्गा  
बलिजंति दिजंति गासा करीणं  
पपेच्छंति अण्णे धैयं साहिणाणं  
णं संसंति अण्णे णरिंदस्स कामं  
इमो वेसरो वेसरी लेउ चारं  
कंउद्धुगगीवा वणंते पयट्ठा  
हले होउ जत्ताइ पसा णिविग्घं  
ईणं जत्थ केणावि रीणेण बुत्तं  
सहट्ठं सट्टेदं सदेवं समिद्धं

तथो तम्मि गंगाणईचारुतीरे ।  
युल्लंतुद्धपालिद्धयं चारुच्चिंधं ।  
बलं रायसेणाहिवाणाइ थक्कं ।  
तडिजंति दूसाइं चंदोवहासा ।  
रइजंति संचारिमा भूरिवासा । 5  
गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।  
गया रासहा रासहीदिण्णसदा ।  
पलिप्यंति चुल्लीणिहिता हुयासा ।  
णरा के वि भुंजेवि णित्तंगसेया ।  
पसुत्ता सुहं गेहिणीकंठलग्गा । 10  
तणं भोयणं खाणिलोणं हरीणं ।  
पर्यंपंति अण्णे पईहं पयाणं ।  
भमामो कहं णिच्च गामाउ गामं ।  
परेणेव बुत्तो परो वारवारं ।  
लयापल्लवं पाणियं लेति उट्ठा । 15  
पिप पेच्छ दूसाइं आगच्छ सिग्घं ।  
सवेसाणिवासं सविधोवउत्तं ।  
इमं एव रापण ठाणं णिवैद्धं ।

७ MBPT ० विवलहिं.

9. १ MBP क्षसंकं. २ MB णिग्गंति. ३ MB वलिहा. ४ MBP पवच्चंति. ५ M खाणपाणं. ६ K ण पेच्छंति. ७ वयसाहिणाणं. ८ M णसंसंति. ९ MBP णरिंदं सकामं. १० MB कथोउद्धगीवा; P कथोवुद्धं. ११ PK उटा. १२ MBP इमं. १३ BP विवद्धं.

16 वहइ छा य शोभां धरति.

9. 2 b ० पा लिद्धयं वंशवेष्टितपताका. 4 b चंदोवहासा मण्डपिका. 5 a ० वा सा गन्धाः. 9 b णित्तंगसेया निर्गताङ्गस्वेदाः. 11 a वलिजंति बलिदानेन तोष्यन्ते. 13 a कामं षट्खण्डपृथ्वीप्रभावना-भिलाषम्. 14 a चारं जीवनं तृणं वा. 17 b सवेसाणि वा सं वेसाणहसहितम्.

घत्ता—णियथवइ विरइयइ मणिगणखइयइ सइं सग्गहु उवइण्णउ ॥  
णं सुँरवरसुंदरु देउ पुरंदरु पहु सउहयलि णिसँणउ ॥ ९ ॥

20

## 10

सामंत महासामंत जेवि  
सेणाहिवसिद्धुदेसणिजइ  
हुय रयणि पुणु वि उग्गमिउ भाणु  
गयमयमलेण मइलिज्जमाणु  
छत्तंधयारछाइज्जमाणु  
झल्लरिभेरीरवगज्जमाणु  
णग्गोरेणुधवलज्जमाणु  
मरगयपहाइ णीलिज्जमाणु  
अँसहंतिइ भडयणभरु महंतु  
अणहुहुवज्जरखरमाणिण  
णाणावाहरहसंकडेण  
चक्कीसचमूवइपेरियंयु  
आरुहिवि विजयगिरिवरकरिदि  
खंधोववइतोणीरजुयलु  
संचलिउ विजयतुंदुहिणिणाउ

मंडलिय महामंडलिय तेवि ।  
थिय रायपसायविइण्णपुलइ ।  
सगभत्थिजालज्जमाणु ।  
हरिलालाणीरं पुप्पमाणु ।  
पहरणविप्फुरणहिं दीसमाणु ।  
मणहरकामिणियणगिज्जमाणु ।  
वैणधूलियाइ कवलज्जमाणु ।  
सौण्डु सविक्रमु साहिमाणु ।  
णं वसुहावणियइ पित्तु वंतु ।  
णरणियरकरहसंदाणिण ।  
चल्लियउ तुरिउ गंगातँडेण ।  
चक्रहु पच्छइ बलु चाउरंयु ।  
केसरिकिसोरु णं गिरिवरिदि ।  
करंणिहियचावगुणरावसुहलु ।  
सुरवइदिसाइ रायाहिराउ ।

5

10

15

घत्ता—उल्लंघिवि भीयरु उवरयणायर पुणु थलमग्गे आइउ ॥

महिहरदंरिवासइं गोहणघोसइं पहु गोउलइ पराइउ ॥ १० ॥

१४ MBP सुरवर सुंदर देव पुरंदर. १५MP णिसाणिउ.

10. १ MBP णव°. २ B omits णीलिज्जमाणु. ३ B omits this foot. ४ B omits this line. ५ MP पित्तु वंतु. ६ B omits अणहुहु. ७ MBP गंगातँडेण. ८ MP केसरिकिसोरु. ९ MB करि णिहिय°. १० MBPT °दरवासइं.

10. ३ b सग भत्थि जाल° निजकिरणसंघातः. 7 a णग्गो र° कर्पूरः. 9 b वसुहावणियइ वसुधा-  
वनितया; पित्तु वंतु पित्तं वान्तम्. 10 a °वज्जर° वेगसरोऽध्वतरः. 13 a विजयगिरि हस्तिनामेदम्.  
15 b सुरवइदिसाइ पूर्वादशि. 16 उवरयणायर उपसमुद्रः.

II

जहिं मंथिजइ अइंथदु वहिउं  
जहिं कडिउ मंथउ गोवियाइ  
चप्पेवि धरिउ मंदीरैण  
हो हो हलि गोविणि मइं जि रमइ  
मा कडुहि केयाकडुणीइ  
अइमहणें सिढिलीइउं वेहु  
तकइं पमेव जि जहिं धिवंति  
घयदुद्धइं जहिं पंथिय पियंति  
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु  
मूरंविउ तकु भैविचिसियाइ  
महिबइमुहपंकयरमणतण्ह  
जहिं कुणरिंदहं रिद्धीउ जेम  
काहलियवंससइं सुणंति  
वच्चइ संकेयहु गोवि का वि  
जहिं देंति तालु कीलपियासु  
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं

थैद्धत्तणु कासु वि होइ ण हिउं ।  
दीहें गुणेण णं पिउ पियाइ ।  
परिभमइ णाई घणथणकरण ।  
मंथाणु ण तुह कामग्गि समइ ।  
इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ । 5  
किं दहिउं ण अण्णु वि सुयइ णेहु ।  
गामीर्यण तकहिं किं करंति ।  
गयपहसम सुहु णिइइ सुयंति ।  
वच्छुल्लउ मेळिवि वद्धु साणु ।  
घिउ छड्डिउं तग्गयणेत्तियाइ । 10  
जहिं संठिय णीसासुण्ह सुण्ह ।  
मैहिसिउ खलेहिं दुज्झंति तेम ।  
ण करइ घरकैमु वि सिरु धुणंति ।  
मज्झप्पपसि बहुडिंभया वि ।  
मंडलिय शोव गायंति रासु । 15  
ढक्कंरिउ धीरु धुरंधरेहिं ।

यत्ता—तं गोडु मुयंतं गहाणि चरंतं हरिणसिंगखयकंदहिं ॥

मयमासाहारइं कुहरागारइं दिट्ठइं सर्वरूपलिंदहिं ॥ ११ ॥

11. १ MBP अइंथदु. २ MBP थदुत्तणु. ३ B मंदीरैण. ४ MBP गोमिणि. ५ MBP सिढिलीहूय. ६ B गामीणय. ७ MBP पंथिय जहिं. ८ B सुहाणिइइ. ९ MBP मणिगि. १० MBP सूर-विउ. ११ MBP अवचित्तियाइ. १२ M छंडिउ. १३ MBP महिसीउ खलहिं. १४ MBPK दुज्झंति. १५ M घरकमु वि सिरं; BP घरकमु सिरं. १६ MBP कीलवयासु. १७ M शोव. १८ MBP देक्कारिउ चारु. १९ M समरपुरिंदहिं.

11. 1 a अइंथदु अतिघनम्. 2 a मंथउ रविका; b णं पिउ पियाइ प्रियः प्रियया इव. 3 a मं दी र ए ण रविकानिरोधकलोहवल्यादिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन. 5 a के या क डु णी इ वरत्राकारिण्या. 7 b त क हिं तत्त्वविचारणे तर्कैः. 9 b सा णु धा. 10 a मूर विउ उत्कालितं तापितम्. 11 b णी सा सु ण्ह निश्वासे-रूपा; सुण्ह वचू. 16 b धुरं धरेहिं वृषभैः. 18 मयमा सा हा रिं मृगमांसाहारैः.

## 12

दुवई—वामणथद्धथोरवैलवलियकलेवरसंधिबंधणा ।

कढिणतिकेडचंडकोदंडकमागयजणकुलहणा ॥ १ ॥

सुमडहथूलविरलदसणुज्जलमुहसिहिपिच्छणिवसणा ।

गयमयपउरपंकचैषिक्रियगुंजादामभूसणा ॥ २ ॥

झंपडकविलकेसरुहिरारुणदारुणतंबणयणया ।

तिक्खरुखुरूपपहरपविर्यारियमारियमोरहरिणया ॥ ३ ॥

इसुहयदंतितंतकयमंदिरसंविचचारवोरया ।

तलैतरुवत्तरत्तणीलुप्पलविरइयकणपूरया ॥ ४ ॥

दिसिपसरंतविमलससियरणिहरणवइजसभयंगया ।

वंसविसेसजायमुत्ताहलचमरीरुहकरग्गया ॥ ५ ॥

पीयसुसीयकुसुमयसुरहियमहिहरकंदरंभया ।

सवरीवयणकमलरसलंपडखंधुद्धरियडिंभया ॥ ६ ॥

हरगलगरलमलिणवजलहरुल्लविसारिच्छकायया ।

आया पडुसमीवि मउलियकर विविहकिरायरायया ॥ ७ ॥

गुरुभयवसणिहित्तणियेदेहमहीयललग्गभालया ।

ते अवलोइऊण करुणेण णवंतवणंतवालाया ॥ ८ ॥

ण्हंततरंतजक्खिथणघुसिणामोयमिलंतमहुयरं ।

चंचलसंगलंतकल्लोलगलत्थियखयरवहुवरं ॥ ९ ॥

कच्छवसुसुयारमयरोहरपुंलुच्छलियणीरयं ।

पत्तो परियणेण सह महिवइ सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

घत्ता—आवासिउ साहणु वणि सुपसाहणु णिसि पणविवि परमेसरु ॥

णं जिणु जिणसासणि थिई दब्बासणि उववासेण णरेसरु ॥ १२ ॥

12. १ M has before this: छंद पथटिका. २ MBP थडु. ३ MBP °चलवलिय°. ४ MBP °पिठ°. ५ P °विचिक्रय°. ६ MBP °यारियतित्तिरमोर°. ७ M तिलतरं; T तिलतरं but gloss ताड-वृक्ष°. ८ MBP ठिउ.

12. 2 °जणण° पिता; °कुलहणा कुलघनाः. 8 तलतरुवत्त° तालवृक्षपत्रम्. 11 °कंदरंभया °कन्दरजलाः. 14 °किराय° भिक्षाः. 20 °दुवारयं गङ्गायाः समुद्रानुप्रवेशस्थानम्.



13

अहिवासिउं रायं चक्रयणु  
सुयवणु अहंगु तुरंगयणु  
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु  
कइवयणरेहिं सह सूरसंसु  
पहरणपरिपुणु महामहंतु  
चलपंचवणधयवडललंतु  
ओलवियकिंकिणिरणणंतु  
सलिलणिहिसलिलेधोइयपणहिं  
तक्कारिचम्मलड्डीहणहिं  
छक्खंडपुहइचलयाहिधेण

जिह तं तिह अवरु वि दंडरयणु ।  
करिरयणु लोहवलयंकरयणु ।  
आरुढउ संदणि पुरिसरयणु ।  
णं माणसपंकइ रायहंसु ।  
परिभमियचक्कचिक्कारु देंतु । 5  
णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।  
तियसिंदह मणि विम्हउ जणंतु ।  
मुहसंमुहघुलियतरंगणहिं ।  
रहु कड्डिउ मारुयजवहणहिं ।  
अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण । 10

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पहु ण कासु किर रुच्चइ ॥  
मरुहयकल्लोहिं चलभुयडालहिं रयणायरु णं णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उक्खिवइ व मोत्तियतंतुलाइं  
भीपण व रायहु लइय वेल  
णं दोयइ जलमयगल सरंत  
माणिकइं पवरपवालयाइं  
णं बोहइ वडवाणलपईवु  
संखाऊरउ जिह संखु धरइ  
उम्मुक्कविविहजलयरसणेहिं

तोयईं णं अग्घंजलिजलाइं ।  
दावइ व विउलसलिलंतसेल ।  
जलणरकिंकरकररुहफुरंत ।  
णं दरिसई तीरलयालयाइं ।  
णं वेढिवि रक्खइ जंबुदीवु । 5  
पहुआणइ किंकर किं ण करइ ।  
णं जंपइ पायालाणणेहिं ।

13. १ P °वलियंक°. २ MP °परिपुणु°. ३ MBP विभउ. ४ MBP °सलिलमुणिहियपणहिं.

14. १ P दोयइ. २ MBP रसंत; K सरंत but corrects it to रसंत. ३ BP दरसइ.  
४ MBP °पईउ. ५ MBP जंबुदीउ. ६ MBP संखाऊरिउ.

13. 1 a अ हि वा सिउं पूजितम्. 2 a सुयवणु शुक्वर्णम्; अ हंगु अमहम्; b लोहवलयं क-  
रयणु लोहवलयवद्धदन्तम्. 3 a दुमणि° आदित्यः. 9 a तक्का रिर सारधिः; च म्मलड्डी° कशा.

14. 7 a °सणे हिं शद्वैः; b पायालाणणे हिं वडवामुखैः.

किं विदुमरापं तुहुं जि राउ  
मा जोयहि महिवइ तिक्खमलि  
होर्पिणु अच्छउं एत्थु ताम  
तुह मुइइ अंकिउ हउं समुहु

तेल्लोक्कपियामहु जासु ताउ ।  
तउ तणिय वाय मज्जायवेलि ।  
णउं लंघमि महियलि वसमि जाम । 10  
मा किं पि करहि मच्छरु रउहु ।

घत्ता—खारत्तु ण मेल्लइ जणु किं बोल्लइ णत्थिं सहावहु ओसहु ॥  
जसु णामु जि सायरु अवसें सायरु सो संभासइ गिययपहु ॥ १४ ॥

## 15

तरुणीअंगाई व सलवणाई  
लंघेप्पिणु रयणायरवणाई  
ठाप्पिणु पुणु तेसियहिं तेहिं  
रिउमवणु पलोइवि णिववरेण  
अंदोलिय तारागहपयंग  
अच्छोडियबंधण विवलयंग  
धरहरिय धराहर धरण वरुण  
संचालिय सरिसरसायरंम  
णिवडिय पुरवर पायार नेह  
वरवीरहिं खगहु दिण्ण दिट्ठिं  
दण्णिट्टु दुडु भुयबलविमहु  
किं मंदरसिहरु सठाणहसिउ

अहिंसिचियतीरलयावणाई ।  
पइसेप्पिणु बारहजोयणाई ।  
तेवेहिं सरोसहिं लोयणेहिं ।  
अप्फालिउ धणुहुं धणुद्धरेण ।  
महि चलिय विवरणिग्गयमुयंग । 5  
णिण्णासिय तासिय रवितुरंग ।  
आसंकिर्यं जम वइसवण पवण ।  
गय मयगल मुडियालाणखंभ ।  
मुय कायर णर भयंभंतदेह ।  
अवर वि चवंति हा णट्टु सिट्ठि । 10  
भडभीयर भावइ भीसुं सहु ।  
किं जणुं कवलिवि कालेण हसिउ ।

घत्ता—पायालि फण्णिदहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंण्डि ॥  
धणुगुणटंकारें अइगंभीरें कासु ण हूयउं विण्णियउं ॥ १५ ॥

७ MBP तेल्लोक्क. ८ MBP. होएविणु अच्छमि. ९ ण हु.

15. १ MBP धराधर. २ M आसंकय; BP आसंकइ. ३ P भयवंत. ४ MBP मुट्ठि. ५ MBP भीमसहु. ६ B °हसिउ. ७ MBP णं जगु. ८ PK कणियउ. ९ P विण्णियउ.

13 सायरु सागरः; सायरु सावरः

15. 2 a °वणाई जलानि. 8 b मुडि ब° भमः. 11a भावइ चमत्करोति. 14 विण्णियउ भयम्.

16

धनुवेयजाणु परिछिण्णमाणु  
णं काले भासुरु कालदंहु  
धम्मज्झिउ पलयहुयासलीलु  
पिच्छंचिउ चंचलु णं विहंगु  
अइदूरगामि णं परमणाणु  
अइदीहायारउ णं भुयंगु  
अइगुणिहि परमुहुं होवि गयउं  
अइलोहवडिउ णं लुद्धंचिउ  
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु  
णावालउ णं तच्चिय महंतु

बंधेप्पिणु गिरुवमु किं पि ठाणु ।  
णरणाहं पेसिउ वज्जकंडु ।  
गुणकोडिचिमुक्कउ णं कुसीलु ।  
उज्जयगइ णं सुयणंतरंगु ।  
अइसुद्धिवंतु णं सुक्कशाणु । 5  
अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।  
णं माणुसु कुसमयभंत्तिहयउ ।  
अइगयणगमणु णं खेररत्तु ।  
अइकटिणभेइ णं णइपवाहु ।  
हुंकारे चोइउ णं सुमंतु । 10

वत्ता—मागहहु णिहेलणि हरिणीलंगाणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥

रुइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूमंगमीसभिउडीहरेण  
सुरसमरसहासभयंकरेण  
देवेण समुहपरिग्गहेण  
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह  
णायउलवलयविलुलंतु गीदु  
भणु केण कलिउ मंदर करेण  
भणु केण खलिउ णहि भाणु जंतु  
भणु कासु करोडिहि रिद्धं रसिउ

विष्फुरियदसणडसियाहरेण ।  
दुणिरिक्खविक्खखयंकरेण ।  
तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।  
भणु केण लुहिय खयकाललीह ।  
भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीदु । 5  
उट्ठाविउ सुत्तउ सीदु केण ।  
णिक्खिण्णउ प्राणहं को जियंतु ।  
भणु को कयंतैदंतंति वसिउ ।

16. १ MB °जाण. २ MBP उज्जुय°. ३ MBP अइसिद्धिवंतु. ४ MBP °पाण°. ५ MBP होइ. ६ MBP °मंति°. ७ B लुद्धरत्तु.

17. १ MBP विलुलंत. २ M धरणिपीदु. ३ MBP पाणहं. ४ B रिद्ध. ५ P दंतंतवसिउ.

16. 4 b उज्जयगइ सरलगतिः. 7 a गु णि हि शरासनान्मुनेश्च. 10 a णा वालउ नौमुक्कः, पक्षे नमनशीलः. तच्चिय नदीप्रवाहः तारिक्कश्च; b सु मंतु परममन्त्रः. 12 जउंणाण इ° यमुनानदी.

17. 4b लु हिय प्रोच्छिता. 5 a गीदु गृहीतम्. 8 करोडि हि शिरोस्थानि; रिद्धु काकः.

भणु केण विहंडिउ मज्जु माणु

केणेहु विसज्जिउ कुलिसबाणु ।

घत्ता—जेणेउं वियंभिउं रणु पारंभिउं सो महु अज्जु ण चुक्कइ ॥

10

णिब्भंगु जमाणु भीयउ काणणु विहिं वि एक्कु धुंहु दुक्कइ ॥ १७ ॥

## 18

इय भणिवि तेण कड्डिउ करालु  
पहुताडणखंडियभडवमालु  
दढमुट्टिणिवीडिउ वहइ वारि  
वसुणंदउ ससिमंडलसरिच्छु  
पहु पेच्छिवि केण वि लइउ कौतु  
मोगगरु मुसुंदि पँसु वि तिसलु  
वावँलु सेलु झसु सत्ति सुसलु  
केण वि भुरंगु केण वि विहंगु  
केण वि अलियल्लि घुलंतजीहु  
केण वि संचोइउ करहु सरहु

धारालउ णावइ मेहजालु ।

असि अरि करिमोत्तियदंतुरालु ।

दासु व विंझइरि व वंसधारि ।

उरि चप्पिवि उट्टिउ लोहियच्छु ।

आरुहु को वि हणु हणु भणंतु । 5

केण वि करि लइयउ भिडिँमालु ।

हलु सव्वलु कर्पणु जुज्झकुसलु ।

केण वि तुरंगु केण वि मयंगु ।

केण वि खरणहरक्केरु सीहु ।

कु वि आहवि धाइउ जाम सरहु । 10

घत्ता—ता मागहमंतिहिं कयकुलसंतिहिं पणवेप्पिणु उच्चाइउ ॥

छणससहरवयणहिं तारहिं णयणहिं रायसिलिम्महु जोइउ ॥ १८ ॥

## 19

तंहिं लिहियेइं विट्ठइं अक्खराइं  
जिणतणयहु विविहणिहीसरासु  
रायहु भरहहु ण णवन्ति जाँइं

सुरमणुयखयरदेसंतराइं ।

णियकालवट्टसंधियसरासु ।

णिच्छउ दोहाइं मरन्ति तौइं ।

६ MBP पुउ.

18. १ MBP °कवालु. २ MBP कुंतु. ३ MBPK पट्टिउ तिसूल. ४ P भिडमालु. ५ MBP वावँलु. ६ MBP कप्पणु.

19. १ P तिहिं and gloss बाणे. २ MBP लेहियइं. ३ M °कालवट्टि. ४ M जे वि. ५ M ते वि.

11 णि ञ्भंगु अनिष्टम्.

18. ४ ढ लोहिय च्छु रत्तलोचनः. 6 ढ भिडि मालु गोलागोफणी (?). 7 ढ कं पणु सर्वलोहमयः कुन्तः. 9 a अलि य ल्लि व्याघ्रः.

19. 2 ढ काल वट्ट° कालपुष्टं नाम धनुः. 3 ढ दोहाइं द्विखण्डानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु  
पुणु अक्खिउ खल्लयणमइयवट्ठि  
भो मागह किं जुज्झग्गहेण  
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव  
तुहुं एक्कु ण अवरइं सुरसयाइं  
लिहियहु किं किंरि कीरइ विसाउ  
तें वयणें सो पैरिमुक्कदप्पु  
अवल्लोयवि सरल्लिविपंतियाउ

दक्खविउ ससामिहि गंपि बाणु ।  
उप्पण्णउ महियलि चक्खवट्ठि । 5  
सुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।  
तो तुम्हई णउ अम्हई मि देव ।  
तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।  
दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।  
थिउ मंतपहावें णाईं सप्पु । 10  
भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउं ।

घत्ता—मागहिण अगावें सविणंयभावें चक्रेण व दिवसेसरु ॥

पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हावियसयमहेण  
जय भरह महागयलीलगामि  
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु  
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि मंति  
तुहुं धणउ धंणउ सुहिणिहियकामु  
ईसाणु मँहेसरणवियपाउ  
तुँह असिजलधारइ हरियछाय  
तुँह असिजलधारइ उद्धसासु

विहसेप्पिणु बोह्लिउ मागहेण ।  
तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।  
तुहुं इयवहु अरिवरदिणुडाहु ।  
तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।  
तुहुं पवणु पबलवलदलणयासु । 5  
तुहुं एक्कु जि जणि रायाहिराउ ।  
अरिणैरवइ तर के के ण जाय ।  
वड्डुरिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किंकर. ७ K पविमुक्क°. ८ MBP सरलियपंतियाउ. ९ MP add after this: भरहेसरायणामं-  
कियाउ, सुरणरखेरमय (M सय) गारियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ;  
B adds: भरहेसरायणामंकियाउ, जुहणिजियरवियरकंतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, चक्खवइभरहणामं-  
कियाउ. १० M अकुडिल°.

20. १ MBP °विभाविय°. २ MBP °वाहु. ३ MBP धणइं. ४ MBP महीसर°. ५ B omits  
this line. ६ MPK अहिणरवइ. ७ B omits this line. ८ MP उद्धसासु.

5 a °मइय वट्ठि संचूरकः. 6 b सुइ सुध; गहेण पिशाचिन. 9 a लिहियहु भवितव्यतायाः. 11 a  
सर लि वि पं तियाउ बाणलिखिताक्षरपंकयः.

20. 5 a धणउ लक्ष्मीदायकः कुबेरः. 7 a हरिय छाय हतमहातमसः, अन्यत्र नीलवर्णाः. 8 a  
°सा सु उच्छ्वासः सस्यं च.

तुह असिजलधारइ परिहसंति बहुसलिल वि रयणायर तसंति ।  
 तुह असिजलधारइ अइहुयाइ रिउवहुणयणंसुयबिंदुयाइ । 10  
 तुह असिजलधारइ कुलि असोउ ह्वयउ णिच्चं विय भुत्तभोउ ।  
 घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढेममहीवइ महिणाहहिं मणि भाविउ ॥  
 ताराणक्खत्तहिं पय पणवंतहिं पुष्कदंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥  
 इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरइए  
 म्हाभिव्वमरहाणुमणिय महाकव्वे मागहपसाहणं णाम  
 वारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥  
 ॥ संधि ॥ १२ ॥

१ MBP पढसु. १० M पुष्कयंतु; BP पुष्कयंत.

9 a परिहसंति गर्व सुखन्ति. 10 a अइहुयाइ अतीव भूतानि. 18 पुष्कदंतु जिनश्चन्द्रादित्यौ च.

### XIII

साहिवि मागहु गंहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिणेयारहो ॥  
हंजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ भुवकं ॥

1

धरणीसरो चलइ	गरुडद्धओ घुलइ ।	
सिमिरं समुल्लइ	धूली णहे मिलइ ।	
सुरसिरिहरं कमइ	पडिबलइ उवसमइ ।	5
हरिवयणलालाइ	करिदाणवेलाइ ।	
जणजणियसंकेण	तंबोलपंकेण ।	
चरणाइं लिप्पंति	हारेहिं गुप्पंति ।	
अइगरुयभारेण	सामंतचारेण ।	
दसदिसिवहं भमइ	पुहईयलं णमइ ।	10
णाइणिहिं णउ रमइ	विसवाणियं वमइ ।	
कह कह व भर सहइ	मउ मुयइ गइ महइ ।	
फणिपुंगमो तसइ	लवण्णवो रसइ ।	
णरवइभुण वसइ	रणजयसिरी हसइ ।	
परणिवचलं गसइ	विसमत्थलिं कसइ ।	15
वरवाहिणी चरइ	हुंमं पि पइसरइ ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

तीव्रापहिंसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
संतानकमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयलनुभः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ P साहेपिणु. २ MB गहिवि समु; P महिवि समु. ३ P सुरसिरि संकमइ. ४ MBP कह वि. ५ M दुग्गे पि.

1. 1 गह वि समु ग्रहे आक्रमणे विषमः; °णे यारहो° प्रापकस्य. 5 b पडिबलइ शत्रुसैन्यानि; 6 b °वेलाइ प्रवाहेण. 11 b वाणियं जलम्. 12 b गइ महइ कुत्रापि गन्तुं चाञ्छति. 15 b कसइ चूर्णाकरोति.

जलदुग्गमं तरइ	तरदुग्गमं हरइ ।
गिरिदुग्गमं समइ	गयणंगणं कमइ ।
भडथडहिं तुरणहिं	संदणदिं दुरणहिं ।
अमरेहिं खयरेहिं	रिउवग्गखयरेहिं ।
छव्विह वि संकमइ	अरिपत्थिवे दमइ ।
रायस्स वसि करइ	अवसो भिसं रमइ ।

20

घत्ता—काणणि वईजयन्तिणियडे बलु आवासिउ परगहणायरु ॥

गज्जइ गज्जंतहिं गयहिं पलयकालि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

2

उवजलहिजलहितीराइयउ	गिरिगेरुंयरेणुंयराइयउ ।
सालालइ पैट्टसालसहिउ	तालालइ तूरतालमहिउ ।
उँचुंगमड्डि कयमँडुवरु	रत्तासोयंकि असोयधरु ।
कंचणवंतइ कंचणफुरिउ	पुण्णायपउरि पुण्णायरिउ ।
ससिरीसि सिरीसपसाहियउ	बहुवंसि णिवंसविराइयउ ।
संठियँसुवेसि वेसाभवणु	समुयंगइ भमियमुयंगगणु ।
सिहिगलरवि मंगलरवगहिउ	सरिवहरिउ कूरवहरिवहिउ ।
सविसायइ अविसायउ सविहु	माइंदयइइ मायंदणिहु ।

5

६ MBP परपत्थिवे. ७ MBP मरइ; K रमइ, but writes adove it मरइ. ८ MPT वइजयन्तं; B वइजयन्ते.

2. १ M मेरुयं, but records a p °मेरुयं. २ P °रेणुविराइयउ. ३ दूसासाल°. ४ MB छचुंग-मड्डि. ५ MB °मड्डुवरु; P मडवरु. ६ P रत्तासोयंकिअसोयं. ७ MP संठिउ. ८ MBP सरिवहरिउ; K °वहरिउ but corrects it to वहरिउ.

19 a °थड हिं समूहैः. 21 a छविह षडविधं सैन्यम्. 22 b अवसो भिसं रमइ यो वचं नागच्छति सोऽ-वदयं प्राणैर्वियुज्यते. 23 वइजयंति णिय डि क्षीणसमुद्रानुप्रवेशद्वारसमीपे.

2. 3 a कयमँडुवरु कृतबलात्कारकरं बलम्. 4 b पुण्णाय रिउ पुण्यमाचरितं येन. 5 a ससिरीसि शिरीषपुष्पयुक्ते; सिरीसपसाहियउ शिरीषैर्मुकुटवद्धैः प्रसाधितमलंकृतम्. 7 b सरिवहरिउ सरितां नदीनां कूटतटसहिते; कूरवहरिवहिउ कूराणां शत्रूणां वधे आहतम्. 8 a सविसायइ पक्षिभिः शाकट्यैश्च सहिते; सविहु प्रभुसहितम्; b माइंदयइइ आम्रस्थगिते; मायंदणिहु लक्ष्मीचन्द्रसदृशम्, अथवा, मासि चन्द्रो माश्वन्द्रः सकलः पूर्णश्चन्द्रस्तेन सदृशम्.



कइलुकइ कहिं पसंसियउ  
परलच्छीगहणुकंठियउ  
अथमिउ सूर तमभरियदिसि

थिय हैरिवरि हरिवरभूसियउ ।  
वणि साहणु सयलु वि संठियउ । 10  
थिउ गिसि उववासैं रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं गियकुलचिंधइं चावइं चकइं ॥  
झाइउ मंतु महारिहर दीवकंवाडइं विहडिवि थकइं ॥ २ ॥

3

तहिं अवसरि दिणयर उग्गमिउ  
रहु वाहिउ सहसा तेण किह  
कसपहरतुरियपेरियतुरउ  
विरसियरहंगरोसियउरउ  
मणिघंटाजालहिं झणझणइ  
कइवयजोयणइं महासरहो  
पव्वालंकरियउ णं वरिसु  
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु  
गुणु कडुवि लीलइ जे गिथैउ  
रेहइ सर दिणयरणिम्मलहो

भरहेसैं जिणवरिंदु णामिउ ।  
संपुण्णमणोहरं पुण्ण जिह ।  
मरुफंसफारफरहरियधउ ।  
पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।  
भडभारकंतउ णं कणइ । 5  
जलु लंधिवि पुणरवि सायरहो ।  
कोडीसर किं ण जणइ हरिसु ।  
सुकलचु व पडुणा लइउ धणु ।  
करु सवणि ससि व्व संहइ थियउ ।  
णवणालु व कुंडलसयदलहो । 10

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवइहि महु संगेण वि वहइ खलत्तणु ॥  
गुणथिरकरपरियड्डियउ कण्णालंगु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुकु जीवियहरणु  
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ

णं दिणयर खरपसरियकिरणु ।  
णं पेसिउ दुर्यउ अप्पणउ ।

१ MBP हरिवरेहिं हरि भूसियउ. १० MBP दो वि.

3. १ MBP ° मणोरह. २ MBP जोजियउ. ३ MBP ° लग्गचाव°.

4. १ MBP जीयाइ मुकु. २ MBP दूवउ.

18 दीवक वाडइं जम्बूद्वीपकपाटानि.

3. 3 a क स° चर्मयष्टिका; b मरुफंस° वातस्पर्शः. 6 a महा सरहो महान् सरः शब्दो जलं च यस्य स समुद्रः. 7 a पव्वालं क रियउ पूर्वभिरमावासादिभिः ग्रन्थिभिश्च अलंकृतम्. 9 a गियउ नीतः; सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च.

4. 1 a जीया विमुकु प्रत्यक्षया विमुक्तः. 2 a मग्गणउ मार्गणो बाणो याचकश्च.

गिबडिउ सहमंडवि वरतणुहि  
कंचणपुंक्खेणुजोइयउ  
सुरदणुयदप्पलीलाहरइं  
अरविंदचंदविमलाणहो  
भरहु जो जो ण सेव करइ  
ता तेण जि तं जि समिच्छियउ  
गउ तहिं जहिं सइं अछइ भरहु

कह कह व ण लगउ तहु तणुहि ।  
सो तेण लपवि पलोइयउ ।  
दिट्ठइं णरवइणामक्खरइं । 5  
महु आइजिणेसरणंदणहो ।  
सो सो अहि णरु अमरु वि मरइ ।  
थोवउ गियपुणु दुगुंछियउ ।  
मयरहरमज्झि खंचियसरहु ।

यत्ता—अक्खि वि णाउं सगोचु कुलु पणविउ सो महिवइमत्तारहु । 10  
सुरहं मि तुच्छधम्मफलिण लगइ सिरि करु परपडिहारहु ॥ ४ ॥

5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु  
तुह विग्गहु णिग्गहु विग्गहहो  
पइं सामिय संधिउं जासु सरु  
पिउ जासु अणिउ जिणिउ सइं  
लइ लइ पयउ हारावलिउ  
लइ सुरधरणीरुहसंभवइं  
लइ णेउराइं लइ कंकणइं  
लइ दिव्वंगेइं वत्थइं वरइं  
धम्मु व जीवहु अन्नुद्धरणु  
तं गिसुणिवि भरहें बोळियउ  
जज्जाहि लपप्पिणु गिययघर

पभणइ वरतणुमहिलुलियतणु ।  
तुह संघाणु जि कारणु महहो ।  
वैउसंधिउ भक्खइ तहु खयरु ।  
पुण्णहिं विणु पहु को लहरइं । 5  
णं महिघुलियउ तारावलिउ ।  
कुसुमइं णिच्चं चिय णवणवइं ।  
लइ दिव्वइं सत्थइं घणघणइं ।  
लइ खीरतरंगइं चामरइं ।  
परमेसर तुहुं जि मज्जु सरणु ।  
पउ वि अवरु वि मोक्खलियउ । 10  
अच्छहि महु होइवि आणयरु ।

३ M तउ. ४ MP °पुंखेणु°. ५ MBP महिवहुमत्तारहु. ६ MBP सुरहमि धम्मतुच्छफलिण.  
5. १ MBP तुहुं. २ B संधिय. ३ M चउसंधिउ. ४ MBP देवंगइं. ५ MP मोक्खलियउ.

9 ७ °सरहु स्वरथः. 11 सुरहं मि देवानामपि.

5. 2 a विग्गहहो शरीरस्य; q महहो पूजायाः. 3 ७ वउसंधिउ वपुषः शरीरस्य संधयः संधि-  
बन्धनाति; ख य रु गुप्त्रः.

घत्ता—पूरइ महु महिवइ जसेण दविणविलासु वासु किं वणिणउ ॥  
उत्तसु जगि अहिमाँणु धणु एउ वयणु किं पई णायणिणउ ॥ ५ ॥

6

पण्णुलियदुमरसदावणिय  
वरतणु सुरु जिगिनि सुहावणिय  
पुणु जयदुंदुहिसइहु मिलिउ  
पच्छिमैदिसि संमुहु धाइयउ  
हयसुहपयलियफेणुजलउ  
सव्वत्थ जि गयमयसिचियउ  
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ  
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु  
सव्वत्थ जि भमियभैमिरभमरु  
सव्वत्थ जि परिधाँइयअमरु  
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु

सुयपिच्छिंरिळकोडुवाणिय ।  
वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।  
सहुं राणं साहणुं संचलिउ ।  
सव्वत्थ जि कहि मि ण माइयउ ।  
सव्वत्थ जि भँडथडसंकुलउ । 5  
सव्वत्थ जि धयमालं चियउ ।  
सव्वत्थ जि वंदिविंदुणुणउ ।  
सव्वत्थ जि सुराहिगंभंसरसु ।  
सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।  
सव्वत्थ जि संचरंतखयरु । 10  
सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेईउ ॥  
साहणु एम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवलोइय राणं सिंधु किह  
दावियमय णावइ हत्थिहंड  
गिरितवसिहि णं परिणुलियजड

विन्भमधारिणि वरवेस जिह ।  
विवुहासिया वि संगहियजड ।  
रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास. ७ MBP अहिमाण. ८ MBP पई किं.

6. १ MP सुयरिच्छिपिच्छं; B सुयरिच्छिपिच्छं. २ B °दिससंमुहु. ३ B णडयड. ४ M वंदविंद. ५ MBP °गंधरसु. ६ MBP °भमरिभमरु. ७ M परिधाविय. ८ B विओइउ; P णिवोइउ.

7. १ B हत्थिघड.

12 वा सु व्यासो वित्तरः.

6. 1 a पण्णुलिये त्यादि—प्रकुलितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसायाः प्रथिव्या दा वणि या वेदिका; b °को डु-  
वणि य कौतुकोत्पादिका. 8 b °सरसु शृङ्गारादियुक्तम्. 9 a °भमि र° भ्रमणशीलाः.

7. 1 b वरवेस वरा वेदया.

अइकुडिल णाई सुरंमंतिमइ  
घणुलट्टि व दीसइ मुकसर  
कमलेण कोसंलच्छि व धरइ  
चलसारसजुयलपयोहरिय  
रंगंतवयावलिपंडुरिय  
णं गहियविचित्तवहेत्तरिय  
गयहयचंदणरसपरिमलिय  
जा मिलिय गंपि रयणायरहो

मलणौसणि णं पंचमिय गइ ।  
बहुरायहंसपिय णाई धर ।  
जा महिवइसत्तिहि अणुहरइ ।  
कणइल्लपन्निसंपतिहि हरिय ।  
पवहंतकुसुमरयपिंजरिय ।  
अहवा णं मंडणकवुरिय ।  
चंदकवकलावसुकोतलिय ।  
रत्ती धुत्ति व रय णायरहो ।

5

10

घत्ता—ताहि तीरि मुकउ सिमिरु तामत्थइरिसिहँरु संपत्तउ ॥

णं वारुणिदिसिकाभिणिहि णिवडिउ मिनु णिरारिउ रत्तउ ॥ ७ ॥

## 8

अत्थमिइ दिणेसरि जिह सउणा  
जिह पुरियउ दीवयदित्तियउ  
जिह संझारापं रंजियउ  
जिह भुवणुल्लउ संतावियउ  
जिह दिसि दिसि तिमिरइं मिलियाइं  
जिह रयणिहि कमलइं मउलियइं  
जिह घरहं कवाडइं दिण्णाइं  
जिह चंदें णियकरपसरु किउ  
जिह कुवल्लयकुसुमइं वियसियइं  
जिह पीयइं पाणइं महुराइं

तिह पंथिय थिय माणियसउणा ।  
तिह कंताहरणहदिसियउ ।  
तिह वेसारापं रंजियउ ।  
तिहं चकउल्लु वि संतावियउ ।  
तिह दिसि दिसि जारइं मिलियाइं ।  
तिह विरहिणिवयणइं मउलियइं ।  
तिह वल्लहखेवैइं दिण्णाइं ।  
तिह पियकेसहिं करपसरु किउ ।  
तिह कीलियमिहुणइं वियसियइं ।  
तिह अँहरइं महुरसमहुराइं ।

5

10

२ P सुरंतमइ. ३ MP °णासिणि पंचमिय°. ४ MBP कोसु. ५ P °वहुत्तरिय. ६ MBP चंदक°. ७ MBP °सिहिरि. ८ MBP वारुणदिसि°.

8. १ P दीवउ. २ B omits this foot. ३ MBP° खेमइं. ४ MB अवरइं महरइं; M records a p महुरइं for महरइं; P अहरइं महरइं.

7 b कणइल्ल° शुकाः. 8 a °वयावलि° बकपंक्तिः. 10 b चंदकवकलावसुकोतलिय मयुरपिच्छकुन्तला. 11 a रयणायरहो समुद्रम्; b णायरहो नागरपुरुषं प्रति. 13 मिनु सूर्यः; णिरारिउ अतिशयेन.

8: 1 b °सउणा निमित्तानि. 7 b °खेवइं आलिङ्गनानि.

जिह जिह गलंति जामिणिपहर  
जिह णहि सुक्कुम्भमु द्रिसियउ

तिह तिह विइण्ण मउरइपहर ।  
तिह विडि सुक्कुम्भमु द्रिसियउ ।

घत्ता—ता चक्रउलहं पंकयहं तंबकिरणपूरियमुवणोयरु ॥  
विरयहं णरणारीयणहं जीविउ दंतु समुमाउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे  
कोइलकुलकलयलि वियसियसयदलि रंभवणे ।  
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणमुउ  
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।  
जंमभउंहाभावइं चक्रइं चावइं जियरणइं 5  
अहिअंचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं ।  
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ  
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रदि चडिउ ।  
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तिकंखमइ  
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ । 10  
कयभडकडवंदणु वाहियसंदणु चैवलघउ  
करिमयरउइहु लंवनसमुइहु मज्झि गउ ।  
ता खंविउं रडवरु भेसियजलयरु सलिलवहे  
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जर्कंख णहे ।  
रापें सुइसोक्खर गियणामक्खरभूसियउ 15  
थिरु ठाणु णिबंघिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ ।  
अवरणवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ धरे  
तडिदंहु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

५ MP सुक्कुम्भमु. ६ MP सुक्कुम्भमु.

9. १ M चिकमइ; B चिकमइ. २ P मइण. ३ MBP धवल°. ४ MBP मज्झि समुइहु सो जि  
गउ. ५ MBP खंविउ°. ६ MBP थक्क. ७ P गुणु.

12 b वि डि विटे.

9. 4 जय मायरु विजयलक्ष्मीकरः. 8 वेयडियइ खाविते. 9 जोत्तारें साराथिना. 15 सुइ-  
सोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरण व° पाथिमसमुद्रः.

सो गिवडिउ महियलि सहसा करयलि ढोइयउ

20

सुरखईसंकासैं बाणु पहासैं जोइयउ ।

ता तम्मि विसिद्धई लिहियई दिट्ठई अक्खरई

णं मत्तावित्तई मत्ताजुत्तई णायरई ।

हउं दाणवमहणु कासवणंदणु चक्कवइ

महु भरहहु केरी जगभयगारी सेव जइ ।

25

तुहुं करहि पियारी परिहवगारी तो<sup>१</sup> जियहि

णं तो असिवाणिउ जयसिरिमाणिउ धुं<sup>२</sup> पियहि ।

इय तेण पवाइउ कज्जु विवेइउ गयउ तहिं

अमरिंदसमाणउ पुहइहि राणउ थियउ जहिं ।

पविमुक्कपईसैं दिट्ठ पहासैं भरहु किह

30

भविणं सपणामें सुहपरिणामें अरई<sup>३</sup> जिह ।

घत्ता—कुसुमईं कप्परुक्खफलईं वाहणै<sup>४</sup> मि वरवाहणवाहहो ॥

रयणईं वत्थईं भूसणईं दिण्णईं तेण वसुंधरिणाहहो ॥ ९ ॥

## 10

सुरसिंधुसरिहिं देहलिय धरिवि

पइसरणु करिवि ।

पुब्बावरेसु परिसंठियाईं

वइरट्टियाईं ।

वेयडुगिरिहि ओइल्लयाईं

सुधंणिळयाईं ।

चंडाई मेच्छखंडाईं ताईं

दोसाहियाईं ।

करवालें गिज्जिउ अज्जखंड

पट्टविवि दंड ।

5

८ MBPK सुरवर<sup>१</sup>. ९ MBP ता. १० MBP धुउ. ११ MBP °सहासैं and T स्वोपहासेन स्वमाहात्म्येन  
वा. १२ MBP अरहु. १३ P वाहणाईं वर<sup>२</sup>.

10. १ M देहल; BPT देहलि. २ MBP सुवणिळयाईं.

20 पहासैं प्रभासनाम्ना रुपेण. 22 मत्तावित्तईं मात्रावृत्तानि आर्यादीनि; मत्ताजुत्तईं माता गुरुल्लु  
गलअभाइईत्यादिस्वराश्च.

10. 1 सुरसिंधुसरिहिं गङ्गासिंधुनयोः; देहलिय मर्यादाम्; ८ पइसरणु करिवि पुब्बावरेसु पूर्व-  
दिग्भागे प्रवेशनं कृत्वा. २ ८ वइरट्टियाईं वैरेणामर्षेण स्थितानि.

मालव मागह वंगंग गंग	कालिंग कौंग ।	
पारस बब्बर गुज्जर वराड	कण्णाड लाड ।	
आहीर कीर गंधार गउड	णेवाल चोड ।	
वेईस चेर मरु दुईरंडि	पंचाल पंडि ।	
कौंकण केरल कुरु कामरुव	सिंहल पड्य ।	10
जालंधर जायव पारियाय	णिज्जिणिवि राय ।	
पच्चंतवासि णीसेस लेवि	णियसुह देवि ।	
हेलाई तिखंडावणि हरेवि	असि करि करेवि ।	
विजयद्धु संसुहु चलिउ राउ	सेणासहाउ ।	
दियहिहिं पत्तु तं सिहरि केम	मैणि मोक्खु जेम ।	15
दिट्ठउ महिहरु सुंसरेण सुसर	कुहरेण कुहरु ।	
सरहेण विहंडिय भीमसरहु	समहेण समहु ।	
कडयंकिएण कडयंकियंगु	तुंगेण तुंगु ।	
गुरुवंसु गरुयवंसुअवेण	थावर थिरेण ।	
गज्जियगउ पडिगज्जियगएणं	उब्भियधएण ।	20
हिसियदुंगु सतुरंगएण	सरओरएण ।	
अच्चंतससावउ सावएण	पालियवएण ।	
आसंधिउ पत्थिउ पत्थिवेण	विजयहु कएण ।	

घत्ता—गिरि सोहइ दहिहत्तणेण पुच्चावरसमुद्धु संपत्तउ ॥

तिहिं तिहिं खंडहिं मेइणिहि मेरादंडु व दइवें घित्तउ ॥ १० ॥ 25

३ MBP कुंग. ४ MBP दहुरंडि. ५ M हेलाइ वि खंडावाणि. ६ MBP तहुं. ७ MBP सुणि; K मणि but corrects it to सुणि. ८ MB ससुरेण ससुर. ९ B कडयंकियंगु. १० GK add after it उब्भयधउ. ११ MBPT सतुरंगवयणु. १२ MB समुद्धु.

16 a सुसरेण शोभनस्वरेण; सुसर शोभनं सरः पानीयं सरोवरो वा यतः; b कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन; कुहरु रुपः. 17 b समहेण पूजनया सहितेन; समहु मनुयुक्तः. 21 b सरओरएण सरजतो गिरिः तत्रानुरजेन. 22 a सावएण लक्ष्मीपदेन; b पालियवएण पालितप्रतिज्ञेन. 23 a पत्थिउ पृथ्वीविकारः. 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्डः.

## 11

तहिं अंबसरि गुहदारहु दूरें  
 आवासिउ गहणि सैंडंगु बलु  
 महिसउलमइकईविउ सरु  
 आलुंखियाइं पिकइं फलइं  
 गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं  
 उड्ढावियाइं कोइलकुलइं  
 णिलुक्कइं मुंक्कइं सयदलइं  
 मयवंदइं रुंदइं णिग्गयइं  
 सुत्तइं रत्ताइं रईहरहिं  
 णिवकरिहिं वियारिय विंशकरि

सुरतरुवरकरडंकिर्यसुरें ।  
 करिदसणपहरकलुसियउ जलु ।  
 कम्मयरकुडारहिं छिण्ण तरु ।  
 णिलूरियाइं सइलदलइं ।  
 मुसुमूरियाइं अंबयवणइं । 5  
 भयतसियइं रसियइं णाहलइं ।  
 दसदिउ गयाइं सडणयकुलइं ।  
 एत्तहिं तेत्तहिं संहसा गयाइं ।  
 णरमिडुणइं णववेल्लीहरहिं ।  
 सुहडेहिं णिहय रुंजंति हरि । 10

घत्ता—वणसरि उव्वासिय सुइरु एवहिं जणवण णिरु णिवसइ ॥  
 पेच्छिवि भरहाहिवणिवइ कुंदपुंफयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसड्डिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय  
 महाभवभरहाणुमणिय महाकवे तिखंडवसुंधरापसाहणे णाम  
 तेरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥  
 ॥ संधि ॥ १३ ॥

11. १ MBP अवरागुहदारहु सदूरि. २ MBP 'डंकिर्यइ सुरि. ३ MB सडंग'. ४ MBP कइमिउं.  
 ५ MBPK सुक्कइं. ६ MBP सहसइं. ७ MBP रईयेरहिं. ८ MBP 'वल्लीहरहिं. ९ MB रुंजंत; P रुंजति.  
 १० BPK पुष्पयंतहिं.

11. 4 a आलुं खियाइं आस्वादितानि; 4 b सइलं सार्राणि. 5 a 'मंडलेहिं संघातैः. 7 a णि-  
 लुक्कइं लोडितानि.



# XIV

वरतणुमयमेहेण जियमागहेण भुयबलणिदलियपहासे ॥  
हयपरमहिचइहि सेणावइहि आपसु दिण्णु भरहेसे ॥ भुवकं ॥

1

दुवई—संसिविरु जाम तेत्थुं पट्टु णिवसइ सिद्धतिखंडमंडलो ।  
ता पत्तो मयासि मणिसेहं सवणविलंबिकुंडलो ॥ १ ॥

सो पमणइ पणवियसिरु संहरिसु	मुहंससिकिरणपंसंरधवलियदिसु । 5
णवर्धणयणियमडुरमणहरिगिर	सुयणु भुयणभरधरु णिरुवमु णिरु ।
भो कयविजयविजयगिरि उत्तर-	दिसि अवर वि सुर णर रवि तुह धर ।
सौ वि तिखंड वंडरिउखंडण	भो णाहेयतणय कुलमंडण ।
सिहरिगुहादुवार उगघाडहि	कुलिसदंडखरपहरे ताडहि ।
जइ तो मग्गु भंडारा होसइ	पुण्णु तुहारउ गरुयउ दीसइ । 10
जयगिरिवरसिहरंगाणिकेयउ	जासु अहं पि दासु संजायउ ।
ता चमुपसुहट्टु वयणु णिरिक्खिउ	जसवइपुत्ते पेसणु अक्खिउ ।
भो मेहेसर करहि महुत्तउ	हणहि गिरिंदकवाडु णिरुत्तउ ।
णिविडु विहंडिवि पडउ विसट्टउ	जिह हयदुज्जणमणु तिह फुट्टउ ।
स पट्टमणोरहकरणुक्कंठिउ	सो पसाउ पमणंतु ससुट्टिउ । 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

केलासुभसिकन्दा धवलदेसिगउमिण्णदन्तकुटोहा ।  
सेसाहीबद्धमूला जलहिजससमुम्भयाडिण्डीरवत्ता ।  
बम्मण्डे वित्थरन्ती अमयरसमयं चन्दविम्बं फलन्ती  
फुल्लन्ती तारोहो जयइ णवलया उज्ज भरहेस किंती ॥

M however reads °पिण्डीर° for °डिण्डीर°. GK do not give it.

1. १ MB संपद जाम; P एत्तहि जाम. २ P सुहरिसु. ३ B °पसरि°. ४ MBPT °घणसुणिय°. ५ K °मणहरि. ६ MBP साधि. ७ MBP तउ. ८ P °सिहरणिकेयउ. ९ MBP करि महु वुत्तउ.

1. 1 °मयमहेण °मदमयनेन. 4 मयासि अमृताशी देव. 11 a जयगिरिवर° विजयार्थः. 13 a महुत्तउ मया उक्तम्. 14 a पडउ पततु गच्छतु; विसट्टउ विकसितः.

पंरिणयसुयतणुंमरगयहरियइ  
वरभडसंगरपहरणपोढउ  
जाएवि पट्टि देवि गिरिदारहु

णाणागमणविलासहुं भरियइ ।  
चडुलतुरंगरंयणि आरुढउ ।  
धरिवि तुरउ संमुहुं खंधारहु ।

यत्ता—अवहस्थिवि छलेण णियमुयबलेण हुंकारिवि णिरु रत्तच्छे ॥  
परणरंयंडिखलणु महिहरदलणु उम्मुकु दंड परिहच्छे ॥ १ ॥

20

## 2

दुवई—मुकइ पहरणम्मि हरि णिग्गउ खुरदरमलियकाणणो ।

बलपुंगमु वि णविउ णरणियरहिं जगजयपहसियाणणो ॥ १ ॥

ता दंडरयणणिट्टुरपहारविहडियकवाडकिंकारसइसंमइखुइविहवियसप्पमुह-

मुकफारफुकारजालियविसंसिहिजालं ।

जालामालाकलावहेलापलित्तणासंतमत्तकरिचरणपेड्डणुल्ललियमणिसिलावडैण-  
कुद्धरंजंतसइल्लोलीमं ।

भीमुंभमापम्मारभरियकुहरंतणिग्गयाहिंदसुंदरीमुकसिचयपयडियपयोहरुल्लिहियं- 5  
हिययरइरसियतावसुद्धरियचरियमारहारं ।

हारवमुयंतसवरीपुलिंदसिसुदीसमाणकेसरिकिसोरणहकुलिसकोडिदारिय-  
कुरंगरुहिरंभवाहुहुं जायं शुहादुचारं ।

यत्ता—डज्जंतहं खगहं महिहरंमृगहं घोसेणप्पाणउं णिदइ ॥

अमुणियवेयणु वि णिच्चेयणु वि णं दंडं ताडिउ कंदइ ॥ २ ॥

१० M परिण<sup>०</sup>. ११ MB रयणआरुढउ. १२ P परिखलणु महिहरदलमलणु.

2. १ MBP जणिय<sup>०</sup>. २ M विसग्गिसिहि<sup>०</sup>. ३ MBP वडणरुट्टरंजंत ( P रुजंत ) मत्तसइल्ल<sup>०</sup>.  
४ MBP भीमुण्हा<sup>०</sup>. ५ B ल्लिहियरइ<sup>०</sup>. ६ B रियभार<sup>०</sup>. ७ P हाहारव<sup>०</sup>. ८ G दुगं. ९ MBP भिगहं.

16 a परिणयसुयतणुं तरुणशुकशरीरवञ्चलीः. 18 a पट्टि देवि पृष्ठे दत्ता. 19 छलेण हननविज्ञानकुश-  
लेन. 20 परिहच्छे वेगेन.

2. ३ 'संमइ' कोलाहलः; 4 'विहविय' उपदुताः. 5 'हेलापलित्त' युगपत्प्रज्वलितः. 7 भी-  
मुंभमा प्रचण्डस्तापः. 8 'पयडियेयादि-प्रकटितौ च तौ पयोधरौ ताम्भ्यामुल्लिखितं विदारितं हृदयं येषां ते;  
'इरसिय रतिरसिकाः; 'चरियमारहारं चारित्रमारस्य हारो हरणं यत्र.

## 3

दुवई—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो ।

अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवइरिसासणो ॥ १ ॥

छड्डियावलेवो	इच्छियंघिसेवो ।	
रिद्धिबुद्धिवंतो	आगओ तुरंतो ।	
भूयैमत्तिकामो	तग्गिरिंदणामो ।	5
सेलसिंगवासो	सुद्धसेयवासो ।	
वंदिओ णरिंदो	तेण वीरैचंदो ।	
हारमिंदुघामं	दिव्वपुप्फदामं ।	
कंकणं किरीडं	कुंभमंमणीडं ।	
पंडुरं पसत्थं	चारु हारि वत्थं ।	10
कुंजरारिद्धं	हेमरणवीडं ।	
हित्तकंजलीलं	भम्मदंडणालं ।	
सव्वलोयमोलं	कित्तिवेल्लिफुल्लं ।	
चामरेण जुत्तं	णिम्मलायवत्तं ।	15
हासहंसवण्णं	राइणो चिइण्णं ।	
मंगलं पहाणं	तित्थतोयण्हाणं ।	
रुक्खरोहियासे	तम्मि भूपप्से ।	
अच्छिओ छमासं	देवदारुवासं ।	
वल्लरीललंतं	माणियं वण्तं ।	
णिग्गयग्गिजालं	मंदधूममालं ।	20

3. १ MB °संहट्ट°. २ MB छंडिया°. ३ P भूप°. ४ MB वीरवंदो. ५ MB °मंडणीडं. ६ MBP हेमवण्ण°.

3. 1 °केयूर° बाहुरक्षः. 2 °संघट्ट° मेलापकः संमदौ वा; °सा सणो सा लक्ष्मीस्तस्याः स्वनः आज्ञावचनं वा. 3 b इच्छियंघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य सः. 5 a भूय° भूपः; b तग्गिरिंदणा सो विजयार्धनामा. 9 b अंभणीडं जलभृतम्. 11 b हेमरणवीडं हैमरत्नपीठम्. 12 a हित्तकंजलीलं हृता अनुकृता कजस्य पद्मस्य लीला बोभा येन; b भम्म° सुवर्णम्. 17 a °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि. 19 a वल्लरी° वल्ली.

मुकदीहसासं  
दावियंघयारं  
णद्वताववेयं  
लगासीयवायं

णं महीहरासं ।  
तं गुहादुवारं ।  
सिद्धमगमेयं ।  
सीयलं च जायं ।

घत्ता—चंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ ता पेसिउ पालियखत्तं ॥  
आरासयफुरियउ सुरपरियरिउ संचलियउ चक्कु पयत्तं ॥ ३ ॥

25

4

दुवई—पुणु चक्काणुमगलंगंतमहाभडकरितुरंगयं ।  
चलियं साहणं पि रहममियरहंगाहयभुयंगयं ॥ १ ॥

वसहकरहखरवरवलइयभर  
मयगलमयजलपसमियरयमलु  
कसझसमुसलकुलिससरकरयलु  
असिवरसलिलपवहधुंयपरिहडु  
मसिणधुसिणरससुपुसियउरयलु  
चवलचमरविर्यलणपसरियकर  
मरुवहविगयखयरसुरवरघर  
सहपरिभमियजिमियसुरमियसहु  
पहरविर्हु रु सुमरिचि मयभययर

हरिखुरदलियमलियवणतणतर ।  
दसदिसिमिलियमणुयकयकलयलु । 5  
जणवयपयभरपणवियमहियलु ।  
सतिलयविलयवलयखणखणरु ।  
पवणपहयधैयचयचियणहयलु ।  
परिमललुलियललियमहुलिहसर ।  
अमरिसकसणपिसुणजयसिरिहर ।  
पैहुसुहजणणकहियमणहरकहु । 10  
णिवबलु गिलइ च गुहमुहगिरिवरु ।

घत्ता—तेण जि रिउमहहो मग्गियपहहो धेरु आयहु फणिवहुलालिउ ॥  
भरहहु भयवसेण सगुहामिसेण णियहियंवउं दक्खालिउ ॥ ४ ॥

७ MBP सिद्धमगं.

4. १ B °मगलंगं महा°. २ B °खरखुरवलइय°. ३ MBP °पणमिय°. ४ B °जुवपरि°. ५ M  
धयचयवियणहलु; P °धयधुंयवियणहयलु. ६ P °वियलिण. ७ MBP पवसुह°. ८ MBP °विहुर. ९ MBP  
घर. १० MBP °हियवउं णं दक्खालिउं.

21 b महीहरासं पर्वतमुखम्. 23 b सिद्धमगमेदं शिष्टमार्गभेदम्.

4. 7 a °चिय° प्रच्छादितम्. 9 a मरुवह° पवनमार्गः आकाशम्; °सुरवरघरु देवविमानम्.  
10 a °सहु सत्ता.

5

दुवई—कज्जलणीलवहलतमपडलविणासियणयणमग्गए ।

वच्चइ वाहिणीह ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गए ॥ १ ॥

इय चित्तिवि करि ढोहवि कागणि  
ते सोहंति विवरघरभिसिहि  
करणियरेण ताहं तमु सारिउ  
वहइ सेण्णु जयदुंदुहि वज्जइ  
उग्गमंतपडिरवगंभीरहिं  
संदणमुक्कचक्किकारहिं  
महिहरविवरमग्गु णं फुट्टइ  
इंदु वरुणु वइसवणु विसैरइ  
सायर कह व ण महीयलु रेल्लइ  
चंदाइच्चजुयलु णहि झुल्लइ  
एम सेण्णु गच्छंतउ दिट्ठउ

चमुपमुहेण लिहिय ससि दिणमणि ।  
णावइं णयणइं णरचइकिस्सिहि ।  
णिसि दिवसइं सोहंति णिरारिउ । 5  
पलयकालि णं जलणहि गज्जइ ।  
दुरयघडाघंटाटंकारहिं ।  
धाविरवीरंधीरहुंकारहिं ।  
रोल्लं तिहुयणु णाइं विसट्ठइ ।  
मेइणि कह व भारु साहारइ । 10  
मंदरु कह व ण ठाणहु चल्लइ ।  
णील्लं णिसहु केलासु वि हल्लइ ।  
अज्झगुहाधैरणियलि पइट्ठउ ।

घत्ता—रायहु केरण परिवारएण पहि जंतं परमयसाडें ॥

मणि आसंकियउ मुहुं वंकियउ फणिसंखकुलियकैकोडें ॥ ५ ॥ 15

6

दुवई—किंणरगरुडभूयकिपुरिसमहोरयजक्खरक्खसा ।

पहुणो तण्णिवासि संजाया वैतर के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोणि भूमीहरंते णईओ  
समुम्मग्गणिम्मग्गणामालियाओ  
तडालगडिंडीरपिहुग्गयाओ

सुकारंडभेरुंडलीलारईओ ।  
जलावत्तकीलंतमीणालियाओ ।  
गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ । 5

5. १ MBP °धीरवीर°. २ MBP वि जूरइ. ३ B नीलि णिसहु; K नीलिणिसहु. ४ K धरणियलु.

५ P कंकोडें.

6. १ MBP वितर.

5. 2 वाहिणीह सेनासंसाहः. 12 a झुल्लइ कम्पते. 14 परमय साडें शत्रुमदविध्वंसकेन.

6. 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे. 3 a भूमीहरंते पर्वतमध्ये.

विसुल्लोवेलावलीवंकियाओ  
महाणायरायस्स णं णाइणीओ  
अभग्गाइं दुग्गाइं णित्थारपणं  
सरीसारतीराइं संदाणिऊणं  
दरीमाणियं पाणियं लंघिऊणं

पहँस्संतरे राइणो थकियाओ ।  
इँसुप्पिच्छंसिंधुस्सरीजाइणीओ ।  
सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं ।  
पुरो भिच्चसंचारयं जाणिऊणं ।  
परं पारमाधारमासंधिऊणं ।

10

यच्चा—गिरिकुहरंतरहो रमियामरहो णिग्गतउ सालंकारउ ॥

सहइ महारुहहो वियलिउ मुहहो वलु कव्वु व सुकइहि केरउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—ता णिग्गति भरहि भेरीरवकंपियमेच्छमंडलं ।

परवलदलणवीरकोलाहलमिच्छियसमरगोंदलं ॥ १ ॥

जं गुलुगुलंतचोइयमयंगपयभूरिभारभारिज्जमाणभूकंपणमियणाइंदमुक्क-  
पुक्कौरावघोरं ।

जं हिलिहिलंतवाहियतुरंगखरखुरैखयावणीचलियधूलिणासंततियसतरुणी-  
विचित्तघोलंतवेलचित्तं ।

जं हणुभणंतपक्कलपदुकपाइक्कमुक्कलल्लैक्कहकरिउसुहइविहइणुसुट्टरोलकुट्टंत-  
गयणभायं ।

5

जं रहियमुक्कपग्गहविसेसरंगतैरहरसावलणपैडियगुरुसिहरिसिहँरचुण्णजाय-  
चंदणकुचंदणेहं ।

२ M पहासंतरे; B पहाभंतरे. ३ MB झसुप्पत्तिसिंधूसरी°; P झसोप्पित्थ सिंधूसरी°; T उप्पित्थ उल्लव.  
४ BP पारमावार°.

7. १ MBPK °णविय°. २ MP °कुंकार°; B °सुंकार; K °पुंकार°. ३ MP °खुरखरखयावणी°. ४ MBP हणुहणुभणंत°. ५ MBP °ललक्क°. ६ P °रंगंतदुरयरह°. ७ MP °वलणवडिय°; B °वलण-  
चडिय°. ८ MBP °सिहरसयणुण°.

6 a विसुल्लो लं जलकल्लोलाः. 7 b झसुप्पिच्छं मत्स्योल्बणा सिंधुः; °जाइणीओ °गामिन्यः. 8 b सवि-  
ण्णाणिणा कुशलेन स्थपतिरत्नेन; संकमेणं जलरोधार्यं कृतेन सेतुबन्धेन. 9 a संदाणिऊणं रुद्धा. 12 महा-  
रुहहो अतिमहतः कवेः.

7. 2 °गोंदलं मेलापकः. 2 °पक्कलं समर्थाः; °ललक्कं रौद्रः. 6 °पग्गहं रश्मयः; °कुचंदणं  
रक्तचन्दनादि.

जं हारदोरकेऊरकडयकंचीकलावमउडावलविमंदारदामसोमंतजकख-  
जकखीविमाणछणं ।

जं भीर्यं घराकरालचक्राणुगामिमंडलियसूरसामंतकौतकरवालचाव-  
संघायसंकडिल्लं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपसमंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरिय-  
विविहल्लत्तचिंधं ।

जं भिच्चदेहपरियलियसेयणीसंदविंदुहयफेणसलिलचिक्खंल्लुत्तल्लुत्तल्लुत्त-  
सयडसंकिणकुहिणिदेसं ।

10

घत्ता—तं पेच्छिवि पबलु उत्थरिउ बलु बोल्लिज्जं मेच्छकुलेसहिं ॥

एवहिं को सरणु दुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउडुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिमुहाई जो लंघइ पडु सामत्थवंतओ ।

सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ गिज्जियदईदियंतओ ॥ १ ॥

बहुकालहु दइवेण णिवेइउ

वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं

धीरें मंतें एउ पबुच्चइ

सखु सहिज्जइ जं जिह दुक्कइ

जहिं भंडणु तहिं अवसें खंडणु

विसहर परणरसेणणवियारा

सुमरहु सामिसाल सच्चावें

तेहिं मि ए आलाव विवेइय

हा हा पलयकालु संपाइउ ।

मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।

आवईकालइ धाह ण मुच्चइ । 5

हयविहिविहियहु को वि ण लुक्कइ ।

धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु ।

ते तुम्हहं कुलदेव भडारा ।

किं भणण किं किर वलगावें ।

णाय मेहसुह माणि णिज्झाइय । 10

१ MB भीर्यं वदाढाकराल°; P भीरवावदाढाकराल°. १० MBP °चिविक्खं°. ११ MBP बोल्लिज्जइ.

8. १ MBP °दहादिहंतओ. २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह णउ मुच्चइ. ४ MBP णिवइय. ५ °मेहसुहु.

8 वरा° श्रेष्ठा आरा. 10 °णीसंद° निष्यन्दः.

8. 4 a आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनामोः स्लेच्छराजयोः. 9 b बलगावें बलगवें.

वियडफडाकडपपुम्भड  
उल्ललंततद्धूममलीमस  
अग्धकुसुमरसवासुद्धाद्य

गरलानलपलित्तगिरितडवड ।  
सिरमणिगणमऊहदीवियदिस ।  
चलैवलंत ते झत्ति पराद्य ।

घत्ता—बोल्लिउ उरगइणा विसहरवइणा किं पाडमि गहणक्खत्तं ॥  
कीलियसुरवरहो माणंससरहो णिहूरमि किं सयवत्तं ॥ ८ ॥

15.

9

दुवई—ता मेच्छाहिवैण भणिया फणिणो गज्जंतगयवरं ।  
णिहणह वेरिसेणमिणमो तरुणीकरवलियचामरं ॥ १ ॥

खंघावारहु उप्परि अहणिसु  
मयउलु तसइ रसइ वरिसइ धणु  
महिणीहरिउ हरिउ वड्डइ तणु  
फुल्लकैलंबतंनु दीसइ वणु  
तडि तडयडइ पडइ रुंजइ हरि  
जलु परियलइ घुलइ धुम्मइ दरि  
जलु थलु सयलु जलु जि संजायउ  
सर कुसुमसर गिरारिउ संघइ

ता णायहिं वेउव्विउ पाउसु ।  
पीयलु सामलु विलसइ सुरधणु ।  
पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणु । 5  
तिम्मइ तम्मइ मणि जूरइ जणु ।  
तरु कडयडइ फुडइ विहडइ गिरि ।  
अइरय सरइ भरइ पूरं सरि ।  
मग्गु अम्मग्गु ण किं पि वि णायउ ।  
विरहं मंथिय पंथिय विंघइ । 10

घत्ता—पाणिउ णीयगइ विज्जु वि डहइ धणु णिग्गुणु कुडिलु सुरिदहो ।  
पाउसु हयमणहो समु दुज्जणहो जो वरिसइ उवरि णरिदहो ॥ ९ ॥

६ MBP उल्ललंतवहुधूम<sup>०</sup>; ७ K चलचलंत.

9. १ MB णिहिवि. २ MBP तणु. ३ BP <sup>०</sup>कलंबु तंनु. ४ MBP अमग्गु वि किं पि ण णायउ.

12 a <sup>०</sup>तद्धूममलीमस वटवृक्षसमुद्भूतधूमवन्मलिनाः. 13 a <sup>०</sup>वासुद्धाद्य <sup>०</sup>गन्धेन सत्वरमागताः. 14 उर-  
गइणा सपेण.

9. 2 इणमो इदम्. 3 a अहणिसु अहनिशम्; b पाउसु मेघः. 6 b तिम्मइ तम्मइ जलार्द्रा-  
भवति खिद्यते च. 8 b अइरय क्षीप्रवेगा; सरइ वहति. 11 णीयगइ निन्नेन गच्छतीति.



## 10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेणपडिपेणहयदुमविगयरिंछओ ।

णवघणरावमुइयचंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लगउ वासारत्तउ	सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।
असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ	भडभुयदंडहु संमुहु आवइ ।
तहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ	लोहें गिलियहु को किर लग्गइ । 5
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं दलियउ	वहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ ।
को मंडणु विसहइ रिउघरिणिहि	ढालइ सिरसिंदरइं करिणिहिं ।
वंस वंस तुहुं मइं वड्डारिउ	पवाहिं परविंघें वेयारिउ ।
महु सर प्रेणहारि णावइ सर	इय गज्जंतु व पभणइ जलहइ ।
धोयइ मयमायंगहं दाणइं	दुम्मेहहं रुचंति ण दाणइं । 10
यक्क सचक्कवाय रह णं सर	तोइ तरंति ण के के किर णर ।
तौ पभणइ णराहपुरोहिउ	लोउ देव उवसम्मो रोहिउ ।
पयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ	अइणु वारिवारणु चित्तिज्जइ ।
ता रायं बलवइमुहुं जोइउ	तेण वि पेसणु झत्ति विविइउ ।

घत्ता—णियमणि चित्तियउं तेलि चित्तियउं तं चम्मरयणु जणभरधइ ॥

उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवल्लयवत्तु जियसंसहइ ॥ १० ॥ 15

## 11

दुवई—बारहजोयणाइं वित्थारै सिविर कुलीरमाणिण ।

पविउलछत्तचम्मकयसंपुडि थिउ वरिसंतु पाणिण ॥ १ ॥

10. १ K सलिलुत्थल्ल°. २ MB पाणहारि; P पाणिहारि. ३ MBP ताम भणइ. ४ M अंबणुं, ५ MBP वत्तियउ. ६ K °आयपत्तु जिह ससहइ.

11. १ MBP वरिसंत.

10. 1 सलिलुत्थल्ल° जलेनोत्पादितः; रेण° वालितः. २ °चंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ मुक्क-चन्द्रकाणां मयुराणां कलापाः उद्घासिताः. 3 a वा सा रत्तउ वर्षाकालः. 6 a धुवइ क्षालयति. 8 a वंस वंस हे ध्वजदण्ड. 10 b दुम्मेहहं दुष्टमेधानां दुर्मेषां च. 13 b अइणु चर्मरत्नम्; वारिवारणु छत्ररत्नम्. 16 जियससहइ निर्जितः चन्द्रः येन तादृशम्.

11. 1 कुलीरमाणिण मत्स्यानां प्रीतिकरे.

गयणयलु धरणियलु गिरिसिहर रेछियउ पडिण पउरेण तोएण पेछियउ ।  
 अइणायवत्तेहिं रइए समुग्गम्मि गिवसंति णरवइणरा णाईं सग्गम्मि ।  
 ते दोण वरिसंति ते गेय जाणंति इट्ठाईं मिट्ठाईं सोक्खाईं माणंति । ५  
 रयणोयरे साहणं जाम संचरइ अरविदग्गम्मि अलिउलु व रइ करइ ।  
 खलबलहरोवाय हिययम्मि संमरइ कागणिकयाइच्चससियराहिं वावरइ ।  
 सत्ताहरत्ते गणं णवर कुद्धेहिं चूडामणिछेहिं मारणविरुद्धेहिं ।  
 इंगालहरिणीलकालिदिकालेहिं मुहकुहरणिमुक्कगरलग्गिजालेहिं ।  
 उच्चुंगभूभंगमंगुरियमालेहिं सिंसुसंसहरायारदाढाकरालेहिं । 10  
 णिट्ठवियपरदंडजमदंडदीहेहिं आरत्तलोलतंचलजमलजीहेहिं ।  
 गरुयाहिमाणेहिं परिगहियमेच्छेहिं कलहिच्छदुप्पेच्छरोसारणच्छेहिं ।  
 णीसासविसलवमल्लोलित्तचंदेहिं मरु मरु भणत्तेहिं मरुगांसिचंदेहिं ।  
 हरिकरिमहाजोहसामंतपम्मार बिउणयर तिउणयर वेडियउ खंधारु ।  
 रामहिरामेण संगामधुत्तेण रूसेवि देवाहिदेवैस्स पुत्तेण । 15

धत्ता—परणरदुज्जयहो राए जयहो वीरिपट्टु सईं वद्धउ ॥

सो विसहरवैरहं णवजलहईंहुं जुगंसयकयंतु णं कुद्धउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—ता सोलैहसहासजक्खामराविरइयगंधवाहिणं ।

भग्गा सलिलवाह पीलु विव चलयरहरिणणाहिणं ॥ १ ॥

चकै वइरिमहाभड छिण्णा	दइवै णाईं दिसाबलि दिण्णा ।
तं अवलोयवि गय भयवस फाणि	गय णवघण गय सा सोदामणि ।
मेच्छणरिंदहिं सकरुणु रुणणउं	दोजीयैहुं किं किं पडिवणणउं । ५

१ MBP °विलुद्धेहिं. २ B °ससिहरापर°. ४ MBPK °घोळंत°. ५ MBP °मलालित्तदेहेहिं. ६ MBP मरुगासिमंडेहिं. ७ P °देवैसपुत्तेण. ८ MBP सईं वीरपट्टु सिरि वद्धउ. ९ MB °धरहं; P °धारहं. १० °हारहं; GK omit णवजलधरहं. ११ MBP जुगखइ कयंतु.

12. १ MBP सोलस°. २ MBP दोजीहहिं. ३ MB किंकर.

4 a अइणायवत्तेहिं चर्मातपत्राभ्याम्; समुग्गम्मि संपुटे. 5 a दोण द्रोणमेवाः. 7 b खलबलहरोवाय दुष्टानां बलापहारिण उपायात्. 13 b मरुगा सि° सर्पाः. 14 b बिउणयर द्विगुणतरु.

विसैमरियहं किं किर सुयणत्तणु  
छिद्दणेसिहिं को रंजिज्जइ  
वरणविज्जिउ को जसु पावइ  
रणजइ जउ गज्जिउ घणणापं  
सिरचूलाचुं वियभूमायहिं  
दिण्णहिरणवत्थसंघायहिं  
साहि वि मेच्छराउ गंजोल्लिउ  
पडु हिमवंतु पराइउ जावहिं  
देवय दिव्वदेह णउ सा सरि  
राउ गिहालिवि कलसविहत्थइ

वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।  
अणिलासिहिं किं पर पोसिज्जइ ।  
णिच्चमुयंगहं णिच्चु जि आवइ ।  
घणणाउ जि सो<sup>१</sup> कोक्किउ रापं ।  
दूरंतरहु णमंसियपायहिं । 10  
विट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।  
अणुतीरं सिंधुहि पुणु चल्लिउ ।  
आइय सिंधु भडारी तावहिं ।  
सिंधुकूडवासिणि परमेसरि ।  
लहु भदासणि गिहिउ पसत्थइ । 15

घत्ता—सिंधु<sup>४</sup>देवयण जलयरधयण अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥  
दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुष्पयंतर्थिधमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय  
महाभव्वमरहाणुमाणिण महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम  
चोदहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥  
॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं. ५ P छिद्दणेसिहिं. ६ MBP कोक्किउ सो. ७ P सिंधुवदेवइ. ८ B °पियमहुयर.

12. 7 b अणि ला सि हिं वायुभक्षैः संपैः. 8 a वरणं चारित्रं पादाश्च. 12 a गंजोल्लिउ रोमा-  
श्रितः उल्लसितः प्रभुः. 17 ण वपुष्प यंत° नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्; नवपुष्पाणां वा अन्तो मन्थम्.

XV

भेळिवि सिंधुसरि पणवेपिणु रिसहजिणिदहो ॥

पुणु संचलिउ पडु भयरसु जणंतु अमरिंदहो ॥ १ ॥ धुवकं ॥

I

सेणासेणाहिवपरियरिय

सोहइ गच्छंती पुव्वमुह

दीसइ सेलत्थलि काणजं

णाणमहिरुहफलरसहरइ

कत्थइ रइरत्तइं सारसइं

कत्थइ झरझरियइं णिज्झरइं

कत्थइ वीणियवेलीहलइं

कत्थइ हरिणइं उल्ललियाइं

कत्थइ हरिणहरुकत्तियइं

कत्थइ सुम्मइ जक्खिणिट्ठुणिं

कत्थइ भसलउलहिं रुणुरणिं

हिमवंतु धरेपिणु संचलिय ।

कुरुवंसणाहपत्थिवपमुह ।

महिसीदुद्ध व साहायणउं ।

कत्थइ किलिगिलियइं वाणरइं ।

कत्थइ तवतत्तइं तावसइं ।

कत्थइ जलभरियइं कंदरइं ।

दिट्ठइं भजंतइं णाहलइं ।

पुणु गोरीगेयहु वलियाइं ।

करिकुंमुच्छलियइं मोत्तियइं ।

खयरीकरवीणारणरणिउं ।

कत्थइ सुपण किं किं भणिउं ।

5

10

घत्ता—कत्थइ किणरहिं गाइज्झइ सवणपियारउ ॥

रिसहणाहचरिउ फणिणरसुरलोयहु सारउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं

कीर्तियस्य मनीषिणां वितनुते रोमाश्च चर्व वपुः ।

सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेमान्तरां निर्वृतिं

श्चाध्योऽसौ भरतः प्रभुर्वत भवेत्कामिनिगिरां सूक्तिभिः ॥

MB read प्रेम्णोऽन्तरां for प्रेमान्तरां. G does not give it.

UK give it at the commencement of Samdhi XCV.

1. १ MB °महिरुहरुहरस°; P °महिरुहरुहरस°, but records a p °महिरुहरुहरस°. 4 MBP किलिगिलियइं. ३ MBP °कुंमत्थलियइं.

1. 5 b साहायणउं क्षीराश्रं तरिका तथा घनं महिषीदुग्धम्, शाखाभिश्च घनं काननम्. 9 b णाहलइं शबराः. 11 a हरिणहरु° सिंहस्य नखैः

## 2

णिक्विन्नसुरासुररिणियले  
णवचंपयकुसुमावासियउ  
बहुदोरहिं दूसई ताडियई  
करिसालाणडसालाहरई  
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ  
ठवियई मणिमंडवियासई  
दुव्वारवइरिमयपहरणई  
दक्खालियसईहररयणियहि  
कुससयणि पसुत्तउ सई भरहु  
करि धरिउ सरासणु राणपण  
आरुहिवि र्हंगि ण संकियउ  
जो लोहवंतु परमग्गणउ  
किं अच्छइ णवर उँडु गयउ

हिमवंतकूडतलधरणियले ।  
साहणु सडंगु आवासियउ ।  
रणवडहसहासई ताडियई ।  
उब्भियई पउरसालाहरई ।  
णं घडदासीउ सुमुंडियउ । 5  
अवराई मि दिव्वई आसई ।  
अहिवासिवि भूसिवि पहरणई ।  
पोसहु पडिबज्जिवि रयणियहि ।  
उग्गमिउ दिणाहिउ णहि भरहु ।  
बहु विहरिउ मंडलराणपण । 10  
वइसाहठाणु सई संकियउ ।  
सो गुणि संगिहियउ मग्गणउ ।  
हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

वत्ता—पडिउ संपंगणए उँपुंखु बाणु अवलोइउ ॥

चित्तिउ तेण मणे को पइउ कालें चोइउ ॥ २ ॥

15

## 3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे  
दीहरजालामालाजलिउ  
केसरिकेसरु उल्लुरियउ

तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।  
पलयाणलु केण पडिक्खलिउ ।  
कालाणिउ केण वियारियउ ।

2. १ P reads after this: मिहुणई रसंति रत्तासयई, अवराई मि दिव्वई आसयई, णियपहणिजय-  
देवासयहि. २ MB read after this: मिहुणई रसंति रत्तासयई, णियपहणिजियदेवासयई. ३ BP ससिहर-  
रयणियहि. ४ P र्हंगि. ५ MBP उद्धगयउ. ६ M पंगणए; B पसंगणए. ७ MB उप्पंखु.

3. १ MBPK पडिक्खलिउ. २ MBP कालाणलु.

2. 5 a समुंडियउ मन्दुरोभयपार्धनिखातकाष्ठद्वयेन सहिताः. 6 b आसयई आश्रया गृहाणि. 8 a  
दक्खा लिथे लादि—दर्शितः शशधरश्चन्द्र एव रत्नं ब्रूडामणिरत्नं यया रजन्या; b रयणियहि रजन्याम्. 9 b  
भरहु नखलप्रच्छादकः. 10 a राणएण राः द्रव्यं तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा. 11 b वइसाहठाणु  
वामपदजानुं भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वाकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते; संकियउं सम्यक् कृतम्. 13 b गयउ गदो रोगः.

3. 3 b कालाणि लु प्रलयवातः.

किउ केण गरुडपक्खाहरणु  
दलवट्टिउ माणु पुरंदरहो  
णियहत्थं णिम्मंथिउ जलहि  
दिट्ठीविसवयणु णिरिक्खियउ  
जगि केण भाणु णित्तेइयउ  
को पारु पराइउ णहयलहो  
कि ण मरइ करवालेण हउ  
सर मज्झु वि केण विसज्जियउ

भणु केण णिसुंभिउ जमकरणु ।  
किं सिहर पलोट्टिउ मंदरहो । 5  
पडिक्कलिउ केण हवंतुं विहि ।  
कं हालाहलु विउ भक्खियउ ।  
महु केण रोसु उप्पाइयउ ।  
को सुपहुत्तउ णियभुयवलहो ।  
ण वियाणहुं किं सो वज्जमउ । 10  
ख्यंदिडमु कासु पवज्जियउ ।

घत्ता—जेण विमुक्कु सरु अइदीहु समाणु फणिंदहो ॥  
सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

4

इय तेण गज्जियउं  
पिंछेहि पत्तियउ  
चित्तेण चित्तिर्यउ  
हिययम्मि चित्तियउ  
गंधेहि चच्चियउ  
पुण्णेहि संच्चियउ  
हयवेरिसंताणु  
ता तम्मि लिहियाइं  
णिज्जियदियंताइं  
वाईसिअंगाइं  
बिंदुयहिं चप्पियइं

पुणु कल्लु सज्जियउं ।  
दित्तीइ दित्तियउ ।  
मंतेण मंतियउ ।  
रायण घत्तियउ ।  
फुल्लेहिं अंचियउं । 5  
केण वि ण वंचियउ ।  
अवल्लोइओ बाणु ।  
सुरणियरमहियाइं ।  
परिछेय्वंताइं ।  
छंदाणुलग्गाइं । 10  
मत्तावियप्पियइं ।

३ M णिमत्थिउ; BP णिम्मत्थिउ. ४ P हणंउ. ५ MBP किं. ६ MBP खयडिंडिमु. ७ M विमुक्कु सरु.

4. १ MK चित्तियउ. २ M वच्चियउ. ३ MP परिच्छेयवत्ताइं.

५ a दलवट्टिउ खण्डितः. ९ b सुपहुत्तउ अतीव पर्याप्तः. 11 खयडिंडिमु यमपट्टहः.

4. 1 b सज्जियउं प्रमुणीकृतम्. 6 a संच्चियउ उपार्जितः. 10 a वाईसि° सरस्वती. 11 b मत्तावियप्पियइं मात्तारचितानि.

वेल्लीहिं वलियाइं	अक्खरइं ललियाइं ।	
गाढं विसिद्धाइं	सरसाइं मिद्धाइं ।	
इद्धाइं विद्धाइं	हियणं पयैद्धाइं ।	
अरिसीहसरहस्स	आणाइ भंरहस्स ।	15
जो जियइ सो जियइ	इयरस्स खयणियइ ।	
अइरेण अवयरइ	वइवसु वि धुवुं मरइ ।	
पुणु पुणु वि जोणवि	इय तेण वाणवि ।	
सह समियसमरेहिं	अवरहिं मि अमरेहिं ।	

घत्ता—दिट्ठउ चक्कवइ चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥ 20  
 रयणहिं मोत्तियहिं पणवतं गियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

## 5

णरणाहं रयणहिं पुज्जियउ	हिमवंतु कुमार विसज्जियउ ।	
सो किंकरुत्तु मणि धरिवि गउ	राणउ पुणु तिहुयणलद्धजउ ।	
हरिसइसुभीमगुहाहरहो	सइं आइउ वसहमहीहरहो ।	
दीसइ गिरिमिहल्लुलियवणु	णं धरणहिं केरउ एक्कुं थणु ।	
णिज्जरजलदुद्धपवाहधर	णिरु णाहल्लिडिभहुं सोक्खयर ।	5
रइगारउ णावइ कुसुमसर	भयवंतु णाइ कुपुरिसपसर ।	
रसवंतु णाइ णच्चणु पवर	बहुणावालंकिउ बहुविवर ।	
बहुविदुमोहु णं मयरहर	बहुफलपयासि णं पुण्णभर ।	
बहुकंकणु णं महिंमहिलियर	बहुओसहिंल्लु णं भिसयवर ।	
हरिसेविउ णं जिणु परमपर ।		10

४ MBP पइद्धाइं. ५ MBP धुउ. ६ MBP अवरेहिं अमरेहिं. ७ MBP पणवतंहिं.

5. १ MBP हिमवंतं. २ B किं करंतु. ३ MBP आयउ. ४ M एक. ५ MBP णच्चणं.  
 ६ MBP महिलयर.

12 a वे ल्ली हिं आवलीभिः. 16 b ख य णि य इ क्षयकालः. 17 a अइरेण अविरेण, शीघ्रम्. 18 b वा ए वि वाचयित्वा.

5. 7 b बहुविवरं बहुच्छिद्रः बहुपक्षी च. 8 a विदुमोहु प्रवालौषः; मयरहर समुद्रः. 9 a म हि म हि लिय र पृथ्वीमहिलायाः करः; b भिसयं वैयः. 10 a हरिसेविउ इन्द्रेण सिद्धेय सेवितः.

करिदसणमुसलणिभिन्नतणु  
सुरदाणवरमणीप्राणपिउ

णं को वि महाभड रइयरणु ।  
णं णिवजससासणखंमु थिउ ।

घत्ता—तडु महिहरहु तडु पच्छाइउ चउडुं मि पासहिं ॥  
णरलिहियक्खरहिं गयपत्थिवणामसहासहिं ॥ ५ ॥

6

जहिं दीसइ तहिं अक्खरसहिउ  
चितइ भरहाहिउ बहुगुणउ  
अण्णणहिं रायहिं भुत्तियइ  
बोलाविय के के णउ णिवइ  
धण्णउ परमेसर पक्कु पर  
बहुणरवइकरयललालियइ  
सत्तंगरंजभारेण हय  
धारगलंतलीलावयहिं  
जा विज्जिय चलचमरहिं जियइ  
असिवाणियककसत्तु महइ  
चवलत्तणु कुलधयवडंवरहो  
सिक्खियउ जाइ तहि गोमिणिहि  
णिवडंति महंत वि झत्ति किह

मोक्खु व गिरिंदु मुणिगणमहिउ ।  
कहिं णामु लिहिज्जइ महु तणउ ।  
इह पयइ वसुमइधुत्तियइ ।  
मोहंधहु मुज्झइ तो वि मइ ।  
जो हुउ पव्वइयउ मुणवि धर । 5  
हउं विणडिउ सिरिपुण्णालियइ ।  
मयमइरइ मत्ती मुच्छ गय ।  
अहिसिचिय मंगलवडसयहिं ।  
जा छत्तं छाइय णउ णियइ ।  
अंकुससंगे वंकिम वइइ । 10  
गुणु मेळिवि गमणु पासि सैरहो ।  
आसत्तंपुरिस णरयावणिहि ।  
वारिहि करिणीरय पीळु जिह ।

घत्ता—ताणं भुत्त चिरु पुणु पुत्तं सहुं सुहुं अच्छइ ॥

वसुमइ झेडुंलिय जगि केण वि समउ ण गच्छइ ॥ ६ ॥

15

७ MBP °पाणपिउ.

6. १ MBP इय. २ MB °रज्जहारेण. ३ MBP असिवाणिय°. ४ MBP °वडधरहो. ५ MBP परहो. ६ MP आसत्तु पुरिसु; B आसत्तुपुरिसु. ७ MBPT झिंदुलिय.

6. 4 a बोला विय अतिकामिताः लक्ताः. 6 b पुण्णालियइ पुंश्चल्या. 8 a °लीलावयइ °लीला-  
पयोभिः. 9 a विज्जिय वीजिता. 10 a महइ वाच्छति. 11 b गुणे त्यादि—गुणं सुक्ता गच्छति शर-  
पाश्चात्. 12 b णरयावणिहि नरकभूमेः. 13 b वारिहि गजबन्धनगतायाम्. 15 झेडुलिय पुंश्चली  
वेद्यावृत्तिः.



7

णक्खहु वि ण लब्भइ थत्तिं जहिं  
मइं जेहा पत्थिव को गणइ  
परमेस महायणु जेण गउ  
परु फेडवि जिह घेण्णइ पुहइ  
ता बालमराललीलगइणा  
रापं रायहु ओहारियउ  
करकागणिरिहादावियउ  
रिसहुहु रइरमणखयंकरहो  
णामेण भरहु भरहाहिवइ  
हिमवंतजलहिपेरंत सइं  
ता तियसहिं साहुक्कारियउ  
पइं जेहुउ को वि ण चक्कवइ  
कैहु अग्गइ धावइ कमलकरि  
दाहिइहारि किर कासु वसु  
असि कासु धइरिविद्धंसयरु  
पइं मेळिवि णाणहु कवणु घर

किं णाउं लिहिज्जइ पत्थु तहिं ।  
जे जे गय ते पुरोहु मणइ ।  
सो पंथु जयस्मि ण केण कैउ ।  
तिह णामु वि फेडिज्जइ णिवइ ।  
वीलामलमेलिणेण वि पइणा । 5  
अण्णहु कासु वि उत्तारियउ ।  
णियैणाउं गिरिदि चडावियउ ।  
हउं पुत्तु पढंमत्तिथंकरहो ।  
बोळउ परु महियलि अत्थि जइ ।  
छक्खंड वि णिजिय वसुह मइं । 10  
भरहेसरु जयजयकारियउ ।  
को एम ससंकि णाउं थवइ ।  
कमलालय कमलाणणिय सिरि ।  
तिजगत्तंगामि किर कासु जसु ।  
पइं मेळिवि को किर कप्पयर । 15  
परमेणु कासु देउ पियर ।

घत्ता—रुवै चिकमेण गोत्तै बलेणं णयजुयत्तै ॥

तुज्झु समाणु तुहुं किं अण्णे माणुसमेत्तै ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसयं

दरिस्तावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ. २ MB °मलिगाणण वि पइणा; P ° मलिगाणणपइणा. ३ MBP णियणमुं. ४ MB पडसु. ५ P वहुअग्गइ. ६ M दारिइहरि. ७ MBP तिजगंत°. ८ MBP वइरिवीरंतयर. ९ MBP परमणु. १० MB कुलेण. ११ MBP णयजुत्तै.

7. 5 b वीले त्या दि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 a ओहा रियउं चित्ते अवधारितम्. 10 a °पेरंत पर्यन्ता.

8. 1 b °चंपय सारसयं चम्पकवृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां शतानि; चम्पकवृक्षस्या रसो वा यत्र.

काणणपरिहिडियकुंजरयं  
फलभारोणयसुरतरुविडवं  
ओसहिओसारियविसहरयं  
मोत्तूण तममलं धरणिहरं  
चलियं सह पंडुणां पउरहयं  
अहिमाणवंतु णीसंकमइ  
हिमवंततलेण जि चिकमइ  
गोगइहहरिकरिमहिसयल  
णियवइहि णिहालिवि चंदवल्लु  
जगसंसियअसिधारासियहिं

गयणंगणविगयणिकुंजरयं ।  
रइयरंणिलयहिं खेयरविडवं ।  
वणसुरहिसमीहियविसहरयं ।  
सधयं सेण्णं परंघरणिहरं । 5  
सारहिकरकसचोइयरहयं ।  
पुव्वदिसभायं संकमइ ।  
दियहेहिं जंतु वसुहं कमइ ।  
अवठंभिवि ठंभिवि महि सयल ।  
मंदाइणिपुल्लिणइ थियउ बल्लु । 10  
अणुयहिं णिवखंधारासियहिं ।

अत्ता—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिंगगउं ॥

णं भरहडु तणउं जसविलसिउं सग्गि विलगउं ॥ ८ ॥

9

ससिरयणमप  
उववणगहिरे  
खगणियरहरे  
णिवसइ गुणिणी  
चलहारमणी  
छणससिवयणा

परिभमियमप ।  
घणविडुरहरे ।  
सुरसरिसिहरे ।  
अमरंवरइरमणी ।  
जणमणदमणी ।  
कुचलयणयणा ।

5

8. १ MBPT °णिलएहिं. २ MP add after this: सिंगगवतु धुयविसहरयं, जं सहइ चकि-  
जसविसहरयं; सइ सेवियविसहरसेहरयं, महिवडुसिरे णं मणिसेहरयं; B adds after this: सइ सेवियविसहर-  
सेहरयं, सिंगगवतु धुयविसहरयं; जं सहइ चकिजसविसहरयं, महिवडुसिरे णं मणिसेहरयं. ३ MBP मोत्तूण  
तलमलधरणिहरं. ४ MP परयरणिहरं. ५ MBP मणुयहिं.

9. १ MK अमरवररमणी but T अमरवरइरमणी.

20 °णि कुं जर यं वृक्षसमूहपुष्परजः. 3 a °वि डवं शाखा; b र इ य रे त्या दि-रतिकरस्थानैः कृत्वा खेवरविटपालकम्.  
4 b वणे त्या दि-वनसुरभिभिर्वनगोभिः समीहितं वृषभाणां रतं सुरतं यत्र. 5 b परघरणि हरं शत्रुभूमिदारकम्.  
7 a णी सं क म इ निशङ्कमतिः; b सं क म इ स्थानात्स्थानान्तरं चरति. 8 b क म इ लङ्घयति. 11 a अग्नि-  
धारासि य हिं असिधारावज्जिमलैः; b अणु य हिं अनुगैः; °खंधारासिय हिं स्कन्धावारास्थितैः.

वरगयगमणा	कयजिणहवणा ।	
पविउल्लरमणा	पीवैरसिहिणा ।	
पंकयचलणा	सिरकयसुमणा ।	
पसरियपुलया	वणसुरकुलया ।	10
विरइयतिलया	मणसियणिलया ।	
णरणवियपया	चलमयरधया ।	
मुणिमइविमला	हिमकरधवला ।	

वत्ता—गंगा नाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥

रूवै जोव्वणेण देवाहं मि विमहयगारी ॥ ९ ॥ 15

## 10

णरवइवरियं	गुणविष्कुरियं ।	
हियं धरियं	चलिया तुरियं ।	
तिवलितरंगा	देवी गंगा ।	
णिवसामीवं	पीणियमावं ।	
पत्ता धीरा	सालंकारा ।	5
भुवणपसत्था	मंगलहत्था ।	
दुत्थियमित्तो	परहियजुत्तो ।	
जगगुरुपुत्तो	पंकयणेत्तो ।	
उत्तमसत्तो	गुरुयणमत्तो ।	
जायविवेशो	भावियमेओ ।	10
दोइयदाणो	कयसंमाणो ।	
खलकुलचंडो	दावियदंडो ।	

२ K omits पीवरसिहिणा. ३ K omits पंकयचलणा. ४ MBP विमय°.

10. १ MBP हियवइ. २ K गुणयणमत्तो.

9. 9 b° सुमणा पुष्पाणि. 10 a° पुलया पुलको रोमान्नः; b° वणसुरकुलया व्यन्तरदेवकुले जाता. 11 म ण सियं मदनः.

10. 4 a° सामीवं° समीपम्; b° पीणि य भावं दृष्टचित्तम्.

भासियसामो	ससिरविधामो ।
रामाकामो	पायडणामो ।
हयसिरिविरहो	दिट्टो भरहो ।
भस्तिभराप	कुसुमकराण ।
थोत्तगिराण	णवियसिराण ।
दिण्णासीण	पुणरवि तीण ।

15

घत्ता—वरुणदिसासियहो णं पुणिमाइ ससिकंदहो ॥

अमयभरिउ कलसु पल्हत्थिउ सीसि णरिंदहो ॥ १० ॥

20

## II

कडउल्लउ कडयणंदु करे  
मणहार हारु णीहारणिहु  
हिमवंतसिंहिरिसिहरेसरिण  
जिह बंभसुत्तु तिह बंभसुए  
रसणा महुसरणा वंटियहिं  
सोहंती दिण्णी णरवइहि  
पंतीउं विइणणउ सुरयणहं  
छत्तइं सयवत्तइं सिरिलयहे

कर मउलिवि मंडलु वि णिहउ सिरि ।  
उरबंभु बंभु माणिक्कसिहु ।  
दिण्णउ देविइ सुरवरसरिण ।  
ण सहइ परमि आयारसुए ।  
मालो अलिमालावंटियहिं ।  
उल्लंघियचउसायरवइहि ।  
रंजिउ हियउल्लउ सुरयणहं ।  
वत्थइं जेवत्थइं भणमि तहे ।

5

घत्ता—इय गेण्हिवि णिवेण मणहरमराललीलागइ ॥

पुज्जिवि पट्टविय णियभवणहु गय गंगाणइ ॥ ११ ॥

10

11. १ MBP कडयणंद. २ B मउलिवि. ३ MB मणहार. ४ MB °सिहरेसिहरे°. ५ B मालह.  
६ B पत्तीउ.

18 b ससिरविधामो सौम्यल्लेजस्वी च. 19 वरुणदिसासियहो पश्चिमदिगवस्थितस्य; पुणिमाइ पूर्णिमया कन्या. 20 पल्हत्थिउ सीसि मस्तकोपरि विसर्जितः.

11. 1 b मउलु मुकुटः. 2 b उरबंभु बंभु उरोबन्धस्य ब्रह्मसूत्रस्य बन्धः. 4 a बंभसुए वृषभनाथ-पुत्रे, अन्यत्र ब्राह्मणे. 5 a महुसरणा मधुरशब्दाः; b °हं टियहिं शब्दैः. 6 b उल्लंघिये त्यादि—उल्लंघिता पादाकान्ता या चतुःसागरा चतुःसमुद्रा पृथ्वी तस्याः पतिः तस्मै. 7 a पंतीउ मालाः; सुरयणहं शोभनरत्ना-नाम्; b सुरयणहं देवसंघातानाम्. 8 b तहे गङ्गायाः.

## 12

पट्टु विजयलच्छिआलंगियउ  
 सुरसरि साहेप्पिणु णीसरइ  
 सरित्तरेण जि पुणु संचरइ  
 जहिं धूलि होति गिरिं तरुवर वि  
 सरि छज्जइ उगगयपंकयहिं  
 सरि छज्जइ हंसहिं जलयरहिं  
 सरि छज्जइ संचरंतद्वसहिं  
 सरि छज्जइ चर्कहिं संगयहिं  
 सरि छज्जइ सरतरंगंभरहिं  
 सरि छज्जइ कीलियजलकरिहिं  
 सरि छज्जइ बहुजलमाणुसहिं  
 सरि छज्जइ सयडहिं सोहियहिं

भणु केण ण दंसणु मगियउ ।  
 बलु दिण्णदाणु कयणीसरइ ।  
 हा हरिणंबदु तहिं किं चरइ ।  
 उल्लियरओहं रहिउ रवि ।  
 बलु छज्जइ वित्तैछत्तसयहिं । 5  
 बलु छज्जइ धवलहिं चामरहिं ।  
 बलु छज्जइ करवालहिं शसहिं ।  
 बलु छज्जइ रहचक्रहिं गयहिं ।  
 बलु छज्जइ जलतुरंगवरहिं ।  
 बलु छज्जइ चल्लियमयकरिहिं । 10  
 बलु छज्जइ किंकरमाणुसहिं ।  
 बलु छज्जइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह्व जलवाहिणिय तिह मंहिह्ववाहिणि सोहइ ॥

महिह्वरमेयणिहिं पयहिं किं किर को णउ बीहइ ॥ १२ ॥

## 13

अक्खिउ णिगमणपवेसु जहिं  
 वेयडुगिरिंदहु पच्छिमहे  
 मृगमंगलमगालियल्लियहिं

पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।  
 जिह्व आसि तिमीसहिं दुग्गमहे ।  
 कंडयगुहाहिं पुव्विल्लियहिं ।

12. १ MBP °आलंगियउ. २ MBP दिण्णदाण. ३ MBP हरिणंबदु किं तहिं. ४ MBP गय. ५ MBP विचलत्त°. ६ M चक्रहिं हंसयहिं. ७ P °तरंगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहः. ८ M adds after this: बलु छज्जइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake. ९ MB किं किर. १० MBP णिववर°. ११ M महिह्वरमेयणिहिं. १२ MBP एयहिं किर.

13. १ M णिगमणु. २ MBP मिय°.

12. 2 b क य णी सर इ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतिर्वेन. 4 b उल्लिखे त्यादि—उच्छलितो यो रजःसंधातस्तेन र हि ओ आच्छादितो रविः. 9 a सर तरङ्ग° जलस्य तरङ्गाः. 12 a सय ड हिं स्वतटेः; b स-य ड हिं शकटेः. 13 जल वा हि णिय जलवाहिनी नदी; °वा हि णि सेना. 14 महिह्वर° पर्वता राजानश्च.

13. 2 b ति मी स हि तिमीससंज्ञायां सिन्धुयुहायाम्. 3 a अलिय लिं व्याघ्रः.

तहिं गियडउ सेणु गिसणु किह  
 गिहिणाहं भणिउ बलाहिवइ  
 हणु दंडे पुंणु वि कवाड तिह  
 पचंतु पसाहिवि एहि लहु  
 छम्मास वसेवउ एत्थु मई  
 असिजलघाराधुयजसवडेण

ण विलग्गइ गिरिकुहइम्ह जिह ।  
 तुहु जोगाउ पेसणु दिणु लइ ।  
 विहडेप्पिणु वच्चइ झत्ति जिह ।  
 जज्जाहि तुरयसेणेण सहु ।  
 जाएसमि पडिआएण पई ।  
 ता चमुपमुहेण महाभडेण ।

5

घत्ता—पुव्वकमेण पुणु हरिरियण चडेवि पयंडे ॥  
 आरूसिवि हयउ गिरिगुहकवाड पविदंडे ॥ १३ ॥

10

14

जिणदंसणि जिह दुक्कियपडलु  
 जिह सुद्धसहावे मयणसर  
 सुकईदसमागमि कुकइ जिह  
 तहिं सहु भीमु जो गीहेरिउ  
 तेत्थु जि सिहरत्थलि रइयपुरु  
 पडिहारें रायहु दरिसियउ  
 बलवइणा साहिय मेच्छमहि  
 आवेवि णमंसिय पडुहि पय

जिह दिवसयरुग्गमि तिमिरमलु ।  
 जिह पिसुणें दूंसिउ णहभर ।  
 विहडिउ कवाड फुड झत्ति तिह ।  
 तहु भइयइ को<sup>१</sup> वि ण थरहरिउ ।  
 सिरिणट्टमालि णामेण सुह ।  
 कमकमलालोयैणहरिसियउ ।  
 वसि हई तहु जयलच्छिसहि ।  
 तहिं णिवंसंतहुं छम्मास गय ।

5

घत्ता—ण वर गुहाकुहइ णरवइगइजोगेउ जायउ ॥  
 सव्वहं सीयलउ णं दीसइ कल्लु परायउ ॥ १४ ॥

10

३ MBPK तिह. ४ MB °कुहरंम; P कुहरंमु; K कुहरम्ह. ५ MBP पुव्वकवाड. ६ P जाजाहि.  
 ७ MBP दुरिय सेणेण. ८ MBP हरिरियणि.

14. १ MBP णीसरिउ. २ MBP को वण. ३ MBP °लोयणि. ४ MBP णिवंसंतहिं. ५ P °जोगा.

४ b गि रि कुहइम्ह गिरिकुहरत्थोष्मा.

14. 6 b क मे त्या दि- पदकमलयोगेरालोकेन हर्षितः. 7 b ज य ल च्छि स हि जयलक्ष्म्याः सखीः

15

ता मंतिहि गुञ्ज ण रक्खियउ  
तुह माउयाहि मंथरगइहि  
णामे णमि विणमि कुमारवर  
णहयरवइ हूया अवियलहे  
हल्लियसाहाफुल्लियवणइं  
उहामहं गामहं तेत्तियउ  
भुंजंति रमंति गमंति दिणु  
तं गिणुणिवि भूसियसमरधुर  
गय तेहिं भणिय खयरहिवइ  
महियलि उप्पणउ चक्कवइ  
तहु पुचु भरहु लहु अणुसरहो

परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।  
ते दोणि वि भायर जसवइहि ।  
गंभीर धीर रणभारधर ।  
णिवसंति पत्थु गिरिमेहलहे ।  
पण्णास सट्ठि खगपट्ठणइं । 5  
कोडिउ धरणेण विहसियउ ।  
पणवंति तुहारउ जणु जणु ।  
पडुणा पेसिय गणवद्ध सुर ।  
छक्खंडमंडलावणिजइ ।  
जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ । 10  
अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

घत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥

गुरुहुं सडिभंहे मि दोसिल्लहं दंड पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो' बंधुणेहभउ भावियउ  
हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ  
तणुतेयपूरपिगलियणहु  
अम्हहं आराहणिज्जु हवइ  
भणु जलणहु उप्परि को जलइ  
भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ  
इय घोसिवि ताइं विसज्जियइं

खयरिंदहिं कज्जु विहावियउ ।  
पणपण णप्पण पयंपियउ ।  
जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।  
भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।  
भणु पवणहु उप्परि को चलइ । 5  
भणु भरहुहु उप्परि को नुंवइ ।  
आयइं अमरउलहं पुजियइं ।

15. १ MBP गुञ्जु. २ P सडिभरहं.

16. १ MBP ता. २ MBP णिवइ.

15. 2 a b माउयाइ भायर तव माउयैशोमत्या भ्रातरौ. 5 a हल्लियसाहा<sup>१</sup> वलितशाखाः. 8 b गणवद्धसुर अन्नरक्षका देवाः. 11 b मडप्फरु मिथ्यागर्वः.

16. 3 a तणु ते ये ह्यादि—तनुतेजसो देहप्रमाया भरेण पिहलितं नमो येन.

तूरइं गुरवरइं वियंभियइं  
चोइय हरिकरिवरसंदेणइं  
खणि बे वि सहोयरणीहैरिय

कुलचिंधसयाइं समुम्भियइं ।  
आह्वयइं गियणियपरियणइं ।  
दिम्भित्तिचित्तजाणहिं भरिय । 10

घत्ता—खेयरकिंकरहिं परिवारिय देव समाणहिं ॥

जहिं गिवसइ गिवइ तहिं आइय रैयणविमाणहिं ॥ १६ ॥

## 17

मउलियकरेहिं पणवियसिरेहिं  
अम्हारउ गिव कुलसामि तुहुं  
पइं दिट्ठइं आवइ ओसरइ  
तुह तायहु हयवम्मीसरहो  
चामीयरमणिणिम्मियघरइं  
अहिराणं आसि विइण्णाइं  
तो भुंजहुं णं तो तुहुं जि लइ  
तं गिसुणिवि राणं भासियउ  
मैहु आणावयणु ण गिरसियउ  
जिह मउडुग्गयचूडामणिणा  
तिह एवहिं मइ वि समप्पियइं

पहु बोळिउ णमिविणमीसरेहिं ।  
पइं दिट्ठइं णयणहं होइ सुहुं ।  
पइं दिट्ठइं घरि सिरि पइसरइ ।  
आएसं परमजिणेसरहो ।  
अइरम्मइं खेयरपुरवरइं । 5  
जइ एवहिं पइं पडिवण्णाइं ।  
अम्हहं पुणु दईयंबरिय गइ ।  
अप्पाणउं जं ण विणासियउ ।  
तं तुम्हहिं चंगउ ववसियउ ।  
चिरयालि महायरेण फणिणा । 10  
पालहिं खेयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—जिणवरणंदणहो बलवंतहु रिद्धिसणाहहो ॥

णमिविणमीसरेहिं पडिवण्ण सेव णरणाहहो ॥ १७ ॥

## 18

रायडु कंपावियतिहुयणहो

पणवेप्पिणु गय सणिहेलणहो ।

३ P °दंसणइं. ४ MBP णीसरिय. ५ M विहिभित्तिचित्त°; B दिहिभित्तिचित्त°; P दिम्भिसिहि. ६ MBP अमरविमाणहिं.

17. १ M आवय. २ MBP तुहुं मि लइ. ३ MB दईयंबरिय. ४ B गु. ५ B पहु°.

18. १ P कंपाविउ.

10 b दि ङ्गि त्ति चित्त जा ण हिं दिश एव भित्तयः ता एव नानायानानि तैः.

17. 6 a अ हि रा एं सर्पराजेन शरणेन्द्रेण. 7 a दईयंबरिय दिगंबराणां गतिः.



ते बंधव सिरिधव पट्टविधि	रणधीरं वहरं गिद्धविधि ।
संचल्लइ डोल्लइ धरणियलु	उद्धरियसूलकरवालहलु ।
मरुचलियलुलियचलचिंधवलु	गुहदारि उदारि ण माइ बलु ।
णउ जंपइ कंपइ फणिणिवहु	पहु वच्चइ णच्चइ तियसवहु ।
पउ गुण्णइ धिण्णइ आहरणु	परिघोलइ लोलइ पंगुरणु ।
अइमल्लइ मेल्लइ सहु करि	रहु थक्कइ वंकइ कंठु हरि ।
तहु दाणे फेणे समिय रय	चिक्खल्लइ खोल्लइ खुत्त पय ।

घत्ता—बंधिण पडिणहिं जयणंदर्वहुणिग्घोसहिं ॥

गज्जइ गिरिविवरु वज्जंतहिं पडहसहासहिं ॥ १८ ॥

10

## 19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि	णरलिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।
कांगिणियइ घणिियइ मट्ठियइ	अंधारवियारविहट्ठियइ ।
उज्जोयउ जायउ उज्जलउ	खंधारु वीरु धारियपुलउ ।
संकमेण कमेण जि संचरइ	सैरभरियउ सरियउ उत्तरइ ।
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ	केलासगिरीसहु लहु गयउ ।
सुराणियरहिं खयरहिं परियरिउ	णिज्जरझरंतवारिहिं भरिउ ।
गंधव्वहिं भव्वहिं सेवियउ	सिहिजालहिं चवलहिं तावियउ ।
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ	कइवुकारेहिं णिण्णइयउ ।

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥

णं महिकासिणिहिं भुयदंहु पदंसियसग्गउ ॥ १९ ॥

10

२ MBP रणवीरइ. ३ P °विधउलु. ४ MBT उयारि; P उयारि. ५ B वंचइ णंवइ. ६ M खंधु; BP कंधु. ७ MBP चिक्खल्लइ. ८ MBP वद्ध. ९ P गिज्जइ.

19. १ MBP कागणियइ मणिमइ. २ MB सकमेण. ३ MBP जलभरियउ. ४ MB णिण्णइयउ.

18. २ a सि रि धव लक्ष्म्या भर्तारौ. 7 a अइमल्लइ मन्दगमनं करोति.

19. 1 a पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णं मार्गं दृष्टिविषयो न भवति. 2 a घणि यइ कटिनया. 4 a संक-  
मेण सत्तुबन्धेन; b सरभरियउ जलपूर्णाः. 5 a कुहरहु पर्वतस्थ; कुहरहु शुद्धायाः.

## 20

जो अच्छरचिचालिहियासिलु  
जो दरिसियसीहसिलिबसुहु  
जहिं दिहुईं द्रुमसाहागयईं  
अलि झंकारेहिं ण रडि मुयइ  
जहिं सलहिजंति अमच्छरहिं  
जहिं मणिभिसिंहि पेच्छिवि सयणु  
जहिं दोमवीदु मणिगवि तरुणु  
जहिं चंदणमहिरेहु परिहरिवि  
मुहसासवासु विसहर पियइ

विसहरसिररयणारुणिविलु ।  
सदूलपसाहियरंदगुहु ।  
किंणरवीसरियहारसयईं ।  
जहिं णाहलडिभउ सुहुं सुअइ ।  
सवरीरूवाइं वि अच्छरहिं । 5  
महिसिंहि कीरइ पडिवक्खमणु ।  
मरगयवट्टहु धावइ हरिणु ।  
णहयरवहु सुत्ती संभरिवि ।  
अवरहु वि भुयंगहु पइ मइ ।

घत्ता—पेच्छिवि जममहिसु जहिं जक्खिणिसीहु ण रूसइ ॥  
जिणमाहप्पण पडिवक्खपक्खि खम दीसइ ॥ २० ॥

10

## 21

जहिं इंदणीलरुइरंजियउ  
किं मोत्तिउ किं वै तुसारकणु  
जहिं ओसहिदीवउ पजलइ  
जहिं जायउ गुणगणमंडियउ  
जिणणाहं घोसियं जीवदय  
सुरहस्थिणि सेवइ जासु तइ

सिंहि मंजारें ण विमंजियउ ।  
जहिं संकइ संजउ सीलहणु ।  
रयणिहिं पुलिदु सुहुं संचलइ ।  
मुणिसंगें सुयउलु पंडियउ ।  
जहिं पसु वि चिलाय वि धम्मरय । 5  
जहिं हिंडइ चक्रेसरिगरुहु ।

20. १ MBP °मुहु. २ MBP दीसहिं दुम°. ३ M °झंकारेण णं रडि; B °झंकारण णं रडि; P °झंकारेण ण रडि. ४ MB अमरच्छरहिं. ५ MBP °रूवाइं वरच्छरहिं. ६ MBP दोवपीड. ७ MBP °महिरुह.

21. १ B मजारेण. २ MBPT विहंडियउ and gloss in T विवेचितः. ३ P च. ४ MBP पोसिय.

20. 2 a °सीहसिलि ब° सिंहशावकः. 4 a ण रडि मुयइ न रटनं मुञ्चति, गानमेव करोतीव अलि-  
झंकारेः. 6 a सयणु स्वचारीरुम्; b पडिवक्खमणु सपत्नीबुद्धिः. 7 a दोमवीदु वृत्रोसंघातः; b °वट्टहु एक-  
खण्डपाषाणम्. 8 b संभरिवि ज्ञात्वा. 9 b भुयंगहु विटस्य. 11 पडिवक्खपक्खि खम दीसइ प्रतिपक्षपक्षे  
शत्रौ अपि क्षमा दश्यते.

21. 1 b ण विमंजियउ न ज्ञातः. 2 b संकइ शङ्कते; संजउ संयतो मुनिः. 4 b सुयउलु शुक्-  
कुलम्.

पोमावइहंसु कडक्खियउ  
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ  
बारहकोट्टेहिं अहिट्टियउ

जहिं वरुणहु मयरु गिरिक्खियउ ।  
सिहि मेसें सहुं कीलाणिरउ ।  
जहिं समवसरणु सइं संठियउ ।

घसा—तहु गिरिवरहु तले घरणीसें सिविहें विमुक्कैंउं ॥

10

णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कैं ॥ २१ ॥

## 22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिं  
कंठोलंबियमुत्तावलहिं  
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं  
कइवयणिवेहिं सैहुं सुद्धमइ  
आवंतहु रायहु सो सिहरि  
सीहाँसणचमरीचामरइं  
मयणिब्भर वर गज्जंत गय  
णं दंसिणु अग्गमाइ ठवइ

सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।  
उच्चाइयणवकुसुमंजलिहिं ।  
उवसमवंतहिं पसमियकलिहिं ।  
पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।  
णिज्जरजलधाराभरियदरि । 5  
छायादुमल्लसइं सुंदरइं ।  
वणयर किंकर गंडय गवय ।  
णं कोइल कलरवेण लवइ ।

घसा—तरेवसें गिरिणा फलु फुलु पनु णं दिण्णउं ॥

महिहरु महिहरहु अवसें पालइ पडिचण्णजं ॥ २२ ॥

10

## 23

आरुहिवि धरांहरवरसिहरु  
परमैप्पय पयपइ पइसरइ

अइरुंद्वंदकररासिहरु ।  
जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिह ६ MBP पमुक्कउ. ७ B थक्कइ.

22. १ MBP °हरहिं. २ B °णउकुसुमं°. ३ MBP सह. ४ MBP सिंहासण°. ५ MB तरुवंतं.

23. १ MBP घराघर°. २ MB परमप्पय पइपइ पयसरइ; T पयपइ प्रजापतिः; P परमप्पय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्मरतः स्मरति.

9 a अहि ट्टियउ सहितम्.

22. 8 a दरिसणु प्राप्तम्. 9 तरुवंतं तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन. 10 महिहरु पर्वतः; महिहरहु चपत्स.

23. 1 b °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम्. 2 a परमप्पय परमात्मानम्; पयपइ प्रजापति-भरतः.

दिष्टु परमेसर णिहयसर  
भरहं बहुछंदपसंगिरए  
अरहत अणंत भवभवइ  
तिट्ठासरितीर पराइयउ  
पइ रोसैजलणु उवसामियउ  
पइ पेच्छिवि देउ अहिंसवर  
णं वि भक्खइ तं कया वि णउलु

तिसिएण व हरिणं कमलसर ।  
थुउ सुट्ठु सैलक्खणाइ गिरए ।  
तुह सेवइ सोक्खु समुम्भवइ ।  
तुहुं कामे पर ण पराइयउ ।  
तुहुं रिसि भुवणत्तयसामियउ ।  
ण हणइ दंडेण अहिं सवर ।  
महिसंतयारि वग्घहं ण उलु ।

5

घत्ता—पइ संबोहियइ कैलासवासंम्रउ लेप्पिणु ॥

10

थक्कइ खेयरइ कैलासवास मेहेप्पिणु ॥ २३ ॥

## 24

तुह वयणु विणीसिउ काणणए  
ण पवत्तइ कथं वि जीववह  
सीहु वि सरहु वि एक्कहिं वसइ  
कट्ठु गेउ ण गायइ सावयहो  
पइ मंसगिद्धि मज्जारयहं

णिसुणेप्पिणु इह गिरिकाणणए ।  
जय संदरिसियपरलोयपह ।  
सिहियुपिच्छंइं सवरी वसइ ।  
सौमिय पइ लाइय सा वयहो ।  
सौडत्तणु महुमज्जारयहं ।

5

३ BP णिहयसर, ४ MBP सुलक्खणाइ, ५ K रोडु जलणु, ६ K णउ, ७ MBP °वासवउ.

24. १ MBP तुहु, २ K ° लोयवह, ३ MBPK ° पिच्छंइं, ४ MBP कलगेउ, ५ B सा विय; P सा विय; T साविय स्वामिन्, अथवा साविय धाविका; K सा मिय and gloss सा शबरी, ६ P मंजारयहं.

3 a णिहयसर निजितकामः. 4 a °छंदपसंगिरए छन्दोऽभिप्रायः माताप्रस्ताश्च तेन पसंगिरए संबन्धवत्या वाण्या. 5 a भवभवइ भव्या एव भानि नक्षत्राणि तेषां पतिश्चन्द्रः. 6 a तिट्ठा° तुष्णा. 8 a अ हिं सवर अहिंसा वरा यस्य; b अ हिं सवर अहिं सर्प शबरी दण्डेन न हन्ति; उपलक्षणमेतत्; न कोऽपि किमपि केनापि हन्तीत्यर्थः. 9 a तं सर्पम्; ण उलु नकुलः; b महिसंतयारि महिषाणामन्तकारि न व्याघ्राणां कुलं समूहो भवति. 10 कैलासवास हे देव कैलासपर्वतवासिनः; ब्रउ लेप्पिणु व्रतं गृहीत्वा. 11 कैलासवास मेहेप्पिणु कैलं मद्यभाजनं अल आसवो मद्यं तस्य आशां लयक्त्वा; अथवा के मस्तके लसन्तीति कैलासा केशाः वासो वर्णं तानि मुक्त्वा.

24. 1 a विणीसिउ विनिर्गतम्; काणणए हे ब्रह्मन्; b गिरिकाणणए पर्वताट्टव्याम्. 3 b सिहियुपिच्छंइं सवरी वसइ शबरी पुलिन्दस्त्री परिधानं करोति, मयूरपिच्छेनैर्नजशरीरमाच्छादयतीत्यर्थः. 4 a सावयहो श्रापदस्य वधार्यम्; b सा शबरी; वयहो लाइय व्रतं ग्राहिता.

परैयारु वि वारिउ जारयहं      तुहुं णाहु सुहु विज्जारयहं ।  
 जं अणुहरियउ अलियंजणहो      तं गाहु पाउ अलियं जणहो ।  
 मुहणिग्गंतउ पइं खंचियउ      तुह संभवि देवहिं खं चियउ ।

घत्ता—इय भरहेण थुउ परमेसरु जिर्यपंचिदिउ ॥

अमरासुरमणुयखगपुप्फंदंतफणिवंदिउ ॥ २४ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम  
 पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥  
 ॥ संधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदारु णिवारिउ. ८ B जिउ पंचि°. ९ MBP °पुप्फयंत°.

6 b विज्जारयहं रत्तल्लयविधारतानाम्. 7 a अणुहरियउ अलियंजणहो. अमरस्य कज्जलस्य च अनुकृतं, सदृशमित्यर्थः; b अलियं मिथ्या. 8 b खं चियउ आकाशं व्याप्तम्.

# XVI

षण्वेणिणु जिणवरकमकमलु ओयरेवि कइलासहो ॥  
साकेयहु संमुइं संवल्लिउ धरणिणाहु गियवासहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

भारणालं—रविणिहकणकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।  
वल्लिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठवद्धहारा ॥ १ ॥

होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु  
किं ण किं ण किर संचूरिउ वणु  
किं ण किं ण देसंतरु लंघिउ  
किं ण किं ण पहरणु अवलोइउ  
किं ण किं ण वरवाहणु वाहिउ  
कणयदंडमंडियपडिहारें  
पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ  
कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ  
धिप्पइ कुसुमकरं बु ससंडयणु  
घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु  
दर्पणु कलसु धरिज्जइ अण्णाहिं  
सलहिजंतु महंतु सुरिंदहिं  
करिवरकंधरत्थु मण्हारिहिं

किं ण किं ण किर कैहमियउं जलु । 5  
किं ण किं ण धूली जायउ तणु ।  
किं ण किं ण दुग्गु वि आसंधिउ ।  
किं ण किं ण पडिसेणु णिवाइउ ।  
किं ण किं ण परमंडलु साहिउ ।  
आवेंतें पडुखंधावारें । 10  
मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ ।  
कण्णूरें रंगावलि किज्जइ ।  
वज्जइ सुरतरुपल्लवतोरणु ।  
दोवदहियसिद्धत्थयचंदणु ।  
उग्घोसिउ मंगलु सुरकण्णहिं । 15  
सहुं जक्खिदखणिंदणुरिंदहिं ।  
विज्जिजंतउ चामरधोरिहिं ।

GMBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

प्रतिग्रहमटति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसंगता वसति ।

भरतस्य वल्लभा सा कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

MBP read स्वैरसंगता for स्वैरसंगता; and वल्लभासा for वल्लभा सा. K does not give it.

1. १ MBP खयरणसुरा. २ M अवसें; B णिवसें; P णिवसें and gloss निमेषण; T णिवसें.  
३ B कहवियउं. ४ M संचूरिउ. ५ MBP आवेंतें. ६ M देवंगु वत्थु. ७ P ससंडयणु but gloss सषट्चरणः.  
८ MBP वाइज्जइ. ९ MB दुव्व°; P दोव्व°. १० MP दप्पण. ११ M मणिहारिहिं. १२ MBP °धारहिं.

1. २ गिय वासहो निजगृहं प्रति. 5 a णिविसें अक्षिनिमीलनमत्वेण. 6 b तणु तृणम्. 13 a विप्पइ क्षिपति; कुसुमकरं बु नानावर्णकुसुमानां समूहः; ससंडयणु षट्चरणैर्भ्रमरेः सहितः.

यत्ता—महि सयल वि खग्नो णिज्जिणिवि कयदिव्विजयविल्लासहि ॥  
उज्झहि भैरहाहिउ पइसरइ सट्ठिहि वरिससहासहि ॥ १ ॥

## 2

आरणालं—णउ पइसरइ पुरवरे रयणर्मयहरे जयसिरीवरंगं ॥  
भंगुरभासुरारयं णिसियधारयं राइणो रहंगं ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिस्सइ	कुक्कइहि कब्बु व णउ चिम्मक्कइ ।
णं कोवाणलजालामंडलु	णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।
भरहपयावै कायैरिजायउ	भाणुविबु णं लज्जइ आयउ । 5
इंदचंदपडिकूलणसीलउ	धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।
एहु जि चक्कवट्ठि अवलोयहु	णयरं दीवुं धरिउ णं लोयहु ।
मणिमऊहमालावेलाउलु	रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।
सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु	णं णहसरि विहंसिउ रचुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु	अवसें देइ धरणि कैर आयहु । 10

यत्ता—तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥  
हिर्यउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहि. १४ MBP भरहेसर.

2. १ MBP ° मयहरे. २ MB भासुराययं. ३ MBP कायइ जायउ. ४ MBP धरिउ दीउ.  
५ K °वेलाजलु. ६ MBP वियसिउ. ७ MBPKT कर. ८ M हियहुल्लउ.

19 पइसरइ प्रतिसरति.

2. 3 b चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति. 5 a काय रिजायउ कांतरीभूतम्; b आयउ आगतम्. 6 a °पडि कूल ण सीलउ अभिभवं कटुं समर्थम्. 7 b दीवु दीपो दिव्यं वा. 8 b रायेत्यादि—रक्षोत्पलं रोजमाने-  
दिवाकरस्य पुण्यैः प्रणतैः करैरुज्ज्वलं विकसितं भवति, चक्रे तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिनः पुण्यान्वेव करास्ते-  
रुज्ज्वलं भवति. 10 a वलयायारहु कृत्ताकारस्य चूडाकरस्य च; b धरणि भूमिः स्त्री च; क र दण्डो हस्तश्च;  
आयहु अस्य चक्रस्य. 11-12 जणि येत्यादि—यथा धूर्तस्य हृदयं वेदयार्था न प्रविशति तथा चक्रं नगर्या न  
प्रविशति.

3

आरणाळं—फणिणरसुरपसंसियं जसविहूसियं गुणगणोहदित्तं ।  
णं दुविणीयमाणसे पिसुणमाणुसे सुयणसच्छवित्तं ॥ १ ॥

अकमियंक्कउ बाहिरि थक्कउ  
णउ पइसरइ पुरि चक्कु णिहंतउ  
परपुरिसाणुराइ सइविचु व  
मायाणेहणिवंधणि मित्तु व  
चुणयविलीणइ दिण्णउ भत्तु व  
सुद्धसिद्धमंडलि जमकरणु व  
णिच्चलणीसणिहेलणि सरणु व  
उवसमिल्लि सामरिसायरणु व  
णिसिसमयागमि रविउमगमणु व  
पुण्णहीणि जिणगुणसंभरणु व

णावइ दइवें खीलिवि मुक्कउ ।  
सुईघरि णं अण्णायविढत्तउ ।  
परदासत्तणम्मि सवसित्तु व । 5  
पत्तदाणि पाविट्ठु चित्तु व ।  
रइरसतुरियइ णवउ कलत्तु व ।  
पत्थणिसेविरि रुयवित्थरणु व ।  
दुरियमल्लिणमणि पंडियमरणु व ।  
णिव्वियारि तणुभूसंयरणु व । 10  
बुद्धत्तणि तरुणीयणरमणु व ।  
णिद्धणि णिग्गुणि विहलुद्धरणु व ।

घत्ता—थिउ चक्कु ण पुरवरि पइसरइ णावइ केण वि धरियउ ॥  
ससिर्विबु व णहि तंरायणहि सुरवरोहि परियरियउ ॥ ३ ॥

4

आरणाळं—ता भणियं णिराइणा रुद्धराइणा चंडवाउवेयं ।  
किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥ १ ॥

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।  
अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर देवदेव दुज्जय भरहेसर ।

3. १ M °माणुसे. २ B पिसुणु माणुसे. ३ M °वित्तं. ४ B °मियंक्कओ. ५ MP णिरुत्तर. ६ M सुइघणि. ७ M णिच्चल°; BP णिच्चल°. ८ B reads this foot after 11a. ९ K भूसाकरणु. १० MBP तारासयहिं सुरणरोहिं.

3. 2 दु वि णीय अशुहीतगुणशिक्षम्; सुयण सत्थ वित्तं महामुनिसार्थस्य वृत्तं चरितम्, अथवा सज्जन-  
सार्थः सत्पात्रसमूहस्तल वित्तं दानार्थम्. 3 a अकमियक्कउ आक्रमितार्कम्, अभिभूतादित्यम्. 4 b सुइघरि  
पवित्रग्रहे. 5 b सवसित्तु स्ववशित्वं स्वातन्त्र्यम्. 7 a चुणयविलीणइ अरोचकपीडिते. 8 b रुयवित्थरणु  
रोगविस्तारः. 9 a °णी स° दरिद्रः.

4. 1 णिराइणा नृराजेन; रुद्धराइणा रुद्धं प्रासिद्धं यथा भवत्येवं राजते.



भुयञ्जुयबलपडिबलविह्वणहं  
तेओहामियचंददिणसहं  
कित्सित्सिजणमेत्तिसहायहं  
सेव करंति ण णहभाईवई  
दैति ण करभरु केसरिकंधर  
अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि

पयभरीथरमहियलकंपवणहं । 5  
जणणदिणमहिलच्छिविलासहं ।  
को पडिमल्लु एत्थु तुह भायहं ।  
णउ णवंति तुह पयराईवई ।  
पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।  
पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण जि । 10

घत्ता—रइवर परमेसर उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ॥

कासवतणुरुहु णवणल्लिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधर ॥ ४ ॥

## 5

आरणालं—विलसियकुसुममगणो गरुयगुणगणो तरुणिहिययथेणो ।

असरिसविसमसाहसो वसि हयालसो गिह्यवेरिसेणो ॥ १ ॥

अण्णु वि जसवइतणयहं जेट्टउ  
सायर जिह तिह मयरधयालउ  
पंचसयाई सवायई तुंगउ  
बाल्लु वंभसुंदरिहि सहोयर  
हरियैदेहु णं मरगयगिरिवरु  
विमलकुलालवालसुरतरुवर  
शुरुचरणारविंदरइरसवसु  
दुत्थियदीणाणाहहं दिहियरु  
लीलादलियमहौयलमयगलु

पुत्त सुणंदहि तुज्जु कणिट्टउ ।  
चावहं चारुधयणु चरियालउ ।  
भण्णइ संपहिं सो जि अणंगउ । 5  
पिईपयपरुहरयरउ महुयर ।  
अरिहरिदसणमुसलपसरियकरु ।  
चर्मदेहु सासयसुहसिरिहरु ।  
मंदरकंदरंतगाइयजसु ।  
णरहरिसरणागयपविपंजरु । 10  
कडिणबाहु बाहुयलि महावलु ।

4. १ MBP पयथिरभर°.

5. १ MBP °वयण. २ MBP संपह. ३ M बाल. ४ B पिउपयरुह°. ५ MBP हरियवणु.  
६ K चरिम°. ७ BPK °महियलु.

8 a णह भाई वई वंभसुप्रभादीप्तानि; b पय राई वई पदपत्नानि. 9 a करभरु दण्डस्य भारः प्रानुर्थम्; b मु हि-  
यइ सुधा इयैव. 11 °रणपरियरु संग्रामसामग्रीकः.

5. २ असरिसविसमसाहसो असदृशान्यद्वितीयानि विषमाणि मनसोऽप्यगोचराणि साहसानि अद्भुत-  
कर्माणि यस्य; वसि जितेन्द्रियः. 4 b चरियालउ परनारीसहोदरः, चरितस्य वा काव्यविशेषस्याश्रयः; 5 b  
संपहिं संग्रति. 11 a °महायल° महापर्वतः.

यत्ता—सो अच्छइ उवसमु धरिवि मणे जइ राणि कर्ह वि वियंभइ ॥  
तो सहुं चकैं सहुं साहणेण पइ मि गरिंद गिहुंभइ ॥ ५ ॥

6

आरणाळं—जो जिणइ ण हारिणा कुलिसधारिणा पयडसुहडरोलें ।  
सो गिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकाले ॥ १ ॥

हित्तिभिण्णमहिचइसामंतें	दसादिसिवहपेसियसामंतें ।	
रूवरिद्धिरंजियरामोहें	अइपरिवट्टियसुधरामोहें ।	
णियभुयसत्तिपरजियभरहें	तं गिसुणेवि पयंपिउ भरहें ।	5
जमहु जमत्तणु को दरिसावइ	मइ सुएवि किर कवणु रसावइ ।	
एम को वि किं जगि संतावइ	को किर सिहिसिहाहि सं तावइ ।	
कहु महु तणउं पडुत्तु ण भावइ	कैं पडिखलिउ जंतु णहि भावइ ।	
केर महारी को णावज्जइ	एह पुहइ को किर णावज्जइ ।	
आसमुहमेइणिकरवालहु	को णासंकइ महु करवालहु ।	10
को किर भिच्च महारा मारइ	को विणिवारइ मज्झु वि मारइ ।	
किं किरै वणिणपण कंदणें	अणवंतहु णिवडइ कं दणें ।	

यत्ता—इय जंपिवि राएं णिकरुणु अविणयविहियमणेज्जहं ॥  
सयलहं मि सयलसंपयधरहं लेहु दिणु दाइज्जहं ॥ ६ ॥

c MBP कह व.

6. १ MB °सेहाहि. २ MBP कि. ३ P णहु. ४ MBP किर को. ५ M करि. ६ MBP °संपयहरहं.

6. 1 हारिणा उत्तमेण. 3 a हि ते त्या दि—हितौ गृहीतौ भिक्षौ उद्वाहितौ महीपतीनां सामंतौ लक्ष्मीश्च मन्त्रश्च येन तादृशेन भरतेन. 4 b ° सुधरा मोहें शोभनायाः प्रथिव्या मोहेन. 5 a भरहें भरतक्षेत्रेण. 6 b रसावइ पृथ्वीपतिः. 7 b सिहि सिहा हि सं तावइ अग्निज्वालाभिः स्वमात्मानं तापयति; 8 b सावइ आदित्यः. 9 a णावज्जइ न गृह्णाति; b णावज्जइ न अर्जयति. 10 a °मेइ णिकरवालहो मेदिनीकरमाहकस्य. 12 b णिवडइ कं दणें कं मस्तकं दणें सह निपतति. 13 अविणयविहियमणेज्जहं अविनयविधिना विनयाकरणेण अमनोहानां द्वेष्याणाम्.

7

आरणालं—ता विगया बँहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।

दुमदललैलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु	सामिसालतणुह पणवेप्पिणु ।
सुरणरविसहरभयइं जणेरी	करहु केर णरणाहु केरी ।
पणवहु कि बँहुवेण पलावै	पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावै । 5
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ	तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।
तो पणवहु जइ सुँसुइ कलेवर	तो पणवहु जइ जीविउ सुंदर ।
तो पणवहु जइ जरइ ण क्षिजइ	तो पणवहु जइ पुट्टि ण भजइ ।
तो पणवहु जइ बलु णोहइ	तो पणवहु जइ सुइ ण विहइ
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टई	तो पणवहु जइ कालुं ण खुट्टइ ।
कंठि कयंतवासु ण खुँहुइ	तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ । 10

घत्ता—जइ जम्मजराभरणइं हरइ चउगइदुँकु णिवारइ ॥

तो पणवहु तासु णरेसँहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

8

आरणालं—पुणरावि तेहिं गहिरयं सवणमहुयं परिसं पउत्तं ।

आणापसरधारणे धरणिधारणे पणविउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखंडु महिखंडु महेप्पिणु	किह पणविजइ माणु सुप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिर	वणहल्लमोयणु धेर तं सुंदर ।

7. १ MBP वजोहरा; T वजहरा वृत्ताः. २ BPK °लुलिय°. ३ MBP बहुपण. ४ MBP तद् and throughout elsewhere in this Kadavaka. ५ MBP सुविस् but T सुसुइ. ६ MBP किट्टइ. ७ MBP आउ. ८ MBP कयंतपासु. ९ MBP चहुट्टइ. १० MPB °दुक्खइं वारइ. ११ MP ता; B तहो. १२ MBPK णरेसरहो.

8. १ B omits धरणिधारणे; P महिहि कारणे. २ MBP वरि.

7. 1 बहुयरा बहुतरा वजोधरा वृत्ताः. 7 असुसुइ सुट्टु शुचि. 9 b विहइइ विनयति. 11 a जुहुट्टइ लगति; b का लु आयुः.

8. 1 गहिरयं गभीरम्. 3 a पिंडिखंडु खलखण्डम्.; महेप्पिणु अभिलष्य.

वैर दौलिहु सरीरहु दंडणु	णैउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु । 5
परपययधूसर किंकरसैरि	असुहाविणि णं पाउससिरिहरि ।
णिवपडिहारदंडसंधट्टणु	को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।
को जोयइ सुहुं भूभंगालउ	किं हरिसिउ किं रोसैं कालउ ।
पहु आसणु लहइ थिट्टणु	पविरलदंसणु णिणेहत्तणु ।
मोणै <sup>१०</sup> जहु भहु खंतिइ कायरु	अंजु पसु पंडियउ पलाविरु । 10
अमुणियहिययचारुगरुत्तै	कलहसीलु भणइ सुहडत्तै ।
महुरपयंपिरु चाहुयगारउ	केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—अइतिक्खहं धम्मगुणुज्झियहं वम्मैवियारणवसनहं ॥

को वाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं ॥ ८ ॥

## 9

आरणालं—अहवा तेहिं किं हयं जं समागयं दुल्लहं णरत्तं ।

तं जो विसयविसैरसे धिवइ परवसे तस्स किं बुहत्तं ॥ १ ॥

कंचणकंडे जंबुउ विधइ	मोत्तियदामें मकैड बंधइ ।
खील्यकारणि देउलु मोडइ	सुत्तणिमिच्छु दिच्छु मणि फोडइ ।
कप्पूरायरुक्खु णिसुंभइ	कोइवछेत्तहु वइ पारंभइ । 5
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु	विसु गेणहइ सप्पहु ठेय्यवि करु ।
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं	तक्कें विकइ सो माणिक्कइं ।

३ MBP वरि. ४ M दारिहु ५ MBP ण हि. ६ MBP °सिरि and a long note in M: यथा वर्षा-  
कालनदी परः अन्यहीनस्थाना झिल्लादिपयैः (?) मलिनै रजोभिः धूसरिता मलिना प्रवहति हिरि अतिलज्जाकारिणी,  
तथा किंकराः शोभा परपदरजोभिः धूसरिता. ७ MBP असुहाविणि. ८ MBP °हिरि; K °हिरि but  
corrects it to °हरि. ९ P भूसंग°. १० MBP मउणै. ११ MBP अजउ. १२ KBP मम्म°. १३

9. १ P °रत्तो. २ P परवसो. ३ MBP मक्कडु. ४ MBP दित्तमणि, ५ MBP कप्पूरायरुक्ख.  
६ MBP अप्पइ पर.

6 a-b परे ला दि—यथा वर्षाशीघारिणी नदी सरजस्का सकर्दमा असुखावहा भवति, एवं किं क र स रि किंकरा एव  
नदी परस्य स्वामिनः पदरजसा धूसरा मलिना भवति. 13 °व स ण हं °शीलानाम्. 14 पि सु ण हं बाणानां खलानां च.

9. 1 ते हिं बाणेः पिशुनैश्च. 3 a जंबुउ शृगालः. 5 a कप्पूरायरुक्खु कर्पूरवृक्षं अयुरुक्षं  
च; 6 वइ वृतिः.

जो मणुयत्तणु भोएं णासइ	तेण समणु हीणु को सीसइ ।	
चित्तु समत्तिण गेय णियत्तइ	पुत्तु कलत्तु वित्तु संचितइ ।	
मरइ रसणफंसणरसद्धुउ	मे मे मे करंतु जिह मँडैउ ।	10
खज्जइ पलयकालसहूँ	डज्जइ दुक्खहुयासणजालै ।	
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु	होइ जीउ भँकडु माहुंडलु ।	

घत्ता—केलासहु जाइवि तवयरणु तापं भासिउ किज्जइ ॥

जेणेह सुदूसहतावयरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

## 10

आरणाळं—इय भंणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।

दरिवियरियवराहयं सवरराहयं काणणं पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केळोसि जिणेसरु	संयुउ रिसहणाहु परमेसरु ।	
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय	जय तियसिंदमउल्लालियपय ।	
जय जाणियपरमक्खरकारण	जय जिण मोहमहातरुवारण ।	5
जय सुहवास दुरासावारण	जय ससहरसियवारिणिवारण ।	
पुणु वि पंच परमेद्धि णवेप्पिणु	पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।	
पंचमहारिसिचयई लंएप्पिणु	पंचासवदाराई पिहेप्पिणु ।	
पंचिदियपमाउ वज्जेप्पिणु	पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।	
पंचायारसाह पावेप्पिणु	पंचपंचविहु धम्म धरेप्पिणु ।	10

७ M मिडउ; BP मेडउ, ८ MBP मंकडु.

10. १ MBP भणिलो. २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ताः. ३ MP सवरराहयं, but T सवरराहयं शबराणां भासो भा यत्र. ४ MP केलास<sup>२</sup>. ५ B लहेप्पिणु. ६ B °दाराई हंमेप्पिणु.

9 a गेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति. 12 b माहुंडलु सर्पविशेषः. 14 संसारिणि तिस संसारतृष्णा विषयाकांक्षा.

10. 1 समरमा उपशमलक्ष्मीकाः, पसण्णा प्रसन्नाः. 2 °वियरिय° विचरिताः; सवरराहयं शबराणां राहा शोभा यत्र. 5 a परमक्खरं मोक्षः. 6 a सुहवास शुभस्य सुखस्य वा युद्धरूप. 6 b ससहरेत्यादि—शशधरश्चन्द्रः तत्पुत्र्यं सितं शुक्लं वारिणिवारणं छत्रं यस्य. 8 b पंचासवदाराई मिथ्यात्वाविरति-प्रमादकषाययोगाः. 10 b पंचपंचविहु दशविधः.

यत्ता—ददगुणि मणमग्गणु संगिहिउ मोक्खहु संमुहुं पेसिउं ॥  
संतहि अरहंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिणं भूसिउं ॥ १० ॥

## 11

आरणालं—ता पत्तो चरो पुरं णिवइणो धरं भणइ सुणसु राया ।  
इसिणो तुह सहोयरा सीलसायरा अज्जु देव जाया ॥ १ ॥

एकु जि पर बाहुबलि सुंदुम्मइ	णउ तउ करइ ण तुम्हं पणवइ ।	
तं णिसुणोवि पुरोहं उत्तं	भडसामंतमंतिसंजुत्तउं ।	
कोसु देसुं परियंणु पयभत्तउ	मणहरु अंतेउरु अणुरत्तउ ।	5
कुलु छलु बलु सामत्यु सुइत्तणु	णिहिलजणाणुराउ जसकित्तणु ।	
विणउ विचारहारि वुहंसंगमु	पोरिसु वुंदि रिद्धि दइज्जमु ।	
कुंजर णावइ महिहर जंगमु	अत्थि तासु रह करइ तुरंगमु ।	
अत्थसत्यु जावज्ज वि ण सरइ	जाम सहायसहासइं ण करइ ।	
जाम ण लग्गइ खलसंसग्गे	खत्तधम्मणिम्महणुम्मग्गे ।	10

यत्ता—जावज्ज वि चाउ ण करि धरइ तोणाजुयलु ण बंधइ ॥  
णिम्मज्जिणं भालसेयलवहि जाम ण गुणि सरु संघइ ॥ ११ ॥

## 12

आरणालं—ण हु मारइ महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्थो ।  
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खखग्गहत्थो ॥ १ ॥

ताम तासु दूयउं पेसिज्जइ	जइ पइं पणवइ तो पालिज्जइ ।
णं तो पुणु बाहुबलि धरिज्जइ	बंधिवि कारागारि णिहिज्जइ ।
पम मंतु जं तेण पउंजिउ	ता रापं तहु दूउ विसज्जिउ ।

७ MBP पेसियउ, ८ MBP भूसियउ.

11. १ MBP हरं. २ MBP स दुम्मइ. ३ MBP कुत्तउं. ४ MBP दोसु. ५ MB परयणु.  
६ MBP वुहं. ७ M रिद्धि बुद्धिदइउज्जमु. ८ MBP णिम्मज्जियं.

12. १ MBP दूवउ.

11. 6 b जस कि त्तणु यशोवर्णनम्. 7 a वुहसंगमु बुधसंगमः. 11 चाउ चापम्.

12. 1 महा हवे महासंग्रामे; महा हवे महाधवान्, महाभटान्.

णियवइरत्तु सचुंविद्धंसणु  
देसजाइकुलसुव्हु पसिद्धउ  
विविहविसयभासाभासिल्लउ  
तेयवंतु रन्धियपहुतेयउ  
गँउ दूयउ परिचोइयपत्तउ  
जहिं वणतरुसाहहिं महु वियलइ  
अइदीहरपवाससममहियहिं  
रसविलेसधारासममहियइं  
पुण्हिं गुण्हिं माल विहिंदिइं

सुहइ सुलक्खणु सोमु सुदंसणु ।  
पंडिउ पडु पडुलच्छिसमिद्धउ ।  
दिट्ठुत्तर माहिमाइ महल्लउ ।  
महुरवाणि औदेउ अजेयउ ।  
पोयणपुरु बहुदिवंसहिं पत्तउ । 10  
चलकंकेल्लीपल्लु विलुलइ ।  
पइसंतहिं वि सैमंतहिं पहियहिं ।  
जहिं खजंति फलाइं सुरहियइं ।  
चउदिसु रुणुरुणंति इंदिर ।

घत्ता—सरु मेळिवि करेण णियडियउ रत्तु पवडुल्लु रसियउ । 15  
विबीफल्लु अहरु व वणसरिहे जहिं कणइल्ले डसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणालं—वरंकेदारदारण सालिसारण कसणधवलपिच्छं ।

अणुझणझणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुंमंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चंदे दाविउ  
जहिं विहार पासाउ पियारउ  
उववासु वि चडएण रइजइ  
जहिं केण वि कीरइ ण सुरागसु

माणसि कत्थइ णेय विहाविउ ।  
णउ णारियणकंठु रइगारउ ।  
णउ रोपं दुक्कालिं किजइ । 5  
होइ गुणीण गुणेहिं सुरागसु ।

२ M पत्तु विद्धंसणु. ३ MBP आदेय. ४ MBP गयउ दूउ. ५ MBP ०दियहहिं. ६ MBP पल्लउ. ७ MBP समत्तहिं. ८ MP add after this: णं कामिणिवयणइं अइसरसइं, पुणु पिजहिं जलाइं सरिसरसहिं. ९ MBP गुण्हिं. १० MBP विहंदिइ. ११ MBP पवडुल्लु. १२ MBP विबीहल्लु.

13. १ MBP वरं; T केयार. २ MBP ०पिच्छा. ३ MBP चरति. ४ MBP णारियणदेहु.

6 a णियवइरत्तु निजस्वाम्यनुरक्तः. 9 b आदेउ आदरवान्. 10 a परिचोइयपत्तउ वाहितवाहनः. 12 b सैमंतहिं समन्तात्. 13 b सुरहियइं देवहितानि सुगन्धानि वा. 14 a विहिंदिइ पर्यटनशीलाः; b इंदिर भ्रमराः. 15 सरु मेळिवि शब्दं कृत्वा. 16 कणइल्ले सुकेन.

13. 1 केदारदारण वप्रमार्गे. 2 अणु स्लोकम्. 3 a-b णिद्धणत्तु श्लिग्धं ज्योत्स्नयुक्तं नक्तं रात्रिः, न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम्. 4 a-b विहार पासाउ विहारशब्दवाच्यः प्रासादः, अथवा वीनां पक्षिणां धारकः प्रासादः, न तु नारीजनो विगतहारः. 5 a उववासु गृहमध्ये वासः आहारस्वागश्च; चडएण चटकेन पक्षिणा. 6 a सुरागसु मद्यगमः मद्यपानम्; b सुरागसु देवागमनम्.

दिट्ठु सिहाछेउ वि रिसिदिक्खहि  
असिलाहवैरूउं जहि लेप्पइ  
वहइ सया णवत्तु वैणु जोवैणु  
जेत्थु कुसादूसणु णीसंगइ  
थंद्धत्तणु णिवडणु थणउल्लइ

णउ माणिकमऊहपरिक्खहि ।  
णउ विसिट्ठमारणसंकप्पइ ।  
णउ गिरुवहउ णिवसंतउ जणु ।  
णासवारि णउ रायवयं गइ । 10  
धरणु णिवीडणु जहि अहरुल्लइ ।

घत्ता—पुक्खरिणिहिं कीलागिरिवरहिं जलखाइयपायारहिं ॥  
जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंडिउ चउहुं मि दारहिं ॥ १३ ॥

14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुंरुयओ रायद्वयओ पट्टणे पइओ ।  
रायालैयदुवारण हिययहारण णायरेहिं दिट्ठो ॥ १ ॥

कणयदंडैयरु भल्लउ भाविउ  
बुद्धिवंतु अच्चन्मुयभूयउ  
तं णिसुणिवि गउ लट्ठिविहत्थउ  
अच्छइ दैरि णरिंदवओहर  
ता कंदणै भणिउं म वारहि  
ता कट्ठियहरेण जसणिम्मलु  
बाहुवलीसु देउ कयमंडलु  
संयुउ मउलियपंजलिपोमै

तहिं पडिहार तेण बोल्लाविउ ।  
भणु अच्छइ दुवारि पडुद्वयउ ।  
कहइ कुमारहु पणमियमत्थउ । 5  
अत्थि णत्थि भणु सामिय अवसर ।  
भायरकिंकरु लहु पइसारहि ।  
पइसारिउ पसण्णमुहमंडलु ।  
दूणं दिट्ठउ णं आहंडलु ।  
को वसि ण कियउ तुह परिणामै । 10

घत्ता—तुह धणुगुणटंकारपण केणै ण माणु णिहित्तउ ॥

पइं वम्मह पंचहिं मग्गणहिं सयलु वि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

५ MBP °हवरुवउं; K °हवरुवउं but corrects it to °रुउं. ६ MBPT धणु. ७ MBP जोवणु.  
८ MT कुसादूसण. ९ P णीसंगइ. १० MBP थट्टत्तणु.

14. MBPT सल्लयओ. २ MB रायालए. ३ MBP °दंडकरु. ४ MBP पणमिय°. ५ MBP वारि. ६ M °टंकारवेण. ७ MBP केणहिमाणु ण चत्तउ; T णिहित्तउ त्यक्तः.

8 a असिलाहवरूउं अशिलाभव रूपम्. 9 a वहइ त्यादि—वहति धरति णवत्तु अभिनवत्वं वनं यौवनं च, न तु जनो नवत्वं चिरंतनव्यवस्थात्यागं धरति. 10 कुसादूसणु कुः पृथ्वी; सा लक्ष्मीस्तयोर्दूषणम्; णीसंगइ मुनी; b णउ राय वयं गइ राज्यपदं प्राप्ते न, णासवारि अश्ववारेऽपि न.

14. 1 °सुल्लयओ सदृशः. 4 a अच्चन्मुयभूयउ आश्चर्यभूतः. 8 a कट्ठियहरेण द्वारपालेन.  
9 a कयमंडलु रचितसमः.



15

आरणाळं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुत्तकामभोया ।

तुह जयंवडहसदेणं जगविमदेणं णउ सुणति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर	अलिमालाजीयासंधियसर ।
पइं पेच्छिवि घोळइ उप्परियणु	वियलइ णारिहि णीवीबंधणु ।
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिढिल्लं	हवइ रयंनु सवइ सोणीयलु । 5
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ	दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।
रंभा णवरंभा इव डोलइ	रइवापं आहल्ल वि हल्लइ ।
देवै तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ	विरहें उव्वंसि उव्वेइज्जइ ।
मेणइ मीणि व थोवइ पाणिइ	पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।
पम थुणंतहु दिण्णउं आसणु	णिवसणु भूसणु किउ संभासणु । 10
हिमइरिजलहिमज्जि महिरायहु	कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।
कुसलु खेउं कुरुवंसणरेसहु	कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु ।
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु	कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।
द्वै वुत्तउ कुसलु णरिंदहु	कुसलु णाह णिहिलहु णिवविदहु ।
पकु जि अकुसलु सुहिउकंठिउ	जं तुहुं देवै दूरि परिसंठिउ । 15

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं गेहु जइ णासइ पिसुणकयंतर ॥

रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहर ॥ १५ ॥

16

आरणाळं—भो भो वणुयणिम्महा सुणसुं वम्महा कुणसु चारु चित्तं ।

सह गुरुपण भाइणा तिजगताइणा रुसिउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

15. १ MB जयवडसदेण. २ B सिढिल्लु. ३ P देवि. ४ MBP उव्वस. ५ MBP मीणइ. ६ MBP दूरि देव

16. १ M ०णिमुहा. २ MBP गरुण.

15. 5 b रयंनु शुक्रम्. 6 b वूढसेउल्लउ उत्पन्नत्वेदादिम्. 9 b पि य प्रभो; रवियरमाणिइ सूर्य-करसंतापिन. 16 पिसुण कयंतर पिसुणकृताचित्तभेदः.

16. 2 ° ताइणा रक्षकेन.

को ससहर को किर करमेलउ  
को तुहुं भरहु कवणु किर बुचइ  
कप्परक्खु किं कुसुमहिं अंचमि  
सूरहु अगाइ दीवउ बोहमि  
तायहु पच्छइ भरहु जि राणउ  
माणै मरट्ट विसट्टु मुण्णिणु  
तरुणिकंठकंठइयपवैट्टहिं  
आयड्डियपवैहकोदंडहिं  
तेहिं ण पुणरवि रणि जुज्झिज्जइ

को समुहु को जलकल्लोलउ ।  
पहउ बुहं वियणु ण रुचइ ।  
रयणायरु करसल्ले सिंचमि । 5  
हैंउं णिहीणु किं पइ संबोहमि ।  
तुहुं जुयराउ जगेकपहाणउ ।  
जीवहु एकमेक अणुणेप्पिणु ।  
अरिचरदंतिदंतपरिहट्टहिं ।  
आलिगियउ जेहिं भुयदंडहिं । 10  
गुरुयणि अविणयण लज्जिज्जइ ।

घत्ता—कुलसामि महाबलु सुयणु गुणि णउ णवंति जे राणउ ॥  
घरि ताहं होइ दालिहडउ अह जमपुरिहि पयाणउं ॥ १६ ॥

## 17

आरणाले—जो वरचरमकुलयरो पढमाणिववरो पंकयच्छियाए ।  
जिणवंसो पयासिओ जेण भूसिओ रायलच्छियाए ॥ १ ॥

जासु चक्कु रिउचक्कु णिसुंभइ  
जासु पुरोहु पुराइउ पेच्छइ  
कागणि दिणमणि ससि वि दुगुंछइ  
छायइ छत्तु हौतु विबरेरउ  
चम्मु चमू धरंतु अइभासइ  
मागहु वरतणु जेण पहासु वि ।  
जेण तिमीसकवाह विहट्टिउ

जासु दंड परदंड णिरंभइ ।  
तुरउ तुरिउ हियपं सहुं गच्छइ ।  
थवइ थवइ तिहुयणु जइ इच्छइ । 5  
असि असु कडुइ सत्तुहुं केरउ ।  
सेणावइ सेणावइ णासइ ।  
णिज्जिउ सुरु वेयड्डिणिवासु वि ।  
सिंधुदेविअहिमाणु पलोट्टिउ ।

३ MB हउं मि हीणु. ४ MP जगेकु पहाणउ. ५ MBPK माणु मरट्टु विसट्टु. ६ P परिवट्टहिं and gloss परिहट्टैः. ७ MBP °पयंड°. ८ MBP गुरुयण°.

17. १ MBP अइहासइ.

8 a मरट्ट दर्पः; विसट्टु वित्तभेदः. 8 b अणुणेप्पिणु अनुकूलं कृत्वा. 1३ पया णउं प्रयाणं गमनम्.  
17. ३ b णिरंभइ प्रतिवप्राति. 4 a पुराइउ पश्चाद्भावि वस्तु. 5 b थवइ रचयति. 6 a छायइ  
आच्छादयति; b अ सु प्राणाः. 7 a अइभासइ अतिशयेन शोभते; b सेणावइ सेनाया आपदः.

दिण्ण केर हिमवंतकुमारहु पुणु आइउ वसहैहरिसुतीरहु । 10  
 तहिं अप्पणउं णाउं सण्हियउ  
 छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।  
 तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ  
 णिवणामंकिउ भमइ ससंकउ ।  
 विसहरउलइ सविसहरवरिसइ  
 जित्तइ मेच्छउलइ सामरिसइ ।  
 णं पालेययसेलकिरीडहु  
 पुणु भउ जणियउं गंगाकुडहु ।

घत्ता—हुक्की मंदाइणि कलसकर लोएँ दीसइ केही ॥ 15  
 थिय ण्हाणकरणमणिवणियडि मज्जनवाल्लिणि जेही ॥ १७ ॥

## 18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहरियहियसल्ला ।

णमिविणमीसणामया गिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयडुहु कुलिसैं ताडिउ पुव्वंक्वाहु जेण उग्घाडिउ ।  
 णट्टमालि साहिउ मालायर पयजुइ पाडिउ णं पायडणर ।  
 असमु वइर किं तेण समाणउं जं माणुसु रिउउ उत्ताणउं । 5  
 पिंछकमंडलुमंडियदत्थहु रोसु जणइ तं मुणिवरसत्थहु ।  
 चक्कवट्ठि गुणमणिरयणायर आउ जाहुं अवलोयहि भायर ।  
 मा पज्जलउ तासु कोवाणलु मा णिडुहै तुहारउ भुयबलु ।  
 हा मा दुरयरपहिं विहिज्जउ पोयणपुरपायार दलिज्जउ ।  
 मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ हँरिखुरखयखोणीधूलीरउ । 10  
 मा धावंतु महंत महारह मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

१ MPB वसहैहरिउ तीरहु, ३ MBP °णामंकउ, ४ MBP मिच्छाउलइ, ५ M records a p राएँ for लोएँ.

18. १ MB विहर्य°, २ M पुव्विक्वाहु, ३ MP णं माणसु; B माणुसु, ४ MBP °कमंडलु°, ५ MBP णिहलउ, ६ B वहिज्जउ, ७ BP हयखुर°.

10 a केर आत्ता, 11 b छा हि छले ण छायाव्याजेन, 13 a स विसहरवरिसइं विसहरा मेवालोषां वर्षणेन सहितानि, 14 a पालेययसेल° हिमपर्वतो हिमवान्, 16 मज्ज ण वालि णि ज्ञानपालिका दासी.

18. २ गिरह निष्पापाः; णिम्मया निर्मदाः. ४ b पायडणर सामान्यमनुष्यसदृशः. 9 a दुरयरहिं हस्तिनां दन्तैः; विहिज्जउ विभज्यताम्. 10 a छइयदिसमेरउ आच्छादितदिह्मयादिम्.

काउ कंदलावलिहि म विरसउ  
देहि कप्पु णिहप्पुं हवेप्पिणु  
तं णिसुणेप्पिणु बाहुबलीसैं

पलयकालु सोणिउं मा कॅरिसउ ।  
पेक्खु भरहु भावें पणवेप्पिणु ।  
पडिजंपिउं भूमंगविहीसैं ।

घत्ता—कंदप्पु अदप्पु ण होमि हउं दूययकरउ णिवारिउ ॥  
संकणें सो महु केरण पहु उज्झिहइ णिवारिउ ॥ १८ ॥

15

19

आरणाळं—जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।  
तं मेह लिहियसासणं कुलविहसणं हरइ को पडुत्तं ॥ १ ॥

केसरिकेसर वरैसइथणयलु  
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ  
हउं सो पर्णेवमि को सो भण्णइ  
किं जम्मणि देवहिं अहिंसिचिउ  
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ  
चकु दंड तं तासु जि सारउ  
करिसूयररहवरडिंभयरहं  
भरहु हरइ किं मज्झु भुर्याभर

सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।  
किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।  
महिखंडेण कवण परमुण्णइ । 5  
किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।  
सिरिसैरिणियइ किं रोमंचिउ ।  
महु पुणु णं कुंमारहु केरउ ।  
णर णिहणमि रणि जे वि महारह ।  
तई खुक्कइ जइ सुंयरइ जिणवर । 10

घत्ता—तहु मेइणि महु पोयणणयर आइजिणिंदें दिण्णउं ॥  
अन्निडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिपवण्णउं ॥ १९ ॥

८ MBP वरिसउ. ९ MBP णियदप्पु हरेप्पिणु.

19. १ MBP दिण्णउं. २ B omits तं मेह लिहियसासणं. ३ M वरहइ, but records a p वरसइ°. ४ MBP पणवउं. ५ MBP °सइरिणियइ सो रोमंचिउ. ६ BP add after this: हरिगइहकिंकर-छेलयणिह. ७ MBPT भरइ. ८ M भुयातर; T भुयाहर बाहुसामर्थ्यम्. ९ MBP ता. १० M सुमरइ. ११ MBP पडिपवण्णउं.

12 a कंदलावलिहिं मनुष्यकपालपंचौ; विरसउ रटठ; b करिसउ कृपठ. 14 b भूमंगविहीसैं भूमन्-भयानकेन.

19. 3 a वरसइथणयलु वराया: सत्या: स्तनतलम्. 4 a छिवइ स्पृशति. 7 b °सइरिणियइ स्वैरिण्या पुंश्चल्या. 9 b महारह महारथाः. 10 a भुयाभर भुजसामर्थ्यम्.

## 20

आरणाळं—ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमार ।

बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ	किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ	किं घुट्ठेण जलहि सोसिंज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु मौणिज्जइ	अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ । 5
वायसेण किं गरुड णिरुज्जइ	णवकमलेण कुलिसु किं विज्जइ ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ	किं वसहेण वग्गु दारिज्जइ ।
किं हंसं ससंकु धवलज्जइ	किं मणुएण कालु कवलज्जइ ।
डेंडहेण किं सप्पु डसिज्जइ	किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।
किं णीसासं लोउ णिहिप्पइ	किं पइं भरहणराहिउ जिप्पइ । 10

घत्ता—हो होउ पहुप्पइ जंपिएण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥

करवालिहिं सूलहिं सव्वलिहिं परइ रँणगणि लग्गइ ॥ २० ॥

## 21

आरणाळं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा पत्थ कहिं मि जाया ।

जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

वुडुउ जंजुउ सिर्वं सदिज्जइ	एण णाईं महु हासउ दिज्जइ ।
जो बलवंतु चोर सो राणउ	णिव्वंलु पुणु किज्जइ णिप्राणउ ।
हिप्पइ मृगंहु मृगेण जि आमिसु	हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु । 5
रक्खकंखइ जूहु रप्पणिणु	एक्कहु केरी आण लप्पणिणु ।

20. १ MBPK किं खज्जोएं. २ P सोखिज्जइ. ३ P माणिज्जइ. ४ MBP डिडुहेण. ५ MBP भरहु. ६ MBP पहुबइ. ७ K रणंणु मग्गइ.

21. १ MBP सिउ. २ M णिव्वल. ३ MBP णिप्पाणउ. ४ MBP मिगहु मरेण. ५ P वुडु.

20. 5 a मा णि जइ उपमीयते. 10 a णि हिप्पइ निक्षिप्यते. 11 वग्गइ विग्रहाय चेष्टते. 12 परइ प्रभाते.

21. 1 सहेउणा सयुक्तिनेन. 3 b एण णाईं अनेन न्यायेन. 5 b वसु धनम्.

ते णिवसंति तिलोईगविट्टउ  
माणमंगि बरं मरणु ण जीविउ  
आवउ भांउ घाउ तहु दंसमि  
सिहिलिंहाहं देविंदु वि ण सहइ  
पकु जि परउव्वाह णरिंदहु

सीहहु केरउ वंहुं ण दिट्टउ ।  
एहउ द्वय सुहु मइ भांविउं ।  
संशाराउ व खणि विट्ठंसमि ।  
महु मणसियहु विसिहं को विसहइ ॥ 10  
जइ पइसरइ सरणु जिणियंदहु ।

घत्ता—संघट्टमि लुट्टमि गयघडहु दलमि सुहड रणमगाइ ॥

पहु आवउ दावउ बाहुबलि महु बाहुबलिहि अगाइ ॥ २१ ॥

## 22

आरणाळ—ता दूउं विणिग्गओ णियपुरं गओ तम्मि णिवणिवासं ।

सो विण्णवइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं ॥ १ ॥

विसमु देव बाहुबलि णरेसर  
कल्लु ण बंधइ बंधइ परियरु  
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयबलु  
माणु ण छंडइ छंडइ भयरसु  
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि  
तुज्झु ण णवइ णवइ मुणितंडउ  
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु  
दोयइ रयणइं णउ करिरयणइं

णेहु ण संघइ संघइ गुणि सरु ।  
संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु ।  
आण ण पालइ पालइ णियछलु । 5  
दयैतु ण चितइ चितइ पोरिसु ।  
पुहइ ण देइ देइ बाणावलि ।  
अंगु ण कडुइ कडुइ खंडउ ।  
पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।  
ढोएसइ धुवुं णरउररयणइं । 10

घत्ता— संताणु कुलकमु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुज्झइ ॥

मज्जायविवज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥ २२ ॥

६ B तिलो<sup>०</sup>. ७ MBP बिंदु. ८ MBP बरि. ९ M भासिउ. १० MBPK राउ; G भाउ but writes adove it राउ in second hand. ११ M सिहसिहहिं देविंदु ण वि ण सहइ. १२ MT विसह. १३ MBPK जिणइंदहु.

22. १ MBP दूउ. ३ MB पणवउ; P पणविओ. ३ MBP दइउ. ४ BPP मगाइ मगाइ. ५ MBP धुउ.

10 b वि सिह बाणाः. 11 a परउ व्वा रु परोद्धरणं रक्षणम्.

22. 1 सायरं सादरम्; सारसायरं सा लक्ष्मीः रसा प्रथिवी, तयोः आकरम्. 8 a मुणितंडउ मुनिसमूहः. 10 b णरउररयणइं नरवज्रःस्थलविदारकानि. 12 दाइउ दायदः सपत्नीजातभ्राता.

23

आरणाळं—ता परिहसिउ दिणमणी णं सिरोमणी गयणकामिणीप ।

अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीप ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ  
णं चउपहरहिं वणु अहिकंतिहि  
णाइं पवालकुंभुं दिसणारिइ  
पउलिवि तलिवि दैलिवि दलवट्टिवि  
दंडरहियजणलोहियलत्ती  
उग्घाडिवि ससहरमुह् णिद्धहि  
णं सिदुरकरंडु झसच्छिइ  
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु  
गोमिणीइ हरिरइरसभैरिउं  
अत्थमियउ जाइवि अवरासइ

दिवसहु दिण्णु दीर्घुं सिहितत्तउ ।  
जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।  
धरिवि मुह्णुं दिक्करिगणियारिइ । 5  
जीवरासि जगभायणि वट्टिवि ।  
कालेंडां विव दिसिर्वहि धिच्छी ।  
संमुहियहि तियसासामुद्धहि ।  
दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।  
णिउ वापण वरुणमुहकमलहु । 10  
पोमरार्यवत्तु व वीसरिउं ।  
रत्तु मिच्छु णं गिलियउ वेसइ ।

वत्ता—पुणु दीसइ संझारायण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥

सहुं गिरिदैरिसरिणंदणवणहिं लक्खारासि णं धित्तउ ॥ २३ ॥

24

आरणाळं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।

णं णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ

सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।

संझारायघुसिणु जं संकिउ

तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।

23. १ MBP दीउ. २ MBP कुंभ. ३ MBP मुक्क. ४ MBP मल्लि. ५ B कालि दाविय. ६ MB दिसवहि; P दिवसहिः. ७ MBP °भरियउ. ८ MBP °पत्तु. ९ MBP वीसरियउ. १० MBP गिरिसरसरे°.

23. 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वतं प्रति समर्पितः; रुइविराइओ दीप्तिविराजितः; णाइ तथा यामिन्या. 3 a मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु. 5 b दिक्करिगणियारिइ विक्रिहस्तिन्या. 7 b कालेंडा विव दिसिर्वहि धिच्छी कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम्. 11 a हरिरइरसं कृष्णकौडारसः; b पोमरायवत्तु पद्मरागभाजनम्. 12 a अवरासइ अपरादिशा,

24. 3 b समियउ पीडितः. 4 b °भयणाहें सृगेन्द्रेण.

संस्मारायविडवि जो<sup>१</sup> फुल्लिउ  
चंदमइदें तमकरि भगउ  
मयणिहेण दीसइ सुहयारउ  
विसइ गवक्खहिं थणयलि घोळइ  
रंघायाहें थियउ अंधारइ  
रइपासेयविंदु तेणुजलु  
दिट्टउ कत्थइ दीहायारउ  
मोरें पंडुर सणु वियप्पिवि

सो तमतंवेरमवइपेछिउ । 5  
किं जाणहुं सो तासु जि लगउ ।  
तप्पवेसु वंइरिहिं मछारइ ।  
वहुहार व सैसितेउ णिहाळइ ।  
दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।  
दिट्ठु भुयंगहि णं मुत्ताहलु । 10  
घरि पइसंतउ किरणुकेरउ ।  
मुद्धें कह व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिणिगंडयलइं ॥

जायइं ससियरपक्खालियइं धवलइं जि णिर धवलइं ॥ २४ ॥

## 25

आरणाळं—मम्मणमणियजंपिरं मयणकंपिरं पणयविणयवंतं ।

रइरसरहंसरंजियं पिययमा पियं रमइ णिसि रमंत ॥ १ ॥

केण वि घणथणि णिहियउ करयलु  
काइ वि को वि सुहउ आलिगिउ  
णीहरंति पडिवहुरोसुब्भवि  
पणयकलहि रमणीचरणंगउ  
सोहइ विडु अइरा रिउ संकिउ  
हारें वद्ध का वि सयणालइ  
बिंवाहररसवयसंसित्तउ  
उल्लाविउ रइसलिलपवाहें

कणयकलसि णावइ रत्तुपलु ।  
मंडूमडुसुहउं वणु मगिउ ।  
केण वि का वि धरिय करपल्लवि । 5  
को वि सकुंकुमेण पापं हउ ।  
णं मयरद्धयसुहइ अंकिउ ।  
ताडिय णाहें अंपयमालइ ।  
काहं वि मयणहुयासु पलित्तउ ।  
काइ वि किलिक्किविउ उच्छाहें । 10

24. १ MBP जं. २ P वेरिहि. ३ M सियतेउ. ४ B omits this foot. ५ M रंघाया.  
६ M पियविरहिणं.

25. १ B °रहसजंपियं. २ MBPK सुहहुः ३ MBP मंडमंड. ४ MBP कासु.

5 b °तंवेरम° हस्ती. 7 a मय णिहेण मृगमिषेण. 9 a रंघाया र छिद्राकारः; b पयणइ प्रजनयति.  
11 a दीहायारउ सर्पाकारः; b °उकेरउ समूहः. 13 °पक्खदलइं पक्षयुगलानि.

25. 6 a °चरणंगउ पादयोः पतितः. 7 a अइरा अविरात.



का वि रयावैसाणसमरीणी  
को वि का वि सवहहिं रंजइ गुणि  
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ  
जणणि महेली मणि अवहारमि

चंदणकदमवाविहि लीणी ।  
अकसमाण मज्झु परपणइणि ।  
तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।  
गुरुपय छिवमि ण पइ अवहेरमि ।

घत्ता—इय कवडकूडमउजंपियहिं वाणेण वँ वसिहयउ ॥

15

णारीयणु रमिउ विडाहिवाहिं वेढिवि णिरुवमरुवउ ॥ २५ ॥

26

आरणालं—दीहा वि रयमिहुणहं चक्रवियणहं पहियवंदयाणं ।

मडहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रयविडिंदयाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूरु पुव्वासइ  
किंसुयकुसुमपुंजु णं सोहिउ  
चार सूरु वंसहु णं कंदउ  
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय  
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ  
तंतुं करोहउ रैहिरु णिसाडें  
कुंकुमलोलु वमणिउं घरिणिइ  
मिलियउ सोहइ विहुममहियलि  
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि  
मिलियउ सोहइ जण अहरल्लइ  
राउ मुयंतु जि गुणसंजुत्तउ

रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।  
णं जगभवणि पईतुं पवोहिउ ।  
लोहिउ ससि रोसेण दिण्णिदं । 5  
कमलिणि वेळि भणिवि संताविय ।  
णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।  
चित्तिउ एंतु सळिदकवाडें ।  
रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।  
मिलियउ सोहइ कंकेलीदलि । 10  
मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।  
महिहरत्तीर धाउ जल्लेखइ ।  
अरहंतु व रवि उण्णइ पत्तउ ।

५ P °रयावसाणि, ६ MBP वि.

26. १ MBP रइ°. २ MBP पईवउ बोहिउ. ३ MBP सूर°. ४ MBP दिण्णदं. ५ MB तंव.  
६ M रहिर. ७ MBP कंकेलिहि दलि.

11 a °समरीणी °श्रमेण क्लान्ता. 12 b अकसमाण सात्तुल्ला. 14 b गुरुपय छिवमि गुरुपादौ  
स्युशामि; ण पइं अवहेरमि त्वां न वञ्चयामि. 16 वेढिवि आलिहय्य.

26. 1 दीहा वि दीर्घाणि; चक्रवियणहं चक्रवाकानां एव विगणानां पक्षिगणानाम्. 2 म डहा लब्धी;  
रयविडिं दियाणं रतानां विदेन्द्राणाम्. 8 a णिसाडें निशाचरेण.

घत्ता— हयतिमिरे भरहपयासपण रविणा किं ण वि द्वाविउ ॥  
सिरिरामासेवियसच्छसरपुष्कयंतु वियसाविउ ॥ २६ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरहय  
महाभवभरहाणुमणिए महाकवे बाहुबलिदूयसंपेसणं नाम  
सोलहमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ १६ ॥  
॥ संधि ॥ १६ ॥

c MBP दावियउ. ९ MB वियसावियउ.

15 सि शी ल्या दि—जीसेवितानां स्वच्छसरोवरपद्मानां मध्ये विकसितम्.

## XVII

दूवागमि रविउग्गामि चलकरवालललावियजीहहो ॥

जाइवि णंदाणंदणहो भिड्डिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ धुवकं ॥

1

ता समरचित्तु विसरिस्तु विरुद्धु  
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु  
तिवलीतरंगभंगुरियमालु  
अरुणच्छिल्लोहरंजियदियंतु  
दूययवयणहिं वड्डियकसाउ  
सुंयरेण्णिणु तायहु तणउं चारु  
तो धरिवि णिरुंभंवि करमि तेम  
महु कुडहु रणि देव वि अदेव  
इय गजिवि असितासियसुरिंदु  
तां मउडवद्ध मंडलिय चैलय  
महिवड्डियकणयकंचीकलाव  
एकेक पहाण गिरिंदीधीर

विष्फेरियदसणडसियाहरुद्धु ।  
उंद्धुयमीसियहयभउंहकोणु ।  
णं सीहु कुडिलदाढाकरालु । 5  
णं पलयजलणु धगधगधगंतु ।  
जंपइ सरोसु रायाहिराउ ।  
जइ कहँ व ण मारमि रणि कुमारु ।  
अच्छइ कंरि जिह णियलत्थु जेम ।  
सो ण करइ किं महु तणिय सेव । 10  
जा उट्टिउ भरहु महारिंदु ।  
केऊरसकंठाहरणघुलिय ।  
अइभीसण थिय णं कालभाव ।  
सहुं राएं लहु सणद्ध वीर ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वलिभाङ्गकम्पिततनु भरतयथाः सकलपाण्डुरितकेशम् ।

अलन्तदृढगतमपि भुवनं बभ्रमति तथिवम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवरं for कम्पिततनु; MP read विभ्रमति for बभ्रमति. GK do not give it.

1. १ MBP दूवागमि रविउग्गमणे, २ MBP विष्फुरियडसणु डसिया°, ३ M records a p for this foot: धणुणुणे रोवि दिडवज्जवाणु, ४ MBP दूयहि वयणं, ५ MBP सुमरेण्णिणु, ६ P कहँ वि, ७ MB णिरुंभंवि; B णिरुंजिभि, ८ P करिवरु णियलत्थु, ९ MBP तो, १० MBP वलिय, ११ MBP णरिंद, १२ B धीर.

1. 3 a विसरिस्तु अद्वितीयम्; b अहर्द्धु अषरोपरितनभागः, 6 a °छो ह° विक्षेपः, 8 a चारु आचारः, 12 a चलय उद्यिताः, 13 b काल भाव यमस्वरूपाः.

घत्ता—संण<sup>३</sup>ज्जंतहु तहु भडयणहु का वि णारि पभणइ जइ जाणहि ॥ 15  
किं पि महारउ उवय<sup>३</sup>रिउ तो पिययम सुवरमणि म माणहि ॥ १ ॥

## 2

वहु का वि भणइ हत्थागएण	किं कीरइ मणिकंकणसएण ।	
अरिकरिदंतुम्भउ एकु जइ वि	वलउल्लउ सोहइ हत्थि तइ वि ।	
तं धवलउ तुहु पोरिसजसेण	आणेज्जसु पिय महु रइवसेण ।	
वहु का वि भणइ एहु वि सुताह	किं तुज्ज पसाए <sup>३</sup> णत्थि हाह ।	
तुहु करणित्तिसुक्कत्तिएहिं	परकुंभिकुंभचुयमोत्तिएहिं ।	5
हउं कित्तिलया इव कुसुमियंगि	छंजमि दाविज्जसु एह भंगि ।	
वहु का वि भणइ महिमाहरेण	मइं विज्जहि किं चीरें करेण ।	
रिउचामेरु पिय उवयारकारि	आणेज्जसु रयसमसेयहारि ।	
वहु का वि भणइ अहिमाणगाहि	लग्गिज्जसु पिय पडिवक्खणाहि ।	
ऊणेण हएण वि णत्थि लाहु	उडुगणहु ण रूसइ तेण राहु ।	10
जिम मिहरहु जिम हिमयरहु मिडइ	बलिणा हएण जसु चंदि चडइ ।	
वहु का वि भणइ णीसंकयाइं	तावियपिसुणइं पावियजयाइं ।	

घत्ता—कइणा कव्वे मणोहरए जेण भडेण महाभडगौदलि ॥  
दिण्णइं पयइं सुउल्लुयइं तासु कित्ति भमइं महिमंडलि ॥ २ ॥

१३ MBP संणज्जंतहु भडयणहु. १४ K उवरिउ but gloss उपकृतम्.

2. १ MBP अरिकुंभि<sup>३</sup>. २ P पहिरेसमि सामिय एत्थ भंगि, but records a p छिजमि दावि-  
ज्जसु. ३ MBP दाविज्जसि. B चीरें करेण. ५ MBP रिउचामर. ६ MBP किं जणेण हएण. ७ MBP  
मिहिरहु. ८ MBP इय गाहएण, but M records a p in the margin: बलिणा हएण. ९ M  
कव्वेण. १० MBP हिडइ.

16 उवय रिउ उपकृतम्.

2. 5 a करणि त्तिसुक्कत्तिएहिं करानिखिंशोत्कर्तितैः. 6 b छजमि शोभे. 7 a महिमाहरेण  
माहात्म्यस्फोटकेन; b विज्जहि वीजय. 8 a उवयारकारि माहात्म्यजनकम्. 9 b पडि वक्खणाहि प्रतिपक्ष-  
नाथे प्रधाने. 10 a ऊणेण पदातिपुरुषेण.



संदणबोहित्यसमूहचवळु  
 असमोत्तियमंडियतिजगतीर  
 धयवडजलयरपरिधुलणरंगु  
 तुज्जुवरि देव असिझसरउहु  
 सुविचित्तर्पत्तपत्तियसरेण  
 हउं पकु वहरि किं पउर भणहि  
 किं डज्जइ हुयवहु तरवरेहिं  
 किं कुसुमवाण जिणमणु हरति  
 छाइज्जइ किं भयणेहिं भाणु

पंचगमंतपायालविजलु ।  
 आणंदियणियकुलं कुइहीर । 5  
 दूरयरणिहित्तमलोहसंगु ।  
 उत्थंछिउ णरवइ बलसमुदु ।  
 ता वुच्चइ बाहुवलीसरेण ।  
 किं कालहु अग्गइ जीव गंणहि ।  
 किं खज्जइ खगवइ विसहरेहिं । 10  
 गोमाउ मइंदहु किं करंति ।  
 पउर वि रिउ महु ण मलंति माणु ।

वत्ता—एकु वि पउ ण समोसरमि णायायारहिं पंथु णिरंभमि ॥

आवंतहु णिवसार्थरहो सरवरपंतिहिं वरंणु णिवंभमि ॥ ४ ॥

## 5

गज्जंतु एम पलयकतेउ  
 जोयंतहु णियमुयथामसंजुं  
 हियवइ संणाहु ण माइ केम  
 केण वि बद्धी जयकामएण  
 केण वि इच्छिय संगामदिक्ख  
 केण वि गुणु वल्लइउ कहिं वि चावि  
 केण वि णिवज्जु तोणीरज्जुयलु  
 केण वि कड्डिउ करवालु चंड

संणज्जइ सिरिबाहुबलिदेउ ।  
 कासु वि वड्डिउ रोमंजु उंजुं ।  
 बड्डलोहवंतु काउरिखु जेम ।  
 असिधेणुय रसणादामएण ।  
 सरमोक्खहु केरी परमसिक्ख । 5  
 चैप्पिवि णं खलयणि कुडिलभावि ।  
 णं गरुहं दाविउ पक्खजमलु ।  
 णं मेहं दूरिसिउ विज्जुदंड ।

४ P पायालि, ५ MB °कुल्लुद्धहीर; P °कुल्लुद्धहीर; K °कुल्लुद्धहीर but corrects it to °कुल्लुद्धहीर  
 T बहहीर चयारसुत्थानम्, ६ MBP °बुलियरंगु, ७ K उत्थल्लउ, ८ MBP °वत्तापत्तिय°, ९ MBP  
 जणहि, १० BP णिरंभिवि, ११ MBP °सायरवल्लो, १२ MB वरगु, १३ B णिवंभिमि; K णिरंभमि.  
 5. १ G संजु; K यावसंजु, २ MP उज्जु, ३ MBP असिधेणुय, ४ MBP लाविउ, ५ MBP  
 चप्पेविणु खलयणकुडिलभावि, ६ Mपक्खजुयलु; BP पंखजुयलु, ७ P दाविउ.

4. 4 a °बोहित्य° नौ; 5 कुइहीर चन्द्र; 6 b °मलो हसंगु अन्यायमलसंग; 11 b गो माउ  
 गुणाल; 12 a भयणेहिं नक्षत्रसमूह; 13 णा या यारहिं सर्पाकरि; 14 वरणं तदं सैन्यसमुद्रस.

5. 1 a पलयकतेउ प्रलयाकतेजा; 2 a थामसंजु सामर्थ्यसंचय; 4. b असिधेणुय कुरिका.

भड को वि भणइ पर हणमि अज्ज  
पहु तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु  
अवरंडहि लहु दे देहि हत्थु  
आयड्ठिउ पहुहि पसाउ जेहि

णिकंठउ सामिहि देमि रज्जु ।  
भणु सुंदरि कि कीरइ वियारु । 10  
को जाणइ पुणु संजोउ केत्थु ।  
रण जुज्झमि अज्ज भुण्हि तेहि ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहड मुइ मुइ कति ण एवहि मंज्जमि ॥  
णिग्गवि रायहु तणउ रिणु अज्ज सीसदाणेण विसुज्झमि ॥ ५ ॥

6

भड को वि भणइ कयवणमुहेहि  
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहि  
जइ अंतइ गिद्धं लइवि जंति  
भड को वि भणइ हलि हत्थु देमि  
कंडवि णरकण अवर वि करेणु  
भड को वि भणइ हुइ खंडखंडि  
सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु  
अह धरणिछुलिउ लइ रिउ विहत्तु  
जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिणु  
वच्छयलु महारउ तं जि लेहि  
हलि सामलंगि उरुल्लवयणु

जइ भिज्जइ उर करिमुहुरहेहि ।  
जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहि ।  
तो मरणमणोरह महु सरंति ।  
गयदंतमुसैलु कडुवि लेमि ।  
उड्ढावमि अयसतुसोहरेणु । 5  
महु करु पेक्खेज्जसु पेक्खित्तोडि ।  
अविमुक्खेरे दावियकिवाणु ।  
तुह मंगलंसुकज्जलविलिउ ।  
पैरिसुक्खदीहणारायमिणु ।  
सघुसिणु करयलु अहिणाणु देहि ।  
जइ णिवडिउं पेच्छहि तंबणयणु । 10

घत्ता—तो<sup>१</sup> मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्तुलारोहेण विवेयहि ॥  
सहुं पत्थिवपैरिवाल्लिण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

८ K इणिवि. ९ MBP करमि. १० MBP मुज्झमि and gloss in MP मोहं करोमि; K मज्झमि but मुज्झमि in second hand.

6. १ MBP गिद्ध. २ B मय. ३ K <sup>०</sup>मुसल. ४ M पेक्खिज्जहि. ५ MBP पेक्खित्तुडि. ६ MBP परमुक्क<sup>०</sup>; M records a p सरमुक्क<sup>०</sup>. ७ M अहिणाहु. ८ MBP ओकुल्ल<sup>०</sup>. ९ M जं णियड्ड; BP जं णियडिउं. १० MBP सो. ११ MBP परिपालिण.

13 मज्झमि मनोहरं करोमि.

6. 5 a कंडवि चूर्णाकल्य; b अयसं अपयशः.

7

छुड गज्जिय गुरु संगममेरि  
 छुड गिगउ भुयबलि साहिमाणि  
 छुड काले णीणिय दीह जीह  
 थिय लोयवाल जीवियणिरीह  
 छुड भडभारे दलैहलिय धरणि  
 छुड चंदबलाइ पलोइयाइ  
 छुड मच्छरचरियइ वड्डियाइ  
 छुड चक्रइ हत्थुग्गामियाइ  
 छुड कौतइ धरियइ संमुहाइ  
 छुड मुट्ठिणिवेसिय लउडिदंडं  
 छुड गय कायर थरहरियप्राणं  
 छुड मेढेचरणचोइयमयंग

णं भुक्खिय तिहुयणु गिलिवि मारि ।  
 छुड पत्तहि पत्तउ चक्रपाणि ।  
 पसरिय माणुसमंसासणीह ।  
 डोल्लिय गिरि रंजिय गेहणि सीह ।  
 छुड पहरणफुरणं हसिउ तरणि । 5  
 छुड उहयबलाइ पधावियाइ ।  
 छुड कोसहु खग्गइ कड्डियाइ ।  
 छुड सेल्लइ भिच्चहिं भामियाइ ।  
 धूमंघइ जायइ दिम्मुहाइ ।  
 छुड पुंखुज्जल गुणि णिहियं कंडं । 10  
 छुड दोइयं संदण णं विमाण ।  
 छुड आसवारवाहियतुरंग ।

वत्ता—छुड छुड कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति पोरणरु ॥

अंतरि ताम पइट्ट तहिं मंति चवंति समुत्थिवि णियकैरु ॥ ७ ॥

8

विहिं वलहं मज्झि जो सुयइ वाण  
 तं णिसुणिवि सेण्णइं सारियाइ  
 तं णिसुणिवि रहसाऊरियाइ  
 तं णिसुणिवि धारापहसियाइ  
 तं णिसुणिवि णिदंगैइ घणाइ

तहु होसइ रिसइहु तणिय आण ।  
 चडियइं चावइं उत्तारियाइं ।  
 धजंतइं तुरइं वारियाइं ।  
 करेवालइं कोसि णिवेसियाइं ।  
 णिम्मुकरं कचयणिबंधणाइं । 6

7. १ MB °मंसाण सीह. २ MBP गहणसीह. ३ MBP दलहलिय. ४ MBP चंद°. ५ MBP उमय°. ६ MBP °चडियइं. ७ MB धुवंघइं. ८ M °णिवेसिउ. ९ M °दंड. १० MBP पुंखुज्जल. ११ M णिहिउ. १२ M कंड. १३ MBP °पाण. १४ P दोयइ. १५ MBP मेढु°. १६ M वरकर; BP वरकर.

8. १ MBP मुवइ. २ MBP खग्गइं पडियारि. ३ MBP णदंगइ; T णिदंगइं दीप्राणि णदंगइं वा बद्धानि.

7. 1 a छुडु शीघ्रम्. 3 b °मंसा सणीह मांसाशनेच्छा. 4 b गहणि वने.

8. 5 a णिदंगइं भास्त्राणि.



तं गिसुणिवि मय मायंग रुद्ध  
तं गिसुणिवि मच्छरभावमारिय  
रह खंचिय कड्डिय पग्गहोह

पडिगयवरंगंघालुद्ध कुद्ध ।  
हरि फुरहुंरंत धावंत धरिय ।  
वारिय विंधंत अणिय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणवरणसवहसंणिहियइं ॥

सेण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्डि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥ 10

## 9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं  
उग्गमियरोसपसमंतएहिं  
तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह  
तुम्हइं बिण्णि वि अखलियपयाव  
तुम्हइं बिण्णि वि जगधरणथाम  
तुम्हइं बिण्णि वि सुरहं मि पयंड  
तुम्हइं बिण्णि वि णिवणायकुसल  
तुम्हइं बिण्णि वि जण जणहु चक्खु  
खरपहरणधारादारिण  
किर काइं वराए दंडिण  
दोहं मि केरा मज्झत्य होवि

वाहुवलि भरहु महुरक्खरेहिं ।  
बिण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।  
तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह ।  
तुम्हइं बिण्णि वि गंभीरपाव ।  
तुम्हइं बिण्णि वि रामाहिराम । 5  
महिमैहिलहि केरा वाहुदंड ।  
णियतायपायपंकरुहमसल ।  
इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।  
किं किकरणियरें मारिण ।  
सीमंतिणिसत्थं रंडिण । 10  
आउहु मेल्लिवि खमभाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोक्यंतु धराहिवइ पत्तिउ किज्जउ सुत्तु सुजुत्तउ ॥

तुम्हइं दोहं मि होउ णु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावराहिय; P मच्छरभारमारिय. ५ MB फुरहुंरंत. ६ MB अणंत. ७ M चरणसवहसंणिहि-  
यइं; B °चरणसवहसंणिहियइं; T सवहसंणिहियइं. ८ P कोड्डि.

9. १ MBP उगमिउ रोहु. २ MBP read: तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइं बिण्णि वि जण  
चरमदेह. ३ MB महियल केरा. ४ MBP आउह. ५ MBP किज्जइ सुत्तु. ६ MBP धम्मु णाएण.

8 a पग्ग होह रदिमसमूहः. 9 °सवहसं णि हियइं शपथवृत्तानि. 10 कुड्डि कुड्डे भित्तौ.

9. 2 b महंत एहिं मन्त्रिभिः. 7 a णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ. 10 b सीमंति णिसत्थं  
ब्रह्मसूत्रेन. 12 सुत्तु सुमाधितम्. 13 धम्मणाएण धर्मेन्यायेन.

## 10

पहिलउ अवरोप्पर दिट्ठि घरह  
वीयउ हंसावल्लिमाणिएण  
तइयउ पुणु णहि जोंयंतु देव  
जुज्झह विण्णि वि णिवमल्ल ताम  
अवरोप्पर जिणिवि परक्कमेण  
तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं  
किं दूहवियहि णवजोव्वणेण  
किं सलिलें चंडालंकिएण  
किं रापं गुरुपडिक्कलएण

मा पत्तलपत्तणचलणु करह ।  
अवरोप्पर सिंचहु पाणिएण ।  
करं करि धिवंतं सुरदंति जेंव ।  
एक्केण तुल्लिजइ पकु जाम ।  
गेण्हहु कुलहरसिरि विकमेण । 5  
ता चित्तिउ दोहि मि सुंदरेहिं ।  
किं फलिएण वि कडुपं वणेण ।  
किं दासैं पेसणसंकिएण ।  
सुविणीयसुवणसिरसूलएण ।

घत्ता—जे ण करंति सुहासियइ मंतिहिं भासियाइं णयवयणइं ॥ 10  
ताहं णरिंदहं रिद्धि कैंओ कहिं सीहासणल्लत्तइं रयणइं ॥ १० ॥

## 11

इय चित्तिवि इच्छिउ मंतिमंतु  
अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं  
सकसायभाव आसणु दुक्कु  
उच्चाणणु पहु भुयवल्लि तौहं  
हेट्टिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ  
णं होति कुगइ पंचमंगईइ

बुड्डाणुगामि णीसेसु संतु ।  
आयंवकसणसियल्लोयणेहिं ।  
दोहिं मि अवलोइउ एक्कमेक्कु ।  
पेच्छइं रविर्विबु व किरणचंडु ।  
णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ । 5  
विसयासा ईव मुणिवरमैईइ ।

10. १ MP पत्तलयत्तणु चवल्लु; B पत्तलयत्तणु चलणु; T पत्तलयत्तणु. २ B करि कर. ३ MBP विवंडु. ४ MBP अणुहुंजहु मेइणि. ५ T चंडालंकिएण. ६ MBP कहिं कहिं. ७ MB सिंहासण<sup>०</sup>; P सिंहासण<sup>०</sup>.

11. १ MBP आसण दुक्क. २ MBP एकमेक्क. ३ MBP तुंडु. ४ MBP पेक्किवि. ५ P पंचम-  
गयाइ. ६ MBP विव. ७ P <sup>०</sup>मयाइ.

10. 1 b पत्तलपत्तण चलणु पत्तलपद्मचालनम्. 8 a चंडालंकि एण चाण्डालस्वीकृतेन. 9 a  
सु र पडि कूल एण मन्त्रिपुरोहितप्रतिकूलेन. 10 सु हा सि य इं सुभाषितानि; ण य व य ण इं नीतिवचनानि.

11. 1 b बुड्डाणुगामि ब्रह्माश्रितम्; णी सेसु संतु सर्वमुत्तमम्. 5 b अविहल्लियाइ अविचलितया  
स्थिरया.

णं तावसि भग्नी विडरईइ  
णं कमलपंति ससियरतईइ

णं सेलभित्ति गंगाणईइ ।  
कुमुओलि व मउलिय रविइईइ ।

घत्ता—ठिउ हेड्डामुहुं चकवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं ॥

घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संधुउ देवहिं ॥ ११ ॥ 10

## 12

मओमत्तमायंगलीलावहारा  
फणिंदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा  
सरंतहिं आलोइयं सच्छणीरं  
महापोमसुत्ताहिमाणिकदित्तं  
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं  
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं  
तरंतामरं रोयैरारुद्धकीलं  
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं  
हुणंतालिकोलाहलं सौरसिद्धं  
सुयाणेयपक्खिंदज्जिखदसइं

रमावासवच्छत्थलोतंहारा ।  
पुणो दो वि राया सरंते पड्डा ।  
विसालं गहीरं तुसारोहतारं ।  
मरुद्धूर्यतिगिच्छिधूलीविलित्तं ।  
मरालीपहालगलीलामरालं । 5  
भिसाहारपूरंतचंचूऊरं ।  
जलुभंतमीणं लयापत्तणीलं ।  
समुत्तुंगफेणावलीछणत्तूहं ।  
इणुमुक्कपायावलीकुल्लुल्लं ।  
पमंजंतहत्थिदसैंडोविमहं । 10

घत्ता—तहिं विणिण वि जण ओयरिय पड्डणा धित्त जलंजलि भायहु ॥

विर्यलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमहरिरायहु ॥ १२ ॥

८ P °रईइ. ९ M णं कुमुउलि वरवियररईइ; B णं कुमुउणिणव णवरवि°; P णं कुमुउलि ववरवि°.

12. १ MBP वच्छत्थलोतंहारा. २ M °तिगिच्छि°; B तिगिच्छि°; P तिगिच्छि°. ३ MB गेयपारद्ध°  
P खेयपारद्ध°; T रोयैरं चकवाल. ४ MBP °सिंह. ५ M सारिसिद्ध. ६ MP °पेक्खंत°. ७ MBP णि-  
मज्जंत°. ८ MBP सुंढा°. ९ MBP वियरइ.

7 a विडरईइ विटरत्त्या. 8 a °तईइ°संतत्त्या; b कुमुओलि कुमुदपंक्तिः. 9 पडिभड° बाहुबलिः.

12. 1 b रमावास° लक्ष्मीनिवासम्. 2 b सरंते सरोवरमध्ये. 3 b °तारं शुभ्रम्. 7 a रोयैर° रवि-  
रम्. 8 a ससीछाहिसारंग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य; °डेवंत° धावन; b °तूहं तटम्. 9 b इणु-  
मुक्कपायावली° आदित्येन मुक्तानां किरणानां समूहैः.

## 13

वच्छत्यलु पाविनि पुंणु वि वलिय  
कडियालि धावन्ती सुंदरासु  
णं मरगयमहिहरि चंदकंति  
डेवंती दीसइ सलिलधार  
णं सुरसरि चंचलतरंगफार  
आरुसिनि पुणु भरहहु विमुक्क  
पच्छाइउ चउदिसु ताइ राउ  
कणयइरि व सरयम्भावलीइ  
सलिलें णवसोत्तइं पूरियाइं  
उगोसिउ विजउ महासरेहिं

हेट्टामुह खलमेत्ति व बुलिय ।  
दीसइ तारौलि व मंदरासु ।  
णं णील्लमहीरुहि हंसपंति ।  
णं कंठभट्ट कंडिय सुतार ।  
गयणुल्लेत झससुंसुमार । 5  
णंदातणपं गुरुजलझलक्क ।  
धवलइ जिणकित्तिइ णं तिलोउ ।  
णं उययसिहरि ससहररुईइ ।  
वहुपरियणसयणइं जूरियाइं ।  
वाहुबलिणराहिवकिंकरेहिं । 10

घत्ता—सीसु धुणंतु मुंयंतु छलु सरवरवारिपवाहें सित्तउ ॥  
पडिओसारियउ पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदें जित्तउ ॥ १३ ॥

## 14

जलभरियसुणासावंसपण  
वैजियमंडलियकुरंगण  
रोसारुणच्छिरंजियदित्तेण  
सीहेण व उदुयकेसरेण  
पीलिज्जइ तेरउ उच्छुवाउ  
फुल्लसर वि कयधम्मेल्लसोह  
अवियाणियखत्तिथधम्मसार  
किं किंरं वयणेण पलोइएण

वड्डियपडिभडवलसंसपण ।  
परिहच्छें सरतीरंगण ।  
सण्णेण व अइआसीवित्तेण ।  
णिब्भच्छिउ भाइ णरेसरेण ।  
रसु पिज्जइ खज्जइ गुलु सुसाउ । 5  
पइं जेहा कहिं लब्भंति जोह ।  
महिलाण गोहहो मोट्टियार ।  
जीवंतहं सलिलें ढोइएण ।

13. १ MB पुणु वलिया, २ MBP बुलिया, ३ MBP तारावलि मंदरासु, ४ MP महिरुहि; B महीहरि, ५ MBP धवल, ६ MBPK मुण्ड, ७ MBP ओसरियउ.

14. १ MBPK तज्जिय, २ MBP धम्मिल्ल, ३ MB किंकरवयणेण.

13. २ छ तारा लि ताराश्रेणी, ३ छ मही रु हि वृक्षे.

14. १ छ वड्डियेत्या दि—वर्धितः प्रतिमटाद्वाहुबलिनः सकाशाद्वले संशयो जयविषये यस्य, २ छ परि-  
हृच्छें वेगेन.

ए एहि देहि भुयंजुज्झ तेम  
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि  
जाणंतु वि देवि<sup>१</sup> णिरत्थु भणहि  
महिलाण गोहूँ हउं सयणमग्गि

अल्लु जि एयंतरु होइ जेम ।  
धणुवाण महारा काइं हसहि । 10  
पियविरहुव्वेइउ किं ण कँणहि ।  
गोहाण गोहु कड्डियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मणियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥

णियधणकर्णमयकयविवस पत्थिव सयल हँति विवरेरा ॥ १५ ॥

15

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग  
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल  
सुंक्कचणकुंडलमंडियगंड  
चिराउस चंदचडावियणाम  
समत्थ सिरीण रईण णिकेय  
असंक खगंक झसंक विपंक  
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति  
पंडंत जि गाहणिवंधणु दँति  
विईद वि गाह बलेण सुयंति  
अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं  
करंति वि धीर अविहवियंग  
पयाणभरस्स धरिस्ति ण तिण्ण  
फलोणयपायवपिटु व लुण्ण  
ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिद  
तओ ह्यमाणिणिमाणमएण

णरिंदसिरोमणि धट्टपयग्ग ।  
पहाण महाबल विण्णि वि मल्ल ।  
पसारियबाह सरोस पयंड ।  
सुविक्रमवंत णराहिवकाम ।  
महारह भौरह भक्खरतेय । 5  
जसंसुपसाहियपुण्णससंक ।  
धरेप्पिणु देह वंडेवि पडंति ।  
कडीयलु कंडु णिसंमिचि उंति ।  
मुपप्पिणु उड्डिवि दँत्ति वलंति ।  
पर्वप्पणकड्डणवेढणयाइं । 10  
णिरंकुस णाइं मयंध मयंग ।  
विमुक्क रवेण दिसाकरि ठुण्ण ।  
णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।  
दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।  
णरामरसंगरल्लजएण । 15

४ P भुयजुयलु. ५ BK देव. ६ MBP कुणइ. ७ M मोहु, but records a p गोहु. ८ P कणयमय°. 15. १ K °बुट्ट° and gloss घट्ट. २ P सकंचण°. ३ MBP बारहभक्खर°. ४ MBP घडेण. ५ MBP पडंति जि गाढ°. ६ MBP गिरुद्धु वि बाहु; K गिरुद्ध वि गाह. ७ MBP जंति. ८ MBP पचंपण°. ९ PK जुण्ण.

10 a जइ णि जिनपुत्र; भसहि असंबद्धं प्रलपसि.

15. 2 a कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम्. 4b णराहिवकाम देवौ. 5 b भक्खर° आदित्यः. 6 b जसं-  
सु° यशःकिरणाः. 12 b जुण्ण संकुपिताः. 13 b वणेयर मृगाः.

सुरिंदकरीकरथोरभुण

अणिंजिणिंदसुणंदसुपण ।

पहुस्स करेण करा परतावि

परेण थिरेण धरेण कमावि ।

घत्ता—कुंभीरें राउ समुद्धरिउ णायणियंविणिसेवियकंदरु ॥

कयइच्छाकोउहलेण किं णं पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

## 16

उद्धरिउ सुपुत्ते णं सुवंसु

कमलायरेण णं रायहंसु ।

णं सुहपरिणामें जीवं भवु

णं सुयणसमूहें सुकइकवु ।

णं सुणिवरणाहें वयविसेसु

णं णरवरिंदणापण देसु ।

णं गमैणवियारें वालभाणु

णं वाएं चंपयकुसुमेरेणु ।

णं कामुयसत्थें कामचारु

णं सो जि तेण संसारसारु । 5

खयरामरमाणविमद्दणेण

पढमेण पढमज्जिणणंदणेण ।

अइलुद्धें बहुमैणियधणेण

कुद्धें अवगणियसज्जेण ।

परिपालियसयलवसुंधरेण

ता चित्तिउ चक्कु सुकंधरेण ।

जमदाढावलयहु अणुहरंतु

उद्धाइउ चंचलु विष्फुरंतु ।

रविधिंवेण व जियविस्संमेवेउ

तें परियंविउ बाहुबलिदेउ । 10

थिउ दाहिणमुयदंडहु समीउ

को एहउ किर णियकुलपईउ ।

को सुरयधुत्तिचित्ताणुवट्ठि

को एम जिणइ जगि चक्कवट्ठि ।

घत्ता—विंभिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीसु जगेण पसंसिउ ॥

गयणभाउ सुरमुकियहिं पुष्पदंतपतिहिं णं पहासिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए

महाभवभरहाणुमणिण महाकव्वे भरहबाहुबलिजुज्झवणणं णाम

सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१० P थरेवि. ११ MBP कुमरें. १२ M णाहं, but T किं गिरिमंदरो पुरंदरेण नोद्धतः.

16. १ MBP जीउ. २ MBP गयण°. ३ BP बहुमाणिय°. ४ K °विसमवेइ. ५ K बाहुबलि मेइ. ६ MBP पुष्पयंत°.

16. 4 a ग म ण वि थारें गमनपरिणत्या आकाशेण वा; b वाएं वातेन. 5 b सोजि भरतः; तेण बाहुबलिना. 14 पुष्प दंत पंति हिं पुष्पाणीव दन्तपंचायः ताभिः.

# XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥  
करडिंभु व बंभहु तणउं सुउ उच्चाइवि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

णं कमलसरु हिमोहयकायउ	दवदँडुउ रुक्खु व विच्छायउ ।	
जं ओडुँल्लियसुहु पडु दिट्टउ	तं वलि भणइ हउं जि णिकिट्टउ ।	
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ	जेण मँहंत भाइ ओहामिउ ।	5
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ	जँ जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।	
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती	रज्जहु पडउ वल्लु समसुत्ती ।	
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ	बंधवहुं मि विसु संचारिज्जइ ।	
जिह अलि गंधें गउ संघारहु	तिह रजेण जीउ तंवारहु ।	
भडसामंतमंतिकयभायउ	चित्तिज्जंतउ सव्वु परायउ ।	10
तंडुलपसयहु कारणि राणा	णरइ पडंति काइं अवियाणा ।	
डज्जउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ	जइ सुहु तो किं ताएं मुक्कउ ।	
सुहणिहि भोयभूमि संपयंयर	कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।	

घत्ता—<sup>१</sup>दुँल्लंघहु दुक्कियलंछणहो <sup>२</sup>सहदुक्खदुरंतहो ॥

भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कर्यंतहो ॥ १ ॥ 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

शशधरविम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्भीरतामुदधेः ।

इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

GK do not give it.

1. १ P उच्चावि. २ P हिमहय° but gloss हिमाहत. ३ P दवदँडु व. ४ B ओडुँल्लिय महुं.  
५ MBP महँडु. ६ P हा जं जायउ. ७ P बंधवहुं विसु. ८ B दुक्खगुरुक्कउ. ९ P संपयधर. १० B दुल्लंघिय-  
दुक्किय°. ११ MB दूसहो.

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव; थ वियउ भूमौ मुक्तः. 4 b वलि बाहुवलिः. 5 b ओहामिउ  
अभिभूतः तिरस्कृतः. 6 b °दुण्ण य° अविनयः. 9 b तंवारहु तरकम्.

## 2

कालभुयंगहु को वि ण चुकइ  
मइं पइ जेहा बहु वेहाविय  
पयहि अइअहिलासु ण गम्मइ  
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ  
जं माणुसु धम्मेष ण भिज्जइ  
देव मज्झु खममाउ करेज्जसु  
अण्णउ लच्छिविलासं रंजहि  
णहणिवडियणीलुप्पलविट्ठिहि  
तं गिसुणिवि भरहेसं बुच्चइ

सुयणत्तणु जि एकु पर थकइ ।  
पुहइइ पुहइपाल बोलाविय ।  
जणणि जणणु भायरु किह हम्मइ ।  
किह हियवउ कलुसैं मइलिज्जइ ।  
सो गिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ । 5  
जं पडिक्कलित्तं तं म रुसेज्जसु ।  
लइ महि तुहुं जि णराहिव भुंजहि ।  
हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।  
परिहवदूसिउ रज्जु ण रुच्चइ ।

घत्ता—अंतेउरसयणहं परियणहं णीसेसहं मि णियंतहं ॥

10

हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खंविउं खम भूसणु गुणवंतहं ॥ २ ॥

## 3

जइ पइं णियभुपहिं अंदोलिउ  
तो किं चहुं रयणु मइं रक्खइ  
पइं जिची खमा वि खमभावै  
पइं जिह तेयवंतु ण दिवायरु  
पइं दुज्जसकलंकु पक्खालिउ  
पुरिसरयणु तुहुं जगि एक्कल्लउ  
को समत्थु उवसमु पडिवज्जइ  
पइं मुपवि तिहुयाणि को चंगउ

भूमंडलि तडत्ति अण्फालिउ ।  
पुणुं जीयंतु को वि किं पेक्खइ ।  
पइं तांसिउ कउसिउ सपयावै ।  
णउ गंभीरु होइ रयणायरु ।  
णाहिणरिंदवंसु उज्जालिउ । 5  
जेण कयउ महु बलु वेयल्लउ ।  
जगि जसदक्क कासु किर वज्जइ ।  
अण्णु कवणु पच्चक्खु अणंगउ ।

2. १ MBP गिक्किउ काइं तेण किर किज्जइ; K गिक्किट्ठु तेण काइं किर किज्जइ; but corrects it to सो गिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ. २ MBP खमिउ.

3. १ MBP महिमंडलि, २ MBP चक्करयणु. ३ MB पुणु वि जयंतु; PK पुणु वि जियंतु. ४ MB तोसिउ. ५ M पोउसिउ; B कोसिउ.

2. 2 a वेहा वि य वञ्चिताः; b बोला वि य निष्कासिताः यापिताः. 5 a ण भिज्जइ न अनुरज्यते.

3. 3 a ख मा वि प्रथिव्ययि; b क उ सि उ इन्द्रः. 6 b वेयल्लउ वैकल्पम्.



अण्ण कवणु जिणपयकयपेसणु

अण्ण कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदु इंदु अणीयउ ॥

10

पर पक्कहु णंदापधिसुय तुह ण णिहालमि वीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिम्भच्छिउ  
जं सरवाणिणण णिरु सित्तउ  
तं एवहिं खंम करि महुं बंधव  
आउ जाहु उज्झाउरि पइसहि  
पट्टु णिवंधमि भालि तुहारइ  
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि  
एवहिं इंदियछंदु विवज्जमि  
एवहिं कम्मणिवंधंण भंजमि

जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।  
जं जुज्झंतं पेछिवि धित्तउ ।  
जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।  
अज्जु जि तुहुं सिंहासणि वइसहि ।  
अकक्कित्ति जीवउ तुह केरइ । 5  
एवहिं परमदिवस पडिवज्जमि ।  
एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।  
एवहिं जोएं प्राणं विसज्जमि ।

घत्ता—बंधव वणवासहु पट्टुविवि धरणिमोहरसभंतं ॥

मंइ एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइं जियंतं ॥ ४ ॥

10

5

सज्जणकरुणं सज्जणु कंपइ  
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ  
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ  
जे गय ते सयल वि मग्गिवि सिसु  
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ  
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि

तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।  
तइयहुं पंइ वि किं ण परितोलिउ ।  
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउं ।  
भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।  
वंदाणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ । 6  
तां जं दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4. १ MBP जं दुव्वयणेहिं. २ M महुं खम करि. ३ MBPK ०णिवंधणु. ४ MBP पाण.

5. १ MBP किं ण पइं मि. २ P adds after this: तुहुं जि जेहुं महुं सामि महारउ. ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्रः, उपमां प्रापितो वा.

4. 7 a ०छंदु ०वशत्वम्.

5. 1 b भरहाणुउ भरतानुजो बाहुबलिः. 4 b भावईत्यादि—भोगक्षेपां विषमिव प्रतिभासते,

तहि अवसरि वयणेहि गिरोहिउ  
सुउ संताणि यवेवि महाबलि

मंतिहि भूमिणाहु संबोहिउ ।  
गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता—वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ॥  
साकेयहु राउ विसणमणु मंतिहि मँडुइ आणिउ ॥ ५ ॥

10

6

पत्तहि गिरिवरि बाहुबलीसं  
णिट्ठाणिट्ठउ णट्ठाणट्ठउ  
अइदट्ठोद्वरुट्ठपाविट्ठहि  
जो णउ दीसइ कुंठियेवायहिं  
घयणुगयगहीरजयकारें  
रौसु तुज्जु रोसेण व णिमाउ  
पइं मँडिवि दोसुं वि दोसायरि  
तुइ झाणणिमपण व णट्ठउ  
पइं तासिउ वड्डारियसंगउ  
कंदप्पहु वि दप्पु पइं साडिउ  
तुइं णिगंधु अणीहियगंधउ  
विज्जा णावइं पइं जम्मंतुहि  
यम देउ गरु भत्तिइ वेंदिवि  
णावइं भवतरुमूलुप्पाडणु

अइदुराउ पंणावियसीसं ।  
दिट्ठउ भट्टुदुक्कम्मट्ठउ ।  
हेट्ठाकोट्टगयहिं दप्पिट्ठहि ।  
मंसासिहिं मज्जवहिं सवायहिं ।  
सो जिणु संथुउ तेण कुमारें । 5  
राउ ण याणहुं संझहि लग्गउ ।  
थियउ कलंकमिसेण व ससहरि ।  
मोहु मोहणोसँहिहिं पइट्ठउ ।  
लोहु वि सव्वलोहभावं गउ ।  
कालहु उप्परि कालु भमाडिउ । 10  
तवणिंयमं थउ दावियपंथउ ।  
उल्लंघिउ तुहुं रवि हरि हरु विहि ।  
मिच्छादुक्किउ गैरहवि णिंदिवि ।  
करिवि सँसिरवरि चिहुरुप्पाडणु ।

४ MBP संडइं.

6. १ MBP पणामियं. २ G कुट्टियं. ३ P दोसु दोसायरि. ४ MP मोहणोसहहिं. ५ MB सव्वु लोहं. ६ MBT °मत्थउ; T records a p: तेम णिमत्थउ इति पठि ज्ञानावरणविनाशकः. ७ MB गरहवि; P गिरिहि वि. ८ MBP ससिरि वरविदुहं.

9 अहिमाणिउ अभिमानवाच. 10 मडुइ बलात्कारेण.

6. 2 a णिट्ठाणिट्ठउ परमानुष्ठाने स्थितः; णट्ठाणट्ठउ नष्टानर्थः. 3 b हेट्ठाकोट्टं अधोमुख्य. 4 a कुंठियवायहिं प्रमाणबाधितवचनैः; b मज्जवहिं मद्यपैः; सवायहिं श्रृपाकैश्चाण्डालैः. 9 b लोहे त्यादि-लोभोऽपि सर्वलोहानि सुवर्णादीनि तन्मयत्वं गतः 11 b तवणिंयमं थउ तपसि नियमे ब स्थितः. 14 b ससिर-वरि समस्तके.

घत्ता—सर पंच वि घल्लिय वम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्कइं ॥

15

पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहाउ सयणासणु  
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं  
चरिय णित्तेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि  
सीह सरह तणु लग्ग ण वारइ  
जल्लमलोहिं मि लित्तउ अच्छइ  
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ  
लोकपहिं ण मुज्झइ दोहिं मि  
अइंसेण अलाहु रिसिसारउ  
वयसमिदिदियरंभणु लोउ वि  
ण्हाणचिवज्जणु महिसंसोवणु

मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।  
लुहजणदुडवयणाइं सयण्हइं ।  
वह्वंधणु गयजण वणवसइ वि ।  
मुणि जच्चिण्हणि चित्तु ण पेरेइ ।  
वउसक्कार किं पि ण समिच्छइ । 5  
विविहातंक रोय अवगण्णइ ।  
सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।  
पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।  
अँच्चेलकावासयजोउ वि ।  
दंतोघोवणु कयठिदिभोयणु । 10

घत्ता—वणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जेवइ ॥

परमत्ति करइ णिइ वि जिणइ मणु वेरम्मो भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुच्चर  
तहिं थिउ एक्कु वरिसु लंवियकर  
जासु अंगि पयघट्टियसिगहं  
जासु वच्छि फणिमणि पविराइउ

महि विहरंतु पइडु वणंतर ।  
वेल्लीवलयहिं वेठिउं ण तर ।  
कंहुविणोउ सरइ सारंगहं ।  
बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7. १ MBP सतण्हइं; T सयण्हइं. २ B जच्चिहे. ३ MBP अइंसणु. ४ M अँच्चेलक आवासयजोइ वि; B अँच्चेलक पवासयजोउ वि. ५ MP दंतोघोयणु; B दंतोभोयणु.

8. १ BP सुदुच्चर. २ MBP ण वेठिउ.

7. 1 a उवाणहाउ उपानहौ. 2 b सयण्हइं सत्तणानि. 4 जच्चिण्हणि याच्यायाम्. 5 b वउ-सक्कार शरीरसंस्कारः. 8 b पण्ण° प्रज्ञा. 9 a लोउ केशलोचः; b °आ वा सय° आवश्यकानि. 10 a °संसो-वणु संस्वपनं शयनम्.

8. 4 b हाराइउ हार इवाचरितम्.

जासु गच्छु कयमयजलणहवणउं  
चरणगुह्यगणखि गिहिल्लइ  
देहि चडंति जासु सुरघरणिहिं  
तणुकंतीइ जासु हयछाया  
जासु रत्तकंदीसिइ वट्टइ

जायउ करिहिं करडकंहुयणउं । 5  
सरहलु वणयरणरहिं गिसिज्जइ ।  
उल्लरिय लय णहयरतरुणिहिं ।  
हंस वि हरियवण संजाया ।  
पण्हिय सूयर घोणंइ घट्टइ ।

घत्ता—आसण्णं जासु मुणीसरहो तवपहावउवसंतइं ॥ 10  
करि केसरि णउलइं फणिउलइं सह हिंउंति रमतइं ॥ ८ ॥

## 9

एकहिं दियहि पउत्तु सपत्तिइ  
थुणइ णराहिउ पयपडियल्लउ  
पइं कामें अकासु पारद्धउ  
पइं वालें अवालगाइ जोइय  
पइं गियभुयवलेण हउं जोक्खिउ  
पइं महु दिण्णी पुहइ संहल्यें  
परउवयोरि घोर दमवंता  
पइं जेहा जगगुरुणा जेहा  
अत्थि रसनफंसणरसलालस  
रोसवंत हियपर विस्संभर

तासु भरहु गउ वंदणंहत्तिइ ।  
पइं मुएवि जगि को वि ण भल्लउ ।  
पइं राणें अराउ कउ गिद्धउ ।  
पइं अपरेण वि पैरि मइ होइय ।  
पइं जि पुणु वि कारुणें रक्खिउ । 5  
तुहुं परमेस्सेर जगि परमल्यें ।  
महि मुएवि गियमेणुवसंता ।  
एल्लु दोणि जइ तिहुयणि तेहा ।  
अम्हारिस घरि घरि जि कुमाणुस ।  
पावबहुल परवस अपणंभर । 10

घत्ता—हा मइं बहुकम्मपरव्वसेण विसयबलाई ण महियइं ॥

एकहो गियजीवहु कारणिण जीवसयाइं वि वडियइं ॥ ९ ॥

३ MBPK कंदासइ. ४ MB घोणं; P घोणिहि. ५ B घुट्टइ.

9. १ BP °भत्तिइ. २ B सरे मइ. ३ M समल्यें, but records a p सहल्यें, ४ MB परमेसर.  
५ MBP °उवयार°.

6 b सरहलु वारफलम्; गिसिज्जइ तीक्ष्णक्रियते. 9 a रत्तकंदीसिहि रत्तकन्दाशया; b पण्हिय पा णिः;  
घोणइ मुखाग्रेण.

9. 1 a सपत्तिइ स्वपदातिना. 2 a °पडियल्लउ पतितः. 3 a अकासु वैराग्यम्; b अराउ वीतरागता; गिद्धउ लोहलः पुष्टो वा. 4 a अवालगाइ विद्वद्भक्तिमोक्षगतिः; b परि अहंस्तिद्धस्वरूपे परमात्मनि. 11 महियइं मथितानि.

## 10

इंदवंदवंदारयवंदै  
एकहु जीवहु गुण मणि भाविय  
तिणिण वि सल्लइ हियउद्धरियइं  
तिणिण वि डंभै मुक संखेवै  
चउगइकम्मणिबोधणरमियँउ  
पंचमहव्वयाइं अविहंइइ  
पंचिदियइं कयाइं गिरत्थइं  
छावाँसयउज्जमु सँविसेसिउ  
छह लेसहं परिणामु वँइट्टइं  
सत्त भयाइं हयाइं गहीरै  
अट्ट वि मय णिट्टविय अट्टुं  
णवविहु वंभवेरु परिपालिउ

तहिं अवसरि वाहुवलिमुणिंइ ।  
राँय रोस दोणिण वि उट्ठाविय ।  
तिणिण वि रयणइं लहु संभवियइं ।  
गारव तिणिण विवज्जिय देवै ।  
सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ । 5  
पंचासवदारइं णिच्छंइइ ।  
पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।  
छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।  
छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं ।  
सत्त वि तच्चइं णायइं धीरै । 10  
अट्ट सिद्धगुण भरिय वरिट्ठै ।  
णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

घत्ता—दसँविहु जिणधम्मु विर्यीणियउ पयारह हयजडिमउ ॥

अँवियारहं धीरहं सावयहं बारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

## 11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं  
चोइह गंथमला वि समुज्झिय  
पण्णारह पमाय मेहँतै  
सोलहविह कसाय पसमँतै

तेरहमेय चरित्तइं गणियइं ।  
चोइह भूयगाम सइं बुज्झिय ।  
पुण्णपावभूमिउ जाणँतै ।  
सोलहविहवैयणेसु रमँतै ।

10. १ BP राय दोस. २ MBP संभरियइं; K संभवियइं but corrects it to संभरियइं.  
३ MBP वेय, ४ P रसियउ. ५ BP णिच्छंइइ. ६ B छावासउ. ७ PK सुविसेसिउ. ८ B उवट्टइ. ९ MBP  
परिणामु. १० MB दहविहु. ११ MP वियारियउ. १२ M अवि बारह, but records a p अवियारहं.

11. १ B चउदह. २ MBP ०वयणँ सुमरँतै.

10. 1 a ०वंदै वन्धेन. 7 b गंथइं परिग्रहरूपाणि. 9 a वइट्ठइं उपदिष्टानि सर्वज्ञेन.

11. 4 a सोलह विह क सा य कपायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्या-  
ख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

अवि य असंजमोह सत्तारह  
 एउणवीस वि णाहज्झयणइं  
 एकवीस सबल वि णिर णीसहं  
 तेवीस वि सुत्तयडइं सुत्तइं  
 पंचवीस भावणउ धरतें  
 सत्तवीस जइगुण सुमरतें<sup>१</sup> ।  
 अट्ठवीस णियचित्ति समण्वि  
 एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं  
 एकतीस मलवाय धुणंतें

जाणिवि संपराय अट्ठारह । 5  
 वीसविहइं असमाहीटाणइं ।  
 सहिवि दुव्वीस दुसज्झ परीसह ।  
 चउवीस वि जिणतित्थइं होतइं ।  
 छवीस वि पुहवीउ णियंतें । 10

पव्वरायारकण पवियप्पिवि ।  
 तीस मोहटाणइं बलवतइं ।  
 जिणुवएस वत्तीस मुणंतें ।

घत्ता—थिर सुक्कशाणु आऊरियउ घाहचउकु पणट्ठउ ॥

उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयांलोउ वि दिट्ठउ ॥ ११ ॥

15

## 12

तां सुर चल्लिय समउ सुरिंदें  
 णरवइ धाइय समउ णरिंदें  
 तेहिं कसायविसायवियारउ  
 रायचक्कु पइं तणु परिगणियउं  
 देवचक्कु तुह अग्गइ धावइ  
 पइं दिट्ठइं रिसि<sup>२</sup> राउ ण वड्ढइ  
 जीवरसि णिदंभरु विहडंती  
 भोयासत्तपण पुहईसरु

तारायणु चल्लिउ सहुं वंदें ।  
 उरय समागय सहुं धरणिंदें ।  
 संथुउ सिरिवाहुबलि भडारउ ।  
 कम्मचक्कु ज्ञाणाणलि हुणियउं ।  
 चक्कु वि चक्किहि रैमण ण भावइ । 5  
 पइं मुएवि को णरयहु कड्ढइ ।  
 विहुंरंमोहिविवरि णिवडंती ।  
 दिक्ख लेवि णिज्जउ वम्मीसरु ।

३ P दुसज्झ दुवीस. ४ MBP संतइ. ५ P सुअरतें. ६ MBP add after this: पुणु वि तेण सुणिणा भयवतें. ७ P एम ण थारकण. ८ MBP जिणउवएस. ९ P लोयालोय.

12. १ MBP read the first two lines as: ता सुर चल्लिय समउ सुरिंदें, उरय समागय सहुं धरणिंदें; णरवइ धाइय समउ णरिंदें, तारायणु चल्लिउ सहुं वंदें. २ MB वयणु; P रयणु; T रमणु रमणीयम्. ३ MBP सिरिराउ. ४ MBP णिर भवि हिंडंती. ५ MBK विवडंती. ६ P सुहईसरु. ७ BPK णिज्जउ.

6 a एउणवीस वि णाहज्झयणइं उक्कोड-णाग-कुर्म-अडंय-रोहिणि<sup>३</sup>-सेस-हंभ-संधीदे । मांदगिमल्लि-चंदिमी-तावहव-तिकी-तडीया-किजे<sup>४</sup> । सुसुंकेय-अर्वरंकेके-णदिक्किल-उदरंनोह-(मंडक)-पुंडरिगोयैणि इत्ये-कोनविंशतिर्नाहज्झयणाइं.

12. 5 ८ रमणु रमणीयम्.

को किर भण्णइ तुज्झ समाणउ तुहुं जि मुंडकेवलहिं पहाणउ ।  
पम थुणेंते बुद्धिसमिद्धे ईदें वेउव्वियउ खणद्धे । 10

वत्ता—पेउमासणु चवलु चमरजुयलु एकु जि छत्तु मणोहरु ॥  
दीसइ पप्फुल्लिउ पंडुरउ णं तवसरि इंदीवरु ॥ १२ ॥

## 13

पयणियजणमरणविडुमरइ संसमंतु भाउग्गयतिमिरइ ।  
देंतु देसजइजइवरचरियइ संवोहंतु भव्वपुंडरियइ ।  
पायपोमपाडियसंकंदंणु भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु ।  
गउ केलासहु पावपरंसुहु समवसरणि गियतायहु संमुहु ।  
आसीणउ पसणु पसमियकलि देउ समाहि बोहि महु भुयबलि । 5  
भायरणाणेलंभसंतुट्टउ एत्तहि णरणीरीयणदिट्टउ ।  
उज्झणयरिहि भरहु पइट्टउ उरपमाणि हरिबीहि वइट्टउ ।  
वज्जंतहिं जयवज्जणिहायहिं गाइयणारयतुंरुणेयहिं ।  
दुरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं उव्वसिरंभाणट्टविणोयहिं ।  
मंडलियहिं मंडियंणियवक्खहिं अहिंसिचिउ मंगलघडलक्खहिं । 10

वत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं बहुवज्जणइं अणिदहो ॥  
जं णिहिलहं भारहणरंवरइहिं तं बलु भरहणरिंदहो ॥ १३ ॥

## 14

वण्णु तत्ततवणीयपहायरु सासणु जासु चकंलच्छीहरु ।  
वज्जरिसहणारायणिवंधंउ समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धउ ।

c K भण्णउं and gloss भणामि. १ MBP हरियासणु धवलु.

13. १ MBPT सकंदणु. २ MBP णाणलंभि. ३ MBP ०णारीयणि. ४ MBP खंडियसविवक्खहिं.

५ M बहुवज्जणइं; BP बहुविज्जणइं. ६ M ०णरवरहिं.

14. १ MBP चकु. २ MBP ०णिबद्धउ.

13. 1 a विडुमं भयम्; b संसमंतु उपशमयन्. 3 a संकंदणु इन्द्रः. 8 a णिहायहिं समूहैः.  
9 a ०विहोयहिं विभोगैः. 11 लक्खणइं शंखकुलशादीनि.

14. 1 b चकलच्छी हर चकशोभाधरम्.

पुष्पणपहावै अतुलु वि लद्ध  
दोषिण तीस सहसाइं सुदेसहं  
णवइ णव जि दोषामुहसहसइं  
खेडहं सोलह ताइ पउत्तइं  
कलवकणिसभरभारियसीमहुं  
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासहं  
अट्टवीस वणदुग्गइं रिद्धइं  
सहसद्वारह मेच्छणरेसहं

छक्खंड वि महिमंडलु सिद्ध ।  
दोसत्तरि पुरवरहं पयासहं ।  
पट्टणाहं अड्ढाल सहसिइं । 5  
चोद्ध संवाहणहं गिरुत्तइं ।  
छणवइ जि कोडिउ वरगामहुं ।  
पंच तहं मि धरियपरिहासहं ।  
छप्पणंततरदीवइं सिद्धइं ।  
वत्तीस जि मंडलियमहीसहं । 10

घत्ता—देवीहिं दुतीस वत्तीस पुणु मेच्छणराहिवदिणहं ॥  
वत्तीससहस अंबरुद्धियहं गिरु गिरुवमलायणहं ॥ १४ ॥

## 15

घरि भावाणुविभावपयासइं  
चउरासीलक्खइं मायंगहं  
तईकोडिउ किंकरहं अहंगहं  
सुद्धिहिं कोडि रसायणरसियहं  
करिसणि गंगरकोडि पयट्टइ  
कालणामु गिहि देइ विचिच्छइं  
णिवहु महाकालु वि संजोयइ  
संलिवीहिपमुहइं बहुधणइं  
णेसणु बि सयणासनभवणइं

णडहं णंडंति दुतीससहासइं ।  
तेत्तीयं जि रहाइं सँरहंगहं ।  
अट्टारह भणियाउ तुरंगहं ।  
सँट्टइं तिण्णि सयइं भाणसियहं । 5  
फलभारेण धरिस्ति विसट्टइ ।  
वीणावेणुपडहवाइत्तइं ।  
पहुं देइ णाणाविहवणइं ।  
असिमसिकिसिउवयरणइं डोयइ ।  
वत्थइं पोमु पिणु आहरणइं ।

३ MBP छक्खंड, ४ MP पट्टणाइं, ५ MBP संवाहणइं, ६ MBP पंचतहं, ७ M मेच्छ, ८ P °सहासहं, ९ M मेच्छ°, १० MBP °कणहं, ११ MP अवरुद्धियइं.

15. १ M णंडंतिउ; B णंडंतिहुं, २ MBP लक्खहं, ३ MBP तेत्तीयइं, ४ MBP सारंगहं, ५ M तईयकोडिउ, ६ B सट्टइं, ७ MBP लंगल°, ८ M धरति°, ९ MBP omit this foot, १० MBP omit this foot, ११ MBP add after this: सव्वइं धणइं सव्वरसोहइं, पहु वि गिहि वि देइ अविरोहइं.

8 a कुकु छि णि वा स हं रलोत्पात्तिस्थानानाम्.

15. 4 b भा ण सिय हं रसवतीकारपुरुषाणाम्, 5 b विसट्टइ स्फुटति, 9 a णे स णु नैसपों निधिः,



अथइं सत्यइं मीणवु दंतउ  
सव्वरयणणिहि सव्वइं रयणइं

संखु ण थाइ सुवण्णु वहतउ । 10  
देइ सिरीवहु उरयलि णयणइं ।

घत्ता—असि चक्कु दंड छत्तु वि धवलु पहरणसालहि जायइं ॥

कागणि मणि चम्मु वि सिरिभवेणे सइं णरणाहु आयइं ॥ १५ ॥

16

रुप्पयमहिहरि सोहियवयणहं  
पच्छइ पुणु संपत्तइं णरवइ  
चत्तारि वि ह्वयइं साकेयइ  
णव णिहि ते वि तहिं जि संभूया  
णिच्चमेव तणुरक्खालुद्धइं  
विविहइंघरइं कणयधरणियलइं  
विविहइं छत्तइं सुत्तादामइं  
विविहइं वत्थइं कयवउंसोक्खइं  
को सो' बंभु कासु सुकइत्तणु  
णारी रयणैत्तणविकखायइ  
रुवें सोहणें लायणें  
अभ्युभूयइ जणमणमइइ

संभउ हरिकरिणारीरयणहं ।  
धरवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ ।  
घरसिरधयवारियरवितेयइ ।  
संपाइयइच्छियहलरूया ।  
सोलहसहस सुइं गणवइइं । 5  
विविहासणइं विविहसयणयलइं ।  
विविहइं आहरणाइं सकामइं ।  
विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं ।  
को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु ।  
खेयररायवंससंजायइ । 10  
णेहें रइयसुरयणेउणें ।  
सुहुं भुंजंतउ समउ सुहइइ ।

घत्ता—सिरिभणीवरघणथणजुयंलसिहवप्पेल्लियउरयलु ॥

थिउ उज्झहि भरहणराहिवइ पुर्णदंततेउज्जलु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुण्णयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम

अद्वारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ. १३ M °भुवणे.

16. १ MB घर घर. २ MBP विविहइं घरइ. ३ P मोत्तिय°. ४ MP संकामइ. ५ MB कय-  
उवसोक्खइं. ६ M सद. ७ MBP रयणत्तणि. ८ M समुद्धइ. ९ MB °रवणी°. १० M °जुवलु. ११ MB  
पुण्णयंत°; P पुण्णयंतु.

18 सि रि भ व णे भाण्डागारे.

16. 2 b घर वइ भाण्डागारिकः; थवइ स्थपतिः. 7 b सका मइं समीक्षितानि चित्तानुरागजनकानि  
वा. 8 a क य व उ सो क्खइं कृतवपुःसौख्यानि.

## XIX

चित्तइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥  
जइ गियमियचित्तहं एउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ भुवकं ॥

1

एकहिं दिणि पर्यणावियणिवइ	वसुंहाहिउ गियमणि चित्तवइ ।
किं छज्जइ विणु वंदं गयणु	किं छज्जइ छिण्णैणासु वयणु ।
किं छज्जइ णाणु गिरुवसमउं	किं छज्जइ रज्जु अँविक्रमउं ।
किं छज्जइ तणँयविरहिउ कुलु	किं छज्जइ पिक्कंउं कडयफलु ।
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं	किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं	किं छज्जइ अँविणियरुसणउं ।
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु	किं छज्जइ सँलिलविरहिउ घणु ।
किं छज्जइ परवसजीवै जणु	किं छज्जइ तिट्ठालुयदविणु ।

5

10

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु एहउं वुहयणु पेच्छइ ॥  
मणुयहु मलबंधणु तं संचिउं घणु मुँयहो पउ वि णउ गच्छइ ॥ १ ॥

2

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं	तुँयविंदु ण माणिउ घणथणउं ।
जवणोलतवसिस्थइं खरइं	ताइं वि सीसकभारधरइं ।
ऐसीरसु दोणिण कुलत्थकणं	अच्छउ कंजिउ घाडिवि सँयण ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

इयामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।

भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

1. १ MBP °णाभियं. २ MBP वसुहाहिउ. ३ M किं ण तासु. ४ MBP गिविक्रमउं. ५ MBP तणणं रहिउ. ६ MBP कडुयउं पिक्कफलु. ७ MBP विणियरुसणउं. ८ MBP सलिले रहिउ. ९ MBPK °जीवि. १० B संचियघणु. ११ P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ.

2. १ MBP तियविंदु. २ MB जवणालवंत. ३ M एसीरसु. ४ MBP °कणु. ५ MBP सयणु.

1. 7 b अडयणं पुंश्चली. 12 पउ वि पदमात्ममपि.

2. 1 b तुयविंदु श्रीवृन्दम्. 2 b सीसकं कूकसं तुषम्. 3 a एसीरसु अलसीतैलम्.

असरालु लोहधणु धरिवि मणे  
रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे  
णिव्वरय्यरु पूयफलु खंति किह  
पंविदियंत्थु सुहुं खंचियउं  
जरचीरणियासण फरुससिर  
ण वियाणइ दुक्कंती गियइ  
बंधइ मेळइ पुणु पुणु मवइ  
सा सेंडि ण पूरइ किह भरमि  
लोहिदु दुहु पाविदु च्लु

जेवंति दीर्ण गरुण वि छणे ।  
जणरंजणु पत्तु करेवि करे । 5  
एक्केण जि रवि अंत्यवइ जिह ।  
लुद्धहिं अप्पाणउ वंचियउ ।  
दालिदिय सधण वि किविण णर ।  
णियहत्थहु हत्थु ण पत्तियइ ।  
वसु गुज्झपेवेसहिं पुणु ठवइ । 10  
मणि जूरइ काइं दइव करमि ।  
पाहुणयहु उत्तर देइ खलु ।

घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छियकामहो मैणु णं भलिइ भिजइ ॥

मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुं आयउ घर भणु एवहिं किं किजइ ॥ २ ॥

## 3

किं किजइ थेरें कामुएण  
कुलेपुत्तएण किं णित्तवेण  
अवि विज्जाहरवरकिंणरेण  
धरणियलरंघपैडिपूरएण  
सा राई जा ससिविप्फुरिय  
सा विज्जा जा सर्यरु वि गियइ  
ते बुह जे बुहइ ण मच्छरिय

किं सत्थें पावपुरिससुएण ।  
समएण वि किं किर णित्तवेण ।  
णिव्विणएं समएं किं णरेण ।  
किं लुद्धदविणपभारएण ।  
सा कंता जा हियवइ भैरिय । 5  
तं रज्जु जम्मि बुहयणु जियइ ।  
ते भित्त णं जे विहुरंतिय ।

६ P हीण. ७ M णिब्वर पूयफलु; BP णिब्वर पूयफलु. ८ MP एक्केण वि; B पक्केण वि. ९ MBP अत्यमइ. १० MBP °दियत्थ° ११ MB गुज्झपएसाहिं परिठवइ; P गुज्झपएहिं परिठवइ. १२ M सिट्ठ. १३ MBP महु मणु भलिइ.

3. १ MBP पावपसंसिएण. २ MBPK कुलउत्तएण. ३ MBP °परिपूरएण. ४ B रयणी. ५ B हरिय. ६ MBP सपर. ७ M बहहिं ण मच्छरिय; BP बुहहिं ण मच्छरिय. ८ P जे वि.

4 a असरालु बहुलम्; b छणे पूर्वणि महोत्सवे दीपोत्सवे वा. 6 a णिव्वरय्यरु निर्व्ययतरं जीर्णमित्यर्थः. 8 a °णि या सण अधोवन्नम्. 10 b गुज्झपवेसहिं गुह्यप्रदेशप्रवेशः. 11 a सट्ठि ण पूरइ षड्भिर्न पूर्यते.

3. 1 b सत्थें शालेण; °सु एण श्रुतेन. 2 a णि त्त वेण निन्नपेण निर्लज्जेन व्रतरहितेन वा; b समएण सम्यक्त्वेन; णि त्त वेण तपोरहितेन. 3 b समएं समदेन. 5 a राई रात्रिः. 6 a सयरुविणि यइ सकलमपि पश्यति. 7 b विहुरंतिय दुःखे अन्तरिताः.

तं धणु जं भुत्तजं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णजं विहल्लयणि ।  
 घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय गुणिहिं चित्तु हयदुरियड ॥  
 गुणि ते हजं मण्णमि पुण पुण वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियड ॥ ३ ॥ 10

4

इय चित्तिवि रापं दविणगइ हक्काराविय णाणा णिवइ ।  
 ते आइय संचियधम्मघण जे जोयकिरणगणसुद्धमण ।  
 तग्गुणपरिक्खसुपयासिरयं सज्जीयवीयणित्तं कुरयं ।  
 तरुपल्लवपिहियं पंगणयं णं वणसिरिदिण्णालिगणयं ।  
 चण्पंति ण ते विरया गिहिणो परिपालियसावयवयविहिणो । 5  
 कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय परंताविरि अलियवायविरयं ।  
 णादिण्णजं कहिं वि समिच्छियजं णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियजं ।  
 घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ रयणीभोयणविरइसहिउ ।  
 दिसिविदिसागमणमाणकरणु भोगोवभोयंसंखाधरणु ।  
 विरमणु अणत्थदंडासियजं भावियजं जेहिं जिणभासियजं । 10

घत्ता—सामाइजं पोसहु अतिहिपरिग्गहु कामकोहपरिहरणं ॥  
 किउ जेहिं पसैत्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासणमरणं ॥ ४ ॥

5

ते भरहें विण्ण परिडुविय कर मउलिवि सइं सिरिण णविय ।  
 उववीयहु केरउ चिधधर दंसणहरि वल्लिउ एकु सरु ।

१ MBP गुणहिं १० M हजं गुण ते मण्णमि; B गुण हजं ते मण्णमि. P गुणि हजं ते मण्णमि.

4. १ MB ते गुण°. २ MBP परताविरि°; K °ताविरि but corrects it to ताविरि. ३ MP add after this: परवणु परवत्तु दुगुल्लियड. ४ MBP add after this: दिण्णजं णियजोगु (P °जोगु) पडिच्छियजं, कुलवंतु विवाहिउ वंछियड. ५ B °गमणकरणु. ६ MBP °भोग°. ७ MBP समत्थहिं.

8 b विहल्ल° दुःखितः. 9 गुणणय गुणेण नत्ता.

4. 2 b °जोग्य° चेन्द्रः. 3 b °णित्तं कुरयं निर्गताङ्कुरम्. 6 a त सं त हुं दस्तानाम्; त स हुं ब्रजजीवानाम्.

5. 2 a उ व वी य हु कार्पाससूत्रस्य, यज्ञोपवीतस्येत्यर्थः.

वयवन्ति निरुविय दोणिण सर  
पोसहवन्तइ चत्तारि सर  
अणिसामोयणि उड्डमाण सर  
आरंभविवज्झिइ अट्ट सर  
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर  
उड्डिवायकारिहि विहिय  
तँवु बंभ जेण घोसन्ति जप

सामाइयड्डि पुणु तिणिण सर ।  
सच्चित्तविरत्तइ पंच सर ।  
दढबंभचेरैधरि सत्त सर । 5  
अपरिग्गहि कय णवसुत्त सर ।  
एयारह सर हयमयणसर ।  
ए दियवर राए सुहुं णिहियै ।  
बंभणकुलु संठिउ तेण वए ।

घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीईवसु रिसहँ खसु पवँत्तिउ ॥

10

जिणपुज्जायारउ धम्मपियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥ ५ ॥

## 6

वणि वाणिज्जारउ जाणियउं  
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ  
सो सोत्तिउ जो ण दुडु भणइ  
सो सोत्तिउ जो हियैपण सुइ  
सो सोत्तिउ जो ण मासु गसइ  
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ  
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ  
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ  
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ

किसियरु हलधारउ भाणियउ ।  
सो सोत्तिउ जो सुंतसु कहइ ।  
सो सोत्तिउ जो णउ पसु हणइ ।  
सो सोत्तिउ जो परंमत्यइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ । 5  
सो सोत्तिउ जो सुतवें तवइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ ।  
सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ ।  
पण्णासत्तिकिरियहि भूसियउ ।

5. १ MB उड्डमाण. २ P °जेरु धरि. ३ MBP सण्हिय. ४ MBP तउ बंभु. ५ MBP पवत्ति-  
यउ. ६ MBPK धम्मवियारउ.

6. १ M सुतच. २ P पसु णउ. ३ MBP हियवयणु सुणइ. ४ M परमत्य सुणइ; P परमत्यु  
मुणइ. ५ B मासु ण.

9 a तउ बंभ. तपो द्वादशविधं व्रतानुष्ठानं वा ब्रह्म परमात्मस्वरूपम्; घो सति प्रतिपादयन्ति; b वए व्रते पदे वा.

6. 9 b पण्णा सति कि रिय हि त्रिपञ्चाशता क्रियाभिः, ताश्च सम्यक्त्वमेकम्; अणुव्रतानि पञ्च; सुण-  
व्रतानि त्रीणि; शिक्षाव्रतानि चत्वारि; अनस्तमित-संयम-जिनपूजा-ध्यानानि चत्वारि; चत्वारि दाम्पानि; षड्विधं  
ब्राह्मं तपः; षड्विधं आश्रितम्; चतुर्विधो विनयः; नवविधं वैद्यावृत्त्यम्; पञ्चविधः साध्यावः; द्विविधो व्युत्तर्गः;  
इति त्रिपञ्चाशत् क्रियाः.

घत्ता—जो तिलकप्पासइं दैवविसेसइं हुणिवि देव गह पीणइ ॥ 10  
पसु जीव ण मारइ मारय वारइ पर अप्पु वि समु जाणइ ॥ ६ ॥

7

सो सोत्तिउ जाणसु एहु जिह	लक्खाइं दिपसहं तेण तिह ।	
वण्णासमकोडिचडावियइं	गुणगणनाभेणं भावियइं ।	
दिण्णाइं ताहं सुद्धासयइं	भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं ।	
दिण्णाइं ताहं परतीरयइं	सियसुहुमइं सिचयइं गीरयइं ।	
दिण्णाइं ताहं मणिराइयइं	कडिसुत्तकडयमउडाइयइं ।	5
दिण्णाइं ताहं मणमोहणइं	घडपूरणदुद्धइं गोहणइं ।	
दिण्णाइं ताहं देसंतरइं	हयगयरहल्लसइं पंडुरइं ।	
दिण्णाइं ताहं जियससहरइं	धणकणभरियइं विविहइं घरइं ।	
दिण्णाइं ताहं करमरधरइं	सासणलिहियग्गहारपुरइं ।	
आरामगामसीमइं सरइं	दिण्णाइं ताहं णयरायरइं ।	10

घत्ता—महि कसणरवण्णी धैवल वि दिण्णी विप्पइं जिणतणुजाए ॥  
तिह जिह णउ खिज्जइ अज्जि वि दिज्जइ णिहिलें णिवइणिहाए ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं दिणि सुत्तें सयणहरे	णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।	
दिट्ठी <sup>१</sup> दुक्किय सिविणावलिय	आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।	
सुपहायकालि गैउं सज्जियउ	केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।	
संयुउ परमेसर परमपर	जिण तुहुं चिंतामणि अमरतर ।	
तुहुं सँरर रसायणु अमयमउ	तुहुं मयरकेउ रंणि लद्धजउ ।	5

६ MBP दन्मविसेसइं.

7. १ B णीरियइं. २ MBPK धवल वि. ३ MBP अज.

8. १ MBP सुत्तइ. २ MBP दिट्ठिय. ३ MP गमु. ४ MBP सुरसु. ५ MB रण°.

11 मारय मारकान्.

7. 1 b दिएसहं द्विजेशानाम्. 2 a °कोडि° परमप्रकर्षम्. 5 a म णिराइयइं रत्तजडितानि.  
10 b °आयर° आकराः. 11 कसणरवण्णी कर्षणेन रमणीया, कृष्णा रमणीया. 12 °णिहाए° समूहेन.

तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि  
तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि  
तुह णामें णासइ मत्तकरि  
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ  
तुह णामें संतोसियखलउ  
तुह णामें स्यायि तरइ णरु  
तुह णामें केवलकिरणरवि

तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।  
तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।  
कउं देतु वि थक्कइ णरहु हरि ।  
परवलु गयपहरणु भउ वहइ ।  
तुट्टेवि जंति पयसंखलउ । 10  
ओसरइ कोहकंदप्पजर ।  
णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुंवणभवणुकिट्ठइ ॥  
पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्ठइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुंछइ भरहवइ  
होहिंति अहिसपेवित्तियर  
कि अक्खमि हउं तुह केवलहि  
फलु काइं भडारा वज्जरहि  
परमेसर णाहिणरिंदसुउ  
पुण्णेण केण हउं चक्कवइ  
कपावियसिहरिणियंबथलि  
उप्पण्णु पवट्ठियदाणरहु  
पुण्णेण केण सोमप्पहहो  
पुण्णेण केण पालियविणय

मइं दियवर णिम्मिय परमजइ ।  
कालेण किं णैं भणु तित्थयर ।  
णिसि दिट्ठहिं मइं सिविणावलहिं ।  
संदेहु महारउ अवहरहि ।  
पुण्णेण केण तुहुं अरुहु हुउ । 5  
जायउ भारहभूयलविजइ ।  
पुण्णेण केण वाहुबलि बलि ।  
पुण्णेण केण सेयसैपहु ।  
हूयउ संभेवु सोमप्पहहो ।  
संभूया सयल वि तुह तणयं । 10

६ M कमु देंतु; B कउ देंतउ; P कमु देंतउ. ७ BP °संकलउ. ८ P सायर. ९ MB तिहुयणु भुयणुकिट्ठइ.  
9. १ P पुंछइ. २ MB °पवत्तिवर°. ३ MBP गु. ४ P अरहुं हुउ. ५ MB °भूवल°; P °भू-  
अल°. ६ MBP केण हुउ वाहुबलि. ७ MBP सेयसु. ८ MBP संमउ. ९ MBPK add after this  
मइं पइं जेहा होहिंति कइ ( P पइं मइं ), कइ हलहर हरि पडिसत्तु ( B पतिसत्तु ) कइ; MBP add  
further: तवभट्टकामिणिहिं बद्धमइ ( P तवभट्ट य कामिणिबद्धरइ ), कइ होसहिं रुइ रउइमइ; कासु वि किर  
होसइ कवण गइ, भो मयणकरिंदमयाहिंवइ; एउ ( P इहु ) सयलु वि अक्खहि परम जइ.

8. 10 a सं तो सि य ख ल इ संतोषिता: खला: यामि:; b °सं ख ल उ शृंखला: . 10 ति भु व ण भ व-  
णु कि ट्ठ इ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9. 4 b अव हर हि अपनय.

घत्ता—तां नवजलहरद्वणि कहइ महामुणि सुर्गसु पुत्त जं पुच्छिउ ॥  
पइं किउ वियसासणु नयविदंसणु कालें होसइ कुच्छिउ ॥ ९ ॥

## 10

हा पुत्त काइं किउ पावमलु  
रमिहिंति जंणिण कीलइ सईर  
लेहिंति सुयत्थिणि परघरिणि  
णउ दूसिहिंति पिज्जंतु महु  
कहिहिंति धम्मु जो जं करइ  
सूणागारहं वेसाउलहं  
भाणिहिंति कुलकमु पुण्णं जहिं  
भणिहिंति गाइ देवय जलणु  
वणसइ देवय जल देवयइं  
मासहं मज्झइ परयारइं वि  
एयइं पयइं देविहिं कियइं

मारेपिणु मय खाहिंति पलु ।  
पिविहिंति सोमवाणउं महुइ ।  
अण्णहु देहिंति वि नियतरणि ।  
ण वि दूसिहिंति नूवि प्राणिवहु ।  
सो तेण जि कम्मैं उत्तरइ । 5  
अवर वि पावंधहं राउलहं ।  
किं वण्णमि दुकिउ पुत्त तहिं ।  
भणिहिंति पुइइ देवय पवणु ।  
भणिहिंति नसंभोयणवयइं ।  
लिहिहिंति पुराणइं अवरइं वि । 10  
लइ पोसिहिंति जउ दुकियइं ।

घत्ता—सइं सकुलहु वंछिवि अवर दुगुंछिवि जगि धीवरिखरिपुत्तहं ॥  
देहिंति पहुत्तणु परमरिसित्तणु कयकवडागमधुत्तहं ॥ १० ॥

## 11

एहा वंभण होहिंति सुय  
पुणु भणइ भडारउ णउ रहमि  
पंचाणण जे तेवीस पइं  
वज्जियकुसमयकुसंगमल्लिण

किं कियउ वप्प पइं पीणभुय ।  
सिधिर्णोलिफलु वि णिसुणहिं कहमि ।  
दिट्ठा ते जिणवर मुणिय मइं ।  
सुपसाहियधम्मतिथपुलिण ।

- १० PK तो. ११ P णिसुणि. १२ MB पुच्छियउ; P पुच्छिउ. १३ P णिय°. १४ MB कुच्छियउ.  
10. १ MB जणु; P जणु. २ MBP सुइर. ३ MBP णिव. ४ MBP पाणिवहु. ५ PK पुणु.  
६ MBP वणसव. ७ M गित्त°. ८ MBP एयइं वेयइं.  
11. १ MBP सिविणयफलु उहुं णिसुणहिं.

10. 2 a ज णि यइ. 8 a सु य ल्पि णि सुताथिनी. 4 b नु वि नुपे. 10 a परयारइं परदाराः.  
12 धी व रि ख रि पुत्तहं धीवरीपुत्रो व्यासः गर्दभीजनिनो दुर्वासाः.



जो दिट्ठु सजंजुउ णट्ठु मउ	केसरिकिसोर चउवीसमउ । 5
सो अंतैमिल्लु जिणु जोइयउ	कामुयकुल्लिगिपच्छाइयउ ।
जे विट्ठा हरि करि भारहय	भजंतपट्ठि कह कहं व गय ।
ते अंतैमैरिसि भवपंकहरु	धरिंहिति णं ते चारिसभर ।
जं दिट्ठउ जिण्णपण्णपडलु	तं णीरसु होही धरणियलु ।
जे विट्ठा दुरयारूढ कह	ते णिव होहिंति कुकुल कुमइ । 10
जं दिट्ठु उल्लयहं हुयउ रणु	तं होसइ बहुणयलीणु जणु ।
जं दिट्ठउ भूयहं णच्चणउं	करिही तं कुसुरसमच्चणउं ।
घत्ता—जं मज्झि असुंदरु पइं सुवर्णउं सरु दिट्ठउ जलु तीरंतंतिं ॥	
तं घम्मु महारउ उवसमगारउ थाही महिपच्चंतंतिं ॥ ११ ॥	

## 12

जं दिट्ठइं रयणइं रयवहइं	तं मुणिउलाइं मलसंगहइं ।
पंचमजुगि रिद्धिविवज्जियइं	होहिंति सइंदियविज्जियइं ।
जं दिट्ठा पुंजिय पइं कविल	तं जे विड सुहलंपड कुडिल ।
जे गुरु आसत्ता तरुणियणे	पुज्जारुह ते होहिंति जणे ।
सिचिणंतरी णिवकुलकुमुयससि	पइं अवलोइय भो रायरिसि । 5
जे तरुण वसह कलंकट्ठुणि	ते तरुणमणुय होहिंति मुणि ।
जिह जिह जराइ तणु परिणविही	तिह तिह धणास गुंरुवी हविही ।
दुस्समकालइ तिट्ठाइ सहुं	मरिंहिति थेर धुंउ वयणुं महुं ।

घत्ता—जं ससिपरिवेसउ दिट्ठु दुरासउ तं कलिकालि ससीसहं ॥

णउ णिव मणपज्जउ अवहिदुइज्जउ होही णाणु रिसीसहं ॥ १२ ॥ 10

१ MBP णट्ठमउ, ३ MBP अंतैमिल्लु, ४ P पुट्ठि, ५ P कह वि, ६ MBP अंतैमि, ७ MBP ण जिणचारितं, ८ MBP जुण, ९ P ता, १० MBP सुकउं, ११ P तीरंतरहिं.

12. १ K पंचमि जुगि, २ MBP णिजियइं, ३ MBP पइं पुजिय, ४ MBP सुहउ लंपड, ५ MB जिणे, ६ P कलयठं, ७ MBP गरुवी, ८ MBP धुउ, ९ MB वयण.

11. 5 a सजंजुउ जम्बुकसहितं, 10 a कइकपयः, 12 b कुसुरं कुत्तितदेवाः.

12. 1 a रयवहइं रजआच्छादितानि सल्लिनानि, 9 दुरासउ दुष्टफलदायी, स, सी, स हं शिष्यसहितानासु.

जं दिट्टउ घवलहं तणउ गणु  
 संघाडण भमिहिति जइ  
 जं पइं सिविणुलइ तक्रियउं  
 जं मेहहिं जगु अंधारियउ  
 जो दिट्टउ सुक्खउ ढंखेतइ  
 पुत्तइं उल्लंघियपिउवयइं  
 किउ काइं वि णउ सहिहिति पेरे  
 होहिति मिच्च कंठियवइइ  
 होहिति विईवि णिष्फल बिरस

तं चरिही णउ पक्कु जि सर्वणु ।  
 जाणेणिएणु दुस्समकालगइ ।  
 जं दिणयरमंडलु ढंक्रियउं ।  
 तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।  
 सो णरणारिहिं दुचरिचैमइ । 5  
 होहिति कलत्तइं पररयइं ।  
 काणीण दीण खल धरि जि धरे ।  
 पिप्पलबबूलपायं व खयर ।  
 होहिति मुणि वि बद्धामरिस ।

बत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ बयणु समप्पइ भरहि भुवैणपंकयरवि ॥  
 तिह तिह तमु पहरइ दंसदिउ पसरइ कुंदपुष्फदंतच्छवि ॥ १३ ॥ 10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकरपुष्कर्यंतविरहय  
 महाभवभरहाणुमणिणय महाकवे भरहसिबिणयसंस्याउच्छणं  
 णाम एकुणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १९ ॥  
 ॥ संधि ॥ १९ ॥

13. १ MBP समणु. २ MBT ढंक्र. ३ P दुचरिणु. ४ MBPT वड्डियं. ५ MB पायर.  
 ६ MBP विडव. ७ MB भुवणु. ८ P दंसदिसि. ९ MBP भरहसंस्याउच्छणं.

13. 1 b चरिही चरिष्यति. 5 a ढंखेतइ पत्रपुष्पफलरहितो वृक्षः. 8 a कंठिय वइइ यहीतवेरा.  
 11 कुंदपुष्फदंतच्छवि कुन्दपुष्पवत् शुभ्रा दन्तानां छविर्दासिः.

## XX

रिसहै भरहुहु भासियई चिर एवहि हउं गुज्जु ण रक्खमि ॥

भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसड्डिपुराणइं अक्खमि ॥ धुवकं ॥

### I

तहिं तइया देवें बुत्तु एम  
तेल्लोक्कं देसु पुर रञ्जु तित्थु  
अट्ट वि पारंभियपुण्णठाणि  
लोलंति पलोइज्जंति जेत्यु  
सो केण वि किउं ण कया वि धरिउ  
चलु णिच्चलु सो ससहाववडिउ  
बालिस कहंति जडयणहं हेउ  
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं  
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु  
किं गयणि होइ पंकयपवित्ति

णिस्सुणहि णंदण हो मणुयदेव ।  
तैवु दाणु गईहलु सुहपसत्थु ।  
साहेवा हौंति महापुराणि । 5  
दव्वइं तें लोउ भणंति पैत्थु ।  
जीवाजीवहं णिर्क्खुब्भु भरिउ ।  
आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।  
देवें सिट्ठारें कियेउ लोउ ।  
महिमारुयवेसाणरवणाइं । 10  
णीरुवहु होइ णिई वि वत्थु ।  
दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

फणिनि विमुह्यतीव भेचकरुवि कचनिचयेषु योषिता-  
मलकिषु मूच्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।  
मदमुचि मायतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खड्गणे ॥

P reads खण्डणे for खड्गणे. GK do not give it.

1. १ P भासियए. २ MBP तेल्लोक्क. ३ MBP तवदाणगईहलु. ४ MP सहु. ५ MBP तं लोउ.  
६ P तेत्थु. ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ. ८ MB णिक्खुत्तु; P णिक्खुत्तु; T णिक्खुब्भा निरंतरम्. ९ K  
कयउ. १० MBP ण रुवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वक्खं पि न भवति.

1. 1 चिर पूर्वम्. 3 a तहिं समवसरणे. 5 a-b त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या  
भवन्ति. 6 b तें तेज कारणेन. 7 b णिक्खुब्भु निरन्तरम्. 8 a चलु णिच्चलु चलो जीवः पुद्गलपेक्षया;  
निश्चलो धर्माधर्माकाशकालपेक्षया. 9 a बालि स अहाम्; हेउ कर्ता; b सिट्ठारें निवात्रा. 10 b °णाइं जलानि,  
11. b णिरु वि अपि निश्चयेन.

धम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु  
णिक्कियिहु कहिं किरियाविसेसु  
विणु तिठ्ठित्तं णउ फलंति  
विणु छत्ते किं सावडइ छाहि

कहिं लब्भइ इच्छापसर तासु ।  
णिक्कलुसडु होइ ण हरिसु रोसु ।  
किह करणहरणबुद्धीउ होंति । 15  
सिवि लंमी किं कत्तारवाहि ।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयर करउ कुंभु तं महु मणि भावइ ॥  
सिद्धं अप्पणं जगु अप्पणं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ ॥ १ ॥

## 2

विणुं घडयारेण सहैव लेइ  
तो पक्कु कम्म कत्तार भणमि  
जइ ईसर भुवणयलहु णिमित्तु  
जइ णिञ्जु ण तो परिणामरिद्धि  
विरणपिणु भंजइ भुवणकोसु  
जयं सयल वि पसु णिक्किय करइ  
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु  
जइ लिप्पइ णउ दुरिण सिद्धु  
जइ पमणह ण सिद्धं सिवंसु चंड  
पुरदाह वहरिचह रुहिरपाणु

मिण्णिडंउ जइ सहं कलसु होइ ।  
णं तो पुणु भेयविमिण्णु गणमि ।  
तो तासु कवणु तंणुणविचिचु ।  
णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि ।  
जइ पही दीसइ कील तासु । 5  
संघारसमइ ससरिरी धरइ ।  
पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु ।  
तो किं अर्थसिरलुंचणि असुद्धु ।  
तो णाउं होइ किं हेमखंड ।  
णच्चेवउ किं संतडु विहाणु । 10

११ MBP तिठ्ठित्तं; T तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्रम्. १२ MBKT सावडइ; P छावडइ. १३ P लगउ. १४ MBP सिउ. १५ P अप्पणु.

2. १ K विण. २ MB घडयारण. ३ MBP सहउ. ४ MBP मिहण्डिउ. ५ MT तं गुणु विचिचु. ६ MBP भणइ. ७ M जइ जयल; K जइ सयल. ८ P अयसिरी लुंचणि. ९ MBP सिउ.

14 a णि किं रियहु निव्यापारस; किं रिया विसेसु कार्योत्पत्तिविशेषः; णि कलु सडु कर्मरहितस. 15 a तिठ्ठेत्यादि—तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्रं कारणमौषधं वा तेन विना कथं करणहरणादिबुद्धयो भवन्ति, तथा नैवेताः फलन्ति. 16 a सावडइ संपद्यते; b कत्तारवाहि कर्तृत्वव्याप्तिः 17 भावइ घटते. 18 सावइ शापं ददाति.

2. 3 b तं गुणु विचिचु कर्तृत्वगुणविचित्रम्. 5 b कील कीडा. 6 a पसु कर्मबद्धा जीवाः सर्वे पशवः कथ्यन्ते; b ससरिरी धरइ स्वस्वरूपतां नयति. 7 a पासु कर्मबन्धनं गले पाशो वा. 8 b अयसिरं ब्राह्मणस्य शिरः; असुद्धु ब्रह्महत्यायुक्तः. 9 a सिवंसु शिवकला; b णाउं सीसकं नागम्; हेमखंडं सुवर्णखण्डम्.

परियाणिउं होंतउ जइ हरेण  
जइ वच्छेण जि कियउ लोउ

तो दाणव णिमिय काइं तेण ।  
तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिण्णहेण ण दिट्ठिइं मिच्छाविसविदुयणीसंदइ ॥

किं वणिणयइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ सहं जि मग्गु  
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ  
को जाणइ केही हरहु चेट्ट  
कम्माणुंय सा जइ भणसि पम  
माहेसर किं गोवइ थवंति  
अणिबद्धंउं महु णरजम्मयारि  
जिह सिवु तिह बंभुं ण विणहु अत्थि  
विणु णरसंताणें मणुउ केम  
सत्तेकपणेकसुरज्जुपिहुलि  
वेत्तासणझल्लरिमुंरयरुवि  
तहु मज्झि परिट्टिउ तिरियलोउ  
एकेण एकु वेदिउंय ताम

णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।  
तो किं कयायइ तवभावणाइ ।  
होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ट ।  
ता पलइ सुयण संहरइ केम ।  
जड मत्त पिसल्लय किं चवंति । 5  
पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।  
विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।  
अणिहणु अणाइ जगु सिद्ध पम ।  
अहमज्झउट्ठुंमुवणग्गकुयलि ।  
चोईहकैयाउच्छेहभावि । 10  
गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।  
छेइल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणणवमेहलइ मंइरमउडें मंडिउं भावइ ॥

जंबूदीउ पसिंहुं जणि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३॥

१० MBP जिण्णहेण वि. ११ P दिट्ठियइं.

3. १ MBP कयाइ. २ MBP होही. ३ MBPT कम्माणुवसा. ४ MPK अणिबद्धं. ५ MBP बंभुणु विणहु. ६ MBP भुयणंतकुयलि. ७ M मरवरुवि; BP मुरवरुवि. ८ BP चउदहं. ९ MB वि तियउ. १० MBP छेयहु. ११ MBP लवणंउहिं. १२ MP मंदिउं. १३ P वेदिउ. १४ MBP पसल्लु.

12 b वि होउ विशिष्टो भोगः. 13 मिच्छेत्यादि—मिथ्यात्वजलविन्दूनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु.

3. 1 b णिव हे मरत, अथवा, हे श्रेणिक. 2 b कया यइ कृतया. 3 b णिट्ठु वियइट्ट निष्ठापितं ध्वस्तं इष्टं प्राणिनां वाञ्छितं यया. 4 a कम्माणुय कर्मानुसारिणी. 5 a माहेसर शैवाः; गोवइ शंकरः. 9 a सत्ते के त्यादि—यथासंख्यं सत्तैकपदैकशोभनरज्जुके विलीर्णैः; b कुयलि भूतले. 10 b कैयां रज्जवः; उच्छेहभावि दीर्घत्वम्.

4

दहखेत्तभाय जहि रिद्धिचंत  
ददकुलिसकबांडंभियपहाई  
सप्पुरिसचिचु जिह तिह विसालु  
फलहमयकुसुममंजरिसुसेउ  
जंबूतर जंबूदेवठाणु  
णं जगलच्छिह भूसणवियार  
णकखत्तहं संख ण मुणि भणति  
तहि दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि  
घत्ता—दैक्खिणतीरि रम्मि विउले णीलइरिहि उत्तरदिशि मंडि वि ॥

छव्वरिसधारि घरसाणुमंत ।  
चउदारं चोदह णइसुहाई ।  
परिवड्डियमरगयरयणडालु ।  
पवरिंदणीलमयैहलणिकेउ ।  
जसु देवहिं दिट्ठउ छुउं णिवाणु । 5  
जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।  
अम्हारिस जड कइ किं मुणंति ।  
सीओयहिं जलकीलियझसाहि ।

गंधेले णामं विसयविह थिउ महिवहु णावइ अवहंडि वि ॥ ४ ॥

10

5

ओ पारियायचंपयकैलंबमुचुकुंदकुंदमंदारसारसेरिंघगंधगुमुगुमियमंहुयराली-  
मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुरैरकारंडकोइलारावरम्मो ॥ १ ॥

ओ मत्तदंतिगंडयलगलियमैयतुप्पविहुचित्तलियवारिवियरंतणहंततयिसिंद-  
कामिणीसिहिणघुसिणपिंगलियफेणसोहियसरंतो ॥ २ ॥

ओ विविहधण्णफलणैवियछेत्तकणसुरहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुद्ध-  
हलिणीविमुक्कछोक्करणकलरवोदिणकणथियचरणहरिणसेल्लणसीममग्गो ॥ ३ ॥

ओ कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुट्टमैरुमंथमाणगोमैहिसोहदुब्बमंतदुद्धघयदहिय-  
वाधिर्मज्जंतपंथियसमूहो ॥ ४ ॥

4. १ T साणुवंत. २ PT °कवाडई चियपहाई. ३ MBP °मेहलणिकेउ. ४ MBP देव. ५ MBP पुउ. ६ MBP जयलच्छिह णं. ७ MBP उत्तरतीरि. ८ MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिशि इति संबन्धः; दक्षिणतीरे णीलइरि इति संबन्धः. ९ MBPK गंधिलु.

5. १ MBP °कयंब. २ MBP °महुयरोली. ३ MB °कुरल°. ४ B °मयदप्पविहु°; P °मयतोयविहु but gloss लिख. ५ MBP °भरिय°. ६ M °सच्छरोमंथ°; BP °सच्छरोमंथ°. ७ K °माहिसोह°. ८ MBP °मज्जंतपंथिय°.

4. दहखेत्तभाय भरतहैमवतहरिरम्यकहैरण्यवतैरावतक्षेत्राणि पूर्वविदेशे अपरविदेशः कुरवः उत्तर-  
कुरवः; छव्वरिसधारि षट्कुलपर्वताः. 4 छहल °फल°. 5 छणिवाणु निर्माणं संस्थानं वा. 10 वि-  
सयविहु देश एव विटः.

5. 2 °सिहिण° स्तनौ. 3 थियचरण° स्थितं त्यक्तं चरणं भक्षणं गमनं यैः.

जो रुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण-  
सुण्हाणिहितणीसासतावविहडंतगोट्टोहंतगोट्टो ॥ ५ ॥

5

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमंयंदपुंजपिजरिय-  
तुंगणगोहरोहपारोहडालडोल्लायमाणजक्कीविलुंपियासणपामरोहो ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिकमायंदगोच्छधावंतवाणरोमुकधीरबुकारतसिय-  
णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंभणुङ्गणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकब्बडमडंबसंवाह-  
णाहरमणीयभूपपत्तो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाहकयसमयविरहिओ वीयरायणयतोयधोय-  
लोयंतरंगसुद्धो सहावैसोम्मो ॥ ९ ॥

जो धोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवदणपसत्तणरभिहुणगहअ-  
चारित्तभत्तिविह्वियविसमपावावलेवो ॥ १० ॥

10

घत्ता—जिं हिं वेयडूमहासिहरि मज्झि परिट्टिउ दीसइ केहउ ॥

रुण्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेदिहि रमियखयरि  
पण्कुल्लियसयवलपरिमलेण  
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण  
आवद्धे रयणविचित्तपण  
णाणादुधारमणितोरणेहिं  
दीसइ णंदणवणणीलकेस  
चूळामणिचुंघियणहयलाइं

अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।  
परिवेदिय जा परिहाजलेण ।  
जा सोहइ णाइ णियासणेण ।  
पायारकणयकडिसुत्तण ।  
णं छजइ कंठविहसणेहिं ।  
पुरि णं अवैयरिय मउव्व वेस ।  
जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

5

१ M °गोहो. १० MP °मयरंदपुंजरिय°. ११ MBP °डोलायमाण°. १२ M °कयमय°. १३ M सहाव-  
सोमो. १४ All Mss add:- इमी विसमसीसयछंदजाइं कहिया. १५ MBPK तहिं.

6. १ MB उत्तरे सेदिहि. २ MBP पण्कुल्लिय. ३ K अवैयरियउव्व वेस.

5 °सा मा° रात्तिः. 9 हो रं शंकरः; °णा र सी ह°; नरसिंहः; आ र णां ल सं भ वं° ब्रह्मा. 10 °य रिण य° प्रवृत्तः.

6. 3 ङ णिया स णे ण परिधानवस्त्रेण, 6 ङ वे स वेस्मा.

णं धूर्वं सुधूर्मे णीससंति  
णं अलिङ्गकारे सरं गुणंति  
धयवड णं णियकरयल धुणंति  
अमहं सारिच्छा दिव्वगेह  
पवसियपियाहिं पेहियकरेहिं

णं मुत्तावलिदंतेहिं हसंति ।  
णं गुरुगवम्भकणहिं सुणंति ।  
णं सिहिरवेहिं के के भणंति । 10  
जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।  
संतावयार तल्लंतविरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमलु विरहिणीइ मणिभित्तिहिं दिट्ठुं ॥  
संज्ञेइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पउं मणिणउ णिक्किट्ठुं ॥ ६ ॥

## 7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं  
घरु हरिणीले णीलियउ जाम  
णयणइं ण लहंति णयाणणाइ  
णिदेप्पिणु रंगावलिपयाइ  
जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि  
उग्गायकजिक्करयंकयाइं  
जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ  
जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण  
जहिं उववणाउ घैरि सिरि चडंति  
हयमुहफेणहिं कुंजरमपहिं  
संजणियपंक जहिं रायमग्गा  
जहिं णिञ्चुच्छव मंगलपसत्थ  
जिणधम्ममाणंदिय भुत्तभोय

वहुपायालत्तयविलसियाइं ।  
ताविच्छडु केरी सोह ताम ।  
जहिं एम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।  
जहिं कुलवहु बंधइ कंठि हाइ ।  
जहिं पंगाणि पंगणि तोयवावि । 5  
जहिं वाविहिं वाविहिं पंकयाइं ।  
जहिं हंसि हंसि कलरव विहाइ ।  
कामेण समप्पियं कामवाण ।  
पुणु विविह पक्खि उववणि पडंति ।  
तंबोल्हिं माणवमुहसुपहिं । 10  
वच्चंतजाणजंपाणदुग्गा ।  
अस्सिमसिकिसिविज्जावज्जियत्थ ।  
णिरुवद्व जहिं णिवसंति लोय ।

४ MBP धूव सधूर्मे. ५ MBP दंतिहिं. ६ MBP सर. ७ MP अमहं; B अमहं; K अमहं but gloss असत्सदशाः. ८ P °तंबरेहिं. ९ MBPT संज्ञेइ सुत्तविउद्धियहिं.

7. १ MBPK सोहइ. २ MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरडु. ३ MBP धरसि. ४ MP °मुहसुपहिं; ५ MB °वेजा°.

12 ऽ संतावयार संतापकरा मेघाः. 14 सुत्तविउद्धियइ सुत्तविउद्धयां जागरितया.

7. 1 a °णिरसियाइं तिरस्कृतानि. 2 ऽ ताविच्छडु कज्जलस्य. 3 a णयाणणाइ नमंसुद्धयां; ऽ धणाइ वज्जा क्षिया. 8 a हयणिमाण हतत्तमानः.



घत्ता—अश्वत्थु नामे तेत्थु पट्टु सो जइ वि हु ण होई दोसायर ॥

तइ वि हु कुवलयतोसयर सोम्मे वि चंडपर्याव पहायर ॥ ७ ॥ 15

8

कुलणहसवियार वि णिवियार  
इहलोयत्थु वि परलोयमत्तु  
जयंगहियग्गुं वि अक्खयगुणोहु  
बलवंतु वि अवलासयहं गम्मु  
णीसु वि लक्खणलक्खियसरीर  
दूरत्थु वि णियंढत्थु वे ह्यारि  
सुयभिण्णमणु वि दढचित्तवित्ति  
अइसच्छु वि रंहियसमंतचार  
संगर वि जिणइ संगरि दुजेय  
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ

सुहसीलु वि धरियधरित्तिभार ।  
गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।  
णिब्बाहु वि करिकरदीहवाहु ।  
अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।  
ससहावे धीर वि पावभीर । 5  
रइवंतु वि परवहुवंभयारि ।  
बहुपालिरो वि दिसघित्तकित्ति ।  
गुंरओ वि गुरुहुं लहु विणयसार ।  
लच्छीवासु वि खरदंढ णेय ।  
ठाणत्थु वि तच्चैरणेहिं भमइ । 10

घत्ता—जो महिमाहर पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥

जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

९ MB होय. ७ MBP सोम. ८ MBP चंडपयाउ.

8. १ MBPK जग°. २ P गुणि. ३ K लक्खियलक्खणसरीर. ४ P णिवडत्थु. ५ M वि. ६ P इय°. ७ MB गरुवो; P गरुओ. ८ M खरदंढु; BP खरदंढु. ९ MBP चर°. T चल°. १० M वाणत्थु; MP थाणत्थु. ११ MBP तच्चैरणिहिं भमइ.

15 चंडपयाव चण्डप्रतापः; पहायर प्रभाकरः.

8. 1 a कुलणहेत्यादि—यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्; अन्यत्र कुलाकाशे सवियार सविता; b सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च. 2 a परलोयमत्तु मोक्षश्रद्धालुः. गोवालु पशुपालः; अन्यत्र गौः पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च. 3 णिब्बाहु निबोधः प्रलम्बबाहुश्च. 4 b अविडप्पु विदोषो राहुः सः अभवन्नपि विलंघितसूर्यतेजाः, अन्यत्र विदात्मा न भवति. 5 a णियसूरहत्थु निकटस्थः, आसन्नधनश्च. 7 b बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्पातीति बहुपा पुंश्वली तां आलिं सखीं राति आदत्ते यः सः कथं विक्षु प्रवृत्तकीर्तिः; अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च. 9 a संगर स्वाज्ञे स्वशरीरे हम् व्याधिर्यस्य स स्वाज्ञश्च. 10 a सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुतः स कथं चलनयनैः पश्यति; अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्टं सूत्रं नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; b वयइ व्रजति गच्छति. 11 महिमाहर पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्.

9

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल  
 णं वित्तामणि संदिण्णकाम  
 णं रुवरयणसंधायखाणि  
 णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि  
 णं घरवणदेवय दुरियसंति  
 णं घरगिरिवासिणि जक्खपत्ति  
 महपवि तासु घरकमललच्छि  
 तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण  
 घत्ता—जाणं जेण थणंधएण दुज्जणंवंदु सयलु संताविउ ॥

णं मयणहु केरी परमलील ।  
 णं तिजगतहणिणोहमासीम ।  
 णं हिययहारि लायणजोणि ।  
 णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।  
 णं घरछणससहराधिबकंति ।  
 णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।  
 णामेण मणोहर पंकैयच्छि ।  
 अलयाउरिघर्रेणाहेण तेण ।

5

णल्लिणु व णवदिवसाहिवेण णियगोत्तु हरिसें विहंसाविउ ॥ ९ ॥

10

10

कुम्भुणयकमु  
 केसरिकड्यल्लु  
 आयंविरणहु  
 णवजलहरयुणि  
 सुरकरिकरकर  
 विसवइकंधर  
 गुणरंजियजणु  
 डण्णयमालउ  
 अलिणिहकोतैल्लु  
 मणुयकलेवर  
 किमिडुलसंकुलु

दुज्जयविकमु ।  
 वियडोरत्थल्लु ।  
 कणयसमप्पहु ।  
 कुलचूडामणि ।  
 तरणीमणहर ।  
 रज्जुपुरंधर ।  
 अहिणवजोवणु ।  
 पेच्छिवि बालउ ।  
 चित्तइ अइवल्लु ।  
 अट्टियपंजर ।  
 रहिरचिल्लिवल्लु ।

5

10

9. १ MBP °खोणि. २ P मणोहरि. ३ MBP कुवल्लयच्छि. ४ MBP °वरणाहेण. ५ MBP दुज्जण-  
 वग्गु. ६ MBP वियसाविउ.

10. १ MBP °कडियल्लु; K कडयल्लु but corrects it to कडियल्लु. २ P रज्जु. ३ MBP  
 °कुंतल्लु. ४ K omits अट्टियपंजर.

9. 4 a रइसुहेल्लि रतिसुखयुक्ता. 6 a जक्खपत्ति कुवेरभार्या. 9 थणंधएण पुण्ण.

10. 11 b °वि लि वि ल्लु बीमत्तम्.

लालाविट्ठलु	अंतहं पोड्डलु ।	
पिउवणभौयणुं	पाक्खिहिं भोयणुं ।	
सोलहकंदरु	णवदारंतरु ।	
कामे जिप्पइ	लोहे धिप्पइ ।	15
कोहे तप्पइ	छम्मे लिप्पइ ।	
कैम्मे वज्जइ	मोहे मुज्जइ ।	
सत्ये भिज्जइ	रोए सिज्जइ ।	
जरइ कुडिज्जइ	काले खिज्जइ ।	

घृत्ता—भणित् सणदणु पत्थिवेण संति करेज्जसु णियसंताणहो ॥ 20

तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मइं पुणु जापवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

## II

चवलयर कुसासणवस चरंति	महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।	
जरमरणहं किंकर किं करंति	मायंग अंग किं मोक्खु दैति ।	
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति	ए अवरं वि जगि असुवह ईवंति ।	
अंतेउरु अंते उरु जि हणइ	रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।	5
भवपासबंधु सुहिवंधुणियरु	खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।	
धणु इंधणु लोहहुयासणासु	घरु विग्घरु केवलदंसणासु ।	
फणिमोउ व भोउ ण भुंजणिज्जु	आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्जु ।	
दुक्कियणिहेसु व देसु भणमि	खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।	
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु	किं रक्खइ खइ गच्छंतु प्राणु ।	

५ M भावणु. ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयकोयणु, पाक्खिहिं भोयणु. ७ MB add after this: गुणगणमोयणु, सोयकोयणु. ८ MBPT °कंदरु. ९ MBP छिप्पइ. १० B कामे. ११ MBP खज्जइ.

11. १ MBP वहति. २ MB केवलु दंसणासु. ३ P खज्जंतु. ४ MBP पाणु.

13 a पिउवण° इमशानम्. 16 b छम्मे मायया.

11. 1 a कुसासणवस कुशायास्त्रार्जनकस्य असनवशास्ताडनवशाः, पक्षे कुशासनवशाश्चावाकादयः; b वा इ वाजिनोऽश्वाः. 2 b अंग संबोधनेऽव्ययम्. 3 b असुवह प्राणघातकाः. 4 a अंते विनाशे; डरु ह्वयम्. 6 b विग्घरु विघ्नकरम्. 8 a °णि हेसु उपदेशः. 9 a हासणु हा हति स्वनः शब्दः.

किं छत्तहिं छत्तायारभूमि  
चामरु मरु देइ ण मरणहारि  
पलियंकियसीसु ण सीसु होइ

पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि । 10  
ण समंति केउ झसकेउधारि ।  
जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ ।

घत्ता—एम पयंपि वि राणपण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं ॥

बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिंसिचिवि सिपेहिं सिरिकलसहिं ॥ ११ ॥

## 12

जं जयजयसई बद्धु पट्टु  
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि  
जो छिंदइ सिंचइ चंदणेण  
जो थुणइ जो वि दुव्वयणु देइ  
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु  
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं  
कामिणियणसिहरालिङ्गणेहिं  
तंतीपुक्खरवज्जाइपहिं  
उच्छलियपहयघडियारवालु  
पैदमिल्लु महामइ णिहयभंति  
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्ध

तं पुरु मेळिवि णरवइ पयट्टु ।  
थिउ णिज्जाणि वणि जिणदिक्ख लेवि ।  
विंधइ सरेण मण्णइ मणेण ।  
दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।  
एत्तहिं वि तासु सुउ करइ रज्जु ।  
आहरणें मणिकंचणघणेहिं ।  
उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं ।  
स रि ग म प ध णी सरगाइपहिं ।  
भोयासत्तहु तहु जाइ कालु ।  
बीयउ संभिण्णमउ सि मंति । 10  
सइवुद्धु चउत्थउ जगपसिद्धु ।

घत्ता—तेण णैराहिउ विण्णविउ हुयवहु तरुत्तेणेहिं किं धायँउ ॥

सार्यरु बहुसरिवौणिपहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ ॥१२॥

५ MBP सीसे.

12. १ MBPK आहरणहिं, २ M पढमिल्ल, ३ MBP णराहिउ, ४ MBP कि तरुणेहिं, ५ P धाविउ,  
६ M सायर, ७ MBP ° वाणिपहिं.

10 a छत्तायारभूमि मुक्किल्ला, 11 b झसकेउधारि कामः, 12 a सीसु शिष्यः, 14 सिपेहिं  
रूप्यमयैः.

12, 3 b मण्णइ अनुमतिं करोति. 10 a णिहयभंति निःसंदेहः, 12 धायउ वृत्तः.

## 13

जिहं पामा करहहफंसणेण  
तिह णिच्चं कामु सेविज्जमाणु  
वड्डइ लोहेण मैहंतु लोहु  
वड्डइ णयहीणु णिपवि माणु  
वड्डइ रइ अणुअंघेण मोहु  
महिणाहु होवि पुणु होइ साणु  
उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि  
सा केण वि कथइ आणियाइ  
सा णारि सहावदुगंध चडुल  
घत्ता—भुक्ख सरीरि समुच्चवइ तं जि दहइ सा झत्ति पलित्ती ॥  
अत्थि ण देहि गंविट्ठु मइं तहि उवसमविहि परवस उंत्ती ॥ १३ ॥

संभासणपियमुहदंसणेण ।  
वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।  
वड्डइ हंकारं तिर्वं कोहु ।  
परवंचणेणं मायाविहाणु ।  
इय जीउ करेण्णिणु धम्मदोहु । 5  
संसारि कवणु रायाहिमाणु ।  
संकप्पं तप्पइ ताइ देहि ।  
पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।  
अण्णासत्ती धणगम्म कुडिल ।

## 14

फासरसवसंगय महि भंमेवि ।  
गायंति के वि णच्चंति के वि  
सीवंति के वि तुण्णंति के वि  
करिस्सणु करंति पहरणु धरंति  
आवंतु विसिद्धु ण संसहंति  
कम्मेहिं धणाइ समज्जिऊण  
दिवसावसाणि समसंत होंति  
अह उड्डमग्ग वड्डियणिणाय

वायंति के वि वण्णंति के वि ।  
धणकज्जि पदंति लिहंति के वि ।  
चड्डयम्महिं परहियवउ हरंति ।  
अम्हइं गुणवंता सइं कहंति । 5  
आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण ।  
णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।  
धावंति सइच्छइ वे वि वीय ।

13. १ P जहिं. २ P णिच्चु. ३ MBP अणंतु. ४ MBP तिष्ठ. ५ MBPK णियहीणु. ६ MP  
°वंचणेण मणि मायठाणु; B °वंचणेण मणि माइ ठाणु. ७ MBP; अणुअंघेण. ८ BP उहइ. ९ M गव्विट्ठु.  
१० MBP बुत्ती.

14. १ MB भमेमि. २ G पुज्जिऊण. ३ B पाय.

13. 5 a अणुअंघेण संतत्या प्रवर्धनेन. 8 a आणियाइ आनांतया स्त्रिया. 11 ग विट्ठु गवेपिता; उव-  
समविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवसा एव  
उपशमविधिर्दृष्टा.

14. 7 a समसंत श्रमश्रान्ताः; b णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखः. 8 b वेवि वाय अधोवात ऊर्ध्ववातय,

गिहइ रीणत्तणु खयहु जाइ  
आहारु भुत्तु परिणवइ अंगि  
उट्ठंति गोसि पुणु णीससंत

खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि थाइ ।  
पज्जलइ पित्तु हयसेंभसंगि । 10  
किह रक्खइ धणु पणइणि भणंत ।

वत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेति केर कासु वि बलवंतहो ॥

जीहामेहुणरसरसिय जंति जीव णरयहु सुदुरंतहो ॥ १४ ॥

## 15

धणणियरविहीणे किं कुलेण  
वरसलिलविहीणे किं सरेण  
सुवियडुविहीणे किं पुरेण  
चारित्तविमुक्के किं सुएण  
किं चापं मणसंतविरेण  
किं करिणा अवगणियंकुसेण  
किं पुरिसं पसरियडुज्जसेण  
किं सुणिणा पंचिवियवसेण  
किं मत्ते कयंवहुवरएण  
किं गुरुणा मोहंधारएण  
किं दुज्जणमदुरालौविएण

णियणाहविहीणे किं बलेण ।  
सुकलत्तविहीणे किं धरेण ।  
परवहुणहवणिपं किं जरेण ।  
पिउपयपडिक्कळे किं सुएण । 5  
किं माणं पियमुहदोविरेण ।  
किं हरिणा अवगणियंकुसेण ।  
किं णच्चिएण वियलियरसेण ।  
किं धुत्ते पेम्मपरव्वसेण ।  
किं परियणेण परवइरण । 10  
किं सीसे अविणयगारएण ।  
किं धम्मविहीणइ जीविरेण ।

वत्ता—पुणु सइवुद्ध पसण्णमइ खगवइ रायहु अग्गइ भासइ ॥

धम्मडु एत्तिउ सारु णिव जं पइ अप्पसमाणउ दीसइ ॥ १५ ॥

४ MBP संभवइ, ५ MBP °सिन्°.

15. १ MBP °संतावएण, MB °दाविएण, ३ B अविगणियं°, ४ MP भत्ते; B सत्ते, ५ P बहु-  
कयवइरण, ६ MP मोहं धारएण, ७ MBP °लावएण, ८ MBP धम्मविरहिणं, ९ MP जीवएण,  
१० MBP परमाहियत्ते मतिवर खयरवइ रायहु.

6 b खलु छिण्णउ तिलखलश्चित्तश्चित्तः सन् रसो दुग्धं भवति, तथा निद्रया श्रमो गच्छति. 10 b हयसें भ-  
संगि श्लेष्मसंगे हते सति पित्तमुत्पद्यते. 11 a गोसि प्रभाते. 12 केर आज्ञाम्.

15. 4 a सुएण श्रुतेन; b सुएण सुतेन. 6 b हरिणा अश्वेन; °कुसेण °वावुकेन (तर्जनेन). 9 a  
मत्ते मत्तेन मनुष्येण; b परवइ° परपतिः.

16

सञ्चेण दयादाणेण धम्म  
तेणेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख  
धम्मेण हौति कप्पामरिंद  
अहमिंद रुंदचेदाहजोण्ह  
मणिमउडसिहरसोहिलसीस  
पडिवासुएव कुसुमसर रुह  
कइगमयवम्मिवाइत्तणाइं  
सोहंग्ग रुंउ कुलु सीलु कंति  
जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु  
घत्ता—धवलीहूयउं सिरकमलु भोउ देव केसिउ भुंजिज्जइ ॥

अलिपण जीवहिंसइ अहम्मु ।  
कुच्छिय सुर हौति तिसल्लतिकस ।  
अरुहंत चक्कि चारण सुणिंद ।  
धम्मेण हौति जगि राम कण्ह ।  
मंडलियमहामंडलवईस । 5  
धम्मेण हौति णाणाणरिंद ।  
धम्मेण हवंति वुहत्तणाइं ।  
पोरिसं जसु भुयबलु विमल खंति ।  
तं धम्महु केरउ फलु असेसु ।

धम्म जिणागमभासियउ मणवयकायतिमुद्धिइ किज्जइ ॥ १६ ॥

17

पहु साहिज्जइ सग्गापवग्गु  
अणिहणइं अणाइअहेउयाइं  
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति  
गुलजलपिड्डहिं मयसत्ति जेम  
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि  
जम्माउ ण वच्चइ अण्णु जम्म  
जो परहर पुच्छि वि परहु पासि  
विणु तेहि केम सो सग्गो जाइ  
जासुवरि मुवई मलु जीवलोउ  
जलवुब्बुय जइ कम्मेण हौति

ता विसइ महामइ तहु कुमग्गु ।  
महिमारुयवेसाणरउयाइं ।  
तहिं तहिं वेयणचिंधरं चलंति ।  
भूणसु जीउं संभवइ तेम ।  
करु कण्णु दंतु को कवणु हत्थि । 5  
जणु जेण जियइ तं करइ कम्म ।  
गच्छइ इंदियवुद्धीपयासि ।  
पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णभाइ ।  
परजम्मि तेण कहिं कियउ पाउ ।  
तो जीव वि राय म करहि भंति । 10

16. १ K अरिहत. २ P सोहग्गु सीलु कुलु रुंद. ३ MB रुंद. ४ MBPK पोरिसु जसु.

17. १ MBP °जलघाइहिं. २ M जीव. ३ MBP कण्ण दंत. ४ MB अण्णजम्म. ५ MB सग्गु;  
P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K सुयइ.

16. 4 a °जोण्ह °कान्तिः. 7 a कइगमय° सैद्धान्तिकः सिद्धान्तवैत्ता; °वम्मि° वाग्मी.

17. 2 b °उयाइं उदकानि. 7 a परहर परग्रहम्; b °पयासि °प्रकाशेन. 10 b राय हे राजन्.

घत्ता—कहिं किर सुक्रियडुक्रियई विणु भूयैएहिं जीउ कहिं दिट्ठउ ॥  
जो वाहिउ पांसडियहिं सो हउं मण्णमि चोरैहिं मुट्ठउ ॥ १७ ॥

18

तं णिसुणिवि चविउं चउत्थएण  
परिपालियसमहिंसावएण  
जणि मइरहि दीसइ दिण्णु राउ  
देहें भावेण वि भिण्णु लोउ  
खरवडवारइरैसि वेसरासु  
दब्बेहिं तेहिं तेहउ जि होइ  
सिहि उल्लहंविज्जइ पाणिणएण  
चवलयरु पवणु थिरजड धरित्ति  
एमेयं करिवि अप्पणिय उत्ति  
विणु जीवें कहिं भूयइं मिलंति  
जइ परिणवंति भासहि कुहेउ

मंतिहि षड्पणवियमत्थएण ।  
सुयवंतें परिणयसावएण ।  
चउदब्बपसुयहि एक्कु साउ ।  
किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।  
संभेउ णिदिट्ठु कत्थइ णरासु । 5  
वइचित्तु काइ संजोयवाइ ।  
पाणिउ सोसिज्जइ झत्ति तेण ।  
असरुवहं कहिं मेलावजुत्ति ।  
किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।  
कायाकारेण ण परिणवंति । 10  
तो काढयपिढरि सरीर होउ ।

घत्ता—पंचिदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मेनुं अयाणउ ॥  
जीउ जाइ किह भणसि तुहुं समिग होइ किह सुखरराणउ ॥ १८ ॥

19

दीसइ पयत्थु जणि सहुं गुणेण  
कट्ठिज्जइ आयसु कहुंएण

पाहाणेण वि णिच्चेयणेण ।  
जिह तिह सो कम्मणिबंधणेण ।

७ MBP भूएहिं, ८ MBP चोरें,

18. १ MB दिण राउ, M विभिण्णलोउ; BP ०विहिण्णलोउ, ३ MBP ०रसु, ४ MBP उप्पत्ति करइ  
अण्णहु विणासु, ५ M उल्लाविज्जइ, ६ MB एमेवि; P एमेव, ७ MBP भूयइं कहिं, ८ MBP परिणमंति,  
९ MBP परिणमंति १० M विमित्तु; B चित्तिसु.

19. १ B कट्ठिएण P कट्ठएण,

18. 1 a च उत्थएण स्वयंजुद्धेन; b मंति हि मन्त्रिणा. 2 a ०समहिंसावएण सम्यक्त्व-अहिंसाव्रतेन,  
अथवा, शमश्च अहिंसा चेति; b परिणयसावएण परिपक्वावक्रेण. 3 b साउ स्वादः. 5 a ०वडवां अश्वी.  
6 b संजोयवाइ हे संयोगवादिन्. 9 पउरंदरिय वित्ति चावौकमतस्. 11 b काढयं काथः, 12 चिम्मेनु  
चेतस्यमात्रः.

19. 1 a पयत्थु पदार्थः. 2 a कट्ठएण सुम्बकपाषाणेन.



जंपिउ पई बहुपुज्जाहरेण  
णउ रुसइ सो कयणिग्गहेण  
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु  
भो भूयवाइ भूपहिं भुत्तु  
वइतंडिय पंडिय कव्वु कवहि  
तहिं अवसरि संभिण्णे पउत्तु  
हसियच्छियरमियकयासणाइ  
जो दीसइ सो खर्णवट्ठि खंभु  
घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तर दिण्णु तेण खर्णवाइहिं ॥

वत्थु निरणणउ णत्थि जगि तणजलरसु जि दुद्धु धुंहुं गाईहिं ॥ १९ ॥

## 20

जं णत्थि वप्प तं कुम्मरोसु  
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ  
को जाणइ जिणवरु मुइवि सच्चु  
जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ  
जइ दव्वइं तुह खणमंगुराईं  
किं सा खंधहं बाहिरिय दिट्ठु  
ता सयमइ चवइ मईविसालु  
जिह पयहु केरी सव्व माय  
गुई सीसु धम्मु ववहारु पहु

तं वंझडिभु तं गयणपोसु ।  
आत्थिल्लउ किं पुणु खयहु जाइ ।  
वज्जिवि अरुवि परिणामि तच्चु ।  
तो अण्णे थवियउ अण्णु लेइ ।  
तो खणधंसिणि वासण ण काई । 5  
अण्णुहवु खणिउं किं भंणिउं धिट्ठु ।  
मार्यंणिहय सिविणय इंदजालु ।  
दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय ।  
परमत्थे णउ पद णउ सदेहु ।

२ MBP भवि सुक्किउ. ३ MBP तह दुज्जु. ४ MBP असुद्धउं. ५ MBP खणि भंगचिनु. ६ MB खणवादि;  
P खणि वादि. ७ MBP तेण दिण्णु. ८ MB खणवाइहो. ९ B अत्थि. १० MBP पुउ. ११ MB गाइहो.

20. १ MBP मणसि. २ MBP माइण्हिय. ३ P गुरुसीसधम्मु.

7 a कवहि काव्यं करोषि; b असद्धउं अश्रद्धे अप्रतीतिजनकम्. 8 b खण भंगचिनु क्षणविनश्वरो जीवः.  
9 b वासणाइ चित्तसंस्कारेण. 10 a खंभु रूपविज्ञानवेदनासंज्ञासंस्काराः पञ्च स्कन्धाः; b पासबंधु कर्म.  
12 निरणणउ निरन्वयम्.

20. 2 b अत्थिल्लउ अस्तित्वयुक्तम्. 3 b वज्जिवीत्यादि—अरूपि जीवादि वर्जयित्वा. 4 b वेइ  
जानाति. 6 b अण्णुहवु अननुभूतम्. 7 b माय ण्हिय युगनुष्णिका.

घत्ता—जंबुउ मासखंड मुहवि धायउ सलिलुंगायपादीणहो ॥

10

आमिसु गिद्धे णहि गियउ मीणु गिमज्जिवि गउ गिर्यैठानहो ॥ २० ॥

## 21

जिह सोणरि तिह णरु उइयभट्टु  
अलियाइं जि गिसुणिवि मुयइ धीरे  
आयासु पडेसइ भणिवि तसइ  
इसिपायपणामविणीयपण  
जइ णत्थि किं पि कारणु ण कळु  
जइ होइ असंतउ अत्थकारि  
णिण्णोसहि तेणाहियकरिंद  
णउ सहु ण तुहुं णउ हउं ण वत्थु  
सुणि राय जिणार्गमहासियाइं

परलोयडु लग्गिवि को ण णट्टु ।  
णियतणु दंडइ किं णरयमीरु ।  
टिट्ठिद्धे उत्ताणियचरणु वसइ ॥  
ता गुरुणा भणिउं तुरीयपण ।  
तो किं वीहहि जइ पडइ वज्जु । 5  
तो आणहि सिविणंतैरि मयारि ।  
किं चवहि असच्चउ विउसयंद ।  
भणु होइ इट्ठपडिवत्ति केत्थु ।  
सुम्मंति ण जडयणभासियाइं ।

घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पडु अरिर्विदु णाम विक्खायउ ॥

10

पढमपुत्तु हरिचंदु तहो पुणु कुरुविदु इंदुंसमु जायउ ॥ २१ ॥

## 22

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि  
गयगंधहत्थि भडकालदूय  
ते तिणिण वि सुहुं अच्छंति ज्ञान

रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।  
पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।  
लगगउ डाहज्जर पिउहि ताम ।

४ MBP जंबु. ५ MBP सलिलगयडु. ६ MB गियथाणहो.

21. १ MBP उभय<sup>०</sup>. २ K धीरु but corrects it to चीरु and gloss वज्जं. ३ K टिट्ठिह.  
४ MB सिविणंतर<sup>०</sup>. ५ MMB णिणासिय. ६ MBP विउसइंद. ७ MBPK गमइसियाइं. ८ K अरिर्विदु.  
९ MBP पढमु पुत्तु. १० M इंदुसम; B इंदसमु.

10 <sup>०</sup> पा दी ण हो मत्तयस्य.

21. 1 a सो णरि वृणालः. 4 b गुरुणा मन्त्रिणा. 7 a अहियकरिंद अहितकरीन्द्रा अधिकहस्तिनो  
वा; b विउ सयंद विद्वचन्द्र.

णिहँहइ हारु मलयरुहपंकु  
जलँजलिउ जालजलणु व जलइ  
उवसमइ ण केम वि अंगडाहु  
ताहँ अवसरि पंकयवैत्तणेत्तु  
सो भणिउ तेण हयरवियराइ  
जहिं सुरदिउ कंपिउ देवदारु  
जहिं वाइ वाउ णीवइ सरीरु  
आइसहि सविज्जादेवयाउ  
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ  
घत्ता—सुपण सँविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥

मंतु देउ ओसहु सयणु पुणिण परंमुहि होइ परंमुहुं ॥ २२ ॥

23

पाविट्टहु कह व ण जाइ प्राणु  
लोपहिं भणिज्जइ देव जीय  
कंदइ करोहिं ताडंतु तौहुं  
जुंज्जंतहं कपिउ कायदंदु  
णिर्विडिउ आसासिउ सो रविंदु  
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु  
जइ रत्तद्रहि जलकील करमि

आढत्तउ तेण रउदु झाणु ।  
संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।  
हुँहिदेसँपण सणिहु णरिंदु ।  
पल्लीदेहंतहु रहिरविंदु ।  
सीयलु वणरुहलुं णं छणिंदु । 5  
आपसु दिण्णु तापं सुयासु ।  
तो पुत्त णिरत्तउ णउं मरमि ।

22. MBPK णिहुहइ. २ MBP जलजलइ जलिउ जलणु. ३ MB °पत्त°. ४ MBP पढमु पुणु.  
५ P वलीहराई. ६ MBP संचारिउ. ७ MBP सुविज्जउ.

23. १ MBP पाणु. २ MBP तुंदु; T तौहु उदरम्; K तौहु, but records तौहु in second  
hand. ३ M reads this foot as 4 a. ४ P °देसिणहि. ५ M reads this foot as 3 b. ६ MBP  
हिययत्थिउ आसासिउ णरिंदु. ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्रहि. ९ MBP णेय.

22. 4 a मलयरुह° चन्दनम्. 5 a जलइ जलाद्रं वल्लम्. 11 b मारुयराउ वायुवेगाः. 12 b  
आवाहिउ आकारितः; °णिहाउ समूहः.

23. 1 b आढत्तउ प्रारब्धम्. 2 b संपयसुहि लक्ष्मीसुखार्थम्. 3 a तौहु उदरम्; b कायदंदु शरीर-  
द्रव्यम्. 4 b पल्लीदेहंतहु विश्वंभरदेहमध्यात्. 5 b वणरुह° रहिरम्; छणिंदु पूर्णिमाचन्द्रः. 6 a हरियंदा-  
णु यासु कुरुविन्दस; b सुयासु सुतस.

किंकरकरसिरघडयाणिपण  
खाणि खोल्ल खणेपिणु भरहि तेम

ससमेसमहिसमृगंसोणिपण ।  
सुविहाणइ हउं तहिं ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिमुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिवि कर ॥ 10  
कारिमकीलालहु भरियं विरहय वावि विहाणइ दुत्तर ॥ २३ ॥

## 24

तूसेपिणु तेत्थु पइदु राउ  
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु  
मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु  
अइवुद्धिवेत्तु परचित्तजाणु  
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु  
पक्खेलिवि पडिउ गिरिरायतुंगु  
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयमणि  
अवर वि णिसुणहि तुह वंसकेउ  
चिर होंतउ णरवइ दंडधारि  
तहु तणउ तणउ वज्जियदुंवालि  
तो देव दीहकालेण पत्थु

ण्हंतेण तेण वुज्जियउ साउ ।  
मायारउ णिहणमि पइ पुत्तु ।  
आयड्डिय भोसणु खमाधेणु ।  
दिट्ठउ कुरुविंदु पलायमाणु । 5  
णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु ।  
णियकरल्लुरियाणिव्वट्ठियंगु ।  
हाहारउ उट्ठिउ वंचुवणिग ।  
रूवेण णाहं सइं मयरकेउ ।  
दंडउ णांमिं दंडियणियारि । 10  
मणिमालि सउलगयणंसुमालि ।  
घणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपम्भारइ ॥  
अट्टज्झाणं पिउ मरिवि अजैयर हुयउ णिययभंडारइ ॥ २४ ॥

१० MBP °मिग°. ११ GK भरिय वावि.

24. १ MBP तहुं णिमुणहि. २ P णामेण जि दंडियारि. ३ MBP °दुवालि. ४ MBP ता.  
५ MBP अजगर.

9 a खणि गर्ता. 11 क रिम कीलालहु कृत्रिमरुधरेण; विहाणइ प्रभाते.

24. 1 b साउ स्वादः. 9 b णिव्वट्ठियंगु विदारिताः. 10 a °दुवालि अन्यायः; b सउलगयणंसु-  
मालि स्वकुलगगनसूर्यः.

## 25

माणुसु दाढहिं दंतहिं दलई  
 ससिमणिजलकयसिहरगणहवणि  
 संभरियपुव्वजम्मंतरेण  
 मँम्मीसिउ भोयाँहोयणेण  
 महु एहु को वि चिरजँम्मबंभु  
 पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुणिदु  
 ह्वयउ असमाहिइ मरिधि सप्पु  
 तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण  
 पडिआविप्पिणु घरु खवियकम्म  
 बुज्झि वि फणिणा संणासु कयउ  
 देवेण तेण जाणियमवेण  
 आवि वि मणिमालिहि दिणु हारु  
 इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्ज कंठि

जं घरि पइसइ तं तं गिलई ।  
 पुणु रैयणमालि पइसंतु भवणि ।  
 ओलभिखउ णियसिउ विसहरेण ।  
 ता चित्तिउ खगवइजायएण ।  
 णं तो किं णउ भक्खइ मयंभु । 5  
 भासियउ तेण दंडयणरिंदु ।  
 किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु ।  
 पिउणेहकँरुणकंपियमणेण ।  
 जिणणाहुहु केरउ कहिउ धम्म ।  
 मुउ जायउ सुरु उरयसु गयउ । 10  
 कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण ।  
 जाणइ पुरु देसु कहाँवयाइ ।  
 ताराणियरु वं णं मेरुकंठि ।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोपप्पिणु ॥

हयतमु पुणँदंतसरिसु आलिगियउ मंति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुण्यंतविरइय  
 महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे वितंडापंडियपंडाविहंडणं णाम  
 वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

25. १ MBP दलेइ. २ MBP गिलेइ. ३ MBP रयणिमालि. ४ MBP मं भीसिउ. ५ MB भोया-  
 भोयणेण; PT भोयाभोयएण. ६ B विरधम्मबंभु. ७ MBP °करण°. ८ M °कपिय°. ९ T कयावयाइ  
 कृतावतारः. १० MBP व मेरुकंठि. ११ MBP पुण्यंत°.

25. 4 a मम्मो सिउ मा भेषीस्त्वम्; भो या हो यणे ण फणामण्डपाचःकृतेन फटादोपेन. 10 b गयउ  
 नष्टम्. 12 c क हा व या इ कथावतारः.

## XXI

बुद्धं तद्गुणरहं पडंतहो बहुमणियभवतरहलहो ॥  
सहं बुद्धं णाणविसुद्धं दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

I

<p>७ पुणु तेण पजंपिउ सुइमहुइ तुह तायपियामहु कुलधबलु उप्पाइवि केवलु णाण गुणि तुह तायताउ सयबलु णिवर ०१ माहिंदसग्गि ह्यउ अमर गउ मेरुहि तइया भावियउ अइबलु तुह पिउ भयवंतु वसि णयविणयालहं णवजोव्वणहं तुह एम पियामहपियं पडुइ रुद्धइ णाणआरुद्धइ</p>	<p>भवसयसंचियमलभारहर । णामेण पसिद्धउ सहसबलु । गउ भोक्खणिवासहु परममुणि । 5 परिपालिवि सावयवयप्ययर । सत्तं बुद्धिआउपमाणधर । तुद्धं मइं सहुं तं बोद्धावियउ । गउ वणवासहु होएवि रिसि । सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं । 10 सुम्मंति देव साहियसुगइ । संपत्ता णरयतिरिक्खगइ ।</p>
---	--

घत्ता—हयकम्मं जिणवरधम्मं उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥  
कयगावें पत्थिव पावें हेट्टामुद्धं राउ वि पडइ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि  
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरासि सदा विराजते ।  
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
राजति जयतु जगति भरतेश्वरमयमलमङ्गलः ॥

MP read विराजयते for विराजते; °मलाणिल° for मनाविल°; स जयति जयतु for राजति जयतु;  
M reads °श्वरसुखमयमल°; P reads °श्वरजयमयमल° for °श्वरमयमल°. GK do not give it.

1. १ MBP पयंपिउ. २ MBP केवलणाणु गुणि. ३ MBP °पवर. ४ P °जोव्वणाहं. ५ P °णंद-  
णाहं. ६ MBP °पिउ°.

1. 6 a णिवर नृवरः. 11 a °पिय° पिता.

2

तं सुंणिवि पवुद्धउ भव्वयणु  
संकाकंखाहिं विवज्जियउ  
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो  
कंचणधूलीरयपिगलहो  
मणियरकच्चुरियणहंतरहो  
आसीणसुरासुरसुंदरहो  
सिरिभँहासालसुणंदणइं  
वज्जियफणिकामिणिणेउरइं  
किणरपारद्धथोत्तसयइं  
अकयाइं विलंबियतोरणइं  
मंडिय सीहासँणवेइयउ

अइवल्लेसुउ हुउ उवसंतमणु ।  
गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।  
खलखलखलंतणिज्जरजलहो ।  
करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।  
सिहरुच्चाइयसयमहघरहो । 5  
गउ वंदणँहत्तिइ मंदरहो ।  
सउमणससरसपंडुयवणइं ।  
चालियचंदुज्जलचामरइं ।  
विद्धंसियमाणवभवँभयइं ।  
पर्यंसिधि जिणविबणिहेलणइं । 10  
परियंचिधि अंचिधि चेइयउ ।

घत्ता—गरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥

तं मणियहिं महुयरह्णियहिं भणइ व रँर दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु  
मलु जासु सररी ण ह्वाणि मलु  
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु  
वंकत्तणु भउंहइ आयरिउ  
रसु परमागमि णउ कामरसु  
सिरि केसजडत्तणु जासु गय

संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।  
णउ परतावणि बलु सुतवि बलु ।  
णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।  
णउ जासु मँइइ किं पि वि धरिउ ।  
वसु जँ ण समिच्छइ धम्मवसु । 5  
णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2. १ MB णिसुणिवि. २ MB अइवल्लेसुउ. ३ BP वंदणभत्तिइ. ४ P °मइ°. ५ MBP ° भव-  
सयइं. ६ MBP पइसिधि. ७ MBP सिंहासण°. ८ MBPKT तरु.

3. १ P मइ and gloss मरँ, २ MBP जो.

2. 8 a व जि य° शब्दायमातः. 10 b पयसिधि प्रवेशं कृत्वा. 11 a °वेइयउ वत्तुक्किकाः, b  
वेइयउ प्रतिमाः. 12 °विहुणा °चन्द्रेण; सेसासयदलहो निर्माल्यस्थपद्मस्य कृते. 13 मणियहिं मनोः;  
तर दुक्कियजलहो दुष्कृतजलात् तर, पापं मुक्त्वा सुखी भव.

3. 8 b णहु णखम्.

दुम्मह मय अट्ट वि जासु मय  
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ  
हउं अंजि वि एम ण करमि तउ

कय पंविदियहुं णं जेण दय ।  
सइंबुद्धं अप्पउ णिंदियउ ।  
केत्तिउ किर पोसमि असुइवउ ।

घत्ता— सिरिगेहइ पुव्वविदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥

10

तंणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि दिसइ ॥ ३ ॥

५

तं अरुहजुंयंधरतित्यसरे  
तहिं एक्कु साहु आइच्चगइ  
ते पुच्छिय बुद्धं वे वि जणं  
महु सामि महाबलु संभरह  
जाणियतसथावरजीवगइ  
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे  
आसण्णमव्वु सो णिवखयर  
भोयासिउ जं तं णंउ रहमि  
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए  
णामे सिरिसेणु सिरीणिलउ  
तहु पढंमु पुत्तु जयंममु हुउ  
सो रुच्चइ जणजिणणमणहो

णहायउ ण वडइ संसारजरे ।  
अण्णेक्कु अरिजउ सुद्धमइ ।  
तुम्हइ तिणाणपाणीयधंण ।  
किं भव्वु अभव्वु व वज्जरह ।  
तं णिसुणिवि जंपइ जेद्धं जइ । 5  
अग्गइ जुयाहपारंभवहे ।  
दहंमइ भवि होसइ तित्थयर ।  
दुम्मोयत्तणु तहु तुह कहमि ।  
सीहउरि णरिंदु विमुक्कभए ।  
सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ । 10  
वीयउ सिरिवम्मु णरेहिं थुउ ।  
सो भावइ सयलहु परियणहो ।

घत्ता—सुहडत्तणु बुद्धिबुहत्तणु धिर्वंहि असेसु वि जलहिजले ॥

किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वर्णणइ पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ ४ ॥

३ BP ण जी जीवदय, ४ MBP अज.

4. १ MBP °जुयंधरि, २ MBP संसारदरे, ३ MBP जणा, ४ MBP °घणा, ५ M जेद्धु जइ,  
६ MBP दसमइ, ७ B जंतउ णउ; P जंत णउ. ८ MBP पढमु पुत्तु, ९ MBP अजवमु, १० MBP  
णरिंदियुउ. ११ P धिवहुं, १२ M मण्णइ.

7 a मय मदा; मम मृताः. 11 दिहि धृतिः.

4. 1 a °सरे जले, 6 b जुयाहपारंभवहे कर्मभूमिप्रथमप्रवेशमार्गे,



## 5

मेळंतें संतें रजरइ  
 णरंणहें अइअजुत्तु कियउ  
 जैयवम्मं ता परिचितियउ  
 णिदइवहु सखु वि चण्णलउ  
 णिदइवहु णवंतु वि को गणइ  
 णिदइवहु सुकंइ भरिउ सरु  
 णिदइवहु वंघु वि होइ पर  
 ण हणइ भेसहु वि रयापसर  
 णिदइवहु विहडइ धरिणि धरु  
 उज्जमुं करेवि अण्णउ दमइ

वउ लेंतें जंतें परमगइ ।  
 लहुतणयहु रज्जु समणियउ ।  
 को फेडइ दइवणियंतियउ ।  
 णिदइवकाजि जगु सीयलउ ।  
 णिदइवहु भासिउ को सुणइ । 5  
 ण फलइ णिदइवें णिहिउ तरु ।  
 णिदइवहु देव ण दैति वरु ।  
 वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।  
 ण करइ सणेहुं मायापियरु ।  
 णिदइवहु कि सिरि संकमइ । 10

यत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जि करइ तं णिण्णलउ ॥

हयकाणं किं ववसाणं सव्वहु दइवु जि अगलउ ॥ ५ ॥

## 6

इणं चित्तमाणो  
 अरायं वहंतो  
 पिउस्सायहंतो  
 रईसूहवेणं  
 जसेणं सियं जं

अहं णिदमाणो ।  
 अणंगं वहंतो ।  
 रमासायहंतो ।  
 सयासूहवेणं ।  
 सुहेणं जियं जं । 5

5. १ P णरंणहें अजुत्तु. २ MBP अजवम्मं. ३ P णिदइवहु. ४ MBP णिदइउ. ५ MBP सुकसइ. ६ BP सिणेहु. ७ MBP उज्जमुं.

6. १ B णिदमाणो. २ B °स्सायहंतो. ३ MBPT सियजं. ४ MBPT जियजं and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यद्यौवनम्.

5. 4 a चण्णलउ चण्णलम्.

6. 1 a इणं एतत्पापम्. 2 a अरायं वैराग्यम्. 3 a पिउस्सायहंतो पितरं कथयन्; b रमासायहंतो लक्ष्मीस्वावहन्ता. 4 a रईसूहवेणं कामदेवोद्भवेन; b सयासूहवेणं सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन. 5 a जसेणं सियं जं यशसा निर्मलं यद्यौवनम्; b जियं जितम्.

दयंगं समंतो	समेणं समंतो ।
णियं जोव्वणंतं	गओ सो वर्णंतं ।
किडीखद्धकंदं	णैयासीणकंदं ।
सरेणं सवंतं	महावंसवंतं ।
सवेल्लीपिर्यालं	पुलिंदीपियालं ।
विणिच्चं कुरोहं	विचिच्चं कुरोहं ।
अलीपीयवासं	फणिदाहिवासं ।
महूहिं पलित्तं	दवग्गीपलित्तं ।
पवडुंतपीलुं	पगज्जंतपीलुं ।
हुयातावसीयं	सया तावसीयं ।
पविच्चं पसणं	हुयाणेयसणं ।
विलुच्चंतयासं	पकुल्लंतयासं ।
सुसंतावयासं	णिहिच्चावयासं ।

10

15

धत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ डुरियमहु ॥

जयवम्मं समियकुक्कम्मं मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥

20

7

जसु तित्थगमणु अहवावठाणु	जसु धम्मभणणु अहवा सुमोणु ।
जसु इंदियणु अह परमकंरुणु	जसु अरुहचित्तं अह सुयसरणु ।
जसु जोयणिइ अह जागरणु	जसु खल्लेकिउ दुट्ठु अह तववरणु ।

५ MBP गिरिलगकंदं; T णयासीणकंदं गिरिलगमेधं, ६ M °वियालं, ७ T पहुल्लंतयासं, ८ MBP अजवम्मं.

7. १ MBPT अहवा सठाणु. २ P धम्मसवणु. ३ MBP समोणु, ४ MBT परमकरणु, ५ P खल्लेकिउ.

6 a दयंगं दयालवम्; b समंतो उपशमयन्. 8 a किडी° सूकरः; b णयासीणकंदं गिरिलगमेधम्. 10 b पुलिंदीपियालं पुलिंदीप्रियम्. 11 a विणिच्चं विनिर्गतः. 12 a अलीपीयवासं भ्रमरैः पीतगन्धम्; b °अहिवासं °अधिष्ठानम्. 14 a °पीलुं °वृक्षविशेषम् b °पीलुं °गजम्. 15 a हुयातावसीयं संजातोष्णशीतम्; b तावसीयं तापसेभ्यो हितम्. 16 b हुयाणेयसणं हता अनेकैराहारादिसेज्ञा यत्र. 17 a विलुच्चंतयासं विलुप्ता अन्तकस्याशा येन, अजराभरपदप्रापकत्वात्.

7. a अवठाणु कायोत्सर्गः.

जसु सयणु धराणि अह कर्तुं तिणु  
उववासु जासु अह जिणकहिउ  
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो  
सिरिसेणसुण पण समिच्छियउ  
छुडु केसभासु आलुं चियउ  
तामोयउ पणवहु परमजइ

जो तणुमलधरु मणमलेण विणु ।  
परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ 5  
ि वाउ करेवि सयंपहहो ।  
अणगारत्तणउं पडिच्छियउ ।  
छुडु करणवियारु वि खंचियउ ।  
महिहरु णामे खयराहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥ 10  
वैभइएं णवपावइएं महुं णिव्वायवि जोइयउ ॥ ७ ॥

## 8

बद्धउ णियाणु परिसिय जहिं  
जइ अस्थि किं पि रिसिधम्मफलु  
ता तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे  
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगल्लिउ  
गुरुणा भवपासणासकरइं  
असुयामु विसेणे झडत्ति हउ  
अलयाउरि रायहु तणइ धरे  
सो एहु महाबलु भोयरसु

कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।  
तो होउ रल्लु विहवियखलु ।  
कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।  
धरणिगलि कलेवरु रल्लुघुलिउ । 5  
कहियाइं पंचपरमक्खरइं ।  
गउ जीउं ईसिउवसमियरउ ।  
उप्पण्णु मणेहराहि उयरे ।  
णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

घत्ता—मिच्छत्ते मणकुडिलत्ते अवरु णियाणणिबंधणेण ॥

जणु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउल्लु बंधणेण ॥ ८ ॥ 10

६ MB कट्टतिणु, ७ MBP मलहरु वि मलेण, ८ P ०सेणु सुएण, ९ MBP तावायउ, १० MP मुह.  
११ MBK णिव्वाइवि.

8. १ MBP परियलिउं, २ P झडत्ति विसेण, ३ P जीविउ इसिउवसमियरउ.

11 णवपावइएं नवप्रभजितेन जयवर्ममुत्तिना.

8. 6 ० ईसिउवसमियरउ ईवदुपशमितरजाः.

णत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं  
 भुयदंडिहिं चाप्पिवि पेळियउ  
 पइं कड्डिवि सुंच्चिवारिहिं ण्हविउ  
 णिसि सिविणैइ अल्लु णियच्छियउ  
 सुचुट्टिउ काइं मि णउ चवइ  
 दिट्ठउ णिमिचु तं णउ कहइ  
 अचिरेण जाहि पंडुमंदिरहो  
 जा ण कहइ सो पत्थियु सुयण  
 अण्णु वि लइ दुक्को खयंणियइ  
 पडिवज्जइ धम्म म भंति करु  
 संवोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं  
 तं णिसुणिवि जइवरवोळियउ  
 साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु

संभिण्णमहामइसयमइहिं ।  
 अप्पाणउं कहमि थल्लियउ ।  
 उच्चाइवि सीहासणि थविउ ।  
 तुह णाहिं दुरिउ दुगुंळियउ ।  
 अच्छइ चित्ताऊरिउ णिवइ । 5  
 आगमणु तुहारउ मणि महइ ।  
 भमरु व भमंतु इंदीवरहो ।  
 ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।  
 एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।  
 विवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु । 10  
 पावेसइ भव्णु अणंतु सुहुं ।  
 णियहियवउ दुक्खे सल्लियउ ।  
 आलोइवि गर्मणिच्छइ गयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि वे वि णमंसिवि लहु संचल्लिउ मंतिवर ॥

पहु पविमल्लु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ वोमसर ॥ ९ ॥

15

10

तांवेत्तहि णहयालि णिव्वडिउ  
 चित्तइ सो बहुंविहु भिण्णमइ  
 किं घणु णं णं पडिखलियमरु  
 इय जाम कैमेण विवेइयउ

खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।  
 किं गिरिवरु णं णं खैयलगइ ।  
 किं पम्बिख ण पहु पलंबकरु ।  
 ता बुद्ध समीवु पराइयउ ।

9. १ MBP भिच्छत्तविवाइहिं. २ MBP सुइवारिहिं. ३ P सिविणउ अज्ज. ४ MBP बुहमंदिरह. ५ MB खयणिवइ. ६ MBP गयणिच्छइ गमणु.

10. १ MBP ता एत्तहि. २ MB बहुविह. ३ MB खयरगइ. ४ MBP णिवेण विवेइयउ. ५ MBP समीउ.

9. 1 a णत्थित्तविवाइहिं नास्तिकविवाइः 9 a खय णियइ क्षयस्यावश्यंभावः. 13 b गमणिच्छइ गमनेच्छया.

10. 1 a णिव्वडिउ प्रकटीभूतः. 2 b भिण्णमइ नानामातिः; b खयलगइ खतलगतिः. 3 b पडिखलियमरु प्रतिवृत्तवातः

उट्टिवि आलिङ्गित णिववरेण  
पुणु भणिउं अउव्वु पसाउ किउ  
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ  
मंतं पउत्तु भो णउ रहमि  
चंपियउ जेहिं ते जड कुगुरु  
जं जलु तं जिणवरिदवयणु  
हरिबीढारोहणु सुगइसुहुं

तेण वि णिहुं पणविउ णियसिरेण । 5  
किंकरु हउं परंमुणइहि णिउ ।  
पइं जीवियव्वु महुं रक्खियउ ।  
पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि ।  
जो पंडु तं जि दुग्गइविहुरु ।  
धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु । 10  
पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥

सहुं सासं एक्कं मासं आउ तुहारउ परिगेलइ ॥ १० ॥

## II

ता भणइ महाबलु रयविरमु  
तुहुं वणु मज्झु दाहिणउ करु  
आसंणमरणु किं तउ कैरमि  
इय जंपिवि मउलियकरयलहो  
परियणसयणाइं खमाइयइं  
तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं  
मलभरियइं चरियइं छंडियइं  
णसिसें परिग्गहु परिहरिवि  
पच्छा घुलंतसाहारवणि

कल्लामित्तु बंधउ परमु ।  
आलग्गणखंभु सुसंतियरु ।  
हउं एवहिं संगीसिण मरमि ।  
पुरि अप्पिवि पुत्तु अइवलहो ।  
मुंणिभावणसुत्तइं भावियइं । 5  
इंदियइं खगिंदे दंडियइं ।  
मायामिच्छत्तइं खंडियइं ।  
अरहंतु भडारउ संभरिवि ।  
थिउ सहससिहरि जिणवरभवाणि ।

घत्ता—अहिसिन्तइं सुद्धपवित्तइं जिणपडिबिबइं पुज्जियइं ॥

10

हयभमरहिं चालियन्नमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ. ७ P परमुणइ णिहिउ. ८ B चंपियउ. ९ B परियलइ.

11. १ MBP आसणु मरणु. २ MBP चरमि. ३ MBP संगसणु करमि. ४ M. गियभावण.  
५ MBP णीसेसु. ६ MBP पुणपवित्तइं.

6 ७ परमुणइ हि णिउ परमोन्नतिं नीतः. 8 ७ दंसणु स्वप्नः.

11. 9 ७ सहससिहरि सहसशिखरे.

## 12

कमकमलपडियभुवणत्तयहो  
 तियसिंदविदवंदियपयहो  
 उक्खित्त चरुय पीणीय भूय  
 हत्थिहडा इव घंटासुहल  
 जलणिहिवेला इव सरयणिय  
 तरुरा इव विविहकुसुमयइय  
 घम्मो इव दित्तदीवसहिय  
 अट्टाहइं महिवि जिणाहिवइ  
 पाउग्गमरणविहि तेण कय

उब्भासियसियछत्तत्तयहो ।  
 पारद्ध पुज्ज परमण्यहो ।  
 माया इव उच्चाइय धूय ।  
 वरणरवइसेवा इव सहल ।  
 वेसा इव दरिसियदैप्पणिय ।  
 णहलच्छि व पउरकेउछइय ।  
 सुरसिहरि व चंदणमहमहिय ।  
 बावीस दिवस संणासगइ ।  
 सुहझाणारंभे प्राणं गय ।

5

घत्ता—ईसाणइ सैग्गविमाणइ सिरिपहि सिरिकमलिणिममरु ॥

10

णिच्छम्मं णिउ णियधम्मं खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥ १२ ॥

## 13

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ  
 सो मरिवि महाबलु तियसकुले  
 हुउ देउ दिव्खु ललियंगधरु  
 वेउव्वियणयणसुहावणिय  
 विहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय

उववायसैयाणि संपुडणिलइ ।  
 णं विस्सुपुंजु जलहरपडले ।  
 लैलियंगु णाम णं कुसुमसरु ।  
 तव्वणीयतेय ओहावणिय ।  
 जिह तणु तिह जोव्वणैसिरि जणिय । 5

12. १ MBP पीणियभुवहो. २ MBP उच्चाइयभुवहो; T धूय पुत्ती धूपध. ३ MB °दप्पणय.  
 ४ K omits this line. ५ MBP पाण. ६ MBP सत्तिग विमाणइ.

13. १ MBPK °सयण°. २ P विज्जपुंजु. ३ MBP ललियंगणामु. ४ MBP तवणीयकंति°. ५ P जोव्वणु.

12. 3 b मा या इव जननीव; धूयपुत्ती धूपध. 6 a °राइ पंक्तिः. 7 a घम्मा इव प्रथमनरकभूमि-  
 स्तरसंनधि तिर्यक्षेत्रम्. 8 a अट्टाहइं अष्ट दिनानि.

13. 1 a °धंतविलइ ध्वान्तविनाशे. 4 b तवणीयतेयओहावणिय सुवर्णदीप्तिरस्कारिका.  
 5 a सुरवणिय सुरवनिता.

लइ पुण्णविसेसै सार्वडिउ  
हत्थे सहुं कंकणु मणिजडिउ  
मउडें सहुं कुसुममाल चडिये  
वच्छे सहुं बंभसुत्तु विमलु  
तहु जम्मविलासपयासणउं  
णयणहिं सहुं अणमिसपेच्छणउं

पापं सहुं णेउरु तहु वडिउ ।  
सीसै सहुं मउडु वि पाँयडिउ ।  
कंठे सहुं सियहारावलय ।  
सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।  
सहजायउ णिवसणभूसणउं । 10  
लायण्णु भणमि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइं अट्टियचम्मइं ण छिरिउं णउ मुहि मीसियउ  
घणधेडिमहि कंचणपडिमहि संणिहु देहुं पयासियउ ॥ १३ ॥

14

लुहु देउ णिसण्णउ गन्महरे  
ता दुंडुहि वज्जिय गहिरसर  
वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु  
एए के को हं कवणु घर  
सुत्तुडिउ जिह जा संभरइ  
बुज्झिउ सइबुद्धु संचरिउ  
उट्टिउ सीहोसणि संणिहिउ  
जिणु कामकसायविवज्जियउ  
उरैपेल्लियपीणपयोहरहं  
णक्खत्तकंतिस्कासणह  
चिरभवपरिपालियसुद्धवय  
सो पयहिं सहुं सुहुं तहिं वसइ

णियदिट्ठि देतु णियबाहुसिरे ।  
धाइय जयजय परमणंत सुर ।  
अमरंगणगणु णच्चिउ सैरसु ।  
अवलोयइ णियउरु पाँउ कर ।  
तां अवहि तासु मणि वित्थरइ । 5  
संणासु वि जं णरमवि चरिउ ।  
देवहिं अहिसेउ तासु विहिउ ।  
तेण वि परमेसर पुज्जियउ ।  
चालीससयइं पवरच्छरहं ।  
महपविसयंपहकणयपह । 10  
कणयलय सुहासिणि विस्सेलय ।  
एक्के पक्खेण समूससइ ।

घत्ता—सुहसाउ परं परमाउ जलहिमाणवित्थेरिण ॥

सो जीवइ एक्केसु जेमइ वरिससहासे भरियण ॥ १४ ॥

१ M संपडउ; BP संपडिउ, ५ B पायपउ. ८ MBP add after this: कर्णे सहुं कुंडलु विष्फुरिउ.

९ MBP चलयि. १० MBP अणिमिस°. ११ MBP सिरउ. १२ T वणणिविडं. १३ MB देउ.

14. १ P पमणति. २ MP सरिसु. ३ MRP पाय. ४ MBP तो. ५ P सिंहासणि. ६ MB देविहिं.

७ M चरि; BP उरि. ८ P °हरिहं. ९ M विज्जुलिय. १० MBP सहुं तहिं. ११ MB विह; P पियउ  
१२ MBP °वित्थेरियण. १३ M एक्कुसु.

14. 10 a सं का सणह सदशनखाः. 14 एकसु एकवारम्.

## 15

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ  
तहु पल्लुपुत्ताउसि वणिग  
कालेण चिरंतण अवहरिय  
तहि अहसल्लइ कामेण रसु  
तहि णाहिदेसि गहिरत्तणउं  
तहि थणजुयलइ कठिणत्तणउं  
मंदरकंदरि कीलियखये  
तहि तणुपवियारै गय दिवस

सुहकारि ण केण णियच्छियउ ।  
माल्लूरपीणपीवरथणिय ।  
अण्णेक सयंपह अवयरिय ।  
तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।  
तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं ।  
तेण जि संगिहियउं अप्पणउं ।  
कुंडलरुजगहिगुहाविचरे ।  
तहु ललित्यगुडु ररमणवस ।

5

घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसिहिं पुराणहिं वज्जरिए ॥  
गयकालइ अइअसरालइ पुष्पयंतगइसंभरिए ॥ १५ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महकइपुष्पयंतविरचय  
महाभवभरहाणुमणिण महाकव्वे महाबलसंज्ञासमरणं ललित्यगुण्यत्ती णाम  
एकवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥  
॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B समिच्छियउ. २ MBP °पुत्ताउस वणिग. ३ Tp रिसहु. ४ MB पुराणइ; P पुराणिहिं.  
५ MBP वज्जरिय; T वज्जरइ. ६ MBP °संभरिय; T संभरइ. ७ MBPK संज्ञासर्गं.

15. 1 a समुच्छियउ समुच्छितः उच्चः. 2 a पल्लुपुत्ताउसि पल्यं पृथुत्वं आयुर्यस्याः; व णिय  
वनिता. 9-10 भरहाहिवेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति । हे भरताधिप श्रेणिक, निशृणु त्वम् । पूर्वगते  
कालेऽती वा स राले अतिशयेन बहुतरे भरतो नष्टः । रिसहु कपभनाथस्तस्य पुराणानि वज्जरइ कथयति । तस्य च  
कालस्यानोपायभूतां (?) पुष्पदन्तगतिं चन्द्रादिलगतिं स्मरति संप्रधारयति । अथवा पुष्पदन्तजिनस्य गतिं मुक्तिं  
तत्प्राप्तकर्मार्गं वा संभरइ धरति पुष्पाति वा । रिसिहि मि ति पाठे 'गए कालए अइअसरालए तह तणुपवियारै  
गयादिवसहो ललित्यगहो' इति भरताधिप निशृणु । कथंभूते काले पुराणए वज्जरिए कविभिर्गणधरदेवादिभिः पुराणे  
कथिते तत्कालनयनार्थं पुष्पदन्तगतिः संसृता' इति.



## XXII

सज्जनमणसंताविरइं रइसुहवारणाइं दुण्णेच्छइं ॥

दिट्ठइं दुक्खियदुमहलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुद्धरखयकाले पडिपेह्लिउ  
मउ देवंगवल्लुं दरमइल्लिउ  
परिवट्ठिउ भोएसु विरायउ  
परियणु सोयविरसु जंपंतउ  
मोहियमणु माणिणिउ गिरिक्खइ  
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ  
मो ललियंग पमेह्लिइ भयजइ  
सुर्यरहि जं सइंयुद्धे सिट्ठउ  
तं जिणपायपोसु सच्चावे  
दुल्लेसाइ णरत्तणहाणिहि  
संसारंधिवमूलुम्मूलइं

दिट्ठउ कुसुमदीसु ओहल्लिउ ।  
दिट्ठउ अंगु किं पि मलकालिउ ।  
आहरणोहु दिट्ठु णित्तेयउ । 5  
दिट्ठउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।  
जा सो माणसदुक्खे सुक्खइ ।  
णियइणिओएं सकु वि णासइ ।  
तिट्ठयणि णांत्थि को वि अजरामर ।  
जसु सेवाहल्लु एत्थु जि दिट्ठउ । 10  
जेण विमुच्चहि भवकयपावे ।  
मा पडिहीसि यण्ण मूर्ध्निजेणिहि ।  
मूर्ध्नि होति दूरि व्रतसीलइं ।

वृत्ता—जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंराणडा इव भावविचिचइं ॥

मेह्लिवि सासंयसिद्धिसिदि दुल्लहाइं णउ होति सुरत्तइं ॥ १ ॥

15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना  
मृगपतिनादरेण यस्या धृतसनधमनर्धमासनम् ।  
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा  
भारतमल सास्तु देवी तव बहुविधमन्त्रिका मुदे ॥

GK do not give it.

1. १ MB °दाम. २ MB °वत्थ. ३ MBP दरमलियउ. ४ MBP °कलियउ. ५ M परि-  
यइय; B परिवड्डिय. ६ P दुक्खइ. ७ MBP को वि णत्थि. ८ M सुमरहि; BP सुमरहि. ९ MBP जेण  
जि मुच्चहि भवभयपावे. १० MBPT मिग°. ११ MBP मा हो होति. १२ MBP वयसीलइं; K व्रतसीलइं.  
१३ MB सासयरिद्धि.

1. २ °णेव च्छइं विहानि. ३ b ओ हल्लिउ म्लानम्. ४ a दर° ईषत्. ५ b णियइणिओएं  
भवितव्यतासंसर्गेण.

## 2

ता ललियं तं आयणिवि  
तित्थइं जाइवि सुहत्तियं करु  
कुवलपहिं कुवलपउद्वारण  
संदूरहिं दूरज्झियवम्महु  
वासंतहिं वसिल्लु जियविग्गहु  
तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणित  
बंधूपहिं बंधविद्धंसणु  
घणसालेहिं सालसुंसलिलघणु  
धूर्धहडेहिं णिहीहउदावउ  
मालइहिं मालइयामहिरुहु  
अच्चुयकप्पजिणालउ जाइवि  
जीविउ मुक्कउ खाणि ललियं  
घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणणि चित्तियसुहदाणि ॥

मेरुहिं पुच्चविदेहिं थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥ २ ॥

## 3

कूरारिंदविदवलवट्टणु  
साहुद्धरणु जेत्यु णंदणवाणि  
जेट्यु लोउ विणैणणोल्लउ

उपल्लखेहु णाम तहिं पट्टणु ।  
णउ णंदंति कहिं मि दीसइ जणि ।  
उद्धाणणु पक्कु जि करहुल्लउ ।

2. १ MBP °तित्थंकर, २ M पर; B पर. ३ BP °सुहंकर. ४ MBP सिंदूरहिं. ५ P °णिमुहु.  
६ PT वासंतिहिं. ७ P मेरुहिं मेरुहिं. ८ MPK बंधणविद्धंसणु. ९ MB अवियल°; P अविलउ°; T अवउल°.  
१० P °सुललिय°. ११ धूर्धहडेहिं. १२ P पुजित. १३ MBP पुजारुहु. १४ MBPK °विहंमं; T °विहणे.  
3. १ M उपल्लु खेहु. २ MB णामे; णामु. ३ T साहुलामओणल्लउ.

2. 4 b दारासा° कलत्राभिलाषः. 5 a वासंतहिं अतिमुक्तकैः. 7 b अवउलकेवलदंसणु  
अशरीरग्राहिं सिद्धस्वरूपप्रापकं केवलं केवलज्ञानं यस्य. 8 a घणसाल हिं कुरैः; b °णिचंदणु नित्याक-  
न्दनम्. 10 a मालइया° लक्ष्मीलतिका. 12 b पुण्ण विहंमं पुण्यक्षयेण.

3. 2 a साहुद्धरणु शाखानामुद्धरणम्. 3 a विण एणोणल्लउ विनयेन प्रणतः; b करहुल्लउ उट्टः.

करि कंकणु बंधणु पँड जेउर  
खलु तेछियैहरि णिरु णिण्णेहउ  
वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरे  
सरसंधाणु जेत्यु वायरणइ  
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु  
कुणडि रसकखउ णउ विवणीवहि  
अंजणु णयणि जेत्यु ण तवोहणि  
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु  
जहिं कुंजर भण्णइ मायंगउ

अण्णु ण जेत्यु अत्थि दुक्खाउरु ।  
अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ । 6  
दीखइ तणुहि ण णरवरुणियरे ।  
णउ पर्यक्कभीमि रायरणइ ।  
वंसु जि छिहसहिउ णउ पुरयणु ।  
असिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।  
णायभंगु गारुडि ण धणज्जणि । 10  
दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।  
णउ मँणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहुं सज्जणेण ण करइ को वि ण विण्णिउ भासइ ॥

जहिं कलहंसहं गइपसरु पंणीणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जबाहु णामे तहिं णरवइ  
जासु कित्ति गय दसेहिं दियंतहिं  
जासु खँगु वेरंतु वियंभिउ  
जासु कोसु चाएण पँवित्तिउ  
जेण गोसु धम्मेषुज्जोइउ  
पेम्मसासवासावसुंधरि  
सगगहु गम्भवासि अवयरियउ  
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ

रिद्धिइ जेण पँरिज्जिउ सुरवइ ।  
आरुढी वरदिक्करिदंतहिं ।  
जासु रज्जु ण पेरेहिं णिसुंभिउ ।  
जेण तिजगु सुँकुडुं वि चित्तिउ । 5  
जेण चित्तु जिणपयसुइ दोइउ ।  
ताँसु देवि णामेण वसुंधरि ।  
णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।  
णंदणु णं णरवेसु अणंगउ ।

४ M पउ; B पप. ५ P अत्थि जेत्यु. ६ MBP तेछियविहि. ७ B णरवइणियरे. ८ MB परचक्कभीमराय-  
रणइ; P परयक्के भीम. ९ MB असि अपेउ. १० MBP माणउ कया वि. ११ MBP मंदिरपंगणवाविहि.

4. १ MBP परज्जिउ. २ MBP दिसहिं. ३ MB खणि घोरु. ४ MB पवत्तिउ. ५ MBP  
सकुडुं व. ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि.

7 a सरसंधाणु स्वरसंधि; पक्षे, शरसंधानम्; वायरणइ व्याकरणे. 8 a हयवरु अश्ववरः, हतो वरो यस्य  
नारीगणस्य; b छिहं छिद्रं दोषश्च. 9 a कुण डि कुत्सितनटे; विवणी व हि अष्टमागे. 10 a अंजणु अञ्जनं  
पार्ष्ण; b णायभंगु सर्पस्रो न्यायभङ्गश्च. 11 a संकरुपहु प्रभुरेव सुखकारी शंकरो न तु वर्णसंकरः;  
b दोहउ गोदोहकः, द्विधवः स्वामिद्वययुक्तः. 12 b मायंगउ मायां गतः. 13 कलहं सकण्टकम्.

4. 6 a पे म्मे ला दि—जेहधान्यस वर्षयुक्ता भूमिः.

कुडिलहिं केसहिं उज्जयगत्तउ  
किसमज्जेण थोरभुयजुयल्ले  
सत्ते नाहि सरं गंभीरं  
कोमलपयहिं अकोमलहत्थहिं

रहसहिं जंघहिं दीहरणेत्तउ ।  
वियडं कडियलेण वच्छयल्ले । 10  
छज्जइ सीसे छत्तायारं ।  
अवरेहिं मि लंक्खणिहिं पसत्थहिं ।

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एकहिं विहिणा अकयविहायउ ॥

वज्जंक्रियकरचरणयल्लु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ ॥ ४ ॥

## 5

सो कुमार तहिं वड्डइ जइयहुं  
रुयइ सयंपह पियविरहालस  
हा हे सगालोय विच्छायउ  
हा कप्पदुम किं किर फुल्लहिं  
हा तुंबरे गाइयउं पडुच्चइ  
हा लेलियंगदेसु कहिं पेच्छमि  
को वारइ भवियव्वु हँवतउ  
एम्ब चवंति विमुक्कुच्छाहिय  
तावसघरिणि व मंदरवण्णी  
गय सउमणससुरासाजिणहरि  
पुव्वविदेहिं तहिं जि सकमल्लसर

णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं ।  
हा ण सुहासि मज्झु सर माणस ।  
विणु णाहेण णिरव्वसु जायउ ।  
पइमरणे वि कट्टु णो हुल्लहिं ।  
रमणें विणु महु किं पि ण रुच्चइ । 5  
हा हे सांवि<sup>१</sup> कैव कहिं अच्छमि ।  
इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।  
ददधम्मं सुरेण संबोहिय ।  
मंदरसेलहु मंदरवण्णी ।  
मुइय सरारिबिंघु धारिवि सिरि<sup>१०</sup> । 10  
णयैरि पुंडरिणिणि पंडरंघर ।

घत्ता—जहिं घरसिहरि णडंतपण घरसिहरोवरि णियैडि विलंविउ ॥

णवजलकणचक्खंतपण तूसिवि मेहु मऊरें चुंविउ ॥ ५ ॥

७ MB उज्जयगत्तहिं; P उज्जयगत्तहिं. ८ MBP दीहरणेत्तहिं; ९ MBP सत्ते. १० MBP लक्खणेहिं.

5. १ P तुंबरे. २ MBP ललियंगु देउ. ३ MBT मामि and gloss in T सखि. ४ MBP भवंतउ. ५ P उरि. ६ MB °सरि. ७ M णयर. ८ MB °वरि. ९ P णिवडि.

11 a सत्ते सत्त्वेन. 12 अकयविहायउ अकृतविभागः.

5. 1 b णवरीसाणकप्पि केवलईशानकल्पे. 6 b सांवि खामिन्. 9 a मंदरवण्णी मेरुसट्ठवर्णा; b मंदरवण्णी स्तोकरमणीया 10 a °सुरासा° पूर्वदिशा; b सरारिबिंघु स्मरारिजिनस्तस्य बिम्बम्. 12 विलंविउ स्थितः.

## 6

णिवेसेण रम्मा	णहालग्गहम्मा ।	
मुण्णिदेहिं सोम्मा	जिण्णुहिद्वधम्मा ।	
धणेणं समिद्धा	जसेणं पसिद्धा ।	
सुएणं पवुद्धा	वएणं विसुद्धा ।	
घणारामवन्ती	विसाला वसन्ती <sup>५</sup> ।	5
सुपायारदुग्गा	कयाणेयमग्गा ।	
अणेयादुवारा	अणेयप्पयारा ।	
जणेणं महत्था	कएणं कयत्था ।	
भएणं विमुक्का	सया जा णिरिका ।	
इमीए पुरीए	अमोओ सिरिीए ।	10
महेणं महंतो	गुणी वज्जदंतो	
पह्ण चक्कवट्ठी	सुमग्गाणुवट्ठी ।	
कयंतो व्व दंडी	सई तस्स चंडी ।	

यत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विजलि वच्छयलि विलग्गी ॥

झत्ति झसंके कुद्धएण मुक्की मल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥ 15

## 7

अरिहरिणोहवियारणंवाहहु	तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व सिरिण्हसुरहरवासिणि	चविचि सयंपहतियसविलासिणि ।
सिरिमइ णामे तणुरुह हई	णाइ कुमारहं कामविसूइ ।
पाय सक्कुं कुम किं तहि वण्णमि	वम्महमुहवेसु व मण्णमि ।

6. १ P जिणोदिट्ठ°. २ B omits this foot, ३ MP विवुद्धा. ४ MBP add after this: गुणाणं पविस्ती. ५ MBP add after this: महत्तेयवन्ती. ६ MBP सपायार°. ७ MBP अणेयदुवारा.

८ B रएणं. ९ P इमेया सिरिीए.

7. १ B °वावहु.

6. 1 a णिवेसेण रचनया. 9 b णि रि का चोररहिता. 11 a महेणं तापेन. 15 b चंडी भार्या.

7. 2 a सिरि ण्हसुरहर° श्रीप्रभविमानम्. 4 b °मुहावेसु °मुद्रावतारः

तंवइं पोमरायइच्चोक्खइं  
पेच्छिदि तरुणिजाणुसंघाणइं  
ऊरूवाहियालिअंतरि चुउ  
कासु ण गिण्णसिउ कयकित्तणु  
मयरद्धयहुयवहधूमावलि  
णाहिकूउ रइवइरससासणु  
थणैथडुत्तें विडथडुत्तणु  
वम्महभूमि जासु देही कर

रत्तउ कि रावंति ण णक्खइं । 5  
मुणि वि करंति मयणसंघाणइं ।  
कासु ण चलइ वप्प मण्णैदुउ ।  
सोणीगैरयत्तणि ण गुरुत्तणु ।  
रोमावलि तरुणइं हिययावलि ।  
तिवलिभंगु वयभंगपयासणु । 10  
अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।  
तासु जि कामकुंड थिउँ सुहयर ।

घत्ता—पोक्कैलिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥

मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियर परिट्ठिउ ॥ ७ ॥

## 8

वैहुवण्णहिं णयणहि कयरायउ  
कासु ण हित्तैउ किर धुत्तत्तणु  
अंगोवंगपप्पसधुलंतइं  
जाहि रूउ सुरैगुरु ण वियक्कइ  
सा जामच्छइ मउलियणेत्ती  
णिसि ससहरकरहिमलव लेंती  
मणहरवणु असहर जिणु आयउ  
वीणावंसमउंदणिण्णइहिं  
ता उट्ठिउ कलयलु गरुआरउ

रत्तउ एक्कवण्णु जगु जायउ ।  
भउंहावंकत्तें वंकत्तणु ।  
केसैपासु पासु व परचित्तइं ।  
जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ । 5  
सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती ।  
सालसु अंगविलासु वहंती ।  
कहिं मि णे मायउ देवणिकायउ ।  
णाणाथोत्तचित्तथुइसइहिं ।  
वियल्लिउ कण्णहिं णिहामारउ ।

२ MK कियकित्तणु. ३ MBPK सोणीगरुयत्ते ण. ४ MK गुरुयत्तणु. ५ M reads this line as: अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थगथडुत्तें विडथडुत्तणु. ६ P पिउ. ७ MB कोकिलकंठ; P कोकिलकंठ°.

8. १ MP विहुवण्णहिं रयणहि; B विहुवण्णहिं रयणहि. २ M हित्तइं. ३ MBK केसपास. ४ MBP सुरगुरु वि ण अक्खइ. ५ B समाइउ. ६ P °णिणायहिं. ७ B °थुइसइहिं.

6 b मयणसंघाणइं कामसंकल्पाः. 7 b °क्षैदुउ कन्दुकः. 8 a कयकित्तणु कृतव्यावर्णनम्. 10 a रइ-वइरस° कामरसः. 11 a विसेण विसत्तणु विषेणव विषत्वं नश्यति.

8. 8 a °मउंद° मुद्धः.

घत्ता—सुर जोयतिहि ताहि तहि जम्मावरणइं खणि ओसरियइं ॥

10

सर्गमवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पभणंती  
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिघांपं  
उँट्टिय णीससंति अइरीणी  
वम्महु अट्टं वि अंगइं तावइ  
मल्याणिलु पलयाणलु भावइ  
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु  
णहाणु सोयणहाणु व णउ रुच्चइ  
असुहाइ व आहारु ण गेणइ  
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ  
पुरु जमपुरु व घर वि अरइयरउ  
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु  
वंदणु ईंधणु विरहहुयासहु

पंडिय स महियलि तणु विहुणंती ।  
आसासिय चलचामरवारं ।  
दइयविओर्गवेयविहाणी ।  
घित्त जलइ जलइ जणियावइ ।  
भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ । 5  
तहिं किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।  
वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।  
णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।  
तंबोलु वि बोलु व कयतावउ ।  
पैरहुयलविउ महुइ णं महुइरउ । 10  
सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु ।  
सा सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥

पियसुमरणहुहुदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुव्वभवंतरु.

9. १ MBP पडिय महीयलि. २ MBP ०णिहाएं. ३ MBP उट्टी. ४ MBPK ०विओयं.  
५ MBP अट्टइं अंगइं. ६ BP पलयाणिलु. ७ MBP परहुयं. ८ MBP विरहु. ९ M सहीइ.

9. 2 a णिवाएं ०णिपातेन. 3 b दइयेत्यादि- दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेसः  
वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णो. 5 सणु शणवन्धनम्. 6 a सयदलु शतखण्डम्; b सयदलु कमलम्. 7 b  
वसणु वल्लम्; वसणं व्यसनं दुःखम्. 8 a असुहाइ प्राणहारकः. 10 a अरइयरउ अरतिकरम्. 11 b  
सवलहणउं समालम्भनं चन्दनादि; सवलहणु खलघातकं मृतकलानं वा. 13 सपियाइ स्व प्रियया; पई-  
हरवाहें प्रदीर्घवाष्पेण.

10

सुर्यरिउ मुदइ पुव्विल्लउ वरु  
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि  
गउ धरणीसु णिहेल्लेणु जावहिं  
आइय दोहिं मि कहिउ णवेप्पिणु  
जसहरासु उप्पण्णउ केवलु  
ता रापं सीहासणु मेळ्ळिवि  
भणिउ जयहि अरहंतभडारा  
जयहि तिसल्लवेळ्ळिणिळूरण

किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।  
पंडियथाहि पुत्ति समप्पिवि ।  
पहरणउववणवालैय तावहिं ।  
देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।  
आउहसालहि चक्कु णिरमोलु । 5  
सिरमउडेण महीयलु पेळ्ळिवि ।  
जय संसारमहण्णवतारा ।  
सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥

तौवुग्गमियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥ १० ॥

10

11

दंतघायगिरिमित्तिवियारणि  
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु  
समवसरणु गउ सेण्णे सडियउ  
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ  
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणिसरु  
चलवामरु णिच्चामरसेविउ  
दुंदुहिरउ दुहिरवैणिव्वारणु  
छत्तसमासिउ छत्ततियालउ

कण्णतालअलिवारणि वारणि ।  
आरुहैवि ससिसियसुडणिवसणु ।  
अण्णु वि जो पडउ सो सडियउ ।  
कुसुमंविउ हयकोसुमसायउ ।  
अमउ मयारिवीढि संठिउ परु । 5  
भामंडलरुइमंडलदीवउ ।  
लोयसारु संसारुत्तारणु ।  
अतियालउ संबुद्धतियालउ ।

10. १ MBP सुमरिउ. २ MBP णिहेल्लेण. ३ MBP °वालहिं. ४ MBP आविवि. ५ MBP  
घणिमल्लु. ६ MBP ता उग्गमियउ.

11. १ P णिच्चामर. २ P दुंदुहि°. ३ MBP दुहरव°. T दुहिरव°.

11. 1 b °ताल° व्यञ्जनः. 2 a कुलि सदसणु वज्रदन्तः. 3 b सडियउ आत्महितः. 4 b कोसु-  
मायउ कामः. 5 b मयारिवीढि सिंहासने. 6 b °मंडलदीवउ लोकप्रकाशकः. 7 a दुहिरव° दुःखित-  
शब्दः. 8 a छत्ततियालउ छत्रविकयुकः; b अतियालउ छीरहितः अतिक्रान्तकालो वा; °तियालउ  
°लिकालः



कमलासणु केसउ जगि सो हर  
देउ अणिदिउ वंदिउ भावें  
अवहिणाणु राएँ उण्पाइउ

तिथ्यणाहु णामेण जसोहर ।  
वडुंतेण विसुद्धे भावें ।  
रुवि दव्वुं णीसेसु वि वेइउ ।

10

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडियज्जइ ॥

तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणमाउ संपज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु  
आलिगिवि अंके वइसारिय  
चवइ णिवइ चिरु पइ जाणंतउ  
बीयइ कप्पि विमाणि णिवीसिणि  
महुरालाविणि पाणपियारी  
मा झिज्जहि सो तुज्जु मिलेसइ  
बौलहि मइ बीलइ पच्छाइय  
डुत्थिय जडय्येण कूरसरावहु  
उल्लावियविओयसंतावहु  
विबुहहु वुहु गोवालु वि गोवहु  
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहाणउं

तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।  
सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।  
अच्चइ सुरवरिंदु हउं होंतउ ।  
तुहुं ललियंगहु तणिय विलासिणि ।  
एवहिं दूई भूव महारी ।  
हाह व उररुहजुयलि घुलेसइ ।  
पुणु वि धाइ पडुणा संकेइय ।  
गोगाइहि खरु खरहु सरावहु ।  
णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।  
महिलहि महिल जाइ सम्भावहु ।  
पुणु दिव्विजयहु दिणु पयाणउं ।

5

10

घत्ता—आउंचियतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥

इयगयरहणरपयदलिय जंतें राएँ मेइणि कंपइ ॥ १२ ॥

४ MBP उप्पायउ, ५ MB दिव्वु.

12. १ MBP विलासिणि, २ MBP<sup>०</sup> लावणि, ३ MB बाल एम बौलइ, ४ MP जडयणं, ५ B उल्लाविय<sup>०</sup>.

13 भवियहु भव्यस्य.

12. 8 b सरावहु सशब्दस्य.

## 13

तरलतमालतालतालीघणि  
फलहिसिलायलम्मि आसीणी  
सुइह महारुहाउ संचालिवि  
पक्कहिं दिणि करणिहियकवोली  
णवकयलीकंदलसोमाली  
पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंड्हि  
पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ वंड्हि  
मायहि गुज्जु काई किर रक्खहि

गइ णरिदि णवकंकेलीघणि ।  
परभवपियसंभरणे झीणी ।  
कोमलकरकमलें तणु लालिवि ।  
पंडगंडविलुलियचिहुराली ।  
कंसुईह आउच्छिय वाली । 5  
पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।  
पण्णवीडि दंतग्गहिं खंडहि ।  
मज्जु वि किं गियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयणिणिवि रायसुय णीससंति गियजम्मु पयासइ ॥

धरणि व वेल्लिहि मज्जु तुहुं जणणि माइ तुह काई ण सीसइ ॥ १३ ॥ 10

## 14

धाईइसंडे मेरुपुध्विइह  
भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ  
गोरसडु जो तवसि वसिलु व  
पविउलखलु विण जो खलसंकुलु  
जो करि व्व णरवइढोइयकद  
कच्छुजलु णं गिहिवयधारउ  
णागयत्तु णामें तहिं वणिघर

पुव्वविदेहि देसि गंधिइह ।  
पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।  
करिसणजाणउ जो सुंकरिलु व ।  
जो हलहस वि भुवाणि ण भाणउ वलु ।  
बहुकंकणु णं वरकामिणिकर । 5  
णियवइरक्खिउ णं सेवारउ ।  
सुरइवइह्लियाहि वल्लु वर ।

13. १ MP तहिं कंकेलीघणि; B तहिं किंकेलीघणि. २ MBP °कयलीयुकंद°. ३ MBP आउच्छी.  
४ MBP छडुहि.

14. १ MB धायइ°; P धाह्य°. २ T भूयगासु. ३ MB सकरिह.

13. 1 a तरल° दीर्घाः. 5 b कंसुईह पण्डितया धात्र्या. 8 a मायहि धात्र्याः.

14. 2 a भूयगाउं भूतग्रामः शरीरम्. 3 a गोरसडु गोरसाढयः, पक्षे, गौः वाणी तत्र रसिक-  
स्वपत्नी स्यात्; b करिसणं कर्षकः, पक्षे, हस्तिशब्दः; सुकरिह्लु हस्तिपालकः. 4 a °खलु धान्यमलनस्थानम्.  
5 b बहुकंकणं बहुजलधान्यः, पक्षे, बहुसुवर्णवलयः. 6 b गियवइ° निजपतिः; पक्षे, निजवृत्तिः; सेवारउ  
सेवकः. 7 b सुरइवइह्लियाहि सुरतिरेव वधूस्तस्याः.

णंदुं णंदिमित्तु वि सुउ जायउ      णंदिसेणु तहि गन्धि समायउ ।  
 पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ      धैरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।  
 घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी ॥ 10  
 णामे णिण्णामिणि विसम दालिहिणि जणविण्णियगारी ॥ १४ ॥

15

अम्हारउ घर मोक्खु विसेसइ      णिक्कलसउ णीरंजणु दीसइ ।  
 णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु      णिक्कणु तोलीरु व सारियरणु ।  
 णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ      ते<sup>१</sup> जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।  
 अट्टमाउ हंडइं दो पियरइं      कयखलचणयमुट्ठिआहारइं ।  
 कडियलवेडियवक्कलवासइं      हडहडकुट्टफरुससिरकेसइं । 5  
 अम्हइं दहजणाइं तहि सयणइं      कलहंतइं भासियदुव्वयणइं ।  
 पंडुरपविरलदीहरदंतइं      जावच्छहुं परकम्मु करंतइं ।  
 चारणचरियहु तरुसंछणहु      तावेकहिं दिणि हउं गयै रणणहु ।  
 तंहिं अवरतिलयम्मि महीहरि      विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।  
 सरलैहरियपत्तहु तंवरियहु      मइं उच्चोलि भरियै माडुरयहु । 10  
 अण्णु वि दारुमारु गरुयारउ      सीसि णिहिउ णं दुक्खहं भारउ ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं एंतु पलोइउ ॥  
 रयणालंकारहिं विण्णुरिउ जिणु वंदहुं णं सुरैयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्टमारु      णं दुक्खमारु ।  
 महियलि धिवेवि      णरु मइं णवेवि ।

४ M णंदि णंदिमित्तु वि सुउ जायउ; B णंदिमित्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदिमित्तु वि संजायउ.  
 ५ MBPK वरसेणु. ६ P जणविण्णिय<sup>०</sup> but adds 'मण' in the margin between जण and विण्णिय.

15. १ MBPK तोणीरु. २ M जं जिह. ३ MK गउ. ४ MBP तहिं पुणु अवरतिलयमहीहरि.  
 ५ MB सरल. ६ M भरव. ७ MBPK दुक्किय<sup>०</sup>. ८ MBP फुरिउ. ९ M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चल्लिउ.

15. 1 ठ णि कल सउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलानां चरितमनुष्ठानं प्रवृत्तिर्वा.

पुच्छियउ हेउ	कहिं बलिउ लोउ ।	
ता तेण वुत्तु	सुतिगुत्तिगुत्तु ।	
सिद्धत्थकामु	जो <sup>१</sup> जित्तकामु ।	5
जो मुक्कसत्थु	मँणधरियसत्थु ।	
जो वुहणिहाणु	गुणमाणि णिहाणु ।	
धुयमोहवासु	तद्धमूलवासु ।	
जो पाँउसेसु	चम्मट्टिसेसु ।	
गयसरियालि	जो सिसिरियालि ।	10
बहि सयणसाई	जो सुअवसाई ।	
तिव्वुण्हजेट्टि	वइसाहजेट्टि ।	
रवियर विसहइ	जोपण सहई ।	
जो मुणिससंकु	हयपरमसंकु ।	
तहु गंपि वासु	पिहियासवासु ।	15
पणँवंति पाय	पुच्छंति राय ।	
परलोयमगु	सग्गापवग्गु ।	
धिरसंभवाई	जाणइ भवाई ।	
रिसि णाणधारि	जिणधम्मचारि ।	
इह गिरिवरम्मि	सो कंदरम्मि ।	20
णिवसइ कुलीणि	दोगच्चलीणि ।	

वत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिण दंडिखंडु पसरैप्पिणुं यवियउ ॥

पइसिवि साहु मर्हासहहि जइपयजुयलउ भसिइ णवियउ ॥ १६ ॥

16. १ P पुच्छियउ. २ G omits this foot; K however adds it the margin.  
३ M मणि धरिय°. ४ B °मूलु. ५ P पावसेसु. ६ MB add after this: वरिसंति मेहि, वुहु सहिय  
वेहि. ७ M पणवंत. ८ MBP महासहो.

16. 5 a सिद्धत्थकामु सिद्धार्थं मोक्षे कामोऽभिलाषो यस्य. 7 b °णि हा गु रुमानुः. 10 a गय-  
सरियालि गतो नदीनां वेगो यस्मिन् काले. 11 b सुअवसाई पडावश्यकादिषु सुष्ठु उच्यतः. 12 a °जेट्टि  
°महति. 13 b सहुइ शोभते. 14 b हयपरमसंकु हतपरमशङ्कः. 22 दंडिखंडु शतजलैर् जीर्णं सिवितं  
वज्रम्.

17

तवपहावविभावियर्वासवु  
 कवणं दइवै हउं दालिदिणि  
 कहहि देव तुहुं सच्च जणहि  
 ता पमैणइ समणगणपहाणउ  
 णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतर  
 गांमि पलासपुब्बि तहिं गहवइ  
 गेहिणि ताहि धूय तुहुं हई  
 वीयरायसिद्धंतु पढंतहु  
 एकहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु  
 अण्णाणइ पई उप्परि घत्तिउ  
 किमिकुलपूयरुहिरदुग्गंधउ  
 सुणहकलेवर दियहि दुइजइ  
 घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥

जो मंडइ जो खंडइ वि विहिं मि समाणा समणमडारा ॥ १७ ॥

18

पेच्छिउ मुणि परिहरियसकायउ  
 भसणसरोर धिउ अणेतहि  
 पणउ करेण्णिणु जोइ खमाविउ  
 ईसिं समेण मरेवि असुहाउलि  
 धम्मं सुच्चहि दुक्कियदुक्खहु  
 फणिचरणइ जागि को अहिणाणइ

पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।  
 हई दोग्गयगोत्तणियंविणि ।  
 दीण वि मइ पियवयणं पीणहि ।  
 दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।  
 आसि कयउ जं पई कम्मंतर । 5  
 देविलु सुमइ तासु रंजियमइ ।  
 हलिय जुवाणहं ण रइइ ।  
 जीवाजीवमेय भावंतहु ।  
 हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।  
 रिसिणा तणुभूसणु व विचित्तिउ । 10  
 पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।  
 तैवं जि पुणु वि पदिट्ठु तइजइ ।

तुह अणुकंपभाउ संजायउ ।  
 पई णयणेहिं ण दीसइ जेतहि ।  
 तेण जि खमभाउ जि संभाविउ ।  
 तुहुं हईसि एत्थु दुग्गयकुलि ।  
 धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु । 5  
 परमत्येण धम्मु को जाणइ ।

17. १ MBP वासउ. २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो. ३ MBP पमणइ मुणि समणपहाणउ.  
 ४ MP पई जं. ५ MBP गाम. ६ MB ललिय. ७ MBP तेम जि पुणु पई दिहु. ८ MBP तूसंति.

18. १ MP परिहरियसकायउ; B परिहरिसंकायउ. २ B भाव. ३ MBP इसि उवसणें मरिवि.  
 ४ M असुहाहलि. ५ MB दुग्गम.

17. 7 b हलिय कर्षकली.

18. 1 a परिहरियसकायउ परित्यक्तशरीरः.

लोइयधम्मु होई जलण्हाणं  
धम्मु होइ पुणु पुणु अच्चवणं  
धम्मु होइ धइ गियमुहदंसणि  
धम्मु होइ तिलपायसभोयणि  
धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु  
धम्मु होइ पलवेहु करंतहु

वीरपुरिसभंडणवक्खणं ।  
पाहाणुप्परि पत्थरउवणं ।  
धम्मु होइ सुँरहीतणुफंसणि ।  
धम्मु होउ आसत्थालिगणि ।  
धम्मु होइ महु मञ्जु रंसंतहु ।  
छेलउ कुकुड किडि मारंतहु ।

10

यत्ता—एहु कुलिगु कुधम्मु सुए एण णवर दुग्गइ जाइजइ ॥

जिण्णाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसालक्खणु किजइ ॥ १८ ॥

19

मेहलकण्हाइणदम्भयणइं  
किं लिगोणं लिगिसंदोहहु  
अंतरंगु जसु सुधु ण दीसइ  
दंडउ अप्पउ मुँणिविहियारउ  
उवसमैपुव्वाणुव्वयचारहिं  
करपल्लउ परदविणि म दोवहि  
सुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु  
अवर पव्वपोसहु परिपालहि  
अहिसिंचिवि अंचिवि गियसत्तिइ  
तुसगासु वि उवसंतहु देज्जसु

धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं ।  
जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु ।  
कायकिलेसं तहु किं होसैइ ।  
तासु तहँट्टिउ भवसंसारउ ।  
अलिउ म जंपहि जीउं म मारहि । 5  
परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि ।  
रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु ।  
जिणपडिबिबइं णिच्च णिहालहि ।  
ताइं णवेज्जसु गइयइ भत्तिइ ।  
णियमएण गियमणु गियमेज्जसु । 10

यत्ता—पण्णासट्ठत्तरु सउ वि सियपंचमिहि बालि जइ उवसहि ॥

सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुँहु तं चिरदुरिउ पणासहि ॥ १९ ॥

६ M होय. ७ MBP कुडु अच्चमणं. ८ MBP तणु सुरही फंसणि. ९ P पियंतहं.

19. १ B किं लिगिण सलिगिसंदोहहु. २ MBP सीसइ. BPT मुणिवहियारउ. ४ P तहिट्टिउ.  
५ P उवसमु. ६ MBP जीव. ७ MBP तं उहुं.

8 a अच्चवणं आचमनेन. 9 a धइ धृते; b सुरही तणु<sup>०</sup> गोशरीरम्.

19. 1 a मेहलकण्हाइणं मेखला कृष्णाजिनं कृष्णहरिणचर्मच; दम्भयणइं दर्भतृणानि. 11 पण्णा-  
सट्ठत्तरु सउ वि सियपंचमिहि शुक्रपद्ममीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिमाणोपवासैः. 12 सुयहरि श्रुतधरे.

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ	ते णिंदंतहं दुम्मइ विलसइ ।
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ	वंदणिल्लु भंणु किह णिदिज्जइ ।
दुच्चितियउ दुबोह्लिउ दुक्किउ	आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
ता सा खविय तविय गयगावें	अंतोअंतो पच्छत्तावें ।
महु पावोहे कहि पावणियत्तणु	जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु । 5
मायामोहु मुइवि मणु रोहिवि	एमण्णणउं णिदिवि गरहिवि ।
गय रिसिवइ वंदिवि णियेवासहु	हउं लग्गी सहि सुयउववासहु ।
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं	मइं दौलिहिणीइ तहिं तइयहुं ।
खलु वि सुपत्तहु अंणुदिणु दिण्णउं	छड्डिउ सव्वजीवपेसुण्णउं ।
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें	वोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें । 10

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्वणु सिरिमइ भासइ ॥

एकु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु	गुरुउवंपसलेसु पांलेप्पिणु ।
पुणु आहारु सरीरु सुपप्पिणु	परैमक्खरइं पंच सुमरेप्पिणु ।
मुइय गंपि ईसाणविमाणइ	सिरिपहणामि रमियगिवाणइ ।
ललियंगहु महएवि सयंपह	इइं जुइणिजियचंदप्पह ।
मुइ पिययमि छम्मास जिप्पिणु	इह इइं सग्गाउ चप्पिणु । 5

20. १ MBP किह भणु. २ BP पच्छत्तावें. ३ BP पावहि. ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५ MBP सणिवासहु. ६ P दालिहिणि एत्तहिं. ७ MBP भोयणु.

21. १ P °उवणसु. २ MB पावेप्पिणु. ३ B omits this foot.

20. 6 a मणु रोहिवि मनो निदध्य. 10 a दोणय हु ल्लें दमणपुण्ण; b दुल्लहतेल्लें परसमोपि आचितेन तैलेन.

पिउं सुयरंतिहि चंदु वि तावइ चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ ।  
 अट्ट वि अंगइ हयइ अणंगे तुहुं किं ण मुणहि इंगियेलिंगे ।  
 एम चवेप्पिणु पडु आणाविउ णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ ।  
 णियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ फुरइ व चेळंचलि संणिहियउ ।  
 अणणणइ कीलासंताणइ लिहियइ सँरिसरगिरिवरडौणइ । 10  
 अणणइ तहिं रईरहसंचरियइ भुत्तहं भइयइ गूढइ धरियइ ।  
 एत्थु वसंती एत्थु रमंती सो प्हउ हउं पही हौंती ।  
 एम भँणप्पिणु गुज्जु ण रक्खिउ सुंदरीइ णियहियवउ अक्खिउ ।

घत्ता—आणहि पंडिइ भँणपूउ फेडहि वम्महवाहि महारी ॥

भरह पुष्पकयंतुज्जालिय अण ण तियमँइ मइगरुयारी ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पकयंतविरइए  
 महामन्वभरहाणुमणिए महाकव्वे णिण्णामियाधम्मलंभो णाम  
 वावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥

॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP पिय सुयरंतिहि, ५ B इंदियलिंगे, MB सरसरि°, MBP °गहनइ, ८ MBP रहरसंचरियइ,  
 ९ P भइए and gloss मयेन, १० MBP कहेप्पिणु, ११ MBP पाणविउ, १२ MBP पुष्पकयंतु°,  
 १३ MBP णियमइ.



# XXIII

तं गिसुगिनि पड करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहो ॥  
अइकुडिल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहो ॥ ध्रुवकं ॥

## I

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।  
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुद्धयधयमालाचवलं	हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।	5
गायणंगणगाइयजिणधवलं	सिद्धंतपढणकलयलमुहलं ।	
गायणंगणलग्गमहासिहरं	अइरंदचंदकररासिहरं ।	
जंक्खिजक्खपडिमाणिलयं	विदुमतलंडंभयतलसिलयं ।	
मरगयमयखंभंसमुद्धरियं	मंणिमत्तवारणालंकरियं ।	
आयासफलिहमयभित्तयलं	हरिणीलणिबद्धधरित्तियलं ।	10
उब्बाइयधूवंगारवरं	गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।	
घल्लियपणुल्लियफुल्लचयं	ओलवियमोत्तियदामसयं ।	
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं	णविऊण जिणं जियजम्मजरं ।	
पड विउसिइ पसरिवि दावियउ	णायरणरेहिं परिभावियउ ।	

MBP give, at the commencement of this Samadhi, the following stanza:-

अङ्गुलिदलकलापमसमयुति नखानिकुरुम्बकर्णिकं  
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।  
विलसदणुग्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

1. १ P सतेय. २ MBPK पवणुद्धय. ३ M गायणगह. ४ M आरंद. ५ M जंक्खिजक्ख. ६ MBP तलउभय. ७ M ०खंध. ८ P मयमत्त. ९ MBP ०भित्तियलं. १० MBP उब्बाइयधूवंगार.

1. 5 b ० सुहा ० सुधाचूर्णम्. 8 b विदुमे त्यादि-विदुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला यत्र. 14 a विउसिइ विदुप्पा धात्र्या.

घत्ता—इय दसदिखु घत्त समुच्छलिय जो पडवइयर जाणइ ॥  
धरणीसरतंगयहि सिरिमइहि सो थणजुयलं माणइ ॥ १ ॥

15

## 2

दुवई—विविहाहरणकिरणविष्करणोहाभियफणिमुरेसरा ।  
ता मायंगतुंगतुरयासण चलिय णरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तं णिज्जियसियसरयं णिवसियविरयं वारियणरयं ।

पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुभविषयरयं ।

दिट्ठो लिहिओ<sup>१</sup> तेहि पडो झंसंधणडो मणि णंच्चियओ ।

5

तं पेच्छिवि अहिलसियसियो भणु को ण णिवो रोमंचियओ ।

केण वि भणिया—पुत्तलिया लयंकोमलिया वण्णुजलिया ।

एसा बाला सामलिया णामं ललिया अलिकौतलिया ।

चिरमवि हौती मज्झ पिया पच्चक्खसिया विहिकत्थणिया ।

केण वि भणियं—मई मुणिया सुरवरगणिया मूंगलोयणिया ।

10

हौती कंते महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।

केण वि भणियं—दिणसिरि ईहु मेरुगिरि इह सा तरुणि ।

इह मई देवें हौतइण गायंतइण मोहिय हरिणि<sup>२</sup> ।

कु वि भणइ—आसाइ विणु गुरु पक्ख खणु किह दिणु गंवमि ।

कु वि<sup>३</sup> भणइ—हा किं करमि णिच्छउ सरमि जइ णउ रममि ।

15

११ P °तणयहु; K तणहे. १२ MBP जुयलउ.

2. १ M °हरणकिरणविष्करणोहाभिय°; B °हरणविष्करणोहाभिय°; P हरणकिरणविष्करणोहाभिय°, २ P दुरयासणा. ३ B लिहिओ तहे तेहि; P लिहिओ सो तेहि. ४ MBP झसंचिय°, ५ MBP चितविओ. ६ P पेच्छेविणु. ७ MBP भणियं. ८ MBP पत्तलिया. ९ MPB लइ°. १० M मई मुणि-मुणिया; P मणि मुणिया. ११ MBP भिय°. १२ MBP कंता. १३ MBP महुललियगिरि. १४ MBP add after this: मज्झु वि चरिणि. १५ MBP को वि एव भणइ.

15 पडवइयर चित्रपटव्यतिकरः.

2. ३ सियसरयं शुक्रशरत्पक्षे शुक्रमेव. 4 सुभविषयरयं सुष्ठु भव्यानां धरदम्. 7 लयकोमलिया लतावत्कोमला. 9 °सिया लक्ष्मीः; विहिकत्थणिया विधिना कुत्रापि नीता, विधिकदधितेत्यर्थः.

को वि सैदीहउ णीससइ तावें सुसइ उरयलु हणइ ।  
 अप्पउ घल्लइ धरणियले आणेहि हले तं<sup>१०</sup> मुहुं भणइ ।  
 को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविण्डियउ णिज्जीवं थिउ ।  
 उच्चाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियधरहु णिउ ।  
 धाई जिणेप्पिणु उँत्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु ।  
 हउं वरइँत्तु भँवंतरिउ इह अवयरिउ तहि धैरिवि करु ।  
 घत्ता—विहसेवि पबोल्लिउ पंडियइ जो गुणइ महुं अक्खइ ॥  
 सो सुँअवेल्लीरइसुहहल्लो रसु परमत्थं चक्खइ ॥ २ ॥

20

## 3

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउं भासण ।

सो सरसरविहिणु सा ण लहइ पईसइ णरयवासण ॥ १ ॥

ता तेत्थंतरि	विरहमहाभरि ।	
कुँमरिहि घणघणि	जायइ जोव्वणि	
छक्खंडावणि	जिणिवि महाफणि ।	5
देव वि खयर वि	णिस्सेयइ रवि ।	
चोयँवि गयवइ	आयउ महिवइ ।	
पुरिहि पइट्टउ	सघरि णिविट्टउ ।	
महुरालावें	सपणयभावें ।	
सुय बोल्लाविय	णिरु संताविय ।	10
पियपरिणामें	णिइयकामें ।	
पुत्ति म सिज्जहि	लइ पडिवज्जहि ।	
ण्हाणु विलेवणु	कंकणु परिहणु ।	

१६ MB सुदीहउ. १७ MBP तमुहुं. १८ MBP णिज्जो; १९ MBP चाइउ. २० MBP दुत्तरहिं.  
 २१ P वरयसु. २२ M भवंतर. २३ MBP धरमि. २४ M सुहं.

3. १ P अलियउ भावइ. २ MBP णिवडइ. ३ P णरइ. ४ MBP एत्थंतरि. ५ MBP read this line as: पसरियरायइ, कुवरिहि ( P कुवरहि ) जायइ. ६ MBP add after this: उत्तुंगत्यणि, घणि घणि जोव्वणि. ७ P चोइयगयवइ. ८ M कंकणु पहिरणु; B कंकणु परिहणु; P कंचणु पहिरणु.

17 तं तां तरुणीम्; सुहुं वारंवारम्. 23 'सु अ' सुता.

3. 2 सरसरविहिणु स्मरबाणविभिन्नः.

गुरुयणु रंजहि	भोग्यणु भुंजहि ।	
घञ्जउ वायहि	णञ्जहि गायहि ।	15
अक्खरु भावहि	पक्खि पढावहि ।	
तुण्डु सुद्धुल्लउ	तिहुँयणमल्लउ ।	
हुँउं णालोयमि	तो णउ जीवमि ।	
तायहु जंपिउ	तं मुद्धइ किउ ।	
पुणु आवेप्पिणु	पणउ करेप्पिणु ।	20
णियडि णिसण्णी	विरहविसण्णी ।	
आलिंगेप्पिणु	सिरि बुद्धेप्पिणु ।	
णयणाणंदे	भणिय णरिंदे ।	
चारु चिराणउं	कहमि कहाणउं ।	
मयरद्धयसिरि	णिस्सुणि किसोयरि ।	25
घत्ता—चिरु एत्थु पुंडरिगिणिपुरिहि इमहु भवहु पंचमंभवि ॥		
हउं अद्धकक्खवट्ठिहि तणउ होंतउ कुलि णिच्चुल्लवि ॥ ३ ॥		

## 4

दुवई—णामे चंदाकित्ति जयंकित्ति सुमित्तवैरेण भूसिओ ।

मुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥ १ ॥

णिरुवमसुहसयहारिसियमणेहिं	चिरु भुनु रञ्जु दोहिं मि जणेहिं ।	
अवसाणि विहिं वि सिरि परिहरेवि	पीईवडुणि वणि पइसरेवि ।	
पयसेवियचंदसेणगुरुहि	किउ तँवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।	5
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ	सह चेय विहिं वि कय कालगइ ।	
विणिण वि जाया माहिंदसुर	सत्तंबुहिआउपमाणधर ।	
चिरु जीवेप्पिणु तँहि तियसयुय	पुण्णक्खइ सुंदरि तँहि वि सुय ।	

१P अक्खर, १० MBP जइ ओद्धुल्लउ, १२ MB हउं आलोयमि; P हउं अवलोयमि, १२ G omits विरह-  
विसण्णी, १३ MB पंचमइ भवि.

4. १ MBP जसाकित्ति, २ M ०धरेण, ३ MBP तउ, ४ MBK द्वियतियसयुय.

19 ४ जं पिउ यत्थियं, जल्पितं वा.

पुक्खरवरि पुव्वमेरसिहरे      तहु पुव्वविदेहि रसंतकरे ।  
 घणधण्णरिद्धि जायाइसउ      णामेण मंगलावइ विसउ । 10  
 जहिं दहिउ दुधु जलु जिह सुलहु      जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बह ।  
 घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हँलिणिहि कह भासइ ॥  
 आरत्तचंचु चंचेलमुहु जंपमाणु मँणु तोसइ ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—मत्तमहंतधवलगलगजियवहिरियविउलगोउले ।  
 विसरिसत्रिसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥ १ ॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले	कमलदलच्छाडयविमलजले ।	
जलजंतसित्तकेलीतरणे	तरणतरकुसुमरयछच्चरणे ।	
छच्चरणालंकियदियपवरे	दियपवरकलरबुद्धंतसरे ।	5
सरसीमारामपपससुहे	सुहयरछुहपँडरि रायगिहे ।	
गिहसिहरालंगियघणणियरे ।		
णिर्वरायणायणिच्चित्तैपप	पयपाडियपरणरवीरसप ।	
सयचत्तर्पसाहियजलपरिहे	परिहरियपावि मंदिरि <sup>१</sup> सिरिहे ।	
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ	णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ ।	10
रइ विव कामहु कंत सइ	सइ णं देविदहु हंसगइ ।	

घत्ता—सा णामे देवि मणोहरिय जिह तिह सँच्चसउच्चें ॥  
 अँम्हइं विणिण वि सम्गहु ल्हसिय हयखयकालदइच्चें ॥ ५ ॥

५ P हालिणिहि. ६ M जणु.

5. १ M °धवलगजियरवबहिरिय°. २ MB °तरणी. ३ MB तरणतर°. ४ MB छच्चरणे.  
 ५ MBP °पँडुरि°. ६ B दियराय°. ७ MBP णिच्चंत°. ८ MBP पयासिय°. ९ P मंदरीसिरिहे. १० MBP  
 कामहु तहु कंत. ११ MB सिरिमइ सच्चें. १२ P अण वि सिरिमइ सम्गहु ल्हसिय अँम्हइं हयणियमिच्चें.

4. 10 a जायाइसउ जातातिशयः. 12 सुउ शुक्रः; हलिणिहि कर्षकक्रियः 13 चंचेलमुहु  
 वक्रमुखः.

5. a जलजंत° जलयन्त्राणि; b °छच्चरणे भ्रमराः षडाचरणकाः पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः.  
 5 b दिय° द्विजाः पक्षिणः.

6

दुवई—जाया ताहं गम्भि हलहर हरि विणिण वि सुकयकारिणो ।

चडिय जुवाणभावि सिरिवम्मविमीसंणणामधारिणो ॥ १ ॥

दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि

अहिसिचिवि अम्हहं देवि महि ।

गउ जणणु सुधम्मसूरिसरणु

किउ घोर वीर जिणतवचरणु ।

छिण्णउं उप्पत्तिजरामरणु

पत्तउ कवलु णिकलकरणु ।

5

छुड परिभाविउ कंचणु वि तणुं

राएण विमुक्कहु घरं जि वणु ।

णिज्झाइयअज्झासाइयहो

थंडिलु वि थणत्थलु राइयहो ।

गिरिकंदरैमंदिरु किं करइ

दुक्खिपरिणामु ण तं धरइ ।

इय भणैवि मणोहर थिय भवणे

जिणवरु ज्ञायंतिइ णिययमणे ।

चिण्णउं जणणिइ दुच्चरु चरिउ

पक्खालिउ जम्मंतरदुरिउ ।

10

संणासणि ज्ञाइवि पंचगुरु

सा हई दिवि ललियंगसुरु ।

घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसातिसिउ सुयउ बिहीसंणराणउ ॥

उप्पण्णउ णरयमहाविवरि कालं को ण विलीणउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—लच्छिसरासईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ ।

दुत्थियकप्पसु व सुहाहिउ खयकरिदसणपेल्लिओ ॥ १ ॥

सवुं पेळ्ळिवि हउं दुक्खाउलिउ

सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ ।

हा चक्कपाणि हा पाणपिय

हा बंधव किं अवहेरि किय ।

सुसहोयर दामोयर चवहि

हा पक्कवार मइं संथवहि ।

5

सुर णरवइ णिहिवइ पुहइवइ

किं मरइ भडारउ चक्कवइ ।

मइं मिच्छाभावै भावियउ

मडउल्लउ खंघि चडावियउ ।

6. १ MBP °बिहीसण°. २ MBP दुष्पम्भु. ३ MB पत्तउ णिकलु णिम्मलु करणु; P पत्तउ णिम्मलु णिकलकरणु; T णिकलु करणु. ४ M तिणु. ५ M घर. ६ P °कंदर. ७ MB भरिवि; P भणिवि. ८ P °तिसातिसउ. ९ B बिहीसणु.

7. १ MBT सउ. २ P एकवार.

6. 4 a जणणु पिता श्रीघरः 5 b णिकलकरणु सिद्धावस्थाप्रापकम्. 7 a णिज्झा इयेखा दि-  
निर्प्याता अभिनवा वधूस्तस्याः स्वाद आलिङ्गनम्. 11 b दिवि खगं.

7. 8 सडु मृतकम्.

तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं	जंपैवि पञ्चुत्तरु देहि महु ।	
मईमूढु ण काई मि संभरमि	पुरगामसीमरणहिं चरमि ।	
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु	ललियंगु ललियभासिरु अमरु ।	10
पहि थिउ चोयंतु वसह सभय	सो जंतें णिप्पीलइ सियय ।	
मइं भणिउं म णियवलु णिट्ठवहि	किं पाणिइ लोणिउं उट्ठवहि ।	
किं णेहु होइ दासीसुयहे	किं तेहु विणिग्गइ वालुयहे ।	
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ	जइ पउं वण्ण पइं जाणियउं ।	
घत्ता—तो पउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसुरहि हलहर ॥		15
जे सुयं ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥		

8

दुवई—हाहाकार पुत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।

धीराधार धीरै विउँल भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायँर भायर पुक्करहि	हउं माय तुहारी संभरहि ।	
तुह मंदिरि णिवसिवि कियँउ तउ	संपत्ती तेण सुहासिभवु ।	
गउ पम भणिवि सुरु णियघरहो	मइं मुहुं जोईउ चक्केसरहो ।	5
सच्चउ णिच्चेयणु जाणियउं	सलु रँइउ डुयासणु आणियउ ।	
लहु वासुपउ सक्कारियउ	तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।	
वयसंजमभारधुरंधरहो	दिवसंकिउ पासि जुयंधरहो ।	
पंचिदियगयउलु पीडियँउ	तँउ कियउ सीहणिकीडियउ ।	
पुणु सव्वभहु उच्चाइयउ	मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।	10

१ MBP जंपमि. ४ मइमूढ. ५ P चोवंतु. ६ P लोणउं. ७ B मय.

8, MBP पुत्त मं मेल्लहि. २ MBP धीर. ३ P विउणं. ४ भायंर भायह. ५ MK कयउ. ६ P जोबउ. ७ P सलु रयउ. ८ MBP संकारियउ. ९ P पीलियउ. १० B omits this foot. ११ B omits this line. १२ K मिच्छत्तु जडत्तु.

10 a जणणिचर पूर्वभवस्था जननी. 11 b सियय सिकता वालुका. 15 कीस किमर्थम्.

8. 2 धीराधार धैर्याधाराः. 4 b सुहासिभवु देवभवः 6 b सलु शवसानं विता. 7 b सरज्जि स्वराज्ये.

अँगसणविहाणि जं साहियउ  
हउं अरुहु भरेण भरेवि सुउ

तं चउविहु मई आराहियउ ।  
अञ्जुइ आहंडलु णवर हुउ ।

घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मई अञ्जुयकँप्पहो गियउ ॥  
ललियंगदेउ सो गिययगुरु गँरुयइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥ ८ ॥

9

दुवई—सुउ ललियंगदेउ जंबूतरल्लेणि दीवि सुहवई ॥  
सुरागिरि सुरादिसाह सुविदेहइ जणमहि मंगलावई ॥ १ ॥

खगसंसाहियविज्जावल्लिहे  
गंधव्वणयरि तहिं विमलजसु  
पायडपयाउ णरवइ वसइ  
तहिं देविहि उयरि पहावइहि  
णामेण महीघरु धीरँझुणि  
सुउ रज्जि यवेप्पिणु सेवियउ  
मुत्तावलितवतावै तविउ  
संतें दंतें रुद्धासवेण  
णं सससिणिसाहि पहावइहि  
तउ दिण्णउं कैयजगसंतियइ  
सीसिणियइ पुण्णु समाज्जियउ  
रयणावालि णामें जैणियदिहि  
घत्ता—स वि मय तहिं णिरु गिरसणु करिवि आउक्खइ किं जिज्जइ ॥ 10

रुप्पयगिरिंदउत्तरयलिहे ।  
वासेंउ णामें वासवसरिखु ।  
जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ । 5  
उप्पण्णउ कलमरालगइहि ।  
ताएण अरिंजउ दिव्वसुणि ।  
णिग्गंथभाउ संभावियउ ।  
दढकम्मालाणु परिकखविउ ।  
अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण । 10  
पणवंतिहिं ताहि पहावइहि ।  
सुद्धइ पोमावइकंतियइ ।  
साविसयकसायबल्लु णिज्जियउ ।  
कयदेहसोसउववासाविहि ।

सोलहमइ सग्गि पडिंदु हुँय भणु किह धम्म ण किज्जइ ॥ ९ ॥

१३ B omits this foot. १४ P °कप्पहि. १५ P गुरुयइ.

9. १ MBP ललियंग देउ. B °लंछणदीवि. MBP सुविदेहइ. MBP °पुब्बत्थलिहे. ५ P वासव.  
६ P दिव्वसुणि. ७ MBP परिकखयउं. ८ MBP जगकयसंतियइ. ९ MBP जायदिहि. १० MBP किज्जइ.  
११ MBP हुउ.

11 b चउ विहु चल्लुविधमाराधनास्वरूपम्. 12 भरेण भरे वि अत्यर्थे स्मृत्वा.

9. 1 सुहवई सुखवती. 2 जणमहि जनपदः 5 b कलि° कलहः पापं वा. 9 b कम्मालाणु कर्म-  
बन्धनम्. 11 a सससि णि साहि चन्द्रयुक्तायां रात्रौ. 15 जिज्जइ जीव्यते.



## IO

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छिमदिसमंदरपुवि रिद्धिया ।

पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियछत्तत्तयहो

जइणिहेसियरयणत्तयहो ।

परिगणियमुणियकालत्तयहो

हयजाइजरामरणत्तयहो ।

थिरैवरियधरियगुत्तित्तयहो

सुईसंबोहियभुवणत्तयहो ।

5

विद्धंसियणियसल्लत्तयहो

परियाणियजीवगइत्तयहो ।

वियलियरसाइगव्वत्तयहो

गईकम्माइयदेहत्तयहो ।

वज्जियहेड्डिमझाणत्तयहो

कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।

कैवलचेयणगुणइत्तयहो

सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।

णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो

हउं करिवि कुहरककरवरहो ।

10

फणिमणिभामासियअहिहरहो

गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।

तहिं णंदणि सुपसिद्धस्मि वणे

इंदासासंठियजिणभवणे ।

विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सई

महिहर बोद्धाविउ मुद्धि मई ।

घत्ता—किं ण मुणहि तुहुं खयराहिवइ हउं णंदणु तुह हौंतउ ॥

सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु हयंतउ ॥ १० ॥

15

## II

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।

सिरिहररायधरिणिमणहरिभुं किं णउं सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजैहि विसयविसु

विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।

भवि भवि संघारइ विसयविसु

तां तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।

10. १ MBP पच्छिमदिसि मंदरि पुव्व°. २ MBP सयलत्तयहो. ३ MBP थियचरिय°. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP गयकम्मा°.

11. १ MBP °भउ. २ MBP ण सरीसि. ३ MBP भुंजंसि.

10. 1 णलिणं कदीवि पुक्करद्वीपे. 5 b सुइ° अगमः. 6 b °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमू-  
त्रिका च. 7 b देहत्तय° कामिकमोदारिकं तेजसं च. 8 b °पयत्तय° प्रयत्नः. 9 a °इत्तयहो युक्तस्य.  
15 सीरि° बलभद्रः.

अहिणंदिवि सुरवरराउ खयर  
भडभक्खिणि णावइ डाइणिय  
ढोइवि णंदणु सुणिगुरुविहिउ  
सहुं अइवहुयहिं विजाहरहिं  
तवुं चिण्णु तेण कणयावलिय  
कालेण गैलंते महिहरहो  
सो प्राणिप्राणपरिरक्खयर

संप्राइउ सहसा णियणयर । 5  
महिकंपहु पुत्तहु मेइणिय ।  
वैयमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ ।  
तरुकोडरगिरिविवरंतरहिं ।  
चिरसंचियदुरियावलि गलिय ।  
पुणु अंतयालु संपण्णु तहो । 10  
प्राणइ जायउ तियसिंदवर ।

घत्ता—जावियउ वीससायरसमइ पुणु काले संचैल्लिउ ॥  
धादइसंडइ पुब्बिल्लसुण जो सुरगिरितरुमैल्लिउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया ।  
उज्झाणयरि तीइ जयवम्मु णरेसरु सुण्णहा पिया ॥ १ ॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ  
दिक्खहि कारणि ओलग्गियउ  
ते दिण्णइ पंच मेइव्वयइ  
मयणिजियसीहे णाई मया  
आयंबिल्लु तवुं दुच्चरु चरिवि  
होऊण सिवी गउ सिर्ववयहो  
सूल्लिहि णरसिरमालाधरहो

अजियंजउ णामे लद्धजउ ।  
जणणे अहिणंदणु मग्गियउ । 5  
मुक्काई तेण सत्त वि भयई ।  
इहपरलोयास वि खयहु गया ।  
कमट्ठयंगंठिहि णीहेरिवि ।  
सिंहुं सुहहु णामु णिरु णीरयहो ।  
णउ अण्णहु तं कवालकरहो ।

४ MBPK सुरवइ गउ. ५ MBP संपाइउ. ६ MBP णंदण. ७ MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ. ८ MBP तरुकोडरि. ९ MBP तउ. १० MBP वहेते. ११ MBP संपण्णु. १२ M पाणिपाणु; B पाणिपाण. १३ MBP पाणइ. १४ MBP संचालियउ. १५ MBP °मालियउ.

12. १ B omits this line. २ MBP °महावयई. ३ MBP तव दुच्चरु चरिवि. ४ B कमट्ठइ. ५ MBP णीसरिवि. ६ MBP सिवहरहो. ७ MBP सिवसुहहु णाम.

11. 7 b स हिउ स्वहितः. 13 °सुए पुनि.

12. 8 a सिववयहो शिवपदम्. 9 a सूलि हि शंकरस्य.

छुहकामकोहविद्धं सणहे	गणिणिहि पासम्मि सुदंसणहे । 10
जं वड परिपालिउ सुप्पहइ	तं किं वणिज्जइ कइकहइ ।
सुइच्चवुसोक्खणिणासियइ	संखद्धफासरसणासियइ ।
रंणावलिकयरणासियइ	पच्छाविरइयसंणासियइ ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥	
अच्चइ अणुदिसदेवचु खणे पत्तउ ताइ सुदुल्लहुं ॥ १२ ॥	15

## 13

दुवई—चोईहरयणपहरणुत्तासियणासियारिउमडत्तणं ।

कयमजियंजएण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥

घम्मवोसउड्डिडिमपहयउ	एकहिं दिणि समवसरणु गयउ ।
थिउ अग्गइ मउलियउहयकर	वंदिउ अहिणंदणु तित्थयर ।
मेरु व समैणु णिच्चलु थविउ	पंचासवदारणिरोहु किउ । 5
सुविसुद्धचिचु रिसि विव गणिउ	पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ ।
मायासुयवइयर साहियउ	तहिं अवसरि मइं संबोहियउ ।
मुणिघम्मंसवणसामियमइहिं	वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं ।
गुरुमंदरथविह समासियउ	हुउ जइवरु मोहु विणासियउ ।
आलिगिउ चारणरिद्धियए	संबोहिणणसंसिद्धियए । 10
वणिं पुत्तिइ पावयत्तामियए	होइवि णामें णिण्णामियए ।
अहिहरिणमिल्लमिल्लीणिलए	दिट्ठउ गिरिवरि अंबरतिलए ।
पइं तासु पासि सुउ घम्मु चिरु	किं बहुएं मज्झु वि सो जि गुरु ।
दिवि जीविउ हउं माणियरमइं	दह दह जि दोणि सायरसमइं ।
घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कैलमलवज्जिय ॥	15
बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥	

८ MBP गणियहि. ९ MBP तं वणिज्जइ कह. १० MP रयणावलि°.

13. १ P चउदह°. २ MBP धम्मुरवोसउ डिडिमु हयउ. ३ MBP समणु. ४ MBP °धम्म समण°. ५ MBP संबोहियणाणसमिद्धियए. ६ MP कलमल°.

10 b गणिणिहि पासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम्. 13 a रण्णावलि° रत्नावली नाम तपः; °रण्णासियइ रत्नत्रययुक्तया.

13. २ वरि सदरणावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि. 10 b संबोहिय° सर्वाविशानम्. 14 a माणियरमइं अनुभूतलक्ष्मीकाणि.

## 14

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिबिबजंपणे ।

अवर बि कह बि तुज्जु पिय विरहमहाणलसुसियचंदणे ॥ १ ॥

जम्मंतरि विचरुं संभरामि  
हउं पुंछिउ वियलियदुम्मइणा  
लीलाउद्धरियवसुंधरहो  
दीर्वमि जंतुरुक्खंकियण  
सीयासरिदक्खिणयलि पवर  
णामेण सुसीमा वर णयरि  
अमयमइ मंति सइरत्तमण  
तहि सुउ पवसिउ पवसियवयणु  
सह ते विणिण बि कवडेण विणु  
ते वे वि विउस विच्छिणमय  
एक्कहिं दिणि रापं सहुं सुहय  
सो पवुणा पुंछिउ जीवगइ  
संतेण जेण जगु परिणमइ

अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरामि ।  
वंभेदे लंतवसुरवइणा ।  
मइ अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो । 5  
मेरुहि विदेहि पुव्वासियण ।  
वच्छावइदेसु वच्छपउरु ।  
तहिं पवु अजियंजउ पुरिसहरि ।  
तवु सच्चहाम णामेण धण ।  
तवु सहयर वियसिउ सियणयणु । 10  
णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।  
छलजाइहेउकुविवायरय ।  
मइसायररिसिसौमीवु गय ।  
आहासइ सैव्वउ तासु जइ ।  
ते कारणु कालु महाणिवइ । 15

घत्ता—जहि अच्छइ तं धुवुं गयणयलु गइहि धम्म सहकारिउ ॥

फुड होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं उवईरिउ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—पोग्गलदवु होइ णिच्चेयणु जं जं णिवं सुंचेयणं ।

तहिं तहिं कहमि तुज्जु परमत्थे जीउ जि णाणकारणं ॥ १ ॥

14. १ BP विरहाणल°. २ MBP विण्णउं. P पुंछिउ. ४ MP पच्छपवर; B सुवच्छपवर.  
५ MBP °सामीउ. ६ P पुंछिउ. ७ MBPK सच्चउ. ८ MBP परिणवइ. ९ MBP पुउ. १० MB  
एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ.

15. १ MBP संचेयणं.

14. 12 b °जा ई °मिथ्योत्तरम्. 17 उवईरिउ प्रतिपादितम्.

विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>३</sup> तसइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>३</sup> रमइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ  
 विणु जीवें किं<sup>३</sup> पोग्गलु सुणइ  
 ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं  
 जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह  
 जो पंतु ण दीसइ जंतु ण वि  
 जइ चितियमेत्तें तहु कुगइ  
 दालिहिउ भुक्खइ किं मरइ  
 को जाणइ भासिउ केण किह  
 सिद्धंतहु किं जणु गुरु णवइ  
 किं वीहिउ वट्टा णउ हँवइ

विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ । 5  
 किं विद्धँउ वेयणाइ कणइ ।  
 अणुहुत्तपुहइपत्थिवँसियहिं ।  
 तो विणु णँयणहिं ण णियइ कह ।  
 तहु कँवणु भाउ किर कवण छवि ।  
 तो चित्तँ पूरइ किं ण रइ । 10  
 भोयणु चित्तविउ किं ण करइ ।  
 आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह ।  
 तवतावें किं अप्पउ खवइ ।  
 तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तयरहु लेहणिवज्जियहो चित्तँलिहणु ण संतउ ॥ 15

इह दर्विदियभाविंदियहं जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

## 16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण गेत्तेहिं ण सो सो जइ पँयट्ठओ ।

ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तँय पइं ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु  
 ससहाउ भाउ परिभाँउ ण वि  
 जइ चित्तँ वित्तँ णउ हवइ

चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।  
 जं णहु तं णहु जि ण संदु रवि ।  
 ता झाइय देवय किहँ चवइ । 5

२ MBP किह, ३ B किम, ४ P किह, ५ MBP पोग्गलु, ६ MB बद्धउ, ७ B पत्थिवसयहिं,  
 ८ MBPK णयणेण, ९ B चित्ति, १० MBT सिद्धत्तहु; and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्;  
 P सिद्धंतउ and gloss आगमनिमित्तम्, ११ MBP बहइ, १२ M चित्तलिहणु,

16. १ M पयट्ठओ; P पइत्थओ, २ M पुत्त, ३ BPT परिभावि, ४ MBP चित्तिउ, ५ MBP किं,

15. 9 b भाउ परिणतिः; छवि आकारो वर्णो वा, 12 b णवेत्तादि—यथा नवकम्बलः पुरुष इति  
 वाच्यं नव वा कम्बला अस्थेति संशयहेतुत्वादप्रमाणं तथा आगमेऽपि, 13 a सिद्धंतहु आगमनिमित्तम्, 14 a  
 वट्टा मार्गः, 15 ण संतउ अवियमानम्,

16. 1 पयट्ठओ पदार्थः, 4 a ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भावः,

पविरइयसुहासुहरयदलई  
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं  
जइ सहु जि ण घडइ पई भणिउ  
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ  
धम्मू जि कयमोकखउ गयसरहो  
कइभासु कवु किह पई घडइ  
घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि पइउं पई संभैवियउ ॥  
तो किरियाजोएं किह जणेण लोहिं सुवण्णैउं दावियउ ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुपवि चण्फलं ।  
कुरु कुरु परमधम्मू जिणभासिउ लहसि संमिच्छियं फलं ॥ १ ॥  
तं गिसुणैवि हई सम्मइय वारिसर गिण्वेणं लइय ।  
गुरुमत्ति करिवि पणविय गुरुहे रविउयइ जडत्तणु अंबुरुहे ।  
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे आयाणियमणियमुणियवयणे । 5  
कल्लणमित्त ते वे वि जण संसारवियारविरत्तमण ।  
तासु जि तेलोकदिवायरहो पावइय पासि मइसायरहो ।  
आयंबिलु वड्डमाणु कियउ तउ भीसु सुदंसणसंणियउ ।  
दोहिं मि दुक्कम्म गिरोहियउ खय वेणिण वि गियंमवि गियहियउ ।  
सिद्धुत्तमट्टादिट्टाई मुय सुक्कामर इंद पडिंद ह्यु । 10

६ P °रइदलई, ७ MBP कि, ८ MBP पिउ, ९ MBPT जं पंडिउ पलवइ गयसयहो.  
१० MB कि पइ; P कि पडु. ११ MBPKT सिहि; T सिहि मयूर: कवेरमिणाय:, अन्यस्य पुनरभिरिति.  
१२ M पई संभासियउ; B पई जइ भावियउ, १३ M सुवण्णउं दावियउ; B सुवण्ण दावियउ.

17. १ MB समीहियं; P समाहियं. २ MBP गिसुणिवि. ३ BP सुदंसणु संणियउ. ४ MBP गियमिवि.

6 a रयदलई कर्ममेदाः, 8 a सहु आगमः, 9 a घडघोसु घटशब्दः; वसहि वृषमे. 10 a-b धम्म जी लादि-गयसरहो नट्टकामस्य मुने: धम्मू जि चारित्रमेव कृतमोक्षम्; पंडिउ वैतण्डिकः लावइ योजयति धनुरेव गतबाणस्य कृतमोक्षम्. 11 b सिह पक्षी.

17. 1 जाइ" मिथ्योत्तरम्, 8 b सुदंसणं संणियउ मेरुसंज्ञितम्, मेरुपंक्तिविधिरित्यर्थः. 10 a सिद्धुत्तमट्टादिट्टाई मुय शिष्टा आगमे प्रतिपादिता चतुर्विधा आराधकस्य या उत्तमार्थदृष्टिः चतुर्विधाहारत्यागस्तथा श्रुती.

ओसत्तियकायकंतिसिहइं      गिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइं ।  
 धादइसंडइ थिय सिसुससिहि      पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।  
 पच्छिमविदेहि णरदिण्णसुह      णामेण पुक्खलावइ वसुह ।  
 घत्ता—तहिं अत्थि पुंडरिंकिणि णयरि राउ घणंजैउ गिवसइ ॥  
 जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसँस्सइ ॥ १७ ॥

15

## 18

दुवइ—ससिसिय भमरणील णँळपाउसणासपवेसकुसवहा ।  
 इदं पडिंद वे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥ १ ॥  
 जयसेणहि णंदणु सीरधर      पहसियउ इंदु दणुयारिवर ।  
 वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु      तवरयणँ किणियणिकामतुसु ।  
 णारायणु जायउ जसँसइहि      भूहरवियारि वेउ व णइहि । 5  
 णामेण महाबलअइबलहं      तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।  
 सिरि भुंजंतहुं गउ मरिवि हरि      अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।  
 अवलोयवि णियबंधवपलउ      मणु मुक्कु ण वीरँ मोक्कलउ ।  
 वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं      पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।  
 तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि      प्राणयतियसेसरत्तु करिवि । 10  
 वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ      अंतयराण ण को णडिउ ।  
 पुव्वुत्तदीवभायंतरण      पुव्वुत्तसुरदिदियंतरण ।  
 पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि      णामेण वच्छयावइ धरणि ।  
 पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय      महँसेणहु देवि वसुंधरिय ।  
 घत्ता—तहि देविहि मयणँमयालसहि गम्भवासु सेवेप्पिणु ॥ 15  
 चउदहमर्यकप्पसुराहिवइ थिउ माणुसु होप्पिणु ॥ १८ ॥

15

५ MBP पुंडरिणिणि. ६ MBP घणजउ. ७ Mp जसंमइ.

18. १ MBP णं पाउसणासपवेसि. २ MBP जसमइहि. ३ MBP पाणइ. ४ P मरुसेणहु.  
 ५ MBP 'महालसिहि. ६ P चउदहमइ.

11 a ओ सारि थे त्या दि—उत्सारिता स्फटिता अवसाने कायकान्तिः शिखाज्योतिर्यै; b °जल णि हि णिह इं सारोपमाणि.

18. 1 स सिसिय चन्द्रवत्पाण्डुरः; कुसवहा मेघाः. 3 a सीरधर हलधरः; b दणुयारि° वासुदेवः.  
 4 b °णि कामतुसु वृषवत्तुच्छा मानुष्यकभोगाः. 5 b वेउ व वेगः प्रवाह इव. 11 a वीसद्धिसमाण हिं  
 विशातिसागरोपमैः.

## 19

दुवई—हुई जयसेणचाकि को चारइ हौती पुण्णसत्तिया ।

तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो  
चोइहरयणइं णिहि परिहरेवि  
घणपावकों व्व विहावणउ  
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं  
गउ प्राणै विसँजिवि घुलियघण  
तीसंबुहिसंणिहाइं जिइवि  
पुक्खँरदीवहु पुव्विहु गिरि  
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह  
तहि रयणसंचि अजियंजयहो  
जोइयसुहसिविणयसंतइहे

पायंतियम्मि सीमंधरहो ।  
दुद्धरु चारित्तभारुद्धरेवि ।  
भावेप्पिणु सोलह भावणउ ।  
अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।  
उवरिगमेवज्जहि मज्झैमए ।  
अहम्मिंदु देउ तेत्थहु चइवि ।  
णामेण मेहँसरि वूढसिरि ।  
णरजोणि मंगलावइ वसुह ।  
रायहु पालियसावयवहो ।  
हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

5

10

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥

उप्पण्णु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भंडारउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई— पुणु णरखयररायरायत्तणु मेळिवि गउ वर्णतरं ।

हंमिवि अंतरंगु पविलंबियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥ १ ॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ  
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं  
आइल्लउ तित्थु पवात्तियउ

पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।  
केवलु किउ तच्चणिरूवणउं ।  
तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ ।

5

19. १ P हुव जयसेणु. २ P चउवहं. ३ MBP पाण. ४ P विवज्जिवि. ५ MB मज्झवए.  
P मज्झिमए. ६ MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि. ७ MBP मेरुदरि.

20. १ MBP read this line as: तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवात्तियउ.

19. ३ b पा यं तिय म्मि पादसमीपे. ४ a अं बुहि सं णि हा इं सागरोपमाणि.

20. ३ b सुत्तउत्तु आगमोक्तम्. ५ a आ इल्लउ प्रधानम्.



गउ मोक्खहु अक्खरहो	तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।	
अग्गिदहिं णियमउडाणलिण	भणुं किं ण होइ सुक्कियफलण ।	
इय कहपवेचि मइं संकहिण	सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।	
हे हे मह कुलकमलेकसिए	ललियंगहु तुह ललियंगपिए ।	
हियउल्लउ णिदिंयइंदियउ	तइयहुं जिणधम्माणांविउ ।	10
संभरसु पुत्ति रमियामरहो	अंजणणामयहु धराधरहो ।	
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो	दीवहु गयाइं णंदीसरहो ।	
संभरसु पुत्ति पविउलकमले	कीलियइं सईंभूरमणजले ।	
किय जाणपिणु रुद्धासंवहो	णिव्वाणपुज्ज पिहियासवहो ।	

घत्ता—संभरसि पुत्ति मइं भासियइं पयइं वहुअहिणाणइं ॥ 15

तुम्हइं दंपईहिं रईयरइं सुरवरकीलाठणइं ॥ २० ॥

## 21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ विहिं वि जइयहुं ।

हउं कालेण कह व णिल्लोद्धिउ इंदवयाउ तइयहुं ॥ १ ॥

हमच्चुया सुओ सुंए	कुले सुरिंदसंयुए ।	
वसुंधरावहूयरे	महंतपुण्णगोयरे ।	
णिबद्धपेम्मराइणा	जसोहरेण राइणा ।	5
सुओ हुओ हियंतओ	इहेव वज्जदंतओ ।	
कुवाइपहिं मोहिओ	सुमंतिणा पबोहिओ ।	
कयंगयारिण्हाणओ	मरेवि दिण्णदाणओ ।	
सुधम्मभावणामल्लो	खगाहिचो महाबल्लो ।	
दुइजसग्गठाणए	सिरिण्णपे विमाणए ।	10

१B अक्खर अक्खरहो. २ MBP भणु होइ किं ण. ४ M मइं सईं कहिए; B सईं मइं कहिए. ५ P सयंभू.

६ B दंपइरईयरइं.

१ 21. १ MP सए.

6 a अक्खर लब्धान्तत्त्वतुष्टयरूपतयाविनक्षरम्.

21. 1 णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु नियुतं लक्षं तस्यार्थं पद्माशतसहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्वत्.

3 a इ अहम्; सुंए हे पुत्रि. 4 a °वहूयरे वधूदरे. 8 a °अंगयारि° सदनान्तको जिनः.

लयारपुव्वणामओ	सरुवजित्तकामओ ।	
हुओ सुरो दुवीसमो	महं गुरु स पच्छिमो ।	
पियव्वया अणामिया	गयाउणा खंयं गिया ।	
तुमं पि तण्णिल्लिया	पहूय अंतिमिल्लिया ।	
दिवायरस्स णं पहा	सल्लेक्खणा सयंपहा ।	15
कयंतचंडिमाहओ	तुहं पियो तहिं मओ ।	
वरुण्णलाइ खेडण	पुरे विचित्तणीडण ।	
पलंबयोरवाहुणो	णिवस्स वज्जवाहुणो ।	
सुवण्णवण्णकायओ	कुलंगणाइ जायओ ।	
रवि व्व सो दुल्लंघओ	मयच्छि वज्जजंघओ ।	20
पिओसुया सुहंकरा	महं सुहीण ते परा ।	
संमीडु भूमिमंडले	वसंति ते सुकौंतले ।	
सुरालयाउ आइया	रमावईइ जाइया ।	
तुमं सयां पहायरी	महं सुया किसोयरी ।	
वरं वरं विहाविही	वियक्खणा विहाविही ।	25
पियागमं पयासिही	दिणेहिं तीहिं भासिही ।	
सिरिमईइ भासियं	तए महं पयासियं ।	
भैरामि हं पैरं भवं	चिरं पि ताय णं णवं ।	
घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहुदु रिसहजिणंदे ॥		30
णवकुंदेपुष्पदंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदे ॥ २१ ॥		
इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए		
महामव्वभरहाणुमण्णिण महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम		
तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥		

॥ संधि ॥ २३ ॥

२ MBK खयाणिया, ३ BP तुमं ति, ४ MBP पहू अयं ति मिल्लिया, ५ MBP सुल्लेक्खणा, ६ MP कयति, ७ MBP समीव ८ MBP सुकोमले, ९ BP सयंपहायरी, १० M इहाविही, ११ MBP सराभि, १२ P गयं, १३ MBP पुष्पयंतहिं.

11. a लयारपुव्वणामओ ललितार्णः. 16 a °चंडिमा° रौद्रत्वम्, 20 b मयच्छि हे सुयाक्षि. 21 a पिओसुया पितापुत्रौ, 23 b रमावईइ लक्ष्मीवत्याम्, 25 a विहाविही प्रकथति; b वियक्खणा पण्डिता धात्री; विहाविही वि+इह+ आविही आगमिष्यति. 26 b भासिही शोभिष्यते विवाहेन.

## XXIV

सहुं णंदणेण गियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥  
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ धुवकं ॥

I

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं  
आयहु वज्जवहुपाहुणयहु  
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि  
आया माणणिज्ज ते माणमि  
जाँमि भणिवि गउ णरवइ जावँहि  
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी  
णं गंगाणईहि जउंणाणइ  
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि  
करिणिइ करणि जेम करु मग्गिय  
मत्थइ चुंवि वि पुरउ णिवेसिय  
मुहरापण जि सिद्धं णियच्छिउ

अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउं ।  
अज्ज करमि करणिज्जु सँविणयहु ।  
अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि । 5  
लहु अद्धवहि गंपि घर आणमि ।  
पंडियभवणु पराइय तावहिं ।  
दिट्ठी सुय णरणाहु केरी ।  
णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।  
पुरिखुज्जमलीला इव लच्छिहि । 10  
वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।  
हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।  
कज्जु तो वि णिवकणइ पुच्छिउ ।

यत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं ताहिं मइं दोइय ॥

णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुइताइय ॥ १ ॥

15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं  
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसंकरे ।  
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते—  
रिदमतिवित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

1. १B लोयणु सुहु. २ P रावलउ. ३ MBP अज्जु—and throughout this Kadavaka. ४ P सुविणयहु. ५ B अद्धवहु. ६ M एम. ७ MB तावेहिं; P ताविहिं. ८ MB तावेहिं; P ताविहिं. ९ MBP मयणुक्कोय. १० MB छुहु; P सिद्ध. ११ P पुच्छिउ.

1. 6 b अद्धवहि अर्धपथे. 8 a मयणुक्कोव मदनप्रसरः.

2

पच्छइ सयलहं आयउ जो वर  
 सो णं वम्महेण पेसिउ सर  
 सो णं रइरससलिलहु सायव  
 सो णं रूवविलासु पसारिउ  
 सो णं विज्जाविहि विथारिउ  
 सो णं सूहउ महु मणि भावइ  
 पुत्ति महासिहरहु दुहणासहु  
 फेणहिमट्टेहाससंकासहु  
 हियवउ रइवियसिउं मउंलेपिणु  
 वंदिउ जिणु सुहवज्जियवज्जिउ  
 वंदिउ जिणु जगं वंदियवंदिउ  
 जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ  
 अकिरिउ णिकलु गयणसरिच्छउ

सो णं सोहग्गहु केरउ घर ।  
 सो णं जुवइयणहं जीवियहर ।  
 सो णं तुह मुहकमलदिवायर ।  
 सो णं कंतिकोसु वट्टारिउ ।  
 सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ । 5  
 जो तुह अट्ट वि अंगइं तावइ ।  
 देवि पयाहिण जिणवरवासहु ।  
 णां पुरंदरेण केलासहु ।  
 तेण वे वि णियकर मउंलेपिणु ।  
 वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ । 10  
 वंदिउ जिणु बुहणिदियणिदिउ ।  
 विणु सयलेण सत्थु किंहु णज्जइ ।  
 जंपउ जडयणु बुद्धि तुच्छउ ।

घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह पंर मुर केहउ ॥

वलइयभुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहर जेहउ ॥ २ ॥

15

3

जिणु वंदेपिणु वदिय मुणिवर  
 अंगणहररइरंजियदसंदिस  
 जसु ण कलंकु गोप्ति णउ हियवइ

मुणिवर ते सुयहर णं गणहर ।  
 दसदिसिवहपसरियणिम्मलजैस ।  
 वयवालिणि मइ जसु थिय जिणणइ ।

2. १ MBP °णिलयहु, २ MP °हिमहिं, ३ P कहलासहु, ४ MBP रइं, ५ MP भेलेपिणु, ६ BPT सुहवज्जिणं, ७ M जयवंदियवंदिउ; BP भयवज्जियवंदिउ, ८ MBP परगुर.

3. १ MBP °दसदिस, २ MBP °जसु, ३ MP वयवालिणि.

2. 9 a र इ विय सिउ कीडोलसितम्. 10 a सुह वज्जि यं शुभकमेरहितः. 12 a+b ज म्मे त्या दि-  
 जन्मवासो गर्भावतारो देवस्य न युज्यते, अयोनि संभवत्वादस्य. अत्रोत्तरमाहाचार्यः—विणु इत्या दि-कलाभिरव-  
 यवैर्भूतिभिर्वा सह वर्तते इति सकलं शरीरं तेन विनान्यमुत्तात्तमवत् शिवस्य शास्त्रं कथं ण जइ युज्यते. 15 वल इय-  
 भुय हो वलितभुजस्य.

णयसिहं पट्टसाल स पट्टुउ  
दिट्टु पडु सहुं सुलिहियचित्तं  
संतं इट्टुविओयकंतं  
कंतं जयलच्छिहि विक्कंतं  
कंतं चंदेण व संपुण्णे  
रुण्णे पर सरीरु णिव्वट्टइ  
वट्टइ जाणिउं कहिं दीसइ सा  
जा सा सा भणंतु सो मुच्छिउ  
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ  
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि

सपइट्टु मइ संमुहुं दिट्टु ।  
चित्तं चित्तिउ तेण ससंतं । 5  
कं तं धुणियउं भवसंकतं ।  
कंतं सुमरियपेम्मुकंतं ।  
पुण्णे पियसंजोउ ण रुण्णे ।  
णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टइ ।  
सा मणणलिणोयरवासिणि जा । 10  
सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।  
धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।  
अक्खमियं जं तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भयंसंचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु परंढकिउ ॥

णरवइसुयइ सुललियमुयइ कीस सहियवउ वंकिउ ॥ ३ ॥ 15

4

एहु ईसाणकप्पु विविहामरु  
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु  
एहु ललियंणु देउ हउं हौतउ  
थणयल्लुलियहारमणहारी  
अच्छुयणाहु एहु तियसेसरु

लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहर ।  
पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।  
एत्थु वसंतउ एत्थु रमतउ ।  
एह सयंपह देवि महारी ।  
कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु । 5

१ B °सिरपट्ट°. ५ M omits this foot. ६ BPK पेम्मुकंतं सुयरियकंतं. ७ MBPT णीवट्टइ.  
८ MBP णीवट्टिउ देहु. ९ B अक्खमियउं. १० MBP भवि. ११ MBP °ढंकिउ. १२ MBP  
वंकिउ.

4. १ P इहु and throughout this Kadavak. २ MB सुप्पहसंपयसुर°.

3. 4 a पट्टसाल स पट्टुउं स पट्टसालां प्रविष्टः; b सपइट्टु सप्रतिष्ठः. 5 b ससंतं निश्चयतां.  
6 a संतं उत्तमपुरुषेण; °विओयकंतं वियोगपीडितेन; b कं तं धुणियउं तेन मत्तकं क्रियतम्. 7 b °पेम्मुकंतं  
खेदयुक्तेन. 8 a कंतं चंदेण व क्रमनीयेन चन्द्रेणव; b पुण्णे पुण्येन. 9 a णिव्वट्टइ विनश्यति. 10 a वट्टइ  
जा णिउं ज्ञानं वर्तते. 11 a जा सा सेलादि-या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मीः 'सेयम्, सेयम्' इति सूच्छितः;  
b सोमुच्छिउ सौम्यः उच्छ्रितः. 12 a धाइइ धाव्या; b धाइइ धाविते. 13 a माइइ हे पुत्रि; b अक्ख-  
मियं इन्द्रियैर्ज्ञातम्.

कहइ जुयंघरदेवकहाणउं  
 पयइ अम्हइं वे वि बइट्टइं  
 इय मेरुहि गयाइं जगखंभहु  
 एहु अंजणमहिहरु महु रुच्चइ  
 इह सहुं सुरणाहें मुहललियइं  
 अंबरतिलउ एहु गिरिसारउ  
 एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं

लंतवबंभेसर मइं लीणउं ।  
 कहइ णिसुणिवि णियंमणि संतुट्टइं ।  
 इह लग्गाइं जिणणहणारंभहु ।  
 एहु दीउ गंदीसर बुच्चइ ।  
 वंदणहत्तिइ विणिण वि चलियइं । 10  
 इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ ।  
 थियइं वे वि जिणघम्मु सुंणंतइं ।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णच्चइ ॥

तियसिद्धिणे जिणवरमवणे महि पयपोमहि अंचइ ॥ ४ ॥

## 5

अण्णेत्तहि वि एत्थु णो लिहियउ  
 रइणेउरसहें रोमंविउ  
 अम्हइं तणुपरिमलपरिभमियउं  
 एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु  
 सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ  
 एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ  
 इह कवोलपत्तावलिमोडणु  
 एत्थु ण लिहियउ विरह्हाउरु मुहुं  
 एत्थु ण लिहियउ भूर्सणु पेसिउ  
 एकु जि लिहियउ अणुणयगारउ

जो मइं कीलारंभु पविहियउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ मोरं पणच्चिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं ।  
 सुंय गुह्यणआगमणुन्भासिरु ।  
 जं वहुणयणहं सोहइ महियउ । 5  
 एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु ।  
 एत्थु ण लिहियउ प्रिउं विवरंमुहु ।  
 एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ ।  
 इहु महु विण्णउ पायपहारउ । 10

३ MB कहि. ४ MB णियमण<sup>०</sup>. ५ MB सरंतइं.

5. १ MBP णालिहियउ. २ B मेरु. ३ MBP सुउ. ४ MB गुरुणु. ५ MBP read this line as: एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ. ६ MBP विरह्हाउर. ७ MBP पिउ. ८ MB भूसण. ९ M एत्थु ण; B एउ महु.

4. 13 पाडहिउ नाट्याचार्यः. 14 तियसहि<sup>०</sup> मेरुः.

5. 4 b सुय शुक्रः, 10 a अणुणय<sup>०</sup> अनुकूलता.

पयवडिण सारंभु मुयाविउ

अण्णहि णेही रुवविह्वई

अण्णहि पसइणिहाणइ णेत्तइं

एत्थु ताइ हउं आसि खमाविउ ।

देवि सयंपह माणवि ह्वई ।

अण्णु लिहइ किं महु वारित्तइं ।

यत्ता—अणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय महु आणहि ॥

सा तेत्थु पुरे थिय जम्मि धैरे तहिं जायवि संमाणहि ॥ ५ ॥ 15

## 6

ता दूईइ उंचु अम्हारी

वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी

धीय ताहि सिरिमइ उप्पण्णी

पहु ताइ लिहियउ कहवइयर

एम भणेपिणु हउं एत्थाइय

तावेत्तहि कुमार गउ तेत्तहि

पियविओयसिहिजालाछित्तउ

तरुणीवग्गुरवडिउ पलोइउ

णयरि पुंडरिंकिणि पुरिसारी ।

लच्छीमइ महएवि भडारी ।

पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विण्णी ।

पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वर ।

पडसंबंधिणि वत्त णिवेइय । 6

उप्पलखेडउ पुरवर जेत्तहि ।

घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।

णं वणवाहैं मृगु संभाविय ।

यत्ता—रहैरिद्धएण मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥

विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्रीणहिं ॥ ६ ॥ 10

## 7

दुप्परिणामे कामे तप्पइ

रसइ हसइ णीससइ विरुज्जइ

कर मोडइ धम्मेल्लय मेळइ

वेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ

एकहिं णिलइ ण णिविसुं वि अच्छइ

सीयलमलयजपकें लिप्पइ ।

उट्टउ बइसइ मोहें मुज्जइ ।

अहर डसइ अणिवन्दु पवोल्लइ ।

एर पच्छण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ ।

दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ । 5

१० MBP °णिहाइ ण, ११ MB अण्ण, १२ MBP जेत्थ, १३ MBP हरे.

6. १ MPB वुत्तु, २ MBP ताहि, ६ M °बग्गुर पडिउ विलोइउ; P बग्गुर वडिउ विलोइउ.

४ MBP मिगु, ५ M रइविद्धएण; P रइरिद्धएण, ६ MBP पाणहिं.

7. १ MBP अणिवद्धउ वोल्लइ, २ MB पच्छण्ण°, ३ P णिमिमु.

11. a सारंभु कोप: 15 संमाण हि मदीयकुशलवार्तया संतोषय.

6. 10 विवरीउ कामजनितान्मादादसंबद्धप्रलापी.

पहाइ ण धुवई ण जिणवर पुजइ  
रमइ ण कंतुउ तुरउ ण वाहइ  
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ  
पकु वि रायविणोउ ण माणइ  
मंतिहि वज्जबाहु विण्णवियउ

घत्ता—हई सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥

दुक्की णियइ दुक्कर जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु  
गउ तहि जहि अँच्छइ सो बालउ  
आवहि जाम ण होइ बियालउ  
सुणइ महारी पइ कहि दिट्ठी  
गउ कुमार परिभमहुं सलीलइ  
पुव्वजम्मू तहि एण णियच्छिउ  
कामु वि कामरुवि जं पाडइ  
पट्टई लिहियउ हियवइ लिहियउ  
अवसें होसइ णिव विहिविहियउ  
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें  
वज्जबाहु सहस त्ति पधाइउ  
रच्छसोह पुरि कारवेप्पिणु

भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ ।  
करि वि रहु वि णयँणहि ण वाहइ ।  
परँ णिम्मीलियच्छु प्यै श्वायइ ।  
कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ ।  
तणउ देव मयणं परिह्वियउ । 10

उट्ठिउ णरवइ दर विहसेप्पिणु ।  
पभणइ पहु सुय थिउं किं कालउ ।  
अज्जु जि किज्जइ तुह प्यैमेलउ ।  
अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी ।  
विट्ठउ पहु आलिहिउ जिणालइ । 5  
चिरँकंतावयार परिह्विउ ।  
ताहि रुउ कं कं ण भमाडइ ।  
को<sup>१</sup> तं पुसइ णिडालइ लिहियउ ।  
एम जाम मईवंधें कहियउ ।  
सहुं सेण्णेण धँवलधयछत्तें । 10  
णयरि पुंडरिकाणि संप्रैइउ ।  
लीलइ मत्तकरिदि चडेप्पिणु ।

घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविभुएण जयकारिउ ॥

सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णैयारिउ ॥ ८ ॥

\* M तुरिउ. ५ MBP णयणहिं वि ण. ६ P परि. ७ MBP पिय. ८ P परिहाविउ.

8. १ MB सो अँच्छइ, २ MBP किं थिउ, ३ MBP पियमेलउ, ४ MBP चिरु कंता<sup>१</sup>.  
५ MBP पट्टालिहियउ, ६ B omits this line, ७ MBP णिलाडइ, ८ B वहियउ, ९ MBP मईवंते.  
१० BP धवलछत्तें, ११ MBP संपाईउ, १२ M णवियारिउ.

7. 7 a तुरउ तुरगः, 10 b परिह्वियउ विह्वलीकृतः कदर्थितो वा, 12 णियइ भवितव्यता.

8. 1 a णहछोडउ नखोच्छोटिका, 6 b परिह्विउ ज्ञातः, 7 a कामरुवि कामावस्थायाम्.  
9 b मईवंधें मतिवन्धनेन बुद्धिप्रपन्नेन, 13 पविभुएण वज्रबाहुणा, 14 णवयारिउ नमस्कृतः.



9

सालउ सस विणिण वि जोएण्णिण  
 राए अवलोइयउ सँस्तीयउ  
 पुरेणारीयणु कहिं मि ण माइउ  
 णिवइहि केरउ सहि धरणीवइ  
 जसहरणामहु धीय जिणिंदहु  
 एयहु उप्पलखेडणरेसहु  
 जो सग्गाउ देउ अवयरियउ  
 इहु सो वज्जजंघु हलि णरवर  
 सो वि ण पावइ चिचु जि पावइ  
 पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु  
 का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय  
 ताइ णियंतिय रूखु कुमारहु

णयणहुं केरउ फलु पविण्णिण ।  
 अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।  
 अवहण्णरु चूरंतु पधाइउ ।  
 वज्जवाहु पँहु सो बहिणीवइ ।  
 एह वसुंधरिं बहिणि णरिंदहु । 5  
 दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।  
 जो सिरिमइवर जम्मंतरियउ ।  
 एयहु संमुहुं मइं पँसरिय कह ।  
 तं पँवंतु वि तणु संतावइ ।  
 णं णं सो अणंणु मुणिमणमहु । 10  
 लंघवि कोहु पलोयमि वरसूय ।  
 पेम्मजलोहिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रइपल्लियउं उव्वेल्लियउं णिच्छुइंतु णिरंभइ ॥

कविणिम्मलए चुयै मेहलए ददु परिहँणु णिवंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारै  
 उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं  
 का वि भणइ भासिय दुव्वयणइं  
 एयहु धरि दासिचु समिच्छमि  
 का वि भणइ णिवसुय सकँयत्थी

अंतरियउ सुहउ पायारै ।  
 किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।  
 अज्ज परइ मेहँमि पँइसयणइं ।  
 जीवमि छुहँ मुहकमलु णियच्छमि ।  
 ण वियाणहुं चिरै काइं वउत्थी । 5

9. १ MBPT ससीयउ. २ MBP पुरि. ३ K पराइउ. ४ MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु. ५ MBPK बाहिण. ६ MBP पसरिउ. ७ MBP पावंतु जि. ८ MBP वरसिय. ९ MP धुउ मेहलए ददु; B चुए मेहलए ददु. १० MBP परिहाणु णिवंधइ.

10. १ B मेहिलि. २ MBP पिउसयणइं. ३ MBP कुहु. ४ P सकियत्थी. ५ B चिर.

9. 2 a सस्तीयउ भागिनियः 11 b कोहु भित्तिः; वरसूय वरश्रीः. 13 उ व्वेल्लियउ उच्छासितम्.

10. 1 a-b णे त्वा दि-नगश्च प्राङ्गणवृक्षः, अग्रद्वारं प्रतोली, ताम्यामन्तरितः प्राकारेण च; अथवा, न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्यां निस्सल तं प्रष्टुम्. 5 b वउत्थी व्रतस्था.

पहउ जाहि रमणु संपणउं  
तहि अवसरि पडुभवणि पड्डइं  
उवणिउ ण्हाणु विलेवणु णिवसणु

मं छुडु को वि महातउ चिण्णउं ।  
पाहुणाइं पीढेसु णिविड्डइं ।  
ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविड्डु रसु सुरहिउ सुर्वसु पंचिदियहुं पियारउ ॥

जेवणु जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं धुत्तिहि केरउ ॥ १० ॥

10

## 11

भणइ णरिंदु ण कि पि विर्यप्पमि  
तुहुं घर आयउ तुह कि किज्जउ  
सवइ कुलिसयर धणुकयसंकउ  
धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु  
धणु णयणइं जाणमि मइमइलइं  
धणु किं संपिवाउ जरु होसइ  
धणु काणीणहु दीणहुं दुल्लहु  
सयलु अत्थि महु तुज्झ पसापं  
सकुलायउ सोहइउं दावहि  
तं णरणाहें वयणु समत्थिउ  
परमवाउ सुरभिहुणु जि आयउ  
अच्छइ धिरहाणलसंतत्तउ

धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।  
भणु भणु वज्जवाहु कि दिज्जउ ।  
धणु गुणेण सहं णिञ्जु जि वंकउ ।  
धणु मारणउं वंशुढेइयविसु ।  
तेण जि धोणि इहु वि ण णिहालइ । 5  
तेण जि धणि अंणिबंधउं भासइ ।  
उत्तिमपुरिसहुं माणु सुदुल्लहु ।  
एकु जि मग्गमि सुहिअणुरापं ।  
सिरिमइ वज्रजंघकरि लीवहि ।  
खिचहु उप्परि धिउ ओमत्थिउ । 10  
महु तुह मंदिरि माणुसु जायउ ।  
संजोइज्जइ दइवविहिंसउ ।

घत्ता—चकेसरहो तहु पवियरहो कण्णइ लिहियउ आणिउ ॥

गुणभूसियण ता विउसियण पडपवंसु वक्खाणिउ ॥ ११ ॥

६ MB सबसु. ७ MBP जेमणु.

11. १ B विर्यप्पमि. २ MBP कुलिसयर. ३ MBP धणु णरणयणइं जाणमि मइलइं. ४ MBP धणु इट्ठइ ण. ५ MBP आणिवद्धउं. ६ MBP माणु सुवज्जहु. ७ M मत्थि. ८ MBP लायहि. ९ MBP एउ जि. १० MBP विहत्तउ. ११ MBP बालइ लिहिउं वियाणिउं.

९ सुवसु जारकः

11-3 a कुलिसयर वज्रवाहुः 9 a सोहइउं मित्रत्वम्. 10 b खिचहु उप्परि खीचडी उपरि (?) कसरया उपरि; ओमत्थिउ प्रक्षिप्तम्. 13 पवियरहो वज्रबाहोः.

12

पियराहिरामाह	संपुण्णकामाह ।	
मुकाइ वायाह	तुडाह मायाह ।	
परिखवियकम्माह	कइयाह रम्माह ।	
जिणणाहपूयाह	दिण्णाह धूवाह ।	
सुइसायकुंभेहिं	घणघडियखेभेहिं ।	5
रुपभयकुडुहि	आलिहियभेहेहिं ।	
विण्णुरियरयणेहिं	वरहीरगहणेहिं ।	
आसणविराइयहिं	माणिकवेइयहिं ।	
पडिणेत्तपच्छइउ	कंतीइ चैचैइउ ।	
सुइतमोत्तियहिं	णं वंतपत्तियहिं ।	10
विहसंतु पडिहाइ	दिड्डीसुहं देइ ।	
णाणापयारेहिं	णाणाहुवारेहिं ।	
कउ मंडओ ताम	संमाइ जणु जाम ।	
मिलिपहिं सुहियैणहिं	भरिपहिं तोरणहिं ।	
घणरवगहीरेहिं	पहपहिं तूरेहिं ।	15
णचंततरुणीहिं	मंडलियघरणीहिं ।	
खयरीहिं जम्बिणहिं	णायरणियंविणिहिं ।	
हिमहारसैरिसेहिं	सजलेहिं कलसेहिं ।	
पइपुत्तवंतीहिं	महिणाहपत्तीहिं ।	
सोहग्गसुंदरइं	पहवियाइं बहुवरइं ।	20
पुणु पुणु पसाहियइं	णवरइरसाहियइं ।	
धुइवयणकलयलहिं	धवलहेहिं मंगलहिं ।	
पुणु पुणु जि गाइयइं	आसणणढोइयइं ।	
घत्ता—पसरियकरहे मयणिअरहे मणु मयणें सुंवियारिउ ॥		
सुहवडु पियहे णं गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥ १२ ॥		

12. १ P संदिण्णपूवाइ. २ MBP घर घडिउ खेभेहिं. ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °भेडेहिं. ५ MBP चिचइउ. ६ MBP सुछंत°. ७ P सुहयणहिं. ८ BP घरिणीहिं. ९M °सरसेहिं. १० MB सवियारिउ.

12. १ 8 b °वेइय हिं चडुक्किकाभिः.

## 13

सोहणे वासरे चारुलगुगमे  
पाणिणा पाणि तीण तिणा धारिओ  
रायराएण भिगारएणाणियं  
अणजम्मागया तुज्ज सीमंतिणी  
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया  
जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं  
उज्जलं हंसतूलकसेज्जायलं  
हारिवीरोहओ इच्छिये मंडलं  
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं  
रायपुत्तिं कैरेणुं व लीलागओ  
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ  
अक्खया पूयदूवंकुसुमीसिया  
जाव गंगाणइ जाव मेरु गिरी  
हौंतु पुत्ता महांता पहाभीसुसा  
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं

उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गमे ।  
अंगडाहो परं दुसहो हारिओ ।  
भार्येणयस्स धित्तं करे पाणिणं ।  
तुज्जु मे दिण्णिण्या पेसलालाविणी ।  
पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया । 5  
देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।  
दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।  
कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।  
वत्थुसारं अणेयं पि<sup>१३</sup> दिण्णं घणं ।  
तं करे गेण्हउणं वरो णिग्गओ । 10  
वज्रबाहू समारणंदिओ राणओ ।  
वंधुलोएण धित्ता सिरे सेसिया ।  
ताम्ब भुंजेहं तुम्हे वि णिचं सिरी ।  
जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वारसंरा ।  
सो वरो सा वहू दो वि ताइं तहिं । 15

घत्ता—लंगिवि वरहो तहु वासरहो परिवाडिइ सुहवासहिं ॥

अहिसिचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुतीससहासहिं ॥ १३ ॥

## 14

बांलमुणालसरलकेमलयर  
वर सकामु काइं वि जंपावइ  
वर तणुपयइजोग्गु आलिगइ

दियहहिं जंतहिं कीलइ बहुवर ।  
वहु लज्जंति तं जि संभावइ ।  
वहु मुक्की तं पुणु मणि मग्गइ ।

13. १ P भंगार°. २ MBP भाइणयस्स. MBP °तूलक°; K °तूलक° but corrects it to °तूलक° and gloss अर्कपिणुः अर्कतूलः. ४ M हार°. ५ MB पदिण्णं. ६ MBP रायपुत्तं. ७ P करेणु व्व. ८ MBP दूवंकुसुमीसिया. ९ M भुंजेवि. १० MBP भासुरं. ११ MBP वासरं. १२ MP पडिवाडिइ.

14. १ P बालु. २ MBP °वइयजोग्गु.

13. 2 a ति णा तेन रात्ता. 7 a तूलक° अर्कपिणुरकतूलः. 8 a हारि वीरोहओ मनोहरवीरसमूहः. 12 a पूयं पविताः. 16 सुह वा सहिं सुहवासः.

14. 2 a जंपावइ अनुमन्यते. 3 a तणु पयइजोग्गु शरीरस्वरूपयोग्यम्.

वरु केसगैहेण ओणामइ	वहु हेट्टामुहुं मुहुं लिहँकावइ ।	
वरु मउअउ जि करइ अहरग्गहु	हुं हुं मेळि दर भासइ णववहु ।	5
वरु थणसिहरइ छिवइ सहत्थे	वहु वीलावस ढंकइ वत्थे ।	
चीर पसारिउ सणियउं पुंजइ	वरु करै ऊरुजुयलि णिउंजइ ।	
वरु फेडवि घल्लइ पल्लकइ	पाणि देइ वहु वयणससंकइ ।	
वरु सोणीयलहुत्तउ जोयइ	वहु तहु दिट्ठि <sup>१३</sup> करहि पच्छायइ ।	
अलियणहेहि णाहु संघट्टइ	वहु उग्गयपुलण विसट्टइ ।	10
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइ	आसि वे वि भणु किं लज्जंतइ ।	

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइ उड्डायासहो ॥

तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतकईवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसिगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम

चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण, ४ BP णिकावइ, ५ P मउ जि, ६ M महु मेळहि दर; BP लहु मेळहि दर, ७ B कर, ८ P °जुयलु, ९ MBP णियवयण°, १० M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलुहुत्तइ, ११ MBP करहि दिट्ठि, १२ MP °कयवासहो; T records a p पुप्फयंतरइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्.

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगवीसासैं ॥  
 वृउभाउग्गमणे रमणीरमणे रमइ विसेसविळासैं ॥ ध्रुवकं ॥

I

पणकुलपोमपहसियमुहाहं	कल्लाणण्हाणपुज्जाव्हाहं ।
मउमणियमम्मणुलाविराहं	उरुउररुहजुयलालियकराहं ।
अवरंडणपसरियभुंयवलाहं	मुहकंठंमूलिं चुंवरणरथीहं । 5
रइजलरोल्लियसयणोयराहं	धियकेसहं महुपीयाहराहं ।
कयपणयकोवसंभाविराहं	लीलाकडक्खविकखेविराहं ।
पविजंघसिरीमइवहुवराहं	कीलंतहं गयवहुवासराहं ।
रूवें सोहग्गं अहुईय	हिमकिरणकंति कुंलिसयरधीय ।
सिरिमइर्वैरलहुईसस मयच्छि	णं विक्कमलकर सयमेव लच्छि । 10
णामेणाणुंघरि सोक्खहेउ	णियणंदणु णं सो कामण्ड ।
लच्छीमइदेवीगव्वमजाउ	परिणामिउ राणं अमियतेउ ।

घत्ता—तणय वसुंधरहि घरभरधरहि लज्जइ तहु करि लग्गी ॥

कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

उन्नतातिमनुमात्रयात्रता भाति भद्र भरतस्य भूतले ।

काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

1. १ MBP °वीसासहिं. २ MBP सिय°. ३ MBP °विलासहिं. ४ MBP उरि उररुह°;  
 K उरउररुह°. ५ MBP °मुयलयाहं°. ६ MB °मूलु. ७ B °रहाहं. ८ MBP °कोवसंभाविराहं. ९ MBPT  
 अहुतीय. १० B कुल्लिसेयवीय. ११ MBPK °वइ°. १२ MB सियच्छि. १३ MP विगयकमल; B विकम-  
 लकल. १४ MBP लच्छीमइदेविहि गाळि जाउ. १५ MBP परिणाविउ.

1. 6 a सयणोयराहं खजनोत्कराणां खजनसमुद्धानाम्; b महुपीयाहराहं मधुनोपलक्षितः पीतोऽ  
 घरो ययोः. 8 a पविजंघं वज्रजंघः. 9 a अहुईय अद्वितीया; b कुल्लि सयरधीय वज्रबाहुपुत्री. 12 b  
 अमियतेउ अमिततेजाः नाम श्रीमत्या भ्राता. 14 आवग्गी आवल्लिता.

## 2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि  
 णरणहं करिकरदीहवाहु  
 सहं सुणहइ सहं णियतणुरुहेण  
 आउच्छिवि इडु विसिडु बंधु  
 उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ  
 हरिखुरधूलीधूसरिउ सगु  
 पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिंतु  
 गयमयजलधौरहिं भरइ तल्लु  
 गुरुयणविओयतावं चुयाइं  
 सह कामिणीहिं पंकयमुहीइ  
 आसण्णपंधि सुंदरपणसि  
 पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु  
 घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भल्लइ दिथहे उप्पलखेडु पइडुउ ॥

पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्ठु ॥ २ ॥

## 3

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु  
 लक्खणवज्जणहिं पसाहियाइं  
 वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ  
 एक्कहिं दिणि राणउ वज्जवाहु  
 सँउइइ सेहीरासणणिसण्णु  
 णहयलि अवलोइउ सरयमेहु

दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।  
 णियणयरहु पेसिउ वज्जवाहु ।  
 सहं सकलत्तं ससहरमुहेण ।  
 संचलिउ सुयणु चंदक्कच्चिंभु ।  
 अम्मणु अंचहुं णीसरिउ राउ । 5  
 छत्तहिं छाइउ दिअविदिसमगु ।  
 चउपासहिं दीसइ माहिदियंतु ।  
 हयलालइ हुउ चिकखुल्लु खोल्लु ।  
 पुत्तियहिं पुंसेप्पिणु अंसुयाइं ।  
 पंडिय संपेसिवि समउ तीइ । 10  
 सरसीमारामसिरीणिवांसि ।  
 णियभवणहु पल्लंउउ णरिंदु ।

सहुं वहुयइ सुहुं अच्छइ कुमार ।  
 जमलइं पण्णासेकाहियाइं ।  
 सुललियकच्चाइं व कइमईइ ।  
 जावच्छइ सुइलीलंबुवाहु ।  
 तां कालीयरवरकिरणवण्णु । 5  
 णं विहिणा णिमिउं दिव्वुं गेहु ।

2. १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ. २ MBP दिसिविदिसि°. ३ M °भारहिं. ४ MBP चिविखडु.  
 ५ K °णिवेसि. ६ MBP पल्लइउ. ७ MBP उप्पलखेडि.

3. १ MB °रंजियकुमार. २ MBP °वज्जणहिं. ३ K सुइलीलंबु°. ४ MBP सउहयलइ.  
 ५ MBT सीहासणं; P सीहासणि. ६ MBP ता तें कालीयरकिरण°. ७ MBP दिव्वगेहु.

2. 5 b अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गबोलापनं कहुं निःसृतः. 7 b महीदियंतु पृथिव्या  
 दिगन्तः. 8 a तल्लु सुंदरः.

3. 1 b कुमार पृथिव्यां कामः. 5 a सेहीरासणं सिंहासनम्; कालीयरं चन्द्रः.

उत्तुंगसिंहरसुरहरसमाण  
चित्तइ पडु गउ वारिहर जेम  
जीविउ धणु पुत्तु कलत्तु वासु  
इय भणिवि तेण परणरदुलंछु  
सह सुयसुएहिं सुयबहुसुएहिं  
जिणदिकख लेवि कउ कम्ममोक्खु  
रच्छाहिं डियसुरसुंदरीहि  
घत्ता—जा सो चकवर सुहवद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणउ ॥

पुणरवि सो विट्ठु विलीयमाणु ।  
जाएसमि पलयडु हउं मि तेम ।  
होसंइ थिर धणसंकासु कासु ।  
कुलसिरिहि समण्णउ वज्रजंघु । 10  
अवरोहिं मि रायहिं थिरमुएहिं ।  
तेणासाइउ तं परमसोक्खु ।  
एत्तहि वि पुंडरीकिणिपुरीहि ।

ता णिसि मिलियदलु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥ ३ ॥ 15

4

जोइउ णरणाहें लेवि णंलिण  
उग्घाडइ तं सो रमणराइ  
तं वारवार चण्णिवि करेण  
पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण  
इच्छिउ रापं खरदंडणासु  
ववगयमलदलवलयंतरालि  
सररुइकरंडि णिम्मूकजीउ  
भासइ हे मामि सिलीमुहेण  
दाणुलि कवोलि पुणंतएण

को किर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।  
लच्छीमुहदंसैणि कामु णाहं ।  
विहडियउ कमलु सुरेण तेण ।  
पक्केलु पत्तु अवणंतएण ।  
खरदंडणासु तहु गुणविसेसु । 5  
अवलोइउ अलि केसररयालि ।  
णं इंदणीलेंमणि णियवि राउ ।  
करिकणणझडप्पणु सहिउ एण ।  
संपत्तैउ दुक्खु रडंतएण ।

घत्ता—दिसहिं समुल्लंइ लोलइ वलइ रुद्धउ कहिं पसरइ कर ॥ 10

णिसि तमपिहियमुहे पत्थंवरुहे गंधलोउ मंड सहुयर ॥ ४ ॥

- ८ MBP °सिहर. ९ MBP सो पुणरवि. १० MBP होइइ. ११ MBP पुंडरीकिणि°, १२ MP जो.  
4. १ M णडिण. २ MBP °दंसणकामु, ३ MBP णिम्मूक जीउ, ४ MBP इंदणीलु मणि.  
५ MBPK धुलंतएण. ६ M संपत्तु दुक्खु करदंडएण; MP संपत्तु दुक्खु करडंतएण. ७ BP समुलसइ.  
८ MBP मुउ.

11 a सुयसुएहिं पुत्राणां पुतै; सुयबहुसुएहिं श्रुतबहुभुतै; अजीतागमैः.

4. 2 a उग्घाडइ विकासयति; रमणराइ कीडानुरागी. 4 b अवणंतएण औद्युता. 5 a खर-  
दंडणासु कमलसु; 6 खरदंडणासु तीव्रदंडनाशः तस्य गुणविशेषः 8 a मामि हे सखि.



आरोहणबंधं ताडणाहं  
गणियारिफासवसमागण  
रसलालसु मासकणावल्लु  
सरिविउलचिमलजलि कीलमाण  
संगीयगोरिगयचित्तसोचु  
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं  
प्राये संप्राविउ प्राणणिहणु  
पवसियमहिलंसुयहंतसिहेण  
वेच्छिल्लकुसुमसमवणएण  
रूवरयपरंगहं कयखएण  
एमेव कयंताणणि पंडंति  
एकेकिदियवसमुवगयाहं  
असरियपंचक्खरसामिसाहं  
कंपावियदसैदिसिवहरसाहं

अंकुसखयाहं कइवेयणाहं ।  
भणु किं ण विडुह विसहिउं गण ।  
परिधावमाणु संमुहउं मुद्ध ।  
धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।  
णउ पेक्खइ संमुहुं सरु सरंतु । 5  
चउदिसिंहिं वि वग्गुरवेदु भामिउं ।  
वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।  
तिडिडिडियतिडिक्कारवणिहेण ।  
दीवुच्छवि देहलिदिणएण ।  
णं भासिउ भावइं दीवएण । 10  
मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।  
एवहु दुक्खु तंहि जंतुयाहं ।  
चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।  
अक्खेवि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इय संभरिवि मणे आहुउ खणे अभियतेउ नृवसंसिउ ॥ 16  
तेण समयएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5. १ MBP °ताडणबंधणाहं, २ MBP कय°, ३ B वुद्ध, ४ MBP °दिसहिं वग्गुरवेदु, ५ MBP पावें संपाइउ पाण°, ६ MBPK हय°, ७ MBP कंकेल्लिकुसुम°, T विच्छिल्ल कोरण्टकः, ८ M रूवरयपरंगहं, BP रूवरयपरंगहं, ९ MBP जहिं, १० M असरियपंच°, T असरिय°, ११ MBK दस-दिस°, T दसदिसिं, १२ MBP अक्खमि, १३ MBP णिव°.

5. 1 b °खयाहं क्षतानि, 2 a गणियारि° हस्तिनी, 3 a मासकण° मासखण्डम्, 7 a प्रांएं प्रायः, णिहणु विनाशः, 8 b °रवणिहेण °शब्दव्याजेन, 9 a वेच्छिल्ल कुसुमसमवणएण कोरण्टक-पुष्पवत्पीतवर्णेन, 10 b भावइ प्रतिभासते, 13 a असरियपंचक्खरसामिसाहं न स्मृता पञ्चाक्षरखामिनां पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीयैस्तेषाम्; b चक्खियपंचक्खरसामिसाहं आत्वादितं पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणां रसो रतिसुखं तदेवामिषं यैः, 14 a कंपावियदसदिसिवहरसाहं कथिता भयं नीता दशदिवषा मार्गाः रसा च भूमियैस्तेषाम्.

6

राएण भणिउं भो भो कुमार  
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण  
तुहुं देहि कुलकमभरहु खंधु  
मइं पहेणेवउ परमायेरेण  
कामिणि मेइंणि वि जगेकराय  
तुह पयपंकयरयचंचरीउ  
जिह लच्छीहरु तिह पुंडरीउ  
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ  
हउं तुहुं मि वे वि साहहुं पररु  
घत्ता—ताँ सिमु ससिसरिसु जयकयहरिसु महिणाहँ सोमालउ ॥  
रज्जि परिट्टविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ ॥ ६ ॥

धरि धरणिभार धउरेयधीर ।  
हउं सोसमि कणियसयमहेण ।  
ता चवइ तणउ सो मयरचिउ ।  
तमणियरु व बालदिवायेरेण ।  
पइं भुत्ती भुंजमि केम ताय । 5  
कूराखिलुलाययपुंडरीउ ।  
आसणु अँल्लिवहि सपुंडरीउ ।  
इह करउ रज्जु नुँवपुंडरीउ ।  
तं गिसुणिवि राएं तं जि उत्तु ।

10

7

परिसोसियमत्तमहागणण  
परिसोसियकंचणसंदणेण  
परिसोसियबहुदेसंतरेण  
परिसोसियसयलवसुंधरेण  
जसहरसीसहु गणहरहु पासि  
दिज्जंति ण इच्छिय पुहइ जेण  
उच्चारियजिणवरयुइमुहाहं  
पव्वइया मुणिमयजाणियाहं

परिसोसियचलहिंसियहएण ।  
परिसोसियमडवरणंदणेण ।  
परिसोसियपउरंतरेण ।  
जायावि देवें चक्केसरेण ।  
पव्वज्ज लइय गिरिकुहरवासि । 5  
सह अमियतेयणामेण तेण ।  
सहसु जि वयमासिउ तणुरुहाहं ।  
सह सट्ठिसहस रायाणियाहं ।

6

6. १ MBPK धरेय°, २ K सोसविं. ३ M मेइणि जगि एक°; BP मेइणि व जगेक°. ४ MBPT अल्लवहि. ५ MBP णिव°. ६ MBP तो.

7. १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M गंदरेण; P °दंसणेण, but records a p °णंदणेण. ४ M तेण. ५ MBP पव्वइयइ.

6. 1 b धउरेय° धुरि साधुः. 4 a पहेणेवउं परिखाज्यम्. 6 b लुलायय° महिषः; °पुंडरीउ व्याघ्रः. 7 b अल्लिवहि देहि; सपुंडरीउ सच्छन्नम्. 10 सोमालउ कोमलः. 11 पय पालय प्रजाः पालय.

7. 7 b वयमासिउ व्रतं शुहीतवान्.

दिक्खंक्रियाइं लुंचेवि केस

णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।

इय राएं किउ णिक्खवणु जाम

संपत्त विळासिणि तहिं जि ताम । 10

घत्ता—पंडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोगाउ ॥

किउ मणु अप्पवसु कंदर्पवसु होंतउ खंतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

## 8

णिरुद्धयं गिराइणा

समाणसं विराइणा ।

विमुक्कंओ सवासओ

सभूसणो सवासओ ।

समैसिओ तवासओ

लुओ कयंतवासओ ।

णिवारिओ कसायओ

समीहिओ कसायओ ।

मईहरो पिसायओ

जिओ पइल्लसायओ । 5

चलेहिं जाण साहिया

थिरेहिं जाण साहिया ।

दढं दिही<sup>१</sup> हणंति सा

परजिया छुहा तिसा ।

सरंतु सो वसी अयं

सहेइ माहसीययं ।

विइणवाणरीडरं

भरंतरुक्खकोडरं ।

णियाहिदेहकंचुयं

घणागमे वि कं चुयं । 10

महीहरे भयालए

हुयमि गिण्डीयालए ।

रविस्स संमुहो ठिओ

तवेइ मोक्खपंथिओ ।

अहिणभूतणग्गयं

सबाहिरंतणग्गयं ।

महाखले वि सामिणं

णमंसिऊण सामिणं ।

६ P कंदप्पु वसु.

8. १ T विमुक्कणग्गवासओ and adds: सवासउ इति पाठे निगृह्यमित्यर्थः. २ MBP समाहिओ. ३ P कसाइओ. ४ MT पिहुल्ल<sup>०</sup>. ५ MB दिहिं; P दिहं. ६ GK अयं but gloss अजम्. ७ MBPK गिन्-यालए. ८ M संमुह. ९ MBP थिओ. १० MBP अभिण<sup>०</sup>.

8. 1 a गिराइणा नृराजेन चक्रवर्तिना; b विराइणा वीतरागेण. 2 a सवासओ स्वयइस्; b सवासओ सवल्लम्. 3 a तवासओ तपवाश्रवम्; b कयंतवासओ कृतान्तपाशः. 4 b कसायओ कः परमात्मा तस्य खादोऽनुभवः. 5 b पइल्लसायओ पुष्पवाणः कामः. 6 a चलेहिं चञ्चलचित्तैः; b थिरेहिं जाण साहिया स्थिरचित्तैः परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तैः जानीहि साधिता निर्जिता. 8 a अयं अजं जिनम्; b माहसीययं माघमासे शीतम्. 10 a णियाहिदेहकंचुयं प्रवाहितसर्पकम्; b कंचुयं पतितं जलम्. 13 a अहिणभूतणग्गयं अखण्डितभूमितृणाग्रम्. 14 a महाखले वि सामिणं महाखलानामप्युपशमकम्.

तओ वसुंधरीसुया  
धरेवि पुंडरीययं  
पईविओयकालिया  
समंदिरं समाइया

अणुंधरी ससांसुया ।  
सिरि<sup>११</sup>व्व पुंडरीययं ।  
अचंदिम व्व कालिया ।  
अमेयतेयमाइया ।

15

घत्ता—सुंयारिवि णिययवइ सा हंसगइ धिवइ सरीरु महित्थेले ॥

णयणंजणमइलु कुंकुमकविलु अंसुपवाहु यणत्थेले ॥ ८ ॥

20

9

पुणु सोउ मुणपिणु हसियचंदु  
घरंमंतिमंतणिम्मलमईइ  
णिज्जइ दवग्गि वणि मारुण  
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि  
जो धरिउ भारु णाहें विसालु  
जं धवलु धुरंधरु धीरु धरइ  
गंधव्वणयैररायहु सुवाय  
चितागइ मणगइ खयरराय  
इहु लिहिउं लेहु मइं कइं मणम्मि  
जाइवि वररमणीतुल्लहासु  
णिंसुणिवि अम्महि कम णवेवि  
गय ते णहेण कंठइयदेह

जोइउ णत्थियवयणारविंदु ।  
संचित्तिउ मणि लच्छीमईइ ।  
णिज्जीव णाव वैणि तारुण ।  
चिंतेवी पढम सहायरिद्धि ।  
तं वइइ केम अँव्वनु बालु । 5  
तहि भरिण व वच्चु ण पउ वि सरइ ।  
मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय ।  
देवीइ भणिय ते वे वि भाय ।  
सामुग्गइ णिहिउं सलंछणम्मि ।  
णिक्खिखंहु सिरिमइवल्लहासु । 10  
पाहुहु लेविउं आहरणु लेवि ।  
पयजुयणेहीरारुणियमेह ।

घत्ता—खणि मणपवणगइ खयररविइ उरैलखेहु पराइय ॥

वज्रजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥ ९ ॥

११ K ससासुया but corrects it to सुसासुया. १२ P सरे व्व. १३ MBP सुमरिवि; K सुंयारिवि.  
१४ MP महीयले; B महयले.

9. १ MBP °मंतिमंत°; K °मंते मंत°. २ K जलि. ३ MBPT अवुहनु. ४ B ° णवरे  
रायहु. ५ MBP लेहु लिहिउ. ६ M कय. ७ BP लिहिउ. ८ MBP णिक्खेवहु सिरिमइ°. ९ MBP  
तं णिंसुणिवि अवहियवयणु वे वि. १० MBP चेलिउ. ११ MBP उण्लु खेहु.

15 b ससासुया श्वभूतहिता. 17 b कालिया रात्रिः. 18 b अमेयतेयमाइया अमृततेजोमातृका.

9. 1 b °णत्थिय° पौत्रः. 3 b वणि जले; तारुण कर्णधारेण. 5 b अव्वनु अप्रगल्भः.  
9 b सामुग्गइ करण्डके; सलं छणम्मि मुद्रायुक्ते. 12 b °जेहीर° कुकुम्भ.

10

तहु तेहिं समप्पिउ मणिकरंडु  
उब्बेदिवि वाइउ झंत्ति लेहु  
जिह दिज्जंतं वि परिहरिवि भूमि  
जिह पुंडरीयसिरि बड्डु पट्टु  
जिह लइय दिक्ख नृवकैमिणीहिं  
जिह तणुरहेहिं जिह पंडियाइ  
गउ पट्टु जिह अबरु वि अमियतेउ  
जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ  
चंगउ किउ देवें मयणजूरु  
चंगउ किउ तासु तणुम्भवेण

उग्घाडिउ तेणुवरिल्लखंड ।  
जिह जाउँ जोइ महिणाहणाहु ।  
हुउ अमियतेउ तस्साणुगामि ।  
मेल्लेप्पिणु णियजोवण्णमरट्टु ।  
जिह मंडलियहिं मुक्कावणीहिं । 5  
हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।  
तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।  
ता सुहिणा सुहिहिं चरितु महिउ ।  
जं लइयउ तंनु भवतिमिरसूरु ।  
जं झंउ संगहियउ णववण्ण । 10

घत्ता—घण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥  
णिहिघडदरिसियइ घड्डासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ  
सन्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ  
संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं  
छत्तइं णं कुसुमं वियसियाइं  
चमरइं चलंति कामिणिकरेसु  
दीसंति सुवंसारूढकेउ

दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।  
जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।  
जल्लु थल्लु संदाणिउं किंकरेहिं ।  
सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।  
णं हंसइं रत्तिदीवरेसु । 5  
णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10. १ MBP °णुवरिल्लु. १ MBPT उब्बेदिवि; K उब्बेदवि. ३ K तेण लेहु. ५ MBP जोइ जाउ. ५ MBP दिज्जंतो. ६ M मियउ तेउ. ७ B बद्ध पट्टु. ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोवण्ण मरट्टु. ९ MBP णवकामिणीहिं. १० MP तउ; B तव. ११ MBP वउ; K वउ but corrects it to वउ. १२ MBP घरदासियइ महिए.

11. १ MBP कुमुयइं.

10. 2 a उब्बेदिवि प्रसार्य; b महिणाहणाहु चको. 6 b °विच्छड्डिया समूहः. 10 b णव-  
वण्ण औवनस्थेन. 12 विहा विउ विखण्डीकृतो वाञ्छितः.

11. 4 b °पहसियाइं प्रमाणुप्राणि.

लोलाइ मिलिय मंडलिय जंति मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।  
 आणहु पुरोहिउ दिव्वदिट्ठि धणवइसमाणु धणंमिच्छु सेट्ठि ।  
 बलवइ वि अकेपणु कंपियारि संचैलियउ चलकरवालधारि ।  
 णिवसंतगामपुरपट्टणेहि वणु संप्राइय कइचयदिणेहि । 10

घत्ता—चवलरहैलिचलु फुल्लियकमलु तहिं सरवरु अवलोइउ ॥  
 णं रायहु महिए आयहु सहिए अगववत्तु उच्चाइउ ॥ ११ ॥

## 12

करिकरडगलियमयविंदुमल्लिणु मयमिहुणणिसेवियविउलपुल्लिणु ।  
 मयलंछणंयरकरदलियणल्लिणु मयमैत्तभमरगइरइयखल्लिणु ।  
 मयगैयदलवट्ठियसिरिणिक्केउ मयवइमुहु जीहाविलिहियाउ ।  
 तहु तीरि विमुक्कउ सिमिहें जाम सहुं सायरसेणें सूरि ताम ।  
 चिंतंतु भोज्जंभायणपरिक्ख रिंसि परिमंमंतु कंतारभिक्ख । 5  
 दमवैरु णामें पुहईसरासु संपत्तउ दूसावासु तासु ।  
 आर्वंत णियंवि मउलियकरेण सिरिमइपविजंघवहूवरेण ।  
 ठामणिय बे वि उवसमवसेण थिय चारंणमुणिविणयंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥  
 चंदयरुज्जलेण पासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥ १२ ॥

२ MB धणयत्तु. ३ K संवळिउ. ४ MBP संपाइउ. ५ M रहिहु चलु; B°रइलिचलु; P रहिल्लचलु.

12. १ MBP °लंछणकर°. २ MBP मयरत्त°. ३ K मयगल°. ४ MBP सिंविह. ५ MBP भोयभायण°. ६ BP परिमवंतु. ७ B दमवर. ८ BP आवंतु. ९ MBP णिएहि. १० MP चारणगय.

11 °रह लि° लइर्यः कल्लोलाः. 12 सहिए सख्या.

12. 2 a मयलंछण यरेत्यादि—सुगलाञ्जनं चन्द्रं करोतीति सुगलाञ्जनकर आदित्यः; तत्करैर्दलितं नालिनं यत्र. 3 a °दल वट्ठिय° वर्णम्; सिरिणिक्केउ पद्मम्. 6 b दूसा वासु पटगृहमयं शिबिरम्. 9 सुरे-  
 त्यादि—सुराणां देवाणां शिरःकुसुमराजसि रताः मुक्तेना निश्चला ये मधुकरास्तेषां पंक्तिभिः.

## 13

वदेपिणु भावै चरणकमलु  
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु  
हत्यु वि उहुंतुं ण होइ दीणु  
णिक्कुर वि कूरहु दिट्ठि देइ  
तिम्मणु गेण्हंतु वि बंभयारि  
णित्थंहे लइयउ थंहुं वहिउ  
मणसच्छहु दोइउ संच्छ वारि  
उच्चाइयथिरदीहरभुएण  
उग्रविट्ठु णिहित्तइ आसणाइ  
पुणु दीहु वेलु जिणधम्म सुणिवि  
घत्ता—रूवइ सुणिवरहं संजमधरहं आसि कहिं मि मइ दिट्ठइ ॥

णवर ण संभरामि हा किं करमि विहिं<sup>१३</sup> लोयणहं सुइइइ ॥ १३ ॥

उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु ।  
सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु ।  
लेंतु वि पाणइं जै वि घम्महीणु ।  
णिण्णेहु वि दिण्णुं सणेहुं लेइ ।  
रसु जाणंतउ रसंणिग्वियारि । 5  
जगमहिं पं पीयउ सीउं महिउ ।  
इय भुंत्तु भोज्जु वहुदोसहारि ।  
आसीस दिण्ण तहु मुणियुएण ।  
विहियइं पयपणमणपेसणाइं ।  
जंपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि ।

## 14

तां भासिउं विहसिवि मइवरेण  
जमलहं पण्णासहं पच्छिमिल्लु  
पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु  
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ  
महु महुहं जि दीसइ सयलुं कालु  
आयरियउ किं परिणयवएण  
महु दमवर दमियाणंगलील  
अण्णु वि एयहि तुह माउयाहि

तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।  
सुयजुयलु ण याणहि किं गहिछु ।  
ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।  
जरंणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।  
तवुं तणुरुहेहिं मइ मोहजालु । 5  
कम्मं जि बलवंतउ किं वएण ।  
गयर्भवइं समासाहि सामिसाल ।  
जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।

13. १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उहुंतु. ३ P णउ. ४ M दिण. ५ K सिणेहु.  
६ MBP णिर णिवियारि. ७ MBP णित्थंहे. ८ MBP थहु. ९ MBP जगि महिए. १० MBP सय.  
११ MBP सच्छु. १२ MBP भुत्तुभोज्जु. १३ MBP विहिलोयणहं.

14. १ MBP तो. २ B जइ णिबु; P जर णिबु. ३ P महु. ४ M सयल. ५ MBP तउ.  
६ MBP महु. ७ MBP किह परिणयवसेण; T परिणतवयसा. ८ MP भवहि.

13. 5 तिम्मणु व्यञ्जनविशेषः स्त्रीचित्तं च. 7 b महिउ तक्रम.

14. 1 b जल हिसेण सागरसेनः. 5 b मइ मयि. 6 a परिणयवएण परिणतवयसा.

आणंदपुरोहियमइवराहं

चिरजम्मु कहसु महुं गखउ गेहु

रिसिणा पउत्तु पेरिचत्तणाणु

जाओ सि वण्ण तुहुं खयरणाहु

घत्ता—चिरु रूप्यगिरिहि अलयाउरिहि सइंयुद्धं संवोहिउ ॥

मुउ खयराहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगुणेहि पसाहिउ ॥ १४ ॥

घणमिक्काकंपणकिंकराहं ।

किं कारणु ता वज्जरइ साहु । 10

जयंयम्मु णाम बंधिवि<sup>११</sup> णियाणु ।

णामेण महाबलु बलसणाहु ।

## 15

जाओ सि देवु अहिलंसिउ काउं

तहिं मरिवि भवंतरि ऐत्थु आउ

पुणु कहइ साहु भवभावमुहुं

गह्वइसुय धणसिरिखुयहरासु

ह्रई दौलिहिणि वणियधीय

सा मयं सावयवउं किं पि लेवि

णामेण सयंपह चविवि तेत्थु

सिरिमइ सइ सुंदरि मज्झु माय

जंबूदीवामरगिरिविदेहि

वच्छावइइदेसि रूसा समिद्ध

गउ णरयहु दससायरसमाउ

णियणयरणियडि णियवसुणिवासि

घत्ता—ता तहिं महिहरण लवलीहरण पीईवद्धंणु भासिउ ॥

उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥ १५ ॥

ईसाणकप्पि ललियंगु णाउं ।

तुहुं वज्जजंघु मंहं तणउ ताउ ।

सुणि सिरिमइज्जमंतरचउंहु ।

उवसग्गु कंरोपिणु मुणिवरासु ।

पिहियासवेण उवसमहु णीय । 5

ह्रई देवत्तणि तुज्झु देवि ।

ह्रई णरणाहहु धूय पत्थु ।

आयण्णहि भिच्चपवंचु ताय ।

पुरिमिह्लिइ गयणिलिबिमेहि ।

हौंतउ णरवइ णामेण गिद्धु । 10

अणुहुंजिवि पंकप्पहि वराउ ।

हुउ वग्गु दिसागयकुसुमवासि ।

९ M परचित्तणाणु. १० MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवमो त्वं. ११ K बंधवि.

15. १ MBPK अहिलसिय. २ P कासु. ३ P णासु. ४ MBP एत्थ जाउ. ५ MBP सहु. ६ MBP °मुक्क. ७ MBP °चउक्क. ८ MB सुह्वरासु. ९ MB करेविणु. १० P दालिहिय. ११ P सुय. १२ BP रसासमिद्ध; GK note this as p in the margin : रसासमिद्ध इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः; T रसासमिद्ध अतिकोपी रसासमिद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः. १६ M पीईपट्टणु; BP पीईवद्धणु.

11 a परि चत्त णाणु परित्यक्तज्ञानः.

15. 1 a काउं कामः.; 10 a रसा कोपेन; समिद्धु ज्वलितः. 11 b वराउ वराकः. 12 a °वसुणि वासि श्रुतधनस्थाने. 41 समरायरहो संप्रामादरस.



16

तंहिं गिवसइ पहयरिणयरिणाहु  
 चारणमुणि णहयलि ओयरंतु  
 गिरिवरविचरंतरसंठिण  
 दिट्ठु पुंलि पिहियासवक्खु  
 संभेरियजम्मु हउं मंदभाउ  
 गउ सव्वभहु पुणु अलियलि जाउ  
 मणु जाणिवि मुणि वि समीउ आउ  
 थिउ सणासणि मूंगु णिक्कसाउ  
 तो थाहि भणिवि महुंरं सरेण  
 पक्खालिउ जमिकमजुगु जलेण  
 गुणवंतहु संतहु कयउ माणु  
 तं पुच्छिउ ईच्छिउ णियहिपहिं  
 सो ताहं तेण दरिसियउ पुंलि  
 ईसाणि दिवायरु णाम तियसु  
 गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु  
 घत्ता—मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥

कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मंड मंति कुरुहि गइ आउमाणि  
 उप्पण्णउ सुरु ईसाणसग्गि

कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।  
 विष्कुरियविबिहमाणिक्कमग्गि ।

16. १ K तिहिं. २ G तारोलंबिय°. ३ P णिम्मलु. ४ MBP संमरिउ जम्मु. ५ MBP सुव्वभहु;  
 T संव्वभहु नरके. ६ MBP भियु. ७ M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाह भणेवि; K भो थाहि भणिवि. ८ M  
 पुणु कमजुउ जलेण; BP कमजुयलु णरेसरेण; T कमजुगु सरेण. ९ MBP इच्छिय. १० MBPT इलि  
 ११ BPK सुरवर°. १२ BP तहिं.

17. १ MBP सुउ.

16. 1 a पहयरिणयरिणाहु प्रभंकरीनाथः प्रीतिवर्धनः. 4 a पुंलि व्याघ्रेण; पिहियासवक्खु  
 पिहिताश्रवाख्यः. 6 a सव्वभहु खत्रं नरकम्. 7 b धम्मणाउ धर्मोपदेशः. 10 a सरेण जलेन. 13 b  
 सुहिंलि सुखपरंपरा. 15 b तिणि सेनापत्यादयः.

रंसियइ वरमवणि पहंजणकु  
 नेणाणि पहायरु पदधरंति  
 चत्तारि वि णिञ्जु जि विहियसेव  
 पइं चुइ पुणु हया जेत्यु जेम  
 सद्दल्लदेउ सिरिमइहि उयरि  
 मइवरु मइवरु तुह मंति राय  
 हे ताय पहायरु मरिवि देउ  
 सेणावइ तेरउ तिज्यतेउ  
 कणयाहु तियसु चुउ कईहिं भणिउ  
 जो ण्हु वण्व सो दिणसुज्जि

जायउ पुरोहचर गलियसंकु ।  
 हुउ दिव्वदित्ति दीवियदियंति ।  
 देवैत्ति तुज्जु परिवारदेव ।  
 आहासमि णिसुणहि तेत्थु तेम ।  
 सायंरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।  
 को पावइ एयहु तणिय छाय ।  
 अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।  
 परवलहु समुग्गउ धूमकेउ ।  
 सुयकित्तिअणंतमईहिं जणित्ति ।  
 आणंदु पुरोहिउ विमलवुद्धि ।

घत्ता—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ रुसियविमाणहु आयउ ॥

दत्तयवणिवइणा विरइयरइणा धणयत्ताहि सुउ जायउ ॥ १७ ॥

## 18

धणमिन्नु सेट्टिकुलणल्लिणमिन्नु  
 पयइं ल्ह वज्जसिणेहयाइं  
 णरधइ चउ किकर समरमीम  
 णिसुणेवि भवावलि विस्मिहयाइं  
 पुणु भणइ राउ भयवंत विमल  
 चत्तारि वि णरहं ण ओसरंति  
 णउ भक्खु लेंति णउ जल्लु पियंति  
 किं कारणु कहहि मुणिद्वंद

किंकर अहवा तुह परममिन्नु ।  
 तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।  
 सिरिमइ राणी सोहग्गसीम ।  
 छ वि जिणंरविगुण चित्तिवि थियाइं ।  
 सद्दल्ल कोल गोपुंछ णउल ।  
 अरुहंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।  
 णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।  
 ता भणइ सुंणि भो णरिंद ।

२ MBP रुसियवर<sup>०</sup>. ३ P चत्तारि जि णिञ्जु वि. ४ B देवन्तु. ५ MB सायंरसेणु व हुउ; P सायंरसेणो हुउ; K सायंरसेण हुउ. ६ MBP कईहिं.

18. १ MBP विभियादं. २ MBP जिणवर<sup>०</sup>. ३ PT गोपुंछ. ४ MBP भो सुणि.

17. 4 a पदधरंति प्रमाविमाने. 9 b अ ज्ज वहि आर्जवाराध्याम्. 10 b धूमकेउ वहिः.

18. 5 b गोपुंछ सकटः. 7 b णवियाण ण नसितानवाः.

इह देसि हँस्थिणायउरि रम्मि  
तहु धण धणवइ सुउ उग्गसेणु  
पहु कोट्टागारि अइक्कमेवि  
उर्वणेतु पणयसीमंतिणीहिं  
मुउ कोहं जायउ एत्थु वग्गु

वणि सायरदत्तु विवित्तहम्मि ।  
सो कामुउ कामिणिपायरेणु । 10  
भर्त्तइं भग्गइं वँलि महु लेवि ।  
वंधाविउ राणं णिययणीहिं ।  
ओहँच्छइ मइं मणिणवि सलग्गु ।

घत्ता—होंतउ सूरउ चिरु माणरउ विजयणयरि वुँद्धिण कियु ॥

महँणदं जणिउ जणँवइमुणिउ णिव वसेतसेणाहिं सिसु ॥ २८ ॥ 15

19

हरिवाहणु णामे वूढमाणु  
णरणहँ णंदणु भणिउ एंव  
तं णिसुणिवि धाँइउ चवलु डिंभु  
मुउ एत्थु पहु ह्यउ वराहु  
उद्धयधयमालापंचवणि  
वणिवरिण कुवेरें जणिउ पुत्तु  
वहिणिहिं विवाहु किज्जइ धणेण  
वंचिवि चामीयर णियउ सव्वु  
सुउँ मायारउ हुउ एत्थु पहु  
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि  
होंतउ कंदुवि लोँल्लियउ णाम  
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण

दणंधु समंदिरि कीलमाणु ।  
माणेण परंमुहुं होंति देव ।  
सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंमु ।  
पुणु कहइ साहु अँचंतसाहु ।  
कइ आसि जम्मि णयरम्मि धाणि । 5  
पणइणिहिं सुदत्तहिं णागदत्तु ।  
भासिउ मायइ ता सा अणेण ।  
ता तहिं वि ताइ तहुं गहिउ दव्वु ।  
वणि मँकैहु माणुसमेत्तदेहु ।  
सुपइट्ठियपट्ठणि तोरणालि । 10  
दियहेहिं णवर रामाहिराम ।  
कारवहुं एण कारावणण ।

घत्ता—जुणउं रायहरु तम्हँउ तर लेवि वइइ पुरु परियणु ॥

इह विसइ जहिं सहस सति तहिं कंदुइ पेच्छइ कंषणु ॥ १९ ॥

५ MBP हँस्थिणायउरि पुरम्मि, ६ BP वत्थामरणइ, ७ MBP बलिमंड, ८ MBP उवयंतु; T उवर्णेतु.  
९ MB तहु अच्छइ; P हुउ अच्छइ. १० MBP बुद्धिइ. ११ MBP सह गंदे. १२ MBP जणवय<sup>०</sup>.

19. १ MBP थाविउ चवल. २ B अवहत्तसाहु. ३ MBP तं गहिउ. ४ MBPK मुउ.  
५ MBP मकहु माणुसु. ६ MBP लोळउ. ७ M तुम्हाउ भर. ८ B विसिइ. ९ MB कंदुउ; P कंदुव.

12 b णिययणीहिं वरत्राभिः. 13 b ओहच्छइ ऊर्ध्वः स्थितः.

19. 5 b कइ वानरः 9 a मायारउ मायावी. 10 a णायारि गकुलः. 11 a कंदुवि कांद-  
विकः; b रामाहिराम हे रामाधिराम वज्रजंघ. 12 b एण अनेन कांदविकेन. 13 तर शीघ्रम्.  
14 विसइ स्फुटिताः.

## 20

तोलेपिणु चलकरयलतुलाइ  
इहउ वामीयरपूरियाउ  
कइवयउ ण केण वि भावियाउ  
कम्मयरहु दिण्णउं सरसु भोळु  
इय गँरहिउं कम्म करेवि गूडु  
घरि तणउ थवेपिणु वियसियासु  
एत्तहि पुत्तं पियराण भिण्ण  
तं खंडइ जाम सुवण्णयास  
तं गं पि पकंपियजीयएण  
भासिउ वेसइ विस्संतु सव्व  
धरणीसरकुलस्सिधेण जडिय  
परिरिक्खियमाहिंवेमाणवेहिं  
सुउ बंधवि कारागारि धिच्चु

परियाणेपिणु वणिवरकलाइ ।  
बहिं मिप्पिडेहिं समारियाउ ।  
लहुं गियभवणहु नेवावियाउ ।  
लुद्धु वि दाणेणै करेइ कळु ।  
अण्णहिं दिणि मोहवसेण मूडु । 5  
गउ गामंतसु तणुरुहहि पासु ।  
सोवण्ण इह दारियहि दिण्ण ।  
तं पेच्छइ पट्टपिउणाम सासु ।  
जाणाविउ रायहु भीयएण ।  
तं जायउ रायहु तणउं वव्वु । 10  
लोलुयगेहे णिवमुइ पडिय ।  
परभीयरोहिं ण दाणवेहिं ।  
तहिं अवसरि कंडुइ तहिं जि पच्चु ।

घत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ ॥

परधणलोलुयउ सो लोलुयउ राउलेण विष्माडिउ ॥१०॥

15

## 21

पुणु बहुदविणासाऊरिएण  
तुम्हइं विणिण वि महुं सच्चु जाय  
मुउ लोहकसायमलेण मइल्लु

कहिं गर्यं भणेवि उँल्लूरिएण ।  
पाहाणै चूरिवि णियय पाय ।  
इह हयउ पेक्खु णरिंद णउल्लु ।

20. १ MP बहि मिउपिडेहिं; B बाहिमिपिडेहिं. २ M कम्मयरहं. ३ MBP दाणेण जि करइ.  
४ MBP गहिरउ. ५ MBP ता. ६ MBP तो. ७ MBP तं. ८ MBP लोलुयहिं गेहि. ९ T माहिं  
मा लक्ष्मीहता; माहिं माहिंवा इति पाठे.

21. १ MBP गउ. २ MBP कुल्लूरिएण.

20. 2 b बहिं बहिः. 6 a विथसि यासु विकसितासः. 7 a पियराण पित्राज्ञा. 12 माहिं  
लक्ष्मीपती राजा.

21. 1 b उल्लूरिएण कंदुकिना.

गिसुणेपिणु महुमहुरक्खराइं  
उवसंत वहांति ण भउ ण रोसु  
पइं दिण्णु दाणु मांणिउं इमेहिं  
बहुंभोयभावसुइदीइणीहिं  
अट्टमइ जम्मि तुहुं जिणवरिंदु  
सिरिमइ होसइ सेयंसराउ  
सुरणरसुहाइं संपाविहिति  
सेसारविदुरणिव्वेइएण  
कमकैमलजमलवलइयसिरेण  
वंदिय मंतिहिं सावयगणेण  
संपत्ता दुरिणं वणयरत्तु  
वत्ता—मृगहत्थं पुसिवि तहिं णिसि वसेवि सूरुग्गभि पहु णिग्गउ ॥  
करिणंटासरहिं पसरियकरहिं भयभेसावियदिग्गउ ॥ २१ ॥

सुयरेपिणु गय जम्मंतराइं ।  
सुहृत्तां अज्ज खवंति दोसु । 5  
कईकंठवग्गविसहरदमेहिं ।  
परमाउ बद्धु कुरुमेइणीहिं ।  
होसहिं पयजुयणांमियसुरिंदु ।  
पहिलउ जि दार्णतित्थयरदेउ ।  
ए तुह सुहि होइवि सिज्झिहिति । 10  
जिणणाहधम्मअणुराइएण ।  
तं गिसुणिवि पणविय बहुवरेण ।  
गय रिसि णहयर णहपंगणेण ।  
संभासिवि वत्तारि वि णिरुत्तु ।

22

छणयंदु व तणुं कंतिइ पसण्णु  
साणुंधरि पइवयणिलयकुहिणि  
पणैमिय सासुय जामाँउएण  
आलिगिउ रायं भार्यणिज्जु  
मिलियउ लच्छीमइसिरिमईउ  
णिर्यवंधुहि संवित्तियसिवेण  
सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि

दियहेहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु ।  
आँलोइय तेण णवंति वहिणि ।  
अविरयसणेहंपसरियभुएण ।  
अविउँलु बालु पइसियमुहज्जु ।  
णं गंगाणइजउणाणईउ । 5  
तहिं तेण वज्जजंथं णिवेण ।  
मंति वि किउ विउँहणयाणुगामि ।

३ MBP °ज्ञाणेण जि जं खवहि. ४ B कइकट्टवग्ग°; P कइकोलवग्ग°. ५ M बहुमेय°. ६ MBP °दावणीहिं. ७ MBP °णावियणारिंदु. ८ M दाणु तित्थु°. ९ PK करकमल°. १० M सगहत्थं कंसिवि तहिं णिसि णिवसेवि; B सगहत्थं कंसिवि तहिं वणि णिवसेवि; P सगहत्थं कंसिवि तहिं णिव संसिवि.

22. १ M णवकंतिइ. २ MBP अवलोइय. ३ MBP पणविय. ४ MBP जामाइएण. ५ MBP °सिणेह°. ६ MBP भाइणेज्जु. ७ MBP आविउलु वि; T अविउ इति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ८ MBP ता णियवंधुहि चित्तिय°. ९ MB विवुह°; P विवुहु.

6 b °कंठ° सुकरः.

22. 4 b मुहज्जु मुखाब्जम्. 7 b विउ ह ण या णु गामि विद्वज्जयातुगामिनः.

गिरुवहउ गिवसावियउ देसु  
विस्तीइ बलाइं गियंतियाइं  
पडिवक्खु असेसु वि खयहु णीउ  
अप्पणु पुणु घरवत्ताइ लइउ  
सैंहु भिच्चउकें ससिमुहेण  
को एम ससयणहं देइ रिद्धि

सुहि संमाणिय संचियउ कोसु ।  
जोग्गहं दुग्गहं परिचितियाइं ।  
थिरु रज्जि थवेप्पणु पुंडरीउ । 10  
सहुं कंतइ उप्पल्लेखेइ अइउ ।  
थिउ रज्जु करंतु सुंही सुहेण ।  
एवहु कासु सामत्थसिद्धि ।

घत्ता—थिर परकज्जरय गियवंसधय सुपुरिस को णासंघइ ॥  
घणतमभरहरणे दित्तीर्यं रणे पुष्कदंत को लंघइ ॥ २२ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरइय  
महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे वज्रबाहुवज्रदंततवचरणकरणं  
णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २५ ॥  
॥ संधि ॥ २५ ॥

१० MP यंतियाइं. ११ MBP सम्पिवि. १२ BP अप्पणु. १३ MBP उप्पल्लु खेहु. १४ B omits this foot. १५ MBP महासुहेण. १६ P दित्तीहरणे.

११ ० अइउ आगतः. १३ a ससयणहं स्वस्वजनस्य. १४ णासंघइ नाश्रयति.

## XXVI

कामभोयसुहरसवसहो तहु वसुमइहि काई वणिज्जइ ॥

जं जं चितइ किं पि मणे ते तं सयलु वि खणि संपज्जइ ॥ धुवकं ॥

### I

जक्खपंको दढं वल्लहालिगणं  
उंचओ मंचओ चारुसेज्जायलं  
उण्हयं भोयणं तुप्पधाराहरं  
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं  
चंदणं चंदपाया पिया णेहली  
दाहिणो मंथरो मॉइओ सीयलो  
वल्लरीमंडवो पोमैजुत्तो सरो  
थद्धंथद्धं दहिं सीययं पाणियं  
फुल्लियासाकयंबोहधुलीरओ  
णीरधारासुयंतवुवाहज्जुणी  
णिग्गलं मंदिरं णिकियं भूयलं  
इट्ठगोटीविसिट्ठेहिं विण्णाययं  
विज्जुमालापुरंतं णहं दिण्हं  
दीहरो कालओ जाव वोच्छिण्णओ

मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।  
आवरोहारि सोमैहं थणाणं थलं ।  
रत्तओ कंबलो छण्णरंधं घरं । 5  
सीययालमि तेणेरिसं भुत्तयं ।  
मल्लियादामयं तारहारावली ।  
रक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।  
वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।  
उण्हयालमि तेणेरिसं माणियं । 10  
मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।  
संगया सुहवा पासि सीमंतिणी ।  
धावमाणं रयालं पणालीजलं ।  
दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।  
तस्स मेहागमे तं पि सोक्खावहं । 15  
गेहए धूवओ ताम से दिण्णओ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वनधवलताभयाणामचलस्थितिकारिणां सुदुर्भ्रमताम् ।  
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. MBP उचओ. २ M °सेजावलं; P सेजालयं. ३ MBP सोण्हं. ४ GK मारओ but gloss वासुः. ५ MBP पोमपुण्णो. ६ MB थद्धथद्धं; P बद्धथद्धं. ७ MBP सीयलं. ८ M रसाणं. ९ MBP वोलोणओ; T वोच्छिण्णओ.

1. 4 b आव रो हारि स्थूलोत्तं मनोज्ञं च; सोमैहं उष्मसहितम्. 9 b सीयरो शीकरो जललवाः.  
11 b °मा ऊ र वं दस्स केयारो मयूरचन्द्रस्य केकारवः. 13 b रयालं सवेगम्.

सोत्तसंचारि धूमेण ताणं हओ  
कारणं मच्चणो किं जणो कंखण

दंपईणं खंणेणेव जीओ गओ ।  
होइ सैत्थं सिरीसं पि आउकखण ।

वत्ता—जव्दीवसुरालयहो उत्तरकुसहि रमणमण्हारिहे ॥

मरिवि वहवह अवयरिउ उयरि अणिदहु अज्जवण्हारिहे ॥ १ ॥

20

## 2

णवमासहिं गम्भडु णीसरियहं  
उत्ताणियमुहाहं णिवसंतहं  
सत्त सत्त दिण गय रंगंतहं  
सत्त खलिय पर्यवयणइं दैतहं  
पुणु सत्तहिं थिराई संजायइं  
अवरहिं सत्तहिं अलिणिहचिडुरइं  
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं  
ताइ तिगाउयतुंगसरीरइं  
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवसहिं

ताहं विहिं वि संचियसुहवरियहं ।  
करकमलंगुलियाउ पियंतहं ।  
पुणु वि पुणु वि उट्टंतपडंतहं ।  
अवरोप्पह दरकेलि करंतहं ।  
गयंकुसलाइं परिण्डवायइं ।  
णिहिलकलाकलावणिउणयरइं ।  
णवजोव्वणसिंगारारुढइं ।  
वरैवदरीहलमेत्ताहारइं ।  
इय भांसिउं रिस्सिहिं हयहरिसहिं ।

5

वत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्टुउं णाई रसायणु ॥

मणिमयकप्पमहीरुहहिं चिउं रवि सत्तावीसं जोयणु ॥ २ ॥

10

## 3

जहिं जणियसोक्ख  
जणमणु हरंति

दहमेय रुक्ख ।  
चित्तियउ दैति ।

१० MBP खणेण्ये. ११ B सत्थं पियाओखण; P सत्थं सिरीसं पयाओ खण. १२ MBP °हारहो.  
१३ MBP °णारिहो.

2. १ B संचियसुहवरियहं. २ MBP पिय; T पय पदानि. ३ MBP गह°. ४ MPB वर-  
वदरीहल°; T कुवली वदरी. ५ B सुदिवसहिं. ६ MBP भासियउं रिसिहिं. ७ MP थिउ; B थिउ;  
T थिउ प्रच्छादितम्.

18 b सिरीसं श्रीमुखं पुष्पं वा. 19 °सुरालयहो मेरो।.

2. 4 a पयवयणइं पदानि वचनानि च; b दरकेलि स्तोककोडा. 8 b °कुवली° वदरी. 11 थिउ  
प्रच्छादितम्.



महसहिउं पेज्जु

तूरंगतूरु

केऊरु दोरु

गेहंगु गेहु

दोयंति तुंग

भोयणविहंति

जे भोयणक्ख

भोयणसयाइ

उवणंति ताइ

पुण्णाय णाय

णवमालियाउ

मालंगकुरुह

हयतिमिरभाइ

मज्जंगु मज्जु ।

भूयंगु हार ।

वैच्छंगु चीर ।

ण सरयमेहु ।

तरुभायणंग ।

दित्तंगदित्ति ।

ते विविहभक्ख ।

रससंगयाइ ।

जगु महइ जाइ ।

वर पारियाय ।

अलियालियाउ ।

दोयंति गिरह ।

दीवंगु दीहु ।

5

10

15

घत्ता—णिच्चु जि उच्छंउ णिच्चं दिहि णिच्चु जि तगुतारुणु णवहउ ॥

भोयभूमिरहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं मज्जु ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दूसियसज्जणवासु

ण छिक्क ण जिभणु णालंसु दिहु

ण रत्ति ण वासर धंते ण धम्म

अयालि ण मच्चु ण चित्त ण दीणु

पुंरीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु

ण खासु णं सोसु ण रोसु ण दोसु ।

ण गिह ण गेत्तणिमीलणु सुहु ।

ण इहुविओउ ण कुच्छिय कम्म ।

कयाइ कहि पि सरोरु ण झीणु ।

ण लाल ण सेंसु ण पिंसे वि डाहु । 5

3. १ MBPKT मयसहिउ, २ MBP भूयंगु, ३ MBP केऊरु, ४ M वच्छंग, ५ MBP गेहंग, ६ MBP °विहंति, ७ MP भोयणक्ख, ८ P गिरह, ९ MBP °भाउ, १० MBP दीवंगदीउ, ११ MBP उच्छउ, १२ MBP णिच्चु.

4. १ MB दुज्जण, २ MBP ण रोसु ण सोसु, ३ MBP णालस, ४ M गित्त°, ५ MBP वणु; T-धणु, ६ MB मिच्चु, ७ MBP पुरीसुवसग्गु, ८ MBP सिम, ९ MBP पित्त ण डाहु.

3. 3 a महसहिउं हर्षसहितम्; पेज्जु पातव्यम्. 8 a °वि हति विमक्तिः भेदः. 9 a भोयणक्ख भोजनाख्याः. 14 b गिरह निर्दोषाः.

4. 3 a धंते अन्तमन्धकारः पापं च.

ण रोउ णं सोउ ण सेउ विसाउ  
 सुख सलक्खण माणव दिव्व  
 सुहाउ विणीसिउ सासु सुयंघु  
 तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु  
 ण चोर ण मारि ण घोरुवसग्गु

किलेसु ण दासु ण को वि'वि राउं ।  
 अगव्व सुभव्व समाण जि सव्व ।  
 कलेवरि वज्जसमद्वियबंधु ।  
 करीसरं केसरि ते वि डु बंधु ।  
 अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु । 10

घत्ता—विहिं मि ताहं तहिं संठियहं एकमेकरइरमणालुद्धहं ॥  
 भुजंतहं णाणासुहइं जाइ कालु दिदंणेहणिबंधहं ॥ ४ ॥

5

तहिं जि पईहरथोरकर  
 पत्तभोयभूमीभवेण  
 समहिलेण अच्छंतएण  
 कासु वि भासियसम्मयहो  
 देवहु दीवियदिप्पहो  
 पुव्वभवंतरु संभरिउ  
 थिउ गियमणि जा विंभइउ  
 ता णहाउ चारणजुयलु  
 पंतु तेण हक्कारियउ  
 सीसं सीसेण जि णैविउ  
 के तुम्हइं किं आगमणु  
 महु वट्ठइ णेडुल्लियउ

सइल्लइय जाय णर ।  
 वज्जजंघरायज्जवेण ।  
 सुरंतसिरि पेच्छंतएण ।  
 कज्जेणैय समागयहो ।  
 णिणवि विमाणु रविण्हहो । 5  
 तं ललियंगदेवंचरिउ ।  
 भवणिज्ज्वेमावलइउ ।  
 ओयरिउ णहणिहु विमलु ।  
 रुइरासणि वइसारियउ ।  
 सविणयवायइ विण्णविउ । 10  
 किउं किं तुम्हइं उवरि मणु ।  
 ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ ।

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि हौतउ आसि महाबलु राणउ ॥

तइयहुं हउं सइवुद्ध तुह मंति मंतसच्चाववियाणउ ॥ ५ ॥

१० MBP ण सेउ ण सोउ. ११ MBP कोइ. १२ MBP add after this: सुहजि ( B महुजि; P सुहजे ) ण मीसिय मासिय ( B चमुण ) रोम, सुरेसहु बुंदि विसेसियकाम ( B °कम्म ). १३ MBP सरुव. १४ M करीसरि. १५ MBPK भुजंतहं. १६ MB वट्ठणेहणिबद्धहं.

5. १ MBP सइल्लइ वि. २ MBP सुरहरसिरि. ३ MBP कज्जे केण. ४ P °देउ. ५ P वि. ६ MBP किं अम्हइं तुम्हइं.

9 a सुयंघु सुगन्धः. 11 b विसेसइ अतिशेते.

5. 10 a सीसेणजि शिष्यणेव. 12 a णेडुल्लियउ जेहाइम्.

णिदाइ भुत्तो सि	विवरंतवित्तो सि ।	
जइया कुवाईहिं	सिविणंतरे तीहिं ।	
हो वण दुग्गेज्झ	तइया मए तुज्झ ।	
संसारहाराइं	जिणवयणसाराइं ।	
सिद्धा रिस्सी जेहिं	दिण्णाइं तं तेहिं ।	5
होऊण ललियंगु	मोचूण दिव्वंगु ।	
भीमारिणिण्णासि	भूमीसु द्वओ सि ।	
मुणिदाणबुद्धीइ	बहुपुण्णसिद्धीइ ।	
तुहुं पत्थु जाओ सि	णाणेण णाओ सिं ।	
संबंधिओ होसि	किं णेय जाणासि ।	10
खगवइविओएण	मइं मुक्कभोएण ।	
किउ घोह तवयरणु	इंदियछिंहाहरणु ।	
सोहम्मि सोहालु	हुउ देउ मणिचूलु ।	
सइंपहविमाणम्मि	दुक्खावसाणम्मि ।	
इह जंबुदीवम्मि	पुव्वे विंदहम्मि ।	15
पुक्खलहि मेइणिहि	पुरिपुंडरिंकिणिहि ।	
पियसेणरायस्स	पसरंतरायस्स ।	
कयणाहणेहम्मि	सुंदरिहि देहम्मि ।	
जाओ मि हं भद	आलांविणीसइ ।	
पीइंकेरो णाम	सुणि रांमिणीकाम ।	20
अलिवलयणिहकेस	पीइंसरो एंस ।	
मज्झाणुओ होइ	दिव्वो महाजोइ ।	

6. १ MBP विवरंति. २ MBP हा वण. ३ MP add after this: णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं गओ तो सि. ४ B °छिहा°; T °छिहा°. ५ MBP आलावणो°. ६ MBP पीइंकेरो. ७ MBP कामिणी°; T रामिणी°. ८ P ईस.

6. 12 b °छिहा° स्पृहा बाब्बा. 19 b आलाविणीस इ वीणासदृशशब्दः, 20 रामिणी° स्त्री.

घत्ता—णिच्चं चिय णेहाउलहो णिग्गय विणिण वि णियवरवासहो ॥  
जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥ ६ ॥

7

अवहिणाणि चारण संजाया  
लइ सम्मत्तु अलाहि पलावें  
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ  
मुणवंतहु दोसु वि ढंकिज्जइ  
असुइकलेवर जणु ण वियप्पइ  
वेज्जावच्चु समउ वच्छल्लें  
मिच्छु तुच्छु जो वंझु कहिज्जइ  
वड्डइ वड्डियदुक्कियलेवइ  
समयवेयलोइयमूढत्तणु  
अच्छइ बुद्ध्यणगर्घणिवद्धउ  
घत्ता—वेणं किज्जइ जीवदय अप्पउ पर सयलु वि जाणिज्जइ ॥

विणिण वि षइ संबोहहुं आया ।  
भावहि जिणदंसणु सम्भावें ।  
इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।  
मग्गभट्ट पुणु मग्गि ठविज्जइ ।  
साहुहुं देहंदुगुंछ ण विप्पइ । 5  
किज्जइ हियणं संघेहियल्लें ।  
अण्णदिट्ठिवहुं सो ण थुंणिज्जइ ।  
मलु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।  
अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।  
विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ । 10

हम्मइ जेण जियंतु पसु तं करवालु ण वेउ भणिज्जइ ॥ ७ ॥

8

सया णारिरत्तो  
सया वित्तलुद्धो  
समोहो समाओ  
ण सो होइ देवो  
पलं जस्स खज्जं

सया मज्झमत्तो ।  
सया सत्तुंकुद्धो ।  
सदोसो सराओ ।  
णं खं सुण्णभावो ।  
महुं जस्स पैज्जं । 5

7. १ M अलंहि. २ MBP वि दोसु. ३ P असुह°. ४ M देहु दुगुंछण; P देहु दुगुंछु ण. ५ B संघेहियल्लें. ६ MBPT °पहु. ७ MP मुणिज्जइ. ८ MBP °पंयहिं वद्धउ; T गंयणिबद्धउ. ९ MBP जीवदया.

8. १ P मज्झि मत्तो. २ P सत्तकुद्धो. ३ MBP सयं सुण्ण°; T खं ण न गगनं देवः.

२ 4 संता रि वि णा सहो परमवीतरागस्य कर्मविनाशकस्य च.

7. 2 a अला हि प्रतिषेधेऽव्ययम्. 6 b °हियल्लें हितत्वेन 7 b अण्ण दिट्ठिवहु मिथ्यादर्शनादि-  
मार्गः. 10 a बुद्ध्यणगर्घणिवद्धउ पण्डितैः शाले रचितः; b विउ इति—विद ज्ञान इति धातुः प्रसिद्धः.

8. 4 b ण खं न गगनं देवः.

वहू जस्स गेहे	रई जस्स देहे ।	
गुरू सो वि हा हे	जगे मंदमेहे ।	
सपावं सपावा	णवंता विगावा ।	
ण गच्छंति सगं	ण वा तेऽपवग्गं ।	
पउत्ता महंता	ण कायस्स चिंता ।	10
विसस्सावि हारे	खमा होइ भारे ।	
पमोत्तूण वेयं	खगं वइणतेयं ।	
जिणिदं अणिदं	सुरिंदोहवंदं ।	
विहुं वीयरोसं	अहिंसाणिघोसं ।	
विहाऊण पक्कं	णयाणीयसक्कं ।	15
परो को हयारी	जगे मोहहारी ।	
तिणा जो पउत्तो	असत्थेण चत्तो ।	
अहिंसापयासो	वियाणागमो सो ।	

घत्ता—पैत्तीय धम्मु दयार्परम्मु रिसि गुरू देउ जिणिदु भडारउ ॥

लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥ 20

## 9

भो ललियगत्त	भो धवलणेत्त ।	
सइहसु मित्त	तच्चाइं सत्त ।	
छइव्वमेय	छज्जीवकाय ।	
पंचत्थिकाय	चउं सुरणिकाय ।	
णाणाइं पंच	गइमेय पंच ।	5
रिसिवयइं पंच	गिहिवयइं पंच ।	

४ MBP तस्स. ५ MBK विसस्सावहारे; P विसस्साह्वारे. ६ MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः.

७ MB एत्तीय; P पत्तिय and gloss प्रतीत्या. ८ MB °पवर; P °पर.

9. १ K adds this line in the margin but scores it out. २ MBP सुरचउणिकाय.  
३ M गयमेय.

7 a हा हे हा कष्टम्. 8 b विगावा विगतगर्वाः. 9 b अपवग्गं मोक्षम्. 11 b खमा समर्थाः. 12 b वइणतेयं गरुडम्. 15 b ण याणीयं नमनार्थमानीतः. 16 a ह यारी विनाशितकर्मीरातिः. 18 b वि याणा गमो सो विजानीहि सः आगमः. 19 पत्तीय प्रतीत्यः, अथवा प्रतीतिं कुरु.

छल्लेसभाव  
तेरह चरित्त  
णवविह पयत्थ  
सत्त भय सिट्ठ  
अप्पाणुवाउ  
चरणाणिओउ  
जं कहिउ तेण  
णिस्सुणिवि कमेण  
अज्जेण जेम

मुणि तिणिण गाव ।  
गुंत्ति वि तिहुत्त ।  
दह धम्मपंथ ।  
मय अट्ठ डुट्ठ ।  
कम्माणुवाउ ।  
करणाणिओउ ।  
मुणिपुंगवेणै ।  
तं गहिउं तेण ।  
अज्जा तेम ।

10

15

घत्ता—जिह सहूल्लवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिचण्णउं ॥  
वाणरचरफणिरिउं चरहं सम्महंसणु मुणिणा दिण्णउं ॥ ९ ॥

## 10

भत्तिण णविय भवियणरवमं  
कुलिसबाहुतणयडु ते किंकर  
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि  
लोयसार अहंमिदसुरत्तणु  
वज्जंजंघु सह सिरिमह अज्जह  
हुउं ईसाणकणि वर सुरवर  
तहिं जि कणि कुंदेदुसमण्णहि  
जिणचरणारविदरयचित्तं  
इहं अमरु सयंपहु णामं

गय रिसि उल्लेखि णहमगं ।  
महवराह चत्तारि सुहंकर ।  
अहन्निमाणि हेट्ठिमगेवज्जहि ।  
पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु ।  
वे वि मय्याइं समंचियपुज्जइं ।  
सिरिपहमंदिरि णामं सिरिहर ।  
सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि ।  
णारिलिगु छिंदेवि सैमत्तं ।  
सो रुवेण ण णिज्जिउ कामं ।

5

४ MP रयणइं तिहुत्त. ५ K °पुमिण. ६ B सिड्डणवि; P निड्डणवि. ७ MBP महिउ. ८ MP सहूल  
अज्जणरेण; B सहूलवज्जणरेण. ९ MP °रिउचरहं.

10. १ P उल्लेखि. २ MBP अहमिदु. ३ MBP वज्जंजंघु सिरिमह तह अज्जह. ४ P मुयाइं.  
५ P हुव. ६ MBPK सम्मत्तं.

9. 7 b मुणि जानीहि. 11 a अप्पाणुवाउ जीवास्तित्वम्; b कम्माणुवाउ कर्मानुवादः. 12 a  
चरणाणि ओउ चरणानुयोगः. 17 कणि रि उं° नकुलः.

वर्गचर वि णर मुउ ललियंगउ      णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ । 11  
 देउ वराहचर वि संजायउ      णामे कुंडलिहू सुच्छायउ ।  
 णंदविमाणि सरयकंदाहइ      खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।  
 घत्ता—कुरुभूमिहि माणंजु मरिवि कंतिइ णाई भियंकु दुइज्जउ ॥  
 णियसुहकम्मं पेरियउ पहरिय मणंरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

होतउ आसि जम्मि जो वाणरु      सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।  
 णंदावत्तविमाणइ हूयउ      णाम मणोहैरु देउ संरूयउ ।  
 जो सइंजुहु बुहोहें भाविउ      जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।  
 पीयंकैरु तिलोयपीईकैरु      सो संजायउ केवलिजिणवरु ।  
 णाणं परियाणिवि सुरसहयरु      गउ वंदणैहत्तिइ तहु सिरिहरु । 5  
 अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु      थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।  
 णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर      पइं महु दिण्णु हल्यु परमेसर ।  
 पइं सइंजुहु बुद्धं जगु बुद्धउ      पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।  
 पइं जोईयउं तज्जु णीसेसु वि      तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।  
 तुहुं महु लग्गणखंभु अमंगउ      हउं तुह चरणजुयलु सरणं गउ । 10

घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुंदुट्ठमण पावथम्म णिद्धम्म वराया ॥  
 कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भंडारउ विणिण कुधामहु      गय संभिण्णसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्वचर. ८ MP कुंडलिहू. ९ MBP माणउ.. १० MBP मणहर; K मणहर but corrects it to मणरहु.

11. K सो. २ MBP °विमाणे पवूयउ, ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीईकरु; P पीईकरु. ६ MP पीईकरु; B पीयंकरु. ७ MB °भत्तिहि; P °भत्तिइ. ८ B करेविणु. ९ MP सुहु. १० MBP जाणियउं. ११ MBP अमंगउं. १२ MB सुदिट्ठिमण; P सुदुट्ठमण.

10. 12 a कं दाहइ मेघामे.

11. 6 a °सहं तरालि समान्तरे. 9 b सहणेसु सधनेषु; णीसेसु निःस्वेषु दरिद्रेषु.

असहविदुर संतइ संजोयहु  
 सुणवायविवरणदूसियमइ  
 तं निमुणिवि सिरिहर गउ तेत्तहि  
 पइसेप्पिणु तं सतिमिरु कुविवरु  
 अहो अहो समयमइ सुणहि महाबलु  
 भुत्ती सुइरु जेण अलयाउरि  
 सुरदुंदुहिगंभीरणिणापं  
 गुरुणा जिणवयणम्मि णित्तउ  
 जीवदयादमेण परिचत्तउ  
 दुण्णणहि मा विणडहि अप्पउ

णिच्चतमंधहु णिच्चणिगोयहु ।  
 णिवडिउ णरइ दुइजइ समयमइ ।  
 णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।  
 भणइ विमाणाऋढउ सुरवरु । 5  
 हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।  
 सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।  
 तुम्हइं तिणिण वि जिणिवि विवापं ।  
 सोक्खपरंपैराउ हउं पत्तउ ।  
 तुहुं पुणु पावै पत्थु णिहित्तउ । 10  
 वीयरराउ जिणुं भणु परमप्पउ ।

पत्ता—धम्म अहिंसउ सइहहि मोक्खमग्गु णिगंथु वियाणहि ॥

जीहोवत्थलिहारहिउ मुणि णिमुंक्कमोहु संमाणहि ॥ १२ ॥

## 13

पहाजित्तरणी  
 पट्ट तेण मुणिओ  
 दढं झैत्ति गहिओ  
 जिणिदस्स समओ  
 तमुब्भूयदुरियं  
 पैवोत्तूण मदुरे  
 सुरो सोम्मवयणो  
 तओ विदुरदलिओ  
 रिउ विहियसमरा

विहंगेण कहणी ।  
 जैयार्णिद भणिओ ।  
 सया दोसरहिओ ।  
 अमोहेण वि मओ ।  
 महादुक्खभरियं ।  
 गओ सग्गसिहरं ।  
 सियायं वणयणो ।  
 सकालेण वलिओ ।  
 महाणैरयविवरा ।

5

12. १ P सो जोयहु. २ MBP मुणहि. ३ P सुयरु. ४ MBP परंपराइ. ५ MBP दया-  
 दाणी. ६ MBP भणु जिणु. ७ MB णिमुंक्कमोहु; P णिमुक्कमोहु.

13. १ B करणी. २ MBP जिणिदेण भणिओ. ३ MBP भत्ति. ४ M समुब्भूय. ५ MBP  
 पमोत्तूण. ६ MBP सोम. ७ MB णयरं.

12. 13 जी हो वत्थ लि हा र हि उ जिहोवत्थलुहारहित.

13. 5 a उ भूयदुरिये उदयप्रातपापम्.



मणीणलिणिलए	वरे दीववलए ।	10
सिरारुढहरिणो	महामेरुगिरिणो ।	
सुरासाइ सहले	विदेहम्मि विउले ।	
जलाऊरिया णई	मही मंगलावई ।	

घत्ता—पट्टणु रयणसंघु सधणु तेत्थु जि णरिंदु महीधर णामे ॥

सुइवंसुंभवु गुणसहिउ चावदंढ णं दाविउ कामे ॥ १३ ॥ 15

14

तहु गेहिणि' सोहम्मं सुंरि	किं वणिज्जइ णामे सुंदरि ।
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु	जिणमयंसहहाणु पावेप्पिणु ।
सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुहु	हुउ लणयंदविंसंणिहमुहु ।
सो जयसेणु भाणुसंणिहयर	जाम विवाहि धरइ कण्णाकर ।
ता सिरिहरसुंरु तहिं जि पडुक्कउ	वाउ धूलिउवल्लोहुवि मुक्कउ । 5
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ	उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।
तं पेच्छिवि वरइत्ते भाविउ	एहंउ चिरु मइ कइ व णिसेविउ ।
एम कहिं मि पाहाणिहिं ताडिउ	एम्भ कहिं वि खरपवणे मोडिउ ।
एम कहिं मि रयणुंजे झपिउ	एम्भ कहिं मि हउं दुक्खे कपिउ ।
एम सरिवि सुमरिउ णारयंभउ	जमहररिसिहि पासि लइयउ वंउं । 10
तउ करेवि वंभिदु पट्टयउ	धम्मु जि जीवहु अग्गइ ह्यउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदे ॥

सामणु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहर पुज्जिउ वंभसुरिंदे ॥ १४ ॥

८ MBP °ऊरिय; K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand. ९ MBPK तेत्थु णरिंदु. १० MBP महीधर. ११ MBP °वंसुंभव.

14. १ P गेहिणि, २ MBP जिणमइ°, ३ K पालेप्पिणु, ४ MBP °संणिय°, ५ MBP सिरिहर, ६ K omits this foot. ७ MB कहिं मि. ८ BK पाहाणिहिं. ९ MBP णारय°, १० MBP तउ; K वउ. ११ MBP सगगहु; K सगगहु, but corrects it to अगगइ.

10 a मणी ण लि ण लि ए मणिमयपसस्थाने; b वरे दीववल ए पुक्कराध्वीपे.

## 15

खुउ मुइवि णियकाउ  
ससिसूरदीवम्मि  
हरिणियगिरीसस्स  
उत्तुंगदेहम्मि  
चिस्तिण्णसीमाहि  
सुहदिट्ठि णरणाहु  
जो रोसु संवरइ  
जो कामु परिहरइ  
जो माणु णिग्गहइ  
जैजणित्तु जैणि हरिसु  
जै लोहु णिम्महिउ  
मउ जेण णिट्ठविउ

सिरिहर वि सग्गाउ ।  
इह जंबुदीवम्मि ।  
मंदरगिरीसस्स ।  
सुरादिसिविदेहम्मि ।  
णयरिहि सुसीमाहि ।  
रणि जस्स ण रणाहु ।  
जो सिरिवैहुं धरइ ।  
परणारिरइ हरइ ।  
मउयत्तु संगहइ ।  
जै णै किउ अहहरिसु ।  
पुरिसत्थु जै महिउ ।  
मणु जेण थिर ठविउ ।

5

10

घत्ता—रुवै सोहगै गुणेण णावइ उव्वसि णं ईर्दणी ॥

किं थुव्वइ अम्हारिसिहि सुंदरि णंद णाम तहु रीणी ॥ १५ ॥

## 16

सुरैवर सग्गु सुप्पिणु आयउ  
तेण सुविहिणामेण जुवाणें  
मुणिहिं वि मयणुस्मायजणेरी  
सुय लीलाणिज्जियतंवेरम  
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु

ताहि गाब्भि सो णंदणु जायउ ।  
णं पच्चक्खें वम्महवाणें ।  
अमयघोसचक्रवइहि केरी ।  
परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।  
सुरमंदिरखुउ बहुपुण्णावहु ।

5

15. १ M हरिणिव°. २ M उत्तुंगदेहम्मि. ३ MBP सिरिवहू वरइ. ४ MBP जणहरिसु. ५ P जि ण कउ. ६ MBP ईराहणि. ७ K सुंदर. ८ B राइणि.

16. १ MBP सिरिहर. २ MB °पुण्णाउहु.

15. 3 a हरि णिय गिरी सस्स हरिणा इन्द्रेण नीतो गिरा वाचामीशस्तीर्थकरो यत्र. 6 b रणाहु रणाचं संयामदोषः.

16. 4 a °तंवेरम हस्ती. 5 b बहु पुण्णा बहु बहुपुण्यधारकः.

पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ  
जो सहूलजीउ चित्तंगउ  
सो वि बिहीसणेण सियणेत्तहि  
जो चिरु कोलजीउ कुंडैलसुरु  
णंदिसेणराए अणुरुवउ  
सयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ  
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि

केसउ णामें जणवइ भाणियउ ।  
सग्गहु णिवडिउ कालवसें गउ ।  
हुउ सुउ वरयैत्तउ पुर्यदत्तहि ।  
सो संप्राईउ पुणु जम्मंतरु ।  
तणउ अणंतमईहि पहूयउ । 10  
जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ ।  
रइसेणें हूयउ चंदमइहि ।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउल्लु मणोहरु सुरु सग्गायउ ॥

जो सो णिविण पढंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

## 17

संतमयणु जाणिज्जइ णामें  
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर  
विमलवाह जिणवंदणहत्तिइ  
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु  
कामकसायविसायविहंजणु  
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं  
तेण समउ दिक्खिय हयराया  
सुविहिणिहालियकेसवदेहें  
पंचाणुव्वय तिणिण गुणव्वय

ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।  
अभयघोसराए सहुं किंकर ।  
गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ ।  
चक्कु णिहाणइं वसुह सुपप्पिणु ।  
हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु । 5  
अट्टारहसहसाइं णरिंदहं ।  
वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया ।  
घरवइ संठिउ णंदण्णेहें ।  
चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय ।

घत्ता—जेण सच्चित्तु णिरोहियउ इंदियें विसयरसेसु ण थक्कइ ॥

10

तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडंहु सक्कइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ. ४ MBP पियदत्तहि. ५ MBP कुंडलिसुरु. ६ MBP संप्राइउ. ७ MBP णउल.

17. १ MBP 'वंदणमत्तिइ. २ MB चक्क. ३ MBP णियसुवणेहें. ४ P इंदिय. ५ MBP दंडिबि.

10 a अणुरुवउ आत्मसदृशः.

17. 1 a संतमयणु प्रशान्तमदनः 3 b विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चनं पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागाः, विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र.

दंसण वउ सामाईउ पोसहु  
 वासरि णारिसंगपरिवज्जणु  
 दुविहु वि संगभारु अवगणिउ  
 णिदिहुउ ण तेण पडिवण्णउं  
 अंतइ संथारयसवणत्तणु  
 तायविओपं मेइणि मेळिवि  
 जिणतउ तिवु चैरेपिणु केसउ  
 दो वि दुवीसंवुहिसरिसाउस  
 वरदत्तय वरसेण जियंगय  
 ए चत्तारि वि चारविमाणहं

सच्चित्तयविरमणु जणंदूसहु ।  
 धंभचेरु आरंभसमुज्झणु ।  
 पाउँ ण काई वि मणि अणुमण्णिउं ।  
 भुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं ।  
 करिवि पत्तु अच्चुइ इंदत्तणु ।  
 सीलायारभारु उच्चलिवि ।  
 तर्हि जि तासु जार्यउ पडिवासउ ।  
 इंदउंहेधर णं णवपाउस ।  
 संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।  
 तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं । 10

वत्ता—किं ससि भरहुज्जोययर णं<sup>१०</sup> णहकडित्ति णिहिर्त्तिर्यं कागणि ॥  
 अच्चुयवइ गुणगणु गुणइ पुष्पयंतु सुरगुरु बुहिसिरमणि ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय  
 महाभव्वभरहाणुमणिप महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपहसुविह-  
 केसयइंदपडिदभववावण्णणं णाम  
 छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18. १ MBP दंसणु. २ P सामायहु. ३ M जिण°. ४ P पाउ वि काई ण. ५ MBP °सरणत्तणु.  
 ६ MBP अच्चुयइंद°. ७ P करेपिणु. ८ MB पडिजायउ; P पडिभायउ. ९ MBP °उहवरणं णं (P णउ)  
 पाउस, १० M णहकडित्ति णं. ११ MBP वित्तय. १२ MB बुहिसिरमणि. १३ MBP °सुविहि°.

18. 8 b इंदाउह° इन्द्रधनुः. 9 a जियंगय जितः अज्जः कामो याम्भ्याम्. 10 स मा णहं सामा-  
 निकानां देवानाम्.

## XXVII

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥  
णिययंगइं खयलिगइं अच्चुयकप्पसुरिंदहो ॥ भुवकं ॥

1

अइसोमसहाव महारउद्द  
किह् वंचवि कालरहृच्चार  
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ  
सिरिणिहिउं गिरहु तहु चरणजमलु  
चुउ कालें अच्चुयसग्गणाहु  
इह जंबुदीवि सुरगिरिहि पुच्चु  
रमणीयउववणावलिणिवेसु  
बहुवणमणिसिलाबद्धभूमि  
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु  
मुहससिजोण्हाधवलियदियंत  
सो तियसराउ हयडुरियवाहि

संचलिय चल ससिरवि बलह् ।  
घडिमालइ लंघिउं<sup>३</sup> आउणीह ।  
छम्मास समच्चिवि वीयरउ । 5  
भवियहु भवणांसे वि विचु विमलु ।  
कहु कालें किर कवलिउ ण देहु ।  
किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।  
तंहि घर पुक्खलवइ णाम देसु ।  
पुंरु पुंडरिक्किणी तेत्थु सामि । 10  
णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।  
सिरिकंता णामें तासु कंत ।  
तहि हुउ णामें वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभूयउ वरयत्तु वि तहि बालउ ॥

विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गमिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

सुरधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णाजुनगुणेपेतम् ।

भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBP किं वणमि. २ MBP वित्तउं. ३ M रिशि°. ४ MBP चलणजुयलु. ५ MBP भवणास विचित्तु विमलु. ६ P जंबुदीउ. ७ MBP उववणावणि°. ८ MBP तंहि पुक्खलवइ णामेण देसु. ९ MBP पुरि.

1. ८ b वलद् बलीवदी. 11 a हरि° इन्द्रः. 15 विजयंकउ विजयनामा; हरिणंकउ चन्द्रः. सुहालउ सुखालयः, सुधालयोऽमृतालयश्च.

2

वरसेणु वि हूयउ वइजयंतु  
 सुरलोयहु चलिपि पसंतमयणु  
 ए सहूलोइय चउ सहाय  
 हेट्टिमगेवज्जविमाणवासु  
 आयउ मइवरु जायउ सुवाहु  
 अहंमिंदु अकंपणु हुयउ पीदु  
 जे वज्जजंघमवि भिच्च तासु  
 होंता चिरु एवहिं विहिवसेण  
 ते देविहि गम्भि महासईहि  
 सुसणेहा जेट्टसंहोयरासु  
 पालेपिणु भर्धकयकम्मछंदु  
 वणिउत्तं सुरयासत्तमइहि

चित्तंगउ नामें पुणु जयंतु ।  
 अवराइउ हूउ पडुल्लवयणु ।  
 जाया जुवरायहु इट्ट भाय ।  
 भेल्लेपिणु जम्महु माणवासु ।  
 आणंदु वि णाम महंतवाहु । 5  
 धणेंमिच्चु वि तेत्थु जि गरुयपीदु ।  
 रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।  
 हूया चत्तारि वि सहुं जसेण ।  
 ताहि जि सुरसिंधुरवइगईहि ।  
 को होइ वेसु णियभायरासु । 10  
 तेत्थु जि पुरि केसुं सो पडिंदु ।  
 सिसु जणिउ कुबेरं णंतमइहि ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं बंधुवग्गु आणंदिउ ॥

संमाणें धणदाणें धणदेउ जि सो सइउ ॥ २ ॥

3

एकहिं दिणि ज्ञत्ति समागएहिं  
 किं हिच्चवुद्धि तुह हिय हएहिं  
 तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु  
 इय संबोहिउ लोयंतिएहिं  
 सिंगारभारवेहवमरहु  
 अंबयवणि खणि णियखवणु कियउ  
 उप्पणणउं तायहु धम्मचक्कु

भासिउ किं तुहुं मोहिउं गएहिं ।  
 जंहिं रंजिओ सि णारीरएहिं ।  
 तहिं अण्णहिं कौ किर बोहिलाहु ।  
 सो वज्जसेणु कयसंतिएहिं ।  
 पविणाहिहिं बंधिवि रायपहु । 5  
 तित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।  
 पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।

2. १ MBP बविवि. २ MBP सहूलोइ वि. ३ G वम्महु. ४ MBP अहमिंद. ५ M धणुमेत्तु;  
 BP धणमेत्तु. ६ MBP ससणेहा. ७ G सुहोयरासु. ८ M तवकयं; BP भडु कयकम्मछंदु. ९ MBP केसउ.

3. १ M सोहिउ. २ M जिह. ३ K कहिं किर.

2. 4 b जम्महु माणवासु मानवस्य जन्मनः. 11 a °छंदु इच्छा.

3. 7 a धम्मचक्कु केवलज्ञानम्.

तापण परज्जिउ मोहचक्कु पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।  
 तायहु संठियं णिहि समवसरणि पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।  
 तायहु इंदा वि करंति सेव पुत्तहु वि भिच्च गणवद्ध देव । 10  
 हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्ठि सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्ठि ।

घत्ता—सिरि<sup>१</sup> मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥  
 पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जुं समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदंलु णहपहकेसराळु सुरवरहंसावलिरववमालु ।  
 मुणिभमरपीयमयरंदंविदु आसंधिउ पिउचरणारविदु ।  
 पव्वज्ज लइय धरणीसरेण विजपण वइजयंतेण तेण ।  
 संवेउ विवेउ पराइणहि धीरेहिं जयंतवराइणहिं ।  
 तउ लइउ सुबंहुं पत्थिवेण संतेण महाबाहुं णिवेण । 5  
 णीसेसजीवविरइयकिवेण पीढेण महापीढाहिवेण ।  
 धणदेवै णिवइवराहिवेण<sup>१</sup> ।

सज्जीवै पडुरयणुल्लपण णिम्मुक्कविविहरयणुल्लपण ।  
 दस रायहं सुयहं वि दससयाइं जइभावहु तेण समउ गयाइं ।  
 पक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि परिगणइ सदेहि खुलंत णाहि । 10

घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥

भीसावणि ठिउ पिउवणि सुण्णावासपपसइ ॥ ४ ॥

5

दंसणविसुज्जि गुरुविणयसारु सीलव्वपसु अईअणइयारु ।  
 णेरंतह थिरु णाणोववाउ सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउँ ।  
 किउ वज्झब्भंतरगंथचाउ मुणिसंघहु वेज्जावच्चजोउ ।

४ MBP णिहि संठिय. ५ B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि. ६ M रज्ज.

4. १ MBP °दल. २ P सुबाहुहु. ३ MB add after this line: धणय व्व विविहदग्वाहिवेण.  
 ४ M भीसावणि पिउउववणि; BP भीसावणि वणि पिउवणि.

5. १P अइसणइयारु. २MBP णाणोवओउ. ३ MBP संवेयचाउ. ४MB वेज्जावज्ज°; Pवेज्जावज्ज°.

9 b सरणि रुहे.

4. 10 b णा हि न + अहि, अहीन सर्पान् न गणयति. 11 णि रा सइ आश्रयश्चन्यप्रदेशे अत्रावकाशे.

जिणमत्तिपउरसुयसाहुभत्ति  
छावौसपसु णायरइ हाणि  
भवेसु करइ कलिमलिणसमणु  
णीरापे सहुं रयहारणाइं  
एयइं अपवग्गारोहणाइं  
भावेण तेण संभावियाइं

ते विरइयपवयणि परमभत्ति ।  
अरहंतमग्गु पायडइ णाणि ।  
वन्धल्लु पवोहणु धम्मठवणु ।  
अरहंतहु सोलहकारणाइं ।  
तेल्लोक्कवक्कसंखोहणाइं ।  
धोरइं दुरियइं उड्ढावियाइं ।

घत्ता—संपुण्णउं वउ चिण्णउं कालकमेण जि लद्धउं ॥

जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोचु ते वद्धउं ॥ ५ ॥

6

को पम देउ दइवेण पुण्णु  
उग्गतउ तत्तु धोरतउ तत्तु  
आमोसहीहिं खेलोसहीहिं  
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं  
तहु कोट्टुबुद्धि वरवीयबुद्धि  
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि  
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि  
सो सुहुमसंपरायत्तकरणु  
णसिसमोहसंदोहसमणु  
आहारसरीरहं चाउ करिवि  
सव्वत्थसिद्धि सुहरि सराहु

को संवइ किर एवहु पुण्णु ।  
दित्ततउ तत्तु संखीणगत्तु ।  
जल्लोसहीहिं विण्णोसहीहिं ।  
सो सहइ साहु रंजियमहीहिं ।  
संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।  
उप्पण्णी तणुविकिरियरिद्धि ।  
सुरसैद्धि अहीणमहाणसैद्धि ।  
चडियउ गुणठेणु अउव्वकरणु ।  
सिरिपहमहिहरमेहल्लहि समणु ।  
पाँउवगमणमरणेण मरिवि ।  
अहमिंदु हुयउ रिसि वज्जणाहु ।

घत्ता—पंडिवडियहिं विद्धिघडियहिं दिव्वु सरीर लपण्णिणु ॥

सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोण्णिणु ॥ ६ ॥

५ P छावसपसु, ६ MBP आराहिवि सोलह, ७ G अपवग्गइ रोहं ८ MBP तेल्लोक्क,

6. १ MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेलोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विण्णोसहीहिं), २ MBP सुरसैद्धि;  
T सुरसैद्धि, ३ MBP महानसिद्धि, ४ MBP सुहुमु, ५ MBP गुणठाणु, ६ M सिरिपहमहिहरमेहल्लहि;  
B सिरिपहमहिहल्लहि; P सिरिपहमहिहरमेहल्लिय, ७ MBP पाउग्गमणमरणेण, ८ M सुरहरे सराहे; BP  
सुरहरि सरेहु; K सुरहरि सराहु; T सराहु, ९ BP परिवडियहिं.

5. 6 a कलि मलिण समणु कालि: पापं दोषो वा तेन मलिणं मलिनता तस्य शमनं उपशमनः.

6. 7 b सुरसैद्धि शोभनरसैद्धि: 8 a सुहुमसंपरायत्तकरणु सुहमसंपरायत्वस्य करणं यस्मा-  
दपूर्वकरणात्, 9 b समणु रसिक: 11 a सराहु सुशोभनः.



7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु  
घणमणिमऊहपिजरियमगिग  
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि  
पिहुजंबूदीवपरिणमाणि  
पविण्णाहभाउ कयधम्मसेव  
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण  
तणुमाणे जाणिय रयणिमेत्त  
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव  
मउडग्गुलियमंदारदाम  
खेत्ताउ ण खेत्ततरु जंति  
वरिसहुं तितीसंसहसहिं असंति  
तेत्तीससमुदोवमु जियंति

पणविउ जिणु जिणवरकहिउ धम्मु ।  
तेसट्टिपडलसिरिचूलयगि ।  
वारहजोयणहिं आपाविमाणि ।  
हिमसंखससिण्णहि तहिं विमाणि ।  
अट्ट वि जाया अहमिंदेव । 5  
सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण ।  
अहिणवसयदल्लसंरलणेत्त ।  
अपिसुणसहाव पारहरियगाव ।  
परियाररहिय संपण्णकाम ।  
उत्तरवेउद्विय तणु ण लेत्ति । 10  
तेत्तिर्यहिं जि पक्खहिं णीससंति ।  
जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं णैउ झसधयमंदहो ॥

पुइईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो ॥ ७ ॥

8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस  
जयवम्मु होऊण सैणियाणदोसेण  
होउं महाबलिण संगणसु मइं कियउ  
तहिं मरिवि ईसाणि ललियंगु सुउ जाउ

पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरेहस ।  
जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।  
सइवुइवुइदी वहुपुण्णु संचियउ ।  
तेत्थाउ अवयरिवि पविजंघु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय. २ MBP °सिरिचूलिय°. ३ MP अपावमाणि; B आयावमाणु. ४ K पवि-  
णाहि°. ५ MBP add after this: दहमउ वणदेउ उप्पण्णु तेत्थु, अहिलच्छि णिरंतस् सोक्खु जेत्यु.  
६ MBP °सरिसणेत्त. ७ MBP परिणलिय°. ८ MBP पवियार°. ९ MBP संणुण°. १० BP तेतीस°. ११ P तेत्तिर्यहिं पक्खहिं. १२ MB तण्णज्झसद्धयच्चिंधो; P तं णउ सुहु जयमंदहो; T झसद्धयमंद.  
१३ MBP पुइईसहो ण सुरेसरहो.

8. १ MBP अजवम्मु. २ MBP सुणियाण°. MP जाओ सि. ४ P सइवुदु.

7. 9 ऽ परि यार र हिय प्रतीचाररहितः. 13 झ स ध य मं द हो झ ष ष्व जे न कामे न म न्द स्य वि ष य-  
व्या इत्यनुयतस्य.

कुरुधरणिणर पुणु वि वीर्यमि कप्पमि  
पुणु सुविहिदिहिदिहियजिणसासणाणंदु  
पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु  
सँव्वत्थि अहमिंदु होउं अहत्तिहर  
गहवइसुया धणासिरी णिहयणयजुत्ति  
जाया पुणो सुहवा बद्धणेहस्स  
सिरिमइमहीसस्स मैय पुणु वि कुरुणारि  
केसवु पुणो मरिचि संभूउ पडिसकु  
धणदेउ वउ धरिचि पुणु हुयउ अहमिंदु  
तम्हा समोयरिचि कुरुवंससरहंसु

सिरिहर सुहासीय हं कयवियप्पमि । ६  
असु सुइवि हउं हुउ सोलहमसग्गिण्डु ।  
पडिसलियजमकरणु तवचरणु संपैण्णु ।  
पुणु भइ इओ अहं एत्थ तित्थयर ।  
णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।  
सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेवस्स । 10  
पुणु रवि सयंपहु पुंणरवि दणुयारि ।  
संसारि संसरइ जगि जीउ इह एकु ।  
सयलत्थि सरयम्भि संकमिउ णं चंडु ।  
इहु एत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।

घत्ता—मलु छिंदह जिणु वंदह तिरयणाइं मणि भावह ॥ 15  
अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावह ॥ ८ ॥

9

जो णरवइ णामे आसि गिन्दु  
णरयमि चउत्थइ सहिवि विट्ठुह  
पुणु देउ दिवायर मइवरक्खु  
पुणु रवि सुवाहु चिरजम्मभौउ  
अणुहुंजिवि जायउ एत्थ भरहु  
पीईवज्जण चमुवइ सुंणणु  
हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोहु  
सन्वत्थइंदु मँहु सुउ अरेणु

आहारणारिरससायगिन्दु ।  
पुणु हुयउ पुल्लि चलकुडिलणहर ।  
णर मेधज्जामर सो दिव्वचक्खु ।  
णिहिलत्थदेउ अहमिंदु जाउं ।  
महु सुउ लइ होसहि तुहुं विंणिरहु । 5  
कुरुमणुर्यपहायर सुरु पसँणु ।  
गईवेयदेउ पुणु हुयउ पीहु ।  
पुणु एहु पइयउ वसहसेणु ।

५ MB सुहासियउ हं कय°; P सुहासीय हुउ वीय°. ६ MBK संपुणु. ७ MBPT अहलच्छि. ८ MB  
°वेहस्स. ९ MB सुय; P सुय and gloss सूता. १० MBP पहावंडु दंडारि. ११ MBP संकमिय.  
9. १ MBP गेजामर. २ MBP °भाइ. ३ MBP जाइ. ४ M जि. ५ MBP सुगत्तु. ६ M  
°अपायर. ७ MBP पसुत्तु. ८ P गह्वेह°. ९ MBP राउ. १० MBP महु तणउ सुणु; T अरणु ज्ञानावर-  
णादिरजोरहितः.

8. a अहत्ति हर पापातिहर. 9 b वि इण निर्धना. 10 b सयलत्थि सर्वाधिसिद्धौ.  
9. 2 b पुल्लि व्याघ्रः. 8 a अरेणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

जो<sup>११</sup> होंतउ सुइर महीसमंति  
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु  
हुउ पढमहिं पँहु चविवि साहु

कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।  
आणंदु णाम होएवि सबसु । 10  
पुणु सँ महाबाहु धरिसिणँहु ।

घत्ता—गउ इट्टहो सव्वट्टहो णट्टहमिंदसरीरउ ॥

हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

## 10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु  
धणमित्तु पुणु वि हँउ सुहपहाणि  
पुणु हविवि महापीहु वि सँमेउ  
सो मरिवि महारउ णंतविजउ  
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु  
कुरुमाणुसु सो<sup>१</sup> चित्तंगयक्खु  
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ  
सव्वट्टइंदु ववगयसरीर  
पहिलारउ हरिवाहणकुमार  
सुई कुंडलिल्लु वरसेणु संतु  
अहअमरणाहु संजणियविणउ  
वणि णागदत्तु वाणरु पँलासि

कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।  
ओइल्लु अहंविहु परैमठाणि ।  
सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।  
उप्पणु पुत्तु जीवेसु सद्द ।  
होएवि वग्गु मुणिचलणलीणु । 5  
वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।  
तवर्चरणे खीणु करेवि काउ ।  
जसवइसुइ पँहु सोणंतवीर ।  
पुणु स्यरु पुणु कुरु अज्जसार ।  
समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु । 10  
तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ ।  
अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।

घत्ता—सुँमणोरहु सुर हयदुहु पुणु चित्तंगउ पत्थियुँ ॥

संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामेँ णियुँ ॥ १० ॥

११ B सो हुँउ. १२ M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्रः, १३ MBP सुमहा°. १४ P धरसि°.

10. १ MBP हुउ. २ MBP ओविह्लु. ३ MBP पढम°. ४ PK सहेउ. ५ K सुइ चित्त°. ६ P तवयरणे. ७ P एहु अणंतवीर. ८ MBP सुर. ९ P फलासि. १० MBP समणोरहु. ११ MBP पत्थिउ. १२ MBP णिउ.

10. 2 b अहंविहु अहमिन्द्रः 7 a समसुरु समारिकदेवः. 10 b समविबुहु सामानिकदेवः.  
11 a अहअमरणाहु अहमिन्द्रः. 14 सुरवइसमु सामानिकदेवः

## 11

पुणरवि अहमीसरु मोक्खणिपडि  
जो सो दुइंसेणदुरियभीरु  
लोळुउ कंठुई लोहेण मुयउ  
पुणु अज्ज मणोहरु अमयसेइ  
पुणु हरिसमाणु गिब्बाणु चारु  
पुणु अंतिमिळु सुरवासवाळु  
आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि  
जा वज्जजंघमवि मज्झु वहिणि  
हूई णंदहि णं धम्मलील  
जा सिरिर्मइभवि पंडीय धाय  
वंभी वि तुज्झा जाणहि महीस  
परिभमियसयलभुवणत्थलीउ  
रंगं गँउ णडु बहुरुवधारि  
सा णत्थि यत्ति जँहि जिउ ण जाउ

हूयउ विमाणि माणिकपयडि ।  
इहु अम्हारउ सुउ णाम वीरु ।  
जो चिरु गिरिकाणणि णउळु हुयउ ।  
पुणु संतमयणु णरँणाहु जोइ ।  
अपरज्जिउ णामे णिवकुमारु । 5  
सुपसिद्ध अहंवइ तिमिरणासु ।  
सो एहु वीरु महु तणइ गेहि ।  
साणुंघरि णं परलोयकुहिणि ।  
बाहुवलिहि लहुई सस सुसील ।  
सा भमिवि एत्थु रमणीय जाय । 10  
जणु मोहँ तम्मइ एहु कीस ।  
केत्तिउ किर कहमि भवावलीउ ।  
अणवरयदुविहकम्माणुयारि ।  
पुणु पुंछिउ भरहँ वीयरउ ।

घसा—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥

15

मइ जेहा पइ तेहँ कइ होहिंति जिणेसर ॥ ११ ॥

## 12

तं णिसुणिवि देवें बुत्तु एम्भ  
होहिंति भुवणि तेवीस एत्थु  
आगामियाइ जेहा इमाहं  
कहियाइ जिणहं जँम्मंतराइ  
मुहयंदोहामियससिमरीइ

मइ जेहा जिणवर गयंविळेव ।  
कँरिहिंति पयडु सिरिधम्मतिट्ठु ।  
बावीसहं तइ तेहाइ ताहं ।  
संगंघियविमुक्ककळेवराइं ।  
महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ । 5

11. १ MBP सोक्खं, २ MBP दुइंसणु, ३ MBP कंठुउ, ४ MBP णरणाह, ५ MP गिब्बाण, ६ MBP सिरिमइ चिरु, ७ MBP रंगउ णडु व बहुं, ८ K जिउ जहिं, ९ P पुंछिउ, १० MBPK जेहा.

12. १ P विगयलेव, २ M करहिंति, ३ MBP जेहाइ जाहं, ४ G धम्मंतराइ, ५ MBP संगहिनि.

11. 2 a दुइंसणं मिथ्यादर्शनम्; °दुरियं पापम्, 5 a हरिसमाणु सामानिकः, 6 b अहंवइ अहमिन्द्रः, 11 b तम्मइ खियते, 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेवः.

12. 3 b तेहाइ तादृशानि, 5 a °ससिमरीइ चन्द्रकिरणाः.

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु  
दिय कविलैसीस गुरुभरहतणुउ  
जाही मिच्छतहु मूढु होवि

सिरिर्विद्धमाणु णामेण पहु ।  
तं णिसुणिवि णच्चिउ सुइयमणउ ।  
मरिही महु केरउ मउ मुएवि ।

घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥

णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥ 10

## 13

सिरिबाला कीलाविउलसेल  
पइ जेहा णिव णायणुवट्टि  
णव बल णारायण णव णं भंति  
अवर वि तेवीस जि कांमदेव  
मंडलिय मउडवद्ध वि अणेय  
तुहु खत्तधम्मु महु परमधम्मु  
सर्व्वहिं जुयंति दिणि णासिंहिति  
उम्मूलियतिट्टाकयैलिकंदु

बलवंतसधरधरधरणलील ।  
एयारह महियलि चक्कवट्टि ।  
पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिंहिति ।  
एयारह रुद रुडभावै ।  
होहिंति बँहुत्त वि णामधेय । 5  
अवर वि जं किं पि विसिट्टकम्म ।  
सिहिमय विसमय घण वरिसिंहिति ।  
ता णरणाहें संयुउ जिणिहु ।

घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइ दिट्टइ मलु खिज्जइ ॥

सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥ 10

## 14

णमो वीयरया महादेवदेवा  
सरिरे ण भूसा समीवे ण णारी  
ण चावं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं  
तुमं देव णुणं रिऊणं णै गम्मो  
ण डिभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो

कयाणेयगिष्वाणणिष्वाणसेवा ।  
तुमं देव सच्चं अणंगावहारी ।  
ण दंडो ण हत्थे किवाणं करालं ।  
अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।  
ण मित्तो ण सच्चू ण कामो ण कोहो । 5

६ MBP रिसिवट्टमाणु, ७ P कविलकेर, ८ P तणउ, ९ G मइउ मणुउ but gloss हट्टवित्तः.

13. १ P भणंति, २ MBP कामएव, ३ MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयवंभवेरदडधरणसील ( P धरणलील ), ४ MBP पुत्त बहुणाम्, ५ P सर्व्वइ, ६ P केलिकंदु.

14. १ P °णिज्जाण, २ K करालं कवालं, ३ MB अगम्मो.

7 b सुइयमणउ प्रहृष्टवित्तः, 9 °पवियारउ प्रवीणः.

13. 7 b सिहिमय अग्निवर्षाः.

14. 5 a णए न ते तव.

ण माया ण चित्ते पँहुत्ताहिमाणं  
 णं छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं  
 उँयासीणभावं सकम्मक्खपणं  
 णरा ते धुवं लोहयारस्स भत्था  
 जई सो गिरासो तुमं छिण्णपासो  
 तुमं जम्मकंतारडाहे किर्साणुं  
 जडा किं णिमंज्जंति मिच्छंत्ततोए  
 णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो  
 पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं

समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं ।  
 ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं ।  
 तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं ।  
 ससंता वसंती हहा किं णिरत्था ।  
 तुमं लोयबंधू पट्ट दिव्वभासो । 10  
 तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं ।  
 तुमाहिं परो को मुँरो जीवलोए ।  
 अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो ।  
 महात्तरोसं महामंगलालं ।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥

15

अवलोइउ पोमाइउ पुष्पदंत दरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे वज्जंणाहितिहुवणसंखोहणं  
 जिणपुण्णावज्जणं णाम  
 सत्तावीसमो परिच्छेओ समसो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पट्ट णाहिमाणं; BP वट्ट णाहिमाणं. ५ MBP सछत्तेण. ६ M सिंहासणेण. ७ P उदासीण°. ८ MBP किंसाणु. ९ MBP भाणु. १० B ण मज्जंति. ११ MBP मिच्छत्तराए. १२ MBP गुरु. १३ MB सूरसेणा°. १४ MBP वज्जणाह°. १५ MPP पुजावज्जणं.

6 a पट्ट ता हि मा णं प्रसुत्वाभिमानः. 8 b णि रे णं निष्पापम्. 11 a कि सा णुं अग्निः; b भूय भा वं ध या र मि प्राणिमनोज्ञानातिमिरस्य.

## XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं सँमिद्धं ॥  
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धं ॥ ध्रुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणायंबइं	अहिसित्ताइं जिणेसरविंबइं ।	
हिमकणकणयकैणोलिवियारहिं	घडपल्हत्थियपयंघयधारहिं ।	
मुणि अणिट्टुट्टासयहारिहिं	चंदणतौतडिल्लवरँवारिहिं ।	5
पुजियाइं छप्पयउलधामहिं	कुवलयवउलमहुप्पलदामहिं ।	
संथुयाइं बहुथोत्तालाविहिं	भाविyaइं सुविसुद्धहिं भाविहिं ।	
कंचणणिम्मियमुँणिपडिमाळउ.	णाणामणिमऊहणियँरालउ ।	
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ	लंबियाउ चउवीस जि घंटउ ।	
पहि पहि रइयउ तोरणमाळउ	पंतजंतणिवणयणसुद्धालउ ।	10
दिण्णइं दिण्णसोक्खसंताणइं	अभयाहारोसहसुयदाणइं ।	
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं	अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।	
दिण्णइं कारुणेण वि अण्णइं	दीणाणाहइं चीरहिरण्णइं ।	
पोसहु सीलु दाणु देवचणु	रीयं संबोइउ पालइ जणु ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मुखनलिनोदरसद्यनि गुणहृतहृदया सदेव यद्वसति ।  
बोजमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहत°. GK do not give it.

1. १ MBPT सुणिबद्धं. २ MBP हिमकण कणय°. ३ BP °कणालि°. ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं. ६ M चंदणतोयतडिल्ल°. ७ MBP °वरधारहिं. ८ MB भाविहिं, ९ M °मणि°, १० MB °णियरालिउ. ११ MB राइं.

1. ३ a जा उ ड ज डिल° जाउडदेशोत्पन्नं कुङ्कुमम्. 4 a हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामोलयः  
भ्यूहस्तैस्तुल्यो विकारः परिणामो यासाम्. 5 a अणि ट्टे त्या दि-न इष्टे विषये द्रष्टा आर्तरोद्रोपहता अनिष्टदुःखाश्च तै  
आशयाश्च मुनीनामनिष्ठाशया निर्मलभिम्रायास्ताननुहरन्ति अनुकुर्वन्ति तैः; मुन्यनभोष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा; 6 °तौत-  
डिल्ल° मिथिताः. 9 a °वि सइउ प्रसरः. 12 a °गोदुह° गोदोहकाः.

घत्ता—धम्मट्टि राप धम्मिट्ट धुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥

15

रायाणुवट्टि जगि संवरइ जिह गरवइ तिह जणवउ ॥ १ ॥

## 2

सीहु व सावयाहं अमोसर  
भावलिंगि होएवि जरेसर  
गोसयाहं गोदुहु जि पिज्जइ  
खारीसयभत्तहं पसउल्लउ  
णरु गरहं पंडिवहु महल्लहं  
पासायहु वि मल्लि सयणीयलु  
जइ वि एम जाणइ संगायउ  
तो वि जीउ खज्जइ रीयत्ते  
चकु कालचक्रहु किं रक्खइ  
दंड कुगइदंडणु दरिसावइ  
असि असिउम्भडलेसहि कारणु  
कागणि खणि सोहइ दुहलीहहं  
होउ होउ रीयत्ते हो गंथे  
अणुदिणु इय झायंतहु कैयंरु व

जिणवरधम्मु करइ भरहेसर ।  
चितइ चैत्तदेहु लंबियकर ।  
णारीसहसहं एक रमिज्जइ ।  
रहलक्खहं महु एकु रहुल्लउ ।  
हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं । 5  
लइ परंजणिज्जु धरणीयलु ।  
चित्तिजंतउः सयलु परायउ ।  
खणविणासि संतावि पडुत्ते ।  
छत्ते छणणउ जीउ ण पेक्खइ ।  
मणि सोदामणि णहचुउ णावइ । 10  
चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।  
अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।  
हुउ मुणिवरु पेरिवेटिउ वत्थे ।  
उड्डिवि जंति<sup>११</sup> रायपरमाणुय ।

घत्ता—सिहिलाइ होंति रीपसरहो निग्गयमणमलपूरइ ॥

णिवडंति झत्ति खोणीयलइ करकंकणकेऊरइ ॥ २ ॥

2. १ M जिणवर धम्मु. २ M भावलिंगि होएव. ३ MBP चत्तदेह. ४ MBP गरवराहं. ५ G पंडिवदगहल्लहं. ६ MBP राहत्ते. ७ MB कागणि खणेण होइ दुहलीहहं; P कागणि खणि होसइ दुहलीहइ; T खाणि आकर. ८ MBP रायत्तहु गंथे. ९ MBP वर वेडिउ. १० MB कयंरु and gloss रोग; T कयंरु व धूलिरिव. ११ G जंतु; K जंतु but corrects to जंति and gloss गच्छन्ति. १२ MBP रजे-खरहो. १३ G निग्गमण<sup>१३</sup>; K निग्गमल<sup>१३</sup>, but corrects it to निग्गयमण<sup>१३</sup>.

2. 1 a सावयाहं श्रावकाणां श्रावदानां च. 7 a संगायउ संगस्य जातकं संघातम्. 11 a असिउम्भड<sup>११</sup> कृष्णोद्भटः. 14 a कयंरु व धूलिरिव. 15 निग्गयमणमलपूरइ निर्गत मनोमलपूराः येषु.



3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ  
जासु खग्गु रणि को वि णं कड्ढइ  
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि  
णयसासणि हियँउल्लं घत्तइ  
अहियारिय णिउपसु णिउंजइ  
के वि सणेहालोयणहँसियहिं  
दविणोवाइ पुरिसँ संभावइ  
सयलकलाकुसल वि संमाणइ  
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ  
मज्झणइ मज्जणउं पईसिवि  
बालाचालियचार्मरमालइ  
पुणु भुत्तुत्तरि पँहु णिवगोट्ठिइ  
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघाणं ॥

पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोपं ॥ ३ ॥

4

महिवइ गयलीलइ पर्यं ठोयैइ  
खणि ससहावें मंतु पमंतइ  
जाणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि  
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं  
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ  
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं

जासु मंतु अरिणरहिं ण भिज्जइ ।  
जासु पर्योखु दिसंति पवँडुइ ।  
मंगलणेवत्थइं पडिवज्जिवि ।  
सयलउ पर्येवित्तिउ संचितइ ।  
णिव संभासणदाणहिं रंजइ । 5  
संमाणहिं लोयअहिलसियहिं ।  
चर परमंडलंतु पट्ठावइ ।  
पवरपसंडीपिंडहिं पीणइ ।  
वरि सच्छंदविहारें अच्छइ ।  
णियसरीरु भूसणहिं विट्ठसिवि । 10  
अच्छइ कौइ वि पत्थिवलीलइ ।  
गमइ कालु गरुयइ संतुट्ठिइ ।

पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयँइ ।  
घज्जु णत्थि किं छग्गुण चितइ ।  
वत्तायरणु णैयाणयजुत्ति वि ।  
पहरणभवणइं भंडागारइं ।  
धम्मसँत्थसंदेहु वि णासइ । 5  
कामु वि तँहु आसंकइ तावहिं ।

3. १ M म कट्ठइ. २ MBP पयाल. ३ G पवट्ठइ. ४ MBP हियउल्लउं. ५ M पयवित्तउ. ६ P °सहियहिं. ७ MBP पुरिसु. ८ Our manuscript P ends with चामर°. ९ MB काइव. १० MB बुहणिवगोट्ठिहि.

4. १ MB पउ. २ B डोइउ. ३ B पलोइउ. ४ B वत्तारयणु. ५ MB ण याणइ जुत्ति वि. ६ MB °सत्थु संदेहु. ७ MB तहि.

3. 1 a रायणाणु राजनीतिशास्त्रम्. 8 b °पसंडी° सुवर्णम्.

4. 2 b छग्गुण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावाः. 3 b वत्ता यरणु कृषिपशुपाल्यादि.

हृथिसत्थि हरिसत्थि ण मुच्चइ  
जोइससउणसमूहणिमित्तइं  
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ

आउवेउ धणुवेउ विउज्झइ ।  
णरणारीलक्खणइं विवित्तइं ।  
भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ ।

घत्ता—जसु जासु दियंतंहिं परिमंइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥

तहु भरहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥ ४ ॥

10

## 5

सो रायाहिराउ सामंतहं  
एकहिं दिणि धीरहं णिरवायहं  
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु  
णिसुणह भुयबलतुलियकरिंदहं  
जैण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि  
पहु लोउ जै धम्मि पवत्तिउ  
कुलु णरणाहहं एत्थु विसेसैं  
दंसणणाणचरित्तभासैं  
कुलु लक्खिज्जइ सुद्धायारैं  
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ  
भरहेरावणहैं कुलु खिज्जइ

मंडलियहं माहिमाइ महंतहं ।  
अक्खइ खत्तवित्तु बहुरायहं ।  
अवरु समंजसत्तु मलखालणु ।  
पंचभेउ चारित्तं णरिंदहं ।  
अज्जिउ तित्थयरत्तु भवंतरि ।  
परितोइउ खयाउ सो खत्तिउ ।  
कुलु लक्खिज्जइ बुहसहवासैं ।  
कुलु रक्खिज्जइ दुण्णयणासैं ।  
दढऊढेण अणुव्वयभारैं ।  
वीर्यंकुरकमेण कुलु आयउ ।  
कालि कालि जिणणाहहिं फिज्जइ ।

5

10

घत्ता—पणवियसिउ मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥

ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥ ५ ॥

८ B मुज्झइ. ९ M दियत्तहिं. १० MB भरि भमइ.

5. १ B णिवायहं; T णिरवायहं. २ MB खत्तवित्ति. ३ B °नुरिय°. ४ MBK चारित्तु. ५ M पर-  
ताइउ; T परिताइउ. ६ MB कुल णर°. ७ MB °चरित्ताभासैं. ८ M दढउढेण; T दढऊढेण. ९ M वीर्यंकुर.

9 b भरहु संगीतस्.

5, 2 a णिरवायहं अपायराहितानाम्. 6 b परिताइउ खयाउ परिरक्षितो विनाशत. 9 b दढ-  
ऊढेण दढधूतेन. 12 हरि इन्द्रः.

6

अवरु वि मइ रापं रक्खेवी  
 णासइ णिवमइ मिच्छारंगं  
 णासइ मइ चामीयरलोहं  
 णासइ मइ हरिसं चर्वलत्तं  
 णासइ मइ मपण माणेण वि  
 णासइ मइ वेसायणगमणं  
 णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती  
 मइ ण जासु कलिकलुसं छिती  
 णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि

घत्ता—मईसुद्धि वड्ढइ धम्ममइ धम्मु वि मई सो घोसिउ ॥

जो खाणकसायहिं केवलहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्मु खमाइ होइ गंरुयारउ  
 अज्जउ धम्मु पावुं मायारउ  
 धम्मु सउच्च धम्मु तवतप्पणु  
 धम्मु बंभवेरं परिचाए  
 पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ  
 इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि  
 हुयैवहपविसणु हुयललियंगउ  
 सत्थग्गहणु महाजलवोलणु  
 एयइं कुच्छियमरणइं दुइमि

अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।  
 कुगुरुकुदेवकुल्लिगिणसंगं ।  
 णासइ मइ णिरु कामं कोहं ।  
 णासइ मइ जिणपडिक्कलत्तं ।  
 णासइ मइ मइरापाणेण वि । 5  
 णासइ मइ कुरंगवहरमणं ।  
 णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।  
 जिणवरचरणंभोरुहधित्ती ।  
 तहु होसइ इहपरमवि गोमिणि ।

धम्महु मईवगुणु पहिलारउ ।  
 धम्मु सच्चयणोहु वियारउ ।  
 धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।  
 जेण ण कियउ वियाणवि रापं । 5  
 रज्जे पुणु वि णरइ पाडेवउ ।  
 तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।  
 विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।  
 गिरिणिवडणु अंतावलघोलणु ।  
 णरु भामेवि धिवंति भवकइमि ।

6. १ MB °कुदेउ°. २ M चवलित्तं. ३ MB read this line and the following as: णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहधित्ती; मइ ण जासु कलिकलुसं छिती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती. ४ G मइसुद्धि. ५ MB धम्मु सइ. ६ MB सो मई.

7. १ B गुरुयारउ. २ MB मइउ गुणु. ३ MB पाउ. ४ MB. °वयणोइ. ५ MBK सउच्चु. ६ MB धम्मु जि बंभवेरपरिचाए. ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ.

7. 2 a पाउ पापम्. 3 b °प वियप्पणु त्यागो विचारणं वा. 4 a परिचाएं आकिचन्नेन; b वियाणवि ज्ञात्वापि. 7 a हुय ललियंगउ दग्धवारीरम्. 8 a सत्थग्गहणु आत्मघातः.

घत्ता—मुर्णिचरणकमलि उवसमु करिवि जो ण सुयउ संगालें ॥  
चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिमइ किलेसैं ॥ ७ ॥

8

अवर वि राणउ करउ गिरिक्खणु  
दुम्मइ ह्रई जाणिवि धाडइ  
जिह गोवउ पौलइ गोमंडलु  
णिक्कारणमारणु जो राणउ  
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं  
बुट्ठणारिडिंभयसंतावणु  
जणणीसौससिहिहिं सो डङ्गइ  
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ  
पहु अणुरत्तपथइं जो तासइ  
रत्तउ सत्तउ भिच्चु मरिज्जइ  
बुज्झियकज्जावायउवापं  
गुरुवरणारविंद सेवेवउ  
रोसैं णउ विसिद्धु पहरेवउ

पर्यहि धम्मणापं परिरक्खणु ।  
तिच्चैं दंडैं गाइ ण ताडइ ।  
तिह पालउ गोवइ गोमंडलु ।  
सो रक्खसु जमदूयसमाणउ ।  
णिहोसहं दिय वणिहिं वरायहं । 5  
जो धणहरणु करइ मीसावणु ।  
अण्णु वि दुक्कियकम्मं बज्झइ ।  
ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।  
कइहिं वि दियहहिं सो सइ णासइ ।  
तत्विचरीयउ अवहेरिज्जइ । 10  
णरणाहेण णिहालियणापं ।  
अवर समंजसत्तु भौवेवउ ।  
दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णिचरित्तु जो पालइ ॥

कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ ॥ ८ ॥

15

9

तहिं अच्छइ भरहेसर जइयहं  
कुरुजंगलजणवयगयउरवइ  
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु

गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं ।  
जिणकमकमलजुयलसेवारइ ।  
लच्छीवइमायहि तोसियमणु ।

८ MB °चरणमूलि.

8. १ G पइहि. २ M पावइ. २ MB °णीसासयहं. ४ MB दुक्खु हुया°. ५ M अणुरत्तु पयइ.

६ MB °रविंद. ७ B भावंतउ. ८ G णियचरित्तु.

9. १ MB °जंगलु.

11 °मुहहिं द्वारै.

8. ३ a गोवउ गोप; गोमंडलु गवां संघात; b गोवइ राजा; गोमंडलु भूवल्लभम्. 8 b विसइ प्राविशति.

सुंदरु चोदहमौइहिं जेदुउ  
 कुरुवंसाहिवेण पणवेण्णिणु  
 ताएं रायपट्टि महु वद्धइ  
 तम्मि हुयइ णिकलि कलुसच्चुइ  
 जाणियएयाणेयवियप्पइ  
 घोस्वीरतवचरणच्चच्चुइ  
 ससहोयरु दिम्महुइ णियंतउ  
 मारुयच्चालियचलसाहाघणु  
 धम्माणंदे मणु आणंदिउ  
 दिदुउ फेणिवरु समउ भुयंगिइ  
 गयसंवच्छरि पुणरवि आएं

घत्ता—दीर्घदु काओयरु णाइणि वि विणिण वि धम्मु सुणंतइ ॥

मइं लीलाकमलें ताडियइ तीहिं वि जाइरइरत्तइ ॥ ९ ॥

जउ णामें अत्थाणि पंडुउ ।  
 पभणिउं तेण राउ विहसेप्पिणु । 5  
 रिसिरयणत्तइ सइं उवलद्धइ ।  
 दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ ।  
 रिसहसामिपयपंकयच्छप्पइ ।  
 पित्तिइं सेयंसाहिवि णिव्वुइ ।  
 हउं णियपुरवरंति विहरंतउ । 10  
 पक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु ।  
 दिदुउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।  
 धम्मु सुणंतु सरलल्लियंणिण ।  
 सा दिद्वी सुंक्किय णियंणाएं ।

15

# 10

कसणारुणविदुयतंणुराइहि  
 इय गरहिवि परिवारेणाहय  
 कासेपुप्फकंतिसंकासउ  
 णिसि णियकंतहि मइं आहासिउ  
 कुमहिलखलचरियाइं पयासमि  
 विविहाहरणकिरणरंजियघरु  
 पुच्छिउ सो मइं किं अवलोयहि  
 तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि

कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।  
 सहुं जारेण तेण सा णिग्गय ।  
 हउं पडिआगउ णियआवासउ ।  
 सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।  
 जाम किं पि किर पिय संभासमि । 5  
 ताव तहिं जि अवयरिउ वरामरु ।  
 दिद्वि वियारभरिय किं दोयहि ।  
 लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदइ<sup>२</sup>, ३ M भावहिं, ४ B वइदुउ, ५ MB पित्तइ, ६ MB चलियचवलसाहा<sup>३</sup>, ७ MB फणिवइ, ८ M सरलल्लियंगइ; B सरलल्लियंगइ, ९ MB मुक्की णियणाएं, १० G णियणायएं, ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि वि, १२ M तहिं जइयरइरत्तइ.

10. १ MB तपुरायहि, २ MBK काससंकंति<sup>०</sup>.

9. 7 a तम्मि ताते; णिकलि शरीरानिस्टुदे. 9 b णिव्वुइ सुखीभूते. 15 वीवहु सर्पजातिविशेषः; णाइणि नागी.

दोसग्गहणु ण कासु वि किज्जइ  
पइं वि जौइरइ महु कुलउत्ती

पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।  
पाणिपोमैपोमै जं छिन्ती ।

10

घत्ता—तं पौडिय सयलें परियणेण उवलहिं दंडसहालें ॥  
कंपंतदेह जारेण सहुं सा मुक्की णीसलें ॥ १० ॥

## 11

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ  
सप्पिणि हूईं समपरिणामें  
विणिण वि मिलियइं हियवइं धरियउं  
आयउं एत्थ जाम किर मारमि  
ता मइं जाणिउं तुहुं पुण्णाहिउ  
एम भणेप्पिणु तेण फणीसैं  
दिण्णइं महु दिव्वइं परिहाणइं  
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि  
णिसुणि देव सासयसंपययइ

हउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।  
सुरसरि देवय काली णामें ।  
तं तुह दुव्ववसिउ संभरियउं ।  
आरुसिवि वच्छयलु वियारमि ।  
चरैमदेह सीलेण पसाहिउ ।  
समैजलसिंचियरोसहुयासैं ।  
दिण्णइं भूसणाइं असमाणइं ।  
अहिवइविवरि णिहेलणु जेत्तहि ।  
जगि जीवहु धम्मु जि लम्मानतइ ।

5

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें बोळियउ भरहपसाहियमैहियल ॥  
देव वि तहु पायहिं पडहिं फुड जासु धम्ममइ णिच्चल ॥ ११ ॥

10

## 12

इय जपेण कह साहिय जावहिं  
गीवालं वियमोत्तियहारें  
तेण पउत्तु णिसुणि णिववैररिसि

अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।  
सो दांविउ रायहु पडिहारें ।  
कासीविसइ णयरि वाणारसि ।

३ MB जाइरय. ४ MB °पोमपंकइ. ५ MBK ताडिय.

11. १ M पुव्ववसिउ. २ MB चरमदेहु. ३ MB समजलु सिंचिय°. ४ M भूदानइं. ५ MB °महियल.

12. १ B जइण. २ K गीवालं विय°. ३ MB रायहु दाविउ. ४ MB °वरससि.

10. 10 a जाइरइ जन्मनः प्रवृत्ति अनुरक्ता.

11. 7 b असमाण इं अद्वितीयानि.

राउ अकंपणु राणी सुण्णह  
कुलकुसेसयसंणिहसुमुहहं  
सस सृगलोयण ताहं सुलोयण  
जेट्टहि रूउ काइं किर सीसइ  
पायहुं काइं कमलु समु भणियउं  
रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं

सालंकारी णं वरकइकह ।  
सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं । 5  
लहुइं लच्छीवइ सुहभायण ।  
उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ  
तं खैणमंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।  
कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुंरविंदु तणु वि जंघांजुयहो णासवंतु करु दंतिहि ॥ 10  
ऊरुजुयलहि जो समुं भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि काइं णियंयगुरुत्तणु  
भमउ भमउ सो भूएं भुत्तउ  
कहिं थणजुयलु चित्तगइरंभणु  
दट्ठा ताहं दासिसिरमंडणु  
किं तरुणीवयणहुं उवमिज्जइ  
जैवं कुमरिहियवउं संदाणइ  
किं सारंगणैयणि सा उत्ती  
णक्खहं लग्गिगि जा केसग्गइं  
लीलंदोलणकीलांजुत्तइं

जहिं पत्तउ तिहुयणु जिं लहुत्तणु ।  
णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।  
भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।  
चंगउ ससहर समलु सखंडणु ।  
तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ । 5  
सूर्ये ण तें अवलोयहु जाणइ ।  
केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती ।  
ताम ताहि णिरुघमइं वरंगइं ।  
छुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥ 10  
वियसंति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहहं. ६ सिगलोयण. ७ MB तक्खणि मंगरु. ८ B कुरविंदत्तणु. ९ MB जंघांजुयलहो.  
१० K सम.

13. १ MB वि. २ जिम कुमरिहि हियवउ. ३ MB भियु ण तेम. ४ MB °णयण. ५ MB उत्त-  
पडुत्ती. ६ MB °कीलणजुत्तइं.

12. 5 a °कुसेसथं रक्तोत्पलम्. 10 कुरविंदु शंखघर्षणम्; तणु काष्ठं लघुवृक्ष.

13. 2 a भुत्तउ युक्तो गृहीतः. 4 a दट्ठा अमिना संतप्ताः.

14

छुड मायंदैरक्खु कंटइयउ  
 छुड वंपयतर अंकुरंचिउ  
 छुड कंकेलि किं पि कोरइयउ  
 छुड मंदारसाहि पल्लवियउ  
 छुड जायउ नैमेरु कलियालउ  
 छुड काणणि पर्कुल्लु पलासउ  
 छुड फुल्लिउ मल्लियफुल्लोहउ  
 छुड छडयैणविडउलि मउ वड्डिउ  
 कुँदु कुसुमदंतहिं णं हसियउ  
 दवणयकयकुड्डयलपउत्तइं

महुलच्छिइ आलिंगिवि लइयउ ।  
 णं कामुउ हरिसैं रोमंचिउ ।  
 णं वम्महचित्तारैं रइयउ ।  
 चलदलु णं महुणा णच्चवियउ ।  
 मत्तवओरकीरवालउ ।  
 पहियडुं लगउ विरहहुयासउ ।  
 रमणीयाणि पसरिउ रइलोहउ ।  
 वेल्लिकुसुमरसु बुंविवि कड्डिउ ।  
 कोइलु कामपडहु णं रसियउ ।  
 चंदणकइमपिडैविलित्तइं ।

5

10

घत्ता—छुड केलीहरइं विणिम्मियइं पुष्पंच्छुरणइं धित्तइं ॥

छुड लगइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्पर रयंरत्तइं ॥ १४ ॥

15

यिप्पिरमहुल्लडयहिं महिसुलियइं  
 णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं  
 धवलकुसुममंजरिधयमालहिं  
 रायइंसकामिणिकयरंमणहिं  
 कुररकीरकैरंजणिणायहिं  
 सियजलकणतंदुल्लसोहालहिं  
 अणलससयदल्लसरलच्छिइं

सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।  
 चंदकवयणडणच्चणभावहिं ।  
 गुसुगुमंतमहुल्लियगेयालहिं ।  
 थिउ वसंतपहु उवैवणभवणहिं ।  
 वणिजंतु व थोत्तिणिंहाणहिं ।  
 भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।  
 धित्त सेस णं तहु वणलच्छिइं ।

5

14. १ MB मायंदु रक्खु. २ B राइयउ; K रयउ. ३ M णं मेरु; B णामर. ४ MBK पर्कुल्ल. ५ B विडयणविउलि. ६ MB कुँद. ७ MB कोइल. ८ MB °कयंकदुयणपउत्तइं. ९ MBK °मिगविलित्तइं. १० MB पुष्पत्थरणइं. ११ MB रहरत्तइं.

15. १ MB °रसणिहिं. २ MB बहुवणभवणिहिं. ३ MB °कारड°. ४ M °णिकायहिं; B °णिगायहिं; K °णिहायहिं;

14. ३ a कोरइयउ कोरकितः. ४ b °कुसुमरसु मकरन्दः. 12 सरहसइं सरमसानि उत्सुकानि.

15. 1 b सुमणसुरहिरय °पुष्पसुगन्धमकरन्दः. 7 a अणलस °विकसितम्.



फग्गुणपइसारइ णंदीसरि  
पोसहपरिसमत्तामसरीरइ  
पुत्तिइ पइसंतं मुहकमलें

छुड सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।  
थणजुंयलंतविलंबियहारइ ।  
पहु विट्ठउ जिणसेसाकमलें । 10

घत्ता—तेलोकपियामहु णंववि जिणु णवमयरंदकरंविउ ॥

तं णलिणु णरिंदे णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंविउ ॥ १५ ॥

## 16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय  
गय सुंदरि णियगेहु पराइय  
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ  
तणयहि उडुदिणि गलियइं रत्तइं  
णं दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइं  
घरि कुमारे केत्तिउ रक्खिज्जइ  
सायरमंति चवइ सररुहमुहु  
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णे  
सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु  
णं पच्चक्खीहूयउ सइं सूरु  
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहरं  
होति<sup>१</sup> ण अण्णहु तं लायणणउं  
अविरोहणउं सयंवरमंडणु

करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।  
तायहु चित्ते चित्तं संभूइय ।  
रायंयं मंतिहि मंतु समीरिउ ।  
महुं दुहंति भो अट्ठ वि गँत्तइं ।  
अवल्लोयहु लहु णववरइत्तइं । 5  
कासु वि कुलगुणवतंहु दिज्जइ ।  
अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।  
समंतेण लोयसामण्णे ।  
अच्छइ राणउ णासु पँहुजणु ।  
रहवरु बलि वज्जाउंहु घणसरु । 10  
तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।  
सुमइ कहइ मइं पहु पडिवणणउं ।  
होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइवुहेणन्मत्थिउ ॥

परियाणिवि होती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥ 15

५ MB °जुयलंति विलं°, ६ MBK णविवि.

16. १ MB राएं मंतिहु, २ MB उडुदिण°, ३ MB डहंति, ४ MB अंगइं, ५ M णं दुपुत्तु रइयइं;  
B णं पुत्तरइयइं, ६ MB किं मंतेण, ७ MB पइंजणु, ८ MB सुरु, ९ K वज्जाउह; T घणमरु मेघेश्वर;  
१० MB महियरु; T महिहर राजानः, ११ MB विजाहर, १२ MB होइ ण.

16. 4 a उडुदिणि ऋतुदिवसे, 8 b °सामण्णे अनुत्तुहेन, 10 a सरु स्मरः कंदर्पः; b घण सरु मेघस्वनः.

विमाणगोमिणीधवो  
 सुरो विचित्तअंगओ  
 तिणा सुमंडवो कओ<sup>१</sup>  
 ललंततोरणालओ  
 सैमंतभंतभिगओ  
 सुणीलबद्धभूयलो  
 कहि पि हेमपिंजरो  
 कहि पि रुप्पयामलो  
 कहि पि वत्थुछणओ  
 णवतणत्थलीसमो  
 मणीहि रायराइओ  
 कहि पि देसिं रत्तओ  
 थिओ णवो व्व मित्तओ  
 णिहित्तमोत्तियच्चणो  
 असेसमंगलासओ  
 विसालमत्तवारणो

कुमारिपुच्चबंधवो ।  
 तओ तहिं समागओ ।  
 विचित्तभित्तिसोहओ<sup>३</sup> ।  
 सुलंतपुष्पमालओ ।  
 णहग्गलग्गसिगओ ।  
 तमेण णाइ सामलो ।  
 सरो व्व कज्जकेसरो ।  
 विलित्तैचंदमंडलो ।  
 सुपैसपिंछवणओ ।  
 महंतपुण्णसंगमो ।  
 रईइ णाइ छाइओ ।  
 वहुइ णाइ रत्तओ ।  
 सिरीविंलसदित्तओ ।  
 ससंखकुंभदप्पणो ।  
 पगीयगेयंघोसओ ।  
 दिवायरंसुवारणो ।

5

10

15

घत्ता—मंडवु कि वण्णमि देव हउं बहुमाणिकहिं जडियउ ।

जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सगै महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17. १ MB add after this: समुच्चमंचसंगओ ( B °संचसंगओ ). २ MB °सोहिओ. ३ MB add after this: वरगणाहिराहिओ. ४ B भमंतमत्त°. ५ MB विचित्तवणमंडलो; K विचित्तचंद°. ६ MB वत्थुछणओ and gloss वल्लेणावच्छन्नाः. ७ GK सुएसुपिंछवणओ but gloss शुकेदापिच्छवर्णः; T सुएस शुक्रप्रधानः. ८ M णवत्तणत्थली°; B णवत्तणत्थली. ९ MB देस°. १० G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin. ११ MB °कुंद°. १२ MB °गीय°. १३ MBK सग्गु.

17. 1 a वि मा ण गो मि णी धवो विमानस्य गोमिनी लक्ष्मीस्तस्या धवः स्वामी, वैमानिकदेव इत्यर्थः.  
 9 b सु एस पिंछ व ण ओ शुकेदापिच्छवर्णः. 10 a ण वं त णं नवीनतृणम्. 14 b °कुं भं मङ्गलकलाः.  
 15 a °आ स ओ आश्रयः.

18

जहिं कुमारि अहिलसइ सई वर  
 पइं विणु तेण वि काइं णवह्लै  
 अविणउ पत्थु मै होउ मलासिउ  
 तं णिसुणिवि ह्वयउ कोऊहलु  
 मेरुधीरु जगणलिणदिणैसरु  
 चल्लिउ पडिभडगयघडमहणु  
 चल्लिउ बलि रहैवरु वज्जाउहु  
 भूगोयरविज्जाहरराणा  
 पडुहु अकंपणु पणविउ जावहिं  
 सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती  
 चोइय हय महिंदरहिणं तहिं  
 जोयइ सुंदरि कंचुइ दावइ

घत्ता—तहि अककित्ति पलयकणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥

वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ  
 को णीससइ ससइ दिहि छंडेइ  
 कंठाहरणु को वि संजोयइ  
 को वि णियइ णियणहइं अर्भंगइं  
 चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु  
 को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु  
 कासु वि आयउ विरहमहाजरु  
 मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघलु

तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।  
 अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।  
 अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।  
 एयइं एयहि थणहि ण लग्गइं ।  
 किह विरयमि एयहि कंठग्गहु ।  
 कासु वि लग्गउ काममैहग्गहु ।  
 कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।  
 केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18. १ MB संयवर. २ M ण होइ. ३ MB तुम्हई पेसिउ. ४ MB रहवर. ५ MB भाइ.  
 ६ MB जेतहिं.

19. १ MB सुसइ. २ MB छडुइ. ३ MB अंगउ को वि पुणु वि पुणु मंडइ. ४ MB अहंगइ.  
 ५ MB °महाग्गहु.

18. ३ a मला सिउ दोषाश्रितः पापाश्रितो वा. 11 a म हिं द र हि णं महेन्द्रसारथिता.

19. 8 a वि ह लं घ लु विह्वलाङ्गः.

घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिँरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥

अहिलसइ हसइ भासइ महुइ भजइ कामवियारहिं ॥ १९ ॥

## 20

तरुणिवयणु जोयवि जोत्तारैं  
पुणु रहवर संचोईउ तेत्तहि  
पुच्छइ पेच्छंती गयँवरगइ  
पँहु केरलवइ एहु सिंघलवइ  
एहु बन्वरवइ एहु गुज्जरवइ  
एहु कंभोयकौंगंगगहुं  
एहु कस्सीरणाहु टँकैसर  
सोमप्पहसुउ पँहु सेणावइ  
रुद्धणहंतरधरविथारहिं  
णिव दिव्विजइ अणैय परज्जिय  
गज्जिउ णवघणघोसणिणाणं  
इय आयणिणिवि पियसहिवयणइं  
घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणप जउ णियवइ जयगारउ ॥

मणु परियाणिवि सुरगिरिधीरैं ।  
आसीणउ जउं णरवइ जेत्तहि ।  
पमणइ कंचुइ णिसुणि महासइ ।  
एहु मालववइ एहु कौंणवइ ।  
एहु जालंधरिसु एहु वज्जरवइ । 5  
राउ एहु सव्वहुं मि कलिंगाहुं ।  
एहु अवर अचलोयहि तुहुं वरु ।  
कुरुकुलणहि उग्गउ ससि णावइ ।  
विसहरवरिसमाणजँलवारहिं ।  
मेच्छ अतुच्छवंस रणि णिज्जिय । 10  
मेहेसर जिं हक्कारिउ राणं ।  
मुद्धइ पेसियाइं णियणयणइं ।

जिह रोमि रोमि तहि विप्पुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥ २० ॥

## 21

जिह जिह कणइ पइ आलोइउ  
णरवरिंद णल्लेस पमाइवि  
सउहसकंपावियगइगत्तइ

तिह तिह रँहिणं संदणु ढोइउ ।  
भवँसिणेहसंबंधें जाइवि ।  
वीलावसपरिभैउलियणत्तहि ।

६ B सिरि चिहुर.

20. १ MB संजोइउ. २ B जयणरवइ. ३ G.K गइवर° but gloss गजवरगतिः; K corrects गइ° to गय°. ४ MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोसलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंणगवन्वरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ; एहु कंभोयकौंगंगंगहं, राउ एहु सव्वहं मि कलिंगहं. ५ MB डकैसर. ६ MB पहु. ७ MB °जलधारहिं. ८ MB अणेण. ९ MB जिह कारिउ.

21. १ MB रहियं. २ MB भवसणेह°. ३ MB °मउणिय°.

20. 1 a जो त्तारैं सारथिना.

21. 2 a प मा इ वि परिलज्जय.

जयहु लच्छिकीलाभूमित्यलि  
कुसुमसरेण णं कुसुमसरावलि  
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु  
ता दुहंसणु दुद्धरु दुज्जणु  
रविकिसिहि सुहिवंदाकारिसणु  
मच्छरवन्ते तेण पउत्तउं  
जहिं अरहंतदेउ तहिं सयमहु ।  
जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु ।  
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु  
हरिकरिथीआईयइं णियंदहु

धित्त सयंवरमाल उरत्थलि ।  
गहिय कुमारि तेण कैयपंजलि । 5  
दुम्मइ परिवड्डिय जुयरायहु ।  
दुहु दुरासउ दूसियसज्जणु ।  
अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु ।  
जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।  
जहिं सुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु । 10  
घंटाळंबणु सहइ करिंदहु ।  
सयलइं रयणइं होंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण एहु णिहालिउ बालए ॥

अवमाणिवि तुम्हइं पिउंतेणय घणरवु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥ 15

## 22

रोसविमीसहं  
इच्छियवसणहं  
समरि भिडेप्पिणु  
धिप्पइ सुंदरि  
विउसदुगुंछिउ  
कलहुदेसिउ  
तं णिसुणेप्पिणुं  
दरविहसेप्पिणुं  
णिहुकियमइ  
भुक्खइ क्षीणी

जयकासीसहं ।  
दोहं मि पिस्सुणहं ।  
सिरइं खुडेप्पिणु ।  
णं वम्महपुरि ।  
पहुणा इच्छिउ । 5  
तं तहु भासिउ  
णिवहु णवेप्पिणु ।  
कज्जु मुएप्पिणु ।  
चवइ महामइ ।  
कोवविलीणी । 10

४ MB सकुसुम णं कुसुमसरसरावलि. ५ MB किय°. ६ MB अरहंतु देउ. ७ MB add after this: जहिं सुवणु तहिं विसयपरिग्गहु. ८ M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइं णियंदहु. ९ MB पहुतणय.

22. १ MB कलहुदेसउ. २ MB add after this: कर मउलेप्पिणु. ३ MB add after this: बहु संसेप्पिणु.

6 a स र हु सरयः. 8 a सु हि वं दा करि सणु मित्रवृन्दकृतताकारकम्. 13 a णि यंदहु वृचन्द्रस्य.

माणुत्ताणी	भयविहाणी ।
जायवचिती	दुक्खे तत्ती ।
णिदइ भुत्ती	गमणासत्ती ।
सइ जि विरत्ती	अण्णह रत्ती ।
पयडीवेस वि	जगपंकयरवि ।
सा करिकरभुय	भरहेसर सुय ।
णालिगिज्जइ	णेय रमिज्जइ ।
एह पउत्ती	परकुलउत्ती ।
उद्दालंतहं	जसु मइलंतहं ।
णाउ मुयंतहं	उप्पहि जंतहं ।
भो जुवणिववइ	इहपरभवगइ ।
अवसें णासइ	तुह किं सीसइ ।

15

20

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥  
जणजीवियकारेणु धुवु मुणहि सुंदर तुहुं तुह ताउ वि ॥ २२ ॥

## 23

धणवंतेण अहय दीणेण वि  
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ  
एहु पियामहेण तुह तापं  
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ  
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ  
अक्कत्ति पडिलवइ विरुद्धउ  
जइयहुं फणिवइ भइण चवक्किउ  
तइयहुं महुं रोसाणलु ह्यउ

अंकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।  
हियवउ गरुपं पावें लिप्पइ ।  
मग्गु पयासिउ मणुसंघाए ।  
सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।  
णं घएण सित्तउ धूमद्धउ ।  
जइयहु वीरवट्ट तहु बद्धउ ।  
जणणें जलहरसरु जउ कोक्किउ ।  
णियमिउ एंतु खलहं जमदूयउ ।

5

✓ MB जा अवचिती. ५ MB read this line as: गमणासत्ती, णिदइ ( B णंदइ ) भुत्ती. ६ MB अण्णहु

७ G omits this line. ८ B जणु. ९ MB कारण धुउ.

23. १ MB सुकुलेणेण वि अकुलीणेण वि. २ MBK वीरपट्ट.

22. 12 a जाय वचि ती या अपचिता उन्मत्ता.

23. 4 a भूयइं प्राणिनः. 5 b धूमद्धउ अग्निः. 7 b जउ जयः इति नाम्ना.

वारिउ छणपउसिहिं बण्यै  
सो वूसहु पज्जलियउ वड्डइ  
अज्जु सयंवरमालातुण्यै ।  
रिउलोहियसित्तउ ओहइइ । 10

घत्ता—भो ओसरु कण्ह काई महु हउं किं मग्गु ण वुज्झवि ।  
जउ अणु वि भडलीहहि गणइ तेण समउ राणि जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरभेरि कउं कलयलु  
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण  
मेट्टेपयंगुट्टहिं संचोइय  
हैरिखरखुरखयखोणीमंडल  
रहरंखोलमाणधयडंवर  
चक्कचारचूरियविसहरसिर  
सुणामि सुविणमि महापहु णहयर  
जुवरापण रणंगणि मुक्का  
विजयघोसि करिवरि आरुडउ  
चक्कवूहमज्झत्यु विहावइ  
एत्तहि कण्ह पइट्ट जिणालउ  
रक्खिज्जंती किंकरवग्गे  
झायइ हो विवाहवित्थारै  
एत्तहि दूपं कज्जु समीरिउ  
खणि उद्धाइउ चउरंगु वि बलु ।  
सुरारुढ सुर वरवारण ।  
गज्जमाण मेहा इव धाइय ।  
वाहिय वरकामिणिमणवंचल ।  
दित्तविचित्तछत्तछणंवर । 5  
असिद्धसमुसललउडिलंगलकर ।  
अट्ट चंद नामें विज्जाहर ।  
गरुडवूहु णहि विरइवि थक्का ।  
बालु महाहवसयणिग्घुट्टउ ।  
रवि परिवेसैं वेढिउ णावइ । 10  
णिच्चमणोहरु नाम विसालउ ।  
थिथ णिच्चलमण काओसग्गे ।  
णाणाजीवरासिसंघारै ।  
तं चक्कवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामापं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥ 15  
रिउ जिणिवि जाम पडिबलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वड्डइ. ४ MBK बुज्झमि. ५ MBK भडलीलहि. ६ MBK जुज्झमि.

24. १ MB किउ. २ K मेंठ°. ३ MB हयखुरेहिं खय. ४ MB चक्कचार°. ५ MB अद्वंद्व.  
६ MB °सयणिग्घुट्टउ. ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गे. ८ MB झाइय.

24. 5 a °घयडंवर ध्वजाटोपः. 9 b बालु अकंकीर्तिः.

## 25

तेण समउ वरवीरु रणुम्भड  
 खगपाणि भीसणु परसिरिहर  
 पंच वि ससिरविणायकुलुम्भव  
 पंच वि णं आसीविसविसहर  
 पंच वि लोयवाल णं दारुण  
 अरितरुमयकंतरविणासण  
 मेहप्पडु खगवइ तहिं छट्टुउ  
 जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ  
 विरहयमयरवूहअम्भंतरी  
 दीसइ सोमप्पहसुउ केहउ  
 चोहहभायरेहिं परियरियउ

चलिउ सुकेउ सूरमिचु वि भडु ।  
 देवकित्ति जयवम्मु ससिरिहर ।  
 पंच वि कयसंगाममडुच्छव ।  
 पंच वि मउडबडु रणसहचर ।  
 पंच वि पंच णाई पंचाण । 5  
 पंच वि णं सई पंच हुयासण ।  
 करणहउयरी णाई मणु दिट्टुउ ।  
 तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ ।  
 थियउ वेयडुमहाकरिकंधरी ।  
 वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ । 10  
 रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ ।

घटा—उपख्यकरवालभयंकरं आहवि कौवावणं ॥

आलग्गइ कणाकारणिण अककित्तियसेणं ॥ २५ ॥

## 26

परिहियकंचणकुंइकवयइ  
 भडमुहमुकहकल्लकइ  
 झसैकौतासणिघोरायारइ  
 मुकपिसकच्छइयगयणयलइ  
 अंकुसवसविसंतमायंगइ

सामरिसइ संवरियावयवइ ।  
 भामियचकइ भेसियसकइ ।  
 झणझणंतधणुगुणटंकारइ ।  
 रहिरवारिरेल्लियधरणियलइ ।  
 संदणसंकडपडियतुरंगइ । 5

25. १ MB वरवीरु. २ MB मित्तसू. ३ B जयधम्मु. ४ MB रणसयकर; K रणसहयर. ५ M अइतरं but gloss वरिः. ६ MB णावइ. ७ MB कौवाउण्णइ. ८ MB °सेणइ.

26. १ MB पहरिय°. २ MB °कंजुय°. ३ MB झसकुंतायणि°. ४ MB रुणुरणंत°.

25. 6 a अरितरुमयकंतरं अरयः एव तरवस्तन्मयं यत्कान्तारमरणम्. 8 a ववसिउ शत्रु-  
 पराजयकरणे उद्यतः; b ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ रिपुर्कैकीर्तिः सुलोचनोद्दालनादिलक्षणं कर्मसंघातं न  
 धरति न स्वीकरोति.

26. 2 a °लल्लकइ रौद्राः. 4 a °पिसकं बाणाः.



असिणिहसनसिहिसिहपिंगलियं  
मिलियकरालकालवेयालं  
रंडखंडभाविभेसंडं

लुयकरसिरउराइं महिधुलियं ।  
हणैहणरावसमुगयरोलं ।  
खंडियधवलछत्तधयदंडं ।

अथा—जुझंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुलं ॥

वेणिण वि सेण्णइं णं रणंसिरिण बद्धइं केसुअफुल्लइं ॥ २६ ॥

10

## 27

रत्तमत्तरयणियरवैभले  
पहयहथिमत्थिकपंकप  
उद्धबद्धचिधोहल्लरणे  
उयरऊरुउरयलवियारणे  
भीरुवयणणीसरियहारणे  
ता जणण संपेसिया सरा  
आहया हया विद्धया धया  
ते ण किंकरा जे ण मारिया  
तं ण छत्तयं जं ण छिण्णयं  
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ  
ताम पम्बिलपम्बेहिं विज्जियं  
फुट्टैकंचुयं फुट्टमदलं  
घाययुस्मिरं चैत्तगोदलं  
समरकोच्छरो हंसियअच्छरो  
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो  
भुयबलीविलग्गो महाभुवो  
दिब्बलक्खणंकियसरीरहं

घारणीयलुलियंतचोभले ।  
रसैवसाणइंजणियसंकप ।  
तियससुंदरीतोसपुरणे ।  
वइरिघरिणिमणिहारहारणे ।  
मरणदारुणे तहिं महारणे ।  
पुंखलग्गहुंकारखरसरा ।  
णिग्गया गया णिम्मया मया ।  
ते ण राइणो जे ण दारिया ।  
तं ण वांहणं जं ण भिण्णयं ।  
सो ण खेयरो जो ण खं गओ ।  
मग्गणेहिं किवेणं व तज्जियं ।  
तुट्ठपक्खरं मुक्ककुंतलं ।  
चक्किसुण्णो णिग्गयं बलं ।  
बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।  
सोमवंसतिलयस्स संमुहो ।  
पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।  
सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

5

10

15

५ MB हणहणकार°. ६ M वणसिरिण; B गवसिरिण.

27. १ MB °विभले. २ MB रसवसं णइं. ३ G छित्तयं; K छत्तयं, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं. ४ MB विजियं. ५ MBK किविणं. ६ MB फट्ट°. ७ M चित्तगोदलं. ८ MBK हरिसियच्छरो.

27. 1 a °वैभले विहल्ले; b °चोभले समूहे बीभत्से वा. 2 b रसवसा णइं° रसस्य वसायाश्च नदी.  
7. b मया मृताः. 14 a °कोच्छरो दक्षः. 16 b साणुओ सानुजः लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहितः इत्यर्थः.

घत्ता—पुर्देवतणयतणयहि मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥  
हेमंगउ भायरदहसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥ २७ ॥

28

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ  
लुद्धभवणि णं विहलियसत्थइ  
चरमदेह ण मरंति महाहवि  
मेहेसरसरजालु जलंतउ  
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ  
एत्थंतरि असहायसहायहु  
भणइं कुमार धवलु तुहुं ण कसर  
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ  
कतामोहमहैणववूडउ  
किं कड्डिउ असिवर पडुतणयहु  
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि  
ता सो जयणरणाहें हसियउ

घत्ता—तुहुं कौरउ परयारहु पमुहु अककित्ति सइं कत्तउ ॥

हउं णायणिउंजउ धरणिगले णियपडुपायहं भत्तउ ॥ २८ ॥

29

एम चवैवि चाउ अफ्फालिउ  
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं  
भेसियसुरणरफणिसंघायउ  
णिद्धणविहुरविणाससमयै

णं क्राणणि हरिणा ओरालिउ ।  
जगु गिलेवि णं कालें हसियउं ।  
जीयारउ रउहु संजायउ ।  
धणु कड्डियउ तेण सइं हत्थै ।

१ G पुर्देवतणयहिं.

28. १ MB तहिं णं. २ M चरमदेहै. ३ B थिरः. ४ MB कुमारहु. ५ M मोह. ७ MB मह-  
णवे वूडउ. ७ M कायउ.

28. ३ b पाह वि प्रमुत्वे. 5 a वसुसमससिवि जहिं अष्टबन्धैर्विधावरैर्विधाभिः कृत्वा. ७ b जी मूय-  
णाय हे मेघस्वर. 10 b दोहय हे द्रोहिण. 13 तुहुं कारउ त्वं हेतुः कर्ता; परयारहुपमुहु परदार-  
गमनस्य प्रमुखः प्रधानः; सइं कत्तउ स्वतन्त्रः कर्ता. 14 णायणिउंजउ न्यायनियोजकः.

29. 1 b हरिणा सिहेन.

लोहवंत किर के णउ मग्गण  
गुणवज्जिय किर के णउ णिदुर  
चित्तविचित्त के ण किर चलयर  
सुद्धिवंत णियदिसिइ दित्ता  
वहरिहि देहावयवि पइट्ठा  
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु

धम्मज्झिय किर के णउ भीसण । 5  
पिच्छंविचिय किर के णउ णहयर ।  
वम्मण्णेसिय के णउ ताविर ।  
उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।  
एक ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।  
ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु । 10

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणहं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥

णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि वलु खणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुंजर जूरभावेण व भग्गा  
संदण संदाणिय वावल्लहिं  
तिक्खणुत्तपहिं छिण्णं छत्तइं  
चउदिसु पच्छाइयसरजालें  
एम दिसावलि संदिज्जंतउ  
सुणमिं मुकु वाणु संधोरउ  
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ  
एत्थु तेत्थु मणियभवठंभणु  
बलु णीलीरसि बोलिउ णावइ  
दिणयरसरदीवियदहदिण्णहु

तुरय तुरंतंतयपहि लग्गा ।  
भणु कंहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।  
चिंधइं चामराइं वाइत्तइं ।  
विज्जाहर हरेवि णियकालें ।  
पेच्छिवि णिययसेणु भजंतउ । 5  
ढंकिउ तेण वहरिपरिवारउ ।  
वाहणु पहरणु को वि ण चालइ ।  
सालसणयणु पमेहियजिंमैणु ।  
जाम अहइ णिइ संप्रावइ ।  
तावंतरि संठिउ मेहप्पहु । 10

घत्ता—तं धंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियंसुहिसुहुं ॥

जगि सज्जनसंगे जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29. १ M मम्मं णिसिय; B धम्मं णिसिय. २ MB ण संताविर.

30. १ MB जरतावेण जि भग्गा. २ MB तुरंत तहे पहि. ३ MB किर कहिं. ४ MB छिण्णहिं.  
५ MBK अंधारउ. ६ M परहणु. ७ MB जेमणु. ८ MB संपावइ. ९ B णियसहिसुहुं.

7 b वम्म णे सिय मर्मान्वेषिणः. 9 b जयसर जयस्य वाणाः जितस्मराश्च.

30. 1 a जर° ज्वरः; b तुरंतंतयपहि तुरंत त्वरमाणाः + अंतयपहि अन्तकमार्गे. 2 a वा वल्लहिं  
सेल्ले; b रहिल्लहिं सारथिभिः. 9 b अहइ अभद्रा. 10. b मेहप्पहु मेघेश्वरमित्रः.

31

णं जलहर जलहर गह दूंसिवि  
 सुणमिं मुकु भीमु पंचाणणु  
 सुणमिं मुकु जलंतु हुयासणु  
 सुणमिं मुकु सैंकंदर मंदर  
 सुणमिं मुकु विसंकु महाफणि  
 सुणमिं मुकु महंतु महीरहु  
 सुणमिं मुकु मत्तसोंडालउ  
 जं जं सुणमिं महांडु पेसइ

धाइउ ताहुं सुणमिं आरुसिवि ।  
 मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।  
 मेहप्पहेण मेहं जलवरिसणु ।  
 मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदर ।  
 मेहप्पहेण गरहु खगसिरमणि । 5  
 मेहप्पहेण तणूणु दूसहु ।  
 मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।  
 तं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।

घत्ता— णउ सकिउ विसहहुं रिउहि सर कसर व मुहुं वंकेप्पिणु ॥  
 ओसरिउ सुणमिं खयराहिवइ संगरभाह सुप्पिणु ॥ ३१ ॥

10

32

भग्गइ सुंणमीसरि सोंडीरहिं  
 मेहप्पहु पहेरहिं परज्जिउ  
 दाणवारिपीणियमहुयरउलु  
 कणिरकणयकिफिणिकोलाहलु  
 आयसवल्लयवद्धंतुज्जलु  
 पभणिउ अक्कित्ति लहु आवहि  
 चंगउ कियउ रायपुत्तत्तणु  
 परणरणारिहि भडयणमारिहि  
 तं पइं णरवइआण णिसुंभिय  
 तं णिसुणेप्पिणु उसैर धुत्तं

अंदुच्चंदविज्जाहरवीरहिं ।  
 सो णासंतु णं सुरहं वि लज्जिउ ।  
 णहयल्लगगतुंगुंभत्थलु ।  
 कूरसिक्कारसित्तधरणीयलु ।  
 ता जण संचोहवि मयगलु । 5  
 अज्ज वि सुंदर काइं चिरावहिं ।  
 णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकित्तणु ।  
 रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।  
 णिहय जारवित्ति पारंभिय ।  
 पडिजंप्पिउ भरहाहिवपुत्तं । 10

31. १ MB जलहर°. २ MB भूसिवि; ३ K सुणमिं ताहु. ४ MBK मेहु. ५ M सुकंदर.  
 ६ MB महातर. ७ M तणूयउ; B तणूणउ. ८ MB महत्थु संपेसइ. ९ MB वंकेविणु.

32. १ MB सुणमिं समरि. २ MB अद्धवंद°. ३ M वि. ४ G करि°. ५ MB सिउ. ६ MB  
 थिरावहि. ७ MB उत्तर.

31. 2 b सरहु अष्टापदः. 6 b त णु णु तनुनपात् अमिः.

32. 4 a क णि र° शब्दवत्यः.

घत्ता—महु संगिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥

हउं लग्गउं तुह भुयबलमयहो पुक्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

## 33

जेण बलेण जिउ घणमंडलु  
तं बलु पेक्खह दावहि अम्हहं  
वेहाविउ आवत्तचिलायहिं  
तहिं अवसरि सेंदूरकणारुण  
अट्ट अट्टेचंदेहिं आवाहिय  
एकु दंति जुवराणं ढोइउ  
हयअरि करिवरेण ते दंतहिं  
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं

तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।  
अज्जु परिकख करेवी तुम्हहं ।  
तुहं वि वण्ण जुज्झहि सहुं रायहिं ।  
जयवारणहु विलग्गा वारण ।  
कक्खरिक्खगेज्जावलि सोहिय । 5  
णं इदं अइरावउ वोइउ ।  
णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।  
दोखंडीहवंतदढसोडहिं ।

घत्ता—गय पाडिय सुडिय णं सिहरि धरणिवीडु आकंपिउ ॥

देवांसुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

10

## 34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं  
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ  
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु  
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं  
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ  
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं  
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु  
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ  
तुमुलरंणं णिरु रोसाउण्णइं

एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं ।  
एत्तहि जगु संझारइसोहिउ ।  
एत्तहि पसरइ मंडु तमीतमु ।  
एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।  
एत्तहि धावइ ससियरमेलउ । 5  
एत्तहि विरहं रडियइं चक्कइं ।  
एउ ण बुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।  
रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।  
तेत्थु जि वसियइं वेणिण वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ.

33. १ MB सिदूर°. २ MB अट्टचंदेहिं. ३ MB अवराइउ. ४ MB देवासुर.

34. १ MB संझारणु सोहिउ. २ MB रोसाइण्णइं.

33. 5 b °गेज्जावलि° वरत्राभिः. 7 b अंतहिं अन्त्रैः.

34. 3 b त मीतमु राज्य अन्धकारः.

घत्ता—रत्तिहिं रणरंगि भवंतियय णरवइकजि समत्तउ ॥

10

वरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पसुत्तउ ॥ ३४ ॥

## 35

का वि भणइ ईसावसरुट्टी  
तक्कयरत्तहु हुउं किहं रुच्चमि  
का वि भणइ जं मैइं पडिवणणउं  
जं मइं चिरु दंतगहिं खंडिउं  
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहिं  
पट्टालंकियसीसहु लक्खणु  
जो मइं चाण्डि आसि थणंतहिं  
पणयसणिद्धइं पणइणिज्जाणइं  
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहिं  
णाहें अंतंणिबंधणु दिण्णउं  
को वि दुवासखुत्तरिउचकउ  
केण वि संक्षिय णिवरिणहारी  
लइय भिडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं

खग्गधार पियहियइ पइट्टी ।  
हयविहि प्रोणहिं काइं ण मुच्चमि ।  
पिय तं हियउ सिवहिं किं दिण्णउं ।  
अहरंबिबु तं पक्खिणखंडिउ ।  
ओसरु कावालिं किं जायहिं । 5  
मं लुडु तुहुं णिगिणं दुवियक्खणु ।  
सो रंद्धउ उरु करिवरदंतहिं ।  
का वि सणाहहु खंडइ वीणइं ।  
आणिय पासि पेरेहिं णिहाणुहिं ।  
असिधेणुयइ साहुं लइ चिण्णउं । 10  
उप्परि रहहु महारहु थकउ ।  
रयणकोडि मायंगहु केरी ।  
भणु किं ण कियउ एत्थु समत्थहिं ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेळिवि ससरु सरासणु ॥

गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरसंणासणु ॥ ३५ ॥

15

35. १ MB किं रुच्चमि. २ MB पाणहिं. ३ M मुहु; B महु. ४ K चहिउं. ५ MB अहरंबिबु पक्खिणहिं विहंडिउ. ६ MBK जोयहि. ७ K णिरिच. ८ MB रंद्धउ अरिवरकरिदंतहिं. ९ MB समिद्धइं. १० MB टाणइं. ११ T णिमाणुहे. १२ MB अज्ज णिबंधणु. १३ MB सीसु लइ चिण्णउं. १४ MB वीर-संणासणु.

10 समत्तउ समाप्तो मृतः. 11 पिउ प्रियः.

35. 2. a तक्कयरत्तहु खग्गधाराकृतरक्तस्य. 9. a तणुथाणु हि शरीरस्तम्भस्य; b णिहाणु हि पुरुषादित्यस्य. 10 b सासु निःश्वासः.

पुणु जामिणीगमणि	दिणमणिसमुग्गमणि ।	
भेरीणिणद्दाइं	कयजयविमद्दाइं ।	
जममुहरउद्दाइं	हरियंदणद्दाइं ।	
गज्जियमेयंगाइं	हिसियतुरंगाइं ।	
वाहियरहोहाइं	संणद्धजोहाइं ।	5
चलवलियचिधाइं	धूलीरयंधाइं ।	
किंलिगिलियणिसियरइं	जिगिजिगियथसिवरइं ।	
कंपियधैरंगाइं	सेण्णाइं लग्गाइं ।	
ता संदणत्थस्स	आहवसमत्थस्स ।	
णरसिर लुणंतस्स	करि हरि हणंतस्स ।	10
विद्वियदणुयस्स	लच्छिमइतणुयस्स ।	
परिचत्तसंकेहिं	वहुंसमससंकेहिं ।	
उब्भूयगावेण	विज्जापहावेण ।	
परपाणपहरणइं	छिण्णाइं पहरणइं ।	
कौताइं कंपणइं	मुसळाइं घणघणइं ।	15
चावाइं चक्काइं	चूरेवि मुक्काइं ।	
ता गलियसत्थेण	चित्ते महत्थेण ।	
जयणामराएण	इच्छियसहाएण ।	
जियसरयमेहम्मि	जो आसि गेहम्मि ।	
सिद्धो सउण्णेण	धर्णेण वीरेण ।	20
अहिराउ संमरिउ	सो इत्ति अवयरिउ ।	
फणिवासु रणि तिब्बु	अद्धेदुसर दिब्बु ।	
दोएवि खणि तासु	गउ णाइणीवासु ।	

36; १ M हरियंद°, २ MB मइंगाइं, ३ MB किलिकिलिय°, ४ MB °धयग्गाइं, ५ MBK परियत्त°, ६ B omits this foot, ७ MB कप्पणइं, ८ MB वितियमहत्थेण, ९ MB धीरेण धण्णेण; G धम्मोण वीरेण.

36 ३ b हरियंदणद्दाइं हरिवन्दनाद्दाणि, 11 b लच्छिमइतणुयस्स जयस्यत्थेः, 12 वहुसमससंकेहिं अष्टभिर्विधाधरेः, 20 a सउण्णेण खपुण्येन, 22 फणिवासु नागपाशः.

ता विजयवतेण  
जाला मुयंतेण  
हुयवहसमाणेण  
कूबरधुरासहिअ  
दरमलियधैयसंडि  
परिभमियगिद्धउलि  
अट्ट वि विहू तेण  
कूरारितासेण  
धरिओ रुसारुणउ

घत्ता—जिणु तायताउ पिउ रीयवइ तो वि णिबंधणु पत्तउ ॥  
उई माइ कुर्मांरु णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥ ३६ ॥

ससिमासपुत्तेण ।  
जालियदियंतेण ।  
अहिदिण्णवाणेण ।  
णिहहिवि रीणि रहिय ।  
णच्चवियारिउं हांडि ।  
पइसरिवि भडतुमुलि ।  
वद्धा तुरंतेण ।  
दढणायवासणेण ।  
चक्कवइपिउं तणउ ।

25

30

## 37

पम्ब चवंतिहिं सुरवरगणियहिं  
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरे  
जयविलासु जयरायहु केरउ  
रहणियहियउ कुमारु विच्छायउ  
जलहरसरु पइहु ससुरयधरि  
तक्कणि सयल वि परभवतत्तिइ  
जम्मावासपासविवरंसुहु  
मिलियणरिंदहिं मउलियपाणिहिं  
बहुमिच्छत्तवीयउप्पणणउ  
चउगइखंयु सुहासासाहउ

वणिणउं जयसाहसु घणथणियहिं ।  
गाइउं णं रुणुरणिपं भमरे ।  
दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।  
करकलियंकुसचोइयणायउ ।  
विजयाणंदु पंवड्डिउ पुरवरि ।  
गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।  
वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।  
मुहकुहहग्गयसुल्लियवाणिहिं ।  
मोहविसालमूलु विरिथणणउ ।  
पुत्तकलत्तलुलियपारोहउ ।

5

10

१० B अहदिण्ण°. ११ MB रहरहिय, १२ धरंसंडि, १३ M रिउखंडि, १४ MB °णायपासेण, १५ MB °विय, १६ M चक्कवइ, १८ B एवमाइ, १८ K कुमार.

37. १ MB °गाइउ, २ MB पवड्डिउ, ३ K °मूल.

24 b ससिभास° सोमप्रभः, 27 a कूबर° रथमुखम्; b रहिय सारथिम्. 30. a अट्टवि विहू अष्टापि चन्द्रा विद्याधरस्वामिनः. 34 उइ माइ पइय मातः.

37. 3 b चारु चेष्टा, 4 b °णायउ गजः.



गहियमुक्कबहुविहतणुपत्तउ

सोक्खदुक्खफलसिरिसंपण्णउ

पुण्णपावकुसुमेहि णिउत्तउ ।

इंदियपक्खिउलहिं पडिवण्णउ ।

घत्ता—इय भवतरु ज्ञाणहुयासणेण पई दडुउ परमेसर ॥

जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जँय जय जियवम्मीसर ॥ ३७ ॥

38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं

पयहुं मरइ मज्झि जइ पक्कु वि

तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु

इय चिंतंति पुत्ति संभाविय

तुह सइ सामत्थे असमंजस

हई संति होउ किं शायहि

जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ

सिरिणाहहु सिरि व्व आवग्गी

जाइवि पासि कुमारहु णेहं

जउ सैंकं पुणु पायहिं पडियउ

अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसर

अम्हइं णल्लिणायर तुहुं दिणयर

अणुपालियहं काइं रूसिज्जइ

महु कारणि उच्चाइयवायहं ।

पच्छइ इच्छइ जइ मइं सक्कु वि ।

लच्छिइहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।

लंबियकर तापं बोलाविय ।

रणि उव्वरिय महीस महाजस । 5

सुंदरि करपल्लव उच्चायहि ।

णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।

जयरायहु करपंकइ लग्गी ।

महिणिहित्तदंडासणदेहं ।

भासइ सामिभेत्तिभरणमियउ । 10

अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।

अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहर ।

अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।

घत्ता—इय वयंणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥

लच्छीमइवहिणि सुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

15

इय महापुराणे तिसड्डिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम

अट्टावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

॥ संधि ॥ २८ ॥

५ MB जय णिजियवम्मेसर.

38. १ MB जइ मइं इच्छइ. २ MB संधि. ३ MB साकंपणु; K साकंपणु? ४ MB भावइ. ५ M भत्तिभरणडियउ; B °तत्तिभरणडियउ. ५ MB वयणे.

12 b पडिवण्णउ आधितः.

38. 5 a असमंजस कोपाविष्टाः. 8 a सिरिणा हहु विष्णोः.

५८ [ महापुराण—VOL I ]

— ४५७ —

## XXIX

जे रुद्रा संगरि बद्धा ते णिव मेळिवि पुज्जिय ॥  
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुंरुहं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

1

किह हउं संपत्तउ बंधणारु  
ता पमणिउं तेणाकंपणेण  
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु  
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु  
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ  
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिचिलासु  
हेलइ जण्ण जयराइएण  
इयरह किं अम्हहं सहलु होसि  
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति

जा सोयइ अप्पउ णिवकुमारु ।  
जिणवरणलीणणिच्चलमणेण । 5  
तुहुं बद्धउ णं सुयणोहबंघु ।  
तुहुं बद्धउ णं सरहलु महंतु ।  
तुहुं बद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।  
तुहुं बद्धउ णं सुकहाविसेसु ।  
तुहुं बद्धउ णं रसवाइएण ।  
अण्णापं दूंसिउ खयहु जासि । -10  
णियपुंरुह विसैज्जिउ अक्कत्ति ।

घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ ढोईउ ॥  
तें भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोईउ ॥ १ ॥

B give, at the commencement of this Samdhi, the following stanzas:-

णाहन्वसुरिन्दणरिन्दवन्दिद्या जणियजणमणाणन्दा ।  
सिरिकुसुमदसनकइमुहुणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥  
तन्त्रीवायैरनिन्दैधरकविरचितैर्गयपयैरनेकैः  
कान्तं कुन्दावदातं त्रिदिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरीषैः ।  
काले तृणाकराले कलिमलमलितेऽप्यथ त्रियाप्रियो यः  
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1. B बुद्धा. २ MB पुंरुह. ३ MB सुहिणहबंघु. ४ M सरयणु; BT सरयलु. ५ MBK रस वाइएण. ६ MB बद्धउ. ७ M विसज्जिय. ८ MB ढोइयउ. ९ MB जोइयउ.

1. ३ a बंधणारु बन्धनम्. 5 b सुयणोह° सुहृदाम्. 6 b सरहलु काण्डफलम्. 7 a सासेण धान्येन. 9 b रसवाइएण धातुवादिना. 10 a इयरह अन्यथा.

## 2

लज्जंतु वि तापं सो पउत्तु  
 वसणेसु रमइ खलवर्येणु सुणइ  
 जो पइउ सो वरै कहिं वि जाउ  
 महु चरपुरिसहिं दुइंतदुरिउ  
 होपेण सुंदुण्यगारपण  
 गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु  
 गुरुकोवें को वि ण खयहु जाइ  
 गुरुवयणइं कहुयइं जाइं जाइं  
 लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाइं  
 लइ दिज्जमि हउं दिइंतु पत्थु

वरै गलउ गम्भु मा होउ पुत्तु ।  
 अविचेयभाउ सयणाइं हणइ ।  
 मा करउ पयहिं परियेणहु ताउ ।  
 एयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।  
 ता भित्तिउ तेण कुमारपण । 5  
 गुरुकोवें जैगि सिज्जइ तिवग्गु ।  
 गुरुकोवें संपय घरहु पइ ।  
 परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।  
 जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।  
 लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु । 10

घत्ता—जयवंतें सुण्णहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥

आवेपिणु पहु पणवेपिणु पभणइ सुमइमहंतउ ॥ २ ॥

## 3

भो देव कसनसियतंविराइं  
 किं तुह णवणिहिबइ पाहुडेण  
 लइ भसितो वि णियकिंकराहं  
 जयविजयाकंपणपत्थिवाहं  
 पहिलउ जि दोसु दीहरभुयासु  
 बीयउ जं कोक्किउ चरणिहाउ  
 तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल  
 परघरिणि हरंतहु रोसणडिय

लइ रयणइं लइ पवरंवराइं ।  
 किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।  
 तुह पायपोमलालियसिराहं ।  
 विण्णाविउ गिसुणि णिव अवणिवाहं ।  
 जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु । 5  
 दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।  
 रइलालस लग्गी तासु बाल ।  
 चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2. १ MB वर. २ MB वयण. ३ M किर. ४ G परिणयहु. ५ B जाएण. ६ K सदुण्य<sup>०</sup>.  
 ७ धुत्तु सिज्जइ.

3. १ MB णिहाउ.

2. 6 b तिवग्गु धर्माधिकामाः. 8 b सुपत्थइं सुपत्थानि. 9 a सुइसुसिरंति श्रेत्रविबरमये.  
 3. 2 a ण व हि व इ हे नवानिधिते. 3 a भ ति ता वि भक्तितोऽपि. 4 b अवणि वाहं अवनिपानां  
 राज्ञाम्. 6 b णि ओउ नियोगः.

पंवमउ दोसु बद्धउ कुमार  
इय दोहा दोसपरंपराई  
तं देव पड्डा तुज्जु सरणु  
किं मारणु किं भणु किं किलेसु  
हो हउं पडिबज्जमि कासिराउ  
जउं पुणुं महु दाहिणु बाहुदंड  
उँवयरइ बप्प संगामकालि

णिउ गियणयरहु रणैरंगवीरु ।  
जं ण वि मुच्चहुं अज्ज वि घराई । 10  
किं दंडु एत्थु सव्वस्सहरणु ।  
तं गिसुणिवि जंपइ मेइणीसु ।  
पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।  
जं सो तं चक्खु ण वल्लुं दंडु ।  
उल्ललियगिद्धखद्धंतमालि । 15

घत्ता—बलगव्नें रोसें तिज्जे जो जणवउ संघट्टइ ॥

सुउ दंडवि सो सई खंडवि जो उप्पहिण पयट्टइ ॥ ३ ॥

4

इय कहिवि तेण पट्टविउ मंति  
णरवइ मणइ पई पिउसमाणु  
महु अवर बिणिण भुयदंड भणइ  
रुसइ सदोसि गुणवति महेइ  
चंगउ किंउ पुत्तहु दप्पसाहु  
तं मज्झु गिरारिउ डइइ अंगु  
ता जयकंपण हरिसियसुधाम  
घरणिहियमंतिअप्पाहिण  
अणवरयणवियजिणवरपपण  
अणहिं दिणि आणंदियजण

गउ सो घोसइ गियपहुहि संति ।  
जय विजय वे वि रिउतिमिरमाणु ।  
तुम्हारउ माणुसु सुट्टु गणइ ।  
को भरहहु केरी लील वहेइ । 5  
जं कण्ण देवि विरइयउ चाहु ।  
णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।  
कुरुवंसणाह वंसाहिराम ।  
दुज्जयचिलायसप्पाहिण ।  
अणहुंजियणरवइसंपपण ।  
आउच्छिउ गियससुरउ जण । 10

घत्ता—तुह गोट्टिहि जिणवैरदिट्ठिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥

अविणम्मं तो वि सकम्मं जीउ गियट्ठिवि णिज्जइ ॥ ४ ॥

२ K रणरंगवीरु, ३ MB तणुकेलेसु, ४ B जसु, ५ MB महु पुणु, ६ MBK वज्जदंडु, ७ M उवरइ,  
4. १ G माणु सुट्टु, २ MB रमइ, ३ MB गमइ, ४ MB पुत्तहु किउ, ५ M ०वरदिट्ठे.

10 a दोहा द्रोहिणः, 15 b गिद्धखद्धंतमालि गृध्रैर्भक्षिताः अन्यश्रेणयः यस्मिन्, 16 संघट्टइ पीडयति,  
4. 5 a दप्पसाहु मानभङ्गः; b देवि दत्ता, 12 अविणम्मं निष्ठुरेण,

## 5

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ  
उम्मुकु सुयावर ससुरएण  
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमएण  
कय जलहिवलय चलवलियणीर  
उट्टिय गहीर भेरीणिणाय  
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु  
णियणियदुसावासहि सउण्ण  
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु

परियाणवि कज्जवियण्णभाउ ।  
ते जंतं हरिखुरखयरएण ।  
चलवलित खलित धयवहु धएण ।  
थिय विसहर भरंभयदलिय धीरं ।  
आकापिय ककुहणिवास णाय । 5  
दियहहिं गंगाणइतीरं पत्तु ।  
हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।  
थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठं गंगहि छणससिरविपडिबिबइ ॥

णं वेलिहि अमरसुहेलिहि कुसुमइ पंडुरतंबइ ॥ ५ ॥

10

## 6

आमेल्लिवि खंधावार तेत्थु  
साकेयहु जाइवि भुवणसारि  
पडिहारं पइसारिउ दवट्टि  
विसहरणरखेरविहियसेव  
ता दिण्ण दिट्ठि णाहं विसाल  
पसरंतपणयरससायरेण  
णं कलियइ णेहमहीरुहासु  
उवविट्ठु तुट्ठु संमाणु कियउ

कइवयभडेहिं सह महिमहत्थु ।  
थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।  
विण्णविउ णवेप्पिणु चक्रवट्ठि ।  
जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव ।  
ससिवियसिय णं कंदोदुमाल । 5  
मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।  
अंगुलियइ दाविउ पीडु तासु ।  
पोरिसु परमुण्णइं संहहि णियउ ।

5. १ B कञ्जु. २ MB add after this: पडिनेहिउ नुहमण्णे वरेण. ३ MB add after this: पडिनेलिउ संदणु संदणेण. ४ M भयभरं; B पयभरं. ५ MB धीर. ६ MBK ककुहणिवांसि. ७ MB °तीर.

6. १ MB सुट्ठु. २ MB सयहि.

5. 3 b गिल्ल आर्द्रा. 6 b ककुहणिवासणा य दिग्गजाः. 9 a महामहु महातेजाः.

6. 1 b महिमहत्थु मक्षां महार्थो महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य. 3 a दवट्टि शीघ्रम्. 5 b कंदोदु नीलोत्पलम्. 7 a णेहमहीरुहासु स्वहस्तसंवर्धितदृक्षस्य कलिकया इव अङ्गुल्या. 8 b सहहि समा-याम्.

णउ जलणहु पासिउ अवर उणहु  
गयणंगणउ णउ अवर गरुउ  
जिणु मेळिवि को तेलोक्कसामि

परमाणुयाउ णउ अवर सणहु ।  
कामाउराउ णउ अवर सरुउ । 10  
पइं मेळिवि को सुहृदग्गामि ।

घत्ता—जो हुँक्खिउ सो परिरेक्खिउ जं दुल्लहु तं लद्धं ॥  
पइं होंतें रणि पहरंतें जय महुं काइं ण सिद्धं ॥ ६ ॥

7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु  
चडियउ वेयडूमहाकरिदि  
चमु चाँलिय पुणु दिण्णउं पयाणु  
जोयवि गंगहि सारसहं लुयलु  
जोयवि गंगहि सुललियतरंग  
जोइवि गंगहि आवैतभवणु  
जोयवि गंगहि पण्णुलकमलु  
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ  
जोइवि गंगहि मोसियहु पंति  
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल

रापं गउ गियसिमिरेहु तुरंतु ।  
णं दिणयर उययमहीहरिदि ।  
पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।  
जोयइ कंतहि थणकलसजुयलु ।  
जोयइ कंतहि तिवलीतरंग । 5  
जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।  
जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।  
जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।  
जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।  
जोयइ कंतहि धम्मेल्ल णलि । 10

घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥  
मंदाइणि जणसुहृदाइणि दीसइ रापं तेही ॥ ७ ॥

३ M दुयिउ. ४ MB पडिरक्खिउ. ५ M दुल्लहु; B दुल्लहु.

7. १ MB °सिविरहु. २ MB चलिय पुणु वि दिण्णउं. ३ MB जोइउ. ४ MB जोइवि. ५ MB आवतु भवणु. ७ B णं सुहृदाइणि.

10 b सरुउ सरोगः

7. 11 वम्महवाहिणि कामनदी. 12 मंदाइणि गङ्गा.

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु	तहि अवसरि भँयहँ धरिउ पीलु ।
सहुं बहुवरेण पर्यलंतदाणु	बहुजलविलंति बोलिजमाणु ।
दँहि पियदुहकयअवलोयणाइ	धप्पाणउं धिचु सुलोयणाइ । 6
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि	हाहारववट्टियगरुयरोलि ।
अवलोहँवि रुइओहामियक्क	हेमंगयपमुह कुमार दुक्क ।
पत्थंतरि थरहरियासणाइ	देवंगवत्थसुइणिवँसणाइ ।
वणदेविइ वारियवइरिणीइ	करि कट्टिउ सुरसरितोरिणीइ ।
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ	उद्धरिउ अहिंसइ णं तिलोउ ।
णिविसँदँ णिउ सुरसरिहि तूइ	हरिसँ णच्चिउ किंकरसमूह ।
रणि वणि जलि जलणि समाइएण	रन्निखज्जइ पुरिसु पुराइएण । 10

घत्ता—वेउळ्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सँयसेविए ॥

हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए ॥ ८ ॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं	दिण्णइं अण्णण्णइं भूसणाइं ।
दिण्णी वियसिय मंदारमाल	सहँ णरवरेण विमइय बाल ।
पमणइ का तुहुं करि केण धरिउ	किं तारियँ सरि सो कवणु तरिउ ।
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि	ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि ।
विंझउरिक्कइ विंझइरि अत्थि	पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि । 5
महएवि पियंगुसिरी सुरूय	हउं विंझसिरी णामेण धूय ।
परियाणावि ताएं तुह पहाउ	सिक्कहुं णीसेसु कलाकलाउ ।

8. १ MB हँरे. २ M पलयंत° ३ MB read this line as ८. ४ MB read this line as 3. ५ MB °णियसणाइ. ६ MB तीरिणीइ. ७ GK णिवसँदँ but gloss निवेषाधः. ८ MB सुयसेविए.

9. १ B अण्णइं. २ MB सहुं. ३ MB तारिउ. ४ MB विंझइरि°.

8. 3 a दहि हदे. 9 a तूइ रोधस्तदम्. 10 b पुराइएण पूर्वाजितेन कर्मणा. 11 सुयसेवि ए श्रीसेविते.

9. 8 b तरिउ तारकः.

हउं तुज्जु समपिय हे वयंसि  
णंदणवणि विउलि वसंततिलह  
असिआउसाहं वंजणविसिट्ठ

संभैरसि ण कीलहुं जं गयासि ।  
हउं दट्ठी सण्णं वेळिणिलह ।  
पहं परम मंत महु पंच सिट्ठ ।

10

घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि पही लद्ध विहूई ॥  
सुरणीडइ गंगाकूडइ गंगादेवय हूई ॥ ९ ॥

10

कीलंती कुच्छियविसहरेण  
जा पहय सरलदलकोमलेण  
जा णासंती अवरहिं णरेहिं  
सा हूई णिसुणहि हलि पियालि  
ओलम्बिखवि जउ वहराणिवंधु  
मयरीइ हवेपिणु कूरिमाइ  
मई जाणिउं आसणकंपणेण  
सा किं हम्मइ खलकालियाइ  
इय चित्तिवि हउं अवयरिय जाम  
मई उत्तारिउ सिंघुर बलेण

सह सरसं णाहें णिम्भरेण ।  
तुह कंतं कररत्तुण्णलेण ।  
मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।  
जलदेवय णामं पत्थु कालि ।  
पवणंदोलणघोलंतविंधु ।  
कुंजर कड्डिउ कुंझाइ ताइ ।  
जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।  
मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।  
वहरिणि गय णासिवि कंहिं वि ताम ।  
तुह हूयउ सुहु सुकियफलेण ।

5

10

घत्ता—मलु तुट्ठइ बुद्धि पयट्ठइ दिस वसुधाराहिं दुब्भइ ॥  
रिउ णासइ णिहि घरि पइसइ धम्मं काइ ण लब्भइ ॥ १० ॥

11

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु  
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिंदु

गय गंगादेवय गियणिवासु ।  
गउ गयउर पत्तउ जयणरिंदु ।

५ MB संभरिसि.

10. १ MB णिसुणहि हूई. २ MB कोवेण.

10 a वंजण विसिट्ठ व्यञ्जनाणि अक्षराणि विशिष्टानि येषु; b परममंत पञ्च परमेष्ठिनः.

10. 8 b मुसुमूरिय मारिता. 4 a पिया लि प्रियसखि. 8 b कालियाइ पापेन कालुष्येण.



बहुकालपरिद्विउ सुहिण जाव  
 बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ  
 अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम  
 हा देवि पहावइ कहि भणंतु  
 हा णाह णाह विलवंतियाहिं  
 सिंचिउ चंदणमीसियजलेण  
 पारावयमिहुणालोयणेण  
 हा रइवर हा रइवर रसंति  
 पारावइ हउं रंविसेण आसि  
 तुहुं रइवर पारावउ ण भंति

सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव ।  
 एकहिं दिणि समउ सुलोयणाइ ।  
 णहि खयरमिहुणु तें दिहु ताव । 6  
 मुच्छिउ पहु जम्मंतैर सरंतु ।  
 कुलउत्तियपणियाइयतियाहिं ।  
 आसासिउ चलचमराणिणेण ।  
 मुच्छिय पिय पणयासायणेण ।  
 उट्टिय पुणरवि सा णीससंति । 10  
 चिरभवकुलउत्ती तुज्जु दासि ।  
 लग्गी पियगीयहि इय भणंति ।

यत्ता--कहिं णिववर कहिं सो रइवर कबडें वल्लहु किजइ ॥

जयपत्तिहि भाणिउं सबत्तिहि कइयवेण जणु खजइ ॥ ११ ॥

## 12

सोमण्णुपुत्तं णायरेण  
 जाणंतेण वि सुहभायणेण  
 पुच्छंतहु कंतहु सुइरु विच्छु  
 इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि  
 वेयडुमहीहरणियडदेसि  
 सोहापुरवरि वयंपालु राउ  
 तहु वंदियपयपंकरुहरेणु  
 अंडइसिरिघरिणिआलिगियंगु  
 हिंडंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु

जणमणसंसयहरणायरेण ।  
 पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण ।  
 वज्जरइ सुलोयण णियचरित्तु ।  
 पुक्खलवइविसइ विलंसगेहि । 5  
 तहिं धण्णयमालवणंतवासि ।  
 देवसिरिदेविसंजणियराउ ।  
 सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु ।  
 रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु ।  
 णवरेकु बालु संपत्तु तेत्थु ।

11. १ MB omit this line. २ MBK जम्मंतैर. ३ MT पणियंगण<sup>०</sup>; B पणयंगण<sup>०</sup>. ४ B मुच्छाविय पणया<sup>०</sup>. ५ MB रइसेण. ६ MB पियगीवहि.

12. १ MK <sup>०</sup>भायरेण. २ MB विसालगेहि. ३ MB णयपालु. ४ MB अडयसिरि.

11. 7b पणियाइयति या हिं अवरुद्धादिपण्यत्तीभिः. 9 b पणयासायणेण स्नेहानुभवेन. 12 b पियगीयहि प्रियस्य ग्रीवायाम्. 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन.

12. 1. a णायरेण चतुरेण. 2 b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिवक्षुषा. 8 a अडइ-सिरि<sup>०</sup> अटवीश्रीः.

सामंतं पुच्छिउ भणु कुमार  
किं किर वियरहि महि सेसवेण

तुहुं कासु पुच्छ सुसरीरमार । 10  
तं वयणु सुणेपिणु भणिउं तेण ।

घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिंसु हकारिउ ॥  
पर मायण गिडुरवायण मंदिराउ णीसारिउ ॥ १२ ॥

## 13

महु बप्प सिंसुत्तणि सुइय माय  
भूयत्थं तापण वि ण दिट्ठु  
ता तेण सत्तिसेणं अगाउ  
पंचहिं वि कहिउ गिदलियकम्म  
रापं वज्जिउ महु मज्जु मंसु  
सामंतं पुणु अणगारवेल  
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु  
सा सिंसु मयच्छि गुरुहार जाय  
परिमुक्कु सिविर संरविउलकूलि  
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि  
कणयसिरि वणिणु सुकेउ कंतु  
उट्टंउट्टं दुम्महु सो जि भणिउ

विणु मायइ डिंभहु कवण छाया ।  
हउं तुम्हारउ पुरवर पइडु ।  
पडिवणु पुच्छ सो सच्चदेउ ।  
अभियमइअणंतमईहि धम्म ।  
राणियइ तेम तं किउ ससंसु । 5  
पालिय जिणरायहु तणिय वेल ।  
तवु अणुपवडुकुल्लाणामु ।  
संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय ।  
सह पइणा वसइ वणंतरालि ।  
जणणहरि मुणालवइ चि णयरि । 10  
भवदेउ पुच्छ णं कलिकयंतु ।  
पुरवरि अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ ।

घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि ॥  
सुहकारिणि सुयमणहारिणि रइवेया रइवाहिणि ॥ १३ ॥

13. १ MB सरविमलकूलि. २ M उट्टंउट्टं.

11, a सेसवेण बाल्ये.

13. 1 b छाया शोभा. 6 a अणगारवेल अनगारवैलायां भोजनवैलाकरत्वम्. 7 b अणुपवडु-  
कल्ला ण श्रुतपक्षे प्रतिपत्यश्चम्यष्टमीचतुर्दशीवौषेमासीषु भूहारपूर्णभाजनानि समयरदृष्टिभ्यो विधिना देयानि; पूर्णेषु पञ्चसु  
वर्षेषु पञ्चकल्याणीप्राप्तिमां प्रतिष्ठाप्य संघभोजनं कर्तव्यमिति; b वेल आज्ञा. 10 a °सोक्ख सयरि सौख्यशत-  
दायके.

## 14

विमलसिरिभाउ वणि विहयसोउ  
जिणयत्त धरिणि णंदणु सुकंतु  
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि  
जइ हउं णावेसमि तावरासु  
णिहविणु ण गिण्हमि अल्लु माम  
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण  
पच्चारिय सँक्सि णिवंशु मुक्कु  
णित्तिंसु तिक्खणित्तिसवंतु  
मंडेवि णिरुद्धु थेरीथडेण  
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुईउ

अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ ।  
सुहउ सँ सोमु सोमु व सुकंतु ।  
वारहवरिसइं मज्जाय करिवि ।  
ता तेरी तँणुरुह देज्जसु वरासँ ।  
गउ धाणिज्जहि सो जाम ताम । 5  
कण्णहि थणयल समएण पुण्ण ।  
सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि डुक्कु ।  
मरु दारविं मारविं वरु भणंति ।  
वहुवरु वि पणट्ठु पँरोहडेण ।  
अवलोयवि दंपइ पर्यंपईउ । 10

यत्ता—कुट्टि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ ॥

सहुं धरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ ॥ १४ ॥

## 15

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं  
तँ रिउणा कह व ण मारियाइं  
चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइं  
पासेयधोयतणुमंडणाइं  
सुरग्गामि पत्तइं बेवि तेत्थु  
दुज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम

दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।  
अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।  
दुमलग्गफट्ठपरिहाणयाइं ।  
अवलोइयमयउलभंडणाइं ।  
आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्यु । 5  
चलपावइयहं कुसुमसरु जेम ।

14. १ MB विहियसेउ. २ MB सुसोम्मु. ३ M सायरासु. ४ M णियतणुरुह. ५ MB परासु.  
६ MB वाणिज्जं. ७ B सखिणिब्बंघमुक्कु. ८ MB मारवि दारवि. ९ MB मंडव. १० MB परोवडेण.  
११ MBK पयगईउ.

15. १ MB दो वि. २ B omits this line.

14. 4 a तावरासु ता + अवरासु अपरस्य. 6 a चक्कवइसंख द्वादश; b समएण कालेन. 8 a  
णित्तिंसु निर्दयः; णित्तिसवंतु खड्गयुक्तः. 9 a थेरीथडेण वृद्धासमूहेन; b परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुण्डे  
छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण. 11 कुट्टि पृष्ठे; हेवाइउ कुपितः.

15. १ 2 b °सीरियाइं विदारितानि. 3 a चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

दिट्टैउ दोहि वि तहिं सत्तिसेणु      आसंघिउ कैलमहिं णं करेणु ।  
 कहिं णासहं आयउ अञ्जु मरणु      लइ तुञ्जु पैंडुइं बे वि सरणु ।  
 णिंसुणिवि वइयरु करमंडलभु      दक्खालिउ तेण किराडु भग्गु ।  
 गउ णांसिवि सहसा मलियमाणु      किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु । 10

घत्ता—र्ण उवेक्खिउ वहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसेणु ॥  
 धणवरिसहुं जगि सणुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसेणु ॥ १५ ॥

16

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु      धैरधीरु धणेसरु सत्थवाहु ।  
 धारिणिक्कंतामुहरायरत्तु      ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु ।  
 संठिउ समीवि विरपवि ठाणु      करिहरिरववहिरियसिहरिसाणु ।  
 कंतारमग्गि चारण पइट्टु      सरणागय पविपंजरेण दिट्टु ।  
 बेण्णि वि ठामणिय महाजसेण      रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण । 5  
 मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु      जोग्गउ भोग्गु भावेण दिण्णु ।  
 णहयलि तुरइं तियसहिं हयाइं      अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं ।

घत्ता—मणि दोयहुं पुण्णु पलोयहुं पंसरियमुहससिरायउ ॥  
 तहु केरउ पणयजणेउ मेरुदत्तु घर आयउ ॥ १६ ॥

17

तहिं तेण तासु जोणवि दाणु      धारिणियइ सहं बद्धउ गियाणु ।  
 आंगामि जग्गि महु होउ पुत्तु      पइउ दुत्थियकल्लामिन्तु ।  
 महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्कु      ता तहिं पत्तउ पंगुलउ पक्कु ।

३ B omits this foot. ४ MB कलहहिं. ५ MB पइट्टा बे वि. ६ MB णिडुणेवि वइरु. ७ MB भज्जिवि. ८ MB गउ पेक्खिउ.

16. १ MB वरवीर. २ MB add after this: रयणहिं सह फुल्लइं वल्लियाइं, वयणाइं मणोज्जइं वोल्लियाइं. ३ MB पसरियमुहुं.

17. १ MB आगग्गि. २ B णिरिक्कु.

9 a वइयरु व्यतिकरः.

16. 1. b धरधीरु पर्वतवद्धीरः.

17. 3 a णिरिक्कु चोरः

पुच्छिउ वणिणा गियमंतिवग्गु  
सँउणि जंपिउ अवँसउण जाय  
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं  
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु  
पवणें भज्जइ माणवहु गत्तु

भणु एयहु किं गइपसरु भग्गु ।  
एयहु भवि तेण पणट्ट पाय । 5  
उदिट्ठु एहु कूरग्गहेहिं ।  
संभें जेडत्तु पित्तेण सोसु ।  
भूयत्थें मंतिं पुणु पुउत्तु ।

घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहुं पयइहिं पउत्तइं ॥

चिन्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥ 10

## 18

इय सँणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं  
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु  
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिद  
बहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल  
अविसिट्ठु दुट्ठु दँप्पिट्ठु कट्ठ  
छिण्णेट्ठु कण्णणासाविहीण  
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील  
जरचीवरधर फरुसुद्धकेस  
जूयार णिसेवियणँयरटिट  
पंगुल पँरघररपिंडावलुद्ध  
णउ देव दँति णउ ते हरंति

पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरोहिं ।  
किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।  
ता भणइ सूरि सुंणि भो वणिद ।  
दालिदिय दूहव मूय लल्ल । 5  
दँट्ठेट्ठु रुट्ठु दुहधट्ठ वटें ।  
दुग्गंधदेह काणीण दीण ।  
पलखंड सौंड चंडाल कील ।  
छोहाणलहय कंकालवेस ।  
पावेण होंति णर कुंड मंड ।  
विवरीय होंति धम्मं विसुद्ध । 10  
देविद वि पुण्णक्खइ मरंति ।

घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं गियमं चित्तु गियत्तिउं ॥

परद्विणइ परवट्टुरमणइ लोयणजुयलु ण रत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणें, ४ M अवसवण, ५ MB सिंभें, ६ MB मंतिं.

18. १ M सणउं सणउं, २ MB भो सुणि, ३ M दुप्पिट्ठु, ४ M दुट्ठेट्ठु, ५ B वट्ठु, ६ MB णयरटिट, ७ MB परहर, ८ M वित्तउं, B वित्तिउं.

5. a सउणि शकुन्नेन, 6 a भेसइणा ज्योतिर्विदा; सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशकैः, 7 a धण्णंतरि वेयः, 10 चिन्भावहं चैतन्यरूपाणाम्.

18. 8 b छोहाणलं कोधानलः, 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्.

19

ता तहि ओलक्खिउ तरणितेउ  
 प पहि पुत्त दे देहि खेउं  
 सुय तुह सुहयंगई कोमलाई  
 हौताई आसि महु सुहयराई  
 सुय तुह सुहलालाबिंदुयाई  
 सिक्खाविओ सि सिसुगइवयाई  
 वीसरियउ सुँय तुहुं कि सताउ  
 इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु  
 पिउणा तिसुंडपविराइपण  
 छिंदेपिणु दढयर मोहवासु  
 सुरगुरुणा गैहिउ रिसित्तु जेम्ब

भूयत्थे कोक्किउ सच्चदेउ ।  
 किं वीसरियउं महु तणउ पाउं ।  
 लगंतइ धूलीधूसराई ।  
 गिछोद्वियपियकंताकराई ।  
 हउं सुयरविं गियउरयलि चुयाई । 5  
 सिद्धंणमाई अक्खरवयाई ।  
 किं बहुपं महु घर जाहुं आउ ।  
 पडियागउ णउ गियजणणेहु ।  
 तवचरणु लइउ गिम्बेइएण ।  
 तहु गुरुहि पासु णहचारणासु । 10  
 सँउणी धण्णंतरिणा वि तेम्ब ।

घत्ता—तं बहुवरु णवपंकयकरु सेट्ठिहि तेण समप्पिउ ॥  
 महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥ १९ ॥

20

गउ वंणिवइ सोहाउरु तुरंतु  
 सो तेण गिरोविउं तासु जाम  
 माउहरि थवेपिणु गिययघरिणि  
 वंदिवि मुणालवइ जिणहराई  
 गुरुहार णारि पैसढलसरीर

पणवेपिणु पडुहि सकंतु कंतु ।  
 एत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।  
 णं विंझलयाहरि पवरकरिणि ।  
 अवलोयवि ससुरय सिरिहराई । 5  
 सासुरयहु णउ सकइ सहार ।

19. १ MB सुयरमि. २ MB सिद्धंतमाई. ३ MB किं उह सुय. ४ MB सहिउ. ५ MB सउणं.  
 20. १ MB वणिवइ. २ MB गिरुविउ. ३ MB °पसढल°.

19. 2 a खेउं आलिङ्गनम्. 5 b सुयरविं स्सरामि. 6 a °वयाई पदानि. 9 a तिं सुं डे त्या दि—  
 प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारप्रविराजितेन.

20. 5 a पसढल° प्रशिथिलम्; b सहार भारसहिता.

सासुरयद्गु गिगाड भडवरिदु  
घरि दिदु राउ इच्छियसिवेण  
णिउ गिययणिवासहु दिण्ण धामु  
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु  
मँउ मेरुयचु पायडियसिरिहि  
पयपालणरिदणिहित्तच्चिउ

आवेपिणु सोहाँपुरि पइदु ।  
वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।  
गोउलु माहिसु फलछेत्तु गाँसु ।  
तवु करिवि मंति गय कं पि सग्गु ।  
तहिं देसि पुंडरिंकिणिपुरिहि । 10  
वणि हूयउ णाम कुवेरमिउ ।

घत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥  
वउं पालिवि दुक्किउ खालिवि हइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

## 21

पुत्तत्थिणि भवभावियणियाण  
गम्मेसरि सयलकलापवीण  
भवदेवै पावै पसुवहेण  
घरि अट्टझाणै मरिवि तेत्थु  
पारावयजुयलु मणोहिरामु  
तं धेप्पइ खुज्जयवावणेहिं  
णच्चइ हक्कारिउ सहु देइ  
पुच्छिउ पडुणा कहिं पाव जंति  
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु  
तहिं पक्खिणि हउं रइसेण णाम  
अच्छहुं कीलंतैं बे वि जाम

सा एकतीसधरिणिहिं पहाण ।  
धयरट्टगमण सहेण वीण ।  
तं वहुवरु दडुउ हुयवहेण ।  
जायउ पुरैसेट्ठिणिवासि पत्थु ।  
गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु । 5  
तं संभासिज्जइ परियणेहिं ।  
पट्टवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।  
धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।  
उद्धाइ ताइ सम्भापवग्गु ।  
तुहुं रइवरु पक्खि सँणेहकाम । 10  
सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

घत्ता—तँ वणिणा वणिसिरँमणिणा धणवइयहिं सुउ जायउ ॥

सोहग्गे जणमणलग्गे रूवै णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि. ५ MB विण्णु धाउ. ६ MB गाउ. ७ MB मुउ. ८ MB पयडिय.  
९ MB वउ.

21. १ MB पुत्तत्थि वि. २ MB पुरि सेट्ठि. ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं. ४ MB सिणेह.  
५ MB कीलंत बे वि. ६ M तं. ७ MB ०सिरिमणिणा.

21. 2 b धयरट्टगमण ईसगमना.

## 22

णं गियकुलहरकमलसिरिकंतु  
सुमरेपिणु धम्माणंदजोउ  
वत्थंगु तियसतर भूसणंगु  
पवहइ पुंडुच्छरसप्पवाहु  
णिच्चं विय पिच्चइ सालिछेत्तु  
सयमेव रणइ वीणा सवेणु  
इय दिव्वभोयभुंजणखणालु  
पियसेणु तेण सहयर पउत्तु  
इच्छइ भणु तेरउ परममित्तु  
एकहिं दिणि गय उज्जाणमज्झि  
त्रैउ लइयउ णामे एक्कपत्ति

णामे सो भणिउ कुबेरकंतु ।  
ते मंतिदेव तहु दैति भोउ ।  
महरंगु ठुरिय उब्भोयणंगु ।  
मज्जणइ पवरिसइ वारिवाहु ।  
अवर वि सुइसुसिर सुहेल्लिमेत्तु । 5  
घरि चित्तिउ दुब्भइ कामघेणु ।  
णवजोव्वणु पिउणा दिट्ठु बालु ।  
किं बहुणं किं पक्कु जि कलत्तु ।  
आहासइ सो णवणलिणणेत्तु ।  
दिट्ठउ मुणि दोहिं वि लवल्लिगुज्झि । 10  
को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि छुहपंकियघरि वणि वइसमणसमाणउ ॥  
धणवइयहि बंधवु पयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥ २२ ॥

## 23

तहु केरी णं अमिपण सित्त  
तहि परजम्मंतरि बद्धपणय  
णं सुरयसोक्खमाणिकखाणि  
णीलालिवलयसंकासकेस  
णामे पियदत्त पसण्णदिट्ठि  
अण्णहिं दिणि कित्तिमकुसुममाल

गेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।  
इइ वणलच्छि मरिवि तणय ।  
कलहंसगमण कलयंठिवाणि ।  
णं कामभल्लि पच्छणवेस । 5  
गुण्णय णं वम्महचावलट्ठि ।  
कय ताइ णाई मय्यणसत्थसाल ।

22. १ MB दैठ. २ MB ठुरीवउ भोयणंगु. ३ MB दोहिं वि मुणि. ४ MB वउ. ५ MBK वइसवण°.

23. १ MB जम्मंतरवद्ध°. २ MB कलहंसिगमण. ३ MB गुणणयणइ. ४ MB मयणत्थमाल; K मयणवत्थसाल and gloss अल्ल; G in gloss मदनशालशाला.

22. ३ b उ उब्भोय णं शु उल्लुट्ठभोजनाइ. 6 a सवेणु वंशवायेन सहिता. 10 b लवल्लिगुज्झि चन्दनलतागृहमध्ये. 12 वइसमण° कुबेरः.

23. 5 b गुणणय गुणनता.



गय लेप्पिणु ससुरयघर वयंसि  
तं पेच्छिवि विभिउ इवमतणउ  
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ

पियकारिणि गइजियरायहंसि ।  
एउं<sup>५</sup> विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।  
णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियँवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुकिँउ ॥

10

मणु लेंतें तेण जलतें झत्ति कुमार झँलुकिउ ॥ २३ ॥

## 24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु  
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज  
भायणइं दुतीस संमीरियाइं  
तहिं एकु पंचमाणिकवंतु  
वणिउत्तियाउ संप्राइयाउ  
सव्वहं वणिणाहें भूसणाइं  
गेहँह पभणिवि पेरिभावियाइं  
ता कणयवत्त बहुभोलु थइउ  
सरयणु पृथँदत्तहि करि विलग्गु  
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं  
आलद्धउ णँउ तहिं चरुयवत्तु

वणिणा पारद्ध विवाहु तासु ।  
णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।  
णिरु चोक्खभक्खपेड्डिरियाइं ।  
जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।  
वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ । 5  
दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।  
चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।  
एक्केकँइ एक्केकउ जि लइउ ।  
को लंघइ किर भविथँव्वमग्गु ।  
गुणवइजसवइणामालियाहिं । 10  
हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।

घत्ता—मुग्गरोलइ गिरिकुहरालइ वँर पइसिवि तँउं किज्जइ ॥

णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ १४ ॥

५ MB °तणुउ, ६ MB एयहुं, ७ MB पियदत्तइ, ८ MB संधुक्रियउ, ९ MB जेण, १० MB त्तुलुक्रियउं.

24. १ B समादियाइं, २ MB परिपूरियाइं, ३ MB संपादयाउ, ४ B गेहँ पभणिवि, ५ K पमा-  
वियाइं, ६ MB एक्केकउ एक्केकहिं, ७ MB पियदत्तहि, ८ MB भविथँव्व मग्गु, ९ MB ण वि, १० MB  
मिग°, ११ MB वणि, १२ MB तउ.

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया, 11 झ लु किउ संतापितः.

24. 3 a समीरियाइं प्रसारितानि, 10 a सुहालियाहिं सुखवतीभिः, 11 a चरुयवत्तु  
चरुकपात्रम्.

## 25

रौयहरणियडि जिणवरणिवासि  
तहुं लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं  
वणितणयहु सुयणुच्छाहराहु  
वर्यवालु मरेप्पिणु लोयवालु  
देवसिरिदेवि मव्हणगईहि  
गयजम्मवरिणि सा दिण्ण तासु  
संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु  
देवीउ कणयमालाइयाउ  
जे परियण ते पव्वइय सव्व  
एकु जि वुड्डुउ स कुवेरमिउ

अमियमइअणंतमईहि पासि ।  
एत्तहि वि पडहमंगलवुणीहिं ।  
भियदत्तइ सहुं विरइउ विवाहु ।  
पयपालहु सुउं ह्यउ गुणालु ।  
वसुमइ सुय हई धणवईहि । 5  
पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।  
णरणाहें लइयउ मुणिवरिउ ।  
पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।  
कोमलमइ थिय ईरि वरि सगव्व ।  
सो भावइ तरुणहं णाईं सहु । 10

घत्ता—चवलैमइ भासिउ कुमइं हसहुं ण खेलेहुं लव्वमइ ॥  
अपसत्थउ भेलावत्थउ माणुसु पम जि खुव्वमइ ॥ २५ ॥

## 26

जो णिव तुह ताए णिहिउ मंति  
किं विहडियकरण णियंति कल्लु  
मावउ अम्हहं भिउंउंतु दिट्ठि  
राउ वि कुमार मंति वि कुमार  
सुहिदिट्ठपरंपरु बहु सुयहु  
अविपिक्कवुद्धि कीलणसहाउ

तहु दंसंणेण अम्हहुं ण संति ।  
हो थेरहं कम्मु ण किं पि दिज्जु ।  
अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।  
दीणं वि होंति जोव्वणि वियार । 5  
वारिउ पड्डुणा घर पंतु वुड्डु ।  
सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।

25. १ MB रायहरे णियडं. २ MB तउ लइउ तेहिं. ३ MB पियदत्तइ. ४ MB णयवालु.  
५ MB सिउ. ६ MB णियवरि. ७ MB चवलमइहिं. ८ MB कुमइहिं. ९ MB खेलेहुं. १० MBT  
हेलावत्थउ.

26. १ MB दंसणि अम्हहं णाहिं संति. २ MB भिउंउत्त. ३ MBK दीणहु.

25. 4 a वय वालु प्रजापालः. 5 a म ल्ह ण ग ईहि मदगमनायाः. 12 भे ला वत्थउ अतिवृद्धावत्थः.

26. 4 b वियार सविकाराः. 6 a अ वि पि कं अप्रवीणा.

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइदु  
 पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण  
 बुहसिट्ठविसिट्ठमईचुपण  
 वावीयलि अरुइ मणि णिहिचु  
 ता तेहिं मिलिवि अंसंसपहिं  
 चिक्खल्लंतल्ललोणविलोल  
 माणिक्कु ण दिट्ठउ तेहिं केम  
 अण्णाणकिलेसं णत्थि सिद्धि

घत्ता—गरुगावइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥

15

वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणं सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

## 27

मंडलियमउडरइइयराइ  
 जो मह सिरु पइणइ णियपपण  
 ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण  
 तुह जेण दिण्णु सिरि चरणघाउ  
 तं वयणु सुणेपिणु विमलवंसु  
 महु सिरचूडामणि मयणसरणु  
 अविवेउ महंतउ जासु गेहि  
 संसिद्धसमगातिवग्गलिणु  
 इय चितिवि णियकुलकमलमिचु  
 आउच्छिउ तं णीरारुणचु  
 तं णिसुणिवि मामं बुचु एम

अत्थाणि णिसण्णं सुप्पहाइ ।  
 तहु किं बुत्तउं णरवइणपण ।  
 तेहिं वि पउत्तु सफरसरवेण ।  
 खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।  
 संठिउ हेट्ठामुह रायहंसु । 5  
 खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।  
 दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहि\* ।  
 भल्लारउ भुवणि वियडुसंगु ।  
 कोक्काविउ तेण कुबेरमिचु ।  
 अवैरु वि जं सीसि पयग्गु धिचु । 10  
 पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

\* MB किं. ५ MB वावीजलि. ७ B असेसएहिं. ७ MB चिक्खल्ल. ८ MB कयलील. ९ MB गुरु.

27. १ MB omits this line. २ MB फरुसं मणेण. ३ MB दिण्णु जेण. ४ B गेहि. ५ MB अवरु वि सीसं पयलगु धिचु.

9 a बुहेत्या दि— बुधैयो शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिव्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहितः. 10 a वावीयलि वापीतले,  
 11 a अंसंस ए हिं संशयरहितैः.

27. 2 b ण रवंइण एण नीतिशास्त्रे. 13 वणु जलम्.

वत्ता—रसगिद्धै र्घंसिउ गिद्धै तीररुक्मि मणि अच्छइ ॥

तहु छायाइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पेच्छइ ॥ २७ ॥

## 28

गुरुणारीडिभयचरणु पडुहि  
तुह पुणु जाणवि रोसंकियाइ  
तं पुज्जिजई वरणेउरेण  
धणवइइ पइहि कुरुलोलिणीलि  
साहंतु व जिणधम्मोवपसु  
तं पेच्छवि भवु कुवेरमिच  
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहि  
जाया मरेवि मेहूरहासि  
विउलमैइ णाम चारणमुणिंदु  
सिसु चितिवि पुच्छिउ तर्हु दुगेज्जु  
दाहिणपंचंगुलियउ करणि  
गउ मुणिवरु काले पंच पुत्त  
जो सच्चदेउ मुउं सो जि पउ

सिरिलग्गइ अण्ण ण सउलविहुहि ।

सिरि बल्लिउ होही पउ पियाइ ।

ता संशुउ सेट्ठि महीसरेण ।

दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।

जरदासिइ दूंसिउ दइयकेसु । 5

अवरु वि पव्वइउ समुददत्तु ।

दूया सुसीस सुविसुद्धमइहि ।

लोक्यंतियं सुर बंभंतवासि ।

पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।

कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्जु । 10

वामइ कणिट्ठ दाविवि णहग्गि ।

लहुपं कुवेरदइएण सुत्त ।

संभूउ पुणु वि पिउ वद्धणेहु ।

वत्ता—कह गिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥

साहंती पइई फुरंती कुंदपुष्पदंती सइ ॥ २८ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसमुणालंकारे महाकइपुष्पक्यंतविरहइ

महाभव्वभरहाणुमणिणं महाकवे जयमहारायसुलोयणाभव-

संभरणं णाम एकूणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

६ MB वित्तउ.

28. १ B पुज्जइ. २ MB दुसीसु विसुद्ध. ३ MB हिमहारहासि. ४ MB लोक्यंतिय ते. ५ MB विमलमइ. ६ MB तउ. ७ MB सुउ. ८ MB पइय.

28. 1 b विहुहि °वन्दस्व. 4 a कुरुलो लि° कुन्तलभेणी. 8 a मेहारहासि मेधया अहस्से. 15 पइइ प्रभया; सइ सती.

XXX

अमियमइअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥  
जिणवइगुणवइवरजसवइहिं वंपुवग्गु संबोहिउ ॥ भुवकं ॥

I

लोयवालु सा वसुमइ राणी  
वारहविहदिक्खाइ समग्गइं  
खंतिहिं कहियउं धम्म गिरंतैरु  
णिच्चुल्लवमंगलणिग्घोसहु  
अरियामग्गे णिग्गयरायउ  
पृयदत्तावरइत्तं णवियउ  
तां तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ  
दोहिं विमुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं  
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ  
सलिले सिंचिउ थियउ सइत्तउ  
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि  
सरइ सैकौति पुण्णससिकंतं

पउरंदरियहिं तृयहिं समणी ।  
विणिण वि सावयवइ दिहु लग्गइं ।  
अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु । 5  
ताम कुवेरकंतवणिवासहु ।  
जंघाचारणजुयलउं आयउं ।  
लुहु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।  
पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।  
धम्मबुद्धि होउ त्ति भणंतहं । 10  
महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।  
अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।  
कहिं रइवेय महारी पणइणि ।  
किह जीवमि णिम्मुक सुकंतं ।

घत्ता—सोहापुरि बहुवरु पउ चिरु एवहिं दंपइ णहयर ॥

15

लोलत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिता जणियजणमपाणन्दा ।  
सिरिक्खुमदसणकइसुहणिवसिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवायैरनिन्यै: etc here for which see note on Samdhi XXIX.

1. १ MB तियहिं, २ M सवाणी, ३ MBT 'सिक्खाइ, ४ MB कहिउ, ५ MB णेरंतैरु, ६ MB पियदत्ता, ७ MB ता तं पक्खिमिहुणु, ८ MB भणइ, ९ MB सुकंति, T सकुंति.

1. 4 a बारह विह दिक्खाइ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया, 9 b पयरउ पवरजः, 12 a सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम्, 13 a भरइ स्मरति, 14 स कौंति पक्षिणी, 16 अलाहु अलाभोऽन्तरायः.

## 2

वसुमईह णवपंकयणेत्तइ  
 चंचुइ पट्टियेम्मि संपिहियइं  
 णहयरियहि सर्कतु जाणाविउ  
 मा विहडेवि चरह म विरप्पह  
 वयणं तेण ताइं पुंणु रत्तइं  
 हण्यगिरिसमीवि सुरवरगिरि  
 ते तहिं जंघाचारण जइवर  
 अमयमईहि अणंतमईहि वि  
 पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा

विणिण वि पुच्छियाइं प्रियदंसइ ।  
 दोहिं मि गयभवणामइं लिहियइं ।  
 रइवेयागमु खयरहु दाविउ ।  
 विणिण वि सुहुं भुंजह कंदप्पह ।  
 कणु चुणति खेलंति पसंत्तइं । 5  
 करिदंसणविरेद्धरंजियहरि ।  
 जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।  
 जायवि संजईहिं बिहिं तीहिं वि ।  
 पारावयसंबंधु भंडारा ।

घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥ 10  
 मुणि अक्खइ रक्खइ किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥ २ ॥

## 3

जिह वइसउलि पइयइं बालइं  
 जिह जायउ विवाहु जिह णट्टइं  
 जिह खलु मंगलम्मु णिब्भच्छिउ  
 पालिउं दैउं जिह सज्जनसत्थे  
 जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु  
 इयं जिह जिह साहिउ मुणिणाहें  
 तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु  
 सुहसंजोयहु सिढिलियसोयहु

रइवेयासुकंतणामालइं ।  
 जिह सामंतहु सरणु पइट्टइं ।  
 कण्णकहुयवयणेहिं दुगुंछिउ ।  
 जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थे । 5  
 जिह बहुवर पत्तउ पम्बिखत्तणु ।  
 मयणहरिणविदंसणवाहें ।  
 लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।  
 साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ हूयउ विर्यसियवत्तइ ॥ 10  
 गुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ दैउं मृगणेत्तइ ॥ ३ ॥

2. १ MB प्रियदत्तइ. २ MB पट्टियेम्मि. ३ MB पडिवत्तइ. ४ MB पसत्तइ. ५ MB °विरुद्धे रंजिय°.  
 3. १ MB वउ. २ MB इह. ३ MB विहसिय°. ४ MB वउ मिय°.

2. 5 b पसत्तइं प्रसक्तौ अन्योन्यरक्तौ.

3. 1 a वइसउ लि वैद्यकुले. 6 b °वाहें व्याघ्रेण, °व्याघ्रेण. 9 वियसियवत्तइ विकसितवदनया,

4

अज्जिय हूई सम्माइट्टिणि  
अवर कुवेरसेण रायाणी  
किकरेण केण वि ण पलोइउ  
गयउ कवोयजुयलु सारामहु  
कणु चंचुइ कडुइ णयगीवइ  
सरहुंदुरसेढामिसभोयणु  
असुहरतिकखकुडिलणहपंजरु  
वइविवराउ झत्ति णसैरियउ  
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ  
चिरभववइरें दसनकरालें

घरु मेलेपिणु धणवइसेट्टिणि ।  
दिक्ख लेवि थिय सुट्टु अदीणी ।  
तं विहिविहियविहाणं चोइउ ।  
कहिं मि भंमंतु पुरंतिमगामहुं ।  
जाम चरइ किर वइसामीवइ । 5  
णवमहुविंदु व पिंगललोयणु ।  
उट्टेइउ तहिं जायउ मंजर ।  
तेण कंठि पारावउ लईयउ ।  
णियपियपरिहवि णौरि वि कुप्पइ ।  
कसैमसत्ति खगु खजु विरालें । 10

घत्ता—मुइ बल्लहि दुहविदाणियप विहि बलवंतु पउत्तउ ॥

अप्पउ तणु मणिणवि रिंछियैए विसदेसहु मुहि चित्तउ ॥ ४ ॥

5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयइइ  
पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि  
रययसेलि खगदाहिणसेदिहि  
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु  
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु  
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेदिहि  
खड्डियैउ तहिं राणउ विज्जाहरु  
सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि

णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।  
जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।  
उंसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।  
तेए णं पच्चक्खु दिणेसरु ।  
तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु । 5  
गउरीविसयभोयपुररुदिहि ।  
मरुरहु माहवियहि देविहि वरु ।  
ताहं विहिं मि हूई णं जक्खिणि ।

4. १ K भवंतु, २ MB परंतिम°, ३ MB णीहरियउ, ४ K धरियउ, ५ K णारी कुप्पइ, ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु, ७ T रिंछियैए.

5. १ MB उंसिरिहि, २ MBK सोक्ख°, ३ K चडिउ.

4. 5 a णयगीवइ नतग्रीवया; b वइ° वृत्तिः. 10 b कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे. 12 रिंछि-  
यए पक्षिण्या.

5. 5 a रइवरु कामः.

धूय पसिद्ध पहावइ नामें  
गयउ कहिं वि गंदणवणकीलइ  
तेण हिरणवम्मणामालें  
पडि जं वित्तउ जम्मकहाणउं

घत्ता—कई पिउणा पवरसयंवरण ताइ मयच्छिइ लम्बिखउ

पारावयजुयलउ गियगियडे संचरंतु सुणिरिक्खिउ ॥ ५ ॥

रुवें सलहिज्जिइ सा कामें ।

दिट्ठु कवोयमिड्डुणु तहिं लीलइ । 10

परभउ सुमरिवि लिहियउ बालें ।

पंक्खिरूपविरहयसंमाणउं ।

6

गियमवु बुज्झिवि गिवडिय महियलि  
रइसेणाचरि मज्झें खामिय  
कंसुइणा गरवइ विण्णवियउ  
होउ सयंवरेण किं किज्जइ  
दइयइ चित्तपट्टु पट्ठाधिउ  
मंदरि जायवि गरणु मंडिउ  
सुरगिरि परियंचिवि उद्धाइय  
लइयउ तं जाव सुह ण पावइ  
जाम जणणु हरिसैं कंटइयउ  
खेयरणियरु जाव छुड जित्तउ

घत्ता—पुणु माल पवल्लिय मंदरहो विण्ण वि सह धावतइ ॥

दिट्ठइं फणिकिंणरससिरविहिं तुरिउं पयाहिण देतइ ॥ ६ ॥

सिंचिय पाणिण सिरि उरयलि ।

सा रइवरविरहें आयामिय ।

दुहियहि देट्ठु दुरोएं खवियउ ।

आउ आउ खगवइ जाइज्जइ ।

सो वि ताइ गियहियवइ भाविउ । 5

कुल्लदामु जं सइं तेहि छड्डिउ ।

खयरहुं अग्गइ कुंयैरि पराइय ।

पुत्तिहि केरी गइ को पावइ ।

मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ ।

ताव हिरणवम्मु तहिं पत्तउ । 10

7

रइवरवरु रइरहसैं बोइउ  
तेण पडिच्छिय मंहिहि पडंती  
दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि

बुलइ माल जहिं तहिं संपाइउ ।

णहयलि खगकौमिणि व णडंती ।

णं कामें संधिय सरधोरणि ।

४ MB णं. ५ MB पक्खिणिभवविरहयसंमाणउं; K पक्खिरुपु विरहय°. ६ MB कय.

6. १ MB मंदर. २ MB जं तहि सइं छड्डिउ. ३ MB कुमरि. ४ MB को गइ.

7. १ MB संपाविउ. २ MB खगकौमिणि गिवडंती.

6. ३ b दुरोएं दुष्टोणेण.

7. ३ a कुसुमावलि पुष्पमाला.



दोहिं वि धरियइं चण्णिवि चित्तइ  
 दोहिं मि दिण्णउं दलियफणिंदहु  
 गँउ वरु तहिं जोयवि मणहारिणि  
 पइउ ताइ तासु वैक्खालिउ  
 जोइवि बुज्झिय पन्निक्कहाणी  
 ससयण पिउहरु पत्त पहावइ  
 कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं  
 दोहिं वि कंताकतहुं पयहुं

घोलंतइं विचलंतइं णेत्तइं ।  
 दढलज्जंकुसु मयणगइंदहु । 5  
 तावंतरि संठिय पियकारिणि ।  
 तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।  
 एत्तहिं सा खगतरुणि पहाणी ।  
 जो णाइंदहु वण्णहुं णावइ ।  
 रविगँइमाखयरहखगरायहिं । 10  
 पयलियपेवंबंधपासेयहुं ।

ग्रन्था—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्ठिवियारहं ॥

दंसणसंभासणगुणविणयदाणदिण्णसिगारहं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि वे वि रमंतइं  
 हल्लियघंटाटंकारालउ  
 मोहँजालतरुजालहुयासहं  
 मुणि वम्महवम्मोहवियारणु  
 पुच्छिउ णियय तेहिं जम्मंतरु  
 वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं  
 पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ  
 जो भवदेववणु चिरु वणिवरु  
 पुब्बणामु सिरिवम्म पयासिउ  
 गयणगमणु तवतावँ सिद्धउ  
 पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु

पत्तइं गयणुच्छंणि चंडंतइं ।  
 सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।  
 तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेशहं ।  
 पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।  
 रिसिणा कहियउ गयउ कहंतरु । 5  
 जाइं ताइं एवहं सुहँकम्महं ।  
 भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।  
 इह उप्पणउ सो हउं णहयरु ।  
 रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।  
 तइयउ णाणु विसेसँ लद्धउ । 10  
 मुक्कउ तुक्कियदुक्खाविहाणहु ।

३ G विघई. ४ MB गउ वरु जोइवि बहु मणहारिणि. ५ MB दिक्खालिउ. ६ MB रविगय. ७ MBK 'पेम्मबंध'.

8. १ MB चरंतइ. २ MB मोहमहातरुजाल. ३ MB तेहिं णियय. ४ K चुकम्महं.

11 b पय लिय पेवंबंध पा सेयहुं प्रगलितः प्रेमबन्धेन प्रखेदः ययोः.

8. 1 b गयणु च्छंणि आकाशमध्ये. 10 b तइयउ णाणु अवविज्ञानम्. 11 a रइसेणहु रति-  
 वेणस्य भट्टारकस्य.

वत्ता—गुरुवयणकुठारे तिकम्बण भवतरुवर मइं छिण्णउ ॥  
विघंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसावलि दिण्णउ ॥ ८ ॥

9

सुहमइ वड्डिय रमणिहि रमणहु  
मेहकूड जोइवि णिविण्णउ  
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्ठिउ  
थिउ णिम्मउ सत्तंगपयारइ  
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु  
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं  
संप्पसरोवरचिंत्तु णिप्पिणु  
आयइं णियपुरवर हक्कारिउ ।  
पईं ह्वउ रिसिकुवलयचंदहु  
सहइ हिरणवम्मु चारणमुणि  
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय  
सव्वइं भव्वइं कम्मविण्णइं

तं आयणिणवि गयइं सभवणहु ।  
मारुयरहु पव्वज्ज पवणणउ ।  
दिणयरगइ वि जइत्ताणि संठिउ ।  
रज्जि हिरणवम्मु तहु केरइ ।  
मणहरसुयहु दिण्ण चित्तरहहु । 5  
धण्णयमालवणंतरे भमियइं ।  
विणिण वि पुवज्जम्मु जैणेप्पिणु ।  
रज्जि सुवणवम्मु वइसारिउ ।  
चरणमूलि सिरिपालमुणिदहु ।  
उण्णइं पावइ गुणगइयउ गुणि । 10  
करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।  
ताइं पुंडरिक्किणि अवइण्णइं ।

वत्ता—रिसि थिउ पुरबाहिरि पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥  
जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पृथंदत्तहि घर आयउ ॥ ९ ॥

10

वणिणिइ विणयपणामे रुद्धउ  
पुणु आसणु अणुंरुत्तु धिवेप्पिणु  
किं ण विमाणिउं पइं पइजोव्वणु  
हियपरिमियसुमहुअसिणियइ

तं भुंजाविउ भोत्तु सुणिद्धउ ।  
ताइ पहावइ भाणिय णवेप्पिणु ।  
किं तारुण्णइ संसेविउ वणु ।  
तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBK °कुठारे.

9. १ MB दिण्णु. २ MB सच्छु सरो°; T सच्छु and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुण्येन रक्षितस्तस्येदं नाम. ३ MB सुयरोप्पिणु. ४ B सहं. ५ MB कम्मसुत्तिणइ. ६ MB पुरबाहिर. ७ MB पियदत्तहि.

10. १ MB भुंजाविवि. २ MB अणुरत्तु.

9. 7 क स प्य स रो व र चिं भु यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्तिषेणेन रक्षितौ तस्य नामेदम्.

10. 3 a प इ जो व्व णु पतियौवनम्.

पत्यु जि सज्जनयणाणंदिरि  
अणहिं भवि होंताइं कवोयइं  
रइसेणाचररइवरणामइं  
प्राणिदयाहलेण मणुयत्तणु  
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ  
सेट्ठिणि भणइ गिणुणि संजमधरि

अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि । 5  
किं ण वियाणहि विहियविणोयइं ।  
कंठसइउकोइयकामइं ।  
पत्तउ दोहिं मि तें णियमिउं मणु ।  
कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।  
पियकह जिणपयपंकयमहुयरि । 10

घत्ता—एकहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहि केरउ ॥

मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥ १० ॥

## II

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ  
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु  
णंदणवणि चलंतहिंतालइ  
वेल्लीहरि पसुनु विज्जाहरु  
णाहु वि तहिं जि भंमंतु पराइउ  
कोपं वंझं हंसं ईरिउ  
हूयउ गाहु विहिं वि मिच्चत्तणु  
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु  
उत्तउं कंतइ पत्यु जि अच्छहुं  
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ

णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।  
भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।  
तालितालतालदूरपियारइ ।  
पायंगुट्टइ लग्गउ विसहरु ।  
धाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ । 5  
गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।  
गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।  
अवलोर्यंतिइ बहुणायरजणु ।  
कोइं लोउ रमंतु णियच्छहुं ।  
महु पिययमु जोइउ गंधारिइ । 10

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहपण तहि केरउ णिहलियउं ॥

वरकुंजरचरणें चप्पियउं दिसिहिं जलुं वुच्छलियउं ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°.

11. १ K भवंतु, २ M चप्पिय, ३ MB जलु व उच्छलियउं.

11 °वइ णि हि व्रतिन्याः.

11. ३ b °ताद्धर° कपित्यम्, 12 जलु वुच्छलियउं जलमिव उच्छलितम्.

## 12

मणि पवियंभिइ जलयरचिंधइ  
कवणु एहु पिययंम किं किं णर  
तेण पउत्तउ मिच्चु महारउ  
एण मंतु गरलंतु विहाविउ  
वे वि समुब्भियचीणवियाणइं  
किं रक्खमि तिकखाइं णहग्गइं  
गय पिययम मिच्चुत्तरु संघिवि  
हा हा उरयएण हउं डंकिय  
कंतै ओसहसयइं णिउत्तइं  
महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ  
गउ तेत्तहि तुरिणं पंजलियरु

आउच्छिउ गियवइ पेम्मंधइ ।  
अक्खु जक्ख किं किंणर विसहर ।  
वणिउ कुवेरकंतु गुणसारउ ।  
फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।  
कंकेल्लीतरुतलि आसीणइं । 5  
फुल्लइं चीणमि पिय तुह जोगाइ ।  
कंटएण करपल्लउ विघिवि ।  
णिवडिय मिच्छाविसवेयंकिय ।  
पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।  
कंतु विओय सोय संप्राविउ । 10  
जहिं अच्छइ उवइट्टउ महु वरु ।

यत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विस्सु सव्वंगइं तावइ ॥  
फणिदट्ठी धरणि महुं तणिय तुह मंतै धुवु जीवइ ॥ १२ ॥

## 13

मित्तं मित्तहु गियमणु ढोइउ  
पइणा गैरल्लिगु णो लक्खिउं  
मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि  
एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं  
मणइ ण खँजमि सविसभुयंगं

जायवि मुद्धहि वर्यणु पलोइउ ।  
खयरं मउल्लिंणयणं अक्खिउं ।  
हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि ।  
सुंदरि झत्ति वइट्ठी तावहिं ।  
हउं खट्ठी पइं भुत्तभुयंगं । 5

12. १ MB पेम्मंधइ. २ MB किं पिययम. ३ MB अक्खु सक्खु किं. ४ MB समुब्भियचीणवियाणइं;  
G समुब्भियचीणवियाणइं, but gloss समुद्धतचीनाम्बरध्वजो वितानो वा. ५ MB संप्राविउ. ६ MB भुउ.

13. १ MB देहु. २ MB गरुल°. ३ MB मउल्लियवयणं. ४ MB सव्वोसहि. ५ MB खज्जउं.

12. 1 a जलयरचिंधइ मकरध्वजे. 2 b अक्खु कथय. 5 a समुब्भियचीणवियाणइं समुद्धतचीनाम्बरवितानौ.

जइ मम्मणमंतें तणु अंचहिः  
तो हउं मुच्चमि बिरहविसोहें  
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ  
वम्महसरहं कँयाइ ण भिज्जमि  
परकुलउत्ती जणणिसमाणी

जई रइरसजलधारइ सिंचहि ।  
ता पडिजंपिउ पसमियमोहें ।  
अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं ।  
संदु पुरंधिहि हउं ण रमिज्जमि ।  
तुहुं पुणु जाँय विहिणि मित्ताणी । 10

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥  
गंधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरंतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

## 14

तहु पुणु संहुं महिलइ वियरंतहु  
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि  
पुच्छिउ धम्मु रिसिदै भासिउ  
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा  
परयारिउ लोपं णिदिज्जइ  
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु  
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ  
जइ वि लोउ णियकज्जु पँवुक्खइ  
मत्थयमुंडणु बिह्णिवंधणु  
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ

उप्पलखेडहु बहि णहि जंतहु ।  
वंदिउ भावें वोहिं वि तक्खणि ।  
सार्वयमग्गु विसेसैं देसिउ ।  
तहिं परयारु णिवारिउ जइणा ।  
असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ । 5  
यड्डइ कामडाहु पसरइ मणु ।  
परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ ।  
संकालुहि तं ताँसु जि दुक्खइ ।  
कुखरारोहणु णासाखंडणु ।  
मुउ पुणु ईहउ दुट्ठु णउंसउ । 10

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियण गंधारिहि मैणु तप्पइ ॥  
हा हा मइं दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइं सिंचहि. ७ MB ण काइं वि. ८ MB माय बहिणि.

14. १ MB महिलहि संहुं. २ MB सावयधम्म. ३ MB दंसिउ. ४ MB पवुकइ; T बुक्कइ  
ब्रवीति. ५ MB तासु बुहुक्कइ. ६ M दसउ. ७ MB तणु.

13. 8 a हरि वा रुणि° इन्द्रवारुणीफलम्. 10 b मित्ताणी मित्रभायां.

14. 1 b ब हि बाह्ये. 8 a पवुक्खइ पर्यालोचयति. 10 b णउंसउ नपुंसकः.

15

मणिवि मुणिवरु बे वि पयट्टइ  
कंतइ गुरुवयणइ चितंतिइ  
कंतहु सइ अहिमाणैविणासउ  
हउं पाविट्टं तुहारी दोही  
मुइ मुइ जामि देव पाँवजहि  
मणु जं पइं पररइमलमइल्लिउ  
एवहिं तुहुं महुं सुइँ महासइ  
जीवदयाघयधारासित्तै

णहयलणिहियपायकंदोइइ ।  
णारयविवरवडण संकंतिइ ।  
कहिउ कुवेरकंतअहिलासउ ।  
मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।  
उत्तरु दइपं दिण्णु समज्जइ ।  
तं आलोयणजलपक्खालिउ ।  
आउ जाहुं ता बहु पडिभासइ ।  
सुहपरिणामसमीरपलित्तै ।

5

घत्ता—घरमोहवहलधूमुज्झिपण जइ तवजलणें डज्झमि ॥

तां तत्तसुवणसलाय जिह हउं भत्तार विसुज्झमि ॥ १५ ॥

10

16

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की  
बेणिण वि ताई तेत्थु पावइयइ  
थिउ मुणि बाहिरदेसि रवणणइ  
जिह जिह सा महुं कहिय कहाणी  
तिह तिह पिययमेण आर्येणिणय  
भत्तिइ तहि पर्णासु विरयंतें  
सव्वहिं जायवि हयसंसारउ  
सकुलकमु गुणवालहु दिण्णउ

ता णाहेण णियंविणि मुक्की ।  
एउं णयरु विहरंतइ अइयइ ।  
घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।  
गुज्झरहल्लें चारु विराणी ।  
णिग्गच्छिवि सा तेण पमैणिणय ।  
थुय गंधारि धीरधी कंतें ।  
वंदिउ सो रइसेणु भडारउ ।  
लोयवालु पव्वज पवणणउ ।

5

15. १ MB णहयलि णिहियं. २ णरयविवरणिवडण. ३ MB विणासिउ. ४ MB पाविट्ट धिट्टु सुह दोही. ५ MB पाविज्जहि. ६ MB सुहु. ७ M धारोसित्तै. ८ M तो; B भो.

16. १ MB ताई तेत्थु वि. २ MB इय जिह जिह महु. ३ M गुज्झरहल्लें; B गुज्झरहल्लें. ४ MBK विराणी. ५ M आयाणिय. ६ M पमाणिय. ७ MB पमाणु.

15. ५ a मुइ मुइ सुब सुब.

16. ४ b विराणी विराणिणी.

पुत्तचउकें सहुं भत्तारें  
लइय दिक्ख वल्लियवयभारें  
हउं कुबेरदइणं तेणच्छमि

णिप्पिहेण तोडियमयभारें ।  
मोहिय लहुययेण कुभारें । 10  
पुत्तहि मुह पंहपहसिउं पेच्छमि ।

घत्ता—गुणचालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥

पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो ॥ १६ ॥

17

सा कुबेरपूय तणुरुहु पुच्छिवि  
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु  
कयलीकंदलकोमलगत्तइ  
संतहि दंतहि बहुगुणगणणिहि  
कयजयवयणावंगालोयण  
तहिं पुरि बहि मसाणि सो जइवर  
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ  
सत्तमि दियहि पवणि पहावइ  
थिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ  
एत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु  
णिसिहि समागय गयंवरगामिणि  
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय

इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि ।  
पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।  
किउ णिक्खवणु तुरिउ पुर्यदत्तइ ।  
चरणमूलि तहि गुणवइगणणिहि ।  
पुणु वि कहाणउं कहइ सुलोयण । 5  
थक्कु हिरणवम्म लंबियकर ।  
मुणि पडिमाजोएं संबोहिउ ।  
मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।  
जिणु थुंवंति णियमणराईवइ ।  
सो णर हूयउ तलवरकिंकर । 10  
तासु पासि पुरंवेणिवइकामिणि ।  
अज्ज सुइरु सुंदरि कहि अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदें ॥

वंदियइं असेसें पट्टणेण अम्हारण वणिंदें ॥ १७ ॥

८ MB चालिय°, ९ MB लहुयेण इह कुभारें, १० M मुहुं महु पइसिउं; B मुहुं पइसिउं.

17. १ MB कुबेरपिउ, २ MB पेच्छिवि, ३ MB मणुयत्तणु, ४ MB धम्मचारत्तणु, ५ MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ, ६ MB पियदत्तइ, ७ MB पडिबोहिउ, ८ MB णिसियर°, ९ MB थवंति, १० MB एत्तहि वइरिउ, ११ MB वरगय°, १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि, १३ MB असेसइं.

10 a वा लि य° पालितः, 11 b पइपहसिउं प्रभया प्रहसितम्.

17. 5 a °अवंग अपाङ्गः, 9 b °राईवइ पङ्कजे.

सावयवगै वजियविगै  
 सब्बहिं संथुय जइवरपायइ  
 विरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि  
 वयधारिणि अत्थवियइ सरइ  
 दुम्महवम्महसरसंधारी  
 ताई बे वि पारावियजुम्मइ  
 वणि लद्धइ खद्धइ मैजारे  
 बे वि विरत्तइ धरियवरित्तइ  
 ताहं णाहु गउं वंदणहत्तिइ  
 ता णिसुणियविसदंसपवंचे  
 ताई बे वि जाणवि महु अहियइ

गुणवइजसवइगणणीसंघे ।  
 तं पिउवणु मेहेणियणु आयइ ।  
 बुद्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।  
 पंति पंति थिय णयरदुवारइ ।  
 तणुविसग्गु विरणवि भडारी । 5  
 सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइ ।  
 जायइ मणुयइ सुहसंचारे ।  
 तवतत्ताइ पत्थ संपत्ताइ ।  
 तेण समागय गहयहि रत्तिहि ।  
 भवुं संमरियउ तलवरभिच्चं । 10  
 मइ जि पुब्बजम्मंतरि वहियइ ।

अत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपलित्तउ ॥  
 जहि अच्छइ संजमधारिणिय तहिं पुंरि बाहिरि पत्ताउ ॥ १८ ॥

सा जोइवि पुणु मुणि अवलोइउ  
 पडियापण तेण पच्चारिय  
 तुहुं महु पुब्बभवम्मि पलाणी  
 सो वरइत्तु काइं पइं सुक्कउ  
 आउ तुज्जु मेलणउं समारमि  
 एम भणेविणु खंघि चडाविय  
 आलिगह भणेवि रइलुद्धइं  
 भीमै भीसणेणं खयथत्तिहि

सिहि मसाणकट्टहिं संजोइउ ।  
 पाविट्ठेण ते वि धिक्कारिय ।  
 जेण समउ अच्छिय सुहलीणी ।  
 अच्छइ तुह रइरमणहु दुक्कउ ।  
 एवहिं हउं विवाहु अवयारमि । 5  
 विरयहु णियडि विरैय संप्राविय ।  
 विणिण वि पक्कीकरिवि णिवद्धइं ।  
 धित्तइं चियहि जलंतजलंतहि ।

18. १ MB बुद्ध विसुद्ध. २ MB जम्मइ. ३ MB मैजारे. ४ MB जायइ मणुए. ५ MB वंदण-  
 गउ हत्तिइ. ६ MB भउ. ७ MB पुरवाहिरि.  
 19. १ MB अवलोयउ. २ MB रइमणहो दुक्कउ. ३ MB विरइ संपाइय. ४ B भीसतेण.

19. 3 a पलाणी नट्टा. 6 b विरय आर्या. 8 b चिय हि चित्तायाम्.



दडुइं विण्णि वि सिमिसिमियंगइं  
रसवसवीसइं गंधालित्तउ  
णिहंइयउ जंपइ वेरिउ  
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ  
पेयालइ हुयवहेण पलीविउ

गिण्णिणु गिहणेण्णिणु णीसंगइं ।  
आवेण्णिणु णियभवणि पसुत्तउ । 10  
चंगउ सहुं महिलइ मइं मारिउ ।  
रविउग्गामि जइजुयलु णिरिक्खिउ ।  
राणं पउरयणं सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चित्तिउ ताइ विलासिणिण्णि दुक्किउ कासु कहिज्जइ ॥

इह जम्मि अहव परजम्मि सइं पावें पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥ 15

20

हाहासइं रुण्णु णरोहें  
वहकारिहि लोणहिं गंविट्ठउ  
खलु णाउं वि रूउं वि पल्लइवि  
पक्कमेक्क खय करणें लइयइं  
उप्पण्णाइं सतिग सोहम्मइ  
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि  
आउ ताहं मुणि गणणौसुद्धइं  
उत्तिराणयरिहि कयपयर्णायहु  
केण वि पालियसंजमणियरइं

अप्पाणउ णिदिउ णरणाहें ।  
पायमग्गु पुंरि गंवि पइट्ठउ ।  
णट्ठउ भयभावेण विसट्ठिवि ।  
वेण्णि वि मरिवि ताइं पावइयइं ।  
मणिकूडइ विमाणि रुहरम्मइ । 5  
णं मेहहु सोहइ सोदामणि ।  
पल्लइं पंच पमाणिवद्धइं ।  
कहिउ सुवण्णवम्मखरायहु ।  
मारियाइं विण्णि वि तुह पियरइं ।

घत्ता—सा देव पुंडरिक्किणि णयरि हुयवहजालहिं डज्जइ ॥

रिसिमारय संगहयारि खलु गुणवालु वि रणि बउज्जइ ॥ २० ॥ 10

५ M जलंतजलंतिदि; B omits जलंतजलंतदि. ६ M वीसरु. ७ M णिहंउ इय जंपइ. ८ MB वइरिउ.  
९ MB हुयवाहें पउलिउ.

20. १ B गरिट्ठउ. २ MB पुर. ३ M णाउं रूउ वि; B णाउं वि रूवें. ४ M कारणें; B करणे.  
५ MB पव्वइयइ. ६ MB रुहरम्मइ. ७ MB गणिणा. ८ M णामहु.

13 a पेया ल इ इमवाने.

20. 3 b विसट्ठिवि प्रकम्प्य. 7 a आउ आयुः; मुणि जानीहि. 8 a पयणा यहु प्रजाया  
न्यायस्य.

## 21

तं गिसुणिवि सहुं सेण्हिं गिग्गउ  
साहणु सिद्धकूडु संप्राइउ  
देवै देविहि कहिउ कहाणउं  
अम्हहं मरैणु मुद्धि गिसुणेपिणु  
पुरवरु डहहुं पहु संचलियउ  
पम्ब भणेपिणु विणिण वि जायइं  
आसीणइं वसैहिहि पलियकें  
कंचणवम्मं विणिण वि भावें  
किं कुइओ सि पुत्त उवसंतइं  
सर्वउ विरयजुयलु किं मारइ

सो गलगज्जिवि णावइ दिग्गउ ।  
तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ ।  
तुह तणएण विइणु पयाणउं ।  
गुणवालहु उप्परि रुसेपिणु ।  
अम्हहुं दइवसेण जिं मिलियउ । 5  
संजमधर संजमवरकायइं ।  
वंदियाइं कुलकुमुयमियकें ।  
उसैंउं मायामुणिवरदेवें ।  
अम्हइं अछहुं वे वि जियंतइं ।  
अज्ज वि सो पहु हियइ विसुरइ । 10

घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सव्वत्थ गवेसिउ ॥

तणुरुह गुणवालणराहिवेण अप्पउ दुक्खें सोसिउ ॥ २१ ॥

## 22

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइ  
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं  
वार वार भवसुकिउ पसंसिउ  
कणयवम्मु खमभावें लइयउ  
गउ गियवासहु सो खयरेसरु  
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु  
अवरु वि सा अछरु सो सुरवरु  
जिणैदिव्वज्जुणिरंजियकणइं  
तां तहिं पच्छइ सयमहरामउ  
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायहु

अम्हइं वेणिण वि भुंजियअमयइं ।  
अणिमामहिमाईहिं गहीरइं ।  
सुरमिहुणें गियरुउ पदंसिउ ।  
देवैदिणभूसणवैचइयउ ।  
वच्छदेसि सिवघोसु जिणेसरु । 5  
अरुहदत्तु णामें चक्केसरु ।  
संथुउ संसमेण तित्थंकरु ।  
छुहु छुहु सव्वइं जाम गिसणणइं ।  
अवइणणउ सइं मीणइणामउ ।  
किं घरयम्मविहाणें वावहु । 10

21. १ MB णाई दिसागउ, २ MB संपाइउ, ३ MB मुद्धि मरणु, ४ M वि, ५ B वसुहहि, ६ MB कंचणवण्णें, ७ M उत्तमु, ८ साविउ,

22. १ MB मुयाई, २ MB दिव्व°, ३ GKT p संभवेण इति पाठे आदरेण, ४ M दिण्णदिव्व°, ५ MB तो.

21. 9 a कुइओ कुपितः, 12 तणुरुह हे पुत्र.

22. 7 b संसमेण समीचीनोपशमेन, 10 b वावहु व्यापृतत्वम्.

समउ पुरंदरेण किं णायउ

देविजुंयल्लु दरिसियमुहरायउ ।

केवलणाणपईवें दिट्ठउ

चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ ।

घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु घणे वंदिउ सुणि हयकम्मउ ॥

कर मउलिकरिवि आयणियउ भावें सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

## 23

लईउं वउं घरविहि परिवट्ठइ

जाहुं जिणिंमवणु ण पयट्ठइ ।

उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु

देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।

वे वि धिवंति चंदरविणयणइं

पढमं चिय कुसुमंजलिगयणइं ।

एण णिओएं गलियइ कालइ

एकहिं वासरि लवलिलयालइ ।

एकहि पाणिपोमि फणि लग्गउ

हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ । 5

सहि णियसहियहि पासु पथाइय

सा वि भुयंगमेण आसाइय ।

विसमविसाणलेण जलजलियइं

बिहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं ।

दोहिं वि दैरवेयणइं सरंतिहिं

दिट्ठउ ईदागमणु मरंतिहिं ।

भोय्याकंखइ करिवि णियाणउं

लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।

धरणिणाह लुड लुड उप्पणउ

तेण समागयाउ सुरक्कणउ । 10

एयउ विणिण वि णियवइपच्छइ

एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।

अज्जि वि णिवडिउ तणुजुयल्लुउं

लोएं जोइउ गयजीउल्लुउं ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहचरणणवियंगहो ॥

कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंतगुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिण महाकव्वे जिणधित्तपुप्फंजलिफलं णाम

तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

१ M विण्णायउ, ७ MB णारिजुयल्लु.

23. १ MB लइयउं, २ B वरं, ३ MB जाहं, ४ MB गरं ५ MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं.

६ MB भोय्याकंख करेवि, ७ M गुणचंगहो.

23. 1 a घर वि हि पुष्पत्रोटनप्रथमविक्रयादिगृहव्यापारः. 8 a सरंतिहिं स्मरन्तीभिः. 11 a णियवइपच्छइ निजपतिपश्चात्; b कच्छइ अरण्ये. 13 पुप्फयंतगुणतुंगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तमोर्गुणौ कान्तिः प्रतापश्च तौ तुजौ महान्तौ यस्य.

# XXXI

जिणवयणइं आयणिणवि  
मालइमालामालिउ

णियहिउल्लइ माणिणवि ॥  
सहुं कंतइ मणिमालिउ ॥ धुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणु  
णहि विहरंतउ  
उण्णयतालउ  
णाउं पसिद्धउ  
इंसहिं धवल्लिउ  
चल्लजल्लह्लिउं  
गयमयसामलु  
पत्तहिं णालिउ  
दिट्ठउ मणहरु  
मणि विष्फुरियउ  
कर्यरिसिसेवें

णयंकमलाणणु ।  
कौणणु पत्तउ ।  
धण्णयमालउ ।  
महिरुहरिद्धउ ।  
चक्कहिं मुह्लिउ ।  
कमलहिं फुल्लिउं ।  
केसैरपिंगलु ।  
भमरहिं कालिउ ।  
सप्पैसरोवरु ।  
मवें संभरियउ ।  
भासिउं देवें ।

5

10

यसा—आसि जम्मि संवियधणु  
तुहुं रइवेगपियारी

हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥  
हौंती यरिणि महारी ॥ १ ॥

15

2

दीसइ पुरि पइ मुणालवइ  
णं धरियइं कह व चीरंचलइ  
इह प्राणहरणभयविहडियइं

जहिं इइं विहिं वि विवाहरइ ।  
उट्ठैउ लगउ पच्छलइ ।  
धावंतइं विणिण वि णिवडियइं ।

1. १ B णं कमला°, २ MB काणणि, ३ M केसरि, ४ MB सच्छ°, २ MB भउ, ६ B कय-  
सिरिसेवें, ७ MBK रइवेगपियारी.

2. १ MB णउ धरिय, २ MB पाण°.

1. ३ a सिरिमाणु लक्ष्मीभोजा.

इह तुह पयलोहिउं पयलियउं  
इह कंठइ लग्गउ कंचुयउ  
एहु सो सरवर खगभूसियउ  
एत्थेत्यु जाम सो धरइ खलु  
सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु  
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ  
इय वर्यणु वियारिउ जाम जैहिं  
अमरें विहुणेप्पिणु सिरकर्मलु

घत्ता—वेणिण वि रमणरसङ्गुं  
पारावयभैलु पत्तइं

इह महु उप्परियणु वियलियउं ।  
इह दोहं मि देहकंपु हुयउ । 5  
जसु जलेण देहु आसासियउ ।  
तावेत्थु जि दिट्ठउ पवैलु बलु ।  
संभरहि ण किं तुहुं हलि सुयणु ।  
ता देविइ सिख संचालियउ ।  
रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं । 10  
पुणु जंपिउ वण्णपंतिसरलु ।

जेण णिहेलणि दड्ढइं ॥  
खद्धइं णिगयरत्तइं ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पण्णइं विज्जाहरइं  
भवदेव विडालउ तलवरउ  
सो एवहि जायउ एहु जइ  
परिभावहुं पयहु तणिय मइ  
इय जंपिवि हयवम्महसरहु  
कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि  
सत्थें सहुं लेसासंख मुणि  
इउं किं पि ण यौणउं णवसवणु  
कयैगाहहु तियसहु णउ रहिउ  
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ  
जिह आसवसंवरणिज्जरइं

हुणियाइं मसाणइ मुणिवरइं ।  
जो हौतउ चिर दुक्कियणिरउ ।  
डज्झहुं संसार विचित्तगइ ।  
किं रूसइ किं अमहं खमइ ।  
आसणु णिसण्णउ जइवरहु । 5  
रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।  
ए पंति पपुच्छहि तच्च गुंणि ।  
किं देवहु करमि धम्मसवणु ।  
पुणु तेण तासु तिजणु वि कहिउ ।  
जिह वड्डियाउ पावयमइउ । 10  
जिह बंधमोक्खभावंतरइं ।

3 MB पवर, ४ वण्ण, ५ M तहिं, ६ M °कवैलु, ७ MB °भउ.

3. १ MB भवदेउ, २ MB मुणि, ३ K याणमि, ४ B समणु, ५ MB किय°.

2. 8 a सुयणु सुजनः; b सुयणु हे सुतनु.

3. 7 a ले सा सं ख षट्.

तिह मुणिणा सयलु पयासियउ  
पइ लइउ सिसुत्तणि तवैरयणु

तं णिसुणिवि तियसैं भासियउ ।  
भणु वइरायहु कारणु कवणु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ  
केवलिकहियउ वइयर

मउगंभीरइ वायइ ॥  
देवहु अक्खइ मुणिवर ॥ ३ ॥

15

4

घरासिहरारुढरमियखयरि  
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ  
उत्तिवणउ णिलयहु णिद्धणहु  
जइ वंदिवि सावर्यवउ गहिउं  
परवहियमैणुणिणहियहो  
जै दिणणउं अप्पहि तासु सुय  
ताणण सहत्थै पेळियउ  
परमारउ परथीदव्वहरु  
लुद्ध वि पहि बद्ध णियच्छियउ  
तेहिं वि अक्खिउं णियणियचरिउं

अत्थीह पुंडरिंकिणि णयरि ।  
णामेण भीसु णंदणु जणिउ ।  
हुउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।  
घर आयहु वप्पे णउ सहिउं ।  
व्रैउ किं सुंदर दालिहियहो ।  
आवेहि जाहुं लहु दीहभुय ।  
मुणिवासहु हँउं पुणु चळियउ ।  
परम्मविहइणु अलियसर ।  
जणणें पक्केऊउ पुच्छियउ ।  
हिसालियवयणाहिं परियरिउं ।

5

10

घत्ता—जेण जीवकुलु हिंसिउ  
जेण पैरव्वसु हित्तउ

जेण असच्चउ भासिउ ॥  
जसु मणु परव्वुरत्तउ ॥ ४ ॥

5

जो लोहकसापं भावियउ  
मइं भणिउं तायै एयइं वयइं

सो कवणु ण विहुँरै तावियउ ।  
मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।

१ MB तवचरणु.

4. १ MB °वउ लयउ. २ MB °णुणिणदियहो; G णुणिणदियहो and gloss निद्रारहितस्य; K णुणिणदियहो but corrects to °णुणिणदियहो; T उणिणदियहो. ३ MB वउ. ४ MB गुणु हुउं. ५ MB read in place of this line: पाणहुअ अलियभासिउउ थेणु, परमहिलारउ मणमइल्लेणु; T मणमइल्लेणु मनसि मल्ल पापं रेणुश्च ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रजः. ६ MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हृतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि.

5. १ M reads this line as: मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं, मइं भणिउं ताइ एयइं वयइं. २ MK ताइ. ३ MB वयइं.

4. 5 a परव हिय म्मेण भारवाहकर्मणा; उ णिण दि य हो निद्रारहितस्य.

एर्यं वयविवरंमुह वद्ध जिह  
तं गिस्तुगिनि पिउणा इच्छियउ  
गय विणिण वि णयरुजाणवरु  
तहु वयणं वणिवरु उवसमिउ  
दोग्गिच्चं किं वर करमि तहु  
मइं एमं णएण समुल्लविउ  
तसथावरजीवहुं कयदयइ

हउं रायं वज्झमि जणण तिह ।  
मइं देसच्चरित्तु पडिच्छियउ ।  
पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु । 5  
घरघम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।  
किं णासमि लद्धउ मणुयमवु ।  
पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।  
उद्धरियइ पंचमहव्वयइ ।

धत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु  
दूसहुदुव्वखणिंरंतरु

पायमूलि जिणदेवहु ॥ 10  
गिस्तुगिउं गियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

6

महु तिहुयणणाहं ईरियउ  
गिर्सिं चिरु भवदेवें विण्णिएण  
पुणु तं<sup>३</sup> चि वि जुयलउं लक्खियउं  
जइयहुं ताइं जि तवत्ताइं  
तइयहुं होंतो सि तलारु तुहुं  
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ  
जाइवि अण्णेत्य वासु रइउ  
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कंउ  
लोयहु केरउ धणु चोरियउ  
तें आरक्खियउल्लु गरहियउ  
तुहुं विञ्चुचोरु दिट्ठउ धरिउ

पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।  
होंतेण कालकंदेलपिएण ।  
मज्जारें होइवि भक्खियउं ।  
पइं धरिवि हुयंसणि हित्ताइं ।  
ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं । 5  
कह कह व ण जमउरिं पेसियउ ।  
सो णरवइ हुँउ जं पावइउ ।  
अंजणगुणेण दिञ्चारु हउं ।  
पउरें रायहु पुक्कारियउ ।  
तेण वि पडियंजणु समाहियउ । 10  
पइं वित्तिणवासु वि वज्जरिउ ।

४ MB ए. ५ MB पावें. ६ MB दोगलें किंकर. ७ T एण णएण. ८ MB दूसहु.

6. MBKT रिसि and gloos in T रिसि हे भीममुने. २ M °कंदलि°, ३ MBT तं चि व  
जुवल्लउं खियउं. ४ K हुयासं गिहिताइं. ५ MB अण्णेत्य. ६ MB हूयउ पव्वइउ. ७ MB कवउ.  
८ MB हुउ; T हुउ.

5. 7 a दोग चें दरिणेण.

6. 2 b °कंदल° कलहः. 8 a तं चि वि जुयलउं तदेव पक्षियुगलम्. 8 b विञ्चारु हउ इतिचारे  
हतः, अदयो जातः.

ब्रत्ता—कयरमणीयणकीलणि  
पहं निहियाहं जियकरहं

कंचणयारणिहेलणि ॥  
हरिवि सत्त माणिकरहं ॥ ६ ॥

7

तं मंदिरु दाविउ गिवणरहुं  
सोणैारु वि मइ हकारियउ  
पहुणा सो पुंछिउं भोयणउं  
आणाविय मणि गेहे निहिय  
जिम्ब खाहि छाणु जिम देहु घणु  
इय विमइहि दंडु वियारियउ  
गोमउ वि ण भक्खहुं सकियउ  
पडिवाडिइ सो तिणिण वि करिवि  
तुहुं पुणु वंडालहु ढोइयउ  
कुइउ दोहि मि पढु घणतिमिरि  
पहं भणिउं पाण प्राणहं हरणु

घत्ता—ता वंडालें भासिउं<sup>१३</sup>  
जं संसारइ पत्तउं

करवालकौतकंपणकरहुं ।  
मभिउ ण देइ विहिवारियउ ।  
तं घरणिहि भासिवि लंछणउं ।  
वणिमालइ ओलक्खिव गहिय ।  
जिम्ब विसहहि मल्ल मुट्ठिहणु । 5  
मल्ले घायहि ओसारियउ ।  
वसु ढोयइ चित्ति चवक्कियउ ।  
दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।  
व्रंउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।  
दोणिण वि बंधिवि<sup>१४</sup> घत्तिय विवरि । 10  
हउं संमोविउ किं णउ मरणु ।

गिसुणहि कम्म दुविल्लसिउं ॥  
मइ गियदेहें भुत्तउं ॥ ७ ॥

8

इह हौतउ गुणवालउ गिवइ  
पुहई वसु णामें धीरमण  
गरुयत्तें सरिस मेरुगिरिहि  
अच्छंतहं ताहं तेथु सघरि

राणी कुवेरसिरि सच्चवइ ।  
सच्चवियहि भायर विणिण जण ।  
एकु जि बंधउ कुवेरसिरिहि ।  
गिवकरिवरिंदु कीलंतु सरि ।

7. १ M °णराहं; B णरहं. २ M °कराहं; B करहं. ३ M सोणार; B सुणार. ४ MBK पुच्छिउ. ५ MBK मणि मणिगणि निहिय. ६ M मल्ले. ७ MB भक्खहि. ८ MB चवक्कियउ. ९ MB वउ; K वउ but व्रउ in second hand. १० MB चल्लिय बंधिवि. ११ M मइ पमणिउं पाण पाणहरणु; B मइ पढणिउं पाण पाणहरणु. १२ MB संपाइउ. १३ MB भासियउं. १४ MB दुविल्लसियउं.

8. १ MB गुरुयत्तें.

12 b कंचणयार<sup>१०</sup> सुवर्णकारः.

7. ३ b लंछणउं अभिज्ञानम्. 11 a पाण चाण्डालः.

8. 2 a पुहई द्रुथीः.



वणि समवसरणि जिणदेवञ्जुणि  
अवलंबिउ हिसविरत्तिउ  
अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ  
करि कवलु ण गिण्हइ प्रॉणपूउ  
तें पलपिंडउ दरिसावियउ  
पुणु अण्णु वि सुँदु पयच्छियउ

आयण्णवि जायउ झत्ति गुणि । 5  
जिउँ जोयवि सणियउं दिण्णु पउ ।  
गयवालउ महिवालहु दिसइ ।  
ता राणं पहिउ कुबेरपिउ ।  
तं ण नियइ कैरि वरमावियउ ।  
तो हत्थिदेण पडिच्छियउ । 10

घत्ता—वारणु दुण्णयवारउ

हुयउ अणुव्वयधारउ ॥

इय मइवंतु वियाणिउ

वणि पाणहु संमाणिउ ॥ ८ ॥

9

अण्णहिं दिणि णरणाहु तणउ  
घरु आयउ णञ्चाविय दुहिय  
पुच्छिय राणं विरइयतिलय  
मयणाहिविसेणुम्मंतियण  
मुद्धइ णीराउ पजंपियउ  
णियघरु जाणवि वणीसरहु  
सा सुहणं पडिवयणेण हय  
संबोहिय सहियइ हंसगइ  
दुम्महवम्महमग्गणवहिय  
सहि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ  
हलि पंचमु सरंसु समालवहि  
तो मरउं णिरुत्तउं कहिउ मइ

णहु णट्टमालि णवतोरणउ ।  
रसविब्भमहावभावसहिय ।  
णामेणुप्पलमाला विलय ।  
वणिवइसरूउ चिंतंतियण ।  
राणं नियहियइ वियप्पियउ । 5  
वेसाइ णिउंजिय दूइ तहु ।  
पणयंगणरयहु णिवित्ति कय ।  
दुल्लहलंमेसु म करहि रइ ।  
ता जंपइ पवरविल्लासिणिय ।  
संभूयउं वल्लहु णवणवउ । 10  
जइ सुँहु कह व ण मेलवहि ।  
असमक्खि रुवेवउं माइ पइ ।

२ MB हिसविरत्ति जिउ. ३ MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ. ४ MB पाणपिउ. ५ MB करिवर  
भावियउ. ६ MB सुँदु. ७ MB अइमइ°.

9. १ MB add before this the following lines: पुणु णिवणं तूसेवि दिण्णु वरु, सेट्ठि  
पउत्तु आणंदयरु; अच्छउ ( M अच्छउ ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गसमि देसि पहु. २ MB पणियंगण°. ३ MB मग्गणवणिआ; K °वणिय°. ४ MB °विलासिणिआ. ५ MB सरु सुसमा°. ६ MB सुहउ णउ महु  
मेलवहि. ७ MB मरमि.

8 b पहिउ प्रेक्षितः.

9. 4 a मयणा हि° कामसर्पः. 5 b राणं रागेण. 12 b असमक्खि परोक्षे.

घत्ता—सहि पभणइ अट्टमदिणि  
हियवइ अरुहु धरेप्पिणु

थक्कइ जिणभवणंगाणि ॥  
कायविसग्गु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

10

तइयहुं तुह संचियक्षाणरसु  
इय तेहिं विहिं वि आलोइयउ  
थिउं ओलंविक्कुरु धीरुं जहिं  
उच्चाइवि आणिवि वालियहे  
मुद्धाइ सुरयविहिं सयलु कउ  
हे<sup>१</sup> णीरसत्तु दुब्बोल्लियउ  
तं रापण वि आणियणयउं  
उवहसिय वेस णर परिहरिवि

उच्चाइवि आणमि सो अवसु ।  
तां अट्टमिणत्तु पराइयउ ।  
आलिइ जाएप्पिणु तुरिउ तहिं ।  
पिउ अप्पिउं उप्पलमालियहे ।  
वरु थक्कउ णावइ कट्टमउ । 5  
जहिं अच्छिउ तहिं पुणु वल्लियउ ।  
वाणिवरहु थिरत्तणु मणियउं ।  
घरि थक्की बंभवेरु घरिवि ।

घत्ता—लूयासुत्ते वज्झइ  
वेसहि जडयणु णिवडइ

मसउ ण हत्थि णिरुंज्झइ ॥  
विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥ १० ॥ 10

11

तलवरसुउ अवरु वि मंतिसुउ  
तहि मत्तमहंभायगामिणिहे  
एक्कहु जि एक्कु दक्खालियउ  
परिवाडिइ दिण्णवयणणियल  
पिहिइं वि तहिं विहिणा आणियउ  
जो दिण्णउ सुक्खिसास रसहि  
सो आणेप्पिणु महु देसि जइ  
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु

भोयालउ णिवंभोइणिहि सुउ ।  
एण घर आया कामिणिहे ।  
भयभावे मणु संचालियउ ।  
मंजूसहि पइसारिय सयल ।  
रइमगिरु तरुणिइ भाणियउ । 5  
महु तणउ हारु पइ णियससहि ।  
तो देमिं हउं मि तुह रमणरइ ।  
वीयइ दिणि उगमि दिणयरहु ।

८ MB काउविसग्गु.

10. १ MB तहु संचिय. २ MB तावट्टमि°. ३ MB थिय. ४ MB वीर. ५ M आवेप्पिणु.  
६ MB अप्पउ. ७ MB हो णीरसु ति. ८ MB आणियउं. ९ M विरुज्झइ.

11. १ MB णिवभोयणिहे. २ MB °महागय°. ३ MB विहिंवि. ४ MB रउ मगिरु तरुणिय.  
५ MB देहि. ६ K देवि.

10. २ ८°णत्तु रात्रि. ३ ८ आ लि इ सख्या. ९ लूया° कोलिकः.

11. १ ८ णिवभोइणिहे सुउ दासीपुत्तः. ५ a पिहिइ प्रयुधीनान्ना सत्यवतीभ्राता.

जिह हार तेण उरुवि गहिउ  
सुरयाकंखइ पडिवणुं जिह  
मणिणिइ मंति ओहामियउ

जिह लोहिदुं पुणरवि रहिउ ।  
रायहु विस्तु पउनु तिह ।  
णिज्जीवसक्खि आणावियउ ।

10

घत्ता—गहियंगारयहत्थहि दासिहि भणिउं समत्थहि ॥  
कुड मंजूसि समासहि मा हुयवहमुहि पंडसहि ॥ ११ ॥

## 12

तामायसवल्यविहसियण  
पडिवणु हार गयदियहि पइं  
दे देहि विहसणु सुंदरिहे  
उप्पणु चोखु णियसिर धुणिउं  
परधणहरगारउ साडियउ  
ते तिण्णि वि तहि णिग्गय कुविड  
णरणहें पुच्छिय सच्चवइ  
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु

सहसा घोसिउ मंजूसियण ।  
तुहुं कटु कटु किं भणहि मइं ।  
मा पडहि मंति णारयदरिहे ।  
कहिं तर चवंति पडुणा भणिउं ।  
मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ ।  
णारिहि के के णउ मलिय जड ।  
सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।  
मइं हार समण्णिय वंधवहु ।

5

घत्ता—खलु दुव्वयणिहि दोच्छिवि  
महिवैइणा आणाविउ

ता समंति णिब्भच्छिवि ॥  
तहि भूसंण देवाविउ ॥ १२ ॥

10

## 13

आणंदु पवडिउ माणिणिहे  
तैं<sup>१</sup> दंडणु अणु पवियणियउ  
भोइणि तलवर मंतिहि तणय  
सिरकमलु लुणह पुहइहि तणउं  
जइयहुं परिणामु विहावियउ  
तइयहुं जो<sup>२</sup> पइं सइं दिण्णु तर

मणि रोसु रायचूडामणिहे ।  
असहंतें एम पयंपियउ ।  
तिण्णि वि धाडह दसियविणय ।  
ता वणिवर चवइ सुहावणउं ।  
जइयहुं कुंजरु मुंजावियउ ।  
सो अल्लु देहि णिव संतियरु ।

5

७ MB पडिदिण्णु. ८ M मणि णियए; B माणिणियए; ९ MB मंजूस. १० M पयसहि.

12. १ MB ता आयस°. २ MBK गह दिवहि. ३ MB महिवइ. ५ MBK भूसण.

13. १ MB ते दंडणानु परियणियउ; ( B पवि° ). २ MB पइं जो महु दिण्णु. ३ MBT पट्टवहि.

ए परदेसहु मा पिंडवहि  
ता तहि धरणीसैं किउं करणु  
वणिवयणु णरिदै जं कियउ  
उवयारु खलहु दोसैं सरिसु  
संचितइ सो मारमि मरमि

वृत्ता—पुणु गर्णं णइतीरण  
विज्ञाहरकरवियलिय

एहु वि मा खमौ खंडवहि ।  
वारिउ विदेसवियरंणु मरणु ।  
तं पिहिविचिनु रोसंकियउ ।  
फणिदिण्णउं दुन्दु वि होइ विसु । 10  
सेट्टिहि णिग्गहु अवसैं करमि ।

तेण तुसारसमीरण ॥  
अंगुत्थलिय णिहालिय ॥ १३ ॥

14

अंगुलियइ कय सुहदाइणिय  
किं जोयहि मंते पुच्छियउ  
महु कामरूवधरि मुहडिय  
णं पिययम णाहासिक्खविय  
पुणु मगियं खयरें दिण्ण तहो  
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ  
एक्कासणि चडियउ राणियहे  
सौं पेक्खइ णिययसहोयरउ  
पिसुणें पुहवीसहु विण्णविउं

वृत्ता—णव्वंजोव्वणमयमत्तें  
मा परहं चरु संजोयहि

ता खयरु पलोयइ मेइणिय ।  
तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।  
एत्थेत्यु मित्त कत्थइ पडिय ।  
तें तहु सा विहसिचि दक्खविय ।  
संतुट्टउं गउ णियमंदिरहो ।  
मुहइ कुबेरपिउ सो जिं किउ ।  
सच्चवइहि धम्मवियाणियहे ।  
जणु पेक्खइ वणि अयज्जणिरउ ।  
परमेसर तुह कललु रमिउं । 10

धुउ धर्णवइयहि पुत्तें ॥  
जाइवि अप्पणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB °विरयणु, ५ MB चितइ सो मारमि पुणु मरमि, ६ MB ठाहवि.

14. १ MB कंपियमइणा हासैं खविय, २ B मगियवि, ३ M सो, ४ MB वणि णिवभजरउ, ५ K भणजोव्वण°, ६ M पियदत्तहि, ७ M वर णर.

13. 7 a पिंडवहि प्रेषय, 13 अंगुत्थलिय सुद्रिका.

14. 4 a णा हा सिक्ख विय भर्त्रा अशिक्षिता, 8 b अयज्जणिरउ अकार्यनिरतः, 11 परचरु अन्यं मृत्युम्.

## 15

मायावद्सत्तविलंबियउ  
दुष्पिच्छमच्छरकोर्यणहिं  
ण वियाणिउ कवडरुवरयणु  
घरु जाइवि रायहु पेसणिण  
पिहिं<sup>१</sup> वी चारित्तमहिद्धियउ  
वणिवइं मारहुं नेवावियउ  
जूरइ सच्चवइ कुबेरसिरि  
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ  
अहवा लइ एउं होइ जइ वि  
तहिं अवसरि सो चंडालयहु

घत्ता—पाणें श्रुति विमुक्ती  
खगलट्टि जमदूर्इ

मुद्धइ डिंभउ सिरि चुंबियउ ।  
दिट्टउ राए सइं लोयणहिं ।  
किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।  
जमदूएण व जमसासणिण ।  
पडिमाइ परिट्टिउ कड्डियउ । 5  
उप्फालें जणु मेलावियउ ।  
हा किं चलु ह्वयउ मेरुगिरि ।  
हा किं जायउ धम्महु पलउ ।  
तहु भव्वहु सीलु सुद्ध तइ वि ।  
अण्णिउ तोलियकरवालयहु । 10

वणिगलकंदलि दुक्की ॥  
सियहारावलि हई ॥ १५ ॥

## 16

साहु त्ति भणिवि पणवियपयप  
सोवणभूमि मणिमंडविय  
णिकरुणु साहु जो णिम्महइ  
अवरेकहिं मच्छरणिभरहिं  
अण्णेकैइं वेउद्धाइयइं

पउमासणु किउ पुरदेवयप ।  
तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।  
भूएहिं णिवद्धउ सो पुहइ ।  
णिंदिवि सिंरि चूरिउ टक्करहिं ।  
जहिं णरवइ तहिं संप्राइयइं । 5

15. १ MB °वइसत्तु. २ MB °कोवणहिं. ३ MB मिहिविवि चरित्त°; K पिहिं चारित्त°. ४ MB  
add after this the following lines:—

पुणु हट्टहु मज्जे चालियउ  
णिजंतउ पेक्खिवि जणु रुवइ  
कु वि सवइ राउ कु वि पुहइअउ  
जो दुरएहिं ठरएहिं जंतु चिरु  
उद्धणु जेम वड्डिउ जणेण  
सो एवहिं चरणहिं चरइ किह

सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।  
कु वि थामि थामि धाहउ मुयइ ।  
सुंदरु सुसीलु दुहु पावियउ ।  
जाणहिं जंपाणहिं गुणपवर ।  
रोवंतें सयलें परियणेण ।  
दुक्कम्महिं पायउ पुरिउ जिह ।

16. १ M णिकरणु. २ MB सिरु. ३ MB अण्णेकै. ४ MB संप्राइयइं.

15. 1 a मायावद्सत्त मायावणिकत्वम्. 3 a °रयणु रचनम्. 4 b जमसासणेण यमाज्ञया.  
6 b उप्फालें पटहञ्चनिना.

बहु दिव्वहु अमरिसु वड्डियउ  
सो भणइ काइं मइं दोसु किउ  
मुद्दापवंचु पररुवगइ  
गुणिवंधणु रायहु भिणमइ  
पइवय कुललच्छि कुबेरसिरि  
गउ तहिं जहिं अरुइ वइसवइ

घत्ता—पिसुणकवड्ड ण वियकिउं  
खमहि वप्प जं डूमिउ

17

वणि भणइ पुराइउ कम्मु महुं  
तं णासमि एवहिं तउ करमि  
पिउ भणिवि सभवनहु आणियउ  
चंडालें अट्टमिचउदसिहिं  
पुणरवि पाणें चोरहु कहिउ  
तैं वइसैं वारिसणदुहिय  
दिण्णी कुबेरसिरि णंदणहु  
तहु जणणें भणिउ कुबेरपिउ  
तेण जि पउंचु धम्मु जि भणमि  
णिव जामि होमि हउं जइचरिउ  
सुयरक्खणु को वि णिरिक्खियउ  
पहु पुच्छहु वणिउ पराइयउ  
घत्ता—कहिं सिणिसउ कहिं मक्खिय  
जीवहु कम्मु सहेजउ

पहु पायहिं धरिवि णियड्डियउ ।  
भासइ पिसायगणु धम्महिउ ।  
सुहिवंधणु परकलत्तविरइ ।  
तैं तोसिय पणविवि सच्चवइ ।  
उवसामिवि गरहिवि णिययसिरि । 10  
मउलियकरु सो पत्थिउ चवइ ।  
मइं पावें किउं दुक्किउं ॥  
कसताडणहिं किलामिउ ॥ १६ ॥

णिक्कारणि जं कुइओ सि तुहुं ।  
णउ तुज्झुप्परि मच्छरु धरमि ।  
णाहेण इहु बहु माणियउ ।  
पालिय अहिंस दिण्णी रिसिहिं ।  
जिह गुणवालें ड्रेउ संगहिउ । 5  
विणैणारुवलक्खणसहिय ।  
वसुपालहु भुवणाणंदणहु ।  
किं मोक्खहु कारणु कैहमि पिउ ।  
सिवकारणु अण्णु ण पैरिगणमि ।  
सो तिणिण दियह पड्डुणा धरिउ । 10  
दिणि तिज्जइ एतुं व लक्खियउ ।  
मच्छियहिं विसंभरु धाइयउ ।  
कणाणिय किं मक्खिय ॥  
अण्णु ण किं पि दुइजउ ॥ १७ ॥

५ M वम्महिउ.

17. १ MB read this line as: णउ तुज्झुप्परि मच्छरु धरमि, तं णासमि एवहिं तउ करमि.  
२ MB वउ. ३ MB विण्णायरुव. ४ MBK कहहि. ५ B वि उत्तु. ६ K पर गणमि. ७ MB वंडु.

16. 7 b धम्महिउ धर्महितः. 9 a भिणमइ संजातविवेकमतिः. 13 डूमिउ उत्पादितचित्तखेदः;  
७ किलामिउ शरीरे कदर्थितः.  
17. 12 b विसंभरु कोलिकः. 13 सिणिसउ विषंभक्षः कोलिकः. 14 सहेजउ सहायम्.

18

डिभहुं सुहुं दइवु जि करइ  
सिरिपालु सच्चवइदेहरुहु  
दइवणुएहि आपसु कउ  
कह गिसुणिवि कुसुमालें दमिय  
णरयाउसु तेणोसौरियउं  
जं सायरसंखहिं मेलविउ  
सिरिपालविवाहि सवंतवण  
सो चोरु मरिवि णिवडिउ णरइ  
वहुदियहहिं तेत्थहु णीसरिउ  
इहु अछवि हउं संजमु वहमि

यत्ता—ता देवेण समीरिउ  
तं जइमिहुणु णियच्छहि

किं मायवणु चितिवि मरइ ।  
होसइ चक्कवइ पडलसुहु ।  
गुणवाळु सैवणि मुणि होवि गउ ।  
मइ खंतिइ संतिइ संसमिय ।  
तइयाउ पढमि संचारियउं । 5  
तं वरिसलक्खकोडिहिं थविउ ।  
वसुपालें मुक्का वे वि जण ।  
पहिलारइ भीमैदुक्खणिलइ ।  
वणि कुंभोयरघरि अवयरिउ ।  
जिणएवें भासिउं सहहमि । 10

जं जम्मंतरि मारिउ ॥  
ता किं रोसैं पेच्छहि ॥ १८ ॥

19

किं खमहि भडारा फुड कहहि  
तं गिसुणिवि रिसिणा बोळियउं  
तं एवहिं णिस्सल्लु जि करमि  
ता तियसैं जंपिउं गिसुणि रिसि  
पइं पइयइं देवइं जायाइं  
तुम्हइं पयलुयलउ वंदियउ

किं अज्ज वि वइरु चित्ति वहहि ।  
पाविट्ठे जं मइं सल्लियउ ।  
तहु हियमियवयणइं वज्जरमि ।  
अम्हइं जि ताइं विणिण वि सवसि ।  
इय कहिं मि भवंतइ आयाइं । 5  
ता मुणिणा अप्पउ णिदियउ ।

18. १ MB सुहुं दुहुं दइव. २ K माइवणु. ३ T सवाणि श्रेष्ठिना सह. ४ MB तेणोहारियउं.  
५ MB दुक्खभीमाणिलए. ६ MB जिणदेवें.  
19. १ MB अजे वि. २ K णीसल्लु.

18. ३ a दइवणुएहिं दैवज्ञैः; b सवणि सवणिक्. 4 a कुसुमालें चोरेण; b संतिइ विद्यमानया.  
7 a सवंतवण खवन्ति व्रणानि क्षतानि ययोः.  
19. 4 b सवसि स्ववशिन.

हा दुहु दुहु मइं मंतियउ  
 हा दुहु दुहु मइं भासियउ  
 खंतवु कैरहु णीसल्ल सुहुं  
 जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि खमिउं  
 घत्ता—ता दुरुज्झियमच्छरु  
 गउ गुरु वंदिवि सग्गहु

हा दुहु दुहु मइं चितियउ ।  
 हा दुहु दुहु मइं ववसियउ ।  
 एवहिं ण वइरु केणावि सहुं ।  
 हउं एवहिं भण्णमि संजमिउ । 10  
 अमरु सचामरु सच्छरु ॥  
 ण ढल्लिउं जिणवरमग्गहु ॥ १९ ॥

## 20

सो भीमसाहु विहरेवि महि  
 आवेवि सिंवकरि संठियउ  
 उप्पणणउं केवलणाणु खणे  
 तहु पकु छत्तु दो चामरइं  
 पोमासणु मणिमंडवु विडैलु  
 पंडुवज्जियाउ चउजक्खिणिउ  
 तहिं अवसरि पवणुइयउ  
 विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ  
 जइणा पउंनु मइमोहणिया  
 वसुसेण वसुंधरि धारिणिय  
 सिरिमइ असोय संती विमल  
 एवहिं अट्ठहिं वि सुणिम्मियइं  
 कर्णउ मरिवि सुहसइयउ

घत्ता—रइसेणा सुरकामिणि  
 सुहवइ कोमलहत्थी

वसुपालणयरि उज्जाणवहि ।  
 तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ ।  
 कंपावियसुरवरसुरभवणे ।  
 णवियइं चउविहइं वरामरइं ।  
 हेमुज्जलु छज्जइ धरणियलु । 5  
 आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ ।  
 देवीउ अद्धु समागयउ ।  
 को पइ होही जइ पुच्छियउ ।  
 इह पुरि सुरदेवहु गेहिणिया ।  
 अण्णेक पुहइ सुहकारिणिय । 10  
 चोत्थी घरदासि तासु विमल ।  
 वणि मुणिहि पासि गहियइं वयइं ।  
 अञ्जुयवइ देविउ हइयउ ।

अवर सुसेण सुहाविणि ॥  
 चित्तसेण सुपसत्थी ॥ २० ॥ 15

३ MB करहि. ४ MB तुम्हहुं तिजग°. ५ MB चलिउ.

20. १ K पउमासणु. १ MB मणिमंडउ. ३ MB विमल. ४ MBK omit this line.  
 ५ MB चयारि. ६ MB पउत्तु. ७ MB सुणिम्मलइं. ८ MB कंताउ.

20. 18 a °सुइयउ °सूविताः.



21

लंजियउ चयारि वि कयवयउ  
तहिं चित्तवेय जंक्खेसरिय  
अल्लु जि उप्पणउ दिव्वकुले  
सुरदेवें दाणु ण मणियउं  
मुउ हूयँउ गद्दु दुइंतु सद्दु  
पुणु दाँढाभासुर घोणसउ  
मइं समउ आसि सो वित्तु विले  
जिणधम्म तिसुद्धिइ भावियउ  
तेण वि तद्दु आउ पयासियउ  
ओसारियदूसहभवरिणइं  
उप्पणउ एवहिं कुहु जि दिवि  
सो पइ तुम्हारउ णवियसुर

संभूइयाउ वणदेवयउ ।  
वैणवइ वणदेवी धणसिरिय ।  
इह पयउ पेच्छहु गयणयले ।  
रिसिदिज्जंतउं अवगाणियउं ।  
पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरदु । 5  
पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।  
हउं मरिवि पइयउ णरयविले ।  
वउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।  
सत्त जि अहरत्तइं भासियउ ।  
संणालु करिवि रिसिसमदिणइं । 10  
को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।  
लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि

सा मरेवि तुच्छोयरि ॥

पत्थु जि देसि चिरंतणे

उप्पलखेडइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे  
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय  
तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो  
रइसंभवसोक्खार्कखिणिहिं  
भणु भणु भुवि को अम्हं रमणु

उप्पणी पुत्ति अणिंदियहे ।  
जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।  
अम्हं मुक्को बंदिग्गहहो ।  
गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।  
ता कहइ काममयविइवणु । 5

21. १ MB चक्केसरिय. २ MB वणवइ वणदेवी. ३ MB गद्दु हुउ. ४ M दाढीभीसणु; B दाढा भीसणु. ५ MB वि.

22. १ MB °धम्मपालसिरिणंदियहे. २ MB मुक्कइ. ३ MB °विदमणु.

21. 1 a लंजियउ दासः. 8 b बउलें बकुलनाम्ना चाण्डालेन. 10 b रिसिसमदिणइं सत दिनानि.

22. 2 b मंदरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी.

जँ पाणें कय संणासगइ  
दरिसाधियसीहवग्गमुहहे  
सो होसइ तुम्हहं हिययर

घत्ता—माणवदेहु सुएण्णिणु  
गाढालिगणु देसइ

तहु तणउ पुत्तु अञ्जुणु सुमइ ।  
अणसणि थिउ सिद्धसेलगुहहे ।  
वरु सहुड णावइ कुसुमसर ।

जम्बु सुदि हवेण्णिणु ॥  
तुम्हहं पुलउ जेसणइ ॥ २२ ॥

10

23

अञ्जुपडिंदु सिंगारधर  
तें वंदिउ गियगुरु गरुयगुणु  
जम्बुहि जाएवि जसेञ्जुणहो  
आगामिउं पुणु पसंसियउ  
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु गरु  
जायाउ ताउ णिदंसणउ  
अंसहंतें विरहविरोल्लियउ  
मुउ णौगदत्तवणिवरदु सुउ

घत्ता—तेत्थु जि गयणाणंदणु  
गेहिणि तासु वसुंधरि

द्वयउ आयउ सो वडेलवर ।  
सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।  
संणासु करंतहु अञ्जुणहो ।  
तहु गियमहिलत्तणु भासियउ ।  
लगउ देविहिं पसरंतकर ।  
विडि खुत्तउ वम्महमग्गणउ ।  
तेणप्पउ कक्करि वल्लियउ ।  
सहसत्ति पिसल्लेदेउ डुउ ।

5

पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥  
वाहइ णाहु वसुंधरि ॥ २३ ॥

10

24

अण्णु वि फणिदत्तु णामु वसइ  
वैणिउत्तं लोयदिडिभवणु  
पुरवाहिरि पइ किसि करइ जहिं  
दहिओल्लिउं अल्लयमीसियउं

तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।  
काराविउ तेण णायभवणु ।  
अण्हिं दिणि चाल्लिय घरिणि तहिं ।  
भोयणु गेण्हवि सुइवासियउं ।

४ MBK जँ.

23. १ B बउलवर. २ MB जसज्जणहो. ३ B अलहंतें. ४ MB °विरोलियउ; T विरोलउ.  
५ MB णायदत्त°. ६ MB पिसल्लउ. ७ B णाह.  
24. १ MB वणिउ. २ M फणिदत्तें. ३ MB ओयणु.

23. 1 b बउलवर बकुलनामा चाण्डालः. 3 a जसज्जुणहो यशसा श्वेतस्य. 7 a °विरोलियउ कदार्थतः; b कक्करि पर्वतशिखरात्. 8 b पिसल्ल देउ पिशाचः.

24. 2 a लोयदिडि भवणु लोकानां दृष्टेः सुन्दरतया भवनमाश्रयः. 4 a अल्लय° करमलम्; b सुइ-वासियउं कपूरैलाजीरकादिवासितम्.

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ  
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे  
दाणेण तेण जणसंश्रुयइ  
गिम्वाणहिं रयणइ धित्ताइ

आहार ताँसु तहि ढोइयउ । 5  
भुत्तउ मुणिणा संधिहिउ करे ।  
जायइ पंच वि अच्चम्भुयइ ।  
करकच्चुरियाइ विचित्ताइ ।

घत्ता—जोइवि मणिगणबुट्टी पणइणि तसिय पणट्टी ॥  
गय घणकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकंतहु ॥ ४ ॥ 10

## 25

तुह क्रूरकरंबउ आणियउ  
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं  
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय  
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ  
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउं  
तं णित्तुणिवि हउं गट्टी सभय  
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि  
तुहुं गुणमाणिकइं तणिय खणि  
पत्थर ण हौंति ते दिव्वमणि  
धरियउ विवक्खवइसेण धणु

जो तेण साहु मइं पीणियउ ।  
पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।  
गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।  
णउ जाणउं वज्जउं वज्जियउ । 5  
अण्णेत्तहि वरिसिरघणट्टुणिउं ।  
ता भणइ णाहु हँलि तुहुं सदय ।  
पइ हौंतिइ होसइ मज्जु सिरि ।  
पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।  
इय भणिवि अहीहर दुक्ख वाणि ।  
उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु । 10

घत्ता—हिमगोखीराभासइ महु केरइ फणिवासइ ॥  
पडियइं रुइरहियकइं महु जि हौंति माणिकइं ॥ २५ ॥

## 26

इयरें पवुत्तु तुहुं खुहु खलु  
मा हरहि चोर रुसइ णिवइ  
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ

महु घरिणिहि केरउ दाणहलु ।  
ता दव्वु लणप्पिणु सो कुमइ ।  
को पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु. ५ B मणगणबुट्टी. ६ MB घणकसणहु.

25. १ MB णं. २ M वज्जुउ. ३ MB पेच्छिवि. ४ MB तुहुं हलि.

25. 5 b वरिसिरं गन्धोदकवर्षणशीलः. 9 b अहीहर नागभवनम्. 10 a विवक्खवइसेण नागदत्तेन.

सो राणउ अवरु वि सो वणिउ  
जिह जिह मणि तं सीकरइ धणु  
पुरदेवियमुकहिं दीहरहिं  
णरणाहु वि हियवइ संकियउ  
दिणणउ रयणोहु दणु गलिउ

घत्ता—अण्हिं दिणि पणयवरि  
आसाइयपरवित्तं

27

तं कड्डिउ कह व कह व धरिवि  
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि  
पहरंतहु उच्छलिवि खयलि  
उगयगंडेण वियारियउ  
धनसंखइ ववहारेण जिउ  
धणु वड्डिमु जायउ जेत्तिउं जि  
कुपुरिसु वसुगव्वे वग्गियउ  
तेणुत्तउं म धरहि भिउडिमुहुं  
पुणु तेण फणीसरु पुँच्छियउ  
मगंतहु किं पि ण दिण्णु वरु

घत्ता—वाणि पभणइ भुर्यभूसणु  
भो भो विसहरसारा

विस्मूढगूढ लोहं वणिउ ।  
तिह तिह जि होइ इंगालगणु ।  
भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।  
संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।  
भणु तववंतेण को ण मलिउ ।

दिट्ठुं मणि तरुकोडरि ॥  
एकु कहिं वि अहिदत्तं ॥ २६ ॥ 10

पुणु रोसहुयासं विष्फुरिवि ।  
गुरुपं पाहाणं हुंकरिवि ।  
णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।  
वणिणागदत्तु हक्कारियउ ।  
अहरत्तु वसुधरिवइहि णिउ ।  
हारिउ तहिं पिसुणं तेत्तिउं जि ।  
तं दव्वु सुकेउं मग्गियउ ।  
देवाण पहायइ देमि तुहुं ।  
हउं पइं किं देव गलत्थियउ ।  
ता भणइ सण्णु भणु देवि वरु । 10

वल्लु सुकेउविद्धंसणु ॥  
दिज्जउ मज्झु भडारा ॥ २७ ॥

26. १ MB विस्मूढु मुहु; K विस्मूढु गूढ. २ MB पुरदेवियमुकहिं; K पुरदेविइ मुकहिं. ३ M किं. ४ MB दिण्णउ. ५ M अहिदत्तं.

27. १ M गव्वं; B गरुपं. २. MB उगयगंडेण. ३ M अहरत्ति. ४ MBK जेत्तउं. ५ MBK तेत्तउं. ६ MB गव्वियउ; T वग्गियउ. ७ MB पत्थियउ. ८ MB भूभूसणु.

26. 5 a सीकरइ स्वीकरोति. 6 b ढंढरहिं राक्षसैः. 9 पणयवरि नागभवे.

27. 5 b अहरत्तु अवररवम्. 7 a वग्गियउ उद्धटो भूतः. 8 b देवाण देवाज्ञया.

28

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु  
प्राणावहारु तहु को करइ  
मइं तो वि तासु तुहुं अलिर्वहि  
भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ  
ता जायवि चितियविणियउ  
किउं गियमंतु विहावियउ  
णीसेसइं कम्मइं णट्टियइं  
मग्गइ पेसणु उरजंगमउ  
आणिवि भवणंगणि लहु ठवहि  
तहिं बंधिवि खंभि सुवणघणइ  
तुहुं तेत्थु वप्प सट्टेण विणु  
इय णिम्मइ भणियउ जइयहुं जि

घत्ता—ता विसहरु विहंसेप्पिणु  
मंकडंवेसु धरेप्पिणु

दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।  
जसु पुण्णु सहेजउं संचरइ ।  
मज्जायवयणु पइउं लवहि ।  
जइ णत्थि कम्मो तो पइं वहइ ।  
फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ । 5  
अहि हियइच्छिउ कारावियउ ।  
संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।  
वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।  
गरुआरउ वाणरु तुहुं हवहि ।  
गलि संखल लाइवि अप्पणइ । 10  
आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।  
तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि ।

तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥  
थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

29

खंभग्गसिहरि उड्डिवि चडइ  
अहि दिट्ठउ अंहिदत्तेण किह  
णेरतरु णिसिदियंइ गमइ  
विसि भणइ मित्त मइं मेळवहि  
ता तेण माणु अवहत्थियउ

उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।  
सज्झायहु लग्गउं साहु जिह ।  
लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।  
पडिवक्खे सहुं णिम्मउ चवहि ।  
घयणासु णवेप्पिणु पत्थियउ । 5

28. १ MB पाणाव°, २ MBT अल्लवहि, ३ MB केउं, ४ B विसहेप्पिणु, ५ MB मकड°,

29. १ M अहिदित्तेण, २ MB लग्गइ, ३ MB °दिवसइं.

28. 2 b सहेजउं सहायम्, 3 a अलिर्वहि समर्पव, 8 a उरजंगमउ भुजगः, 11 a सट्टेण  
विणु शाख्येन विना.

29. 4 a वि सि नागः.

परं मणुपं पाउं वि बद्धु जहिं  
 बुद्धीइ धणेण वि" तुहुं जि गुरु  
 तं गिसुणिधि मेळवि थलियउ  
 अवलोयवि विणयरअत्थवणु  
 संसेविउ गुणहरगुरुचरणु  
 गिम्मच्छराहि गिरु गिम्भयहि  
 दिक्खंकिंय धरिणि वसुंधरिय  
 मुणिवरु सुकेउ मुउ विदुरहरे  
 थालिं गु हणेप्पिणु गिरुवमिय  
 सम्मत्तालंकिंय भववर

वणिज्जइ साहसु काइं तहिं ।  
 भो वच्चइं मेळहि णायसुरु ।  
 फणिवइ वणिणा मोकल्लियउ ।  
 णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु ।  
 चिंधंके लइयउ तवचरणु । 10  
 गणिधहि पणवेप्पिणु सुव्वयहि ।  
 परिपालिवि छावासयकिरिय ।  
 उप्पणउ सगि सयारवरे ।  
 तेत्थु जि सुइं हईं तासु पिय ।  
 रामासु विराधैपणामयर । 15

वत्ता—भरहज्जणवणिणायइ  
 होंति ण वणभवणंतति

अपदमइ णरयणिकेयइ ॥  
 पुष्पयंतवासंतरि ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय  
 महाभवभरहाणुमणिणप महाकव्वे वणिणागदत्तसुकेउकहासंबंधो णाम  
 एकतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

४ MBK देउ. ५ MB जि. ६ MB मेळहि वच्चउ. ७ MB वणिवइ; T वणिणा. ८ M गुणइरु गुरु°. ९ MB गुणणिम्भराहि. १० MB गणणिहि. ११ M सुर हूवउ. १२ B विराम°. १३ M अपदमणरय; K पदमइ णरय°. १४ MB मणि°.

5 ७ धयणासु सुकेतुः. 8 ७ वणिणा सुकेतुना. 15 ७ रामासु तिर्यग्मनुष्यदेवलीपु; विरायपणामयर वीतरागपणामकराः. 16 अपदमइ णरयणिकेयइ अचः षण्णरकविलेपु. 17 पुष्पयंतवासंतरि ज्योतिर्निकाये.

गिसुरासुरविज्जाहरसरणे आसीणें आसि समवसरणे ॥

गुणपालजिणिंदें जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदरि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयणि विंत्तु कहाणउं  
इय जएण पुच्छिय भासइ सइ  
तेत्थु जि चारु पुंडरिकिणिपुरि  
ससिरिपौलु वसुपालु णरेसर  
ता चित्तिउ कुबेरसिरिमायइ  
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ  
अण्णु वि सो कुबेरपिउ भायर  
गयं वेणिण वि ते पुणरवि णाया  
एम भणंतिहि वामउ लोयणु  
हियवइ परमुच्छाडु ण माइउ

तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।  
सिरिपौलहु केरी गुणसंतइ । 5  
घरसोहाणिज्जियसुरवरघरि ।  
सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसर ।  
जंपिउ मुहुकुहरग्गयवायइ ।  
एकु ण दीसइ णाहु महारउ ।  
तेयं णिज्जिय चंदु दिवायर ।  
किं जाणहुं विहाय सिविजाया । 10  
फंदइ सुहिंदसनसंपायणु ।  
ताम सैमुहं वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहर  
गुणवालु देउ सुरपरियरिउ

सुणि सामिणि केवलणाणधर ॥  
उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

बम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस ।

खण्डेण समं समसीसियाइ कइणे ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBK आसीणेणासि. २ MB बुत्तु. ३ MB सिरिवालहु. ४ M सिरिपालें वसु°; B सो सिरिपालु वसु°. ५ G °कुहरग्गय°; K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरग्गय°. ६ K गय ते विणिण वि. ७ M समहुं; B सुसुहुं. ८ M गुणवाल.

1. 10 b सि वि जा या शिवीभूताः मोक्षं गताः.

2

अण्णेकु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ  
जो कुबेरपउ जायउ मुणिवरु  
तं गिसुणेवि देवि रोमंचिय  
वंदणहत्तिइ गय परमेसरि  
चल्लिय सुंदर बोइय संदण  
दिट्ठ तेहिं उववाणि विहयायवु  
पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं  
तहु तलि जक्खु णाम जंगपालउ  
अत्ता—जंगपालणरिंदहु तवचरणे  
तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु

3

बिण्णि वि णारिउ बिण्णि वि णरवर  
तं गिसुणेवि कुमारें उंत्तं  
णरवेसेण सरलसोमाली  
तहि अवसरि कामें सरु ढोइउ  
दिळ्ळीइयउ णीवीबंधणु  
फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ  
सुसई वयणु खलियक्खरु भासइ  
पुक्खलवइविसयमि सुहम्मउ  
तहिं सिरिउरि लच्छीहरु णरवइ

ज्ञाणवसेण णिमीलियणेत्तउ ।  
सो आयउ तुम्हारउ भायर ।  
वेल्लि व अमयरसोहें सिच्चिय ।  
हुई हयगयलालामयसरि ।  
अण्णे पंथें बिण्णि वि णंदण । 5  
सदलु सहलु कोमलु वडपायवु ।  
संथुउ णाणं बुहयणवयणहिं ।  
अवरु णिहालिउ णरवरमेळउ ।  
सुंरु लोणं तहिं सणिहिउ वणे ॥  
वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥ 10

जइ णंच्चंति हौंति ता मणहर ।  
देव देव मइं मुणिउं णिरुत्तउं ।  
पह दुइजी णडइ महेली ।  
मायापुरिसें रमणु पलोइउ ।  
परिभमंति णयणइं कंपइ मणु । 5  
केसभारु दढबैदु वि वियलइ ।  
ता कंथुइइ सुहयहु सीसइ ।  
रम्मउ देसु धणोहें रम्मउ ।  
तहु सुहकारिणि वरिणि जयावइ ।

2. १ B omits from देवि down to चल्लिय in 5 a. २ MB विहियायउ; T विहयायउ.  
३ MB पायउ. ४ B जुगपालउ. ५ MB सुरलोणं.

3. १ MB णच्चंति. २ MB वुत्तं. ३ MB सरु कामें. ४ MB कंपिय तणु. ५ MB दढबंथु वि  
विलुलइ. ६ B सुसियवयणु. ७ MB कंथुइइ. ८ MB सहम्मउ. ९ MB सिरिउलि.

2. ७ a वि ह याय उ विहततापः.

3. 8 a सुह म्म उ सुहर्भ्यः.



जसमइ दुहिय महिय निर्वचंदे  
खयकंदपदपदुमकंदे  
पुरिसवेस णच्चंती जाणइ  
तं णिसुणिधि महु गायणवायण  
दिट्ठउ मंतिहि जं जिह जेहउ  
घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं  
णच्चावहि दावहि तणय तिह

पुच्छिउ जइवइ णविधि णरिंदे । 10  
अक्खिउ इंदभूइसवाणिंदे ।  
जो सो पुत्तिहि जोवणु माणइ ।  
दिण्णा रायं भाउण्णायण ।  
कळु पयासिउ तं तिह तेहउ ।  
णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥ 15  
वरइच्चु णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय  
सुय णयराउ णयरि णच्चंती  
एवहिं एउ समागय पुरवर  
णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी  
ताहं जुवेसं दिण्णइं वत्थइं  
एत्थंतिरि सुहिसुहइं जणेउ  
तहु वयणं चल्लिय विणिण वि जण  
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ  
आसु पमग्गिउ सो सिरिपाले  
घत्ता—सो तहि कयपरिणामे णडिउ  
आसणु जि सेण्णमज्झि चलिउ

ता मइं आणिय णं वणदेवय ।  
जणु णवरससल्लिं सिंचंती ।  
तुहुं दिट्ठो सि होसि एयहि वर ।  
णइपरमेसरपुत्ति दुइज्जी ।  
आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं । 5  
जणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।  
अग्गइ अणुंसरंति जा सज्जण ।  
णरवर चंचलतुरयारूढउ ।  
दिण्णउं धणु लेण्णिणु हर्येवाले ।  
सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥ 10  
हरि दूरु गंप्पि दूरुल्लिउ ॥ ४ ॥

5

बाहपवाहजलोल्लियणयणहं  
तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ

हाहारउ मेल्लंतहं सयणहं ।  
महिवइ माउसमीउ समायउ ।

१० MB निवर्धे.

4. १ MB णउ परमेसर°, २ B सुहइं जणियारउ. ३ MB अणुसरंत. ४ MB अणुवाले.

15 परिं वि वि परिभ्रम्य.

4. 1 a णिरावय आपद्रहित. 4 a सहेज्जी सहाया. 5 a जुवेसं युवराजेन श्रीपालेन. 8 a अरु-  
बउ अप्रसिद्धः. 10 कय परिणामे कर्मपरिणत्या.

इडुविओयसोयतवियंगउ  
जणणि वि सोउ करंति निवारिय  
गयइं तेत्थु जहिं जियवस्मीसरु  
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ  
भाणिउं कुबेरसिरीइ दुरासैं  
तहु भयवंत समागमु कइयहुं  
तइयहुं आयउं पेक्खहि बालउ  
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं

घत्ता—वेयडुमहामहिहरणियाडि

रिउणा तुरयत्तणु परिहरिउ

णं पक्खुज्झिउ पडिउ बिहंगेउ ।  
मंतिहि कह व कह व सा हारिय ।  
केवलणाणधारि जोईसरु । 5  
भत्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।  
पुत्तु महारउ णिउ मायासैं ।  
पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।  
ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।  
सिविरु मुयँप्पिणु मायापुत्तइं । 10

काणणि कुसुमियतरुवरि वियडि ॥

भीयरु रयणीयररुवु धरिउ ॥ ५ ॥

5. १ MB add after this the following lines:—

पेक्खेवि गंदणु सोयकंतउ  
अवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)  
हाहाकार करंतउ देविप  
कइहु एहु किं सुच्छिउ गंदणु  
केण वि कहिय वत्त परमेसरि  
तं गिसुणेवि वच्छ पभणंती  
अंगु समोडइ दुक्खैं राणी (B रीणी)  
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ  
किं अवहरियइं रणि वरंतइं  
हा किं पावैं हिउ महु गंदणु  
हा विहि दइव केण हरि डोइउ  
पुहइणाहु गुणमणिरयणायरु  
जेण अणंगहु हय बाणावलि  
कसु धाहावमि को आसंघमि

सयलु वि परियणु दिहु भवंतउ ।  
पुच्छिय मंति जगतयसेविप ।  
जो जगवंदु (B जगवंदु) जेम वरचंदणु ।  
हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।  
महियले णिवडिय देवि रुवंती ।  
सप्पि व दंडाहय विहाणी ।  
केण दुरासैं हयवर डोइउ ।  
पक्खिणिहरिणिवराहिहि पुत्तइं ।  
तिहुअणजणमणयणगंदणु ।  
जैं महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।  
हा कहं मुक्कु (Bकसु मुक्कु) रुवंतउ भायरु ।  
सो पइं पुत्त ण वंदिउ केवलि ।  
हा हा दइव कवण दिसि लंघमि ।

२ MB आवइ. ३ MB सुएविणु. ४ MB रयणियरत्तउ.

5. 1 a बाह° अश्रूणि, 4 b हारिय आश्वासिता. 7 b मायासैं मायाध्वन. 12 रयणीयररुवु  
राक्षसरूपम्.

6

उरयलविलुलियविसहरहारो  
 पंडुरपविरलदीहरदसणो  
 मंदरकंदरसंणिहैतौडो  
 सिसुससहरसमदाढाभीसो  
 णवघणसामलकुवलयकालो  
 भासइ हित्ता घरिणि महारी  
 कुड्ढो तुज्झु दुर्तंकयंतो  
 भैरइ कुबेरसिरीण पुत्तो  
 एण्ह भवजलसायरतरणं  
 मांमणिओ तुरएण कुमारो  
 ता विहंगजणियसुहिदुक्खो

कडियलवैलइयघोणसघोरो ।  
 वग्घचम्मवरविरइयवसणो ।  
 मणुयवसाचच्चिक्रियगंडो ।  
 जलियजलणजालाणिहक्खेसो ।  
 खयरो होऊणं वेयालो । 5  
 पइं गयैजम्मि सुचंपयगोरी ।  
 जासि इदाणी कह जीयंतो ।  
 अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो ।  
 जिणवरकमकमलं मह सरणं ।  
 इय जणवत्ताबुज्झियचारो । 10  
 पत्तो तहिं जयपालो जक्खो ।

घत्ता—रणभैरधुरधारियकंधरहो  
 जुवरायहु कारणि बुद्धरहो

चंडासिदंडमंडियकरहो ॥  
 अब्भिट्ठु जक्खु रयणीयरहो ॥ ६ ॥

7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस  
 मा णिवड्हि जलंति कालाणलि  
 मा ओहट्टउ आउ तुहारउ  
 अमरिसरसवसु कहिं मिणमाइउ  
 सो रक्खे खग्गेण दुहाइउ

जाहि जाहि विजाहरक्खस ।  
 वइवसवयणविवरि जगघंघलि ।  
 मा तासहि कुमारु महु केरउ ।  
 एम भणंतु महंतु महाइउ ।  
 वणसुरवर विहिं रुविहिं धाइउ । 5

6. १ MB °विरइय°, २ MB °संणिहउंडो, ३ MB गयजम्मे चंपयगोरी, ४ MB दुर्तु कयंतो, ५ MB एवहिं कहिं तुहु जासि जियंतो, ६ MB भणइ, ७ MB जाम णिहिउ; B सामणिओ; K माणिणिओ, ८ MB °सुहदुक्खो, ९ MB जगपालो, १० M रणभरधारिय°; G रणभरधारिय°.

6. 10 a माम णिओ मामकः मदीयः.

7. 2 b वइवस° यमः; °घंघलि व्यापदि. 4 b महाइउ महाहतः. 5 b वणसुरवर व्यन्तरदेवो यक्षः.

हय विणिण वि चत्तारि समुग्गय  
पहय चयारि अट्ट पडिआया  
हय सोलह बत्तीस भयंकर  
चउसट्ठिहिं वेउव्विउ रूवउ  
तं पि ठुव्विउ ववगयसंखहिं

घत्ता—रयणियरहु भुयवलु णउ कलिउं  
कि होही कम्मं गियंतियउं

गलगजंत दिव्वं णं दिग्गय ।  
अट्ट वि हय सोलह संजाया ।  
बत्तीसहं चउसट्ठि मउज्जुर ।  
अट्टावीसैंउं सउं संभूयउ ।  
जलु थलु णहयलु पिहियउ जक्खहिं ।

देवहु हियउल्लउं संचलिउं ॥  
भवियव्वु कुमारहु कितियउं ॥ ७ ॥

8

तैं तहु होंतउ सुंहुं पडिवण्णउं  
रुप्पयसेलहु उप्परि थाइवि  
रिउणा धित्तउ खयलोयरियउ  
सणिउं सणिउं सिरिसिहरइ ठवियउ  
फलहसिलौयलु ठंकिउ सरवरु  
तोयाकंखइ धवलि पवित्थरि  
चित्तइ बालउ विभिउं णिब्भरु  
ता तहिं अवसरि कामकिसोरी  
जलविवरंतरे सा पइसंती  
तेण वि मग्गे जायवि कोमलु  
घत्ता—यव्वेलेहिं चलंतिहिं लोयणिहिं  
कलसंकियकडिइ गियच्छियउ

थिउ विरपवि रुंहु पच्छण्णउं ।  
जोयणसउ गयणंगणि जाइवि ।  
देविं दें लहु विज्जइ धरियउ ।  
णिवणंदणु तहिं तण्हइ खवियउ ।  
दिट्ठउ जलु मैणिवि गउ सुंदरु । 5  
पसरियकरयलै लग्गा पत्थरि ।  
देससहावें सलिलु वि णिट्ठरु ।  
घडकडियल संप्रोइय गोरी ।  
दिट्ठी तरुणें णीरु भरंती ।  
रसिउ तेण सुकुसुमैरयपरिमलु । 10  
सो महिवइ मयंणुकोवणिहिं ॥  
पडिहैंहाइ णाउच्छियउ ॥ ८ ॥

7. १ M मत्त. २ MB पडिमाया. ३ M अट्टावीसा सउ. ४ MB य वट्ठिउ. ५ MB कम्मगियत्तियउ.  
8. १ MB सुइ. २ MB रूउ. ३ MB देवें दलु लहु; T दललहु पर्णलु. ४ MB °सिलायलि.  
५ MB मण्णविणु सुंदरु. ६ MB सवित्थरि. ७ MB °करयलु. ८ MB विमयं. ९ MB °संपाइयं.  
१० MB °रयपरिमलु. ११ MB ववलचलंतहिं लोयणहिं; K वलंतहिं. १२ MB मयणुकोयणहिं. १३ MB  
पडिहाइय णायाउच्छियउ; T परिहाइय.

8 b मउज्जुर मदोक्तः.

8. 3 a खयलोयरियउ आकाशादवतीर्णः. 10a को मलु मनोज्ञम् 12 पडिहाइयाइ प्रतिभाहृतया.

9

सरसमणुभ्रमवपणयसंनिद्ध  
हरि जइ तो तहु चक्रु ण लंछणु  
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ  
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि  
मइं अवलोइउ एक्कु जुवाणउ  
किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ  
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ  
ता संचलियउ पंच कुमारिउ  
णं कंदपे मल्लिउ मुक्कउ  
भासिउ भइं धवेलियगयणहिं  
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ  
तं णिसुणेपिणु विहसिवि धिट्ठइ  
घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ  
सीहउरि सहइ णरवालणिहुं

आइय भवणहु भासिउं सुद्धइ ।  
वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमैधणु ।  
रवि जइ तो सो ण वि अत्थं गउ ।  
तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।  
किं जाणहु तेल्लोकहु राणउ । 5  
सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।  
घोलउ थणयलि णं मणिहारउ ।  
गयहु पासि णावइ गैणियारिउ ।  
ताउ तासु आसण्णउ दुक्कउ ।  
किं जोयहु अँडुडुहिं णयणहिं । 10  
आसि कालि किं कत्थइ विट्ठउ ।  
दिण्णु पडत्तर जेट्ठकणिट्ठइ ।  
पर्यडम्मि देसि दुजोहणइ ॥  
लच्छीकंतइ णं लच्छिधु ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकंतहि लहुयारी  
मयणकंत मयणवइ कुमारिहि  
अवर वि विमल वयंसिय छट्ठी  
अम्हाहिं सहुं उववाणि कीलंती  
मग्गिउ ते ताएण ण दिण्णउ  
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुंभोहें

जयदत्ता एयहुं गरुयारी ।  
जयवइ जेट्ठुं जणमणहारिहि ।  
असणिवेयखयरिंदे दिट्ठी ।  
कासुयमइणेहेणुम्भंती ।  
पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ । 5  
एवहिं णरवइ काइं विवाहें ।

9. १ MB °समिद्धइ. २ MB कुसुमधणु. ३ MB गणियारउ. ४ MB धवलियवयणहिं. ५ MB अद्धद्धहिं. ६ MB पायडवि. ७ MB °णिउ. ८ MB लच्छिधउ.

10. १ MB मयणकंति. २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ. ३ M पडुभोहें.

9. 8 a गणिथारिउ हस्तिन्यः. 14 लच्छिधउ विष्णुः.

10. 4 a कासुयेत्यादि—विशुद्धेयविद्याधरस्य मतिः कामासक्त्या विह्वलीभूता. 6 b पिहुंभोहें पृथुज्ञानेन.

गेहिणीउ होसंति पिसकिहु  
पुणु अम्हइं मग्गइ तडिबेयउ  
चोरिवि आणियाउ णिक्करुणें  
तेण दुरासएण दुइंते

घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवरुछवि जणिउ  
अण्णउ हियवइ सोयंतियउ

तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चकिहु ।  
पिउँवयणेण णिइंसरु जायउ ।  
जलयसिंगसंचोइयचरणें ।  
णिहियउ णिजणि रोसु वहेंते । 10  
तार्द्धरजुयलसंणिहयणिउ ॥  
सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥ १० ॥

## II

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं  
लइ लइ घेरिणि कंत रिउचंडहिं  
भासइ सुहउं जइ वि रवण्णउं  
अण्णेक वि कुमारि संप्राइय  
णियडी होति अणंनै लेंद्री  
सवरें हय सारंगि व लोलइ  
तहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ  
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ  
सरसालाव तासु सुइ पाविय  
जं वल्लहु महुइ अवहंडिउ  
तं दोसेण विज्ज गय णासिवि  
इइं कामगहें विवरेरी

घत्ता—अचलत्तें णिजियमहिहरहु

सिरिसिहरहु चउजोयणसयहिं

अण्णु कि णाहु मत्थइ सिंगइं ।  
अवहंडहिं दीहहिं सुयदंडहिं ।  
कण्णारयणु होइ णादिण्णउं ।  
रक्खसिरुवें कहिं वि ण माइय ।  
पंचहिं सरहिं उरत्थलि विद्धी । 5  
सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।  
वणिघहिं गंधें णावइ हरिणिउ ।  
सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।  
णयणंजुवल मीणा इव भामिय ।  
जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ । 10  
थिय सेंसिमुहि अप्पाणउं दूसिवि ।  
पुच्छइ सुहउ तुहुं कहु केरी ।

सा कहइ सवइयरु णरवरहु ॥

रयणउरु अरिथ मंडिउ धयहिं ॥ २१ ॥

४ B णियवयणेण. ५ M णिरुत्तउ. ६ MB माद्धर°.

11. १ MB परिणि. २ MB सुहउ जइ वि सुरवण्णउं. ३ MB संपाइय. ४ MB रक्खसरुविणि  
कह वि. ५ MB लुद्धी. ६ MB पंचसरेहिं. ७ M णयणजुवल मीणी इव; B णयणकूव मीणी इव. c MB  
मंडइ. ९ MB ससिविमुह.

7 a पिसकिहु बाणयुक्तस्य. 9 b जलयसिंग° मेघमस्तकम्. 11 तार्द्धर° बिल्वफलम्.

11. 1 a किम्. 4 a सयणमग्गु पर्यङ्कः. 9 a तासु श्रीपालस्य; सुइ कणौ. 12 a विवरेरी  
निहला. 13 सवइयरु स्वव्यतिकरम्.

## 12

थणियवेउ तहि अत्थि णरेसरु  
असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ  
हउं तहु तणिय बहिणि पिय तडिरय  
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि  
दुरहु जोइओ सि मइं रोसैं  
णवर हउं जि हय वम्महकंढें  
दे<sup>१</sup> सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ  
एक्कवार जइ कंरि करु दोयहि  
तो जीवियफलु मइं जग्गि लद्धउं  
महुं विणए<sup>२</sup> पारद्ध महुच्छव  
तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि  
ता सा गय जवेण रयणउरहु  
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ

जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि

जोइवेयदेविहि वल्लहु वरु ।  
तेणाणेप्पिणु ईह तुहुं यित्तउ ।  
तें पेसिय पइं गियहुं समागय ।  
णिवडेप्पिणु खयलि गिरिखरयलि ।  
किर पइं हणमि णिसांयरिवेसैं । 5  
इंदचंदणाइंदविहं ।  
मच्छरु मेळिवि तुहुं ओलग्गिउ ।  
एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।  
तं तहि भासिउ तेण णिसिद्धउ ।  
जइ पइं देंति मिलेविणुं बंधव । 10  
कण्णासाहसेण हउं लज्जमि ।  
भासइ भाइहि मारियवइरहु ।  
मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं ॥

असहंतिइ असणिवेयससइ ॥

तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

## 13

ताइ गंपि सृहउ अब्भत्थिउ  
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ  
सो परिणेसइ रुइहयरविरहु  
रुहुं तुहारउ हियवइ भावइ  
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ

जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ ।  
थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।  
चक्कवट्ठि सिरिपालु महापहु ।  
विज्जुवेय पिय दुक्करु जीवइ ।  
हौतउ केण कम्म लंघिजइ । 5

12. १. B जाइवेय<sup>०</sup>. २ MB तुहुं इह. ३ MB णिसायरेसैं. ४ M दिहि. ५ MB करु करि.  
६ MB बहुविणए. ७ K मिलेप्पिणु. ८ MB मारीय<sup>०</sup>.

13. १ MB सिरिवालु. २ MB रुउ. ३ MBK विज्जवेय.

12. ३ a तडिरय विशुद्धेगा. 13 a पलसयलइं मांखण्डानि. 11 मयणवडाय मदनपताकानांजी.

जाहि दूइ हउं पिययमु होसमि  
तं गिखुगिवि गय भेहहु दूई  
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि  
कुमरिउ रमणभावसरगिल्लउ

बालहि लीलालिंगणु देसमि ।  
आलोइय कुमारी किस हूई ।  
अच्छइ णरमयरद्धउ जेत्तहि ।  
संभासंतु ताउ पुम्बिल्लउ ।

घत्ता—अवलोलवि सुंदरि सुंदरिउ  
णं मुणिवरवित्तिहि दुग्गइउ

वणि णट्ठउ खणि छे वि कुंयरिउ ॥ 10  
णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥ १३ ॥

14

आय गिसण्णी गियडि खगेसरि  
चवइ सवयणु पिहेपिणु हत्थे  
भो मणसियकणोहवित्थारा  
हउं वि खणेहिं जपिय पेक्खमि  
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ  
एम चवैपिणु मरगयतोरणु  
तहिं कुवेरसरितणुहु णिहियउ  
अणुदिणु पंतिहिं रइरसतुरियहिं  
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेपिणु  
अरुणावरणच्छणु खरतौडे  
णिउ णिवचंदु रंदगयणयलहु

णाइं समुदासण महासरि ।  
एत्थु जि घोरतवह सामत्थे ।  
मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।  
तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि । 5  
वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ ।  
खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।  
रत्ते कंवेलेण संपिहियउ ।  
जिह णउ धिप्पइ भूगोयरियहिं ।  
गय पणइणि पेसणु भौसपिणु । 10  
मणिगवि मासपिंडु भेरुंडे ।  
अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आपसपुरिसणामं कघरि  
तौ रक्खणभिच्चहिं णिममलहु

दूसहविओयसिहितावहरि ।  
घेरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥ १४ ॥

४ B सुंदर. ५ MBT छउओयरिउ and glass in T क्षामोदराः.

14. १ M अत्थु अ घोर°. २ MB भगेपिणु. ३ MB भावेपिणु. ४ MB सा. ५ MB घरि.

14. 3 a °कणोह° बाणौघः. 13 वप्पिलहु कच्छावतीदेशविजयार्थं मेघपुरे कम्पनराजा, राज्ञी विमा-  
निनी, तयोः वप्पिला, तस्याः दत्ता सा मुद्रिका.



## 15

णाणारयणपुरंतपईवइ  
जाव पक्खि धराणियलि परिट्टिउ  
तसिउ खयर उट्टिउ णहि चंचलु  
पडिउ धरहि किंकरहिं णियच्छिउ  
एतैहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु  
थइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं  
जें दिट्ठे णट्ठइ संचिउ मलु  
जें दिट्ठे कुदिट्ठि ओहट्ठइ  
जें दिट्ठे उवसमु संपजइ  
जें दिट्ठे दुग्गइगइ णासइ  
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवाँरउ  
योचचित्तु कइम्मगपसिद्धउ

सिद्धकूडजिर्णालयसमीवइ ।  
ता पहु अंगु वेल्लेण्णिउ उट्टिउ ।  
तहु पयणहल्लमाउ गउ कंबलु ।  
जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ ।  
दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकर । 5  
विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं ।  
जें दिट्ठे उप्पजइ केवलु ।  
जें दिट्ठे सम्मइ परिवट्ठइ ।  
जें दिट्ठे अप्पउ पर णजइ ।  
जें दिट्ठे जगु सयलु वि दीसइ । 1.)  
देवदेउ अरहंतु भडारउ ।  
गुणवालंगरुहें पारद्धउ ।

घत्ता--तुहुं मायवप्पु तुहुं संत्तियरु  
जिण णिम्मय तेरी जेहि तणु

तुहुं गिरलंकारु वि हिययरु ॥  
इह तिहुंयणि तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

## 16

इय वंदिवि जिणु गुणहिं विसिट्ठउ  
तौ तहिं संपत्तउ खयरणरु  
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ  
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि  
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु

मुहंमंडवि कुमार उवविट्ठउ ।  
आहासइ सिरसंजोइयकर ।  
अणिलवेउ णामें खगराणउ ।  
सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।  
पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु । 5

15. १ MB °जिणभवण °. २ M लेविणुउ दिट्ठउ; B वल्लेविणु तुट्टिउ; ३ MB एतएण तें दिट्ठउ.  
४ MB णिट्ठइ संत्तिय मलु. ५ M °णिवारिउ. ६ MB तिहुंयणि फुहु तेत्तिय.

16. १ MB मुहंमंडवि. २ MB उवविट्ठउ. ३ MB तौ.

15. 10 a दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्.

16. 1 a मुहंमंडवि रत्नमण्डपे. 5 a पणय° प्रणता केहयुक्ता वा.

गाढधरियसंजमसुहलीसैं  
जेणाएँ विहडंति सुणिविहडं  
होसइ सो वम्महसरभत्थहि  
हउं जोयहुं राएण गिवेइउ  
गेच्छंतु वि कुमार उच्चाइउ  
चिक्रमंति पासायहु उप्परि  
सा भोयवइ तेण सुईलीणें  
एह गारि आसीविस गाइणि  
विणु आहारें एह विसूई

घत्ता—खयरहिवपुरिसाणियंविणिइ  
थणजुवलउ णिच्चाणिरुवियउं

तं जाणिवि जंपियउ जईसैं ।  
सिद्धकूडजिणभवणकवाडइ ।  
वरु तुह सुयहि सुखवपसत्थहि ।  
णरवइ तुहुं एवहिं संभोइउ ।  
णहयरु तुरिउ णहेणुद्दाइउ । 10  
पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि ।  
णिंदिय वंधवसोयविलीणें ।  
एह गारि असुमक्खिणि डाइणि ।  
विणु सिहिणा वि नुरुलि संभूई ।

दुज्जणलीणइ मणैताविणिइ ॥ 15  
णियमणथइत्तणु दावियउं ॥ १६ ॥

## 17

कंदरेण विणु वग्गि महेली  
रयाणि व मिच्छहु पुरउ ण थक्कइ  
मईरा इव णिच्छु जि मयमत्ती  
हो हो उक्कंठिउ णिरु अच्छमि  
तो हउं जीवमि दिट्ठे गार्हें  
एम भणंतु रइयरिउभेयहु  
अण्णु वि अक्खिउ जिह णउ इच्छिउ  
णियसुयणिदावायविरुद्धें

गरलंसत्ति णं मारणसीली ।  
समलहु दोसायरहु पढुक्कइ ।  
सौणि वं दाणमेत्तकयमेत्ती ।  
मायभाउ जइ वेणिण वि पेच्छमि । 5  
होउ पढुक्कइ मग्गु विवाहें ।  
दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु ।  
जिह तं गारीरयणु दुग्गुच्छिउ ।  
तं णिसुणिवि खयरसैं कुद्धें ।

४ MB सहब°. ५ MB संभासिउ. ६ GK record a p सइलीणें इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शास्त्र-  
लीनेन वा. ७ MB परताविणिइ. ८ MB °धट्ठत्तणु.

17. १ MB गयसत्ति व णरमारण°. २ MB मयराइ व. ३ M साणि व दाणमतकय°; B साणिवक्का-  
कयमेत्ती. ४ MB दुग्गुच्छिउ.

० a सुहलीसैं शोभनहलीषेण (हलीशेन), धुरंधरेणेत्यर्थः. 7 a जेणाएँ येन आगत्येन. 9 a संभाइउ  
संभाविती इष्टः. 12 a सुइलीणें शास्त्रलीनेन. 14 a विसूई विगूचिका; b नुरुलि ज्वाला.

17. 3 a साणि व कुकुरीव.

उत्तउं उच्चापप्पिणु गिज्जाणि  
थेरिरूवुं रयपि दइव्वं  
घत्ता—छुड छुड जि गिहित्तउ बालु तंहिं  
झायंतु मंतु बलणिज्जियउ

18

तंविरेणेतइ पिंगलकेसइ  
विज्जइ वंतैउं जं जं जेहउं  
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ  
पुच्छइ पडु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि  
सिद्धी तुज्जु वीर परमत्थं  
लद्धदिव्वविज्जासामत्थं  
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु  
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ  
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं  
सुद्धु दुसज्जइ गिरिं गिरवज्जइ  
घत्ता—बारह संवच्छर इह वसिउ  
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं

19

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं  
गलिय रयणि उग्गामिउ दिवायरु  
रणि भवंतं तेण गिविट्ठी  
उग्गामिवि करु भिउंहुवि णयणइं  
चित्तइ णरवइ वीर होज्जउ तणु

पहु गहिळ्ळउ घळ्ळउ पिउवणि ।  
घत्तिउ सो तहिं तेण जि भिज्जे । 10  
हैरिक्केउ पवणजवपुत्तु जहिं ॥  
सव्वोसहि विज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

दाढाभीसणरक्खसवेसइ ।  
उट्ठिवि अंजलि तं तं तेहउं ।  
सुहडच्चित्तु ण वि किं पि वि भीयउ ।  
कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि ।  
तौ पविलोइय वुड्ढावत्थं । 5  
णियतणु पुसिय तेण णियहत्थं ।  
ता पत्तउ खयरहि वणंदणु ।  
हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ ।  
सो दिट्ठो सि देव णियंणयणहिं ।  
जाणिओ सि मैइं सिद्धइ विज्जइ । 10  
फलकालि अज्ज विज्जहि तसिउ ॥  
उज्जमु गिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

५ MB ०रूउ घरेवि. ६ MB जहिं. ७ MB ता हरिपवणजवपुत्तु तहिं.

18. १ MB दाढी. २ MB ०भीसइ, MB वमियउं, ४ MB ताए विलोइय. ५ MB बिहिं णय-  
णहिं. ६ MB णिव. ७ M संसिद्धइ.

19. १ MB भवन्ती. २ B जरु. ३ MB भिरुडिवि. ४ MB वरि होज्जइ. ५ MB गिन्वंधउ गिद्धणु;  
T विणिबंधउ.

19. 4 a मिउडुवि भुक्कुटीकृत्य. 5 a तणु तृणम्; b विणिबंधु विनिर्गतबन्धुः; बन्धुरहितः.

हौं किं पायरेहिं कलहिज्जइ  
ता चिरणारिइ गियतणु जेही  
ते हत्थे गियंगु पँरिमट्टउ  
पुरुमहिलइ रायहु विण्णवियउ  
जं जिह देहि देव णिव्वत्तिउ  
तासु गवेसा पेसिय रापं  
सीहसरहसरपूरियदिण्णिहि  
दिट्ठा सोलह सुहढ महाबल

थेरि भणेप्पिणु एह हसिज्जइ ।  
विहिय कुमारु तक्खणि तेही ।  
जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्ठउ ।  
मइ वरइत्तचरिउ सच्चवियउ ।  
तं तिह जररूकु परिउत्तिउ । 10  
वणि जंतं कुबेरसिरिजापं ।  
संठिय चउंदिउ मिलिय चउण्णिहि ।  
सोलह पत्थर वट्टपवट्टल ।

घत्ता—सो तेहिं<sup>१</sup> भणिउ सुमट्टुरगिरिहिं  
भो भो कुमार किं<sup>२</sup> चिक्रमहि

अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं ॥  
गोलयहु उवरि गोलउ थवहि ॥ १९ ॥ 15

## 20

इयरहं पंथिय जाहुं ण लब्भइ  
इय विहसेप्पिणु पंथिउ वुच्चइ  
जामि बण्ण किं पण पलावें  
एम्ब भणंतु वि धरिउ णिरंभिवि  
वट्टत्तिविडि वि रइय छइल्लें  
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ  
भिच्च कहंति महोसिहरूढहु  
पवणवेउ णामें खयरहिउ

रायाणइ गोसिणु णं दुब्भइ ।  
वट्टहु उण्णरि वट्टु ण थक्कइ ।  
रायविणोपं मिच्छागावें ।  
हेवोइल्लें सत्तिइ थंभिवि ।  
पुच्छिय किंकर बुद्धिमहिंल्लें । 5  
वट्टहि वट्टठवणु किं जुज्जइ ।  
उत्तरसेदियाहि वेयवुहु ।  
एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ ।

६ MB हा किह. ७ MB पर मट्टउ. ८ M जरसरुउ; B जरसत्तउ. ९ MB चउदिसि. १० B तेण. ११ G कं.

20. १ MB वि. २ BK बुकइ. ३ MBT वेहाइल्लें; GK record a p वेहाइल्लें इति पाठेप्यय-  
मेवार्थः; T हेवाइल्लें इति पाठेप्ययमेवार्थः. ४ MBK °महल्लें. ५ MB महासिहरूढहु; G महासिरूढहु.

7 a चिरणारिइ वृद्धजिया. 9 a पुरुमहिलइ अतिवृद्धया. 13 b वट्टपवट्टल अतिशयेन वृत्ताः.

20. 5 a वट्टत्तिविडि उतरंडी (?); छइल्लें धूतें. 8 b अक्खयराहिउ अक्षरद्रव्यसाधिपः.

जो आवइ णरु बट्टपरिक्खहि  
उज्जलवण्णउ णवल्लायण्णउ  
गयं अणुयर णियणियरायंतिउ  
मेहविमाणसिहंरि जोप्पिणु  
यक्कु महाणयरहु बहि जाम्बहिं  
यत्ता—जरकसरसिरइ लंबियथणिइ  
हउं रीणी माइ किं पि चविउ

21

पंसिदिलचम्मछिरौलविवण्णी  
णिववालहु केरउ सिरिमाणणु  
छुहतण्हापहखेयं खीणउं  
तिणिण तिसाल्लुहपहसमणासइं  
प्रसियाइं सुहयं रसेणिइइं  
वसुवालहु जाइवि दरिसेसंमि  
इय चितंतु जाम सो अच्छइ  
ता बुड्डइ कुंदुज्जलदंतिइ  
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि  
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि  
जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ  
कवणु णयरु को तुहुं के जायउ  
यत्ता—तं णिसुणिवि भासइ चक्कवइ  
गुणपौलु राउ तहु तणउ सुउ

सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।  
सो परिणैसइ सोलह कण्णउ । 10  
कुवरं अग्गइ गमणु जि चितित ।  
भूयरमणु काणणु मेहेप्पिणु ।  
अवर वि बुड्ड पराइय ताम्बहिं ।  
आवेप्पिणु थेरणिंयंविणिइ ॥  
कुवलीहलपिडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥ 15

तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी ।  
दिट्ठउ ओहंल्लिउं कमलाणु ।  
अंगु णिहालवि णिरु विद्धान्णउं ।  
दिण्णइं बोरेइं अमयाभासइं ।  
वीयइं वीरंचलइं णिबद्धइं । 5  
णियपुरणंदणवणि पइरेसमि ।  
णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।  
देहि मोल्लु भासिउ पहसंतिइ ।  
वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।  
जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि । 10  
तो णिहणमि दालिहु तुहारउ ।  
भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।  
पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णरइ ॥  
वसुपौलु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

६ MB परिणइ सोलह णिवक्कणउ. ७ MB गय णर णियणियरायइं मंतिउ; T अणुयर. ८ MB ०सिह. ९ MB तेण चविउ.

21. १ MB पसदिल. २ MB ०विराल. ३ MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं. ४ MB पासियाइं. ५ MB रसविद्धइं. ६ MB दसेसमि. ७ MB किं इह. ८ MB सक्कवइ. ९ MB दिण्णरइ. १० MB गुणवाल. ११ MB वसुवालहु.

11 a ०रायं तिउ राजसमीपे. 14 ०कसरं पाण्डुराः.

21. 1 a ०वि वण्णी विरूपा. 6 b पइरेसमि वप्पयामि.

## 22

जगि सिरिपल्लु गामु जाणिज्जमि  
 मायाहरिवरेण पत्थाणिउ  
 गुरुविओयसंतावें णिड्डिउ  
 जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि  
 भणइ तुड्डै भो तुहुं णर दीणउ  
 बोरट्टिलियउ बंधिवि लइयउ  
 परदोमैच्चु तुहुं वि किं णासहि  
 तेरउ पुरु महियरहं अगोयर  
 णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि  
 आरा सरु सा भणिय महीसैं  
 घत्ता—णवरुल्लिवि पयणियपुलइ  
 जाणिय तेण वि मायाविणिय

सुरवीणातंतिहिं गाइज्जमि ।  
 जोइसिपहिं असेसैंहिं जाणिउ ।  
 अच्छमि सुट्टु इट्टुउक्कंठिउ ।  
 णं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।  
 पण सहावें होसि ण राणउ । 5  
 कवणें दइवें तुहुं नुहुं रइयउ ।  
 अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।  
 कहिं तुहुं कहिं सो तुज्जु सहोयर ।  
 महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।  
 णासिउं रोउ पाणिसंफासैं । 10  
 आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥  
 लइ पइ खयरि मयणें वणिय ॥ २२ ॥

## 23

कहइ कुमार म भउंहुउ चालहि  
 कहइयेण किं पृउं आढप्पइ  
 ता जररुउ विमुक्कउ कण्णइ  
 भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल  
 तेत्थु धोयकलहोयमहीहरु  
 राउ अकंपणु विज्ञाहरवइ  
 णामें हुउं भुयणयलि पसिद्धी  
 णहयरणाहहिं मिलिंवि सणिद्धउ

हो हो केत्तिउ मइं खरियालहि ।  
 सव्भावेण मुद्धि प्लुहुं विप्पइ ।  
 उत्तउं कोमलसामलवण्णइ ।  
 पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।  
 तहिं रायउरि वसइ करिकरकर । 5  
 ससिपह गेहिणि धूव सुहावइ ।  
 सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।  
 महु विज्ञाजयपट्टु णिवद्धउ ।

22. १ MB सिरिवालु. २ MB अगेयहिं. ३ MB नुहुं तुहुं णरर दीणउ. ४ MB णिउ. ५ MB °दोगत्तु. ६ B णासमि. ७ MB °सपरिसैं.

23. १ MB खलियारहि; T खरियालहि. २ MB कइवण. ३ MB पिउ. ४ MB बुउ. ५ MB गयउरि णिवसइ. ६ K मिलवि.

22. 10 a आ रा सरु समीपमागच्छ. 12 वणिय व्रणिता.

23. 1 b ख रि याल हि कदर्थयसि. 2 a क इ य वेण केतवेन कपटेन.

को वर ताप पुच्छिउ जइवर  
अवर वि णिसुणि देव तुहुं सुहहलु  
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि  
ताहं पुत्ति वणिल महु पियसहि

तेण वि कहिउं तासु चक्रेसर ।  
कच्छावइवसुहहि रर्ययायलु । 10  
कंपणु खगवइ घरिणि विमाणिणि ।  
णं गोमिणिरेमणिहि वल्लह महि ।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय  
डज्झइ विरहें वेल्लहल किह

सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय ॥  
द्वदहणें अहिणववेल्लि जिह ॥ २३ ॥

24

घरं गइयहि मुहणिगयवायइ  
को वि आपसपुरिसु तहु मुहिय  
बालवयंसियाइ ण विक्कण्णिउ  
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं  
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु  
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि  
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु  
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु  
सुहव तुज्जु विओएं पीडिय  
कंदइ कणइ विमुक्कुत्तंसी

महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।  
पेच्छवि सुय मयणेण विमहिय ।  
मज्जु वि ताइ संहियउं समण्णिउ ।  
मेलावकु करमि सहु णाहिं । 5  
मयणवेयसीमंतिणिमणहु ।  
मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि ।  
जो जोइहिं भासिउ हयहिमदलु ।  
वियलिउ तहि तरुणिहिं मणि दिहिवलु ।  
चित्ताचकें सा वि भमाडिय ।  
दुकर जीवइ मज्जु वयंसी । 10

घत्ता—तं तेरउ पेम्पपरव्वसइ  
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ

उहामकामकीलणरसइ ॥  
पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB तुहुं जि, ८ MB रयणायलु, ९ B गोमिणिहि णवल्लहल महि.

24. १ MB घर. २ MB अमु. ३ MB वियाण्णिउ. ४ MB सहिउ. ५ MB सिसिरयराहें. ६ M तेरउ पेच्छवि; B तेरउ पुच्छिउ, ७ MB मण<sup>०</sup>. ८ MBT विमुक्कवयंसी; Gp विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; Kp विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

12 b गो मि णि र म णि हि लक्ष्मीलियः. 13 तोएं प्रस्वेदेन.

24. 3 b स हियउं स्वहृदयम्. 4 a स सिरय राहिं त्रन्द्रसद्वेनेन; b मेलावकु मेलापकः. 10 a विमुक्कुत्तंसी विमुक्तावतंसा.

## 25

तुहुं पत्थाणिउ तडिजवखयरें  
हउं णउ पत्तिंयंति गय तेत्तहि  
पयेंकुवलयसंबोहणचंदहु  
सज्जणणयणाणंदजणेरउ  
तेण पउत्तउ सिखुभूमीसर  
विज्जालाहें सहुं घरि पइसइ  
दिट्ठउ तुहं भायर अलिङ्कुंतल  
सुरमहिहरसमीवि णिवसंतइं  
कंदंतइं विमुक्कसिंरिंकेसइं  
पव्वइं पइसिंहिति पुरि तइयहुं  
घत्ता—णरतरु गर्थं गय जि गयागयउ  
भो वल्लह पइं एक्केण विणु

एव पजंपिउ णरंवइणियरें ।  
तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि ।  
पयहिं पडिय गुणपौलजिणिंदहु ।  
पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ ।  
सत्तमि दिणि आवइ भाभासुरु । 5  
पुरयणु सयलु जिं पउ जि भासइ ।  
दिट्ठी मायरि सोयविंसंठुल ।  
हा सिरिपाल्ल देव भणंतइं ।  
दिट्ठइं परियणसयणसहासइं ।  
तुहुं मिलिहीसि णरादिव जइयहुं । 10  
गणियाउ णाहं वणदेवयउ ॥  
जणसंकुलु पट्ठणु णाहं वणु ॥ २५ ॥

## 26

गिरिसरिंदरिवणसयइं णियंतिइ  
दिट्ठी मउलियच्छि लोलती  
विज्जुवेय तुह विरहें सोसिय  
जइ तुह पियसंजोउ ण संघमि  
णियभालयलि किसोयरि जाणहि  
भोयवइहि केरी वियलियमय  
उच्चउं ताइ वयंसिइ दिट्ठउ  
गिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिविणउं  
संतिअल्लु सयलहिं सुअरेव्वउ

खयरावासहिं पइं जोयंतिइ ।  
पंडुगंडुलियालयवंती ।  
मरणमणोरह मइं मन्नीसिय ।  
तो विज्जाहरपट्ठु ण बंधमि ।  
अप्पउ मा ललियंगि विमाणहि । 5  
रइयारिणि सहि तंहि जि समागय ।  
अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्ठउ ।  
जिणपुज्जुच्छउ परइ सण्हवणउं ।  
सिद्धकूडजिणिलइ करेव्वउ ।

25. १ BK णरवर°, २ MB पिय°, ३ MB गुणवाल°, ४ MB वि, ५ MB भायर तुह, ६ MB °विसंयुल, ७ MB सिरिवाल देव पमणंतइं, ८ MB सिरि, ९ MBK सव्वइं, १० M गयागजिगयागउ; B गय गय जि गयागयहो.

26. १ MB °दरिपट्ठणइं भमंतिइ, २ MB मंभीसिय.

25. ३ a पय कुवलय° प्रजा: एव कुवलयानि,

26. ३ b मन्नीसिय आश्वसिता, ५ b वि मा ण हि क्लेशय, ८ b परइ प्रभाते.



घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ  
भोयवइहिं तुहुं सहि गउरविय

अवरहुं वि लेहु मुइइ सहिउ ॥ 10  
हक्कारी तुह हउं पडुविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि  
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ  
सत्तावीसं जोयणवत्तउ  
असणिवेयखयरें वणि धित्तउ  
उच्चाइवि गियपुरवरु णीयउ  
हउं पइं दोदियहइं जोयंती  
जाम ताम तेरी विस्थारें  
पत्थायइ तुहुं मइं अवलोइउ  
कंचुइरुउ देव मइं धरियउ  
जाणिओ सि णेमित्तिकिबंधें

हउं आरुढी सिरिसिहरुप्परि ।  
दिट्ठउ तहिं काणाणि छक्कण्णउ ।  
भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।  
मइं कारुणणण मुगंणेत्तउ ।  
अप्पियाउ णरवालहु धीयउ । 5  
अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।  
कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।  
मयणें पंचेमु सरु मणि ढोइउ ।  
पिडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।  
कहिय पुंडरिंकिणिपूरचिंधें । 10

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥  
कह कइइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुष्पदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभवभरहाणुमण्णिण महाकवे विज्जाहरकुमारीविरहावण्णणं  
णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥  
॥ संधि ॥ ३२ ॥

३ MB हउं तुह.

27. १ MB मियणेत्तउ. २ MB पंचमसरु. ३ MBT नेमित्तिणिबंधें. ४ MB °पुरि°. ५ MB °विरहवण्णणं.

27. 10 a ने मि ति कि बंधें नैमित्तिकानामादेशेन.

### XXXIII

सव्वोसहिसामल्लु तरुणें तेण पयांसिउं ॥  
कयउं सुहावइयाइ गियउड्डुचु विणासिउं ॥ धुवकं ॥

1

संसाहियविज्जासासणेण  
उद्दामकामकामणमईहि  
वेणिण वि तारुणालंकियाइं  
तुह देउ महारउ प्राणइहु  
विज्जाहर पिस्सुण हणंति जेम  
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि  
धरि थेररूउ सुविचित्तकूड  
तहि वोद्वेहीउ पीवरथणीउ  
कंकेल्लिवालपल्लवभुयाउ  
ता खंधारोहणु कियउ तेण  
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु

कोमलकरयलसंफासणेण ।  
विहुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।  
खगकणइ वयणइं जंपियाइं । 5  
तुहुं चक्कपाणि सयमेव विट्ठु ।  
ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।  
चड्ड खंधइ से सुहकारिणीहि ।  
आवेहि जाहुं तं सिद्धकूड ।  
मिलिहिंति अल्लु तुह पणइणीउ । 10  
अवल्लोयहि खेयरवइसुयाउ ।  
सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।  
संपत्तइं जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइं उग्गुड्डुइं ॥

विणिण वि उड्डुइं ताइं मुहसालहि उवविट्ठुइं ॥ १ ॥

15

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

विनयाङ्कुरशातवाहनादौ लपचके दिवमौघुणि क्रमेण ।

भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त ( प्रसक्त ? ) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °साहणेण, २ MB पाणइहु. ३ MB सुद्धारिणीहि. ४ MBT वोद्वेहीउ. ५ MB  
संपत्तउ.

1. 4 a उद्दामे त्या दि—उद्दामकामः श्रीपालः तस्य कामने सेवने मतिर्यस्याः सा तस्याः. 6 b विट्ठु  
विष्णुः. 8 b चड्ड आरोपय. 10 a वोद्वेहीउ तरुण्यः .

## 2

भोयवइ भडारी विज्जुवेय  
 मयणवइ समागय मयणलील  
 अण्णाउ मणोहरवणिगयाउ  
 जरसरिधुयसिरकेसासियाइं  
 अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि  
 छंडिविं जरत्तु जाणियमईइ  
 थिय पुणु पच्छणी सा कुमारि  
 वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि  
 ताइ वि बोळ्हाविउ पिउ अणंगु  
 भोयवइइ तहिं पारद्ध हासु  
 हलि असणिवेय सैसि काइं करहि

तहिं दुकी वण्णिल गिरुवमेय ।  
 रइरमाणहि केरी णाईं कील ।  
 कण्णाउ अट्ट अवइणियाउ ।  
 कुंयिरिहिं थेरइं संभासियाइं ।  
 पुणु कंचुइ थिउ विम्भंतवुंद्धि । 5  
 णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।  
 दुल्लक्खचार होणवि थेरि ।  
 भूमंगे दरिसिउ तडिरयाहि ।  
 मायाजराइ पच्छाइयंगु ।  
 उड्डुउ उप्परि पेम्माहिलासु । 10  
 लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयैरायसुर्याहिं बंभु महेसरु अच्चुउ ॥

गिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

## 3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु  
 विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु  
 मज्जे खीणहिं संखीणपाउ  
 कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्ल  
 णहचारकमियमंदरदरीहिं  
 अहिसेउ कयउ पुज्जापयाह

चंचलचित्तहिं गिरिधविरचित्तु ।  
 मृगेणेत्तहिं ज्ञाणणिलीणणेत्तु ।  
 थद्धैथणीहिं णित्थद्धभाउ ।  
 जणमणसल्लिहिं णिम्मुकैसल्ल । 5  
 वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं ।  
 ता वंक्कगीउ णामें कुमारा ।

2. १ MB मणोरम°, ६ MB कुअरिहिं, ३ MB विसमंतवुद्धि, ४ MB छडिवि, ५ MB सो जोइउ, ६ B सस; K ससे, ७ K खगराय°, ८ B °सुयहिं.

3. १ B omits from गिरि° down to मृगेणेत्तहिं inclusive, २ M भिग°, ३ MB थट्ट°, ४ MB णित्थट्ट°, ५ MBK णिम्मुकु, ६ MB वंक्कगीउ.

2. 11 a ससि हे भगिनि.

3. 1 b गिरिधविर° अतिशयेन स्थिरम्.

संपत्तउ सहुं णियपरियणेण  
आहरणविसेसहिं विष्फुरंतु  
ता हसिवि पउत्तउ कंचुईइ  
इय भोयवंति पुरि तिसिरराउ  
सुय तासु पहावइ जेहु पुत्तु  
पयहि रयणिहिं रुंजंतसाणि  
विरइउ विज्जइ कोट्टभाभंगु

थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण ।  
किं धावई णरमेळउ तुरंतु ।  
के के ण वि ह्य विज्जाहईइ ।  
णिवसइ रइपेहकंतासहाउ ।  
सिंहुं णामें गुणमंडणं णिउत्तु ।  
बहुवविणि साहंतहु मसाणि ।  
जरवेपं कंपावियउं अंगु ।

10

घत्ता—आवेप्पिणु पणपण भिसपं भेसहु दिण्णउं ॥

वडूंतउ जरलिं गु रायकुमारहु छिण्णउं ॥ ३ ॥

15

4

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ  
किह होसइ सिंसुगलंउज्जुत्तु  
सव्वोसहिं सिज्जइ भुवणि जासु  
करफंसें तहु चक्केसरासु  
आवेसइ सो जिणणाहणीह  
तहु दिवसहु लग्गिवि भडसमेउ  
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु  
अण्णेकु लहइ मंडलु हयारि  
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ  
ता वेज्जं वेज्ज घोसिउ णिवेणं  
णलिण्णहकरम्मो छित्तु जाम

आउच्छिउ जणणें वीयराउ ।  
तं णिसुणवि जइवइणा पउत्तु ।  
तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु ।  
होसइ सुयगीयाभंगणासु ।  
णामेण पसिद्धउ सिद्धैकूड ।  
अवयरइ पडु सररिउणिकेउ ।  
सो चुंबइ कण्णहिं तणउं वत्तु ।  
ता पभणइ धीहं परोवयारि ।  
धम्मेण करमि सामैत्थ सज्ज ।  
आरा सरु हो भासिउ णिवेण ।  
गल्लेमोडि पणट्ठी तासु ताम ।

5

10

७ M चावउ, ८ MBK तिसिइ राउ, ९ MB रविप्पह°, १० MB सिउ, ११ MB °मंडणु.

4. १ M सिंसुगलं उज्जुत्तु, २ MBK °गीवा°, ३ MB सहसकूडु, ४ MB वीर, ५ M.B सामस्यु सज्जु, ६ M विज्जु विज्जु; G वेज्जु वेज्जु but gloss वैय वैय. ७ MB सिवेण, ८ MB णरणाह, ९ MB गल्लेमोडिय फिट्ठिय.

9 b ° रुईइ अभिलषेण, 14 भिसपं वैयेन, 15 वडूंतउ जरलिं गु प्रवर्धमानं ज्वरस्य लिङ्गम्.

4. ४ b सररिउ णिकेउ सररिपुजिनत्तस्य गृहम्. 9 b सज्ज साम्यम्. 10 b आरा सरु समीप-  
मागच्छ, 11 a णलिणा ह° कमलसदृशेन.

गड मंदिरं तणुरुहु सरलगीउ

अवलौयवि सुहु पँहट्ट ताउ ।

परमेद्विघरंगणसंठिण

परकज्जारंभुक्कंठिण ।

केण वि कंचुइणा वाहि महिय

इय मंतिहिं वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता--विरइयकवडजराए ढंकिणववयकायहो ॥

15

चल्लिउ तुरिउ गरिंदु पासु तासु जाँवीयहो ॥ ४ ॥

## 5

छुड छुड करि चोइउ दाणवासु

जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।

अवईणणउ जाम खगिंदु तिसिरु

सुँहिसुहदंसण पाणीयतिसिरु ।

ता मायाविइ वंचणमईइ

णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।

पियजीवधंणरक्खणमईइ

मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।

पल्लट्टउ तिसिरु अपेच्छमाणु

जलहरवहजववाहियविमाणु ।

पत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु

तडिबेयायारु णरेसरासु ।

करसाहाणिहियइ मुहियाइ

कउ माणवणयणविमैहियाइ ।

गय पत्त सुहावइ अवर का वि

णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

5

घत्ता--णवईदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥

पाणियवत्थभियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

10

## 6

कणणउ हकारइ जाम तेत्थु

जलकीलहि दैतिउ कमलहत्थु ।

तामेक वि तरुणि ण दिट्ठ ताइ

गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।

पत्तहि रापं उद्दामतेय

अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।

१० MB मंदिर तणुरुहु ११ MB पहिट्टु. १२ MB जामायहो.

5. १ MB °दयाववासु; T ° दयाणुवासु. ३ B अइवणणउ. ३ M सुहसुहदंसणपाणीय°; B सुहिसुह-पाणीय°. ४ MB °वम्म°. ५ MB° विमुहियाइ.

10 जाँ वाय हो जामासुः.

5. 1 a दाण वासु मदवर्षः; b छज्जीवदयाणि वासु षड्जीवनिकायेषु दयायाः निवासः. 2 b °तिसिरु सत्तुणः. 3 b मउ मृगः; मईइ मृग्या. 5 b जलहरवह° आकाशम्. 6 b तडिबेयायारु विशुद्देगुरुपम्. 7 a करसाहा° अङ्गुली.

अवणियउ समाहप्यंगुलीउ  
तां तहि अवसरि तहि चेडियाइ  
धयरडुसिलिंधयगामिणीइ  
जलरमणकजसंकेइयाउ  
अलिचुंवियगयलंबियधयाउ  
तहि गय हउं णिहिय समीवि तुज्जु  
कण्णाकारणि मच्छरु वहंति  
एहउ जाणिवि महु राणियाइ

णियरूवधारि थिय मंतु गीउ ।  
किं मुइइ हत्थहु फेडियाइ । 5  
सुसुद्धावईइ मह सामिणीइ ।  
इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।  
अण्णेत्तहिं कत्थइ जहिं गयाउ ।  
अवरु वि णरिंद वज्जरमि गुज्जु ।  
असमंजसु भुवुं पइं ते वहंति । 10  
उव्वसिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वइरि खयरिंद ताहं णाणुं दलवट्टिउ ॥

अंगुत्थलियइ णाह तुह सैरुवु पल्लट्टिउ ॥ ६ ॥

7

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि  
चिंतेज्जसु अज्जु महाणुभाव  
सविमाणविलंबियविविहकेउ  
ससहोयरिरूउ णिहालमाणु  
खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति  
अण्णेकैं मुणियपर्वचएण  
सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण  
दडुव्वसोकखउप्पायणेहिं  
विणु मुइइ कण्ण जि पुरिसरयणु  
जं वज्जरंति गुणवंत साहु

णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।  
वंचेज्जसु पिसुण ससुद्धाव ।  
एत्थंतरी पत्तउ असणिवेउ ।  
गउ सो णहेण खरभाणुभाणु ।  
महु महु जि बहिणि सयल वि भणंति । 5  
तावक्खिउ तहिं कुसुमंचएण ।  
गय णयरं रुक्खारूढएण ।  
मइं दिट्ठउ अप्पणु लोयणेहिं ।  
सच्चउ णउ भासामि अलियवयणु ।  
गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु । 10

6. १ MB तो. २ MB °सिलिन्धय°. ३ M सुसुद्धावईइ. ४ MB °गयलुंबिय°. ५ MB भुज.  
६ MB भाणु. ७ M सुरुउ; B सरुउ.

7. १ M ससुद्धाव; B सुद्धाव; T ससुद्धाव. २ MB मुइइ.

6. 4 a अव णियउ अपनीता स्फेटिता; समाहप्यंगुलीउ माहात्म्यसहिता मुद्रिका. 6 a °सिलि-  
धय° बालः.

7; 2 b ससुद्धाव हे समुद्रध्वने. 4 b खरभाणु भाणु तीव्रदित्यकिरणः. 6 b कुसुमंचएण  
मालिकेन. 7 a सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण शोभनेन निजरूपेण परिस्थिते श्रीपाले यादृशं दर्शनं तत्रामूढेन  
अभ्रान्तेन.

जो अग्गइ होसई चक्रणाहु

णिच्छउ सो पडु सिरिणालु एहु ।

घत्ता—धम्मोरुढगुणगि जो आरुढउ भावइ ॥

इहु सो धम्महवाणु णारिसरीरई तावइ ॥ ७ ॥

8

ता धाइय भड आहवसमत्थ  
लद्धउ वइरिउ कहि जाइ अल्लु  
इय भणिवि पवेदिउ खेयेरेहिं  
णं सिहरि पलंविजलहरेहिं  
णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं  
जोएप्पिणु सरवरु सारणालु  
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त  
अवलोयवि रिउसेणावियारु  
णउ दिहु तेहि सो तेत्थु केम

हणु हणु भणंत हलमुसलहत्य ।  
कहिं होइ राउ कहिं करइ रल्लु ।  
णं पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं ।  
णं दिवसु दिवसणाहाकरेहिं ।  
हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं ।  
हंसीमुहचुंभिय सिद्धु मरालु ।  
सा पियवयंसि भणिवावि पत्त ।  
वालइ अहंसणु किउ कुमार ।  
अण्णणिपहिं सव्वणहु जेम ।

5

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ ॥

10

पुच्छुत्तइ जिणगेहि वरु संगिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु ।  
णियमुहओहामियचंदकंति  
धरणीसु ताइ मुहाइ रहिउ

गय सुंदरि णिययणिहेलणासु ।  
पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति ।  
णं कामु कामकामिणिहि महिउ ।

१ MB होइइ. ४ MB सिरिवालु. ५ M धम्मोरुढ गुणग्गे;

8. १ MB आहवि समत्थ. २ MB पलंविउ. ३ MBK दिवसणाहइ. ४ B अण्णणिहिं हिंस व एहु जाम. ५ B पुव्वत्तइ.

9. १ MB णियसुणिहेलणासु, २ MB णियमुहु ओहा.

12 धम्मोरुढ गुण गि धनुष्यारुढस्य चडितस्य गुणस्य दोरस्य अग्नेतनभागे.

8. 10 परिहत्थु शीघ्रम्.

अवलोयाव वणिल सालण  
इहु सा णरिउ गुणपालतणउ  
जो गिज्जइ देवेहिं धरिवि वेणु  
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ  
जिणपंगणउ रायाहिराउ  
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि  
कालक्खगुहहि कालाहिवासि

परियाणिउं उण्णयमालपण ।  
जो पणइणीहिं संजणियपणउ । 5  
जो दुत्थियसंज्जणकामधेणु ।  
इय चित्तिवि धाइउ धूमकेउ ।  
उक्खिच्चउं गरुडं णाइं णाउ ।  
कालइरिहि णच्चियणीलगीवि ।  
धित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि । 10

घत्ता—दाहिणँदइवारंभि खयकालेण विवज्जिउ ॥

सेज्जहि णाहु गिसण्णु कालमुयंगे पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु  
जिह चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ  
जिह णिउ णरवइ अण्णत्थ झ सि  
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु  
णउं रक्खिउ किं आपसपुरिसु  
तावेत्तहि रइसुदलुंइएण  
चंदउरि णिसिहि तमज्जालणीलि  
ताडिउ खमं पुणु मोग्गरेण  
णउ भिज्जइ सुलै सव्वलेण

तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्म ।  
जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ ।  
जिह केण वि ण मुणिय पुण वि यत्ति ।  
किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु ।  
किं आउंविउ महु होंतु हरिसु । 5  
वणिलमेहुणपं कुइएण ।  
पेयालइ पहु णिक्खिउ सुलि ।  
पुण्णाहिउ णउ धिप्पइ भरेण ।  
णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण ।

घत्ता—धित्तउ जलणि जलंति तहि वि परिट्ठिउ अवियलु ॥

जिणपयपोमरयासु अणिगि वि जायउ सीयलु ॥ १० ॥

10

१ MB गुणवाल°, ४ B °सज्जस°, ५ B पंगणाहि ६ B उक्खिण्णउ, ७ MB दाहिणि, ८ MB विसज्जिउ.

10. १ B किं रक्खिउ. २ MB °लद्धएण.

9. 4 a साल एण इयालेन. 9 b °णीलगीवि° मयुरे. 11 दाहिणं अनुकूलम्.

10. 10 जल णि ज्वलने अग्नौ.



## 11

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ  
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि  
जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति  
करडयलगलियमयजलपवाहु  
घावंतु पंतु गिरिवरसमाणु  
रयपिजरु कुंजरवर वि खलइ  
वणगलियरुहिरं करसडियणास  
खंयखासजलोयरजणियसोय  
णित्थाहसंलिलि सरहयदियंति  
माणिककिरणमालाविचिसि  
जिणु सुमरंतहं जलयररउहि  
जिणु सुमरंतहं मंगलइ होंति

विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ ।  
ओवडियसुहडसंगामकालि ।  
धीरं वि पच्छाउहुं ओसरंति ।  
गुमुगुसुगुमंतचलमहुयरोहु ।  
उरि देंतु वेहुं बडयविसाणु । 5  
जिणसुमरणकुसंकुसिउ वलइ ।  
अविणट्टकट्टकुट्टाविसेस ।  
जिणु सुमरंतहु णासंति रोय ।  
करिमयरमच्छपुच्छुच्छंति ।  
कल्लोलंदोलियजाणवसि । 10  
बुद्धिजइ ण कयाइ वि समुहि ।  
पर्यसंखलवलयरं परियंलंति ।

घत्ता—सचु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासर ॥

जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसर ॥ ११ ॥

## 12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु  
आसीणु सिलायलि रायहंसु  
अइबलु णामें पुरि वसइ तेत्थु  
णं वम्महरायहु तणिय सेण  
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण  
आगय पिउवणहु तहि णिभाणु  
चित्तिउ अणाइ जयलच्छिगेहु

सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु ।  
णं भिसिणीदलयलि रायहंसु ।  
विज्जाहर विज्जाबलसमत्थु ।  
तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण ।  
सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण । 5  
दिट्ठउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु ।  
ण पलित्तउ पयहु तणउ देहु ।

11. १ M सुमरंतहु; B सुमिरंतहु. २ MB वीर. ३ MB पच्छामुहु. ४ MB 'वरमहु'. ५ MB लोहबद्ध. ६ MB रुहिर. ७ MB खरखास°. ८ MB खरखाय°. ९ MB परिसंखल°. १० MB परिगलंति.

11. 2 a अ सी ति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसंघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला अत्र. 8 a ख य° क्षयरोगः. 9 a 'सरहय° जलेन हताः. 12 b पय संखल° पदे शृंखलाः.

जं तं होएवउं कारणेण  
इय भणिवि महिल कोऊहलेण  
णउ दड्डी जालाचारिएण  
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि  
अइबलु गेहिणिचरणयलवडिउ  
आवेहि कंति वच्चहुं णिकेउ

काई वं संबंधवियारणेण ।  
तहिं सा पविट्टु णबराणलेण ।  
सब्बोसहिरसहयवीरिएण । 10  
अवइणणउ ता पिउवणणिवासि ।  
हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णडिउ ।  
ता चवइ भुत्ति संभरिवि हेउं ।

घत्ता—हक्कारहि णियबंधु दीहुं धरेप्पिणु गच्छमि ॥

असइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥ १२ ॥

15

## 13

ता महिलारहरंसवेंमलेण  
उवविट्ठी सहरिणि धगधगंति  
सा तेण ण दड्डी कैह वि केम  
वंदिय लोएण महासईहि  
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु  
णिगंन्वसीलु को संपयाइ  
भणु सईसिउ रायपैसाउ कासु  
वसणेण ण किउ कौ जगि णिरत्थु

मेलाविय बंधव अइबलेण ।  
हुयंवाहि दूसहि विद्धत्थधंति ।  
मायाविणि वेस जँडेण जेम ।  
हुयउ सिहि सीयलु सुहमईहि । 5  
पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु ।  
पारडिउ को सेविउ दयाइ ।  
सघरत्थु वि कंण डहइ हुयासु ।  
असईयणें वंचिउ को ण पत्थु ।

घत्ता—अविबंधिउ णारीहिं महियलि को वि ण वच्चइ ॥

भरहुप्फदंतेहिं पेच्छउ जणु जिह रुच्चइ ॥ १३ ॥

10

इय महापुराणे तिसडिमहापुरिसगुणालंकारे महाकरपुष्पयंतविरहए

महाभन्वभरहाणुमणिणए महाकवे विजाहरीमायापवंचणे

णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥

॥ संधि ॥ ३३ ॥

12. १ MB वि. २ T भेउ. ३ MB दीउ. ४ MB असइत्तणयकलंऊ.

13. १ MB ०रसविमलेण. २ MB हुयवइदूसहि विद्धत्थवंति. ३ MB कहि. ४ MB विदेण.  
५ MB णिगंन्वसीलु. ६ MB सासउ. ७ M पसाय. ८ MB किं. ९ MB जगि को. १० MB अविबंधिउ.  
११ MB पेच्छउ.

12. 1 a अ इय पि डु अनुपहतथारीर. 7 a अणइ अनया. 10 a जालाचारिएण उवलतः.

13. 2 b विद्धत्थधंति विध्वस्तध्वान्ते. 3 b वेस वेइया. 7 a सासिउ साधतः. 10 भरइ  
नक्षत्रप्रच्छादको.

### XXXIV

सा कवडपरैवइय आलुं चियवय गियपियभवणि पइड्डी ॥  
कामिणिमणहारै तहिं जि कुमारे कण्णपिसल्लिय दिट्ठी ॥ ध्रुवकं ॥

1

जियसत्तु विमलमइ देविसुय  
विज्जासंसाहणि गहगहिय  
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ  
तहु तहु तुहु बंधुं देहि सूर्य  
ता तरुणं मंतवसिल्लियहि  
अवरोप्यरु हियवउं दोइयउं  
ईसावसेण रुसिवि वरहो  
बुज्झिउ णरणाहै चक्रवइ

कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।  
आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।  
इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ । 5  
महु तणयहि करहि सणाहक्रिय ।  
पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।  
दोहिं वि अहिलासै जोइयउं ।  
गय झ सि सुहावइ गियघरहो ।  
आणिउ गियभैवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥  
तेहिं वि पुर्यं मुद्धहिं रूँवालुद्धहिं गियगियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

तीम्रापहिवसेषु बन्धुरहितेनेकेन तेजस्विना  
संतानकमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ संप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ MB °पइवइय. २ MB बंधउ. ३ MB सिय. ४ MB किय. ५ MB °भुवणहु. ६ MB पिय. ७ MB सुहु विमुद्धहिं; B सुट्टविमुद्धहिं.

1. 1 °पइवइय पतिव्रता; आलुं चियवय त्यक्तव्रता. 6 a सूर्य श्रीः. 7 b पिसल्लियहि पिशाचशृङ्गीतायाः.

## 2

ससुरेण भणिउं भो वंदसुह  
 तेण वि तहु वयणु पलोइयउ  
 हे माम ताम मं गेहि तहि  
 तहु मिलिवि धरमि करु सुंदरिहि  
 तं गिसुणिवि सज्जनमणु मुणिउं  
 सुंदरु लणवि बहुसोक्खयरि  
 ता सुदउ लण्णिणु भमियंगेहे  
 गिसि गिवइ तिसइ सोसियवयणु  
 जलु जोयहुं बलिउ खगाहिवइ  
 ता सुक गिरिक्खिय तेण किह

कीरइ विवाहकल्लाणु तुह ।  
 हियउल्लउं वंघुविओइयउं ।  
 वसुपांलु सहोयरु वसइ जहिं ।  
 सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।  
 जियंसचुं सैलिलसेणु भणिउ । 5  
 लहुं जाहि पुंडरिंकिणिणयरि ।  
 गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।  
 पत्तउ विमलउरुचुंगतणु ।  
 जा दिट्ठि कमलवाविहि धिवइ ।  
 गिण्णेह विलासिणिकील जिह । 10

घत्ता—दर्सियवेहुण्हइ लइयउ तण्हइ धायल्लकइ रीणउ ॥

णवसत्तच्छयतलि खगकोलाहलि जहि अच्छइ आसीणउ ॥ २ ॥

## 3

विज्जाहरेण आसासियउ  
 आहिडिवि देव असेसु वणु  
 इय भणिवि वेयवाहिणि सरियै  
 अइअविइयहरिणुंत्तण्हियहि  
 रायाहिराय दलियावईइ  
 पिउ जाइवि मालइ ताडियउ  
 अलहंतु सलिलु विडउंभडहु

तहि जायवि पहु संभासियउ ।  
 मा वीहहि आणवि सिसिरु वणु ।  
 गउ दिट्ठ तेण पाणियभरियै ।  
 अणुहरिय सा वि मायण्हियहि ।  
 सोसिय कण्णाइ सुहावईइ । 5  
 तण्हाकिलेसु गिज्जाडियउ ।  
 आयउ सरसेणु सरियडहु ।

2. १ B वसुवाळु, २ MB जियसत्तु, ३ M सलिलासणु, ४ MB वुहुं, ५ MB भणिव गहे, ६ M दणियं.

3. १ MB आणउं, २ MB सरिय, ३ भरिय, ४ MB हरिणु व तण्हियहि, ५ MB वियडुम्भडहु, T विडउंभडहु.

2. 11 धायल्लकइ शीघ्रगमनोद्भूतोऽप्येव; रीणउ भ्रान्तः.

3. 4 a अईत्यादि—अतिशयेन विहता हरिणानां उत्पन्ना यया; ० मायण्हियइ स्रगवृणिकया.  
 7 a विडउंभडहु विटपा: वृक्षा: उद्भूता उल्लणा यत्र; ० सरसेणु वारिणेन.

छण्णइ कण्णइ बोह्णवियउ  
किं पाविज्जइ घर रमणुं पइं  
पयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ  
तं गिसुणिवि सो पल्लहु णर  
सयणहं संबंधु समासियउ  
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ

तुहुं केण बप्प वेहावियउं ।  
जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं ।  
मा करहि विचु अहिमाणमइ । 10  
णिविसेण पराइउ णिययघर ।  
णइवाविजलोहउ सोसियउ ।  
हउं पत्थु कुमारिइ संपंहिउं ।

घत्ता—तहि तणियइ मौलिइ चलमसलौलिइ पहु छुह तण्ह ण पावइ ॥  
जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कहि आवइ ॥ ३ ॥ 15

## 4

तं गिसुणिवि सयणहिं बोह्लियउ  
सिरिपौल कप्पतरुवरवइहि  
एत्तहि णंदणवणि संडियउ  
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ  
चित्तइ कुमार मुणिमणमहहु  
पइरत्तइ पुव्ववहुल्लियइ  
लक्खणपमाणमाणे मविय

कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ ।  
सामत्थु पघुदु सुहावइहि ।  
णरणाहु णरहु उक्कंठियउ ।  
हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ ।  
मग्गण पडंति किं वम्महहु । 5  
णिहंसणरुवु समुल्लियइ ।  
कण्णासरुउ तहु णिम्मवियउ ।

६ MB add after this the घत्ता complet:—

घत्ता—खरतावविमोसिं गिमाविसेसिं कच्छवमच्छवइह ॥  
असिलट्टि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हई ॥ ३ ॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवक as 4 etc, upto 18. ७ MB रमण.  
८ M णिवसेण; B णिमिसेण. ९ MB णयवावि°. १० MB संपिहिउ. ११ MB add after this the  
following three lines: हरिणुल्लउ वइइ ससंकु जलु, संजणइ सविबहु तेण मलु; मुहससहइ मिगणयणइं  
वइइ, अबंत जाहि पोटिम वइइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय. १२ MB  
मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ. १३ MBK °भसलालइ. १४ M किं.

4. १ MB सिरिवाल. २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पइसिवि पुव्ववहुल्लियइ.

4. 3 b णरहु वारिषेणस्य. 4 a दुज्जियइ केनाप्यपराजितः. 6 a पुव्ववहुल्लियइ सुखावत्या;  
b णिहंसण रुवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्तया.

चित्तं चिताडु भुवणवह  
महु केण कुमारिरूठु ठविउ

संचियैसंसयसंमूढमह ।  
विणु मुहइ पुणु किह संभविउ ।

घत्ता—तं रूठुं णिपप्पिणु महिल भणेप्पिणु दूसहमयणें भग्गा ॥  
णियगोत्तदिवायरं विणिण वि भायर विजोहर तहु लग्गा ॥ ४ ॥

10

5

एकहि भिसिणिहि दो हंसवर  
जइ होति होतु ण घडइ अवह  
एकहि तरुणिहि किं विणिण जण  
इय चित्तिवि रणु पारंभियउ  
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं  
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ  
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं  
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर  
रुप्पयरहरायहु तणउं घर  
रापें तहि चारु वियप्पियउ

एकहि किसकलियहि दो भमर ।  
सरु संघउ विंघउ कुसुमसरु ।  
मउकरयलेहि माणंति थण ।  
सुयणत्तणु विहिं वि णिसुंभियउ ।  
अंबरोप्परु कड्डियपहरणहं । 5  
विहि पेम्मणिबंधु रउहु किउ ।  
किं पुण इह अवरहं अहिणवहं ।  
उक्खयकरवालकरालकर ।  
णियमायाकुंयरिउ तुंगसिरु ।  
तणयाहरि सिचिहें समप्पियउ । 10

घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणिउं कुमारिहि एह कासु किं आइय ॥  
ता पीवरथणियइ खगैवामणियइ विहसिवि वत्त णिवेइय ॥ ५ ॥

6

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया  
एत्थ कामलंपडेण खेयेण आणिया  
हारदोरभूसियंगि तारतंबणेत्तिया

पुंडेरिणिणीपुरीणराहिवस्स पुत्तिया ।  
भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया ।  
जंपए ण भाउमाउआविओयतत्तिया ।

१ M संचियसंपय°; B संचियसंपय°; T संचिय°. ४ MB °रूठु. ५ B विजाहरहो.

5. १ MB रहसेण पवाहियवाहणहं. २ MB उक्खयसुकरालकिवाणकर. ३ M °कुयरिउ तुंगसिरु.  
B °कुवरिउतुंगसिरु. ४ B रायहु तहु चारु समप्पियउ. ५ B सवर ६ MB खगकामिणियइ.

6. १ MB पुंडेरिणिणी°. २ MB °भूसियंग.

5, 6 b रउहु अतिशयवान्. 10 b सि विरु आवासः. 12 खगवामणियइ वामनीरूपया विद्याधरक्रिया.

ताम जक्खवेदवण वड्डिमा वियारिया लच्छिवाल चक्खवट्ठि एस णो कुमारिया ।  
 खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी । 5  
 दक्खवेहि वल्लहं विल्लासभासियाण संगहं सुहवं समीणिणी अदीणमाणणिग्गहं ।  
 तं मुणेवि सुंदरीइ एणलंछणाणो रुंवि वम्महो गहीररायरिद्धिमाणो ।  
 मंतिऊण चित्तिऊण दिव्वमंतसंगमं दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविष्ममं ।  
 दंसिओ बहुल्लियाण पुंडरिकिणीवई तं पलोइऊण ताण वट्ठिया मणे रई ।  
 का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।  
 पंज्जरंतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया चलंतचामरोहिं विज्जिया ।

घत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥

भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णवियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी बाला लइ थविय सा अम्हहं खुज्जई दक्खविय ।  
 सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु नाम रायाहिवइ ।  
 ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियंसवर ।  
 असिकणयकौतविष्फुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगाममिस ।  
 सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह । 5  
 तहिं समइ खरिगिदु पराइयउ जामाउ सिणेहें जोइयउ ।  
 जाणिउ परमेसरु चक्खवइ संतासिउ विज्जाहरणिवइ ।  
 संमाणिउ कंकणकुंडलोहिं वरहारदोरमणिउज्जलोहिं ।  
 तियसाहवजयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।  
 चित्तिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं । 10

३ MB विलासहाससंगहं. ४ M समणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण. ५ MBK सुणेवि. ६ MB रुव°.

७ MBK add का वि before this.

7 १ MB जक्खइ. २ MB इच्छियसमर. ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ. ५ MB तियसाहिंव°.

6. ० b अदीण° प्रचुरः. 7 a एणलंछणाणो चन्द्रमुखः.

7. 9 a तियसाहव° त्रिदशसंग्रामः. 10 a समेहलहिं उपशमवाग्गस्वीकारेण युक्ताभ्याम्; b समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्.

घत्ता—थिउ कण्णारुवें मायाभावें रिउ रणि णउ संघारिउ ॥

गयं विज्ज पणासिवि गुणगणु वूसिवि अप्पउ पर वेयारिउ ॥ ७ ॥

8

गयदिणि जं अम्हहिं कलहियउ  
खगणाहें णववर पुच्छियउ  
पुणरवि संजायउ पुरिसुं जिह  
तं गिस्सुणिवि तेण समासियउ  
गउ विज्जावइ गियमंदिरहु  
सुहंसुत्तु जि खयरिहिं हरवि णिउ  
गुल्लखंड रसायणु जेरिसउं  
किं वण्णमि तिहुयणसुहियउ  
मुहं तामरसु व आयाससरि  
जगगळयउ गयणु विरीइयउ

तं केण वि कहिं मि ण सलहियउ ।  
तुहुं महिलायारु गियच्छियउ ।  
वित्तंतु असेसु वि कहहि तिह ।  
वालासामेत्थइ विलसियउ ।  
णिहंमि रमिय तहु सुंदरहु । 5  
भणु कासु ण रुक्खइ प्राणमिउ ।  
सुहयहु सुहवत्तणु तेरिसउं ।  
णिज्जंतहु तांसुणिहियउ ।  
दीसइ वियसिउ चवलंबुहरि ।  
अरहंतु व तेण पलोइयउ । 10

घत्ता—पुणु गियसीमांतिणि तंतिणि 'मंतिणि चितिय तेण सुहावइ ॥

पइं विणु मणहारिण देवि भडारिण को रक्खइ महु आवइ ॥ ८ ॥

9

हउं णिज्जमि लग्गउ केण कहिं  
रवियरपज्जालियमउडमणि  
पभंणइ णिं जूरहि पुरिसहरि  
जं भणसि तं जि हेलइ करमि

किं जीवमि किं धुवुं मरमि जहिं ।  
तां पयड परिट्टिय णहरमणि ।  
ओहच्छमि हउं तुह विहुरहरि ।  
पलयकु वि गयणि जंतु धरमि ।

६ MB गय वजेवि णासिवि.

8. ५ M सालहियउ; B मलहियउ. २ MB णरवर ३ B पुरिस. ४ MB कहिउ. ५ MB 'सामत्तु पविलसियउ. ६ B सुहसुत्तु जि. ७ MB पाणपिउ; K प्राणिमिउ. ८ B 'खंड. ९ MBT तासु विणिहियउ. १० B मुह तामरसु. ११ MB गिराइयउ १२ MB भित्तिणि; T मंतिणि.

9. १ MB णिज्जमि; २ MB धुउ. ३ MB तो.

8. 8 b उ णि हियउ निद्वारहितम्. 9 a तामरसं पयम्. 11 तंतिणि अशेषधपरिज्ञानयुक्ता; मंतिणि अशेषमन्त्रपरिज्ञानयुक्ता च.

9. 2 b ण हरमणी विद्याधरी. 3 b ओहच्छमि एवा तिष्ठामि.



कमलवइहि दिण्णी दिट्ठि जहिं	ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं ।	5
कण्णाकारुण्णे पुण वि मइं	विरहें जलियउ जोयंतु पइं ।	
उच्चाइवि गेंतु णिहेलणउं	हरिसेण करंतु व भेलणउं ।	
हउं णिविसु वि पिययम जइ सुवमि	तो किं णिसि णिइइ सुहुं सुअमि ।	

घत्ता—इह जणवइ खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि ॥

दिट्ठुदिट्ठसरीरी होइवि धीरी पैइ वि भडारा रक्खमि ॥ ९ ॥ 10

10

वल्लहंतरंगंगकंपणं	एम जाम जायं पयंपणं ।	
माणिमाणवित्थारमंथणं	सित्थपंथसंणिहियमग्गणं ।	
जाणिऊण मयणं खलं घणं	सुंदरीहिं विहियं खलंघणं ।	
णहधरित्तिदिब्भिसिलग्गओ	ताम भीमसहो समुग्गओ ।	
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया	भयवसेण दूरं गया गया ।	5
झाणमेव महमुणिहिं जुंजियं	सकलुसं मइदेहिं रुंजियं ।	
पडिय विडवि फुडियं रसायलं	धुलिय महियेयलं भीहेंभेलं ।	
रुवरिद्धिणिज्जियसईरई	संक्रिया मणे सा सुहावई ।	
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा	गयणपंगणत्थेण राइणा ।	
सइं णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो	करडगलियओहैलियमयजलो ।	10
लुलियवैलियपडिवलियअलिउलो	चरणचप्पणो णवियमहियलो ।	
णिययधवल्लिमाधोयणहयलो	बलविरुद्धजंभारिमयगलो ।	
सीयरंभसिंचियदिसाणणो	चउविसाणणिहलियकाणणो ।	
पंचदंडउच्छेहदेहओ	ताण दूण पैरिहाणसोहओ ।	

ट्टादिट्ठिसरीरी. ५ MB पइं जि.

10. १ MBT सियपंथ°; K सिळपंथ. २ MB महिउलं. ३ MB भीरु वेंभले. ४ MB °अविहलिय°. ५ MB बलियपयपडिय°. ६ MBKT परिणाह°.

10. 2 b सित्थ° प्रत्यक्षाग्रभागः. 3 b खलं घणं आकाशोल्लघनम्. 7 b भीरु वेंभले कातराणां भयानकम्. 8 a सईरई शचीपतिरिन्द्रः.

लेबमाणचलकणपल्लवो  
तंभुं तालु आयंबमुहणहो  
लच्छिरभैणु सिरिपालु धाइओ

दीहतालवट्टो महारवो ।  
चिक्कंवंतकेलाससच्छहो ।  
महहत्थि गंहणे पलोइओ ।

15

घत्ता—पडिवक्खवियारणु पेक्खिवि चारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥  
णं विडलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगजंतु पथाइउ ॥ १० ॥

11

दावंतु दंत करु करि धिवइ  
मणु रक्खइ मेठेप्पिणु दमइ  
सरयणु वडुरयणविहूसणहु  
चलु चउचरणंतरी पइसरइ  
लंघइ आसंघइ कुंभयलु  
दैसदिसिहिं वि हिंडइ कुंजरहु  
णिम्महइ गहीरसरेण सरु  
आकुंचियतणु वंचणकुसलु  
बलिणा बलेण णिव्वूढबलु

आलिगइ सव्वंगइ छिवइ ।  
पुणु दुक्कई चउपासहिं भमइ ।  
अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु ।  
हक्कइ हुंकारइ णीसरइ ।  
पावइ पुच्छण्णलु वच्छयलु ।  
पैहु विज्जुपुंजु णं जलहरहु ।  
रंगंतु धेरइ करेण करु ।  
अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु ।  
जुज्जेप्पिणु सुइरु महंतबलु ।

5

घत्ता—सो करिमयणिम्मरु लीलामंथरु णरणाहैं संभाइउ ॥  
णं पविडलकंदरु मंदरूमाहिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

10

12

मयरेहासोहापरियरिउ  
तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ  
जाणेप्पिणु पुण्णपुरिसु पववरु

जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ ।  
रुणुरुणुरुणंतमहुलिहबलिउ ।  
परिहरिवि भुवणभीयरु समरु ।

७ MB तंबतालु पायंब°. ८ MB चिक्कंवंतु. ९ MB लच्छिरमणे सिहरि व्व धाइओ. १० MB गयणे.

11. १ MB तणु. २ MB बुक्कइ. ३ B चउदिसिहिं. ४ MB बडु°. ५ M °तणु धारणकुसलु;  
B तणुधरधरणकुसलु. ६ M मंदरु.

15 b तालवट्ट° पुच्छम्. 17 b गहणे व्वे. 19 हरिवरु इन्द्रः.

11. 3 a सरयणु सरत्तः सरदन्तथ. 5 b °उप्पलु पुष्करम्.

करिणा सुंदर कंधरि थविउ	विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ ।	
णिउ तहिं जहिं अळ्ळइ खयरवइ	सो पभणइ पुलयपसणमइ ।	5
कंतावइप्रिय सुकंतरमणा	रइकंता सिरिकंता मयणा ।	
वणवाला बालहुं तुहुं जि वर	जामाइउ महु जियकुसुमसर	

घत्ता--करि खंभि णिवद्धउ कंतिंसणिद्धउ भरहसयणसुविणीयउ ॥  
सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुण्फयंतु णं वीयउ ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुण्फयंतविरइए  
महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे महाकरियणैलंभं णाम  
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३४ ॥  
॥ संधि ॥ ३४ ॥

12. १ MB पिय. २ MB add after this: इय पभणिवि घरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जय-  
कारियउ. ३ K °सिणिद्धउ. ४ MB पुण्फदंतु. ५ MB रयणालंभं.

12. 8 भरहसयण° भरतस्य स्वजना मृत्याः 9 पुण्फयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गजः.

# XXXV

ता चक्खु णिबंघिवि खेयरहं तिर्जगुत्तिमलायणइ ॥  
राणउ तहिं हौतउ अवहरिवि णियउ सुहावइकणइ ॥ भ्रुवकं ॥

I

चंडकिरणकरदिण्णालिंगिण	पुच्छइ पृउं गच्छंतु णहंगणि ।	
कहसु सुहावइ किं सरयम्भइं	णं णं घरइं णहंगणिमुंभइं ।	
किं दीसंति बलैयउ पंतित	णं णं धयमौलउ घोलेतित ।	5
किं सुरचावइं भदि विचित्तइं	णं णं पिय तोरणइं पविच्चइं ।	
किं णक्खत्तइं णं णं रयणइं	मंदिरलगइं णं पुरैणयणइं ।	
किं णहु पहु धरग्गि णिसणउं	णं णं णागणयरु वित्थिणउं ।	
देव णायबलु णामें राणउ	एत्थु वसइ बलवंतु अदीणउ ।	
एम चवंतइं विणिण वि तुरियइं	जहिं जणु मिलियउ तहिं अवयरियइं 10	
पभणइ पिययमु हलि किं जणवउ	कहइ कुमारि एत्थु णिवसइ हउ ।	
सहियदुसहससिलेहाविरहहं	गंधवाहरुप्पयचित्तरहइं ।	
सो हरि धरहुं ण जाइ णरिंदहु	चंचलु मणु णावइ कुमुणिदहु ।	

घत्ता—णिर्हूरियणयणु णिम्मंसमुहु लक्खणलक्खविसिट्टउ ॥

सुणितम्भक्खुम्भक्खुरु वियडउरु रापं हयवरु दिट्टउ ॥ १ ॥ 15

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

इति भरतस्य जितेश्वरसामायिकशिरोमणेश्चैव वक्तुम् ।

मातुं च वार्षितोयं जुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

GK do not give it.

1. १ MBK तिजगुत्तमं. २ MB पिउ. ३ MB बलायापंतित. ४ MB धयमालाउ धुलेतित.  
५ MB पुरयणइ. ६ B णिरियणयणु.

1. 4 b णहंगणि मुंभइं आकाशस्पर्शानि. 9 b अदीणउ लक्ष्मीपरिपूर्णः. 15 सुणितम्भक्खुम्भ-  
क्खुरु सुष्ठु नियमेन ऊर्ध्वाः अक्षोभ्याश्च लोहदं कणचटितत्वात् खुरा यस्य; वियडं विस्तारणम्.

## 2

धाइउ दुञ्जरु	खरखुरखयधर ।	
मरगयणिहतणु	कंपावियजेणु ।	
तंबिरणयणउ	भंगुरवयणउ ।	
दसणभयंकरु	अरिअमरिसहर ।	
भुवणविमदें	लिहिलिहिसदें ।	5
वहिरियदसदिसु	मग्गियरणमिसु ।	
णवर णरिदें	चवलु मइदें ।	
णं सारंगउ	धरिउ तुरंगउ ।	
कुंकुमपिंजरु	चलु पसरवि करु ।	
भुयवलपोढें	पुणु आरुढें ।	10
रायहं पीलिउ	वग्गइ चालिउ ।	
अवल्लोहवि कंसु	हरि हूयउ वसु ।	
पुलइयकाएं	खगसंघाएं ।	
पयडियमंगलु	घुट्टउ कलयलु ।	

यत्ता—ताँ बुद्धि वि महिवइ अतुलवलु अहिवलेण सुरवण्णी ॥ 15  
 वरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी ॥ २ ॥

## 3

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ	णियउ सुहावईइ णिविसैं गउ ।	
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहर	विउलणियंवुग्गयणवसुरतर ।	
वे वि चारुचामीयरवणणइ	तेत्थु लयाहरि जाम णिसणणइ ।	
ता सखग्ग खग वेणिण समागय	णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गय ।	
महुरगिराइ पउंजियधिणएं	पुच्छिय ते <sup>१</sup> वणितणयातणएं ।	5

2. १ MB °खुरखयधर. २ M कंपावियतणु. ३ MB दंसणभयंकरु. ४ MBK हिलिहिलिसदें.  
 ५ MB पसरियकरु; K पसरवि करु. ६ B कंसु. ७ MB तो.

3. १ MB णिवसैं. २ MB °ग्गयसुरतरवरु. ३ B तेण तेणयातणएं.

2. 2 a °णि ह° सदशी.

3. 4 b णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ. 5 b व णितणयातणएं कुबेरश्रीपुत्रेण श्रीपालेन.

दीसह बे वि सुद्धु सुच्छया  
तेहिं पउत्तउ गियपुरु छंडिवि  
अम्हई आया पई जि गवेसहुं  
लई लइ लहु गिंसिसु पवंदहि  
तो तुहुं होसिं बण चकेसर

कहह कासु कि कारणु आया ।  
गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि ।  
दइउ बुद्धि पोरिसु विण्णासहुं ।  
एहु पहीणखंमु जइ छिंदहि ।  
विज्जाहरभूगोयरईसर ।

10

घत्ता—तं गिसुगणिवि असिबरु करि करिवि खंमु कुमारें घाइउ ॥  
असिजलधारइ सो गिदुरु वि पत्थरु तइ वि दुह्माविउ ॥ ३ ॥

4

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर  
सुहवईइ मंते औराहिवि  
तरुणतरणिणिहु तरुणहुं दोइउ  
बहुविज्जासामत्थसमग्गइ  
पुणु पदु गहयलेण णिउ महियलु  
चरणरहिउ णं तवसि कुसीलउ  
दूर मुक्कंनुउ णं कयरणु  
दुरसणु छिदण्णेसिउ णं खलु  
परतीरु व आर्यविरणेत्तउ  
अणुणु वि णं जैउं जगसंप्रासणु

इय अहिणंदिवि गय ते ण्हयर ।  
तं करैवालु करालु पसाहिवि ।  
पीडिवि मुट्ठि तेण पलोइउ ।  
मुद्धइ मुद्धयंदसोहग्गइ ।  
दिट्ठउ मणुययलु अमलियबलु । 5  
रयणरहिउ णावइ रयणालउ ।  
दूसहाविसु णं पलयमहाघणु ।  
पुहइपालु णं विरइयमंडलु ।  
कालें कालैवासु णं धित्तउ ।  
दिट्ठु महोरउ दाढाभीसणु । 10

घत्ता—दिट्ठु पुंछि धरिवि पुहईसरिण प्रीण हरंतु पमत्तउ ॥  
सो विसहरु भामिवि गयणयलि महियालि झत्ति णिहित्तउ ॥ ४ ॥

४ MB read for this line: लइ गिंसिसु देव भुयदंडे, परबलबलदलणेण पयंडे; and add the following: एहु पाहाणखंमु जइ छिंदहि, अम्हई हियवउ लहु साणंदहि ( B आणंदहि ). ५ MB बण होसि. ६ K दोहाविउ.

4. १ K णरवर, २ MB मंतेणाराहिवि. ३ MB करालु करवालु. ४ MB °समत्थसमग्गइ. ५ MB मयरालउ. ६ MB कालपासु. ७ M जय. ८ MB °संपासणु. ९ M दिट्ठु पुच्छे; B दिट्ठु पुच्छि. १० MB पाण.

8 b विण्णासहुं परीक्षितुम्.

4. 2 b करालु भयानकः. 4 b मुद्धयंद° द्वितीयाचन्द्रः. 6 a चरण° चारित्र्यं पादाश्च. 7 b °वि सु गरलं पानीयं वा. 8 a दुरसणु जिजिह्वः; छिद° रन्त्रं दोषश्च. 9 b काल वा सु कालपाशः. 10 a ज उं यमः.

5

जायउ रयण सो जि हयगयघड  
अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ  
तेण भणिउ कवडें पणवेण्णिणु  
जइ तुहुं एयइं रयणइं घट्टहि ।  
तो तैं ताँइ णिहिट्टइं रयणइं  
सिद्धइं भणिवि णमंसिउ लोणं  
अच्छिहिं अंधसहासें दिट्टउ  
जंप्पिउ मूयहिं महुरालावें

जं जिण्पंति समरि पडुपडिभड ।  
अण्णेक्कु वि अरिणर अवइण्णउ ।  
पह डौंवि कुलिसमय लपण्णिणु ।  
तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।  
मउलावियइं दुसीलहं णयणइं । 5  
मण्णिणउं वण्णिणउं दिण्णिणविहोणं ।  
वहिरहं बहिरत्तणु णट्टउ ।  
मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।

घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिपण कुर्वल्यच्छि कुवलयभुय ॥

सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥ ५ ॥ 10

6

विजयणयरि जसकिसलयकंदें  
पुणु धण्णउरि धणाहिवरापं  
उप्पण्णा सेणावइ घरवइ  
पुणु वि सुहावइइ पंडु चालिउ  
दससिद्ध मच्छरजलणुप्पायणु  
हरगलगलतमालु व कालउ  
कण्णकडुयवयणाइं भणंतें  
पच्चारिय रणि तेण सुहावइ  
मा महु अग्गइ धरहि सरासणु

कित्तिमई वरकित्तिणरिंदें ।  
विमलसेण दोइय अणुरापं ।  
सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।  
धूमवेउ गयणाद्धि णिहालिउ ।  
वीस पाणि परैं वीस वि लोयणु । 5  
भिउडिभंगभंगुरमालालउ ।  
णारिवर्राइं तणु व गण्णंतें ।  
मेळ्ळि मेळ्ळि सिरिवालु रसावइ ।  
मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।

घत्ता—जसु हियवइ भडहंकारु णवि हालि महुं हासउ दिज्जइ ॥

10

रक्खिज्जइ पइं वि महेलियइ सो किह संदु रमिज्जइ ॥ ६ ॥

5. १ MB सो जि रयणु. २ MBK जे. ३ MB दावि. ४ MB ताम्व णिहट्टइं. ५ MB मुणिवि.  
६ MB लोयइं. ७ MB दिण्णिविहोयइं. ८ MB सहासहिं. ९ बहिरंतहि. १० MB कामलच्छि कोमलभुय.

6. १ B णिउ. २ MB मच्छरु; T मच्छरजलणं. ३ MBK वर. ४ MB वराइय तणुअ गण्णंतें.

5. ३ a डावि मुद्रा.

6. 5 a मच्छरजलणं कोपाभिः.

7

चवइ किसोयरि एउं णं जुत्तउं  
सण्णमग्गु जइ सण्णु जि बुज्झइ  
एहु धरायरु तुहुं गयेणायरु  
जइ तुहुं एहु किं पि आसंकइ  
जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि  
खल दलैवट्टिवि हरिसें णचंमि  
आउ आउ गियणाहु ण मेळ्ळमि  
एम चवंति तेण सीं घाइय

रे रे धूमवेय पइं बुत्तउं ।  
खयरें सहुं जइ खयर जि जुज्झइ ।  
वज्जिवि विज्जउ पसरहि गियैयरु ।  
विवरीयाणणु पाउ वि कं पइ ।  
तो हउं पईसउं जलियमहाणलि । 5  
वइरिमरि हउं णारि ण बुच्चमि ।  
तिक्खतिसुल्ले पइं उरि सल्लमि ।  
करवालेण दुल्लघ दुहाइय ।

घत्ता—ता जायउ विण्णि सुहावइउ उक्कयिखभगविहत्थउ ॥

हणु हणु पमणंतिउ हुंकरिवि थकउ जुज्झसमत्थउ ॥ ७ ॥

10

8

अकु वि सकु वि चित्ति चवकइ  
दूण दूण वड्डिय संजायउ  
वेढिउ धूमवेउ चउपासहिं  
विण्णुरंतु जयसिरिउकंठिउ  
ता बुत्तउ णिवेण मा घायहि  
अण्णु वि मुइ मइं कहि मि वणंतरि  
एकहियय होप्पिणु भंडहि  
ता मुइइ पिउ बल्लिउ महिहरि  
दूरु गिरुद्धचंडकिरणायवि  
विट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु

सुहउ हणंतु ण णिविसु वि थकइ ।  
कण्णउ कण्णवेसें जायउ ।  
आहउ जिगिजिगंत णित्तिसहिं ।  
सो वि जाम बिहिं रुवहिं संठिउ ।  
बहुय होति रिउ कंल्लु विवेयहि । 5  
आवेज्जसु पुणु जित्तइ संगरि ।  
अरिसिरकमलइ खमो खंडहि ।  
थिउ लंविगतणु ककरतरवरि ।  
बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।  
णं गुणि संधिउ मयरद्वयसरु । 10

7. १ MB अजुत्तउं, २ MB गयणेसरु, ३ MB गियकरु, ४ MB विवरीयाणणु, ५ MBK वंकइ, ६ MB पइसमि, ७ MB दलवट्टमि, ८ MB पेळ्ळमि, ९ MB लवंति, १० MB संधाइय, ११ MB दुहाविथ, १२ MB उगय<sup>०</sup>.

8. १ MB चमकइ, २ MBT विहुअंसहिं, ३ MBK कज, ४ MB वित्तइ, ५ MB संठिउ.

8. 9 α °चंडकिरणायवि आदित्यात्तये.



घत्ता—तं पेक्खिखि वम्महवाणहय सीमंतिणि तर्हि दुक्की ॥

जंपइ पयडइं विडच्चाडुयइं कुलमज्जायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहसल्लिउ  
सुहव कह व जइ मुयहि महीरुहु  
हड्डइं कसमसंति भज्जंतइं  
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण  
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि  
भणइं कुमारवीर किं खिज्जहि  
वरं पत्थु जितरुसाहहि सुक्खमि  
वर णक्खाइं सिलायलि भग्गइं  
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि  
केसमार वर वोंपं णिज्जउ  
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ

पत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।  
तो णियडहि गिरुत्तु हेट्ठामुहु ।  
अट्ठ वि अंगइं पलयहु जंतइं ।  
भो पत्थिवपउमाणण माणण ।  
घोरहु कंतारहु उत्तारमि । 5  
परपुरिसहु मणु दंति ण लज्जहि ।  
णउ परघरिणिहि वयणु गिरिक्खमि ।  
णउ परणारीउरयलि लग्गइं ।  
मा खुप्पउ परवहुविवाहरि ।  
मा परपणयणीहिं कट्ठिज्जउ । 10  
मा परतुय्यणेहिं पेळ्ळिज्जउ ।

घत्ता—णयणइं धौलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥

संताउ पवड्डइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहं दुवारि णिरोहु करेसइ  
लहुं आलिंगिवि मुक्खिणबंधणु  
आसंकियमणु किं किर कीलइ  
अणु अणु जइ काइ वि संतइ

पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।  
लहु उट्ठइ संवरइ पइंधणु ।  
दुज्जसु धूमं अप्पउ णीलइ ।  
तो परयारिउ णियमणि चितइ ।

६ MB °मज्जायपमुक्की.

9. १ M कसमसंति. २ B omits this line. ३ B omits this foot. ४ M अक्खमि.

५ MB वायइ. ३ MB परतिय. ७ MB घोलंत; T घोलति.

10. १ MB गेहि दुवारि. २ MB लइ. ३ MB मुक्कु. ४ M संवरियउ; B संवरिउ. ५ MB दुज्जस.

9. 4 पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक; माणण उपभोजक. 5 a पयारमि प्रतारयामि.

10. 1 b संगहणु पुंश्चल्युगलम्. 2 a मुक्खिणबंधणु मुक्ककण्ठाश्लेषः; b पइंधणु परिधानम्.

पयहि सविवयहि हउं जाणिउ  
इहभवपरभवदुण्णयगारउ  
जाहि ण इच्छमि परघरसामिणि  
रमणीयइ पररमणालुद्धइ  
परणाहं पियसहि वणि मेळिय

एवहि कहि वच्चमि संदाणिउ । 5  
परंतुरमणु सुदु विहरारउ ।  
उव्वसि जई वि रंभ सुरकामिणि ।  
तं गिसुणिवि णहणारिइ कुद्धइ ।  
साहिसाह सा छिदिवि घल्लिय ।

घत्ता--थरहरियपाणिपयसिरकमलु विहुरयालि सुहजणणियइ ॥ 10  
गिवडंतउ थरिउ सई भुयहि जक्खइ चिरमवजणणिइ ॥ १० ॥

## 11

वइसारिउ सोवणसिलायलि  
हउं तुह मायं पुत्त पोमावइ  
एम्भ चवेप्पिणु णेहपयासें  
भुक्खेतण्हणिहालसु णट्टउ  
फुरियविविहमणिक्किरणणिंरंतरि  
तं गिसुणिवि सो तेत्थु पइट्टउ  
धूमवेउ सज्जियसरजालहि  
पुणु उप्पणु वियणु विहीसरु  
गय गियवासहु वीणालाविणि

भणिउं गिसुणि हई जक्खहुं कुलि ।  
पुव्वजम्मि होती पाडलगइ ।  
बालु पसाहिउ करसंकासें ।  
तणउ पडुत्तु ताइ संतुट्टउ ।  
पइसहि गिरिगुहविवरउंरतरि । 5  
तावेत्तहि संगामि पणट्टैउ ।  
विज्जालेउ करंतिहि बालहि ।  
जिह देविइ उद्धरिउ गिहीसरु ।  
एत्तहि राउ रायचूडामणि ।

घल्ला--पइसंतु विसंतुलि विवरवहि सलिलमहाद्रहि पडियउ ॥ 10  
तहि जंतु तैरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥ ११ ॥

६ MB परतिय°, ७ MB जहि, ८ MB रंभ जइ वि, ९ M सयंभुयहि; B सयंभुवहि.

11. १ MB पुत्त माय, २ B °तिण्ह°, ३ B पइट्टउ, ४ B धूमकेउ, ५ MB °महइहि, ६ MB उरंतु, ७ T विसंकलि.

6 a °दुण्णय° दोषः अपकारो वा.

11. 2 a पोमावइ पद्मावती नाम यक्षिणीजातिः; b पुव्वजम्मि सत्यवतीजन्मनि, 8 a विहीसर देवी वाणी, 10 विसंतुलि निम्नोक्ते.

12

तावत्थहरि सूरु संपत्तउ  
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि  
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ  
णं णवदलु णह्रक्खहु व्हसियउ  
भाणुंविबु किरणावलिजडियउ  
मंदतमालणीलि पसरियतमि  
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं  
सिरिअरहंतसिद्धआयरियहुं  
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं

णं दिणराणं झेंडुउ धित्तउ ।  
मणि व पडंतु महण्णवखाणिहि ।  
णं चउपहर रहिररसलित्तउ ।  
रत्तहलु व विसंतरुणिइ डसियउ ।  
उग्गत्तेण अहोर्गइवडियउ । 5  
तहिं विवरंतरि रयणिसमागमि ।  
णीलसिल्लायलखंमि णिसण्णउं ।  
उज्झाबहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।  
सुयरइ पडुचरणइं परमेट्ठिहिं ।

यत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं ज्ञायंतहु साणंदइं ॥

10

ओरारिमारिसिहिपाणियइं उवसमंति मृगवंदइं ॥ १२ ॥

13

ताम पहाइ कालि रवि उग्गउ  
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतं  
राणं णयणाणंदजणेरी  
णिग्वियार णिग्गंथ मणोहर  
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही  
हउंसा भणमि कुहिणि अपवग्गहु  
सा णाहि सरसलिलहिं सिंचियै  
पुणुं जिणतणुसिरि संयुय भत्तिइ  
भैहपसत्थहत्थगुणराइय

णं महिउयरु वियारिवि णिग्गउ ।  
तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतं ।  
दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।  
पहरणवजिय ओलंवियकर ।  
हउं सा भणमि अहिंसा जेही । 5  
कडिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।  
वियलियधवलहिं कमलहिं अंचिय ।  
सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ ।  
ताम तहिं जि जन्निखणि संप्राइय ।

यत्ता—संभासिवि णिहिलिणिहीसरिइ हरिसुणुल्लियणेत्तउ ॥

10

वैइसारिवि पट्ठि पयाहिवइ मंगलकलसिंहि सित्तउ ॥ १३ ॥

12. १ MB दिसतरुणिइ, २ MB °गइपडियउ, ३ MB °सिलायलि, ४ MB मिण°,

13. १ MBK पहायकालि, २ MB अववग्गहु, ३ MB संचिय, ४ B omits this line,

५ B omits this foot, ६ MB संपाइय, ७ T अहिसारिवि.

12. 8 a कुंकुमकुसुमामेलु व कुंकुमकैसरसंघात इव, 7 a णक्कचक्क° जलचरसंघातः.

13. 11 वइसरिवि प्रतिष्ठाप्य.

14

भूसणपरिहाणाई रवणणई  
गयणगमण पाउयजुयलुछउ  
ताम तहिं जि परिममिवि समायइ  
खैरिइ सहरिणीइ पहु जोइउ  
सो पडंतु सयलु वि णिदलियउ  
पुष्पयंतफणिफुकारियसरि  
एम भणिवि ताए वित्थिणी  
णवर चंडदंडे सा खंडिय

छत्तदंडरयणई तहु दिणणई ।  
दिणणउ अणुं वि जं जं भल्लउ ।  
रयकैरणसंभूयकसायइ ।  
पाहाणोहु णहाउ णिवोइउ ।  
दिव्वछत्तरयणं पडिखलियउ । 5  
मई ण रमंतु मरउ विवरंतरि ।  
सेल्लगुहाडुवारि सिल दिण्णी ।  
कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय ।

वत्ता--उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयलें गच्छइ ॥

णहि जंतु पुंडरिक्किणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥ १४ ॥ 10

15

पेच्छइ खंधावार विमुक्कउ  
माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ  
तिजगबंघु महु बंधउ णाईउ  
वसुवालेण भणिउं किं ससहर  
किं दीसई णवसंझाजलहर  
सोदामिणि णं णं दंडासणि  
एम वियप्पिवि राए बुत्तउ  
इय पलवंतहु तहिं जि पराइउ  
सुहिपरियणु हरिसं रोमंविउ

सत्तमु दिवसु अज्जु सो दुक्कउ ।  
मणुयवेसु णावइ मयरद्धउ ।  
एम भणिवि जलहरवहु जोईउ ।  
णं णं छत्तु एउ णं णिसिहर ।  
पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णर । 5  
तारावलि णं णं भूसणमणि ।  
एइ सहोयरु एहु णिरुत्तउ ।  
विहिणा सोक्खुपुंजु णं ढोईउ ।  
तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ ।

14. १ M °परिहाणई बहुवण्णई; B °परिहाणई वरवण्णई. २ MB अवर. ३ MB रइकारण°  
४ MB खयरिइ सहरिणियइ. ५ MB णिवायउ.

15. १ MB मयणवेसु. ६ MB णावइ. ३ MB जोयइ. ४ MBK णउ ससिहर. ५ MBK  
सीसइ. ६ MB ढोइयउ.

14. ३. a स मा यइ समागतया; b रइकारण°रतिमुखकार्ये. () a °सरि शब्दे.

15. 2 a थणद्धउ पुत्रः.

पणविउ पडु णिलयणु णिय तायहु जगतायहु पच्चक्खविहायहु । 10  
तेहिं बिहिं वि तेण जिणु पेच्छिवि भवसंसर्णावत्थ दुग्गुळिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणबालु तहिं मडडच्चडावियहत्ये ॥

वंदिउ परमेसरु परममुणि परम्पव परमत्ये ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घाल्लिउ ईसरु	पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।	
पुत्तु महारउ केण विहूसिउ	चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।	
पभणइ जिणुगयजमि किसोयरि	पयहु हुयमेत्तहु सुय मायरि ।	
हई काणाणि जक्खसुरसरि	वहुविम्ममविलास णं सुरसरि ।	
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें	ताइ पडु पुज्जिउ बंहुणेहें ।	5
आय सुहावइ कहिउ कुमारें	पयइ रक्खिउ हउं बलसारें ।	
विज्जाहरहं पयासियवसनहं	मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।	
पह मज्झु हई विह्वंत्तहु	लग्गणवल्लरि अवडि पडंतहु ।	
पह मज्झु हई चित्तामणि	कामधेणु कप्पहुमगोमणि ।	
पह मज्झु संजीवणि ओसहि	विहुरसमुद्गणाव णिरु पियसहि ।	10

घत्ता—हउं पयइ रक्खिउ सुंदरिइ पयहि जीउ वि दिज्जइ ॥

जसु पुत्तु कलत्तु ण भित्तु सुहि सो दुहैंसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पहं संहं महु उगयमुहरायउ	माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं पयहि तणउं विजंभैउ	पयहि परवैलु बलिण णिसुंभिउ ।
तं णिसुणिवि विणपं पणयंगिय	सासुयाइ कुलवहु आलिगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु, ८ MB तेण वि, ९ MB °संसारवत्थ.

16. १ MB विरु णेहें, २ MB दुहसलिलि णिमज्जइ.

17. १ G सुहुं, २ MB विजंभिउ, ३ B पबलबलेण.

10 a णिल य णु समवसरणम्; b °वि हा य हु विधातुः प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य. 11 a बिहिं वि कुबेरश्री-वसुपालाभ्याम्; ते ण श्रीपालेन.

16. 1 a ई सरु अस्य विष्णोरपत्यं ई कामस्तस्य सरु बाणः. 3 b हु यमेत्तहु जातमात्रस्य. 8 b अवडि कृपे.

17. 2 a विजं भउ विजृम्भितं चेष्टितम्.

पुत्ति पुत्ति पई कां पसंसमि  
चकवटिलक्खणसंपुण्णउ  
तुहुं जि एक महु आसाऊरी  
जुवईमदु हलि कहि तेरउ  
तुह केरउ जियकरिहुं भत्थलु  
महु तणयहु वम्महपासा इव  
पमणइ कण्ण पुण्णसामत्थे  
सेल्ले भिण्णु ण भिज्जइ अंगउ  
पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिउ

वत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरेवीर तवु तत्तउ ॥

चिरमवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ ॥ १७ ॥

18

सग्गसिहिरि सुरवरसिरि भुंजिवि  
दिब्बु देहु मेल्लेप्पिणु आया  
वसुवालहु सिरिवालहिं केरी  
मुणि वंदिवि सयलई संतुद्धई  
पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं  
मुक्क सुहावइ पिययम मायइ  
गय सुंदरि गियमंदिरु जामहिं  
करपल्लवि लग्गउ रइसुत्तिहिं

जिणपडिबिबहु पुज्ज पउंजिवि ।

ए विणिण वि तुह सुय संजाया ।

पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी ।

उच्छवेण गियणयर पइद्धई ।

बेलियरयणाहरणविसेसहिं ।

धणुधारिणि सम पाउसछायइ ।

वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं ।

अट्टोत्तर सउ णरवइपुत्तिहिं ।

वत्ता—पुणु कहइ सुलोयण गियवरिउ सइ परिपुरिसपरंसुह ॥

भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुष्पयंतसोहियंसुह ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसड्डिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभव्वभरहाणुमण्णिण महाकव्वे पद्मसिरिपालसंगमो णाम

पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३५ ॥

॥ संधि ॥ ३५ ॥

४ MB देसमि. ५ M °संपण्णउ. ६ MB महु पई. ७ B सूरह. ८ MB वणसर°. ९ B सूलिण. १० MB कम्म. ११ M घोरे वीर तव; B घोरवीर तव.

18. १ MB दिव्वदेहु. २ M परंसुह; B परंसुहहो. ३ M °सुह; B °सुहहो. ४ MB °सिरिवाल°.

18. 5 ८ बे लिय फाली (?).

# XXXVI

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥  
सत्तमदिणि सुहमइ पत्त सुहोवइ णविय ताइ सइ सासुय ॥ भुवकं ॥

1

भासिउं भइइ गुणजुत्तियउ	एयँउ तुह सुय कुलउत्तियउ ।	
होहिंति भणिवि सुँगेणेतियउ	तडिचेणं गहणि णिहिसियउ ।	
संमाणहि मइ संमाणियउ	एवहि तुह मंदिर आणियउ ।	5
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ	णवमालइमालावाहियउ ।	
पुव्वं चिय तेत्थु पेरिट्ठियहिं	भूगोयेरेहिं उक्कंठियहिं ।	
हयदइवें कहिं वि विओइयउ	मायापियँरेहिं वि जोइयउ ।	
पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय	जसवइ णामें जसकंतिजुय ।	
अणुं अवरउ थोरथेद्धयणिउ	रइकंताइयउ सुहासिणिउ ।	10
विरहगितावणीवावणउं	अट्ठहिं तरुणिं सहुं मेलणउं ।	
दिट्ठउ करंतु सो पूँउ ललिउ	मुँत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलिउ ।	

घत्ता—जोएवि सवत्तिहि मुँहु वणिउत्तिहि णीसँसेवि दुहहणणहु ॥

ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंघिउ घर जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin:—

पुप्फयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सति ।

मारिउ मिच्छययाहिंवइ गुणु पुणु तिहुयणकिति ॥ १ ॥

BGK do not give it.

1. १ K सत्तमे दिगे, २ B सुहामइ, ३ M एयहि. ४ MB मिग°. ५ MB पेरिट्ठियउ. ६ MB उक्कंठियउ. ७ MB पियरहिं विच्छोइयउ. ८ MBK पुणु. ९ MB °थट्ठ°. १० MB पिउ. ११ MB गुत्ता-समिइहिं. १२ B महु. १३ M णीससवि.

1. 1 छ षट्कन्याः; सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री. 6 a लच्छिइ कुनेरश्रिया. 8 a विओइयउ विओणं प्रापिताः. 10 b सुहा सि णिउ शोभनवचनाः. 11 a °णीवावणउं विष्णुपानम्.

## 2

सुहर्षइयहि तायहु वज्जरिउ  
मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं  
मेरउ मेळिवि रिउ जीवहर  
अविसेसविवाहें किं करमि  
णउ अण्णणारियरंजियहु  
पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ  
अण्णणहिं कुसुमहिं दिणु गमइ  
पर्यंतरि सिरिवालें गयरि  
णालोयतें पुणु जाणियउं  
अइ लज्जिवि णियमवणहु गयउ  
इय चितिवि णहयर पकु णरु  
संपत्तउ गेहुँ अकंपणहु

भूगोयरभूगोयरचरिउ ।  
अणुरत्तइं गुणविहियायरइं ।  
पहिलउ जि किराबिहि धरिउ कर ।  
वैर णिच्चलु कणावउ धरमि ।  
आलिगणु दैवि तासु प्रियहुँ । 5  
विहुँ होइ सहावें चंचलउ ।  
किं एकहि वेळिहि अलि रमइ ।  
मग्गिय मृगलोयण घरि जि घरि ।  
हा पृथमाणुसु अवमणियउं ।  
किं जंतुं जंतु वि चिरहें मयउ । 10  
पोसिउ लहु लेलिणं लेहधर ।  
जिणचरणभत्तिभावियंमणहु ।

घत्ता—लेहें सहुं पाहुहु ढोइवि खगभड पडिउ खगिदहु पायहिं ॥

तुहुं मण्णउ सज्जणु विणिहयतुज्जणु वसुसिरिवालहिं रायहिं ॥ २ ॥

## 3

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ  
तं सोहइं वण्णहं पंतियहिं  
कंचुइवइणाइं सुणेवि सइ  
तं पालिय कुलपरिहोँ सकुलि

आलिहियउ पत्तु पलोइयउ ।  
अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं ।  
जं परिणिय वणिघरतणय मइ ।  
मणु पुणु तुह पुत्तिहिं सुहकमलि ।

2. १ K °वइयइ. २ MB °भूगोयरि°; GK add second °भूगोयर° in the margin;  
T भूगोयरचरिउ. ३ M वर. ४ G करउ. ५ MB देमि ण तासु. ६ MB पियहु; B पृथहु. ७ M विउ.  
C MB भिगलोयणि. ९ MB पिय°. १० MBK लइ. ११ जणु जंतु वि. १२ M ललियं. १३ MB लेहु.  
१४ B °भावियरणहु.

3. १ MB साइइ. २ MB वयणाइं. ३ MB ता. ४ MB हासमले.

2. 1 b भूगोयर° वडुपालादयः; भूगोयरचरिउ भूगोयरेषु यशस्वत्यादिषु विषयेषु चेष्टितं आचारं  
मन्यन्ते. 6 a मुइ सुभ; कलमलउ ईष्याजनिताखेदम्. 11 b ल लि एं श्रीपालेन.  
3. 2 b अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं स्वयमनुवाणाभिरपि अर्थप्रतिपादनद्वारेण नुवाणाभिः. 4 a  
कुलपरिहा कुलपरिखा कुलमयीदा; सकुलि स्वकुले.



चंपयकुसुमावलिगोरियहि  
जिह कठिणं धणत्थलु तिह पहरं  
कर्णंतु समागय णयण जिह  
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु  
जणणंकासणइ णिसणियइ  
तं णिसुणिवि णिम्भरु चित्तियउ  
तहि पिउणा तं जि पबोद्धियउं  
ताएण समउ गय कुमरि तहिं

संभरंमि सुयाहि तुहारियहि । 5  
जिह रत्त रत्तरणु तिह अहरु ।  
परमारणसीलं वाण तिह ।  
जिह धणु गुणमंडिउ तिह जि तणु ।  
कणियइ कुसुमसंरुणियइ ।  
महु णाहं माणु णियत्तियउ । 10  
हयगमणभेरिवलु चल्लियउं ।  
णिवसइ सुहउ वरइचु जहिं ।

घत्ता—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छवि छणु णहंगणु ॥

गय विणिण वि सायर संमुह भायर मग्गमाण आलिंणु ॥ ३ ॥

4

घरि आसीणाइं सणेहदय  
हेट्टामुह वहु वरेण भणिय  
घणु सोहइ एकइ विज्जुलइ  
इह सोहमि हउं एकाइ पइं  
मा रुसहि सज्जणवच्छलिइ  
तं वयणं रोसंणियत्तणउं  
वप्पिल संप्राइय रमणवसा  
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि  
एवट्टंसहासइं राणियहं  
पुणु पर्च्छइ गिरुवमभोयवइ

लहु अभागयपडिवत्ति कय ।  
किं द्वइ तुहुं मलिणाणणिय ।  
वणु सोहइ एकइ कोइलइ ।  
गुरुवयणु करेवउ तो वि मइं ।  
अलिणीलकुडिलमउकोतलिइ । 5  
जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं ।  
तडिरयतडिवेयहु तणिय ससो ।  
रइकंता मयणवई तरुणि ।  
परिणियइं तेण खयरणिथंह ।  
खगवइसुय जामे भोयवइ । 10

५ MB read for this foot: लडहंगहि सुणिमणचोरियहि. ६ M कठिणु. ७ B adds after this: महु आवइसयइं णिवारियइं, संभरमि सुयाहि तुहारियाइ. ८ B रत्तु रत्तरणु. ९ M °सीहा. १० M °सरसं-  
णियइ; B °सरकणियइ; T °कणियइ. ११ B adds after this: णियपुत्तिहि मणु णीसल्लियउ.  
१२ MB add after this: तहु सइं तिहुयणु इल्लियउ. १३ MK आलिंणु.

4. १ G रोछु. २ MB संपाइउ. ३ MB °वस. ४ MB सस. ५ MB चउवट्ट°. ६ MB राणि-  
याइ. ७ MB °राणियाइ. ८ B पुच्छइ.

9 ठ क णियइ कन्यकया; °छ णियइ भल्लिविशेषेण.

घत्ता—सेणावइगहँवइहयगतियमइयवइपुरोहियजुत्तइं ॥  
सज्जीवइं रयणइं रंजियणयणइं सत्त तासु संपर्णइं ॥ ४ ॥

5

रोसेण सुहावइ हुंकरइ  
सुरमणियवणिगयवणसिरिहि  
घरदासिहिं जसवँइरुडु किउ  
परमेसर वाणिमुय परिहविय  
तं गिसुणिवि णरवइ संचलिउ  
पइमँत्तहिं झत्ति महासइहि  
प्रियैवयणहिं तिह तिह जंपियउ  
ईसांलुय पइणा उवसमिय  
विज्जाहरि विक्रमहरिहरिहि  
पहरणसालहि सुहलियतवहु  
णवणिहिइव जायउ चक्कवइ

ईसाइ ण पियपुरि पइसरइ ।  
थिय भवणु रणपिणु सुरगिरिहि ।  
अण्णेक्कइ रायहु विण्णविउ ।  
घरलंजियवेसँ घरि थविय ।  
हरिखुरधूलीरउ णहि मिलिउ । 5  
संपत्तु णिवासु सुहावइहि ।  
जिह जिह मणु मुद्धहि कंपियउ ।  
जाइवि वणिगणय ताइ णविय ।  
थिय सा वि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।  
उण्णणउं चक्कु णराहिवहु । 10  
किं वण्णइ अम्हारिसु कुकइ ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णइ ससहरवण्णइ पडिवज्जि वि पक्कासणु ॥  
जसवँइयइ रापं सहुं सपसापं किउ सुहहुँइसंभासणु ॥ ५ ॥

6

अरि असणिवेउ चिरु मच्छरिउ  
घट्टिउ तँहि रययायलि विउलि  
गइलंघियणहयलजँलहरहं

मायाहपण हुउं अवहरिउ ।  
हिंढिउ तँहि काणणि गिरिगुहिलि ।  
दिट्ठइं कवडइं विज्जाहरहं ।

१ MB गिहं. १० MB संपत्तइं.

5. १ MB °रुड. २ MB पइमासिहि. ३ MB पिय°. ४ B ईसांलुद्ध. ५ MB जसवइ महिरापं.

६ MB सुहडइं संभासणु.

6. १ MB रययालिइ तँहि. २ MB °थलयरहं.

8. 11 °तियमइं क्षीरलम्.

5. 9 a विक्रमहरिहरिहि इन्द्रस्य सामर्थ्यरूपेष्टिका. 10 a सुहलियतवहु पूर्वभवोपाजितं  
शोभनफलितं तपो यस्य.

6. 2 b गिरिगुहिलि गिरिभिर्लघुपर्वतैः निविडे.

मइ रइयइं पसरियअमरिसइं	अवलोइवि णाणासाहसइं ।	
चलकरयललुलियंसूलमुसल	आरुट्ट दुट्ट दण्णिट्ट खल ।	5
उइहणपर्यंडपलैयपिहिर	रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।	
दूसासण दुम्मइ कालमुह	हरिवाहणधूमवेयपमुह ।	
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महुं	ता चवइ कंत कंतेण सहुं ।	
कीरइ रिउवलमयणिम्महणु	तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।	
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं	असिचावहिं जाम ण कलहियउं ।	10

घत्ता—पुरिसेण महंतं एत्थु जियतं जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥

णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु तेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

## 7

महणविइ कज्जु णियच्छियउं	इय पइउ रापं ईच्छियउं ।	
भोयवइहि बंधवुं कुलधवलु	णामे हरिकेउ विसालबलु ।	
अहिंसिचिवि पट्टणिबंधु कउ	सेणावइ खगवइ होविं गउ ।	
रणि जिणिवि णिबंधिवि सत्तु तिणा	आणिय णं विसहर पवरविणा ।	
सो तुरयारूढउ दंडकर	पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु ।	5
बहलंसुजलोल्लियणेत्तियहिं	विलवंतिहिं खयरपुत्तियहिं ।	
णियणाहहु दीणवयणु लविउ	बहिणिहिं बंधवउलु मेह्वंविउ ।	
सयल वि ते परिवड्डियकिवहु	चरणारंविद णिवडिय णिवहु ।	
रापं कारुणु ताहं करिवि	पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।	

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिण्यंदहु ॥ 10

पयवडिउ ण हम्मइ मग्गे मम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °तुल्य°. ४ MK पलयमिहिर; B मलयमिहर; G पलयपिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment. ५ MB दसइ. ६ MB तिम्मइणु.

7. १ B पुच्छियउ. २ MB बंधउ. ३ MB होइ. ४ MB मेलाविउ. ५ MB चरणारविंदु. ६ B पाविज्जइ. ७ MB जिणइंदहु.

7. 4. ७ पवरविणा प्रवरश्वासौ विश्व गरुडस्तेन.

8

चउरासीलकखइ कुंजराहं  
छणवइ सहासइ राणियाहं  
सोलहसहसइ सिद्धहं सुरहं  
घरि चोदह रयणइ नव वि णिहि  
सिरिवालहु पुण्ण पवित्थरिउं  
जं णयरायरउण्ण धणु  
ता सकलुसु चविउ सुहावइए  
वसु पउ वि ण वच्चइ मरणदिणे  
उज्झेवउं सहुं बिहिं कप्पेडेहिं

तेत्तिय सहसइ रहवराहं ।  
वत्तीस णिवहं संताणियहं ।  
आणायराहं पंजलियराहं ।  
महि एयल्लत्त अणुक्कलवहि ।  
जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं ।  
तं जसवइ पइसारइ भवणु ।  
लुद्धइ संचियउ जसोवइए ।  
एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।  
किं पुत्तकलत्तहिं लंपेडेहिं ।

5

घत्ता—ता मंति<sup>१</sup> भासिउं गुञ्जु पयासिउं एवमाह मा भासहि ॥

10

जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलवित्ति मा दूसहि ॥ ८ ॥

9

जसवइकुच्छिहि जिणु संभविही  
जसवइयहि जसु महियलि भमिही  
परियाणिवि दिव्वमुंणिदु मुाणि  
देविउ पेसणसंभाइयउ  
वसुहार पाडिय घरंमंगणइ  
हरि करि रवि जलणरासि जलिय  
थिउ चंडेपुरंदरथुयचलणु  
सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं

जसवइयहि होही परमदिही ।  
जसवइयहि पैय इंदु वि णविही ।  
लम्मासहि होही एत्थु गुणि ।  
सिरिहिरिदिहिकित्तिउ आइयउ ।  
सुर मिलिय अणेय णहंगणइ ।  
दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।  
जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।  
भावणवैतरहिं सविसेहरहिं ।

5

8. १ M तेत्तियइ जि लकखइ संदणाहं; B omits this foot; K तेत्तियइ सहासइ रहवराहं.  
२ MB add after this: तहु अत्थि सुट्टु संदणवराहं. ३ B सहस. ४ MB सहस संताणियाहं. ५ B  
°सहासइ. ६ MB सुराहं. ७ MB अणुकूलविहि; K °वहि but corrects it to विहि. ८ MB पुण्ण.  
९ MBK कप्पडहिं. १० MBK लंपेडेहिं. ११ MB मंतिहि.

9. १ MB जसवइहि कुच्छि. २ MB पयइ वि इंदु णविही. ३ MBT °मुणिद°. ४ MB घरपंगणइ.  
५ MBK चंद°. ६ MB सुरासुरेहिं. ७ MB सविसहरेहिं.

8. 4 ठ अणु कूल व हि अनुकूलपथे, अनुकूलेत्यर्थः.

9. 4 अ पेसण संभाइयउ प्रेषणेन आज्ञादानेन संमानिताः.

तर्हि अवसरि माणमरुदु जुउ  
आवेण्णिणु णिम्मच्छरमइइ  
दिसं कवण सुरासहि अणुहरइ  
का पुज्ज णारि पइं माईं विणु

मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।  
जसवइ सइं णविय सुहावइइ । 10  
किं अवरहि रवि उगगउं करइ ।  
अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियंउ ॥  
तं अमरपियारिइ खमहि भडारिइ मइं वालइ दुक्किउ कियंउ ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि  
गच्छंति पलोइय वणिवइणा  
मुहयंदुज्जोइयसयलदिस  
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु  
बारहवोरिसियउ खासु किह  
पुट्टउ णं अमिपं सिंचियउ  
जसवइपयगलियजलेण जरु  
सा धूमवेय वइरिणि खगइ  
जुवराय हवेसइ पोट्टि तहि  
तो<sup>१०</sup> जणणिइ जणियउ तित्थयरु  
उत्तारिउ धणु सिहकविय सरं  
णिउ मेरुहि तियसहिं जिणधवलु

अकमलकरि णं सयमेव सिरि ।  
पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।  
किं णच्चहि वच्चहि पुलयवस ।  
देवीपयफालेणं गट्ठु महु ।  
जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह । 5  
तेणंणु मज्झु रोमंभियउ ।  
णासइ गहभूयपिसायडरु ।  
अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।  
जुयरायपईं वड्डउ अणहि ।  
भइयइ थरहरियउ पंचसर । 10  
जिणजम्माणि कम्महु णत्थि धर ।  
जाणमि सिवसिरिकणहि धवलु ।

घत्ता—सइं णवइ पुरंदरु आसणु मंदरु कायिकोडु रयणायरु ॥

जहिं णहाइ जिणेसरु तं णवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्बण, ९ MB गुएवि अणु, १० MB जंपिउ, ११ MB अरुहं, १२ MB किरिउ.

10. १ M महि इंदुजोइयं; BK मुहइंदुजोइयं, २ MB वच्चहि णच्चहि, ३ MB पयफाले, ४ MB बारहवोरिसियउ वि, ५ MBK जुवराउ, ६ MB पट्टु, ७ K ता, ८ M सिर, ९ MBK कामहु, १० MB कायिकुंडु.

10. 11 b धर रक्षा, 12 b सिवसिरि<sup>१०</sup> मोक्षश्रीः; धवलु भर्ता, 14 जइणायरु गणधरदेवः, अथवा बृहस्पत्यादिकश्चतुरः.

## 11

भावणवैतैरकप्पाहिचहिं  
 गुणवाल् गुणं किउ जिणवइहि  
 णवमासहिं अवरु महासइहि  
 ससहोयरु भोयवइइ सहुं  
 गउ णरवइ सणरु सकरि सरहु  
 वेयडुमहीहरि संचरइ  
 साहिय फणि जक्ख वि किणर वि  
 परमण्णउ द्वयउ जालु धरि  
 भुंजंतहु कामभोयसंयइ  
 पक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ

देवहिं इच्छियसासंयसुहहिं ।  
 आणिवि अणियउ जसोवइहि ।  
 संभूयउ पुत्त सुहावइहि ।  
 खयरहुं णियकेर समुदिसहुं ।  
 अरिवरहरिजुहुं णं सरहु । 5  
 विज्जाहररायहं महि हरइ ।  
 तहु भंइयइ कंप्पइ किं ण वि ।  
 णिवसइ सिरि अवसं तासु करि ।  
 लक्खाइ तीस पुव्वहुं गयइ ।  
 लोयतिपहिं संबोहियउ । 10

घत्ता—तै ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायाभियकायहं ॥

पच्छइ पड्विण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं ॥ ११ ॥

## 12

चउतीसातिसयविसेसधरु  
 गुणंवाल् भडारउ गुणमहिउ  
 संबोहियवहुभवियंयुवहुं  
 दुयसीलक्खइ पुव्वहं सधरं  
 पप्फुल्लियवालकमलमुहहु  
 पिरिचितिवि जम्मजरामरणु  
 सोलहसहासधरणीसरहं  
 संसारघोरभारं लइउ

संजायउ केवल तित्थयरु ।  
 विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।  
 जिणसूरु देउ महु मोक्खु लहु ।  
 सिरिवालु वि भुंजिवि सयल धर ।  
 सिरि पट्टे णिवंधिवि तणुरुहहु । 5  
 णियतणयजिणिदहु गउ सरणु ।  
 तै सहु पव्वइय भैहासरहं ।  
 वसुवालु णरिदु वि पव्वइउ ।

11. १ MB °वितर°. २ MB सासयसिवहिं. ३ MB णरवइ सकरि सहरि सरहु. ४ B भइए.  
 ५ M °युहइ; B सहइ.

12; १ M गुणवाल. २ GK °यंयुवहुं but gloss कमलम्. ३ MB सोक्खु. ४ M सकेर.  
 ५ MBK पट्ट. ६ B पर चितिवि. ७ MB महीसरहं. ८ MB पव्वइउ.

11. 4 ८ णियकेर समुदिसहुं जिजाज्ञां समुदेहम्. 11 णी सहुं निःस्वानाम्.

12. 4 a स धर सपर्वता. 7 ८ महा सरहं गम्भीरध्वनीनाम्.

सहुं पुत्तसहासैं सो सहइ  
देविहिं परमत्थवियाणियहं  
बुद्धियधम्मइ उज्झियरइण

तं संजमु तं व्रउं को वहइ ।  
पण्णाससैंहासइ राणियहं ।  
तवि संठिउं समउं सुहावइण ।

10

घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमरैंहिउ हूई ॥  
णासियदुक्कम्मैं जिणवरधम्मैं धावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिहडिय  
जहिं सत्तु ण मित्तु ण धरिणि घर  
णउ माणु ण मायण मोहु मउ  
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं  
वसुवाळु वि गुणवाळु वि परमु  
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउं  
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि  
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरंवि  
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ  
गंधारिगोरिपण्णसियउ  
णियसोहाणिजियकमलसिरि

णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।  
जहिं लोडु ण कोउ ण कामजर ।  
जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।  
सिरिपाळु वि गउ कालेण तहिं ।  
अरहंतु करउ महु रइविरमु ।  
घणरवेण दिण्णु आलिगणउं ।  
रायवसविरोल्लियलोयणहि ।  
हुउं खगजम्मंतरु संभरमि ।  
जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।  
गयणयलविहारपविसियउ ।  
तं पेक्खवि भणइ पियंगुसिरि ।

5

10

घत्ता—हुउं जाणउं भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥  
अलियउ जि कहंतरु भवणेरंतरु कहइ दुडु दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

१ MB वउ. १० MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं. ११ MB °सहस रायाणियहं. १२ MB संठिय. १३ MB अमराहिउ.

13; १ MB सिरिवाळु गयउ. २ MB °विरोल्लिय°. ३ MB धरमि. ४ B वज्जिउ. ५ MB जाणमि. ६ MB भवणे णिरंतरु.

13 वि हूई विभूतिः.

13. 13 °णे रंत रु अविच्छिन्नम्.

## 14

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय  
पइं कहिउ कहंयु ण सइहंवि  
रमणीयणसिरैचूडामणिहिं  
लहुभाइहि रज्जु समप्पियउं  
हउं गच्छमि गयणे अज्जु तहिं  
रयणालंकारहिं विच्छुरिउ  
जं होतउ आसि पहावइहि  
थिय पासि सुलोयण जलयवहि  
जणु जोयइ उज्जदिट्ठि मुयइ  
अंतेउरु परियणु णीससइ

हउं पावसवत्ति खारहं भरिय ।  
लइ दिट्ठउ एवहिं किं रंवि ।  
णीसहु कयउ दोहि वि जणिहिं ।  
घणघोसं सहरिसु जंपियउं ।  
जिणु वंभु र्सीयंभु सइं वसइ जहिं । 5  
विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।  
तं रूहुं धरेप्पिणु गियवइहि ।  
बिणिण वि उल्ललियइं झत्ति णहि ।  
असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।  
बंधवयणु संभरंतु लुसइ । 10

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरवरमहिहरि भद्दासालवणंतरी ॥

तं पइसइ वहुवरु च्लकिसलयकइ जिणवरभवणम्मंतरी ॥ १४ ॥

## 15

बिणिण वि वंदोप्पिणु जिणधवलु  
परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं  
तहिं णंदणि पुज्जिवि चेइयइं  
पुणरवि तिसट्ठिसइसइं उवरि  
वणु दिट्ठउ णांमं सउमणसु  
पैणवेवि तहिं मि जयतिजगुत्तमउ  
पुणु पंचतीससइसइं घण्हं

तं भद्दासालु सौलसरलु ।  
तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।  
वणि चउदिसु अकयणिकेइयंउ ।  
जोयणहं चडेप्पिणु सुरंसिहरि । 5  
करिदसणाहयतरुगालियरसु ।  
जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।  
पंचसयालंक्रियजोयणहं ।

14. १ MB पावसत्ति. २ T कहरगु. ३ MB सइहमि. ४ MB कहमि. ५ MB °सिरि. ६ MB संभु. ७ MB रज्जु गिएप्पिणु.

15. १ B सालहिं सरलु. २ MB णंदणवणि पुज्जिवि. ३ MB चेइयइं. ४ MB °णिकेइयइं. ५ M पणवि तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तहिं वि तिजगुत्तमउ. ६ B वणहं.

14. 2 a कहंयु कथास्वरूपम्; b रंवि गोपयामि. 9 b विओउ वियोगः.

15. 3 b अकयणि केइयउ अकृत्रिमचैत्यालयाः. 7 a घणहं महाप्रमाणयोजनानाम्.



लंघिवि पंड्यवणि पइसरिवि  
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय  
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु  
छ वि कुलपव्वय चोइह णइउ

अहिसेउ अरुहविंवरं करिवि ।  
चालीस जि जोयण परिगहिय ।  
अवलोइय दहविह कण्पतर । 10  
दिट्ठउ बहुभूमिमेर्यगइउ ।

घत्ता—जहिं वसइ सगुणगणु गिरु गिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥  
जंबूतरु जोइउ रयणुजोइउ जंबूदीवहु लेछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि  
तणुवलइय मणिमयभूसणिय  
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु  
जहिं सुरहं वि चोछुण्पायणइं  
तवणीयविणिम्मिय णं णविय  
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे  
तं पेच्छिवि णइयलि चल्लियइं  
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि  
संवरउलणिसेवियमेहलहो  
जयरुवणलिणलंपंडि भमरि  
सा भणइ वसइ इह तुलियजणु

जहिं हईं सहि सिरिविंझसिरि ।  
सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।  
जंबुण्णयणिम्मियविमलदलु ।  
णालु वि हंवेइ दहजोयणइं ।  
कण्णिय गव्वइपरिट्ठविय । 5  
लच्छीदेविहि अरविंदवहे ।  
विणिण वि णियमणि गंजोल्लियइं ।  
तैहि तणउ सल्लिउ परिमलु पिइवि ।  
पुणु आयइं वेयइयायलहो ।  
थिर्यं पंशु गिरोहिवि तहिं खयरि । 10  
गंधारिपिणु णामेण खगु ।

घत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवल्यभुय पइं णियंति जणरामे ॥

गुंणि मग्गणु संधिवि ठाणु णिबंघिवि चिन्नी हियवइ कामे ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिमोय°. ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु.

16. १ MB जंबूणय°. २ MB वि पविमउ. ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि; B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि. ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय°. ५ MB °लेपड. ६ B वियपंशु. ७ MB गंधारपिणु. ८ MB गुणमग्गणु.

16. ३ b जंबुणय° सुवर्णम्. ५ b गव्वइ° कोशद्वयम्. 12 °रामे रमणियेन.

17

णमिणहयरणाहहु गेहिणिय  
विज्जासहाससंपयधरहं  
मइ इच्छहि सूहव अज्जु जइ  
तं गिणुणिवि भरहसेणाहिबइ  
ओसरु सरु पंथहु सइरिणिण  
महु जणणिसमाणी परघरिणि  
सो पइं सेवैउ गिरु गिण्णिणउ  
ता रूसिवि पिंगलकेसियउ  
सिखुससिसंणिहदादालियउ  
चलजीहापल्लववयणियउ  
लेयियघोणसफणिमेहलउ

हउं जगि पसिद्ध तडिमालिणिय ।  
रणि दुज्जय हउं विज्जाहरहं ।  
तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।  
भासइ तुहुं सुंदरि मूढमइ ।  
किं जंपहि वोमविहारिणिण । 5  
जो पइंसिवि सकइ वइतरिणि ।  
हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।  
अंसइइ रयणियरिउ पेसियउ ।  
णवघणणीलंजणकालियउ ।  
गुंजापुंजारुणणयणियउ । 10  
किलिकिलिसइं कयकलयलउ ।

यत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जुंविलासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥  
आढत्तु अणेयहिं पहरणमेयहिं मिण्णमहामडदेहहिं ॥ १७ ॥

18

जयसीलविसुद्धि ण तेहिं हय्वा  
थिय थियमियचित्त सुलोयण वि  
तो तें झेदुलियइ बुज्झियउ  
जइ मंदरु गियटाणहु चलइ  
मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियउ  
गय पम भणेप्पिणु गयणयरि

हियपं जणण गुरुखंति कय्वा ।  
जाणंति तो वि खललोय ण वि ।  
हा किं मइं गिण्णकु जुज्झियउ ।  
तो तुज्झु वि चित्तविचिं खलइ । 5  
विज्जउ पेसिवि आयामियउ ।  
अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।

17. १ M दुज्जिय. २ MB पइसहुं. ३ MB गेण्हउ. ४ M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ;  
B असइए रयणियरउ पेसियउ. ५ K विज्जुसहासहिं.

18. १ MB हय. ३ MB हियवइ. ३ MB कय.

17. 5 a ओसरु सरु पंथहु उत्सुज व्रज मार्गात्. 6 b पइसिवि प्रवेष्टुम्. 12 °सर धारा° जलधारा.

तुंदुहिसरु मडुरु समुच्छलित  
तेणुत्तउ इदं पेसियउ  
जा पइं रोहिवि<sup>१</sup> थिय घणथणिय  
तुह सीलु णिहालहुं पट्टविय

रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।  
मइं तुह सुँइभाउ गवेसियउ ।  
सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।  
पइं णियजणणी विव चित्तविय । 10

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुभभवसि कंपावियदसैंदिव्वइ ॥

चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण खुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहुं मग्गि वरु  
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु  
अवरें वरेण महुं कज्जु ण वि  
जहिं सोक्खु कैयाइ ण संचलइ  
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो  
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ  
तं देवपसंसइ राइयउ  
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ  
कणयमयकोणताडणखमहं  
सहेण तेण आयड्डियइं  
सुरसरितरंगससियरसियइं

तं णिसुणिवि पभणइ णरु पवरु ।  
वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।  
पुणु णिवडइ सुरवइ चंदु रवि ।  
जहिं कामहुँयासु ण पज्जलइ ।  
हउं तत्ति करेमि सुर तहु वरहो । 5  
गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।  
वहुवरु केलासु पराइयउ ।  
आसीणउ रयणसिलायलइ ।  
ता णिसुँउ सहु सुरडिडिमहं ।  
विण्णिं वि गयाइं महियड्डियइं । 10  
जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं ॥

पयपणवियसीसहं तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ. ५ B रोहिय. ६ MB चित्तविय. ७ MB दहं.

19. १ MB पवरणरु. २ M सहुं. ३ MB ण काइं वि. ४ MB दुयासणु पज्जलइ. ५ B करउं.  
६ MB सुणिउ. ७ MB विण्णि वि विगयाइं महड्डियइं. ८ M जिणेसहं. ९ MB 'पणमिय'.

18. 11 णाणु भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दि व्वइ दिक्कयतीन्.

19. 9 ८ णिसुउ निःसुतः. 18 °सीसहं श्रीज्ञानाभिन्द्रादीनाम्; दिक्खादमियदुरासहं दीक्षया  
दमिता उपशमिता दुराशा भोगायाकाशा येस्तेषाम्.

रिसहं रिसिमगपयासयरं  
 संभवदेवं संभवमहणं  
 अदुगुच्छियइच्छियमोक्कगइं  
 पोमप्पहंमवि पोमाहरणं  
 चंदप्पहमहिहयचंदविहं  
 सीयलवयणंभह्यंगरुहं  
 सेयंसं सेयपैविसियरं  
 सिरिवासुपुज्जणामं गिरहं  
 वंदे भयवंतमणंतमहं  
 धम्मं दहधंमुवदेसयरं  
 संतं संतिं जगसंतियरं  
 कुंथुं कुंथुसुं वि दंयाविरयं  
 पणमामि अरं सणिहियसमं  
 मल्लिं मल्लियदामंविचयं  
 णिणमिय णमिणाहं जगसामिं

अजियं जियवम्महमुक्कसरं ।  
 अहिणंदणमहिणंदियमुवणं ।  
 सुमंइं सुमंइं वजियकुमंइं ।  
 गयपासं गमहं सुपासजिणं ।  
 सुविहिं सुविहिं जसपुंजिणं । 5  
 सीयलणाहं वंदे अरुहं ।  
 वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।  
 विमलं विमलं तवतावसहं ।  
 मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।  
 पणमामि जिणं जाणियसवरं । 10  
 सोलहमं परमं तिथ्ययरं ।  
 वहुगंधियगंधपंधविरयं ।  
 अरंमैयलं मूलियमोहदुमं ।  
 मुणिसुव्वयसुणिरायं सुचयं ।  
 गुणरहणेमिं वंदे णेमिं । 15

20. १ MB मोकखरयं. २ M हुमयं. ३ M कुमयं. ४ MB पोमणहं पवि. ५ K सुविहं. ६ MB °पवितियरं. ७ MB °धम्मपयासयरं. ८ MB कम्मट्टगंठिणिण्णासयरं; T °सयरं °त्वपरम्. ९ M संतं. १० MB कुंथेसु दया°. ११ MB दयावहरं; K दयावरयं. १२ MB °विहरं; T °विरयं. १३ MB अरमयलुम्मूलियं; T °उम्मूलियं.

20. 2 a संभवमहणं संसारविष्वंसकम्. 4 a पोमाहरणं पद्यायाः केवलज्ञानादिलक्ष्म्याः धारकम्; b गयपासं नष्टकर्मबन्धनम्. 5 a अदिहयचंदविहं अभिहता तिरस्कृता चन्द्रस्य विविष्टा मा दीप्तिर्येन. 6 a सीयलेत्यादि—शीतलवचनाम्मसा हृतः प्रक्षालितोऽङ्गरुहः शरीरजो रोगः कामो वा येन. 7 a सेयपविसियरं श्रेयो निर्वाणं पुण्यं वा तस्य प्रवृत्तिकरम्; b वासवपुज्जं इन्द्रपूज्यम्. 8 b विमलं विगतो द्रव्यभावस्वरूपः कर्ममलो यस्य. 9 b °तमहं ज्ञानदयावरणघातकम्. 10 b जाणियसवरं ज्ञातस्वरम्. 12 a कुंथुसु अति-सूक्ष्मजीवेष्णि. 12 b वहुगंधियगंधपंधविरयं ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरो मिथ्यात्वसुवर्णदिलक्षणो विद्यते येषां मिथ्यादृष्टीनां तेषां ग्रन्थाः शास्त्राणि तैरुपदिष्टाः पन्थानः स्वर्गापवर्गाद्युपायास्ते विरता विनष्टा यस्मात्, तेभ्यो वा विरतः उपरतः. 13 a संणिहियसमं सम्यग् निहितः स्थापितः स्वात्मनि भव्येषु च शमो रागाद्युपशमो येन; 14 b अरमैत्यादि—अरमत्यर्थं अचलः केनचिदपि न चालयितुं शक्यः; मूलियमोहदुमं मूर्कितः उन्मूलितः मोहदुमो येन. 15 a णिणमिय रुमिश्वकवर्त्यादिभिर्नमितो नतः.

पासं पासासिकैराण हियं  
वंदे वयवड्डमाणणियमं

सत्तूण वि दरिसियं धम्मसुयं ।  
सिरिवड्डमाणवीरं चैरमं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदे कुचलयचंदे वंदिय सयल जिणेसर ॥  
तिह ते जयरापं समियकसापं पुष्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसड्डिमहापुरिसगुणालंकारे महाकड्डपुष्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे जयसुलोयणातिथ्वंदणं  
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥  
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण°. १५ MB दरसियधम्मसिय. १६ MB चरिमं.

16 b सत्तूणेत्यादि—शत्रूणामपि दर्शिता धर्माधर्मप्रतिपादनात् श्रीः विभूतिविशेषो येन. 17 a वयवड्ड-  
माण णिय मं व्रतैरुपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा भव्यानां स तथोक्तः.  
19 पुष्फयंत जोईसर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च.

# XXXVII

जयरायं रयणविणिमियइं पसरियकरिण्डंरुंवइं ॥  
तेवीसहं जिणहं अणायगइं वंदियाइं पडिबिबइं ॥ धुवकं ॥

1

चंदइ सुंदरि चेइयइं जाम  
ते तियसहिं गय सहुं समवसरणु  
बहुवरइं णवेप्पिणु गुरुपयाइं  
फत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं  
वरविजयवइजयंताइयाइं  
तोरणइं माणमंदरणिमुंभ  
सरवरपविमलजलखाइयाउ  
पायारु णडिंदिहेलणाइं  
जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु  
बत्तीस सुरिंद णरिंदु एक्कु  
जोइंसवइ आणिय चंदसुर  
किंणरवइ दोणिण महोरईस

तहिं अच्छिय मुणिवर विणिण ताम ।  
जहिं णिसवइ रिसहु तिलोयसरणु ।  
मग्गेण तेण ताइं वि गयाइं । 5  
जिणदंसणवंदणकयमणेहिं ।  
दौरइं वत्तारि पलोइयाइं ।  
माणिकककरज्जलमाणखंभं ।  
पप्फुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ ।  
मुणिणाहघरइं सुरतरुवणाइं । 10  
मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविडु ।  
भरहेसरु बीयउ णाइ सक्कु ।  
सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर ।  
ते कायमहाकायंकभीस ।

घत्ता—किंपुरिसहं राणा विणिण जण कहिय पुरिस किंपुरिसं वि ॥ 15  
घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि णव्वरविछवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।  
सीमपराकससारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB ०णिउरुंवइ. २ MB तेवीसइ. ३ M अणायगइ. ४ B सुंदर. ५ B omits this foot  
६ G कइजलु. ७ MB ०धंभ. ८ MB णरिंद. ९ MB किंपुरिसा. १० M णवरच्छवि; B अवरविछवि.

1. 12 a बत्तीस सुरिंद तथाहि कल्पवासिनां द्वादश इन्द्राः, भवनवासिनां दश, व्यन्तराणामष्टौ,  
चन्द्रादित्यौ चेति.

## 2

गंधर्व्वहं पटु समविसमणाम  
जक्खिखद पुण्ण मणिभद् भणिय  
तहिं काल महाकाल वि पिसाय  
बल वइरोयण दणुइंद कहिय  
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ  
दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु  
अमियगइ अमियवाहण दिसेस  
गजंत पंतिं अलिणीलदेह  
अग्गिंव अग्गि हुयवहसिहाहं  
इय पेक्खिवि वीस वि भावणिंद

रक्खसहं भीम अच्चंतभीम ।  
भूथाहिव रूव विरूव भणियं ।  
दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।  
णौइंद धरण फणिवइ ण रहिय ।  
सोवण्णकुमारहं सोक्खेहेउ । 5  
उयहिहिं जलकंतु जलपहक्खु ।  
हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।  
थणियाहिव मेह महंतमेह ।  
वेलंब पइंजण पवणणाहं ।  
धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद । 10

वृत्ता—विंभयपूरियहियउल्लण हारिसुण्डुल्लियवयणें ॥

जय जय पभणंतें जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें ॥ २ ॥

## 3

णाहेयपायणियडइ बईदु  
पुणु वीयउ गणहरु जइवरिंदु  
दढरदु दिहिपरियरु सत्तुदमणु  
धम्माणंदणु इसिणंदणक्खु  
गुंणि वाउसम्मु झाणोवधिदु  
रिसिं अग्गिगुत्तु अण्णेक्खु गोत्तु  
हलहरु माहिहरु माहिंदु धीरु  
विण्णाणवंतु विण्णायणेउ

पुणु वसहसेणु गणणाहु दिदु ।  
अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।  
गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।  
जइ सोमयंत्तु सुरदत्तु भिक्खु ।  
देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिदु । 5  
तेयंसिउ सत्तुइयासगुत्तु ।  
वसुएउ वसुंधरु अचलु मेरु ।  
मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

2. १ MB मुणिय. २ MB णागिंद. ६ B हुलपहक्खु ४ MB एंत. ५ MB अग्गिवइ.

3. १ MB णिविदु. २ MB जसयरिंदु. ३ MB सोमयत्त. ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ  
समुज्झाणो. ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु. ६ MB सत्त°. ७ MB अचल. ८ M भय°; B सय°.

2. 7 a दिसेस दिक्कुमारा; b सो दामणीस विशुत्कुमारा.

थिरविचु पविचु धरिचिगुचु  
पुणु जण्णगुचु पुणु सव्वगुचु  
पुणु विजयभडारउ विजयमिचु  
अवर वि परमेसर परमजोइ

सयलोसहिगुचु वि विजयगुचु ।  
पुणु संव्वत्थि आयमि पउचु । 10  
विजइल सिरिअवराइउ णिरुचु ।  
चउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहियँ इव भित्तिथले झाणलीण मणधीरा ॥  
जोइय जण्णं जियजमकरणं सव्व वि साहु भडारा ॥ ३ ॥

4

उग्गतवमहातवतत्तवहं  
तवसिद्धपुज्जविज्जाहराहं  
आहारयतणुलयधारयाहं  
अवियलसुयसायरपारयाहं  
पयवीयकोट्टुबुद्धीसराहं  
पंचविहणाणउपपाययाहं  
छम्मासवरिसउववासयाहं  
कंदप्पदप्पविणिवारणाहं  
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं  
दुज्जयपरवाइगिराहराहं  
खँवियक्खपक्खभिकखारयाहं

दित्ततव तवंतहं धोरतवहं ।  
अणिमाइगुणडूहं गुणहराहं ।  
भयरहियहं मोक्खासारयाहं ।  
णग्गहं णीसंगहं णीरयाहं ।  
तेजइयरिद्धिसिहिभासुराहं । 5  
बुद्धियपयत्थपज्जाययाहं ।  
तहँकोडरकंदरवासियाहं ।  
जलसेढित्तंणुणहवारणाहं ।  
पासायदीवणिच्चलमणाहं ।  
पँलियंकत्थहं लंबियकराहं । 10  
चउरासीसहसइं जईवराहं ।

घत्ता—इहु सो सोमण्णहु दिव्खु मुणि इहु सेयँसुं वि समियमणु ॥  
इहु पेक्खुं सुलोयणि तुज्झु पिउ रायरिसिंदु अकंपणु ॥ ४ ॥

९ MB जणययुत्तु. १० MB सक्कउत्तु आयमं. ११ MB लिहियाइ वि. १२ MB जण्ण. १३ B °करणा.

4. १ MB अविलयं. २ MB ते जायं. ३ MB °उप्पायणाहं. ४ M तवकोडरं. ५ M °सेढिय-  
तंठं. ६ M reads this foot as 11 a. ७ M reads this foot as 10 b. ८ B जईसराहं.  
९ M सयंसु. १० MB पेक्खि.

4. 9 b पासा ये त्या दि—प्रासादस्थदीपवजिस्थलं मनो येषाम्. 10 a परवाइ गिराडराहं परवादि-  
वचननिरासकानाम्. 11 a ख वि य क्ख पक्खं. निजितेन्द्रियाः.



## 5

इहु जोयहि भांयसहासु तुज्हु  
जेणासि सयंवरि सुरदिक्षि  
इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिदु  
सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं  
पंकवरल्लइयथणत्थलीहिं  
जल्लमलविचिसंगोयरीहिं  
सुइसीलसलिलसंगहसरीहिं  
आसंघियवंभीसुंदरीहिं  
अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं  
तेत्तियइं जि लक्खइं सावयाहं  
जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं

थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्हु ।  
रूसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।  
समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिदु ।  
णाणुग्गमणिदूरियरईहिं ।  
दलवट्ठियकल्लिमलकंदलीहिं । 5  
विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।  
सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।  
लक्खइं तिण्णि संजमधरीहिं ।  
पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।  
परिपालियबारहविहवयाहं । 10  
तहिं पंचेवै य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता--कागणिकरं सुरगुरु फणिवइ वि पारिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥

पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगहं संख को बुज्झइ ॥ ५ ॥

## 6

अच्चंततत्तवणीयवण्णु  
पेच्छिवि सहमंडवि जगजणेरु  
इच्छियभवंभमणविणिग्गमेण  
इह चक्कवट्ठिसेणाहिवेण  
जय देव दिण्णपचिमलमणीस  
जय जीवलोयबंधव दयाल

कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।  
णं जंवूदीवहु मज्झि मेरु ।  
सकलत्तं विलसियउवसमेण ।  
पारदु धुणहुं जयपत्थिवेण ।  
जय जिण तिहुयैणचूडामणीस । 6  
जय पुरुतित्थंकर सामिसाल ।

5. १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु. २ MB एकंवर°, ३ MB °विलित्त°. ४ MB पंच जि लक्खइं; K चउपण्ण जि लक्खइं. ५ MB °कर. ६ MB मिगहं.

6. १ MB भवभवण°. २ T तिहुवण°.

5. 11 a °हिं सावईहिं हिंसा आपदश्च याभिः.

6. 1 b °कुह° वृक्षः. 2 a जगजणेरु ऋषभनाथः. 5 b तिहुयण चूडामणीस त्रिभुवनचूडा-  
मणिमौक्तस्तस्य ईश स्वामिन्. 6 b पुरु° प्रथमः. 7 b मयतरु करेण मृत्युतरुभज्जहस्तिर ( ? )

जय कप्परुक्ख जय कामधेणु  
जय सयरायरलोयावलोय

जय चिंतामणि मयतरुकरेणु ।  
संसारमहणवतरणपोय ।

घत्ता—पइं एयाणेयवियप्पणयणाएं वारियँ परमपय ॥

पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय ॥ ६ ॥ 10

7

वड्डावियमिच्छामोहरयइं  
पइं जिणिधि णाह जं तच्चु सिट्ठु  
सयलहं मणि णिवसइ सामलंणि  
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीथराउ  
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव  
इय वंवि वि जिणु जियतरुणिविरहु  
पहु भेल्लहि गच्छमि करि पसाउ  
तं सुणिवि चवईं रायाहिराउ  
ण पहुच्चइ जइ तुहु गयउरेण  
एएं सयलेण वि सरयणेण  
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु

समयहं तेसट्ठइं तिणिण सयइं ।  
तं मुणइ ण वंभु ण रुहु विट्ठु ।  
विड संभरंति किं सत्तभंणि ।  
तुहुं इंदमउडमंणिघडियपाउ ।  
हउं कैरेवी तुहारी चरणसेव । 5  
पणवि वि संभासिउ तेण भरहु ।  
तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ ।  
लइ रज्जु तुहुं जि जय होहि राउ ।  
तो पूरइ किं ण धरायलेण ।  
आयड्डियणवणिहिहडधणेण । 10  
तुहुं भुंजहि महि आसाणि णिविट्ठु ।

घत्ता—मा जाहि तवोवणु चमुपमुह वेहाविउ रिउ रायहिं ॥

पइं जेहउ वीरुं महाभडु वि जिप्पइ विसयकसायहिं ॥ ७ ॥

३ MB धारिय; T निवारिता निराकृता.

7. १ K वड्डारिय°. ३ MB मणिधिट्ठु° ( धिट्ठु ? ). ३ MB करमि. ४ B भणइ. ५ MB बड्डु.

६ MB वीर.

9 ए याणेयवियप्पणयणाएं वारिय एकानेकविकल्पो अद्वैतज्ञाणिकत्वभेदौ तयोर्न्यास्तत्प्रसाधकप्रमाणानि ते न्यायेन प्रमाणोपपत्त्या निवारिता निराकृता येन.

7. 1 b समयहं मतानाम्; तेसट्ठइं तिणिणसयइं त्रिषष्ठ्यधिकानि त्रीणि शतानि. 0 a जियतरुणि-विरहु धर्मानुरागपरतया निजितः हृदयेऽसंप्रधारितस्तरुणीविरहो येन. 12 वेहाविउ विजयशक्तिं नीतः..

8

जिण्णवणवारिधुयमंदरेणं  
 मेळिहिं भरहादिव जाउ पडु  
 तियसिंदहु तं पडिवणु तेण  
 जं चिर पिउँणिलयहु णिग्गयाइं  
 जं सत्तिसेणपरिपालियाइं  
 जं भंगुरणहरहिं दारियाइं  
 मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं  
 वेउवियतणुसोहाहराइं  
 जं वणि पच्चारिउ भीमसाहु  
 तं सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज

ता विहसिचि चविउ पुरंदरेण ।  
 होसइ गणहरु तवलच्छिमेहु ।  
 णियपणइणि आउच्छिय जपण ।  
 जं णासिवि सरवांसहु गयाइं ।  
 अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं । 5  
 विणिण वि मज्जारं मारियाइं ।  
 जं पिउवणजलणं पडलियाइं ।  
 जायाइं समिगं जं बहुवराइं ।  
 जं हूयउ सो तेलोक्काहु ।  
 साहेवउं मइं परलोयकज्ज । 10

यत्ता - आयणिणवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥

आमेळिउ पिययमु पणइणिण रुच्चन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं  
 अवगाणिणउं तंणु जिहं पुहइरज्जु  
 हंकारिउ पुत्तु अणंतवीरु  
 तहु पट्टु णिवंधिवि जैयरवेण  
 आउच्छिवि जीवाजीवमेय  
 अरिमित्ति पउंजिवि सरिस दिट्ठि  
 देव्वं भावेण वि मुक्कगंधु  
 जउ दिक्खंकिउ पणविउ जईहिं

दिजंतु वि धम्मकयायरेहिं ।  
 मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।  
 गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।  
 जिणवरु जयंकारिवि घणरवेण ।  
 परियाणिवि णाणाणाणेय । 5  
 सिरि लोउ विइणउ पंचमुट्ठि ।  
 णिग्गंधु णियच्छियमोक्खपंधु ।  
 अट्ठहिं सर्पाहिं सह णरवईहिं ।

8. १ G मंदरेण. २ MB मेळहि. ३ MB पिय°. ४ MK सरवाहंहु.

9. MB तिणु. २ MB हंकारिवि पुणु. ३ MB जयवरेण. ४ MB जयकारेण. ५ M दिव्वं.

9. 5 ष णा णा णा णेय चेतनरूपं ज्ञेयं परिच्छेयं, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणप्रशंसापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च.

तेणंगइं बारह सिक्खियाइं  
सो मुणिवर मेळिवि मोहवासु

चोइह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।  
जायउ गणहर रिसहेसरासु ।

10

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥

अणुगामिणि तुम्हहु होमि हउं संजमु घरमि भडारा ॥ ९ ॥

10

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं  
कयकम्मपहावै विण्हडियाइं  
णियकंतइ सहुं सुहिहिययथेणु  
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ  
जइयहुं जायइं पारावयाइं  
जइयहुं उप्पणइं खेयराइं  
रिसिदंसणेण विभियमणाइं  
तइयहुं लमिवि वहुंपइ णिरुत्तु  
णीसेसजीवसंतीयेण  
सज्जणगुणगँहणान्हियाइ  
घल्लिउ सकेसुं लुंचिवि सणेहु  
उम्मूक्कवियारपलोयणाइ

रिउभइयइं छट्ठियमंदिराइं ।  
णासंतइं काणाणि णिवडियाइं ।  
जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।  
हियउल्लउं काइं वि धम्मि थियउ ।  
लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं । 5  
लीलालंधियविउलंवराइं ।  
जइयहुं सुराइं विण्णि वि जणाइं ।  
भो तुज्झु वरिच्चु जि मँहु वरिच्चु ।  
तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।  
अणिय सुंदरिइ सुहदियाइ । 10  
व्रयसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।  
लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।

घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमाणि मंडिय ते मलमइलिय ॥

णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१०॥

१ M तुम्हइं होमि; K तुम्हइं होमि.

10. १ MB णिवडियाइं. २ MB तुहुं पइं. ३ M भज्जु. ४ MB 'गहणें णदियाइ. ५ MB सकेस.  
६ MB वय<sup>०</sup>. ७ MB उम्मूक्कवियारयलोयणाइ.

0 b लोउ लोवः.

10. 8 a वहुपइ वधूपती. 10 b सुहदियाइ भरताप्रमहादेव्या दुभद्रया.

## 11

गंधारिगोरिपण्णत्तियाउ  
विच्छट्ठियघरवावारत्तत्ति  
ता पियविओयसिहितवियकाय  
हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु  
इंदियइं पंच णैउ पीलियाइं  
मइं पावइ काइं जियंतियाइ  
इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि  
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि  
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ  
पयारसंगसुयधारिणीइ  
देवीइ अकंपणु तणुसुहाइ

चिरभवविज्जउ पंचित्तियाउ ।  
अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।  
जूरइ अणंतवरवीरमाय ।  
विणु पिउणा रज्जे को मरट्टु ।  
झाणेण ण णयणइं मीलियाइं । 5  
पइविच्छोपं तप्पंतियाइ ।  
णियसुयट्टु देति परलोयबुद्धि ।  
थिय रायसासणाणंदधामि ।  
अवरैउ संजायउ संजईउ ।  
णाणापुरगामविहारिणीइ । 10  
रयणहिं सकहंतरे कहिउ ताइ ।

यत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥

अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहिं होसइ केत्थु सुलोयण ॥ ११ ॥

## 12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण  
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु  
होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि  
माणियणिग्वाणरईरमाइ  
होही कर्णयद्धउ णाम राउ  
लहिही सुहं अमरणु अकरणालु

ता भणिउं पदमतिट्ठंकरेण ।  
जापसइ जउ णिग्वाणठाणु ।  
सुइभावै भावाभावभावि ।  
सुहं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।  
तउ चरिवि पणासिवि रोसु राउ । 5  
जेवट्टु सलिलु तेवट्टु णालु ।

11. १ MB पत्तित्तिआउ; २ MB ण णिवीलियाइं. ३ MB अवर वि. ४ MB रयणहिं.

12. १ B कणयट्टुउ. २ MB सो सुराउ. ३ MB सुहं अमणु अकरणालु.

11. 8 b आ णं द धा मि हस्तिनागपुरे. 9 a वय पय ण ईउ व्रतजलनथः. 11 b रय ण हि रत्ता-  
आविकायाः.

12. 8 a अ ह मिं दु अच्युतेन्द्रः.

णिप्पज्जइ णलिणहु णत्थि भंति  
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूळै

जिणधम्मि पँसु वि सुरिंद होंति ।  
जिणधम्मु सव्वकल्लणमूळु ।

घत्ता—जिणधम्मु पर्माइवि मूढमइ जो परधम्महु लग्गइ ॥

चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कहि णिग्गइ ॥ १२ ॥ 10

## 13

मागहमंडलपरमेसरासु  
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु  
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु  
गणहव रिसिंसंवहु तिलयभूउ  
सइंसिद्ध भडारउ दुहविणासु  
गेहिणि हई अच्चइ सुरिंदु  
णिरँसणभूसणभूसिउ अणंतु  
आयासहु णिवडइ पुष्पविट्ठि  
जहि पाउ देइ तहि तहि जि कमलु  
जहि वच्चइ तहि कासु विण डुकखु  
सीहासैणु छत्तइ तिणिण यंति

बेलिणिकमलिणिणवणेसरासु ।

आर्गामितइयभवजिणवरासु ।

गोत्तसु दिर्यगोत्तंवरमियंकु ।

जयराउ एक्कहत्तरिमु हूउ ।

संपत्तउ सो तिजगग्गवासु । 5

कालं महि विहरइ जिणवरिंदु ।

दीसइ सुरयणु तें सहुं चलंतु ।

चउअहियइ चमरइं चारु सट्ठि ।

सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।

जहिं वसइ तहि जि कंकेल्लिरुक्खु । 10

तिहुयणपहुचु णाहुहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सुयरसंवरहिं मृगमायंगतुरंगहिं ॥

जिणणाहुहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगहिं ॥ १३ ॥

४ MB गुण वि. ५ MB मोहजालु. ६ B मुएवि.

13. MB आगम्मि. २ MB असियसंकु. ३ MB दियगोत्तें वर'. ४ MB णिवसण'; K णिवसण but corrects it to णिरसण'. ५ MB सीहासण. ६ MB सिग'.

4 b बहु° द्वाविंशतिः, 0 a अकरणाळु अतीन्द्रियम्.

13. 13 °भा संग हिं °भाषास्वरूपैः.

## 14

सुव्वइ दुंदुहि णहि वज्जमाणु ।  
 देसाहिव उच्चारंति चहैउ  
 भामंडलु णवरविमंडलाहु  
 पुव्वंगधारि तवतणुसरीरं  
 देसावहिपरमावहिसमेयं  
 णवदिक्खिय सिक्खुयं संत दंतं  
 णिहयक्खयअक्खयपयसमीह  
 जहि गच्छइ तहि गच्छंति भव्व  
 माणव तिरिक्ख सुरवर असंख  
 झं झं करंति झुणि झल्लरीउ  
 तुवरु णारय गायंति मिट्ठु

पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।  
 बहुकुसुमगंधपरिमलित मरुउ ।  
 गच्छंति समउं बहुभेय साहु ।  
 मणपज्जवर्णाणि सहावधीरं ।  
 केवलिकेवल्लणाणेकतेर्यं । 5  
 वेउव्वियाइ बहुरिद्धिवंत ।  
 कइगमयवाइ वार्हं सीह ।  
 जहि अच्छइ तहि अच्छंति सव्व ।  
 ह्र ह्र दुयंति चउदिसिहि संख ।  
 णचंति णरामरसुंदरीउ । 10  
 भरहं दिट्ठउ पिउं सुहुं णिविट्ठु ।

यत्ता—आउच्छिउ धम्मो महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥

केवलि परमण्णउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

## 15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविट्ठु  
 भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि

णिज्जरं वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।  
 सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14. १ M सुम्मइ; B सव्वइ. २ B दोसाहिव. ३ B चार. ४ M °मलियगरुउ; B °मल्लिउ गार. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलभयसयविहीर. ५ B °णाण. ६ M दुइदहसहास. ८ M adds after this in second hand and in the margin : रिप्पि सयपण्णास विमुक्कु वास. ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरंघ-सहस पयडियविवेय; B adds : मुणिरंघसहस पयडियविवेय. १० M °केवलणाणक्क°; B °केवलणाणक्क°. ११ M adds after this in second hand and in the margin : णयणग्गइ चउसुण्हिं समेय; B adds : णयणग्गइ चउसुण्णसमेय. १२ MB °सिक्खिय°. १३ M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु वयभयदोएक्कु वि णिरीह. १४ B णिहियक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व. १६ MB जिणु. १७ B सुहणिविट्ठु.

15. १ MB पोग्गलु दुविट्ठु. २ MB णिजर.

14. 2 a च रुउ अर्धपात्रम्. 4 a ° तणु सरीर ° कृशशरीरः.

15. 9b °ज ल जाय के उ मकरध्वजः कामः.

जीवहं गरुड कहियौउ तिण्ण  
गुणवयइं तिण्ण जगि जोय तिण्ण  
चउविहु चउगइ संसारसरणु  
चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु  
चउ ज्ञाणइं चउ देवइं णिकाय  
चउविहु जि बंधु चउविहु जि णासु  
चत्तारि वि बंधविणासहेउ

धत्ता—सज्जाय पंच आयरविहि णाणइं पंच बैरिट्ठइं ॥

णिगमंथ पंच जोईसकुलइं पंचेदियइं वि सिट्ठइं ॥ १५ ॥

16

अणगारागौरिवयाइं पंच  
आसवणिबंधहेऊउ पंच  
संसारसरीरइं होंति पंच  
छजीवकाय छक्काल समय  
छइव्वइं छावासयविहीउ  
पयइउ अट्ट पुहइउ अट्ट  
णव णारायण णव सीरधारि  
णवविह पयत्थ दहंमेउ धम्म  
दह भावणसुर भवणंतवासि  
पयारह रुह रउइभाव  
पच्छिउत्तइं अणुवेक्खावयाइं  
बारह णरिंद पालियरहंग

धत्ता—तेरह चरियंगइं ओक्खियइं तेरह किरियाठाणइं ॥

चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह ममाणठाणइं ॥ १६ ॥

जगवेढणमरु गारव वि तिण्ण ।  
हयकालं भासिय काल तिण्ण ।  
वालाइउ चउविहु भणिउं मरणु । 5  
चउविहु द्वाइउ दीसमाणु ।  
चउभिण्णा उच्चविह चउकसाय ।  
विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।  
भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

10

पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।  
लद्धीउ महाणरया वि पंच ।  
गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।  
छल्लेसाभाव वि समय वि मय ।  
सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ । 5  
वणदेव जीवगुण ते वि अट्ट ।  
पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।  
वेज्जावच्चु वि दहविहु सुक्कम्मु ।  
फणिससिसह दह दिसिगय सुहासि ।  
पयारहविह सावय विगाव । 10  
बारह जिणवयणविणिग्गयाइं ।  
बारह तव बारहविह सुयंग ।

३ MB कहियाइं. ४ MB संसारगमणु. ५ MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय. ६ MB विसिट्ठइं.  
७ MB जोयसं.

16. १ MB गारवयाइं. २ MB दहमेय. ३ B अणुवेक्खावयाइं. ४ MB बारह तव बारहविह सुयंग.  
५ MB रक्खियइं.

16. 6 b वणदेव व्यन्तरदेवाः. 9 b फणिससिसह धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः.



## 17

अरहंतं सिद्धं तासियाइं  
चउदह मल चउदह चित्तगंथ  
चउदह रयणइं गुणिगैहियणाम  
पण्णारह कम्मधराविहाय  
सोलह वयणइं दुहदारणाइं  
संजम दहसत्त दहट्ट दोस  
असमाहिणिलय वज्जरिय वीस  
बावीस परीसह कुमुणिमीस  
तित्थयर भणिय चउवीस ईस  
छवीस समासिय वसुहमेय  
आयारकप्प पवरट्टवीसै  
भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

चउदह पुच्चाइं पयासियाइं ।  
चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।  
चउदह दक्खालिय भूयगाम ।  
पण्णारह उवपसिय पमाय ।  
सोलह जिणजम्महु कारणाइं । 5  
णौहज्झाणइं पक्कणवीस ।  
कयमणमल सय्यैल वि एक्कवीस ।  
सुइयइज्झयणाइं वि तिवीस ।  
मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।  
गुण सत्तवीस जइवरविहेय । 10  
अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।

धत्ता—एर्याहिय तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसै ॥

बत्तीसुवपस मुणीसरहं कुडिलउं चियकेसै ॥ १७ ॥

## 18

जं जलि थलि णहि पायालमूलि  
तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु  
गुरु वंदिवि णिंदिवि डुरिउ डुट्टु  
णरणाहै रयणिहि सुत्तएण  
सयरदाढाखंडियकसेह  
अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिपण  
किउ णयणगलियजलविंदुएहि

जं थूलु सुट्टुमु तिजगंतरालि ।  
भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।  
गउ णिउ णियपुह णिलयणि पइट्टु ।  
सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।  
इललुलिउ णिहालिउ तेण मेह । 5  
सिविणयविवरणउं पुरोहिपण ।  
वच्छत्थलैहारोवरि सुएहि ।

17. १ MB सिद्धताइयाइं, २ MB मुणिगणियणाम, ३ MB णाहाझाणइं, ४ MBK सबल,  
५ MB सुइयज्झयणाइं, ६ B तिणि वीस, ७ M adds after this: वयसमिदिपमुह जंपइ जईस,  
८ MB एयाहितसि.

18. १ MB सुविणय°, २ MB वच्छत्थलु.

17. 1 a सिद्धतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि, 2 b °संथ संस्था मर्यादा.

तिट्ठारयणियरिविलुक्कमौणु कालाहिमहामुहि णिवडमौणु ।  
 उद्धरिवि लोउ अण्णाणुं दीणु चउवह दिणं वरिससहासहीणु ।  
 महि विहरिवि पुव्वहं पक्खु लक्खु केलासु पराइउ णाणचक्खु । 10  
 पावणवणकुसुमामोयमहुरु आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धसिहुर ।

घत्ता—दससहसहिं समउ महारिसहिं कामकोहणिण्णासणु ॥

थिउ पुणिणमादियहि जिणाहिउवइ बंधिवि पलियकासणु ॥ १८ ॥

19

जाणिवि जणणहु जणणचयणु लहुयउ ओहुल्लिउ करिवि वयणु ।  
 सुविसुद्धबुद्धिसीलावयासु आयउ भरहु वि अट्ठावयासु ।  
 गिरि सोहइ चुयमहुआसवेहिं जिणु सोहइ रुद्धहिं आसवेहिं ।  
 गिरि सोहइ वियलियणिज्जरेहिं जिणु सोहइ कम्महुं णिज्जरेहिं ।  
 गिरि सोहइ णाणाविहमपहिं जिणु सोहइ रिसिहिं सुणिम्मपहिं । 5  
 गिरि सोहइ णच्चियमोरपहिं जिणु सोहइ सुरसंरमोरपहिं ।  
 गिरि सोहइ धम्मणएण जेम जिणु सोहइ धम्मणएण तेम ।  
 गिरि परियंचिउ सवराहिवेण जिणु पणवतें भरहाहिवेण ।

घत्ता—ता णाहु समुग्घायंतरहिं दीहसमयसंताणं ॥

वेयणियणाभमगोसंइ करइ तिण्णि वि आउपमाणं ॥ १९ ॥ 10

20

मुणिपवरं किउ किरियाविहाणु

णीसारिउ दंडायार जीउ

रुंदत्तणेण ससरीरमाणु ।

तिजगमाचरमणरयंतु णीउ ।

३ MB °पाणु, ४ MB णिविडमाणु, ५ MB अण्णाण, ६ MB °दिणु, ७ G विवरिवि, ८ MB सिद्धसिहुर, ९ K दह°.

19. १ MB जाणिवि जणजणहु, २ M लहुयउ, ३ MB ओहुल्लिउं, ४ T<sub>p</sub> ससमोरएहि इति पाठे उपशममुक्ताश्च ते उरगाश्च, ५ B गोत्तहु.

19. 1 a जणणहु कथभनाथस्य; जणण चयणु संसारत्यजनम्, 3 a चुयमहुआसवेहिं प्रवृत्त-  
 मधुप्रवाहेः, 6 b °सरमोरएहिं सरमाः सलक्ष्मीकाः उरगाः तैः, 7 a धम्मणएण धर्मनात्रा वृक्षविशेषेण;  
 b धम्मणएण धर्मन्यायेन, 9 समुग्घायंतरहिं समुद्घातविशेषेः दण्डकपाटप्रतरलोकपूरणरूपेः.

20. 1 a किरिया विहाणु शरीरादात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणम्, 2 °चरमणरयंतु सप्तनरकाणां  
 मध्ये नित्यनिगोदनरकं एकेन्द्रियाणां भेदस्तस्य पर्यन्तम्.

अङ्गुष्ठपसारिउ पुणु सुरीड  
अप्पाणउ देवै देवणविउ  
णीसेसलोयपूरणु करेवि  
तेजइयकम्मओरालियाइं  
मुणि मेळिवि तिज्जउ सुद्धमकिरिउ  
तहिं सुक्कझाणि आयउ अजोइ  
थिउ देहम्मंतरि सामिसालु  
अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ

णं तिहुयणघरि दिण्णउं कवाड ।  
हैयायारें सहस ति थविउ ।  
विर्वरीएं चारें संवरेवि । 5  
तिणिण वि अंगइं णिञ्चालियाइं ।  
संपत्तु चउत्थु छिण्णकिरिउ ।  
मणवयणकायमुक्कउ विहाइ ।  
क ख ग घ ङ समक्खरंभणणकालु ।  
फलछलि व जैरेंदेरंडवीउ । 10

घत्ता—दंसणणाणाइंहि वसुसमहि सिद्धगुणहिं संपण्णउ ॥  
ससहावें जाइवि परमपप परमेसरु संपण्णउ ॥ २० ॥

## 21

ता सक्के कय माणवमणोज्ज  
सियसिवियहि णिहियउ णाहदेहु  
भंभाभेरीझल्लरिसयाइं  
गायंतिहिं किणरकामिणीहिं  
धिपंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं  
सहलक्खयधूवविलेवणेहिं  
आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं  
कप्पूरचंदणागुस्तुंरुक्ख  
अंचेप्पिणु रिसिपरमेसरासु  
पय पणवंतहिं तंबिरितिडिक्कु

अरुहहु पंचमकल्लाणपुज्ज ।  
कइलाससिहरि णं अरुणेहेहु ।  
सुरैत्तरिपहिं तूरं हयाइं ।  
णञ्चंतिहिं फणिसीमंतिणीहिं ।  
उन्मियउल्लोवधयावलीहिं । 5  
भिगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं ।  
अवरेहिं वि णाणांमंगलेहिं ।  
सल्लं विरइय खंडिबि विविहइ रुक्ख ।  
तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु ।  
अग्गिदाहिं मउढाणलु विमुक्कु । 10

20. १ G सरीडु. २ M फयरायारें; B कयआयारें; T पयरायारें. ३ MB विवरोरें; T विवरोए.  
४ MBT णिञ्चालियाइं, ५ B छण्ण°. ६ MB भरण°. ७ MB जरेंदेरंड°. ८ MB वसुसमिहिं. ९ MB  
जाइवि उद्धगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ.

21. १ MB डुरतूरएहिं. २ MB धूम°. ३ B पुरुक्ख. ४ M सयल विइय खंडिबि; B सलु विय  
रयवि खंडिबि.

3 a सुरीडु देवस्त्वंतु देवसुतं वा. 4 b रुआया रें प्रतराकारेण. 5 b विवरीएं चारें संवरे वि प्रथमं लोक-  
पूरणसंवरणं कृत्वा ततो रुजकारसंवरणं ततो दण्डाकारसंवरणमिति. 6 b णिञ्चालियाइं निःपरिस्पन्दीकृतानि.

21. 10 a °ति डिक्कु स्फुलिङ्गः.

घत्ता—अलहंतु णरत्तणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥

सिहि णं संसारें तौसियउ जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥ २१ ॥

## 22

उल्ललिउ धूसु घणजैणियसंकु  
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ  
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ  
तिणिण वि सिहि पुज्जिय सोत्तिपहिं  
तं मणिणवि पुणज्जणु पवित्तु  
भालयैलि कंठि भुज्जुयलसिहरि  
अणु मुद्धएसि मउडग्गभाइ

णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।  
तणु पत्तु खणद्धे भप्फभाउ ।  
मुणिवर सकारिय पच्छिमाइ ।  
घय जैव तिल घल्लिवि खसिपहिं ।  
अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोत्तु ।  
हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।  
जसमंडणुं जिह तं सहइ काइ ।

5

घत्ता—जं तुम्हहं जायउ मोक्खुं सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥

इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इदें रिसहहु केरउ ॥ २२ ॥

## 23

जेही तुह तेही होउ बोहि  
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं  
वितरदेतहिं जोइसगणेहिं  
णंदादेवीइ महासईइ  
भरहेण दुक्खदूमियमणेण  
केसरिकिसोरसरि ।सहरिवासि

अम्हहं वि भडारा भाणि समाहि ।  
वंदियउ तियाउसु खेयरेहिं ।  
वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।  
वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।  
वंदियउ तियाउसु परियणेण ।  
घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।

5

५ MB तावियउ.

22. १ B जलिय°, २ K भप्प°, ३ MB घय तिल जव, ४ G भायलि, ५ MBK भुयजुयल°,  
६ MB मुद्धएस, ७ MB मोक्खसुहुं.

23. १ MB मणसमाहि.

22. ७ b हि पंकइ हृत्पङ्कजे हृदयकमले, 7 a मुद्ध एसि मस्तकप्रदेशे, 9 तियाउसु भस्म.

23. ७ a °सरि °शब्दे.

सूर्यगमि कैसनचउइसीहि  
रोवइ सोयाउर सयणविडु  
तेलोकमंदिराधारखंडु

णिखुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।  
सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।  
कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।

घत्ता--पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुंणिणयउ ॥ 10

उग्मिबि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ हंणिणयउ ॥ २३ ॥

## 24

तुहुं मज्झ बणु जगडिभबणु  
पइं विणु को पालइ इट्ट सिट्ठ  
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ  
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ  
इह सो मुउ जो मुउ गग्मि वसइ  
तुह ताउ देउ तित्थयर पवर  
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु  
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि  
अरहंतु सरंतहं होइ धम्म  
तं णिसुणिवि राएं दुण्णिणरिक्खु

पइं विणु को कहइ कलावियणु ।  
को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ठ ।  
को होइ देव देवहिं वि देउ ।  
ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।  
छिजइ भिजइ दुहदलिउ रसइ । 5  
परमणउ हूयउ अजरु अमर ।  
जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।  
जो जायहु सिद्ध तमोहु धुणिवि ।  
मा मोहें तुहुं संचहि दुक्कम्मु ।  
मइं साहारिउ तायदुक्खु । 10

घत्ता--गउ सुरवइ सग्गाहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसर ॥

मंडलियंमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसर ॥ २४ ॥

## 25

सोमण्णहु हयसुहदुक्खहेउ  
गय णिव्वाणहु तिज्जगुत्तिमंगि

सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।  
थिय तिणिण वि अट्टमधरणरिंगि ।

२ MB सूर्यगमि, ३ B किसण°, ४ B सुण्णउ, ५ MB ओमाहियउ, ६ MB रुलियउ.

24. १ M इट्ठमलिउ, २ MB मंडइ, ३ MB हिययदुक्खु.

25. १ MB तिज्जगुत्तिमंगि.

11 ओ म्मा हि यउ उत्कण्ठितः.

24. 2 a इट्ठ सिट्ठ इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्याः.

25. 1a हय सुहदुक्खहेउ त्यक्केष्टानिष्ठविषयः.

सहुं गणणाहहिं उव्वाएहिं  
 णिद्धाडियंसाडियकम्मरेणु  
 गउ मोक्खहु उब्वेणरमियखयि  
 कुंकुमविलेउ होयंतएण  
 अवलोइवि पंडुए पळु केसु  
 णयरायरपुरवरपउरदेस  
 भूपसु भूरिपसरियकिवेण  
 परिवडइ ण चिहुएप्पाड जाम  
 ह्यउ परमेट्ठि परमप्पताणु  
 फेडिवि भव्वहं मणोहयालु

णासियमयमोहमहाएहिं ।  
 कालेण गेलंत वसहसेणु ।  
 एत्तहिं वि तेत्थु साकेयणयि । 5  
 दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।  
 णिंदिवि गरजम्मु सुणिग्गिसेसु ।  
 णियसुयहु समप्पिवि महि असेस ।  
 तववरणु लइउ भरहाहिवेण ।  
 उप्पण्णउं केवलु तासु ताम । 10  
 चउदेवणिगायहिं शुव्वमाणु ।  
 महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणनुउ ॥  
 फेणिसिहराकिंणरपवरणरपुष्कयंतगणसंथुउ ॥ २५ ॥

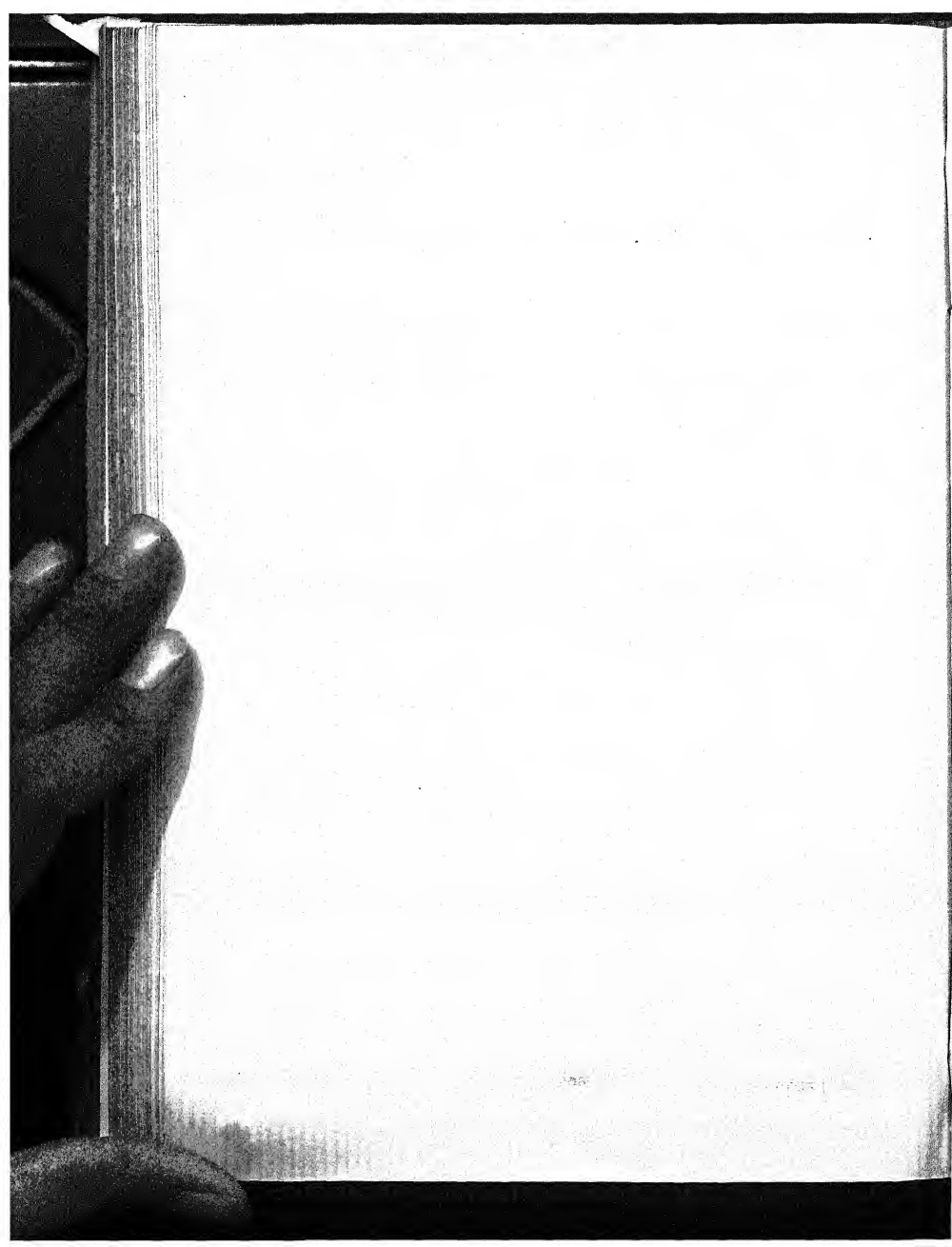
इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिय महाकवे सगणहरिसहणहभरह-  
 णिग्वाणगमर्ण नाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥  
 ॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

२ MB उव्वाएहिं. ३ MB °महाभएहिं. ४ MB °सारियं; T साडिय. ५ MB गणंत. ६ MB उव्वणि.  
 ७ B एत्तहिं तेत्थु. ८ M परस्स ताणु; B परप्पताणु. ९ M °कम्मवेधेहिं नुउ; B कम्मबंधेहिं नुउ. १० MB  
 फणिखेयर°.

३ a उव्वा एहिं उद्धरितैः सह. 4 a णिद्धाडिय साडियकम्मरेणु निर्घोडिताः पूर्वोपाजिता निर्जानाः  
 शातिताः अपूर्वा आगच्छन्तो निवारिताः कर्मरेणवो येन. 10 a परिवडइ निष्यद्यते. 11 a परमप्पताणु  
 परात्मरक्षकः. 14 °विसहर° वृषधरा महासुनयः.

## NOTES





## NOTES

[The references in these Notes are to Samdhis in Roman figures and Kaṭavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a samdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T. Stands for Tippana of Prabhācandra.]

### I

[The Poet offers homage to Rṣabhanātha, the first of the Tirthaṅkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i. e., 959 A. D.) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi (Mānyakheta, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaiya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava alias Virarāja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Rṣabhadeva and of Padmāvati-Yakṣiṇī, the goddess of learning.]

The poet proceeds : There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagṛha. King Śreṇika was one day seated

in his court with Cellanādevi, when a messenger brought to him the report that Mahāvira had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1. The poet pays homage to Risaha, the first Tirthamkara.

1. 3a सुपरिक्लिप्त, सम्यग् ज्ञाता, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3b दिव्यतनुं, निःस्वेत्वादिदशानिशयोपेत-शरीरम्, T., the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atisāyas which a Jina possesses is 34. See Abhidhāna Cintāmaṇi I. 57-64. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV. 2. 4a पयडियसात्तयपयणयरवहं, मकटितः शाश्वतपदनगरस्य मोक्षस्य पन्था मार्गो रत्नत्रयरूपो येन तम्, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5a सुहसीलगुणोद्दिष्टासहर्षं, शुभाः प्रसात्साथ ये शीलगुणाश्च तेषामेवः समूहस्तस्य निवासगृहम्, T., the home of a large number of auspicious qualities. 10a चित्तलियणहं कर्तुरित्ताकाशम्, T. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15b मत्तासमचं, the poet wants to suggest incidentally the name of the metre which is मात्रासमक. 17 जासु तिलिथि, यस्य तीर्थे, in whose preachings.

2. The poet pays homage to the five dignitaries of the Faith, usually called पञ्चपरमेष्ठिनं, viz., तीर्थंकर, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय and साधु, and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3b कोमलपयाई, कोमलानि चक्षुःश्रीनिजनकानि श्रोत्रमनःसुखदानि च, पयाई पदम्यासाः पदरचनाश्च, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5a छंदेण जंति, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6a चोद्धृतपुष्पिल, चतुर्दशपूर्वैः युक्ता सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दशैः (?) पूर्वैः पूर्वपुस्तकेयुक्ता मात्रान्वये हि सप्त पुरास्तत्त्वतः (?) वित्रन्वये च सतेति, T. The goddess possesses fourteen Pūrva books, ancient texts of the Jinas, now lost; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. दुबालसंभिः, सरस्वती द्वादशाङ्गेयुक्ता, स्त्री तु—

नलया बाहू य तहा निचं च ( गिर्यं च ? ) पुष्टी उरो य सीसं च ।

अष्टव दु अङ्गाई सेस उवङ्गम दु देहस्स ॥

इत्यष्टौ, कर्णनासिकानयनोष्ठाश्रवण इति द्वादशाङ्गेयुक्ता, T. The twelve āṅgas are the

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6b सत्तमंगि, सारस्वती सप्तमङ्गोपेता स्त्री तु सत्तमंगि धैर्यरहिता प्राणिषु कोटिल्ययुक्ता च, T. It would be better to interpret सत्तमंगि applicable to a woman as सत्त्वमङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका.

3. 3a-b भुवणक्केरामु तुडिगु, कृष्णराजः तस्येदं विरुद्व T. We know that the Rāṣṭrakūṭa kings had a number of *Birudas* ; we have in Puspādanta's works a few others such as Śubhatuṅga ( see I. 5. 2a and note thereon ) and Vallabhadeva. तुडिगु seems to be of Kannaḍa origin. 7b मार्यद्-गोळगोदलियकीरि, आम्बलुम्बिमीलितयुक्ते, ( garden ) where parrots have gathered on the blossom of mango trees. गोदलिय comes from गोदल, a Deśi word, which means a gathering. Compare गोंधळ, गोंधळी in Marathi. 9b खंड means पुष्पदन्त ; so also अहिमाणनेरु in 12a below. 14 वर or बरि, an expletive of frequent occurrence, means ' it is better, ' ' I would rather prefer. ' 15 न गिहालउ चूरुगमे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked.

4. Drawbacks of royalty condemned.

4. 3a सत्तगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल. 4a विससहजम्मद, fortune born along with हलाहल poison at the time of the churning of the ocean.

5. Bharata glorified.

5. 3a पायकड्कव्वरसावउदु, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time.

6. The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa.

6. 9a देवीसुरण, by the son of Devī, i. e., by Bhārata.

7. The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena.

7. 3a गोवज्जिर्ह etc. This series of epithets have double meaning : one applicable to चगदिण etc. and the other applicable to the wicked.

## MAHAPURĀṆA

8. Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8. 7b सुकृत् छन्यदद्गु सारमेऽ, let the dog bark at the full moon.  
9b कव्यपिसङ्गण, another epithet of Puṣpadanta; compare कव्यपिसाय, कव्यरचसत्.

9. The poet, by way of modesty, shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9. 1a अकलेक etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Nāyakumāracarī, page XXIII.  
13b कुडवेण मवद् को जलनिहाणु, who can measure the waters of the ocean by means of a Kuḍava, a small measure? 17 विरोक्तप किं अवसद्, why should I say at the back? i. e., I say it openly, I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomuḥa Yakṣa and Cakkesarī Yakṣiṇī who are the guardian deities of ऋषभ, and of the goddess of learning.

10. 14 जो गरु मसद् निबन्धहे, he who barks at my work.

11. The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagṛha, its capital.

12. 9b. मयानंघ्रियमंघ्रिनिवाद्, मन्वेन रविक्रया मथिताद्विलोडितामन्धनरिवाः शब्दा यत्र, T., where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagṛha.

13. 11b संगद्गु सिरिणयनंजनद्गु गार्ह, it was, as it were, a storehouse, संगद्गु, of collyrium of श्री. The lotus flower, with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagṛha.

14. 9b अण्णाणिय गार्ह कुसासणेहिं, like ignorant people who are misled by false doctrines (कु+शासन).

15. Description of Rājagṛha continued.

## NOTES, II. 2

16. King Śreṇika described.
18. King Śreṇika receives the report of the arrival of Mahāvira.
18. 6b चउदेवणिकाय, the four classes of gods are : भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक. 7a चउतीसतिसय, the Arhats possess thirtyfour atisayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmaṇi and several other works. See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Triṣaṣṭi. 9b अट्टविह्वडिहे, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz., अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, मानण्डल, दुन्दुभि and विछत्र. 10b विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagrha. 15 पुक्कयंतैयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Saṃdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूर्य, and the Tirthamkara of that name. The term पुक्कयंत is at times paraphrased by पुक्कदसण, कुसुमदसण etc. भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines. The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin.

## II.

[King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvira, proceeds along with his retinue to see him. After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does.

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe. The last of these Kulakaras was Nāhi (Sk. Nābhi), and his queen was Marudevī. Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhanaya, i. e., Kubera, to make the town of Ujjhā (Ayodhyā) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina. ]

1. 6b णं वररायवित्ति रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i. e. a lotus flower, is compared to royalty (वररायवित्ति) which also holds कुवलय, i. e., the globe of the earth, and chastises the enemies (रिउदारिणि).

2. 13 जणजणजतिहह, (Jina) who removes the misery (अस्ति-आर्त्त) of birth (जणण) of the people. 14 सुवणंभोरुहदिवसयर, the sun to the

## MAHĀPURĀṆA

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5-11. These lines contain a long epithet of Jina वरुण... सिर-  
पाश्र्णमउडयलमणिसलिलधुवाविमलकमकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed  
by waters flowing from the gems in the coronets of वरुण and other  
gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मई जेज्जु  
पंचमगइहे, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धावस्था,  
emancipation from संसार, the first four गतिस being देव, नारक, तिर्यक्  
and मनुष्य.

4. 7a जाह गुंतु भाविणिहि जिरुत्तउ, there is no beginning (न+आदि) and  
no end (न+अन्त) to the list of the coming Jinās, i. e., the number of  
the future Jinās is infinite. 8-9 कालु अणाइउ etc. Time has no beginning  
and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change  
in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no  
weight. Time in abstract (निश्चयकाल) is marked by its fleeting i. e.,  
constantly passing (अवर्तन). 12 ववहारकालु, Time as understood in our  
daily practice.

5. 3b सियकारिणितणरं, by महावीर who is the son of सियकारिणी, popularly  
known as निशाल. Compare कल्पसूत्र, 109, where the name given is पीडकारिणी.  
10a ताडिज्जइ, गुण्यते, T., is multiplied.

6. 10a मेज्जउ, मेयः, divisible, to be divided.

8. 4-5 उच्छयिणि, i. e., उत्सर्षिणीकाल is defined as one in which  
strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and  
courage are on the increase; औत्तयिणि, i. e., अवसर्षिणीकाल is one in which  
these qualities are on the decrease. 7b दहविहविडावि, the ten कल्पवृक्ष,  
enumerated in the foot-notes.

9. 3a पडिबुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4a अमममियाउ,  
having life of the length of an अमम, a large number. The other कुलकरs  
or मनुs mentioned in 9 and 10 are : सम्मइ, सेमंकर, सेमंवर, सीमंकर, सीमंवर,  
विमलवाइ, चक्खुम्भउ (चक्षुष्मान्), जसस्सि, अहिचंद, चंदइ, मरुदेव, पत्तेणइ and नाहि (नामि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered  
for the first time, the functions of the sun and the moon who were  
not noticed by the people upto this time because the world was full of

### NOTES, III

the light supplied by the कल्पवृक्षs. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i. e. नमि, discovered the method of cutting the नाळ of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्षs. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17. 5b सुवरहं सुवहं गियमणि तद्वहं, Indra, on learning that a तीर्थकर is to be born at a particular place, orders Dhanaya, i. e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19. 1a ह्रुड ह्रुड—Hemacandra in his grammar under IV. 422 gives ह्रुड as a substitute for यदि. I do not think that ह्रुड always means यदि; in fact the usual sense of ह्रुड seems to be क्षिप्रम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss. here render it as यदा but I do not think it to be correct.

### III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिद्धि, विद्धि, दिद्धि, कान्ति, किञ्ची, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Rābha, the first Tirthaṅkara, a white bull). Gods attend this event. There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

## MAHĀPURĀṆA

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a कल्याण (Sk. कल्याणक) or more particularly जिनजन्मानिवेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puspadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Risaha, the first Tirthamkara are:—

- (1) Town of birth—Ayodhyā.
- (2) Parents—Nābhi and Marudevi.
- (3) Descent in the womb—as a white bull.
- (4) Date of Descent—month Āṣāḍha, dark half, second day, Uttarāṣāḍhī Nakṣatra.
- (5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day, Sunday, Uttarāṣāḍhī Nakṣatra, Brahma yoga.
- (6) Name—Risaha, Rṣabha or Vṛṣabha. ]

4. 9a निवर्गेणंति, in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with र, we get such conjuncts in Apabhraṃśī. See Hemacandra IV. 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with र while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with कृ such as सुग, सुय etc. 11 सइ, i. e., मलदेवी.

5. This Kaḍavaka gives the list of sixteen objects which Marudevi sees in a dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream (चोद्धत महासुमिग). Compare कल्पद्वय 4, and 32-47.

गय वसह सीह अभिसेयं दाम ससि दिणयं ससं कुम्भं ।

पउमसर सागर विमाणमवण रयणुच्च सिहिं च ॥

एए चउदस सुविणे सव्वा पासइ तित्थयरमाया ।

जं रयाणि वट्टमरं कुच्छिंति महायसो अरिहा ॥



These objects, according to the Digambara tradition, are :—

- (1) An Elephant breaking open the mountain slopes.
- (2) A Bull loudly roaring.
- (3) A roaring Lion.
- (4) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters (दिशगज). The Svetāmbaras designate this under अभिसेय.
- (5) Wreaths, two in number, of fresh flowers.
- (6) The rising moon.
- (7) The rising sun.
- (8) A pair of Fish.
- (9) A pair of Jars filled with water.
- (10) A fine lotus-pond.
- (11) A surging sea.
- (12) A royal seat marked with lion's head (सिंहासन). The Svetāmbaras omit this object from their list.
- (13) A heavenly palace or mansion-house.
- (14) A palace of snakes or of the king of snakes (नागमवन); this object is omitted in the list of the Svetāmbaras.
- (15) A heap of Gems.
- (16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Svetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7. 5a सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms (भावना) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc. These भावनाs are :—दर्शनविशुद्धि, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचारः, अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगः, अभीक्ष्णं संवेगाः, शक्तितस्त्रागः, शक्तितस्तपः, साधुसमाधिः, वैद्यावृत्यकरणम्, अहंद्रकिः, आचार्यमक्तिः, बहुश्रुतमक्तिः, प्रवचनमक्तिः, आवश्यकतापरिहाणिः, मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम्. Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII. 64 ; तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI. 24.

19. 14 तहु देसहु मई गेहि, take me to that region where there is no birth etc., i. e., to the region of the Siddhas.

21. 11a बिछु धम्मु तेण भाइ ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth (भाइ, भाति) by विस (वृष), i. e., धर्म or piety.

# MAHĀPURĀṆA

## IV

[ Prince Risaha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atīśayas or excellences such as bodily purity, want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling, but being pressed by the king, agreed to be married to जसवई and सुगंधा, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky, a concert was arranged by celestial nymphs with dance, music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires. ]

1. 10a उत्तानसेज्ज, lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15a दर ईनें पवाई, while walking slowly in the childhood. 16b चउसहि वि कलाउ, sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapaseṇiyasutta or Paṭṭisikāhāṇayam, para 39 and my note thereon.

2. This Kaḍavaka mentions some of the atīśayas which a Jina possesses.

3. 10a जो कणरुखु सो कटु कटु, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14b अम्माहीरण, स्वदेशीवालयमसिद्धरागध्वनिना, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 होइलरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10a चंदोवचीणपेट्टेहि छइउ, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10. 3a सुहार, सु+माति shines forth.

17. 2b डुडुं व धोयउ, दुग्धेनैव धौतः, as if washed or bathed in milk. Note that डुडुं is the Inst. sing. form which is obtainable by a confusion of अनुस्वार of the Instr. ( Cf. Hemacandra IV. 342 ) and उ of the Nom. and Acc. 4a आउज्जहुं जेण मुद्देण वसु, the arrangement of the musical instruments for a concert is described here, which arrangement is

called पञ्चाहार or प्रत्याहार. 9b कम्मरवी is an act of cleaning the musical instruments. 10b उद्दिक्त्तु किउ हिंदोलरण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first. 11b कउ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छडय and धारा. T adds:—समस्तनाटकार्थवर्णनाटुर्णतालः, शुक्लारसामिनयश्छटकातालः, वीररसामिनयो धागतालः.

18. The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T. which I quote fully here :—चागी पदपचारः, सा द्वात्रिंशत्पकारा, तत्र समपादा स्थितावर्ता सकटास्या अप्य-  
द्विका चापगतिः विष्यवा एलका क्रीडिता बद्धा उरुद्धता आदिता उच्छदिता वा जतिता स्पंदितजिनिता  
अपस्पंदिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौश्वार्यः; अतिक्रान्ता अपक्रान्ता पार्श्वक्रान्ता अर्द्धजानुः सूची  
नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उच्छ्रिता वियुद्धक्रान्ता आलत्ता भुजंगत्रासिता हरिणद्रुता  
धमरी चेत्येताः षोडश कसोद्भवाश्चर्यः. 3b अंगवदन् अंगहारः, स च स्थिरहस्तकः सूचीविद्धः  
आक्षिपकः कटीछेदः विष्कम्भः अपरातः आघोडः भृशिक्रः भ्रमणमदादिविलसित इत्यादिविकल्पात्  
द्वात्रिंशत्पकाराः. 4b शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति कर णा नि. तलपुण्यपुटं वर्तितं अपविद्धं  
लीनं स्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकरेचितं निकृटकं अलातं उन्मत्तं ललाटं तिलमित्याद्यष्टोत्तरशत-  
संख्यानि. दिण्णु दत्तानि 5a च उ द ह वि सी स. उर्कं च—

अर्कपितं कंपितं च पुतं विधुतमेव च ।

परिवाहितमाधूतमथाचितनिकुंचितं ॥

× × × पराहूतमक्लृप्तं चाप्यधोगतं ।

लोलितं प्रकृतं चेति चतुर्दशविधं शिरः ॥

5b भूतं ड व इं नृत्यानि सप्त—

आक्षेपः पातनं चैव भुकृटिश्वतुरं भ्रुवोः ।

कुंचितं रोचितं कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिधानात्

6a ण व गी व उ । तदुक्तं—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता  
च निवृत्ता च ग्रीवा नवविधा स्मृता. 6b छत्तीस वि दि द्वी उ—तथाहि कान्ता भयानिका हास्या  
करुणा अद्भुता रौद्रा वीरा बीमत्सा चेत्यष्टौ रसदृष्टयः; स्निग्धा हृष्टा दीना कुद्धा तृप्ता भयानिकता  
जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृष्टयः; स्तान्त्र्यामलिना (1) श्रान्ता सलज्जा ग्लाना शोकिता विषण्णा मुकुला  
अमितहा जिह्वललिता विनर्किता कुंचिता विधान्ता विवृता ककिकरा (1) विकोसा व्रत्ता मेदिता  
चेति षड्विंशद् दृष्टयः. 7a अं ति मे त्या दि

श्रृंगार (1) बीमत्सा हास्यरौद्रभयानकाः ।

करुणाद्भुतशान्ताश्च ..... रसा स्मृताः ॥

तत्राष्टौ रसा अंतिमरसवर्जिताः.

## MAHĀPURĀṆA

ज णि य भा व

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ मयं तथा ।

जुगुप्सा विस्मयश्चाष्टौ स्थायिमावाः प्रकीर्तिताः ॥

स्तम्स्तनूहोद्रेदो (!) हृदः स्वेदवेपथू ।

वैवर्ण्यमथु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥

तनूहोद्रेदो रोमांचः । वेपथुः कंपः, वैवर्ण्यं म्लानता निर्वेदः, म्लानता निर्वेदमलानः, शंकाभ्रमश्रुतिजडता-  
हृदोद्रेदोप्रापितान्त्रासिष्यामर्षगर्वाः स्मृतिमरणमदाः सप्त निद्राविबोधा व्रीडाऽऽस्मारमोह शमानिरलसताऽवेग-  
तकाविह्वल्यध्वुम्मानादौ विषादोत्सुक्यचपलयुतास्त्रिंशदनेत्रयश्च (!) । अस्मारः उमारी (!) । तर्कः  
विमर्शः । उवह्लिख आकारगोपनं युताः संबद्धा इति । 8a अ वे त्या दि अपराधपूर्वभावभ्यो विलक्षणाः .  
भा वा णु भा व भावानुभावभ्योऽनु पश्चाद्वेदीत्यनुभावाः तच्चतुर्विधा (!) मानो (!) बाणुद्विषारीराश्च य  
दर्शिताः . 9a कुर ण ईं स्फुरणानि शरीरगतानि . 10b छ ङु ण य प ओ ईं नृत्योपसंहारहेतुस्ताल-  
विशेषश्छन्दुगकप्रयोगस्तेन . The Ms. of T. is illegible at numerous places,  
but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

## V

[ One day Jasavāi, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun, the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavai bore a son who was named Bharaha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jasavai bore ninety-nine more sons, Yasahasena etc., and one daughter named Bambhī. Sunandā also bore one son named Bāhubali and one daughter named Sundari. Bharaha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of pūrva years, he was put on the throne by king Nābhi. ]

2. 8b छवसंड वि मेइणि, the six continents of the भारतवर्ष. The भारतवर्ष, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyadḍha (Sk. Vaitāḍhya) mountain from east to west; the rivers Gaṅgā and Sindhu

pass through it from North to South ; it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10b अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the येवेयक or अनुत्तरविमान heaven.

3. 2 तिहुयणवइजयकरेह्वरहियं, The loss of folds on the belly of Jasavaī, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavaī will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

5. 7a सुल्लुज कीडुल्लुज, a small insect ( सुद्रः कटिकः ).

6. 13a चित्तलेपसिलवरतरुक्कम्भइ, painting, plaster-work ( लेप ), sculpture, and wood-work.

7. 2 गिरिधणि... विसयं पयासए, explains ( to Bharaha ) the subject of governance of his consort, viz., the earth ( गिरिधणिधरणि ) with mountains standing for her breasts.

8. 12 पडमुवाउ, प्रथमः उपायः, i. e., resolution, resolve.

9. 7a करेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV. 438. 9a अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be चव corn three years' old. 13a जिणपडिमापूयणु, worship of the images of the Jinas. This is clearly an anachronism unless we accept that Risaba means by it not himself but the Jinas of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11. 8b कामुपण्णु चउविहु दारुणु, the four व्यसनs or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting.

12. 1 एकंतरिउ मिउ निरंतरु सत्तु. In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend ( एकान्तरितं मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः ). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8b अट्ठारहतिस्सइ, the eighteen तीर्थs are:—

सेनापतिगणकर्मन्त्रिपुरोहिताश्च र्षणा बलोर्ध्वलवत्तरदर्शनायाः ।

श्रेष्ठा मूर्त्तय इतश्च महाधैमात्योर्मत्त्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमायाः ॥

—Marginal gloss in K.

## MAHĀPURAṆA

The वर्णस in the above list are ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य and शूद्र; the बलौच is the fourfold division of the army, viz., हस्ती, अश्व, रथ and पादात.

18. 6a अवसंस्तर i. e., अपभ्रंश which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1-2 सचमह...वारिणा धुवकमङ्गमलजुयल परमेसर, O Lord, pair of whose lotus-like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6a लग्गणसंभु अण्णु को अम्हई, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5-11 पल्लव etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3-5 सेडई etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as सेड, कड्यड, मडंय, पट्टण, दोणामुह and संवाहण.

22. 4 चरि उच्छुरासु,—the race was named इक्ष्वाकु because its founder brought to his house the juice of sugar-cane for drinking.

## VI

[ One day, while prince Risaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilamjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life. ]

2. 3 गियमंति जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kaṭavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5a मुंजंतु महि तेसाहि गय, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the pūrva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11-12 पुण्णाउस पीलंजस—If पीलंजस who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5. 4b णहेयाणिहेलाणि, to the house of Nābheya, i. e., Risaha, the son of Nābhi. 6b वंसिगु वि पुष्परंगु—The technical terms of dancing and music used in this Kadavaka and the two following are explained in T. as follows :—वीं स मि त्या दि—नाटकस्थेह प्रथमप्रस्तावनावतारः पूर्व्वरंगस्तम्य च प्रत्याहारोऽन्तराणा आचारंभ आश्रयणा गीतविधिरूपस्थापना परिवर्तनं रंगद्वारं चारी मन्हाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि. 7a ति पु वस रू चर्मावनर्द्धं वायं पुष्करं तद्विधं उत्तममध्यमजघन्यभेदेन. 7b सो ल ह अ व्स र उ क ल ग घ ट ट ड ड त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षरं. 8a च उ म ग्गु आलिप्त-अर्द्धिन-गोमुख-वितस्ति-भेदात् चतुर्मासं; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपनं; ल क र णु रूपं कृतं परिति भेदो रूपशेषी उयथेति षट् वायकरणानि; 8b ति य ति छ उ समो श्रोतोगतः गोपुच्छः चेति त्रियनियुक्तं; ति ल य उ द्रुतमध्यविलंबितास्त्रयो लयाः. 9a ति ग य उ तद्दाम नुतं उप(1)थेति त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचारं विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य र गुरुवंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकरं. 9b ति क रि छ उ गृहीतोऽर्धगृहीतो गृहीतनुमक्षेति त्रयः. 10a ति म ज ण उ मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मावली चेति मार्जनकम्; 10b वी सा लं कार स ल वस ण उ अलंक्रियते वायं येस्तेऽलंकाराः प्रहारास्तैः सलक्षणं मनोज्ञं चेति विंशत्यलंकाराः—चित्रः समः विभक्तः छिन्नः छिन्नविद्धः अनुविद्धः विद्धः वायतंश्रयः अनुसृतः प्रतिष्ठुतः दुर्गः अवकीर्णः बद्धावकीर्णः परिक्षिप्तः एकक्षपः नियमान्वितः साचरितः समेललः सामवायिकः दृढः चेति. 11a अ ट्टा र ह जा इ हिं तथाहि—सुद्धा दुक्कणा विषमनिष्कंभितैकैकरूपा च पार्थितमापयंस्ता समविषमलता विकीर्णा च पर्यवसाने चितिकिसंयुक्ता संयुक्ता तथारंभा विगतकम चलल्लिगा धंचितिका चैकवाया चैत्यष्टदशजातिभिर्मंडितम्; 12a च च उ डु चाचपुटस्थसखिकलतालप्रवृत्तिहेतुः; चा च उ डु चचपुटस्थरुसश्रुतःकलतालप्रवृत्तिहेतुः. 12b छ णि य पु ते वि वे(1) भिजापुत्रः(1)क्रोप मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतुः; म ण हारि चचपुट्टिदिक्षिप्तकारावि(1)नोहरः; 13a इ य इत्यादि एतैश्चचपुट्टिदिक्षिप्ततालविधैश्चिप्रिलंकृता. 14a ओ ण द्द उ व ज्ज उ व णि य उ इत्यंभूतं यद्वनर्द्धं वायं तद्विप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आल्लिगसंज्ञितं चेति. द्विश्रुतिकाः स्वरो जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवतमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकरूपतो धैवतश्च जल्लि(1)विषमसमसंख्यया चतुःश्रुतिकाः पटुपंचममध्यमाः. 16 च व ल हिं स्थितमुकाभिः; अ द्द हिं अर्धमुकाभिः कंघमानस्वरूपाभिः; मु क्कि य हिं वंशसुबिरसंधन्वाह्निताभिः(1); व ता व चं गु लि य हिं उकविशेषणविशिष्टाभिव्यक्तव्यकांगुलिभिः व्यकांगुलि स्थितस्थितांगुलि अव्यकांगुलि.

6. 1a प वि र इ हं इत्यादि—वांशस्वरो जातः; कर्धंभूते 1b व ज्जि य सु सि रे वादिन. सुषिरे; सु अ त्य सु इ शास्वताः श्रुतयश्च; 3a थि वे त्यादिना चतुःश्रुतिकाविवरणागुत्पत्तिगक्रियां पदशयति, स्थितमुकांगुलिः स्वरे इव; सु अ द्द सु इ चतुःश्रुतिका. 4a कंघमानवांगुल्या उद्गत-स्त्रिश्रुतिकाः; 4b मुकांगुल्या जातो द्विश्रुतिकाः, 5a व चं गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येकं चतुःश्रुतिकादीना नामानि कथयति, व्यकांगुलेः सुषिरोपरिस्थितांगुले; 6b साम ण्य स रं त र स णि य ए सामान्यस्वरत्वंज्ञया युक्तः. 7b अ द्द ए मु क्क ए अं गु लि य ए अर्द्धया मुकया अंगुल्या; सामान्य-संज्ञितः स्वरो निषादः अंतरसंज्ञितो गंधारः 9a तं ती र णि उ वीणावायं तच्च द्विविधं. 9b णि क लु ते ष्व वि निष्कलं त्रिपंच. 10a घ णु इत्यादि—घनं वायं कांस्यतालयुगलादिकं. 10b स मे र या वि-समे योगपर्येत हनं द्वावा यत्र रंगे वादितं. 12a उ ष ण इत्यादि—उपयनानो हि नादः प्रथमतः उ र ट्ठ णं त र ए उरोलक्षणस्थानकविशेषे उत्पद्यते ततः कंठे ततः शिरसि. 12b वा वी स वि

सु इ उ द्विश्रुतिकयोः द्वयोः चतस्रः श्रुतयः त्रिश्रुतिकयोः षट् चतुःश्रुतिकानां त्रयाणां द्वाविंशतिश्रुतयः; 13a क म र इ य प मा ण हि क्रमोच्चरितसंस्थारः (१) प्रमाणे ज्ञेयः (१); 13b व ङु तु मंदमध्यमतात्पेदेन यथाक्रमं उरति कंठे शिरसि च वर्षमानो नादः स्वरः श्रुतिमद्रादिरूपतया; 14b स र स च सरिगमा-दिनामानः सप्ततः स्वरः सप्त ते सु तेषु सप्तस्वरैषु; दो णि जि गा म द्वावेव च ग्रामौ, षड्जग्रामो मध्यमग्रामश्च; ग्रामः समुदायः. कस्मिन्ग्रामे कित्यव्यो जातयः संबंधित्याह 15 छु रे त्यादि छुरैः पूज्यः स ज्ज ए षड्जग्रामे; जा इ उ जातयः स च प उ च उ सप्त प्रयुक्ताः शुद्धाश्चतस्रः; जायंते पुष्टि लभंते स्वर आभ्य इति जातयः. 16 म स्वि म ए मध्यमे ग्रामे, तिस्रः शुद्धा अष्टौ संकीर्णाः.

7. 2a जा इ णि य द्द हं तासु जातिषु निबद्धानां. 2b ल क्ख वि सु द्द हं गीतप्रयोग-विशुद्धानां. 3a अं स हं अं सानां; स उ चा ली सा हि य उ शतं चत्वारिंशदधिकं. 3b ए कु च रु तं पि चत्वारिंशदधिकशतं एकोत्तरं; प सा हि य उ प्रसाधिताः. तथा हि अष्टदशजातिषु यथाक्रम-संभवमेको द्वौ त्रयश्चत्वारि पंच षट् सप्त चासंभतो (१) मिलिता एकोत्तरचत्वारिंशदधिकशतसंख्या भवति. 4b गी य उ गीतयः शुद्ध्यादिनामानाः; पंच उ उ ष्य णि य उ पंचोत्पन्नाः, किंस्वररूपास्त इत्याह 5a b कपु (१) मिलितैः शुद्धाः सूक्ष्मेर्ब्येकैश्च भिन्नाः. स्वर्हृतैर्गौडी हृतैरेवति वेसराः। सवर्ता उक्ते-योगात् गीतिः साधारणा स्मृता. 6a त हि इत्यादि तर्हि मद्रादिगीतिषु तत्संबंधत्वेनापरे परिग्रामरागाः त्रिंशद्गणिताः, तत्र छद्गगीतिसंबंधत्वे सय (१) गणनया सप्तग्रामरागाः भगिताः, भिन्नगीतिसंबंधत्वेन व्रतगण नया पंच वेसररागाः सदैवमेते. 7a क मे ण जि कयितशुद्धादिगीतिसंबंधकमेणैव संगृहीताः समुदिता-स्तिंशत्. 7b उ डु मा ण ऋतुप्रमाणाः षडेव; 8a प हि ला र उ तेषु मध्ये प्रथमः ढक्कुरागः. 8b अ णु वे क्त्वा स म भा स हिं सा हि उ द्वाद्राभाषासमन्वितः; उक्ते च-कोलाहला मालवेसरा च सोराष्ट्रका च त्रवणोद्गवा च । स्यामालवा सैधविका च ताना ततः परं पंचमलक्षिता च । भाषा मध्यमदेशा च ललिता वेगर्जिका । त्रवणा ढक्कुरागस्य द्वादशेताः. 9a अ हे त्या दि—आभीरी मागधी सैधवी कौक्षिकी सोराष्ट्री गौजरी दाक्षिणात्या त्रवणा चेत्यादि अष्टभिर्भाषाभिस्तहितः; 9b बि हि मित्यादि द्वाभ्यामेव विभाषाभ्यां अंघालीभावनिष्काभ्यां संविज्ञातः. 10a आ वा हि ये त्या दि—आवाहिता आकारिता, मोहिता विह्वलीरुना जगद्विलयास्त्रियः. 10b हिंदोलकश्चतसृणां मालवेसरिका गौडी छेवट्टिका कंठोजी चेत्यमीषां निलयः स्थानं. 11a मा ल वे त्यादि मालवाभ्यां विभाषाभ्याम्. 12a मि ण्णे त्यादि—भिन्नषड्जोऽपि शुद्धा त्रवण (१) मांगली सैधवी ललिता श्रीकंठी दाक्षिणात्येति सप्तभिः भाषाभिः कलितः युक्तः. 12b क कु ह इत्यादि ककुभोऽपि, आभीरी रगती भिन्नपंचमी चेति त्रिभिर्भाषाभिः; संच लित उ संचलितो युक्तः. 13 सु इ ली ण उं श्रुत्वयुगविष्टः. 14 म णे त्या दि मनोहरारामकृति मल्लकृतिः डौबकृतिः गौडकृतिरित्येवमादयः; दा वि य उ दर्शिताः.

8. 1-2 द हे त्यादि—दश चतुर्भिर्गुणिताश्चत्वारिंशत्संख्या समुदितानां भाषाणां भगिता तथा षडपि विभाषाः; 3b ए या र हे त्यादि—एकादशा एकविंशति षड्जादिग्रामत्रये प्रत्येकं, सप्त सप्त मूर्च्छना इत्येकविंशतिः; मूर्च्छति उच्छ्रयमुन्नति लभन्त्येवरा (१) आभ्य इति मूर्च्छना, उत्तरमंदा उत्तरायता रजनौ अश्वकांता सोवीरी कालोपनता सुमध्यमाः पौरोवीत्यादयः. 4a ए कु णे त्या दि—स्वरस्य तननात्ययोग-विस्तारात्तानाः अमिश्रोम-राजस्य-अश्वमेध-राजपेयादिवज्जनामानत्वाह (१) नेयगुण्योत्पन्ने, ते च प्रतिग्रामं मेकोनपंचाशद्वेदाः प्रतिपत्तव्याः, तथा हि सप्ततंत्रीवीणायां प्रत्येकमेकैकतंत्र्या सप्त सप्त स्वरणां तननात्सप्तसप्तगुणिता एकोनपंचाशद्ग्रामे तथा मध्यमग्रामादावपि उक्ते च-सप्त (१) अर्थं च सप्तनामेकैका भजन्ते यतः । अत एकोनपंचाशत्के (१) स्यादे सहोदिताः ॥ 5a सं जो य ता णु तथा हि षड्जग्रामे



सप्तसङ्ख्ये(१)नानां पाडवोऽविता, काकलि अन्तरं काकल्यन्तरं, स्वरसंयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवन्ति, एवं मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशविधं शर्षं प्रनर्तितं प्राकृतशर्षं च(१)र्ष्यते. 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्गुणमेतच्च प्रागेव व्याख्यातं. 8a ण व ता र उ नव ताराकर्माणि । तदुक्तं—भ्रमणं चलनं पातो बलनं संपवेशनं । विवर्तनं समुद्रतं निष्कामः प्राकृतं तथा; ॥ 8b अ ह वीत्यादि अष्टौ परिचिता द्दर्शनगतयः; उक्तं च-सम्पत्पुन्युत्तं च आलोकित प्रलोकितोऽलोकितेवलोकिता(१) सा तिर्यक्. (१) 9b णं दे त्यादि—नवनंदास्तत्पकारं पुङ्(१)पक्ष्मपटकर्म दर्शितं उन्मेषश्च निमेषश्च प्रसृतं कुंचितं सर्वातिनं सस्फुरितं पिहितं सविताडितं. 10a भू स च मे य भू सप्तमेदा; 10b छविहेत्यादि—तत्र नासा षड्विधा, उक्तं च-नता मंदा विरुण च सोऽच्छासा सविपूर्णता । स्वाभाविकी चेति बुधैः षड्विधा नासिकाः स्मृताः ॥ तथा कपोलं षड्विधं-क्षामं फुल्लं च पूर्णं च कंपितं कुंचितं सममित्यभिधानात्; तथा अधरः षड्विधः; तदुक्तं-विवर्तनं कंपनं च विसर्गो विनिगूहनं । संदृष्टकं समुद्रश्च षट्कर्मोऽप्यधरस्य च ॥ 11a स च वि हु चि बु उ सप्तचिबुक्तं; च उ मु ह हु रा य कट्टनं ख(१)रागाः स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्तः समर्था-नुरोधतः प्रयोजनवशात्. 11b नव गला नव ग्रीवानुत्थानि उकलक्षणानि; च उ स ङि वि क र ण भा व चतुःपष्टिपरि हस्तमेदाः पताकः कर्तारमुखः अर्द्धचंद्रः आरालः शुकतुंडः सट्टकामुखः पथकोशः चतु(१)रंध्रमर इत्यादयः. 12a सो ल ह वि हु सर्वहस्तानां षोडशविधं कर्म । तथाहि-आर्कपनं कर्मणं च उत्कर्षण-मथापि च । परिग्रहो नियहश्च आह्वानं नोदनं तथा ॥ संश्लेषश्चदि(१)योगश्च रक्षणं मोक्षणं तथा । छेदनं भेदनं चैव स्फोटनं मोटनं तथा । ताडनं चेति विज्ञेयं ता(१)ज्ञेः कर्मकराश्रितं; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारित्रप्रकारो भवति, तदुक्तं-उत्तानः पार्श्वराश्वैव तथाधोमुख एव च । हस्तप्रचारिस्त्रिविधो नाद्य-वृत्तसमाश्रयः ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्तं च-अपचेष्टितमेकं स्यात् उद्धे-ष्टितमथापरम् । व्यावर्तितं तृतीयं च चतुर्थं परिवर्तितम् ॥ 12b मु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशविधोऽपि कृतः; उक्तं च-तिथ्यु ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च । आविद्धश्च मणिवद्धश्च मंडलः स्वास्तिकं तथा ॥ अजितः क्षुधितश्चैव पृष्ठतश्चेति ते दश. 13a ऊ र स र वि हु उरोनृत्यं शरविधं पंचप्रकारं; उक्तं च-नतं समुन्नतं चैव प्रसारितविवर्तितं । तथापसृतमेवं तु पार्श्वकर्माणि पंचधा ॥ 13b गो हु वि पा य डिय उ तं ति वि हु-क्षामं खल्लं च पूर्णं च संमोक्तमुदरं त्रिधा । इत्यभिधानात्. 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्संचप्रकारा, तथा ह्रि-छिन्नावतिवृत्ता च रेचिता कंपिता तथा । उद्धाहिता चेति कटी नाद्ये वृत्त्येव पंचधा ॥ तथा जंघा पंचधा । उक्तं च-आवर्तिता अंतःक्षिप्तमुद्धाहित-मथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्माणि पंचधा ॥ तथा क म क म ला इ पंचधा । उक्तं च-उद्धाहितः समश्चैव तथाप्रतलसंचरः । अंचितः कुंचितश्चैव पादः पंचविधः स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदंगद्वारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यंगद्वाराश्च प्रागेव कथितानि. 16a च उ रे य च त्वारा रो रेचकाः, तदुक्तं-पादरेचक एकः स्याद्वितीयः कटिरेचकः । तृतीयः कर(१)स्वस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थकः ॥ 16b स चार ह पिडी बंध कय-ऐश्वरी वा(१)ज्जं भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी यन्ना पिंडित्यादि सप्तदश पिंडीनां बंधाः कृताः. 17a चारि उ सो ल ह दु य सं ज्ञि य उ चार्थः षोडश द्विकसंख्या द्वात्रिंशत्संख्याः. 18a वी स वि मंडल इ प या सिय इ अतिक्रांतं विचित्रं ललितं संचरं आलातकं आक्रांतं आकाशगामि इत्यादि संचारिभिर्भावैः स्थायिभिश्च प्रागुक्लक्षणैश्चतैरनेकैर्नृत्याति.

[ The death of Nīlāmjaś brought about a change in Rīsaha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary, helpless, solitary ; the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Rīsaha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Rīsaha then put his son Bharata on the throne of Ayodhyā, gave Poyanapura to Bāhubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Rīsaha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety-nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk. ]

1. 11 नृपहि लवणं जसु उत्तारिञ्जद्, a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of passing salt over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on straw.

2. 6a पण्णारहत्वेत्तुब्धव, born in fifteen कर्मसूत्रि, i. e., five in भारतवर्ष, five in ऐरावतवर्ष, and five in विदेह. It is in one of the कर्मसूत्रि that a man is able to attain any state after death as a result of his acts. 12 तिवरणं चरित्तु, activities of mind, body and speech ( चिकरणं चरित्रम् ).

7. 11-12 पसुं काङ्क्षिणि etc.—If a person, i. e., a Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma ? Wait upon a hunter ( who does exactly the same things. )

10. 8a जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसाणांत जावो, i. e., I care a straw for the human life.

11. 1a तिप्पयारसंटाणयं, the world is divided into three sections each having a different shape; the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate (शराव) turned downwards: the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि; the region of gods has the shape of a चूडङ्ग. 9a मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयह, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella.

12. 4a पासुलियातुलहिं, by beams made of ribs.

13. 4a णाणावरणिउ पंचयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz., मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय. See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii. 4. 5a णवविह्वंसणु, acts which obscure दर्शन fall under nine heads:—निद्रा, निद्रानिद्रा (deep sleep), प्रचला (drowsiness), प्रचलाप्रचला (heavy drowsiness), स्यानावर्धि (somniaambulism), चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय. See उत्तराध्ययन, xxxiii. 5-6. For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Triṣaṣṭi. 13 तिगइ i. e., पाणियुका, लाङ्गली and गोमूचिका, straight, curved and zigzag movements.

14. 12-13 विहियासवदारहु etc.—If a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment.

15. 2b होमि दिचंवरु, I shall be a naked monk. The emphatic and express mention of this term here and also in 26. 15b below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains. 10b देज्जवित्तिंसंज्ञाविण्णसहिं by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging. It refers to the various भिक्षुप्रतिमास in which food is regulated on the basis of counting the दत्ति or dole obtained or the morsels to be eaten. See below 16. 3a.

16. 12-13 जिह् इयणिज्झरणे etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (चर्द्धे वरणे), in the same way acts

## MAHĀPURĀṆA

done in various births are exhausted by the control of senses (which prevents the influx of sinful acts) and by the practice of penance (prescribed for a monk).

19. 1b अनुवेक्षाओ, reflections of twelve types on the momentariness, impurity etc. see तत्त्वार्थविगम, IX. 7.

21. 4a सोणदेवहु, to the son of सुणन्दा, i. e. बाहुबलि. सुणन्दा is the second wife of रिसह.

24. 7b जसवईण्डउ, i. e., जसवई and सुणन्दा, the two wives of रिसह.

26. 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

## VIII.

[Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahākaccha and his brothers-in-law, came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course, as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him (the king of snakes) before he (Risaha) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādhara, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home.]

1. 9b मवसिभिरई, मवस्स सैन्यानि, T. I think that सिमिर comes from शिमिर, camp of the army, but is loosely used to designate army. 12b सुदवईणी, consisting of pure vows (शुचिव्रतयुक्ता). 19 थिउ सगहु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation (य + अपवगहु).

2. 1-4 विसयवसा etc.—Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaha, were sinking (भग्ना) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger.

6. 7b सालहं, by his brothers-in-law. 9a पर तेण विमुक्क वरत्थकम्मु, but he has left all activities of a householder. 12a कूग्गुदि, a handful of cooked rice.

7. From line 6 to 20 note the दामयमक or शृङ्खलायमक. The sets of a large number of दुवईs, constituting a kaḍavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet. The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes. 26 जीहहिं दससयसंत्तहिं, with his thousand (tentimes hundred) tongues. P reads दुसहससंत्तहिं which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution.

11. 8b रत्तवाह व सईं णिवडियसुवण्णु, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयडु always showed gold.

12. 15b सुव दूवत्तु हल्लिणिहिं करंति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love-messages to their lovers.

13. 9b The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयडु which are assigned to नमि.

14. 5a The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयडु which were assigned to विनमि. The cities are enumerated from west to east (वारुणासामुद्वाओ).

## IX.

[Risaha then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely. He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity. He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view. The principle of his life was that food exhausts

the body, this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Somaprabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother, Seyaṃsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyaṃsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift!". Risaha thereafter proceeded with his wanderings and in due course obtained the fourth knowledge called Maṇapajjavanāṇa, knowledge by which minds of others are known. He then proceeded to Nandanavana, and under a bunyan tree acquired the Guṇasthānas, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1. 7 उज्झित आह्वकमुद्देशि, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as आधाकर्म, which the marginal note explains as नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम्, but elsewhere it is explained as आधानं आधा साधुनिर्मितं चेतसः प्रणिधानं तस्याः कर्म पाकादिक्रिया, तद्योगाद् भक्तायपि आधाकर्म. 15a पाणिपत्ति, in the plate, viz., the palm. 17 एण, these men, i. e., his followers who became monks along with him.

3. 3a ससिषह्मणुजन्मिणा, by the younger brother of ससिषह्म, i. e., सोमप्रभ, the son of बाहुबलि. 3b भवानुचद्धधम्मिणा, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4. 15b भुवणिग्धेयु, भुजनिबन्धः, arms.

5. 5a भाद्दह तुम्हं मेइणि दिष्णी, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāṃsa, of course through their father Bāhubali.

6. 2 सिरिमद्वज्जजंघजम्भतरावधारो, the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as वज्जजंघ and his consort was सिरिमई. At that time सेयंस was the charioteer and knew that वज्जजंघ ( or वज्जनाम )

was destined to be the first तर्धिकर. For details see Hemacandra, Triṣaṣṭi, III. 284-287 and also this work XXIV.

7. 16a सद्गुणेषु नव पंचहुं सत्तहुं, i. e. faith in nine पदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs. 18a देसचरित्तालंकिउ, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs.

9. 2 दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं, principles in essence of the classification of the donor ( दायय, दायक ), the gift ( देज्ज, देय ) and the receiver ( पत्त, पात्र ). 11-12 असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñāna, which in its turn secures bliss. Compare for the objects of begging alms :—

वेयण वेयावच्चे इरियद्वाए य संजमद्वाए ।

तह पाणवत्तिपाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥

—पिण्डनिर्मुक्ति, 662

11. 8-9 तहु दिवसहु etc., the day on which Seyamsa served alms to Risaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called.

12. 7a पंचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs. Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII. 4-8.

15. 10b अणमत्ति गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अणमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान. This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलान्नास. The monk is engaged in धर्मभ्यान and there is a beginning of शुक्लभ्यान. 11b खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth. शुक्लभ्यान is now fully developed here. 13b अणियट्ठिहि छत्तीस जि जिउउ, in the अनिवृत्तिवादगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty-six kinds of कर्म. 14a सुहुनसंपरायउ पावेषिणु, having acquired the सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the संज्वलनलोभ. 15a पुणु जायउ उवसंतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान. 16 क्षीणकसायचरित पडिवण्णउ, he reached the क्षीणकपाय or क्षीणमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लभ्यान begins. In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिs, viz., five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय. At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान.

## MAHĀPURĀṆA

20. 7a अक्षयधारिणि, अक्षयानां सिद्धानां धारिका सिद्धिवधूः, T. 14b धणं समवसरणुं क्खिउ तावहिं, at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Risaha.

### X.

[Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atisāyas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.—King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father, but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.]

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from saṃsāra went to him. To them the Jina began to describe categories of Jīva and Ajīva. He first explained the six pajjattis, i. e., faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvīpas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अक्षय दह etc. The Jina had already ten atisāyas from his birth such as निःस्वेदत्व etc., but when he attained kevala, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3a दहकुमार i. e., ten gods belonging to the class of भवनपति.

5. 1-8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Śiva but is shown superior to him, e. g. वामाविमुक्क, god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her. 9-13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14-17 to Viṣṇu.

9. 4a चउरासिलस्खजोणिहिं परिममन्ति, तथा नित्येत्तरणिगोदयोः पृथिव्यसेजोवायुकायानां च अत्येकं सप्त योनिलक्षाणि, वनस्पतिकायिकानां दश, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां अत्येकं द्वे द्वे, सुरनातक-  
तिरश्चां चत्वारि, मनुष्याणां चतुर्दशेति, तदुक्तम्—

णिच्चेदरधादु सत्त य तरु दस विवलिदिणुं छच्चेव ।

सुरणरयतिरिय चदुगे चोद्वस मणुए सप्तहस्स ॥ T.



## NOTES, XI 10

6-7 आहार...पञ्जति सि भर्णति एत्थु. The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development. These पर्याप्तिs are six, viz. आहार, eating food and digesting it; सरिर, body, इन्द्रिय, sense-organs; आणापाण, breathing; भासा, speech, and मन, mind.

19. 11 सुदुमणिगोचसमुद्भवहं, of those that spring from the subtle णिगोच or निगोद; this निगोद is a physical body with infinite lives or souls.

## XI.

[ The Jina proceeds further to define the functions of different sense-organs and creatures that possess them. He then mentions the duration of their life. After a general description of the Geography of the Jambūdvīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities. He then goes on to detail the heavenly regions and gods. He explains the fourteen Guṇasthānas, the various prakṛtis of karman, the characteristics of the Siddhas and their happiness. On hearing the discourse the eighty-four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Gaṇadhara. Similarly Bāmbhī and Sundarī became the first nuns of the Order. Only Marīci remained unenlightened. The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyāṃvayā or Piyāṃvadā. The first disciple to obtain emancipation was Anantavira. ]

6. 6b वयगुणिवत्, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows.

8. 9-10 महर्गहिं etc. The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs.

9. 2b गिरुह, परामर्शशून्याः, T., incapable of guessing or imagination.

10. 4 सावयववहलेण सोलहमत्तं सगु लहइ माणसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka. The sixteen heavens are: सोधर्म, ऐशान, सानकुमार, महिन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, माणत, आरण and अच्युत. According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार.

11. 10 राम उडुगइ etc. The passage says that the nine बलदेवस or रामs are destined to obtain heavens while the nine वासुदेवस are destined to go to hells.

17. 8b चंगउ कउलु तुज्जु वक्काणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1a अदकविट्ठसरिससंठाणई, the shape of the heavenly abodes resembles the कपित्थ fruit cut into two.

25. 12 पडिचार, attendance, service, or cure.

26. 3b अनुलसोवसु णिहिलहु अहमिंदहु, all अहमिन्दस enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8-15 मग्गठाणइ चोद्वसमेयई etc. The passage gives the list of fourteen Guṇasthānas. They are:—निथ्याव, सास्वादुनसम्पददि, (ससण of our text) सम्पदनिथ्याददि (मीसु of our text), अविरतिसम्पददि, देशविरति (विर्याविरउ of our text), मत्त, अपमत्त, अपूर्वकरण (अउब्बउ of our text) अनिवृत्तिचादर (अणियत्ति of our text), सूहमसंपराय (सुहुमराउ of our text), उपशान्तमोह (उवसंतु of our text), क्षीणमोह (परिखीणकसाय of our text), सयोगिकेवलि (सजोहगिणु of our text), and अवयोगिकेवलि (अजोइ of our text). For details see Miss Johnson's Triṣaṣṭi, Appendix III. Pages 429-436.

32. 5b अडयालीसउं सउ, i.e. one hundred and thirty-eight मरुत्तिस of कर्म. In the Guṇasthānas from number four to seven, one hundred and thirty-eight कर्ममरुत्तिस are destroyed. They are: ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9, वेदनीय 2, मोहनीय 21, आयु: 3 (i. e. नारक, तिर्यक् and देव), नाम 93, गोत्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11a अहमपुइईवहि, i. e., on the सिद्धमूढि or सिद्धधिला.

35. 12b एक्ख मरीइ जेय पडिवुद्धउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनावरणीयकर्म and मोहनीयकर्म. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्पदवत्त्व. See Hemacandra, Triṣaṣṭi, VI. 385-390.

## XII.

[ Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarṣa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tirtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarṣa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Māgadha Tirtha did accordingly. ]

1. 3a छुहु छुहु, immediately, quickly. 15-16 सारयमवलंछणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it ( this very moon ) as the simile, i. e, I would have compared, the fame of the Jina to it ( the moon ).

5. 30 साडी णं हिमवतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kadavakas contain a fine description of the river.

12. 12 खंभुद्धरियडिमया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them.

14. 12 गण्थि सद्धाहु ओसहु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावस औषध नाही in Marathi.

19. 2a विविहणिहीसराहु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are:—नैसर्ग, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शंखक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Triṣaṣṭi, IV. 574-782 and also below XVIII, 15. 6-10. 2b णियकालवट्ठसंविस्सराहु, to one who has fixed an arrow

## MAHĀPURĀṆA

to his bow named कालवट or कालवृक्ष. Miss Johnson's note ( see page 223 of her *Tran. of Triṣaṣṭi* ) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7b तो तुम्हें नउ अम्हें मि देव, my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्हीही नाही आणि आम्हीही नाही in Marathi.

### XIII.

[ King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varataṇu ( of Varadāma Tirtha ). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varataṇu. King Varataṇu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavanasaṃudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tirtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc., and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitāḍhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas. ]

1. 4a सिमिरं समुल्लङ्घ, the camp of the army is making rapid movements. 23 वङ्गयन्तिण्यडे, in the neighbourhood of वैजयन्ती, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2. 13 द्विवक्त्राडं विहृदिनि यक्कं, the gates of different dvīpas or islands in the लवणसमुद्र stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4. 3a सहमंडनि वरतणुहि, in the court-room of वरतणु, the king of वरदामतीर्थ. Hemacandra does not mention the name of the king in his *Triṣaṣṭi*.

9. 20 पहलें, by the king of the Prabhāsa Tirtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

#### NOTES, XIV. 1.

10. 1a सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिनि, i. e., regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5a अज्जसंढु, the continents where the Aryans live. 14a विजयद्दु संयुद्दु, towards the विजयार्थ mountain. This is another name of mountain Vaitāḍhya as can be seen from lines 24-25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khaṇḍas on either side and crosses the continent from east to west.

#### XIV.

[After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitāḍhya and encamped there. A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side. Bharata then ordered his general to do accordingly. When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents. The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months. He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness. The general of the army then took the Kāgaṇi gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon. With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas. Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further. Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night. The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army. The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata. Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers.]

1. 12b जसवइपुत्तं पेसणु अविस्सउ, the son of Jasavaī, i. e. king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin.

## MAHĀPURĀṆA

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a दामयमक.
3. 5७ तस्मिन्दिणामो, bearing the name of that mountain, viz. विजयार्ध.  
26 आरासचक्रुरियड, sparkling with a hundred spokes.
5. 3 इय चितिवि etc. The general then took up the कागणि gem, and with it wrote out the moon and the sun.
6. 8७ सविग्गाणिणा संक्रमेणं कर्णं, with the help of a dam (संक्रम, संक्रम) or bridge built by the clever engineer, i. e., स्थपतिरत्न.

## XV.

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow, but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vṛṣabha Mountain. He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Yaitādhyā mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Nāṭamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Nami and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage. Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

## NOTES, XV. 22

agreed to do this and paid homage to Bharata. The Kāgaṇi gem then produced light with the help of which the army was able to proceed. Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance. On seeing him he offered him prayers. ]

2. 11b वइसाहठणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up. This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force.

4. 9b परिछेयवंताइ, well-defined, clearly written, readable. 16a जो जियइ सो जियइ etc. he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die.

6. 15 वसुमइ सेंदुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son.

7. 12b को एम ससंकि जाउं थवइ, who will, like you, put his name, i. e., write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon. 18 तुज्जु समाणु तुहुं, you are like yourself, i. e., there is nobody who is like yourself.

12. 5-14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name बाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics.

13. 2b निमीसहि दुग्गमहे, निमीसा or तमिस्रा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army.

15. 6b धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of कपभ, the towns to नमि and विनिमि.

17. 7b अम्हं पुणु दइयंबरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks. The expression दइयंबरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens.

22. 10 महिहरु महिहरु etc. the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरु).

# MAHĀPURĀṆA

## XVI.

[Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother, was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him ].

1. 2 साकेयदु संमुद्ध, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 12a कुकुनेण छड्डड्डड, sprinkling with water mixed with saffron. छड्डड्डड is a Deśi word. Compare सडा in Marathi. 19 सद्धिहि वरिससहसद्धि, after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 12a किं किर वणिण्ण कंदुपे, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Risaha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 जह जम्मजजामरणई हरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7b बुद्धसंगमु, i. e., बुधसंगमः, company of the wise. Note the appearance of रे in the word as sanctioned by Hemacandra, IV. 399.



## NOTES, XVII. 2

18. 12a काउ कंदलावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death. 13a देहि कपु, pay tribute or homage to Bharata.

21. 4a जो बलवतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief. A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24. 14 धवलाई जि गिरु धवलई, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon.

## XVII.

[ Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains. The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army. When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms. Both of them agreed to fight accordingly. But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious. When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata. Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground. ]

1. 2 गंदागंदगहो, of the son of गंदा, i. e., सुगंदा, i. e., बाहुबलि.

2. 9b पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy. 10 ऊणेण हण etc. There is no gain by killing a low man,

## MAHĀPURĀṆA

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4. 14 सरवरपतिहिं वरुण शिबंघामि, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes ( नायाचारहिं ).

5. 13 न एवहिं मञ्जमि, I do not behave well when I am with you, i. e., it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy. विमुञ्जमि, shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुट्टि णाई आलिहियई, as if drawn in picture on a wall.

9. 3a बिणिण नि जण, both of you. Compare दोणे जण in Marathi. 13 रणु तिबिद्ध, threefold fight, viz., gazing at each other without winking ; splashing water against each other so as to overpower one ; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11. 5 हेद्विद्ध दिदि etc., The lower eye, i. e. the eye of Bharata, was conquered by the upper eye, i. e. the eye of Bāhubali, whose glance was steady, fixed and unwinking.

12. 6b सिताहारपूरंतचंचूचऊरं, in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus. 12 बियलई उप्परि मेइल्ले, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face.

14. 5 पीलिज्जउ तेरउ उच्चुचाउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let ( people ) drink its juice, or let ( them ) eat the sweet raw sugar ( गुल, गुळ ). Bāhubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 ता मणइ जहणि etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said : why do you talk in vain ? why do you ridicule my bow and arrow ?

15. 10a अलंभुयजुञ्जविहणसयाई, hundred ways of wrestling.

16. 8b ता चिंतितु चक्रु सुकंधरेण, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

## XVIII.

[ Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth. ]

2. 11 हउं जित्तउ पई तुहुं सइ खंविउ, I was defeated by you, and you have once ( सइ, सकंत् ) forgiven me.

3. 1-3 जइ पई etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive? You have thus won or conquered even earth in forgiveness; you have frightened Indra ( कउसित्त, कौशिकः, i. e., इन्द्र ) by your valour. 10-11 सत्ति सूरहे, etc. To the sun there is a counterpart in the moon; to the Mandara mountain there is (small) Mandara; to Indra there is Pratindra, but O son of queen Nandā ( i. e., सुनन्दा ), to you alone I do not see any second or counterpart.

5. 6 जइ एवहिं etc. If even after this ( talk ) you do not desire to have the earth, i. e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i. e. to Risaha, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6. 7 वई मेहिवि etc. Hatred (दोसु, द्वेषः), having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोपाकर (दोस + आयर, आकर).

7. 9a वयसमिदि, i. e. five समितिस viz., हरिया, भाता, एतणा, आदाण and उचार. Note that the word समिदि often retains द in this book as also डिदि in the next line. 9b आवातयमोउ, practice or observance of the six आवश्यकस, viz, सामाहय, चउवीसइत्यव, वन्दण, पडिक्कमण, काउत्सग्ग and पचक्काण.

10. This kaḍavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyayana Sūtra, XXXI, and also in this book in XXXVII 15-17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

(1) एकहु जीवहु गुण मणि भाविय, he cultivated in his mind the quality of Jiva which is one, i. e., solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in तत्त्वार्थसूत्र II. 8 (उपयोगे लक्षणम्), or better still, the एकत्वभावना. In the Uttarādhyayana Sūtra however we find:

एगओ विरहं कुज्जा एगओ व पवत्तणं ।

असंजमे नियलिं च संजमे च पवत्तणं ॥ XXXI. 2.

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other; i. e., Jiva should abstain for असंजम, indisciplined life, and advance with self-discipline.

(2) राय रोस दोणि वि उडुविय, he sent away, (lit: made to fly) both राग and रोष. The Uttarā. however mentions राग and द्वेष which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads रोस in all Mss.

(3) (a) तिणि वि सल्लइं हियउइरियइं, he removed from his heart the three शल्यस, viz., मायाशल्य, निदानशल्य and मिथ्यादर्शनशल्य.

(b) तिणि वि रयणइं लहु संमवियइं, he soon acquired the three jewels, viz., सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

(c) तिणि वि इंभ मुक्क संसेवें, he left quickly (संसेवें, संक्षेपेण, शीघ्रम्) the three types of crookedness, viz, bodily, verbal and mental. The Uttarā. has मनोदण्ड, वाग्दण्ड and कायदण्ड in place of इंभ of our Text.

NOTES, XVIII. 10-11

(d) गारुव तिण्णि विवज्जिव देवें, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारुव (गौरव), viz., सिद्धिगारुव, रसगारुव and सायागारुव. The Uttarā. adds three उपसर्ग here:

दिव्हे च जे उवसग्गे तद्द तेरिच्छमाणसे ।

जे भिक्खू सहई जयई न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइक्कम्मणिबोधणमियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jiva in the fourfold संसार, viz., देव, तारक, तिर्यक् and मनुष्य. The Uttarā. has :

विगहाकसायसन्नाणं ज्ञाणाणं च दुयं तद्द ।

जे भिक्खू वज्जई निचं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथास, viz. राज्य, देश, भोजन and स्त्री; there are four कथास, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ; the four संज्ञास are mentioned above; the four ध्यानस are आर्त, रोद, शुक्ल and धर्म out of which first two types are bad.

(5) (a) पंच महव्वयाई, the five great vows of the monk, viz., अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य.

(b) पंचासवदाई, the five sources of sin, viz., हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन.

(c) पंचिंदियई कयाई गिररथई, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz., शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध.

(d) पंच वि णाणावरणई यंधई, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz., श्रुतज्ञानावरणीय, आभिलषोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्याय-ज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय.

(6) (a) छवासयउज्जमु सविसेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकास, viz., सामाह्य, चउसीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्काण.

(b) छज्जीवई दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz., पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and जंस.

(c) छह लेसई परिणामुवइइई, he got stopped the effect of the six लेश्यास, viz., रुग्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्ल.

(d) छ वि द्धई पच्चक्कई दिइई, he saw or realised all the six entities, viz., धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल.

## MAHĀPURĀṆA

(7) (a) सत्त भयाईं ह्याईं गहोरें, the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz., इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीवभय, मरणभय, and अश्लोकभय.

(b) सत्त वि तबईं गायईं धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जर, बन्ध and मोक्ष.

(8) (a) अट्ट वि मय णिट्ठविष अटुट्ठें, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अट्ट सिद्धगुण भरिच वरिट्ठें, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्ध, viz.,

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुद्धमं तहेव अवगहणं ।

अगुरुलद्धमव्वाचाहं अट्ट गुणा होन्ति सिद्धाणं ॥

—सिद्धभक्ति, २०

शुद्धात्मादिपदार्थविषये विपरीताभिनिवेशरहितः परिणामः क्षाधिकसम्बन्धवत्त्वमिति भण्यते । जगत्त्रयकालत्रयवर्तिपदार्थयुगपद्विशेषपरिच्छित्तिरूपं केवलज्ञानं भण्यते । तत्रैव सामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनं भण्यते । केवलज्ञानविषये अनन्तपरिच्छित्तिशक्तिरूपं अनन्तवर्धं भण्यते । अतीन्द्रियज्ञानविषयत्वं सूक्ष्मत्वं भण्यते । एकजीवावगाहप्रदेशे अनन्तजीवावगाहदानसामर्थ्यमवगाहनत्वं भण्यते । एकास्तेन गुरुलघुत्वस्याभावरूपेण अगुरुलघुत्वं भण्यते । वेदनीयकर्मोदयजनितसमस्तबाधारहितत्वादव्याबाधगुणश्चेति ॥

—परमात्मप्रकाशटीका

(9) (a) णवविहु बंमचेरं परिपालिउ, he observed the ninefold celibacy, viz.,  
इत्थिविसयाहिलासो अङ्गविमोक्खो य पणिदरससेवा ।  
संसत्तदव्यसेवा तद्धिन्दयालोपणं चेव ॥ १ ॥  
सङ्कारपुरङ्कारो अदीदसुमरणमणागदहिलासो ।  
इट्ठविसयसेवा वि य णवभेदमिदं अबम्भत्तं ॥ २ ॥

—T. in Ms. K.

Devendra's Com. on Uttarā. XXXI. 10 however gives the nine rules of celibacy as follows:

वसहि कह निस्सिञ्चिन्दिय कुट्टिन्तरपुव्वकीलिय पणीए ।

अइमायाहार विभूत्तणा य तव वम्भगुत्तोजो ॥ १ ॥

(b) णवपयस्यपरिमाणु णिहालिउ, he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, and मोक्ष.

NOTES, XVIII. 10-11

(10) दसविहु जिणधम्म वियाणिजउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz.,

सखी य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धवो ।

सच्चं तोयं आकिंन्नणं च यम्मं च जइधम्मो ॥ १ ॥

(11) एयरह ह्यजडिमउ अविचारहं धीरहं सावयहं...पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमास which lay disciples practise. These eleven प्रतिमास are :—

दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबम्म सच्चित्ते ।

आरम्म पेस उद्धिदवज्जए समणमूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224-229.

(12) बारह भिक्खुहं पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमास of the monks. These are described in Devendra's Com. on Uttarā. XXXI 11, as follows :—

मासाई सत्तन्ता पढमा बिइ तइय सत्तराहदिणा ।

अहराइ एगराई भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्खुपडिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months; of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमास is called upon to observe. Devendra describes them as follows :—

पडिवज्जइ एयाओ संवयणधिईजुओ महासत्तो ।

पडिमाउ भावियणा सम्मं गुरुणा अणुत्ताओ ॥ १ ॥

गच्छे चिय निम्माओ जा पुक्का दस भवे असंपुण्णा ।

नवमस्स तइयवत्थुं होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ २ ॥

बोसट्ठचत्तदेहो उवसगासहो जहेव जिणकप्पी ।

एसण अभिगह्णीया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥

गच्छा विणिक्कमिता पडिवज्जइ मासियं महापडिमं ।

दत्तेण भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥

जत्थत्थमेइ सूरु न तओ ठाणा पथं पि संचलइ ।

नाएगराइवासी एगं व दुगं व अन्नाए ॥ ५ ॥

दुट्ठस्सहत्थिमाईण नो भएणं पथं पि ओसरइ ।

एमाहनिवमसेवी विहरइ जासण्डिओ मासो ॥ ६ ॥

## MAHĀPURĀṆA

पच्छा गच्छमईं एव दुमासी तिमसि जा सत्त ।  
नवरं दसीपुड्डी जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ ७ ॥  
तत्तो य अहमीया भवईं हु पढम सत्तराईदी ।  
तीई चउत्थचउत्थेणऽपाणएणं अह विसेसो ॥ ८ ॥  
दोष्वा वि एरिस्स चिय बहिया गामाइयाण नवरं तु ।  
उक्कुड लंगडसाईं दण्डायय उड्डु ठाईत्ता ॥ ९ ॥  
तच्चाए वी एवं नवरं ठाणं तु तस्स गोदोही ।  
वरिस्सणमहवा वी टाएज्जा अंबसुज्जो हु ॥ १० ॥  
एमेव अहोराईं छट्ठं भत्तं अपाणयं नवरं ।  
गामनगराण बहिया वग्गारियपाणिए ठाणं ॥ ११ ॥  
एमेव एगराईं अहमभत्तेण ठाण वाहिरो ।  
ईसीपढमारगए अणिमिसनयणेगदिट्ठा य ॥ १२ ॥

(13) (a) तेह किरियाठाणईं मुणियईं, he understood the thirteen kiriyas, which are enumerated below :

अट्ठाणट्ठा हिंसाऽकम्हा दिटी य मोत्तऽदिन्ने या ।  
अज्झत्थ माण भेत्ती माथा लोभेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूयगड II. 2.

(b) तेहमेय चरित्तईं गणियईं, he also counted upon the thirteen types of good conduct, viz, पञ्चास्सवत्तर, पञ्चत्तमिति and गुप्तित्रय.

(14) (a) चोद्ध गंथ, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T. as follows :—

मिच्छत्तवेदरागा तहासादिया (१) य छट्ठोसा ।  
चत्तारि तह कसाया चोद्धह अक्कमत्तरा गन्था ॥ १ ॥

(b) (चोद्धह) मला वि सत्तुज्झिय, he avoided the fourteen impurities enumerated in T. as follows :—

नहरोमज्जनुअही कणकौडयपूचम्मंससरुहिराणि ।  
बणिय कलकन्दमूलानि मला चोद्धसा होन्ति ॥ १ ॥

(c) चोद्धह सूयगाम सईं बुज्झिय, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T. as follows :—  
एकेन्द्रियाः सूक्ष्मबादरपर्यासापर्यासमेदाच्चत्तारः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्यासापर्यासमेदात् पद्, पञ्चेन्द्रियाः संज्ञयसंज्ञिपर्यासापर्यासमेदाच्चत्तारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

बादरसुद्धमे इन्द्रियवृत्तिचतुरिन्द्रियसन्नीया ।  
पञ्चत्तापञ्चत्ता...चतुदस भूदसंगामा ॥ १ ॥



(15) (a) पण्णारह पमाय मेळ्ळें, abandoning the fifteen pamaḥ or flaws, enumerated in T. as follows :—

विकहा तह य कसाया इन्दिय निह्वा य पणगो य ।

चउ चउ पण एगेगं होन्ति पमाया हु पण्णरसा ॥ १ ॥

i. e., four types bad talk, viz. राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and स्त्रीकथा, four कथायस, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक !).

(b) पुण्णपावभूमिउ जाणेंतें, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz., five in each of भारत, इरावत and विदेह.

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमेंतें, pacifying the sixteen forms of passions. T. notes these as : कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेषु रमंतें taking delight in sixteen types of expressions. T. records them as follows :—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि नव, तथा वि (!) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टपरोक्षवचनानि चत्वारिणि षोडश. The Uttarā. has गाढसोलसएहिं which refers to the sixteen lessons of the first volume of सृगडं of which the sixteenth is called गाढञ्जयणं.

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असंयम, indiscipline ; Devendra has enumerated these as follows :—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वं चास्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेदत्वात् । यत उक्तम्—

पुढवि-दुग-अगणि-मारुय-वण्णई-वि-ति-चउ-पणिन्दिअजीवे ।

पेहोपेहममज्जण-परिलवण-मणो-वई-काए ॥

T. has the following explanation : पृथिव्यस्येजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाणाम-प्रतिलेखन (!) दुष्प्रतिलेखनापहृत्योपेक्षानि (!) जीवमनोवाङ्मायाः अपहृत्य (!) गृहीताण्डादिजनून् प्रतिलेख्ये (!) उपेक्षा (!)...। अथवा—

पञ्चासवेहि विरमणं पञ्चिन्दियनिग्हो कसायजओ ।

तिहि दण्डेहि य विरदी संजमो सत्तरसभेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयमः सप्तदशविधः .

(18) जाणिवि संपराय अट्टारह, having known eighteen types of संपराय viz., ten यतिधर्मस such as क्षान्ति etc., five समितिस and three गुणिस.

(19) एउणवीस वि गाढञ्जयणई, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations ( नाय-ज्ञात or न्याय ? ). This is clear—

ly a reference to the sixth Āṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read ह so that our reading is नाहज्जयणहं. This reading is supported by T. also. Uttarā. reads नायज्जयणसु. The change of Sk. त to ह is not unusual, compare मरह for मरत. It also appears that ज्ञात or न्याय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called नायस and are named as :

उत्तिसत्तनाए संवाडे अण्डे कुम्भे वं सेलए ।  
तुम्भे वं रोहिणी मछो मार्यदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥  
दावद्वे उदगनाए मण्डुके तेयली इय ।  
नदिफले अवरकङ्का आहजे सुंमु पुण्डरिए ॥ २ ॥

—Devendra on Uttarā. XXXI. 14.

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called नाह or नाह ; it contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below :—

1. उक्कोडणग constituted the first अज्जयण. The story as given in T. is as follows :—उक्कोडणग श्वेतहस्ती । अस्य कथा । उत्तरापथे कनकपुरे राजा कनको, महाराज्ञी कनका । पुत्रो नागकुमारः तपो गृहीत्वा विहरमाणः अटव्यां दावानलेन द्रव्यमानः समाधिना मृत्वा अच्युतेन्द्रो जातः । तदर्थदधकलेवरं दृष्ट्वा तुङ्गमन्द्रो नाम तत्रत्यो मिथो जातपश्चात्तापो मृत्वा तत्रैव श्वेतगजो जातः । सोऽच्युतेन्द्रेण जिनधर्मं ग्राहितः पुनर्दावानलेन द्रव्यमानं शशकं स्वपादतले स्थितं रक्षित्वा ( दस ) मानोऽपि दृढव्रतो मृत्वा मृत्वा देवो जातः । If we compare this narrative with the one in the first ज्ञात called उत्तिसत्तनाए of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by अच्युतेन्द्र, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्भ—This is second in the Digambara tradition, but fourth in the Śvetāmbara one. T. gives the narrative as follows :—कुम्भ कूमाह्वयानम् । यथा कूर्मेण मुखचरणसंकोचं कृत्वात्मनो ब्राह्मणान्तरणं निवारितं तथा मुनिभिरपि पञ्चेन्द्रियसंकुचितैर्मरणपरंपरा निवारयितव्या.

3. अंडय—This is the third ज्ञात in both the versions. T. says:—  
अण्डजकथा पञ्चप्रकारा । तयथा कुक्कुटकथा माताप्येका पिताप्येकः इति । तापसपण्डिकास्थितशुक्र-  
कथा । चारणाख्यव्याकरणवेदकशुक्रकथा । अगन्धनसर्पकथा । हंसयुधवन्धनमोचक कथा । In the  
Śvetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and  
not five as T. seems to indicate.

4. रोहिणी—This is the seventh story in the Śvetāmbara version  
while it is fourth in the Digambara one. T. reads: सुपुत्रवलदेवेन सह रोहिणी  
विप्रतीति लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं ययसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शौरिपुरं वेष्टित्वा पूर्वामिसुखं  
ब्रूहतिविति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम् । The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether  
different.

5. सेस—This seems to correspond to सेलए which is the fifth narra-  
tive in the Śvetāmbara version. T. reads: शेषे शिष्यकथा यथा चेलिणीपुत्रवारि-  
येणप्रतिबोधितः पुष्पडालः. The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different.

6. तुंब (and not रंब as read in foot-notes)—This is the sixth story  
in both the versions. T. reads: तुम्बकथा रोपेण दत्तकदुकुमोजनमुनिकथा. The  
story in the ज्ञाताधर्मकथा is different as can be seen from its summary in  
the com. which runs as follows:—

जह मिउलेवालिसं गरयं तुम्बं अहो वयह एव ।  
आसवकयकम्मगुरू जीवा वञ्छन्ति अहरगयं ॥ १ ॥  
तं चेव्व तच्चिमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभावं ।  
जह तह कम्मविमुक्का लोचमपइहिया हेस्ति ॥ २ ॥

7. संघाद—This is called संघाड and is the second in the Śvetāmbara  
version. T. reads:—संघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्याः,  
तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागताः । सम्यग्दृष्टयस्ते केवालिसमीपे स्वल्पं निजजीवितं  
ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान ( पादपोषगमन ! ) मरणेन स्थिताः । अतिवृष्टौ जातायां  
जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः । परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गताः । The  
narrative in ज्ञाताधर्मकथा is altogether different from the above.

8. मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the  
Śvetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara  
version. T. seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would  
however reduce the number of narratives to eighteen. T. reads: मादंगि-  
मल्लिकथा यथा वज्रमुल्लिमहाभट्टभायीया मंगि ( मादंगि ! ) नामायाः मल्लिपुण्यमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदंष्ट्रायाः  
कथा. The narratives of the Śvetāmbaras and the Digambaras do not  
at all agree.

## MAHĀPURĀṆA

9. मछि—This is the eighth narrative in the ज्ञाताधर्मकथा. For remarks see above.

10. चंदिमा—This is the tenth narrative in both the versions. T. says : चंदिमा चन्द्रावधकथा ( चन्द्रवृद्धिकथा ). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. तावद्द्व—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्द्व which is the name of a tree in that version. T. however seems to mean a different story. T. reads : तावद्द्व—तोपद्रवदेशोत्पन्न-घोटकहरणसगरचक्रवर्तिकथा.

12. तिका—It appears that this तिका should correspond with तेयली which is the fourteenth story in the ज्ञाताधर्मकथा. T. reads: तिका मनुष्यकरोडि-समुत्थितवर्षात्रिकस्य कर्कण्डमहाराजकृतच्छत्रे ध्वजाकुशादृशकथा. The Svetāmbara version of तेयली does not seem to agree with the above.

13. तडाया—This seems to correspond to ददुर which is the thirteenth story in the Svetāmbara version. T. reads: तडाया तडागपास्यामेकवृक्ष-कोटरस्थिततपस्विनो गन्धर्वारचनकथितकथा. This has no correspondence with ददुर of the Svetāmbara version.

14. किन्न ( अकीर्ण ! )—This seems to be आहृण्य of the Svetāmbara version which is the seventeenth story there. T. reads: माहिमर्दनस्थितकर्षक-पुरुषसत्यकथा. This story also does not seem to have any correspondence with the Svetāmbara version.

15. सुसुकेय—This should correspond with सुंसुमा of the Svetāmbara version which is the eighteenth story there. T. reads : आराधनाकथितसुंसु-मारद्रवद्वनिक्षिप्तपाणकथा. There seems to be no agreement between the two versions.

16. अवरकंके—This is called अवरकंका in the Svetāmbara version where also it is the sixteenth narrative. T. reads : अवरकंकनामपत्नोत्पन्न-जनचौरकथा. There is mention of the town of अवरकंका in the Svetāmbara version, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17. नंदिकटे—This is called the same in the Svetāmbara version but there it is the fifteenth story. T. reads : अट्ठथा स्थितबुधुक्षापीडितकथा.

विश्वानुलोमश्रुत्यानां किंपाककलकथा. The narrative seems to be similar in both the versions.

18. उदगनाह—This seems to correspond to उदगनाह of the Svetāmbara version which is the twelfth story there. T. reads: उदगनाह उदकनाथ (?) कथा यथा राजा मात्यसमक्षगडुककथा. The story seems to be similar in both the versions.

19. पुंडरिगो य—This is the last story in both the versions. T. reads: पुंडरिगो य पुण्डरीकराजपुत्र्याः कथा. The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com.

वाससद्वरुसं पि जहं काऊणं संजमं सुविउलं पि ।

अन्ते किलिद्वभावो न विसुज्झइ कण्डरीउ ध्व ॥

अप्येण वि कालेणं के वि जहागदियसीलसामग्णा ।

साहिन्ति निययकज्जं पुण्डरीयमहारिसि व्व ॥

T. adds: “अथवा—गुण जीवा प्र(?)जतीपाणासायामग्गणा उ य ।

एउणवीसा एदे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खययं जं हवन्ति दस चेव ।

णाहज्झयणा एए एउणवीसा विचाणेहि ॥

कर्मक्षयजाः घातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः. It is clear that the names of the अज्झयण agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely. Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T.

(20). वीसविहई असमाहीठाणई—Twenty types or causes of असमाधि, absence of tranquillity of mind. These twenty causes are given in Devendra's com. as follows:—

1. दवदवचारी—दुयं दुयं वच्चन्तो इहेव अप्पाणं पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अण्ययं सत्तवहजणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ.

2. अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

3. दुष्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

4. अहरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ.

5. राहणिए परिभवइ.

6. थेरोवचाई—सीलाइदोसेहिं थेरे उवहणइ चि दुसं भवइ.

## MAHĀPURĀṆA

7. भूओवघाई-अणहाए एगिन्धियाहए उवइणइ त्ति बुत्तं भवइ.
  8. मुहुत्ते मुहुत्ते संजलइ.
  9. सई कुद्धो य अचन्तकुद्धो हवइ.
  10. विट्ठिमंसिए हवइ.
  11. अभिक्खणमोहारिणिं भासइ जइहा दासो तुमं चोरो व त्ति.
  12. नवाहं अहिगरणाइं करेइ.
  13. उपसन्ताणि य उइरोइ.
  14. ससरक्खवाए अर्थडिलाओ थण्डलं संकमइ, ससरक्खेहिं वा हन्धेहिं भिक्खं गेणइइ.
  15. अकाले सज्जायं करेइ.
  16. असंखडसइं करेइ राईए वा महया सट्ठेण उल्लवइ.
  17. कलहं करेइ, तं वा करइ जेण कलहो हवइ.
  18. तारिसं करेइ भासइ वा जेण सज्जो गणो सज्जविओ अच्छइ.
  19. सूरौदयाओ अथमणं जाव भुजइ.
  20. एसणासमिइं न पालेइ.
- T. also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt,

(21) एकविंस सवल वि, i. e. twentyone impurities or impure and sinful acts (शवल). They are given by Devendra as :—

- तं जह उ (१) हथक्कम्मं कुब्बन्ते (२) मेहुणं हु सेवन्ते ।  
 (३) राई च भुज्जमाणे (४) आह्वक्कम्मं च भुज्जन्ते ॥ १ ॥  
 (५) तत्तो य रायपिण्डं (६) कीयं (७) वानिच्च (८) अमिहइ (९) अछेज्जं ।  
 (१०) भुज्जन्ते सबले क पच्चवित्थयऽभिक्खं भुज्जन्ते ॥ २ ॥  
 (११) छम्मासव्वमन्तरओ गणा गणं संकमं करिन्ते य ।  
 (१२) मासव्वमन्तर तिणिणं य दग्गलेवा क करेमाणे ॥ ३ ॥  
 मासव्वमन्तरओ बिय माहट्ठाणाइं तिणिणं कुणमाणे ।  
 (१३) पाणाहवायाउट्ठिं कुब्बन्ते (१४) मुसं वयन्ते य ॥ ४ ॥  
 (१५) मिण्हन्ते य अदिन्नं (१६) आउट्ठिं तह अणन्तरहिंयाए ।  
 पुक्कवीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥  
 (१७) एवं ससिणिद्धाए ससरक्ख्वाए चित्तमन्तसिललेल्लू ।  
 कोलावासपइट्ठो कोलपुणा तेसि आषाओ ॥ ६ ॥  
 (१८) सण्डसपाणसथीए जाव उ संताणए भवे तहियं ।  
 ठाणाइ चेत्यमाणे सपले आउट्ठियाए उ ॥ ७ ॥

NOTES, XVIII. 10-11

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुष्पे य फले य वीयहरि ए य ।

मुञ्चन्ते सवले ऊ (२०) तहेव संवच्छरस्तन्तो ॥ ८ ॥

दस दगलेवे कुब्बं तह माइहाण दस य वरिसन्तो ।

(२१) आउट्टिय सीओइवग्गारियइत्थमत्ते य ॥ ९ ॥

दब्बीइ भायणेण य दिज्जन्तं भत्तपाण घेत्तुण ।

मुञ्जइ सवलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

(22) सहिषि दुवीस दुसज्ज परीसह, having borne twenty-two unpleasant contacts, viz., दुःख, विपासा etc. For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX. 9.

(23) तेवीस वि सुत्तयइइ, i. e. twenty-three chapters of the सूत्ररुताङ्ग, the second Aṅga of the Canon of the Jains, beginning with समयाध्ययन and so forth. T. reads : सत्तमए वेदालिजोए उवसग्गं इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरधुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसरणे तिकालागन्धसाहयए (१) आदा तदिस्था (१) पुंडरीको वीरियहाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खण अणगारगुणकिंती सुद अत्थ णालन्दे सुदयइज्जयणाणि तेवीसं द्वितीयाङ्गश्रुतवर्णनाधिकाराश्च. It we are to trust the text of T. which is admittedly corrupt, the order of adhyayanās in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one.

(24) चउवीस वि जिणित्थइ—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas.

(25) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8. T. reads : एकैकस्य परिपालनार्थं वाङ्मनोगुभीषां (१) दानसमित्यादयः पञ्च भावनाः; अथवा, त्रयोदश क्रियाः द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः.

(26) छवीस वि पुहवीउ, the twenty-six regions, T. reads : सौधमादि-मोक्षपर्यन्ता एका (१) पृथ्वी उत्सर्पिण्योर्मरुतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सैव सारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रभो (१) मौस्तरभागचित्रादयः (१) पङ्कभागादयः सप्त नरकभूमयः इति षड्विंशतिः पृथिव्यः.

(27) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz., द्वादश भिक्षु-प्रतिमाः, अष्टौ प्रवचनमातरः, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामाभावश्च सप्त, T. Devendra how-  
ever gives a different list :—

वयल्लंकिमिन्दिर्माणं च निग्गहो भविकरैणसच्चं च ।

समंथा विरामंथा वि य मणमाइणं निरोहो य ॥ १ ॥

कायाणं छंकिं जोगमि जुत्तंथा वेयणाहियासणया ।

तह मारैणन्तियहियासणा य एण्णगारगुणा ॥ २ ॥

(28) अट्नीस पवरायारकण—There are twentyeight (?) मूलगुण as T. says; but Devendra gives them as : मरुतः कल्पः यतिव्यवहारो यस्मिन्निति प्रकल्पः, स चेहचाराङ्गमेव शस्त्रपरिज्ञायाश्चविंशत्यव्ययनात्मकम्.

(29) एउणतीस वि बुक्कियसुसई, twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T. reads: चित्रकर्मादिसूत्रं गणितसूत्रं वैद्यसूत्रं तृत्यसूत्रं गान्धर्वसूत्रं पटङ्गसूत्रं अगदसूत्रं मयसूत्रं सूतसूत्रं राजनीतिसूत्रं मज्जुरंगसूत्रं (?) चतुरंगसूत्रं गजतुरंगसूत्रं पुरुषस्त्रीगोष्महृद्गंजनानां (?) लक्ष (लक्षण ?) सूत्राणि अंगं सरं वैजनलक्षणां च छिण्णं बीभेमंसमिणंतरकलं (?) इत्यष्टाङ्गमिभित्तसूत्राणीति एकोनविंशत्यपसूत्राणि । अथवा

अट्ठारह च पुराणा सईगविण्णा ( विज्जा ! ) य लोइयाणं तु ।

बुद्धाहं पंच समया परूवणा जा सुदी लोए ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

अट्ठ निमित्तंगाई दिव्वुप्पायन्तैल्लिक्खंमौमं च ।

अङ्गं सरं लक्खेण वंज्जेणं च तिविहं पुणेक्केहं ॥ १ ॥

मुत्तं विस्ती तह वसियं च पावसुयमउणतीसविहं ।

गन्धर्वो नहं वत्थं ओउं धंणुवेयसंजुत्तं ॥ २ ॥

For still another list see नन्दीसूत्र under मिच्छासुत्तं.

(30) तीसविहई मोह्ठाणई, thirty causes or types of infatuation. T. reads: तथा हि—व्रतविषये पञ्चप्रकारो मोहः । पञ्चप्रकारमनुष्यविषये पञ्चप्रकारमोहः । पञ्चप्रकारमनुष्याः भोगभूमिजमनुष्याः विद्याधरत्रिष/शिशुकापुरुषमनुष्याः पञ्चदशकर्मभूमिजचतुर्थका-लोत्पन्नमनुष्याः भरतिरावतेषु दुःकर्मातिदुःषमकालोत्पन्नमनुष्याः समुद्रमव्यहृदीपिसन्नकर्णभोचरणादि ( कर्णप्रावरण ! ) मनुष्याश्च । जीवाजीवास्तवसंवर्तिर्जीवाबन्धमोक्षपुण्यपापानां स्वरूपे नव-प्रकारो मोहः । कर्मबन्धनस्वरूपे एको मोहः । द्वादशविधतपःस्वरूपे एको मोहः । दर्शनस्वरूपे एको मोहः । वैगमसंग्रहव्यवहारकजुसूत्रशब्दसमिद्धैर्वंभूतानां सप्तनयानां स्वरूपे सप्त मोहाः । व्रतविनाशविषये एको मोहः ॥ अथवा—क्षेत्रान्नस्वरूपा ( ? ) सुवर्णचन्दान्यदासीदासकुप्य-दण्डलक्षणवाह्यग्रन्थविषयो दशप्रकारो मोहः । मिथ्यात्ववेदरागादिलक्षणाभ्यन्तरग्रन्थविषयश्चतुर्दशप्रकारः । पञ्चोन्द्रियदुष्टमनोविषयः षट्प्रकारो मोहः. Devendra's list is altogether different from this for which see his com.

(31) एकतीस मलवाय धुणेतें, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T. as follows :—तथाहि ज्ञानावरणीयं पञ्चप्रकारं दर्शनावर-णीयं नवविधं वेदनीयं सातासातरूपतया द्विभेदं मोहनीयं दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयभेदाद् द्विप्रकारं आशुश्रुतुर्भेदं नाम शुभमशुभं च गोत्रमुच्चैः (?) अन्तरायाः पञ्चप्रकाराः.

(32) जिणुवएस वत्तीस मुणत्तें, meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T. as follows :—

आर्वीसयङ्गपुय्यै छब्बारसचोइसा य ते कमसो ।

वत्तीसमिभ निचमा जिणुवएसा मुणेयव्वा ॥ १ ॥



## NOTES, XIX. 12

The Uttarā. XXXI. 20 mentions one more series of thirty-three terms as तेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII. 15-17 below.

14. 9b छप्पणान्तरदीवद्—These fifty-six अन्तरद्वीपs are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters. For details see नन्दसूत्रटीका of मलयगिरि, pp. 102-103.

15. 6-10. These lines describe the different functions of the nine निधिस or treasures.

## XIX.

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāmsa a liberal donor, and Somaprabha a meritorious ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duṣṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणजं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12-13 धीवरिसरिपुत्तहं देहिंति पटुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वीसस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वीसस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2a पंचमजुगि, i.e., in दुष्पमा.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Siva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloṇa with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Maṇoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmaī (Mahāmatī), Saṃbhinnamati, Satamati and Saṃbuddha (Svayambuddha). Now one day this Svayambuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmatī, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayambuddha refuted the doctrine of Mahāmatī, when Saṃbhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayambuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayambuddha refuted this doctrine also.

Svayambuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artificial blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

## NOTES, XXI.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non-poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing.]

17. 2-5 अणिद्वण् इ etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9b पञ्चदश विंशति, the doctrine of Puramdara, i.e., Indra, who along with Brhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10-11. विष्णु जीवे etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 रिसिसमयद् भत्तण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12. निरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयाद्यु etc. A Tittibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

## XXI.

[Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

## MAHĀPURĀṆA

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāraṇamunis. Svayambuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tirthaṅkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Śriṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Śrivarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tirthaṅkara Svayamprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a samnyāsa maraṇa. He was born in the Iśāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayamprabhā and Kanakaprabhā.]

2. 12 कर निज सेतासयदलहे, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinās.

4. 4b किं भवु अमवु व वज्जरह, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1a बद्धु गियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth. 9 मणकुडिलत्ते, i. e., on account of मणकुडिलत्त.

## XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinās. In course of

## NOTES, XXII.

time he died and was born as son named Vajrajamgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajamgha had been growing on the earth, his consort Svyamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Śrīmātī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmātī of Pundarikīṇī. One day when this Śrīmātī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former birth and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Śrīmātī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirṇāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmātī. On recollecting her

## MAHĀPURĀṆA

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmātī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out.]

9. 11b सवलहणउं सवलहणु व दिहिरु, the scented paste (सवलहणउं, समालम्भनम्) takes away my courage as it destroys force (स्वलहणु) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8b अतिवालउ संयुद्धतिवालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तिवाल-स्त्रीसहित, अतिवाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तिवाल, त्रिकाल).

15. 6a अम्हई दहजणाई, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदितेण, वरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz., सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिवा. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare: आम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पांच जण etc. 10b मई उबोळि भरिय माहुरयडु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटोबन्ध) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माउ or पोक्रा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9a धम्म होइ षड् णियमुद्धंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 पण्णासहसुरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामखपञ्चाशदधिकशतपरिणामोपवासोः (परिमाणोपवासोः ?) श्रुतसागरविभिर्भवति तासामेव सप्तषष्टिभिरुपवासैः जिनयुगसंपत्तिविधिरिति, T.

## XXIII.

[The nurse of Śrīmātī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmātī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said : In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Śrīvarman and Vibhīṣaṇa to king Śrīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasamṇa. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheḍa as Vajrajamgha. ]

3. 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लद्ध, he, being hit ( विहिण्णु, विभिन्नः ) by the arrows ( सर, शर ) of the god of love ( सर, स्मर ), does not secure her ( सा ). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhramśa.

5. Note the शंसलयमक or दामयमक here. Note particularly 7a which line looks apparently incomplete as there is no 7b in any of the Mss. The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that b is lost, for the यमक here ० गिहे—गिहे—गियरे—गियराच in 6b, 7a and 8a remains in tact.

## MAHĀPURĀṆA

8, 9b सीह्मिङ्गीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सव्वमहु in 10a ; सुत्तावलि in 9. 9a and रचनावलि in 9. 14a, कणयावलि in 11. 9a are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदाव, from the place of इन्द्र. 13a अणामिया i. e., जिण्णामिया.

### XXIV.

[In the meanwhile the wise nurse of Śrīmātī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajra-  
jamgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayamprabhā. He was unable to stand the pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajamgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmātī for him, started for Puṇḍarīkīṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmātī to Vajrajamgha, and thus brought about the union of lovers.]

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8b को तं पुसइ णिडाइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has become a proverb in M.

### XXV.

[After marriage Vajrajamgha and Śrīmātī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not



## NOTES, XXVI

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarika, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṃgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṃgha. They then narrated the four previous births of Śrīmātī, viz., those as Dhanaśrī, Nirnāmikā, Svayamprabhā and Śrīmātī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tirthaṃkara, and Śrīmātī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Anuṃdhari and the young prince Puṇḍarika, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12. 6b दूसावातु, a camp in tents ( दू, दूय, पट्टह ).

19. 11a कंडुवि, a sweet-meat seller, a baker.

## XXVI.

[Vajrajaṃgha and Śrīmātī were then born in the Uttarakurus as twins to Aninda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayambuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṃgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmātī, changing her sex, was born as god Svayamprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhī of king Subhadrastī and queen Nandā. Suvidhī married Manoramā, the daughter of king Abhayaghosa. God Svayamprabha

## MAHĀPURĀṆA

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven.]

1. 14b कव्यं पाययं—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10b विड गणमि धाड सुपसिद्धः.—The root विड् (विड in Prakrit) is widely known to mean “to know”, so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a कर्वाल, i. e., sword.

## XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta. Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tirthamkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tirthamkara and Dhanadeva was born prince Seyaṃsa. Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tirthamkara as to how many Tirthamkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha:]

8. Note that this kadavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन्, विद्याधरेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रवज्र, श्रीधर, सुनिधि, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थसिद्धाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here.

12. 5-8 महं णत्तिउं तुहं तणुहं मरीचं—The passage says that मरीचि, the son of मरुत, will be the twentyfourth Tirthamkara named वर्यमान.

## NOTES, XXVIII.

On hearing this prophecy मरीचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Samsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, *Triṣaṣṭi*. VI. 373-390.

## XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śreṇika as follows:—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayamvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakirti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakirti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakirti and arrested

## MAHĀPURĀṆA

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11b मेहेसर जि इक्कारिउ राए, king Jaya was called मेहेसर or मेवसर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in 28. 4a, but elsewhere we find the name as चणरव in 21. 13; जलहरसर in 23. 7b; जीवूयगाव in 28. 9b. Metrically मेहेसर here is not good, but in 28. 4b it is quite right. In T. also under 30. 10b we get मेवेस्वरमित्रः.

## XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaketu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.]

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you?" On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Ataviśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktisēpa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva ].

5. 2a सुयावर, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8a पङ्कुडिहि, in the tent.

9. 10a असिआउसाई i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेष्ठि, viz. अरहन्त, सिद्ध, आवरिय, उवज्झाय and साहु. Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11-12 परावद् हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravsiṇḍā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवेण जणु सज्जइ, people are overcome (सज्जइ, lit. swallowed) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. 8a अडइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि (See 13. 7a). 13 परमायद्, by my step-mother.

16. 4a चारण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jambhācārāṇa and Vidyācārāṇa. Both the classes are capable of flying through the sky. Jambhācārāṇa acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācārāṇa does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8-9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहिं एकु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.

## MAHĀPURĀṆA

### XXX.

[Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvati and of Jaya as Hiranyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativēgā.]

6. 10b हिरण्यवन्मु—This name occurs elsewhere, e. g., 20. 8b, 20. 8a and 22. 4a as सुवर्णवन्म, कंचणवन्म and कणयवन्म.

12. 9b विवह चडावियाई सिरि गेत्तई, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोळे वर चडविणें or फिरविणें in Marathi.

15. 4b तिवमह, i. e., खलिवि, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

### XXXI.

[Sukānta and Rativēgā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukānta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.]

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagrha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagrha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nāgadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the

## NOTES, XXXII.

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasumdhārā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex.]

3. 8a गवसवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 लूयासुत्ते etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1a फणिदत्तु, i. e., merchant Nāgadatta.

25. 10a विवस्त्रवद्भेग, i. e., by Nāgadatta. 12 रत्नहियक्कइ, gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5a वणसंसइ etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasumdhārā, in point of wealth.

## XXXII.

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a banyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla

## MAHĀPURĀṆA

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophesied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophesied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvati, and Vappilā.]

11. 1a-b तुङ्गं जि णट्टु etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोढयावर सिंगे असणें etc.

## XXXIII.

[Sukhāvati, mentioned in the previous Saṃdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūṭa and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvati showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvati. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaṇḍavaka. 13 बिट्टि बि सङ्खउ वासर, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina. 14 सगु बि कमलु सकैसर, a sword becomes like a lotus full of filaments.



## XXXIV.

[Sukhāvati came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍarīnī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla.]

2. 5b जियत्तुं सलिलसेणु मण्ड, Jitaśatru, the father of Sukhāvati said to his son Salilaseṇa, i. e., Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. सलिलसेणु and सरसेण in 3. 7b are only synonyms of वारिवेण.

9. 15 दिद्वादिद्वसरी, one, i. e. Sukhāvati, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

## XXXV.

[Sukhāvati now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍarīnī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśīlekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvati. In the meanwhile two Vidyādhara met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūma-vega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavati, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvati, who was his wife.]

16. 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi: इच्छासाठी जीव सुद्धा द्यावा, I shall even sacrifice my life for her.

[ Śrīpāla was thereupon married to all the girls ; but Vappilā did not like that her husband should marry so many ; hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavai, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavai was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavai gave birth to the Jina who was named Guṇapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Guṇapāla, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocanā went up into the sky to offer worship to Risaha. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

4. 21 सञ्जीविहं रथणहं, the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अय्य, गज, स्त्री, रथपति and पुरोहिन् as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8. 9a इच्छेवत्तं सद्दुं चिह्नि कण्ठेहिं, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

[ King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas, and then went to Samavasaraṇa where Risaha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk, He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from saṃsāra ].

6. 9 एवाण्येयवियप्पणारं, by the law which has modes of expression such as एकत्वं and अनेकत्वं. I take this to refer to the famous सप्तमङ्गलनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See 7. 3b below where we get express mention of सप्तमङ्गली.

7. 1b समयहं तेसद्वहं लिणिं सयइ, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिद्धिं सद्धिं किरियाणं अकिरियाणं च अहुं बुलसीदा ।  
सत्तद्धी अण्णाणी वेणइयाणं च होदिं वैत्तीसं ॥१॥

12. 6७ जेवडु सलिल तेवडु णालु णिणज्जइ णल्लिण्डु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as ( the depth of ) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

15-17. These three kadavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10-11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोमलु वि डुविहु, णिज्जरु वि डुविह वज्जरइ अरुहु—गुण जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा; मोक्खु अर्हद्वस्था सिद्धावस्था च; तउ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोमलु अणु स्कन्धं च; णिज्जर विपाकजा इतरा च. 3a जीवहं गईउ कहियाउ ति णिणि पाणिमुका लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3b जगवेडणमरु घनोदधि-घननिलय-तनुवाताः. 4a जणि जोय ति णिणि कायवाङ्मनोयोगाः. 5b बालाइउ चउविहु मणिउं मरगु बालमरणं बालपण्डितमरणं पण्डितमरणं पण्डितपण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावात्. 6a चउविहु पमाणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि. It is rather strange that a Jain writer should mention these four pramaṇas as against प्रत्यक्ष and परोक्ष. चउविहु जि दागु अमया-हरोपशस्त्रदानानि. 6b चउविहु दुव्याइउ द्रव्यक्षेत्रकालमावाः. 7a चउमिणा मन्दमन्दतर-तीव्रतीव्रतरस्वभावैश्चतुर्धा भिन्नाः, चउविह कसाय अनन्तानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8a चउविहु जिबन्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. चउविहु जिणासु नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8b विणउ वि चउविहु ज्ञानदर्शनचारित्र्योपचारिका विनयाः. 9a चत्तारि वि बंधविणा सहेउ ज्ञानदर्शनचारित्र्यतपोवीयांसि. 10 सज्जाच पंच वाचना-प्रच्छदानुपेक्षास्त्रायधर्मोपदेशाः. (पंच) आचार विहि ज्ञानदर्शनचारित्र्यतपोवीयांसि. 11 णिमंथ पंच पुलाकबकुसकुशीलनिर्यन्यत्तातकाः. जोइसकुल ई पंच सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2a आसवणि बन्धहेऊ उ पंच मिथ्यात्वाविरतिपमादकवाचयोगाः. 2b लद्धीउ दानलभभोगोपभोगवीयांसि. महणरया वि पंच रोएवासिपत्रकूलमलिकुम्भीयाः (?). 3a संसार द्रव्यक्षेत्रकालभवमावाः; सरीरइ हेंति पंच औदारिकवैकियकाहारकतैजसकार्मणानि. 4b समय पड् दर्शनानि. 5b सत्ताहोमहीउ सवनरकभूमयः. 6a पयईउ अहु अष्ट कर्मप्रलयः. 6b वणदेव व्यनतरदेवाः अष्ट किंनरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. अचउविहु जे वि अहु सम्पदर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमानासिपाकाभ्येशित्ववशित्वकामरूपित्वमिति. 8b वेज्जावच्च वि दहविहु आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षणलानगणकुलसंघसायुमनोज्ञानाम्. 9a दह मावणसुर असुरनागविद्युत्पुर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिङ्गुमाराः. 9b कणि ससि सह दह दिसि गय सुहासि धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः अष्ट लोकपालाः.

17 1a सिद्धतासि याइं 2a च उद्ध मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता  
बाहुबलिकेवलज्ञानोत्तिसमये व्याख्याताः.

20 6b णिबालियाइं निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10a  
अच्छत्तु वि अंगु ण छिवद् देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had  
given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but  
it is not in any way connected with physical body. 11 वसुसमहिं सिद्ध-  
गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).

CHAPTER 10

THE FIRST PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE SECOND PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE THIRD PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE FOURTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE FIFTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE SIXTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE SEVENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE EIGHTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE NINTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE ELEVENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWELFTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE THIRTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE FOURTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE FIFTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE SIXTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE SEVENTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE EIGHTEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE NINETEENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTIETH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-FIRST PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-SECOND PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-THIRD PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-FOURTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-FIFTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-SIXTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

THE TWENTY-SEVENTH PART OF THE BOOK IS A HISTORY OF THE

## GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[ In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like *Pāiyasaddamahāṇavo* are now available. M stands for Marathi. ]

अइमल्लह-मन्दगमनं करोति xv. 18. 7  
 अइवत्त-अतिमुक्त xi. 1. 8  
 अक्का-माता xvi. 25. 12  
 अट्टिलिय-अस्थिका ( cf आठळी M )  
 xxxii. 22. 6  
 अन्मिद्द-अभिगत xxxii. 6. 13  
 अम्मणु-किष्णमात्रम् ( cf अमळ M )  
 xxv. 2. 5  
 अम्माहीरअ-रागध्वनिविशेष iv. 4. 13  
 अल्लियल्लि-यात्र xiii. 18. 9  
 अल्लय-करमल, आद्रक xxxi. 24. 4  
 अल्लवद्-समर्पयति, xxxi. 8. 3  
 अल्लिवद्-समर्पयति xxxi. 28. 3  
 अवरेडड-आलिङ्गति i. 17. 13  
 अवरेडडिय-आलिङ्गित vi. 5. 11  
 अवसे-अवश्यम्, xv. 22. 10  
 अविहंडिय-परिपूर्ण x. 3. 13  
 असराल-बहुल xix. 2. 4  
 आलुंखिय-आस्वादित xiii. 11. 4  
 आहुडु-अर्धचतुर्थ xi. 25. 2  
 उच्चोलि-कटीवस्त्र, नीवी ( cf ओटी M )  
 (H gives उच्चोल i. 131) xxxii. 15. 10  
 उट्टेट-उन्मत्त xxx. 4. 7  
 उप्फाल-पटहृद्वानि xxxi. 15. 6.  
 उन्मिय-ऊर्ध्वीकृत vii. 21. 18  
 उल्लुरिअ-कान्द विक. ( A baker )  
 xxv. 21. 1  
 उल्लाह-अङ्गारावस्थो भवति v. 5. 4  
 उव्वार-उद्धरण, रक्षण, xvi. 21. 11

उव्वारअ-अवशिष्ट ( cf. उर्वरित M )  
 xxxvii. 25. 3  
 ओइल्ल-उपरितन xi. 5. 4  
 ओम्माहिय-उन्माथित, उत्कण्ठित  
 xxxvii. 23. 11  
 ओरालि-शब्द ( cf. ओरड M ) v. 1. 7  
 ओरालिअ-आकन्दन xxviii. 29. 1  
 ओल्लिगिय-सेवित vi. 5. 5  
 ओहट्टह-हीनं भवति vii. 18. 7  
 ओहामिय-तिरस्कृत iv. 4. 4; अभिभूत  
 xviii. 1. 5  
 ओहुल्लिय-म्लान vii. 10. 1  
 कउल-चावाक, कापालिक xi. 17. 8  
 ककर-पर्वतशिखर xxxi. 23. 7  
 कक्खड-कर्कश, निष्ठुर xi. 13. 10  
 कडण्य-संघात, समूह viii. 7. 6  
 कडिल्ल-कटिसूत्र iv. 4. 5  
 कडुअ-चुम्बकपाषाण xx. 19. 2  
 कणइल्ल-शुक xiii. 7. 7  
 कप्पड-कपट, वस्त्र ( cf. कापड M )  
 xxxvi. 8. 9  
 कब्बड-वसतिविशेष v. 21. 3  
 कयंर-भूति ( cf. कचरा M ) xxviii. 2. 14  
 करंड-स्थानिका iv. 19. 9  
 करोडि-शिरोस्थि ( cf. करोटी M )  
 xii. 17. 8  
 कलमलअ-कालुष्य, ईर्ष्याजनित सेद ( cf.  
 कळमळ, तळमळ M. ) xxxvi. 2. 6  
 कसर-बलीवर्द्ध, vii. 20. 4; वसंतर viii. 2.  
 18; गोयुवा xxviii. 28. 7.

कसर-पाण्डुर XXXII. 20. 14  
 कसेर-वृण I. 3. 12  
 कंकोलि-अशोकवृक्ष IV. 1. 5  
 कंदोह-नीलोपल XXIX. 6. 5  
 किम्मीर-विचित्र VII. 19. 3  
 किलिगिलिय-शब्दानुकार XV. 1. 6  
 कुडुच-वादनकाष्ठ IV. 10. 10  
 कुढ-वृष्ट XXIX. 14. 11  
 कुदहीर-चन्द्र XVII. 4. 5  
 कुवलीहल-चदर XXXII. 20. 15  
 कुसुमाल-चोर XXXI. 18. 4  
 कुहिणि-मार्ग XXXV. 13. 6  
 कुंड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 कुंयरि-कुमारी XXXIII. 2. 4  
 केया-वस्त्रा, रज्जु XII. 11. 5  
 केर-आज्ञा XVI. 6. 9  
 कोक्काविथ-आहूत, आकारित XXIX. 27. 9  
 कोक्किय-आहूत V. 17. 15  
 कोच्छर-दक्ष IV. 18. 1  
 कोट्ट-माकारमिति (cf कोट M) XXIV. 9. 11  
 कोड्ड-कौतुक XIII. 6. 1  
 कौड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 खरियालइ-कदर्थयति XXXII. 23. 1  
 खुत्त-क्षिप्त, महुत XXXI. 23. 6  
 खुप्पइ-क्षिप्यते XXXV. 9. 9  
 खुप्पंत-निक्षिपन् XIV. 7. 10  
 खुरप्प-क्षुप्र (cf खुरपे M) XI. 1. 9  
 खेउ-आलिङ्गन XXIX. 19. 2  
 खेव-आलिङ्गन XIII. 8. 7  
 खेड-वसतिविशेष V. 21. 3  
 खेरि-वैर VIII. 1. 11  
 खोल्ल-गम्भीर (cf खोल M) II. 13. 9  
 गणियायी-हस्तिनी XVI. 23. 5  
 गलत्थिय-कदर्थित XXXI. 27. 9  
 गलमोडी-गलवक्रत्व XXXIII. 4. 11  
 गलहत्थण-यसन VIII. 5. 7

गंजोलिय-रोमाञ्चित XIV. 12. 12  
 गाउय-गव्यूति X. 14. 10  
 गिल्ल-आर्द्र XXIX. 5. 3; यस्त  
 XXXII. 13. 9  
 गीढ-युक्त IV. 16. 3  
 गोस्त-प्रभात I. 16. 10  
 गौछ-गुच्छ (cf घोस्त M) I. 3. 7  
 गौदल-संयाम (cf गौयळ M) XI. 16. 9  
 गौदलिय-मिलित I. 3. 7  
 घणघण-सातिशय III. 1. 6  
 घरथ-यस्त IX. 7. 3  
 घल्लइ-क्षिपति (cf घालणे M) III. 16. 10  
 घल्लिय-क्षिप्त VII. 5. 12  
 घंघल-आपद् XXXII. 7. 2  
 चक्खइ-सादति, आस्वादयति (cf चास्तणे M)  
 II. 19. 4  
 चट्ट-शिक्ष I. 16. 1  
 चडइ-आरोहति (cf चढणे M) II. 16. 1  
 चडाविय-आरोपित XXX. 12. 9  
 चण्णिवि-हृष्टाव, दृढम् VII. 13. 12  
 चप्फल-बहुमलापिन्, निष्फल III. 14. 24  
 चवइ-जल्पति VIII. 7. 3  
 चंग-उत्तम (cf चांग, चांगळे M) IX. 4. 14  
 चंगअ-उत्तम VI. 2. 12  
 चंचेल-वक्र XXIII. 4. 13  
 चंदकव-मयूर XIII. 7. 10  
 चाउरि-शय्या (गादीति देशी T.) VI. 1. 6.  
 चिक्खल्ल, चिम्बल्ल-कदम्ब II. 13. 9  
 चित्तिव-अक्षि X. 11. 11  
 चिडउल्ल-चटक IX. 8. 14  
 चिड्डइ-आर्द्रभवति (cf चिडणे M)  
 II. 20. 11  
 चिम्मक्कइ-चमत्कृति करोति XVI. 2. 3  
 चिम्मक्कइ-धनति XXIX. 15. 3  
 चिलिगिल-बीभस्त (cf चिडबोड M)  
 XX. 10. 11



GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

चुकद्-भक्षयति IV. 8. 5  
 चुणद्-भक्षयति XVI. 13. 2  
 चुणय-अरोचकध्वाधि XVI. 3. 7  
 चुरलि-ज्वाला XXXII. 16. 14  
 चुहुद्-लगति XVI. 7. 10  
 चैचइय-अलंकृत III. 2. 4  
 चोज-कौतुक, आश्चर्य (cf चोज M)  
 VIII. 7. 23  
 चोवाण-यष्टि I. 16. 10  
 चौमल-धीमत्स, समूह (cf चुंचळ, चुंमळ M)  
 XXVII. 27. 1.  
 छज्जइ-राजते, शोभते (cf सज्जणे M)  
 I. 14. 3  
 छडउल्लअ-संमार्जन, जलादिनिक्षेप  
 (cf सडा M) XVI. 1. 12  
 छडयण-धम्मर IX. 18. 4  
 छल्लि-त्वक् (cf साल M) XXXVII. 20. 10  
 छंडइ-परिस्थजति (cf सांडणे M)  
 VII. 19. 15  
 छाहि-छाया (cf साहुली M) XVII. 3. 12  
 छिवइ-सृशति (cf सिवणे, शिवणे M)  
 IV. 5. 13  
 छिण्णइ-सृशति (cf शिवणे M) VI. 2. 13  
 छिक-छिक्का (cf शिक M) XXVI. 4. 2  
 छुडु-क्षिप्त II. 19. 1  
 छोडअ-कुटिका, चुटिका XXIV. 8. 1  
 छोह-सोम, विक्षेप XVII. 1. 6; क्रोध  
 XXIX. 18. 8  
 जडिल-कुक्कुम XXVIII. 1. 3  
 जंपाण-शिविका (पालक्षीति देशी, T.) VII. 1. 7  
 जांवाय-जामाला XXXIII. 4. 16  
 जूरण-सेदन VII. 6. 12  
 जूरिय-निर्मस्ति VII. 5. 5  
 जेवइ-मुंके XVIII. 7. 11  
 जोइय-दृष्ट XVIII. 9. 4  
 जोक्खइ-तोलयति (cf जोसणे M)  
 IV. 5. 5

जोक्खिअ-तोलित XVIII. 9. 5  
 झडण्णइ-आक्रमति (cf झडण M) XXX. 4. 9  
 झडण्ण-ताडन (cf झडण M) XXV. 4. 8  
 झडण्णिय-पतन VIII. 3. 9  
 झलक्क-पूणांजलि (cf चुलक्क M) XVII.  
 13. 6; ओष्ण XXXIV. 2. 11  
 झलझलिय-ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf झुलझुल  
 वाहणे M) XII. 2. 13  
 झलुक्खिअ-संतापित (cf झळ M)  
 XXIX. 23. 11  
 झंपइ-आच्छादयति (cf झांपणे, झांकणे M)  
 I. 11. 4  
 झंपड-नेत्रयोरर्धोन्मीलन (cf झांपड M)  
 XII. 12. 5  
 झंपिअ-आच्छादित XXVI. 14. 9  
 झुलइ-कम्पते (cf झुलणे M) XIV. 5. 12  
 झुबुक्क-स्तवक (cf झुबका M) IV. 9. 9  
 झंदुअ-कन्दुक (cf चेंडू M) I. 16. 10  
 झेंदुलिया-पुंश्रली (cf शिनळ M)  
 XV. 6. 15  
 डक्कर-शिलाशकल (cf ठोकर M)  
 XXXI. 16. 4  
 दिंढ-पुंश्रली XXIX. 18. 9.  
 देंढ-वृन्त (cf देंढ M) XII. 9. 18  
 डर-मय (cf डर M) XXV. 8. 9  
 डंकिय-दृष्ट XXX. 12. 8  
 डाल-शास्त्रा (cf डाहाळी, डाळी M) I. 18. 2  
 डावि-मुद्रा, मुद्रिका XXXV. 5. 3  
 डुंग-समूह IX. 2. 27  
 डेवंत-धावन XVII. 2. 8  
 डेंडुह-डुण्डुम XVI. 20. 9  
 डोलइ-आन्दोलन करोति (cf डोलणे M)  
 IV. 18. 2; कम्पते XV. 18. 3  
 ढलइ-च्यवति (cf ढळणे M) XXXI. 19. 12  
 ढलहलिय-चालित XVII. 7. 5  
 ढलिय-सस्त VIII. 9. 12

ढंकइ-आच्छादयति ( cf झाकणें M )

I. 13. 10

ढंकिय-आच्छादित XIII. 11. 1

ढंख-पुष्पत्रयकलरहेन वृक्ष XIX. 13. 5

ढंदर-राक्षस XXXI. 26. 6

ढालइ-चालयति ( cf ढाकणें M ) XIV. 10. 7

दिह्रीह्वय-शिथिलीभूत ( cf ढिलें M )

XXXII. 3. 5

णक-नक्र, जलचर XXXV. 12. 7

णग्गोर-कर्पूर XII. 10. 7

णाहल-शवर XV. 1. 9

णिक्खुत्तउ-निश्चितम् XI. 9. 7

णिक्खुब्भु-निन्तरम् XX. 1. 7

णिच्छइ-स्खलति IV. 15. 11

णिडुरिय-निष्कासित XXXV. 1. 14

णियइ-अवलोकयति V. 15. 9

णिययणी-वस्त्रा, रज्जु XXV. 18. 12

णिरारिउ-अतिशयेन XIII. 7. 13

णिरिक-चोर XXIX. 17. 3

णिरु-अतिशयेन XIII. 11. 11

णिरोविय-अर्चित XXIX. 20. 2

णिहेलण-पृष्ठ III. 1. 10

णिसाड-निशाचर, राक्षस XVI. 26. 8

णीवइ-विध्यापयति ( cf. निवणें M )

II. 19. 10

णेसर-सूर्य I. 1. 1

णेहीर-कुङ्कुम XXV. 9. 12

तकारि-साराधि XII. 13. 9

तर-शीघ्रम् XXV. 19. 13

तलण-करप्रहार IV. 11. 7

तल्ल-क्षुद्रसरस् ( cf तल्लें M ) XXV. 2. 8

तंडअ-समूह ( cf तंडा M ) XVI. 22. 8

तारुअ-कर्णधार XXV. 9. 3

तिगिंछि-मकरन्द, पराग IX. 21. 14

तिडिक-स्फुलिङ्ग XXXVII. 21. 10

तिया-स्त्री I. 15. 4

तियाउस-मल XXXVII. 22. 9

तिंगिच्छ-मकरन्द, पराग V. 1. 10

तिंगिछ-मकरन्द, पराग XI. 5. 6

तुय-स्त्री IX. 22. 9

तुप-घृत ( cf. तूप M ) XXVI. 1. 5

तुंदाहि-गण्डूपद VII. 12. 7

तुह-तट XXIX. 8. 9

तोंड-मुल ( cf. तोंड M ) V. 3. 3

तोंतडिल्ल-मिश्र XXXVIII. 1. 5

तोंद-उदर XX. 23. 3

थड-समूह XII. 3. 19; स्तवक XIII. 6. 5

थत्ति-स्थान II. 15. 12

थद्ध-धन XII. 11. 1

थद्ध-धन XII. 11. 1

थरहरण-कम्पन VII. 9. 12

थव-स्तवक ( cf थवा M ) XII. 9. 19

थिपिर-गलनशील ( cf थिचकणें, ठिचकणें M )

VII. 12. 10

थंम-बिन्दु ( cf थंम M ) III. 14. 20

दडत्ति-ध्वन्यनुकरणे शब्द ( cf धाडकम् M )

IX. 13. 2

दलवट्टइ-छिनत्ति, नश्यति XVI. 23. 6

दलवट्टिअ-सण्डित, नष्ट XV. 3. 5

दवक्कडी-अशानिपात VII. 14. 2

दवट्टि-शीघ्रम् XXIX. 6. 3

दह-हृद XXIX. 8. 3

दंडिखंड-शतजर्जरं जीर्णं सितितं वस्त्रम्

XXII. 16. 22

दाढा-दंष्ट्रा XVIII. 1. 15

दीवड-सर्पजातिविशेष ( cf दिवड M )

XXVIII. 9. 15

दुब्बोल्लिय-दुरुक्त VII. 5. 11

देहलिय-मर्यादा XIII. 10. 1

देंट-वृन्त ( cf देंट M ) IV. 11. 11

दोर-सूत्र, रज्जु ( cf दोर M ) II. 16. 2

धण-धन्या ( स्त्री ) XX. 7. 3

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

धाह-आकोश, कन्दन (cf धाय) XIV. 8. 5  
 पइरिक्क-प्रचुर IX. 24. 12  
 पउलण-प्रज्वलन, पाक VII. 6. 12  
 पकल-तमयं XIV. 7. 5  
 पच्छाउहुं-परश्रान्मुत्तम XXXIII. 11. 3  
 पडुक्कइ-पसरति XXXII. 17. 2  
 पत्तल-सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातल M)  
 XVII. 10. 1  
 परअ-प्रभात, परेयुः (cf परवां M)  
 XXXII. 26. 8  
 परइ-प्रभाते XVI. 20. 12  
 परवाली-पर+वाला (परली) XI. 18. 3  
 परियंदइ-आन्दोलयति IV. 4. 13  
 परिहत्थे, परिहच्छे-वेगेन XIV. 1. 20  
 परोहड-पश्चाद्द्वार (cf परडा, परहू M)  
 XXIX. 14. 9  
 पल्लट्टिअ-परिवर्तित XXXIII. 6. 13  
 पसंडि-सुवर्ण IX. 7. 1  
 पडुल्ल-पुष्प (1), ममून् XXV. 8. 5  
 पंगुत्त-प्रावरण (cf पांघरुण M) I. 14. 4  
 पंगुरइ-पटेन आच्छादयति (cf पांघुरणे M)  
 IV. 15. 14  
 पंगुरण-प्रावरण VII. 23. 9  
 पाडिहेर-प्रातिहार्य I. 18. 9  
 पाण-चाण्डाल XXXI. 17. 5  
 पालिद्धय-वंशवेष्टितपताका XII. 9. 4  
 पासुय-शुद्ध, मासुक IX. 7. 4  
 पासुलिया-पाश्वरिथसंघात VII. 12. 4  
 पासेय-प्रस्वेद VII. 24. 10  
 पाहुण-अतिथि (cf पाहुणा M)  
 XXIV. 10. 7  
 पिच्चइ-पक्वं भवति VII. 14. 2  
 पीलु-हस्तिशावक XXIX. 8. 1  
 पुण्णालि-पुंश्रली XVIII. 1. 7  
 पुल्लि-व्याघ्र XXV. 16. 4  
 पेल्लावेलि-संघम IX. 18. 16

पेल्लिय-मेरित I. 12. 5  
 पोह-उदर (cf पोह M) IX. 8. 15  
 पोहल्ल-ग्रन्थि (cf पोहली M) XX. 10. 12  
 पोत्ति-स्नानशायी IX. 4. 13  
 पोण्णली-पूरीफलवृक्ष (cf पोफळी)  
 XXII. 7. 13  
 फिह्णइ-नश्यति (cf फिण्णे M) VIII. 4. 36  
 फुल्लधुय-धमर IX. 11. 9  
 फुल्लधुय-धमर IX. 11. 9  
 वइसइ-उपविशति IV. 1. 11  
 वण्ण-पुत्र इति संबोधने IV. 8. 7  
 वण्णीह-चातक XII. 7. 2  
 वण्णीहय-चातक II. 13. 13  
 बाहिरि-बहिस् XVI. 3. 3  
 बुक्करइ-शब्दं करोति (cf मुंकरणे M)  
 VII. 25. 5  
 बुक्कार-सूक्कार XV. 19. 8  
 बुड्डइ-मज्जति XXXIII. 11. 11  
 बुंघ-मूल VIII. 7. 10  
 बोल-ध्वनिविशेष XVII. 3. 4  
 बोल्लइ-जल्पति VIII. 5. 17  
 बोह्णविअ-भाषित IV. 4. 9  
 बोहिथ-नौः XVII. 4. 4  
 भउंहा-भुक्रुटि XXII. 8. 2.  
 भम्म-सुवर्ण IV. 10. 1  
 भल्ल-भद्र (cf. भला M) IV. 5. 7.  
 भल्लारअ-शुभ, उत्तम VII. 17. 11  
 भसल-धमर IX. 28. 2  
 भंडइ-कलहं करोति XXXV. 8. 7  
 भिडिअ-संमुखं गत (cf. भिडणे M)  
 XVII. 1. 1  
 भुक्कइ-मपति (cf. मुंकरणे M) I. 8. 7  
 भेल-अतिवृद्ध XXIX. 25. 12  
 भोल-मूढ (cf. भोला M) II. 20. 7  
 मडण्णर-गर्भ XV. 15. 11  
 मडह-सुन्दर XII. 12. 3

- मङ्गहा-तन्वी, लघ्वी XVI. 26. 2  
मङ्गव-वसतिविशेष v. 21. 4  
मङ्गु-नालिकेरवन (cf. माङ्ग M) XIII. 2. 3;  
बलात्कार XIII. 2. 3  
मद्-बलात्कारण IX. 14. 10  
मङ्गीसिया-मा मैषीः इति उक्ता, आश्वासिता,  
XXXII. 26. 3  
मयासि-(अमृताशी) देव XIV. 1. 4  
मरट्ट-दर्प, गर्व, XVI. 16. 8  
मलहण-मद्युक्त XXIX. 25. 5  
मंढ-निश्चय (cf. मङ्ग M) IX. 8. 11  
मंढ-निम्नोन्नत XII. 5. 25.  
मंडल-श्वा v. 15. 12  
मंदीरय-रविकानिरीषकलोहवलय XII. 11. 3  
मायण्डिय-मृगवृणिका XX. 20. 7  
माहुंडल-सर्पविशेष XVI. 9. 12  
मुसुमूर-द्रवति III. 3. 3  
मुसुमूरण-पिण्डीकरण VII. 6. 12  
मुंडिय-मन्दुरोभयपार्श्वनिज्ञातकाष्ठद्वय  
XV. 2. 5  
मुरविअ-तापित, कथित XII. 11. 10  
मेरा-मर्यादा VIII. 1. 13  
) मेलाअ-समूह (cf. मेळा M) XXXIII. 3. 8  
मेलावक्क-संगम XXXII. 24. 4  
मंडअ-मेष (cf. मंडा M) XVI. 9. 10  
मोक्कलिय-मुक्त XIII. 5. 10; मोचित  
XXXI. 29. 8  
मोड्डिय-मम VIII. 12. 5  
रडि-आक्रन्दन XV; 20. 4  
रवणण-रम्य II. 2. 3  
) रहट्ट-अरघट्ट (cf. रहाट्ट M) XXVII. 1. 4  
रहट्टि-तरङ्ग, वीची (cf. लहर M)  
IV. 15. 12  
रहिअ-आच्छादित XV. 12. 4  
रंखोलिर-विलसनशील III. 2. 1  
रंगइ-जातुभ्यां चलति (cf. रंगणं M)  
IV. 1. 11  
रंजण-मृदाजनविशेष (cf. रंजण M)  
v. 19. 11  
रंडिय-विधवीकृत XVII. 9. 10  
रिंछ-शुक I. 14. 4  
रुंढइ-शब्दं करोति v. 1. 10  
रुणुंढइ-गुञ्जति VI. 1. 14  
रुंढ-विस्तीर्ण (cf. रुंढ M) III. 7. 10  
रुंदिम-विस्तार XI. 4. 5  
रेल्ल-चालन (cf. रेलणं M) XIV. 10. 1  
रेह-शोभा XI. 23. 4  
रेहइ-राजते, शोभते II. 2. 12  
रोयर-रुचिकर XVII. 12. 7  
रोल-कोलाहल XIV. 5. 9  
लइ-अतीव (बाक्यालंकारे) (cf. लइ M)  
v. 16. 14  
ललाविय-प्रसारित XVII. 1. 1  
लल्ल-अस्फुटवाक् IX. 8. 11  
लल्लक-रौद्र (cf. लल्लकार M) XIV. 7. 5  
लंजिया-गृध्रासी XXXI. 21. 1  
लाणिं-मर्यादा, अन्त IV. 5. 14  
लीह-रेखा XII. 6. 7  
लुक्क-निर्लान्त IX. 14. 12  
लहसइ-पतति, संसते II. 8. 13  
वट्टुत्तिविडि-घट्ट+उत्तिविडि (cf. उत्तरंढ M)  
XXXII. 20. 5  
) वट्टु-महत् I. 12. 6  
वड्डल-झञ्झावात (cf. वाड्डल M) VII. 16. 8  
वमाल-कोलाहलशब्द I. 11. 7  
वळ्वीह-चातक II. 13. 13  
वावल्ल-सेल, कुन्त, सर्वलोहमयायुधविशेष  
VII. 5. 11  
वाहियालि-अश्ववाहनमार्ग I. 14. 8  
विट्टल-अपवित्र, अस्पृश्यसंसृष्ट (cf. विटाळ M)  
VII. 12. 8  
विडप्प-राहु (विदर्प ?) XII. 6. 3  
विड्डुम-मय XVIII. 13. 1

# GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

विदत्त-अर्जित XVI. 3. 4  
 विराल-विडाल, मार्जार XXX. 4. 10  
 विरिक्त-विमर्क VIII. 13. 23  
 विरोल्लिय-कदर्थित XXXI. 23. 7  
 विलया-वनिता V. 4. 13  
 विसंभर-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 12  
 विसृद्-खियते XIV. 5. 10  
 विहलंघल-विहलङ्ग XXVIII. 19. 8  
 वुण्ण-संकुपित XVII. 15. 12  
 वेच्छिल-कोण्टवृक्ष XXV. 5. 9  
 वेल्लहल-कोमल III. 1. 11  
 वेहाविय-वञ्चित ( द्वैधीकृत ! ) XVIII. 2. 2  
 वैमल-विहल XXVIII. 27. 1  
 वोद्रही-तरुणी XXXIII. 1. 10  
 वोल्ड-अतिक्रामति IX. 19. 14  
 वोलाविय-त्यक् XV. 6. 4; अतिक्रामित,  
 निष्कासित, XVIII. 2. 2.  
 वोलीण-अतिक्रान्त II. 9. 1  
 वोक्क-यकृत् ( कलिजा T. ) XI. 24. 12  
 सइत्त-सचेतन XXX. 1. 12  
 समलहिय-अभिलिप्त VI. 1. 9  
 सल-शवशयन, चिता, XXIII. 8. 6  
 सलसलइ-सलसलध्वनिं करोति ( cf. सल-  
 सळणे M. ) IV. 11. 10  
 सवडंमुह-संमुख II. 2. 12  
 सवलहण-समालम्भन ( विलेपन ) III. 4. 7  
 सववल-सर्वलोहमयी घाणी, तिलपीडनायुध  
 XI. 16. 9  
 सहइ-शोभते III. 12. 16.

संगहण-मुंश्चल्युगल, जारजारिणीयुगल  
 XXXV. 10. 1  
 संच-शरीरबन्ध VIII. 9. 12; स मूह  
 XVII. 5. 2  
 साइउं-आलिङ्गन V. 15. 9  
 साड-विध्वंसक XIV. 5. 14  
 साडी-शादी, वस्त्र XII. 5. 3.  
 सारी-उत्तमा III. 6. 1  
 सिणिसिव-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 13  
 सिप्पि-शुकि ( cf. शिप M. ) IV. 6. 11  
 सिप्पीर-पलाल VII. 19. 4  
 सिलिंघय-वाल XXXIII. 6. 6  
 सिलिंघ-शिथु II. 13. 9  
 सिहिण-स्तन II. 16. 2  
 सीसक्क-तुप XIX. 2. 2  
 सुडिअ-दुग्धित III. 17. 2  
 सेल्ल-प्राप्त VII. 5. 11  
 सेहीर-सिंह XXV. 3. 5  
 सेंम-श्लेष्मा XX. 14. 10  
 सोण्णार-स्वर्णकार ( cf. सोनार M. )  
 XXXI. 7. 2  
 हट्ट-पण्यवीथिका ( cf. हाट्ट M. ) I. 16. 1  
 होडि-शृंगला VII. 13. 8  
 हल्लइ-कम्पते ( cf. हल्लणे M. ) XIV. 5. 12  
 हल्लिय-कम्पित I. 12. 5; वलित XV. 15. 5  
 हुर-दुःख XI. 11. 4  
 हुंड-विकलेन्द्रिय XI. 1. 11  
 हल्लिय-प्रोत VII. 5. 10.  
 हवाइद्ध-कुपित XXXII. 20. 4  
 होहल्लर-जो जो शब्द IV. 4. 14



# ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kadavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्धय <sup>०</sup> उद्धत <sup>०</sup>	उद्धय <sup>०</sup> उद्धत <sup>०</sup>
१५	१६	८	णं	ण
२४	७	६	भ वहि	भावहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जंतजणेण	जंत जणेण
३९	४	११	सई	सइ
४६	१२	५	जोणयहं	जोयणहं
५२	१९	१	णंव	णवं
७७	७	१०	बुद्धदारेण	बुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुरसु सपससहु	पुरिसु सपससहु
१०६	१०	१०	मरतं	मरत
१२४	३	७	एत्यु	एत्थु
१४८	१०	८	संकाराह	संकारहि
१६५	१	५	तुहं	तुहं
१६८	४	६	रुडएहिं	रुडएहिं
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्भुव	अद्भुव
१८९	१५	१	बइसह	बइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय संघहु	अज्जियसंघहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१५	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कंदासिहि	कंदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	रंघ	तुंघ
३०९	६(n)	९(n)	बासं	बासं
३२१	८(v.l.)	१०(v.l.)	MP	MP
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वावहि	वाविहि
३७९	१	७	पंडियभवणहु	पंडिय भवणहु
३८०	३	१	वादिथ	वदिथ
३९८	१२	८	मुणिविणयं <sup>०</sup>	मुणि विणयं <sup>०</sup>

MAHĀPURĀṆA

Page	Kāvaka	Line	For	Read
४००	१५	४	सिरि सुय	सिरि सुय
४००	१५	१०	वहदेसि	वहदेसि
४०७	१४	५	उवलोडुवि	उवलोडु वि
४२९	१२	७	दिय कविल	दियकविल
४६३	८	३	धपाणउं	अप्पाणउं
४६६	१३	१४	सुयमण	सुय मण
४६७	१४	७	सक्सि	सक्सि
४७१	२१	४	अट्टक्षणं	अट्टक्षणं
४७३	२४	४	जा	जो
५०२	१७	१३	कणाणिय	केणाणिय
५०६	२२	१०	जेसणइ	जणेसइ
५०७	२४	६	पडिवाणि णाय	पडिवाणिणाय
५१३	५	१०	वत्थअियत्थ	वत्थणियत्थ
५३६	९	५	सा	सो
५५२	८	५	हेति	होति
५५७	१६	३	जिणुगय	जिणु गय
५७४	१	४	णिसवइ	णिवसइ
५८४	१५	७	उचविह	चउविह
५८४	१६	२	हेऊउ	हेऊ उ
५८४	१६	३	संसारसरीरइ	संसार सरीरइ

881.30535

Title

~~Apabhramsha~~  
~~Janat~~